अवनी
पब्लिकेशन

SINCE 1949
आर.बी.डी.
"ये नाम ही विश्वास हैं..."

आत्मविश्वास + कड़ी मेहनत + इच्छा शक्ति = सफलता

# REET/RTET

## LEVEL Ist & IInd

# शिक्षा मनोविज्ञान

## बाल विकास व शिक्षा शास्त्र
के विशेष सन्दर्भ में

पूर्णत: परिवर्धित
व संशोधित
पंचम संस्करण
2019–2020

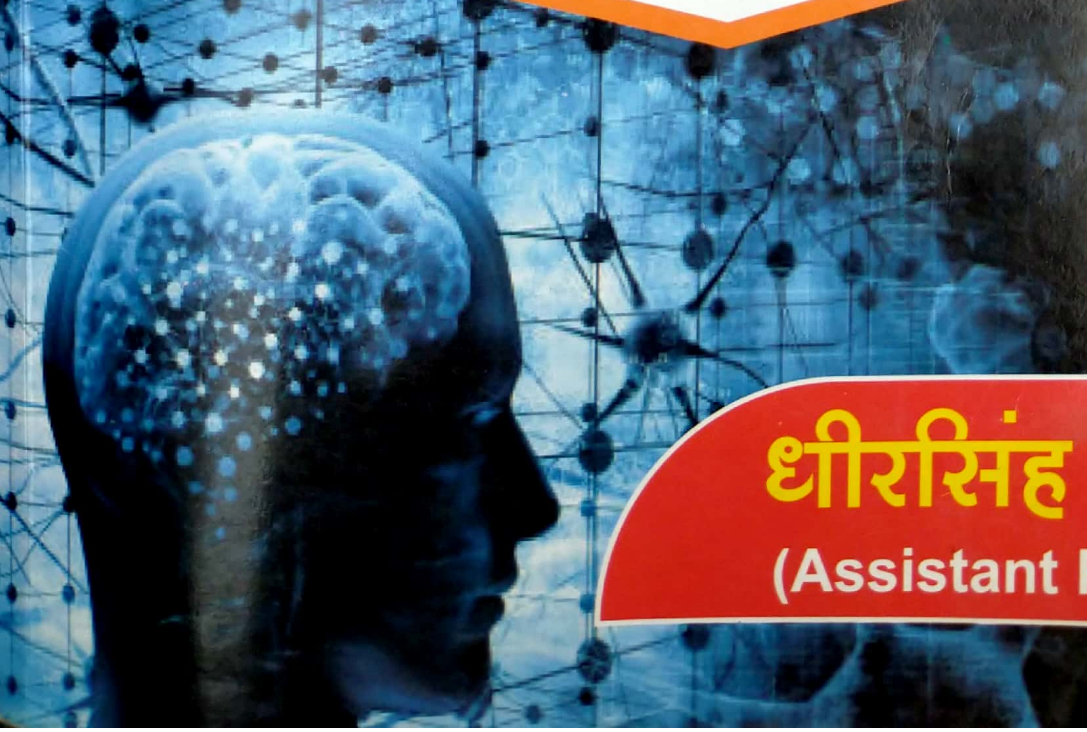


धीरसिंह धाभाई
(Assistant Professor)


Scanned with CamScanner

# विषय-सूची


| | | |
|---|---|---|
| 1. | शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, क्षेत्र व उपयोगिता | [1-11] |
| 2. | शिक्षण अधिगम में मनोविज्ञान का महत्त्व | [12-24] |
| 3. | अधिगम | [25-62] |
| 4. | अभिप्रेरणा | [63-69] |
| 5. | बाल विकास | [70-97] |
| 6. | व्यक्तित्व | [98-110] |
| 7. | समायोजन क्रियाविधि व कुसुमायोजन | [111-117] |
| 8. | मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान | [118-127] |
| 9. | बुद्धि | [128-140] |
| 10. | व्यक्तिगत विभिन्नताएँ व सृजनात्मकता | [141-162] |
| 11. | विकास व शिक्षा में अनुपयोग | [163-173] |
| 12. | शिक्षण व्यूह रचनाएँ व युक्तियाँ/विधियाँ | [174-178] |
| 13. | क्रियात्मक अनुसंधान (प्रारम्भ व विकास) | [179-182] |
| 14. | शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 | [183-187] |
| 15. | आकलन/मापन/मूल्यांकन | [188-195] |
| 16. | उपलब्धि परीक्षण/निष्पत्ति परीक्षण | [196-198] |
| 17. | सतत एवं व्यापक मूल्यांकन | [199-203] |
| 18. | शिक्षा शास्त्र | [204-208] |
| 19. | प्रमुख मनोवैज्ञानिक व शिक्षा में योगदान | [209-210] |
| 20. | स्मरणीय तथ्य | [211-213] |
| 21. | महत्वपूर्ण शब्द व अर्थ | [214-217] |
| 22. | प्रसिद्ध पुस्तकें व लेखक | [218-220] |
| | मॉडल टेस्ट पेपर | [221-240] |


Scanned with CamScanner

नोट–यह अध्याय REET/RTET के पाठ्यक्रम में नहीं है, यह केवल CTET के पाठ्यक्रम में है।

# 1 शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, क्षेत्र व उपयोगिता

- शिक्षा मनोविज्ञान का आधार मानव व्यवहार है मनोविज्ञान शिक्षा को आधार प्रदान करता है।
- क्रो एण्ड क्रो के अनुसार – शिक्षा मनोविज्ञान को व्यवहारिक विज्ञान माना जाता है, शिक्षा मनोविज्ञान सीखने के क्यों, कैसे व क्या से संबंधित है।
- आधुनिक शिक्षामनोविज्ञान में थार्नडाईक व कैटल का योगदान है।
- शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है –

1. शिक्षा 2. मनोविज्ञान

## शिक्षा

- क्रो एण्ड क्रो – शिक्षा व्यक्तिकरण व समाजीकरण की प्रकिया है जिसके सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है।

शिक्षा :– शिक्षा शब्द की उत्पत्ति 'शिक्ष्' धातु से हुई है जिसका अर्थ है सीखना।

### सीखने के तीन तत्त्व–जॉन डीवी

- पुस्तक–"शिक्षा तथा समाज" जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा त्रिमार्गीय प्रक्रिया है। इन्होंने प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा दी जिसके अनुसार बालक एक सक्रिय विद्यार्थी होता है। रुचि, प्रयास महत्वपूर्ण है। शिक्षक समाज में ईश्वर का प्रतिनिधि है। शिक्षा में जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना पर बल व शिक्षा को सामाजिक विकास साधन मानना व सभी बालक एक सुयोग्य शिक्षा पाने के लायक होते हैं।

(1) शिक्षक (2) शिक्षार्थी (3) पाठयक्रम

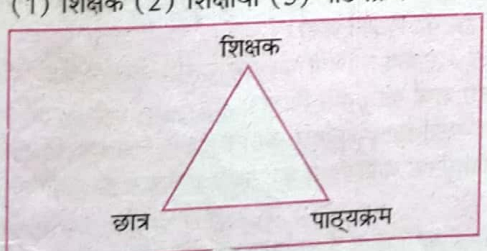


जॉन एण्डम्स ने सीखने के दो तत्व माने हैं –

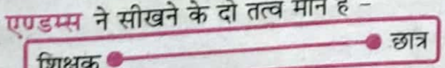


- जॉन डिवी प्रथम शिक्षाविद् है।
- शिक्षा का संकीर्ण अर्थ :– (1) लिखना (Writing), (2) पढ़ना (Reading) (3) गणना करना (Arithmetic) अथवा विद्यालय तक सीमित रहने वाली शिक्षा
- शिक्षा का व्यापाक अर्थ :– महात्मा गांधी ने दिया

1. मानसिक विकास = Head
2. भावात्मक विकास = Heart
3. क्रियात्मक विकास = Hand
4. शारीरिक विकास = Health

- वह शिक्षा जो जीवन पर्यन्त चलती है।

### शिक्षा के प्रकार तीन हैं–

1. औपचारिक शिक्षा माध्यम (Formal) – निर्धारित समय व स्थान, जैसे – विद्यालय
2. अनौपचारिक शिक्षा (Informal) – जिसका समय व स्थान निर्धारित नहीं होते – जैसे परिवार
3. निरौपचारिक शिक्षा (Nonformal) – पत्राचार, टी.वी. समाचार – दूरस्थ स्थान से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा

### शिक्षा की परिभाषा–

1. स्वामी विवेकानन्द – 'मनुष्य में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।'
2. ब्राउन –शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाया जाता है।
3. महात्मा गाँधी – 'शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वोत्तम विकास की अभिव्यक्ति से है।'
4. पेस्टोलॉजी – शिक्षा बालक की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, विरोधहीन व प्रगतिशील विकास है।
5. जॉन डीवी :– 'शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह वातावरण के ऊपर नियंत्रण स्थापित करता है।'
6. डगल्स व हॉलैण्ड – शिक्षा शब्द का प्रयोग सब परिवर्तनों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है जो व्यक्ति के जीवन काल में होते हैं।
7. फ्रैडसन – आधुनिक शिक्षा का संबंध व्यक्ति व समाज दोनों के कल्याण से है।
8. डमविल – शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सब प्रभाव आते है जो बालक को जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।'
9. क्रो एण्ड क्रो – शिक्षा व्यक्तिकरण व सामाजीकरण की प्रक्रिया है जो व्यक्ति की व्यक्तिगत उन्नति व समाज उपयोगिता को बढ़ावा देती है।
10. दिबे – शिक्षा पुनर्कथन या सारांश है।

- उत्पत्ति – एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के एडुकेटम से हुई है।
  - Educatum अर्थ – अन्दर से बाहर निकालना
  - एडुकेयर – आगे बढ़ाना।
  - एडुसियर – विकसित करना।

### शिक्षा व शिक्षामनोविज्ञान में अन्तर–

| शिक्षा | शिक्षा मनोविज्ञान |
|---|---|
| 1. व्यापक | सीमित |
| 2. साध्य | साधन |
| 3. सश्लेषणात्मक | विश्लेषणात्मक |
| 4. आदर्श, मूल्यों, जीवन उद्देश्य से सम्बन्ध | इनको प्राप्त करने में सहायक |
| 5. शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। | यह एक मनोवैज्ञानिक भावात्मक व मानसिक प्रक्रिया है। |

Scanned with CamScanner

## मनोविज्ञान

- उत्पत्ति – साईकी + लोगोस (Psyche + Logos) (आत्मा + विज्ञान/बातचीत)
- **ग्रीक** भाषा का शब्द है। जिसका शब्दिक अर्थ – **आत्मा का विज्ञान**
  **नोट :-** ग्रीक ना होने पर लैटिन करना है।
- मनोविज्ञान के आदि जनक – अरस्तु
- **आधुनिक मनोविज्ञान के जनक** – विलियम जेम्स (1912) अमेरिका (मनोविज्ञान पहले दर्शन शास्त्र की शाखा था) दर्शनशास्त्र से अलग किया।
  - मनोविज्ञान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग – रूडोल्फ गोयक्ले (1590 ई.)
  - पुस्तक – **साईक्लोजिया**
- **प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के जनक** – विलियम वुण्ट जिन्होंने जर्मनी के लिपजिंग नगर में पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना की थी।
- सामाजिक मनोविज्ञान के जनक कुर्टलेविन।
- विकासात्मक मनोविज्ञान के जनक जीनपियाजे।
- 1879 – विलियम वुण्ट – लिपजिंग (जर्मनी) प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला
- 1890 – विलियम जेम्स – पुस्तक – प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी प्रकाशित
- 1892 – अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ स्थापना – स्टेनले हॉल
- 1892 – संरचनावाद की स्थापना।
- 1895 – प्रकार्यवाद की स्थापना।
- 1900 – मनोविश्लेषणवाद की स्थापना।
- 1913 – व्यवहारवाद की स्थापना।
- 1904 – इवान पावलॉव – नोबेल पुरस्कार (पाचन क्रिया के लिए)
- 1905 – बिने व साईमन द्वारा बुद्धि परीक्षण (प्रथम)
- 1905 – वोजेन्द्र नाथ सील द्वारा प्रयोगात्मक मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना।
- विकासात्मक मनोविज्ञान के जनक पिया।
- 1908 – M.A. का विचार – बिने (मानसिक आयु)
- 1912 – I.Q. का विचार – स्टर्न।
- 1912 – गैस्टाल्टवाद की स्थाषना।
- 1916 – कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का प्रथम विभाग (एन.एन. सेनगुप्त)
- 1920 – जर्मनी में गैस्टाल्ट मनोविज्ञान का उदय
- 1924 – भारतीय मनोवैज्ञानिक एशोसिएसन की स्थापना
- 1928 – एन.एन.सेनगुप्ता व राधा कमल मुखर्जी ने सामाजिक मनोविज्ञान की पुस्तक लिखी
- 1953 – स्कीनर ने सांइस एण्ड हूमैन विहेवियर प्रकाशित की।
- 1954 – इलाहाबाद मे मनोविज्ञान शाला की स्थापना
- 1955 – बंगलौर में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसांइसेस की स्थापना।
- 1989 – नेशनल अकादमी ऑफ साइकोलॉजी इण्डिया की स्थापना।
- **भारत में मनोविज्ञान का विकास :-**
  1. 1915 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रायोगिक मनोविज्ञान का प्रथम पाठ्यक्रम।
  2. 1916 में प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला कलकत्ता विश्वविद्यालय।
  3. 1938 में अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान का विकास योगदान – डॉ.एन.एन. सेन गुप्ता
  4. प्रो.जी.बोस ने इंडियन साइकोएनेलिटिकल एसोसियसन (1922)
- 1951 में कार्ल रोजर्स द्वारा रोगी केन्द्रित चिकित्सा प्रतिपादन।
- 1954 में मैस्लो ने मोटिवेशन एक पर्सनल्टी पुस्तक लिखी।

### मनोविज्ञान का विकास–

1. **आत्मा का विज्ञान :-** प्लेटो, अरस्तू व डेकार्त (16 वीं शताब्दी) (Soul of Science)
   आलोचना – आत्मा एक आध्यात्मिक, धार्मिक व काल्पनिक विषय है।
2. **मन का विज्ञान :-** पोम्पोनॉजी – प्रथम (17 वीं शताब्दी में) (Science of Mind)
   समर्थन किया – जॉन लॉक, थॉमस रीड, बर्कले
   आलोचना – मन अमूर्त व निजी है हम दूसरों के मन को नहीं जान सकते, मन अन्तर्मुखी होते हैं।
3. **चेतना का विज्ञान :-** विलियम जेम्स (19 वीं शताब्दी तक 1850) (Science of Consciousness)
   समर्थक – विलियम वुण्ट, जेम्स सल्ली, टिचेनर
   आलोचना – चेतन केवल 1/10 भाग है, बाकी अचेतन होता है।
   - **विलियम मैक्डूगल** – अपनी पुस्तक 'आउटलाईन ऑफ साइकोलॉजी' में चेतना शब्द की आलोचना की।
4. **व्यवहार का विज्ञान :-** 20 वीं शताब्दी (Science of Behaviour)
   प्रतिपादक – वाटसन (1913)
   - सर्वप्रथम विलियम मैक्डूगल ने 1905 ई. इसका उल्लेख किया। बाद में पिल्सबल्ली ने 1911 में पुस्तक **'मनोविज्ञान के मूल तत्त्व'** में इसे व्यवहार का विज्ञान कहा।
   - **मैक्डूगल** – सजीव प्राणियों का सकारात्मक विज्ञान कहा व 1908 में व्यवहार शब्द का प्रयोग किया।
   - **वॉटसन** 'मनोविज्ञान व्यवहार का निश्चित व धनात्मक विज्ञान है।'
   - **मन** – आधुनिक मनोविज्ञान का संबंध व्यवहार की वैज्ञानिक खोज से।
   - **वुडवर्थ** – 'मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम आत्मा का त्याग, फिर मन का त्याग, फिर चेतना का त्याग और वर्तमान में उसने व्यवहार के रूप को अपना लिया है।

### मनोविज्ञान की परिभाषाएँ–

- **सामान्य परिभाषा** – मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार व अनुभव का वैज्ञानिक अध्ययन है।
- **स्कीनर :-** 'मनोविज्ञान व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान है। जो जीवन की सभी परिस्थितियों में प्राणी की क्रियाओं का अध्ययन करता है।'
- **क्रो एण्ड क्रो :-** 'मनोविज्ञान मानव व्यवहार तथा मानव संबंधों का अध्ययन है।'
- **बोरिंग लेगफील्ड, वेल्ड :-** 'मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।'
- **वुडवर्थ :-** 'मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति के क्रियाकलापों का विज्ञान है।'

Scanned with CamScanner

- **मैक्डूगल** :- 'मनोविज्ञान आचरण व व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।'
- **गैरिसन एवं अन्य के अनुसार** :- 'मनोविज्ञान का संबंध प्रत्यक्ष मानव व्यवहार से है।'
- **पिल्सबरी** :- 'मनोविज्ञान की सबसे सन्तोषजनक परिभाषा मानव व्यवहार के विज्ञान के रूप में की जा सकती है।'
- **विलियम जेम्स** :- मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा चेतना के विज्ञान के रूप में की जा सकती है।
- **एटकिंसन/स्मिथ/हिल गार्ड** - मनोविज्ञान व्यवहार मानसिक प्रक्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन।

## मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के चरण-

- चार होते है - (1) समस्या का चयन (2) प्रदत्त संग्रह (3) निष्कर्ष निकालना (4) निष्कर्ष पुनरीक्षण करना

## मनोविज्ञान के लक्ष्य (Goals of Psychology) -

1. मापन एवं वर्णन (Measurement and description)
2. पूर्वानुमान एवं नियंत्रण (Prediction and Control)
3. व्याख्या (Explanation)

**1. मापन एवं वर्णन (Measurement and description) :-** मनोविज्ञान का सबसे प्रथम लक्ष्य प्राणी के व्यवहार एवं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का वर्णन करना तथा फिर उसे मापन करना होता है। प्रमुख मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं जैसे - चिंता, सीखना, मनोवृत्ति, क्षमता, बुद्धि आदि का वर्णन करने के लिए पहले उसे मापना आवश्यक होता है।

**2. पूर्वानुमान एवं नियंत्रण (Prediction and Control) :-** मनोविज्ञान का दूसरा लक्ष्य व्यवहार के बारे में पूर्वकथन करने से होता है ताकि उसे ठीक ढंग से नियंत्रित किया जा सके।

**3. व्याख्या (Explanation) :-** मनोविज्ञान का अंतिम लक्ष्य मानव व्यवहार की व्याख्या करना होता है।

## मनोविज्ञान की शाखाएँ-

1. शिक्षा मनोविज्ञान (Education)
2. मानव प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (Human)
3. पशु प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (Animal)
4. व्यक्तित्व/व्यक्तिगत मनोविज्ञान (Individual)
5. सामान्य/असामान्य मनोविज्ञान (मानसिक रोगों का अध्ययन) (Normal and Abnormal)
6. निदानात्मक व उपचारात्मक मनोविज्ञान
7. समाज मनोविज्ञान (Social psy)
8. संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (Congnitive)
9. अपराध मनोविज्ञान (Criminal)
10. बाल मनोविज्ञान (Child)
11. किशोर मनोविज्ञान (Adolescent)
12. प्रौढ़ मनोविज्ञान (Adult)
13. परा मनोविज्ञान - मन से परे (Para)
14. औद्योगिक मनोविज्ञान (Industrial)
15. सैन्य मनोविज्ञान (Military)
16. व्यवहार मनोविज्ञान
17. औपचारिक मनोविज्ञान (Clinical)
18. शारीरिक मनोविज्ञान (Physialogical)
19. सुधारात्मक मनोविज्ञान
20. कानून मनोविज्ञान (Law)
21. व्यावहारिक मनोविज्ञान (Applied)
22. सैद्धान्तिक मनोविज्ञान (Pure)
23. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (Experimental)

## मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (School of Psychalogy)-

**1. संरचनावाद/अस्तित्ववाद (Structuralism) :-** स्थापना (1890 ई.)

- मनोविज्ञान को प्रयोगात्मक बनाया।
- पहला/ प्राचीन सम्प्रदाय
- प्रतिपादक - विलियम वुण्ट, टिचेनर
- इसके अनुसार मनोविज्ञान की विषयवस्तु चेतना है तथा चेतना के तीन तत्त्व हैं-
  (1) संवेदना (2) भाव या अनुराग (3) प्रतिबिम्ब/प्रतीक
- ज्ञान विद्यमान है, विश्वसनीय है तथा उसको प्राप्त करना ही अधिगम है, का विरोध करता है।
- यह अन्त: निरीक्षण विधि पर बल देता है।

**विशेष** - संरचनावाद (सम्बन्धी तत्व)

- **भाव का त्रिविमीय सिद्धान्त** - विलियम वुण्ट
- प्रत्येक भाव का अध्ययन तीन विमाओं में स्थित है -
  (1) उत्तेजनाशांत (2) तनाव शिथिलन (3) सुखद: दु:खद
- विलियम वुण्ट ने चेतना के दो तत्व बताये थे व टिचेनर ने बढ़ाकर 3 कर दिये।
  (संवेदन, भाव, प्रतिमा/प्रतिबिम्ब)
- वुण्ट ने चेतना की दो विशेषता बतायी - (1) गुण (2) तीव्रता
- टिचेनर ने बढ़ाकर 4 कर दी - गुण, तीव्रता, स्पष्टता, अवधि
- **अर्थ के सन्दर्भ सिद्धान्त (Context Theory of meaning)** - टिचेनर
- इसका प्रतिपादन टिचेनर ने किया जिसके अनुसार संवेदना व प्रतिमा का अर्थ उस संदर्भ के अनुसार निर्धारित होता है जिससे वे चेतन में मौजूद होते हैं।
- संरचनावाद ने मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग करके इसके स्वरूप को प्रयोगात्मक बनाया।

**2. प्रकार्यवाद/कार्यवाद (Functionalist) (1895) :-**

- प्रतिपादक - विलियम जेम्स प्रथम (अनौपचारिक संस्थापक) हावर्ड विश्वविद्यालय
- विकास - जॉन डीवी, एंजिल, थॉर्नडाइक, एच.ए. कार्र (औपचारिक संस्थापक)
- इसके अनुसार मनोविज्ञान की विषयवस्तु चेतना के कार्यों मन व व्यवहार के कार्यों का अध्ययन करना है।
- विधि - अन्त: निरीक्षण विधि पर बल देता है।

**विशेष :-**

- प्रकार्यवाद की उत्पत्ति संरचनात्मक के वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक उपागम के विरोध में हुई।
- यह सम्प्रदाय दो प्रकार के उत्तरों की तलाश करता है
  1. व्यक्ति क्या करते हैं?

Scanned with CamScanner

2. व्यक्ति क्यों कोई व्यवहार करते है ?

- यह सम्प्रदाय साहचर्य के नियम पर बल देता है।
- मानसिक क्रिया व अनुकूल व्यवहार के अध्ययन पर बल।
- सभी क्रियाओं की शुरूआत उद्दीपनों से होती है।
- सीखने के प्रेरणा, अभ्यास व वैयक्तिक भिन्नता को महत्वपूर्ण माना।
- वुडवर्थ जो कोलम्बिया प्रकार्यवादी है, ने सीखने की प्रक्रिया में क्रियाविधि (Mechanism) व चालक (Drive) को महत्वपूर्ण माना।
- करके सीखने पर बल, कार्यक्रमित सीखने पर बल व आयु स्तर के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण पर बल देता है।

**3. व्यवहारवाद (Behaviourism) ( 1913 ) :-**

- प्रतिपादक - वाट्सन (अमेरिका), जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय
- द्वितीय बल कहा जाता है।
- मूल व्यवहारवादी - बी. एफ. स्कीनर
- प्रारम्भिक व्यवहारवादी - ए.पी. विश, लैशले, हण्टर, हॉस्ट
- उत्तर व्यवहारवादी - गुथरी, हॉल, स्कीनर, फैन्टर
- मनोविज्ञान को विज्ञान का दर्जा दिलाने वाला सम्प्रदाय
- इसके अनुसार प्रत्येक प्रकार का व्यवहार सिखाया जा सकता है।
- विधि - निरीक्षण विधि/अवलोकन विधि, परीक्षण, शब्दिक रिपोर्ट, अनुबन्धन विधि
- पुस्तक - 'व्यवहारवाद' कथन - मुझे चाहे जो बालक दे दो, 1925

✦ **विशेष :-**

- संरचनावाद व प्रकार्यवाद के विरोध में स्थापना

✦ **वाटसन का व्यवहारवाद के दो उपक्रम थे -**

- **प्राथमिक उपक्रम** - इसमें धनात्मक पहलू व ऋणात्मक पहलू शामिल हैं -

**(i) घनात्मक पक्ष** - (आनुभविक व्यवहारवाद या वर्गीकृत व्यवहारवाद भी कहा जाता है।) इस पक्ष में मनोविज्ञान को मानव व्यवहार व पशु बल दिया। प्रेक्षण व अनुबंधन विधि को महत्वपूर्ण माना।

**(ii) ऋणात्मक पहलू** - (तात्विक व्यवहारवाद/आमूल व्यवहारवाद) इसमें संरचनावाद व प्रकार्यवाद को अस्वीकृत करना था।
वाटसन ने आदत निमार्ण में 3 नियमों का उल्लेख किया -
(1) बारम्बारता का नियम
(2) अभिनवता का नियम
(3) अनुबंधन का नियम

✦ वाटसन द्वारा पर्यावरण या वातावारण को अधिक महत्व देने के कारण पर्यावरणवाद भी कहा गया। विशेष कार्यक्रम भी चलाया जिससे पर्यावरणी नीतिशास्त्र कहा गया।

✦ **विशेष :-**

- बी.एफ. स्कीनर, गुथरी व हल को परवर्ती व्यवहारवाद कहा गया।

**4. गैस्टॉल्टवाद ( 1912 ) :-**

- जर्मन भाषा का शब्द
- **अर्थ - पूर्णाकार/सम्पूर्णाकार, समाकृति (Form, Shape, Organisation)**
- **मूल प्रतिपादक** - मैक्स वर्दीमर,
- **सहयोगी प्रतिपादक** - कोहलर, कोफ्का, कुर्त लेविन
- पूर्ण से अंश की ओर बल दिया है।
- यह प्रत्यक्षीकरण व अनुभवों के संगठन पर बल देता है।
- मानसिक प्रक्रिया के संगठन पर बल, सीखना, चिंतन व स्मृति प्रक्रिया को समझने पर बल दिया है।

✦ **विशेष :-**

- गैस्टाल्टवादियों ने चिन्तन के 3 प्रकार बताये हैं -
- A - उत्पादी चिंतन-जिसमें बालक लक्ष्य व उस तक पहुँचने के साधन के प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करता है।
- B - यह आंशिक उत्पादी व आंशिक अनउत्पादी होता है एक प्रकार से यांत्रिक होता है।
- Y- इस चिंतन में प्रयत्न व भूल की सहायता से समस्या के पहलू के आपसी संबंध को ना जाने ही समाधान प्रारम्भ कर देता है।
- गैस्टाल्टवादी स्मृति को गत्यात्मक प्रक्रिया मानते हैं जिसमें समयानुसार स्मृति चिह्न में क्रमिक परिवर्तन होते हैं ये परिवर्तन प्रत्यक्षात्मक संगठन की वजह से होते है।

**5. संज्ञानवाद (Cognitive) :-**

- यह मानसिक क्रियाओं जैसे - तर्क, चिन्तन, कल्पना, स्मृति, समस्या - समाधान तथा सम्प्रत्यय को मनोविज्ञान का केन्द्र मानता है। इसको निर्मितवाद भी कहा गया है।
- संज्ञानावाद में मन की तुलना 'कम्प्यूटर' से की गयी है। हम दुनिया को कैसे जान सकते हैं। जो सूचना को प्राप्त करता है प्रक्रमण करता है संचित करता है पुनः प्राप्ति करता है।
- संज्ञानवाद के पिता- जीन पियाजे
- अन्य समर्थक - जेरोम ब्रूनर, वायगोत्सकी, कुर्त लेविन

**6. मनोविश्लेषणवाद (Psycho - analysis) :-** 1900 ई. प्रतिपादक - सिगमण्ड फ्रायड (वियना) (प्रथम बल)
मन के तीन प्रकार माने हैं-

**(i) चेतन मन - 1/10 भाग**
इसका संबंध वर्तमान तथा वास्तविकता से है।

**(ii) अर्द्धचेतन /अवचेतन :-**
**जैसे** - किसी को कोई वस्तु देकर भूल जाना।

**(iii) अचेतन मन :- 9/10 भाग सबसे व्यापक मन**
सर्वाधिक प्रभावित करने वाला मन
दमित इच्छाओं का भण्डार

✦ **नोट:-** इसका विस्तृत वर्णन व्यक्तित्व टॉपिक में देखें।

**7. प्रेरकीय सम्प्रदाय :-** हार्मिक मनोविज्ञान

- **प्रतिपादक** - विलियम मैक्डूगल
- 14 मूल प्रवृतियों पर बल, समूह मस्तिष्क (समूह के संवेग का उच्च स्तर होने पर व्यक्तिकता खत्म) पर बल दिया, उद्देश्यपूर्ण क्रिया पर बल।

**8. साहचर्यवाद :-**

- प्रतिपादक - जॉन लॉक
- अनुभव पर बल दिया।

**9. मानवतावाद :-**

- प्रतिपादक - मैस्लो व रोजर्स
- मानव की स्वतंत्रता आत्मानुभूति के विकास पर बल, मानव स्वभाव को धनात्मक बताया।

**मनोविज्ञान की शिक्षा को देन (Contribution of Psychology)-**

✦ मनोविज्ञान ने शिक्षा को सूक्ष्म व व्यापक आयाम प्रदान करके व्यक्ति विकास में सार्थक बनाया है।

Scanned with CamScanner

- शिक्षा व मनोविज्ञान को जोड़ने वाली कड़ी = मानव व्यवहार
- **डेविस** – मनोविज्ञान में छात्रों की क्षमताओं व विभिन्ताओं का विश्लेषण करके शिक्षा में योगदान दिया है।
- **स्कीनर** –'मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।'
- **बी.एन.झा** – शिक्षा की प्रक्रिया मनोविज्ञान की कृपा पर निर्भर है।

1. **शिक्षा को बाल केन्द्रित बनाना (Improtance of Child)** – शिक्षा बालक के लिए है न कि बालक शिक्षा के लिए।
2. बालक की अवस्थाओं को महत्त्व देना। (Importance of various stage of child)
3. रुचियों व मूल प्रवृत्तियों को महत्त्व देना – शिक्षण प्रदान करना। (Interest and instincts)
4. पाठ्य सहगामी क्रियाओं को महत्त्व देना – सर्वांगीण विकास के लिए।
5. मापन व मूल्यांकन की नयी विधियों को महत्व देना – निदानात्मक परीक्षाओं का प्रयोग।
6. खेल आधारित विधियों को महत्त्व देना – डाल्टन, मॉण्टेसरी इत्यादि।
7. आत्मानुशासन की धारणा प्रदान करना।
8. संबंध त्रयी का विकास करने में सहायक (Development of tri-relationship)
9. शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति में योगदान (ड्रेवर)
10. बालक के व्यवहार का ज्ञान का प्रदान करना।
11. सीखने की प्रक्रिया के उन्नति में सहायक
12. व्यक्तिगत विभिन्नताओं को महत्त्व देना

- **नये ज्ञान का आधार पूर्व ज्ञान (स्टाउट)** – मनोविज्ञान की सबसे बड़ी देन नवीन ज्ञान का विकास पूर्व ज्ञान के आधार पर किया जाना चाहिए यह है।
- **रायबर्न के अनुसार** :– संबंध त्रयी के प्रकार
- **रायबर्न** – मनोविज्ञान के कारण शिक्षण विधियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुये।

**संबंध त्रयी** –
(क) बालक व शिक्षक का संबंध
(ख) बालक व समाज का संबंध
(ग) बालक व विषय का संबंध

- **क्रो एण्ड क्रो** – शिक्षा मनोविज्ञान सीखने के विकास की व्याख्या करता है।

### शिक्षा मनोविज्ञान का विकास–

- शिक्षा मनोविज्ञान 1880 ई. में फ्रांसिस गाल्टन के योगदान से प्रारम्भ होता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान वह शाखा है जिसका संबंध शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से होता है। इसे शिक्षण व अधिगम का विज्ञान कहा जाता है। उत्पत्ति – 1900 ई.
- निश्चित स्वरूप धारण किया – 1920 ई. थॉर्नडाईक, जड, टर्मन स्टेनले, फ्रोबेल, हरबर्ट गाल्टन के प्रयासों से
- **स्कीनर** – शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से जो व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान है ग्रहण करता है।
- कोलसेनिक ने शिक्षा मनोविज्ञान की शुरूआत – **प्लेटो से**
- स्कीनर ने शिक्षा मनोविज्ञान की शुरूआत – **अरस्तु से**
- प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक – **थॉर्नडाइक**
- शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण की शुरूआत।
- आन्दोलन की शुरूआत – **रूसों ने**। (आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान में थार्नडाईक व कैटल का योगदान है।)
- शिक्षा के मनोवैज्ञानिक नियम व सिद्धान्त व मानव विकास के नियम पर बल डाला – **पेस्टोलॉजी**
- **नोट** :– शिक्षक व सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त का प्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान है।

### शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएँ–

- **स्कीनर** –'शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिक्षा से संबंधित सम्पूर्ण व्यवहार व व्यक्तित्व आ जाता है'।
- **एलिस क्रो** – शिक्षा मनोविज्ञान वैज्ञानिक विधि से प्राप्त किये मानव सिद्धांतों के प्रयोग को प्रस्तुत करता है जो शिक्षण अधिगम को प्रभावित करता है।
- **क्रो एण्ड क्रो** – शिक्षा मनोविज्ञान व्यावहारिक विज्ञान है क्योंकि मानव व्यवहार के सम्बन्ध में वैज्ञानिक विधि के सिद्धान्तों व तथ्यों के अनुसार सीखने की व्याख्या करता है।
- **स्कीनर** – 'शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध सीखने व सिखाने से है।' (अधिगम व शिक्षण से)
- **क्रो एण्ड क्रो**– 'शिक्षा मनोविज्ञान बालक के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन व व्याख्या करता है।'
- **पील** – शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा का विज्ञान है।
- **सारे व टेलफोर्ड** –शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य संबंध सीखने से है।
- **ट्रो** – शिक्षामनोविज्ञान शिक्षा संस्थानों के मनोवैज्ञानिक तत्वों का अध्ययन करता है।
- **कॉलसेनिक** – 'शिक्षा मनोविज्ञान, मनोवज्ञिान के सिद्धांत व अनुसन्धानों का शिक्षा में प्रयोग है।'
- **स्टीफेन**– 'शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक विकास का क्रमिक अध्ययन है।'
- **नाल व अन्य** – शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध शिक्षा की सामाजिक प्रक्रिया से निर्देशित होने वाले मानव व्यवहार से है।
- **सेन्ट्रोक** – शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की ऐसी शाखा है जो शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षण व अधिगम में विभिन्नता दिखलाती है।
- **जेम्स ड्रेवर** – शिक्षा मनोविज्ञान प्रयुक्त मनोविज्ञान वह शाखा है जो शिक्षा की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक अध्ययन से संबद्ध होती है।

### शिक्षा मनोविज्ञान के अवयव/तत्त्व–

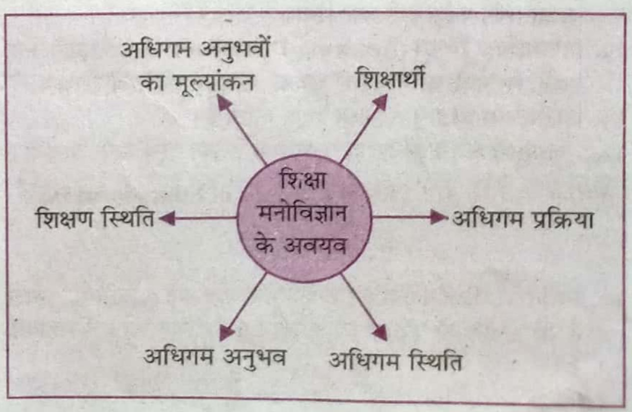


Scanned with CamScanner

1. **अधिगमकर्ता (Learner)** - बुद्धि व्यक्तित्व, विकास, मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।
2. **अधिगम प्रक्रिया (Learing Process)** - स्मृति/ विस्मृति प्रत्यक्षीकरण, समस्या, समाधान आदि ।
3. **अधिगम स्थिति (Learning Situation)** - वातावरण, कक्षा प्रबन्धन, अनुशासन, प्रविधियां, मूल्यांकन, निर्देशन, परामर्श।
4. **अधिगम अनुभव (Learning Experience)** - क्रियायें, विषयवस्तु व अनुभव किस प्रकार दिये हैं।
5. **शिक्षण स्थिति (Teaching Situation)**
6. **मूल्यांकन ( अधिगम अनुभवों ) (Evaluation Learning Experiences)**

**नोट :-** लिण्डग्रेन ने शिक्षा मनोविज्ञान के मुख्य 3 तत्व बताये हैं -
1. अधिगमकर्ता
2. अधिगम प्रक्रिया
3. अधिगम स्थिति

## शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature of Education Psychology)-

1. **वैज्ञानिक :-** क्योंकि इसके सिद्धांत निश्चित हैं, भविष्यवाणी सम्भव है।
- कार्य कारण संबंधों की व्याख्या करता है। वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग।
- निरीक्षण व तथ्यों पर आधारित है।
- ✦ **नोट :-** शिक्षा मनोविज्ञान शुद्ध विज्ञान/मानकीय विज्ञान नहीं है।
2. **व्यावहारिक विज्ञान (Behavior Science)** - व्यवहार केन्द्र बिन्दु है।
3. **सामाजिक विज्ञान (Social)** - समाज पर लागू किये जा सकें।
4. **अनुप्रयुक्त विज्ञान** - भावी जीवन में उपयोगी (Applied)।
5. **विकास शील विज्ञान (Developing Science)** - निरन्तर नये परिवर्तन।
6. **विधायक/सकारात्मक विज्ञान** - कारणों पर बल।
7. **स्वीकारात्मक विज्ञान (Positive Science)** - मानव व्यवहार की व्याख्या करना।
8. **प्रयोगात्मक विज्ञान (Practical Science)** - अध्यापक प्रत्येक स्तर पर प्रयोग करना।
9. **विशिष्ट विज्ञान (Specific Science)** - व्यवहार के तथ्यों व सिद्धान्तों का अध्ययन करता है जिनका शिक्षण व सीखने में महत्व है।
10. **अकादमिक विषय (Academic Discipline)** - एण्डरसन ने कहा इसमें शिक्षार्थी का व्यवहार, सूचना, सिद्धान्त, विधियाँ शामिल।
11. **शिक्षात्मक विज्ञान** - शिक्षा प्रदान करता है।
12. मनोविज्ञान को प्राकृतिक व सामाजिक विज्ञान दोनों माना जाता है।

## शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र (Scope of Educational Psychology)-

- ✦ **स्कीनर** - शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में से सब ज्ञान व विधियां शामिल हैं जो सीखने की प्रक्रिया को समझाने व निर्देशित करने में सहायक है।
- ✦ **विलियम जेम्स** - आकाश व धरती की सभी वस्तुएं मनोविज्ञान के क्षेत्र में आती हैं।
- ✦ **क्रो एण्ड क्रो** - शिक्षा मनोविज्ञान की विषय सामग्री का संबंध सीखने को प्रभावित करने वाली दशाओं से है।
- ✦ **डगलस व हॉलैण्ड** - शिक्षा मनोविज्ञान की विषय सामग्री का संबंध शिक्षा की प्रक्रिया में भाग लेने वाले व्यक्ति की प्रकृति, मानसिक जीवन व व्यवहार से है।

1. वंशानुक्रम व विकास का अध्ययन
2. अभिवृद्धि व विकास का अध्ययन
3. अधिगम व अभिप्रेरणा का अध्ययन
4. बुद्धि व व्यक्तित्व का अध्ययन
5. रुचियों व मूल प्रवृतियों का अध्ययन
6. शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन
7. मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन
8. मापन व मूल्यांकन का अध्ययन (Measurment)
9. अनुशासन, शिक्षण विधियों व पाठ्यक्रम का अध्ययन
10. असामान्य बालकों का अध्ययन
11. बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन
12. सीखने की क्रियाओं का अध्ययन
13. निर्देशन व परामर्श -

✦ **रूसो** - बच्चा एक पुस्तक की तरह है जिसके प्रत्येक पृष्ठ का अध्यापक को अध्ययन करना है।

14. अनुसंधान (Research)
15. मानसिक क्रिया (संवेदना प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, चिन्तन, सीखना, कल्पना) सभी का अध्ययन
16. अभिव्यक्ति व व्यवहार
    1. ज्ञानात्मक व्यवहार
    2. भावात्मक - संवेग, अनुभूति, भावना
    3. क्रियात्मक - चलना, खेलना, दौड़ना, कूदना का अध्ययन
17. शारीरिक प्रक्रिया - रक्त दबाव, नाड़ी गति, हृदय का अध्ययन
18. समूह गतिशीलता व समूह (व्यवहार) (Group dynamics and behaviour) का अध्ययन

## शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य-

- ✦ **स्कीनर** - शिक्षा मनोविज्ञान उन खोजों को शैक्षिक परिस्थितियों में प्रयोग करता है जो मानव प्राणियों के अनुभव व व्यवहार से है।
- ✦ **गैरिसन व अन्य** - शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य व्यवहार का ज्ञान, भविष्यवाणी व नियंत्रण।
- ✦ **कुप्पूस्वामी** - उद्देश्य मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को उत्तर शिक्षण व उत्तर अधिगम के हितों में प्रयोग करता है।

1. सिद्धांतों की खोज व तथ्यों का सग्रंह
2. बालक के व्यक्तित्व का विकास
3. शिक्षण कार्य में सहायता प्रदान करना
4. शिक्षण विधि के सुधार
5. शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति
6. अधिगम प्रक्रिया को सयमन
7. अध्यापक को निर्देशन देना
8. समूह व गति को समझने में योगदान देने

Scanned with CamScanner

9. मूल्यांकन की उचित विधियाँ प्रस्तुत करना
10. अभिभावकों का मार्गदर्शन करना
11. व्यवसायिक निर्देशन देना
12. उचित पाठ्यक्रम बनाना

- **गैरिसन** – शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य व्यवहार का ज्ञान, भविष्यवाणी व नियंत्रण

## शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता शिक्षक के लिए (Functions and importance)–

- **गैरिसन** – मनोविज्ञान त्रुटियों से हमारी रक्षा करता है।
- **जोड** – 'शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के वश की बात नहीं, यह कला है।'
- **कोलसेनिक** – शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक का विशिष्ट परिस्थितियों के विशिष्ट समस्या का समाधान करने के निर्णय प्रदान करता है।
- **स्कीनर** – 'शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक के लिये तैयारी की आधारशिला है।', यह अध्यापक को शिक्षण विधियों का चुनाव करने व सीखने के अनेक सिद्धान्त प्रस्तुत करने में मदद करती है।
- **एलिस क्रो** – शिक्षकों को अपने शिक्षण में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करना चाहिए जो सफल व प्रभावी शिक्षण के लिए आवश्यक है।
- **मॉण्टेसरी** – शिक्षक को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जितना अधिक ज्ञान होता है वह उतना ही जानता है कि कैसे पढ़ाया जाये।
- **कोलसेनिक** :- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक को यह निर्णय प्रदान करने में सहायता देता है कि वह विशिष्ट परिस्थितियों में विशिष्ट समस्याओं का समाधान कैसे करें।
- **कुप्पुस्वामी** :- मनोविज्ञान शिक्षक को अनेक धारणाएँ व सिद्धान्त प्रदान करके उसकी उन्नति में योगदान देता है।
- **पील** :- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को विद्यार्थी के विकास को समझने, क्षमताओं को जानने, सीखने की प्रक्रिया से अवगत कराता है।
- **ब्लेयर** :- मनोविज्ञान निष्पक्ष की विधियों से अप्रशिक्षित कोई भी व्यक्ति उन कार्यों व कर्तव्यों का पालन नहीं कर सकता है जिसका दायित्व उस पर हो।
- **थॉमस फूलर** :- अध्यापकों को उतने ही बच्चों के स्वभाव का ज्ञान होना चाहिए जितना कि पुस्तकों का।

1. जन्मजात स्वभाव का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक
2. बालक की आवश्यकताओं व समस्याओं को जानने में सहायक
3. बाल विकास का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक
4. व्यक्तिगत विभिन्नताओं को जानने में सहायक
5. चरित्र निर्माण में सहायक
6. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक
7. शिक्षण विधि का चयन करने में सहायक
8. समय सारणी का निर्माण करने में सहायक
9. आत्मानुशासन स्थापित करने में सहायक
10. उपयोगी पाठ्यक्रम का निर्माण करने में सहायक
11. शिक्षक को प्रभावी बनाने में सहायक
12. अचेतन मन का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक
13. निर्देशन ज्ञान प्राप्त करने में सहायक
14. अध्यापक छात्र संबंधों को सुधारने में सहायक
15. आत्मज्ञान की मदद में सहायक

## शिक्षार्थी अधिगमकर्ता के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता

- **विलियम जेम्स** :- पुस्तक '**टॉक टू टीचर्स**' (**शिक्षा मनोविज्ञान की प्रथम पाठ्य पुस्तक**) में बताया है शिक्षण प्रत्येक स्थान पर मनोविज्ञान सम्मत रहा है मनोविज्ञान हमें गलत धारणाओं, नियमों व त्रुटियों से बचाता है।

1. स्वयं की योग्यता व शक्तियों को जानने,
2. अधिगम हेतु अभिप्रेरित करने
3. ध्यान व रूचि जागृत करने
4. वंशानुक्रम व वातावरण का ज्ञान देने
5. स्वमूल्यांकन करने
6. व्यवहार का परिमार्जन करने
7. शिक्षण अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त करने में।
8. शारीरिक व मानसिक विकास का ज्ञान
9. रूचि व मूल प्रवृत्तियों को
10. आत्म मूल्यांकन

- **कुप्पू स्वामी** – शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य मनोविज्ञान के सिद्धांतो को उत्तम शिक्षण व उत्तम अधिगम के हितों के लिए प्रयोग करना है।

## शिक्षा मनोविज्ञान की विधियाँ–

**1. आत्मनिष्ठ विधियाँ (Subjective Method) :-**

**(i) आत्म निरीक्षण विधि (Introspection Method)** :- स्वयं का स्वयं द्वारा मूल्यांकन करना।

- आत्मनिष्ठता का दोष पाया जाता है।
- इस विधि का मूल रूप से संबंध जॉन लॉक से है लेकिन शिक्षा मनोविज्ञान में इसका प्रयोग विलियम वुण्ट व टिचेनर ने किया है।
- **विलियम जेम्स** ने इसकी आलोचना करते हुये लिखा है इसके द्वारा बालक के व्यवहार का अध्ययन करना ठीक वैसा है, जैसे – अँधेरे को जानने के लिये एक साथ लाइट जला देना।
- **लाभ** – सरल प्राचीन विधि, कम समय वाले किसी समय व स्थान में अध्ययन संभव।
- **हानि** – अर्द्धचेतन व अचेतन अनुभव पर लागू नहीं, सार्वभौमिक प्रयोग नहीं। वस्तुनिष्ठता का अभाव।

**(ii) गाथा वर्णन विधि** :- कुछ निश्चित बिन्दुओं के आधार पर व्यक्ति अपनी जीवनकथा लिखता है।

**2. वस्तुनिष्ठ विधि (Objective Method) :-**

**(i) निरीक्षण विधि (Observational Method)**:- अवलोकन विधि (प्रेक्षण)

प्रतिपादक – वाटसन

**मुख्य प्रकार :-**

1. **स्वाभाविक प्रेक्षण (Natural)** – वास्तविक स्थिति में निरीक्षण
2. **सहभागी (Participative)** – सदस्य बनकर साथ रहकर निरीक्षण
3. **असहभागी (Non Participative)** – बिना साथ रहकर दूर से निरीक्षण

- यह विधि छोटे बालक, जानवर व पागलों का अध्ययन करने के लिये उपयुक्त है।
- **अन्य प्रकार** – 2 (क) औपचारिक (ख) अनौपचारिक (ग) निर्देशित अवलोकन (घ) प्रमाणिक अवलोकन
- अवलोकन विधि ज्ञानेन्द्रियों पर आधारित प्रत्यक्ष विधि है। ये औपचारिक,

Scanned with CamScanner

अनौपचारिक, गुणात्मक व संख्यात्मक रूप में होती है।

✦ अवलोकन के गुण -
(1) वस्तुनिष्ठ व वैज्ञानिक होता है।
(2) नियोजित व क्रमबद्ध होता है।
(3) विशिष्ट बच्चों के उपचार में उपयोगी
(4) विश्वसनीय व मितव्ययी है।
(5) परिवर्तनशील होता है।

✦ अवलोकन के दोष -
(1) प्रशिक्षित अवलोकनकर्ता का अभाव
(2) व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान नहीं।
(3) अचेतन मन व आन्तरिक व्यवहार का अध्ययन संभव नहीं।

**(ii) प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method) :-**
प्रतिपादक - विलियम वुण्ट

- पूर्व निर्धारित दशाओं में मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, उद्दीपक व अनुक्रिया में सम्बन्धों का अध्ययन।
- इसकी शुरूआत समस्या से होती है। कार्य कारण संबंध की स्थापना में सहायता करती है।

✦ प्रयोगात्मक विधि के चरण -
1. समस्या से प्रयोग का प्रारम्भ
2. समस्या सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन
3. समस्या सम्बन्धी परिकल्पना का निर्माण
4. प्रयोज्य/विषय (जिन पर प्रयोग होगा) का चयन
5. चर का अध्ययन :-
   1. स्वतंत्र चर - वातावरण, अनुदेशन, कार्य व विषयी चर आते है।
   2. जैविक चर - आदत की शक्ति, चालक प्रोत्साहन, अवरोध, व्यक्तिगत विभिन्नताएं
   3. आश्रित चर - जिन पर पड़े प्रभाव का अध्ययन होता है।
6. प्रयोग की योजना निर्माण
7. उपकरण व सामग्री का विवरण
8. नियंत्रण - चरों व परिस्थितियों पर
9. निर्देश - प्रयोज्यों को
10. विधि (आकड़ों का सारणीयन)
11. परिणाम
12. चर्चा व सामान्यीकरण

✦ लाभ - विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ, वैज्ञानिक, सार्वभौमिक विधि, भविष्यवाणी में उपयोगी, परिकल्पना परीक्षण की सर्वोत्तम विधि, पाठ्यक्रम निर्माण, शिक्षण विधि, समय सारणी निर्माण, मूल्यांकन, निर्देशन व शिक्षा के उद्देश्य निर्धारण में उपयोगी।

✦ हानियाँ - मंहगी, समय अधिक लगता है, प्रशिक्षण की आवश्यकता।

✦ टिचेनर - प्रयोगात्मक अन्तदर्शन सर्वोत्तम मनोवैज्ञानिक विधि है।

**3. व्यक्ति इतिहास विधि (Case study Method) (निदानात्मक विधि) :-**
- प्रतिपादक - टाइडमैन,
- भूतकाल से लेकर वर्तमान काल तक का अध्ययन
- इस विधि का प्रयोग मूल रूप से समस्यात्मक बालक, बाल अपराधी बालक, मानसिक रोगी तथा प्रतिभाशाली बालकों के अध्ययन में किया जाता है।
- क्रो एण्ड क्रो - इसमें व्यक्ति विगत इतिहास व वर्तमान स्थिति शामिल होती है इसका प्रयोग छात्र की गंभीर समस्या के समाधान में होता है।
- पी.टी. यंग - किसी व्यक्ति या समूह का गहन अध्ययन।

✦ सोपान :-
1. केस ज्ञात करना।
2. परिकल्पना का निर्माण
3. विद्यार्थियों, माता-पिता, मित्र, अध्यापक व समाज से जानकारी एकत्रित करना।
4. सूचनाओं का विश्लेषण
5. समस्या को हल करना/उपचार के साधनों का प्रयोग।
6. समायोजन के साधनों का विवरण देकर सहायता।

- इस विधि का प्रयोग - प्रतिभाशाली बालक, समस्यात्मक, कुसमायोजित, असाधारण योग्यता वाले बालक, शैक्षिक व व्यवसायिक कठिनाई बालक, कदाचारी व मंद व पिछड़े बालक के लिए किया जाता है।
- इस विधि में बालक के व्यक्तिगत इतिहास, पारिवारिक इतिहास, शारीरिक इतिहास, स्कूल इतिहास, व्यावसायिक इतिहास, सामाजिक इतिहास व मनोवैज्ञानिक इतिहास के तथ्य एकत्रित होते हैं।
- लाभ - विशाल व गहन अध्ययन में कुसमायोजन के कारण जाने व उपचार करने, विशेष अयोग्यता को दूर करने व स्कूल की समस्या के अध्ययन में उपयोगी।
- दोष - व्यक्तिनिष्ठ है, समय अधिक लगता है, प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता।

**4. प्रश्नावली विधि (Questionnaire Method) :-**
- आदि जनक - सुकरात
- मनोविज्ञान में प्रयोग - वुडवर्थ
- गुड व हाट के अनुसार - प्रश्नावली से तात्पर्य एक ऐसे साधन से होता है जिसमें एक फार्म के सहारे प्रश्नो के उत्तर दिये जाते हैं तथा जिसे विद्यार्थी स्वयं भरते हैं।

✦ चार प्रकार -
(1) खुली/युक्त प्रश्नावली (2) प्रतिबंधित प्रश्नावली (3) चित्रित प्रश्नावली (4) मिश्रित प्रश्नावली

**5. मनोविश्लेषण विधि (Psycho Analytic Method) :-**
- प्रतिपादक - सिग्मण्ड फ्रायड
- अचेतन मन का अध्ययन किया जाता है व व्यक्तिगत अध्ययन व निर्देशन में उपयोगी।

✦ दो प्रकार :-
(क) स्वतंत्र साहचर्य विधि (ख) स्वप्न विश्लेषण विधि
(ग) शब्द सम्पर्क विधि

**6. समाजमिति विधि (Sociometry) :-**
- प्रतिपादक - जे. एल. मोरेनो
- इस विधि के द्वारा समूह की संरचना का अध्ययन किया जाता है।

**7. विभेदात्मक विधि :-**
- (कैटल) वैयक्तिक भेदों का अध्ययन किया जाता है।

**8. विकासात्मक विधि (Developmental Method) :-**
- प्रतिपादक - जीन पियाजे
- बालक के विकास की अवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।

**9. मनोभौतिकी विधि (Psycho Physical Method) :-** मन व शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन, उद्दीपन के स्तर व व्यक्ति में उत्पन्न अनुभूतियों के मध्य मात्रात्मक संबंधों का अध्ययन। इसमें तीन विधियां होती हैं -

✦ औसत त्रुटि विधि - इस विधि में दो उद्दीपक मानक व परिवत्य

Scanned with CamScanner

उद्दीपन साथ दिये जाते है इस विधि का प्रयोग बालक की प्रत्यक्षात्मक समस्या जैसे भ्रम आदि की मात्रा मापन में किया जाता है। यह समायोजन विधि भी कहलाती है।

- **सीमा विधि** – इस विधि में उद्दीपन के मान में अल्पतम परिवर्तन करते हुये उसे क्रमबद्ध रूप से घटाया या बढ़ाया जाता है। इसके अवरोध अवरोही व आरोही दोनों शृंखला का प्रयोग होता है। जब बालक को स्पष्ट प्रत्यक्षण ना हो जाये।
- **सतत उद्दीपन विधि** – इस विधि में उद्दीपन को आरोही व अवरोही शृंखला में ना करके अनियमित रूप से प्रस्तुत किया जाता है इसका प्रयोग ध्यान संबंधी समस्याओं के अध्ययन में किया जाता है।

10. **उपचारात्मक विधि (Clinical Method) :-** आचरण में कठिनाई महसूस करने वाले व संवेगात्मक समस्या से ग्रस्त बालकों का अध्ययन किया जाता है। (समस्यात्मक बालकों के व्यवहार का अध्ययन)
11. **तुलनात्मक विधि :-** अरस्तु – व्यवहार समानताओं व असमानताओं का अध्ययन
12. **सहसंबंधात्मक/विभेदी/सर्वे विधि (Correlation) :-**

- जिन समस्याओं का अध्ययन प्रयोगात्मक विधि द्वारा नहीं होता उसका अध्ययन उन समस्याओं का अध्ययन जिनमें स्वतंत्र चरों में जोड़-तोड़ करके अध्ययन संभव नहीं। इसके जनसंख्या में एक प्रतिदर्श (Sample) का चयन करके अध्ययन किया जाता है।
- इस विधि में चार विधियों के द्वारा आंकड़ों का संग्रह किया जाता है-(1) साक्षात्कार (2) डाक सर्वे (3) पैनल सर्वे (4) टेलिफोन सर्वे
- इस विधि का उद्देश्य चरों के मध्य साहचर्य की खोज करना व पूर्व कथन करना है।

- **सर्वेक्षण के प्रकार –**

1. स्कूल सर्वेक्षण
2. परीक्षण सर्वेक्षण
3. कृत्य सर्वेक्षण (Job) – कर्मचारियों के उत्तरादायित्व, कार्य, प्रकृति के बारे में जानकारी
4. सामाजिक सर्वेक्षण
5. जनमत सर्वेक्षण (सार्वजनिक)
6. प्रलेख सर्वेक्षण (पाठयक्रम, पाठ्यपुस्तक का)

13. **रेटिंग विधि (Rating) :-** बालक के व्यवहार की व्याख्या वर्ग मापनी पर किसी स्वाभाविक परिस्थिति में, जैसे खेल का मैदान इत्यादि में करते है –
(1) आंकिक रेटिंग (2) आकृतिक रेटिंग
(3) बाधिक चयन रेटिंग
14. **कोटि विधि :-** बालक में आत्मनिष्ठ शीलगुण जैसे ईमानदारी व अन्य चारित्रिक गुणों के अध्ययन में असमानान्तर विधि के रूप में किया जाता है। इसमें शिक्षक बालक को शीलगुणों के आधार पर उच्च कोटि से निम्न कोटि में श्रेणी दिया करते हैं।
15. **कालानुक्रमित विधि (Loangitudinal Method) :-** इसमें एक ही समूह का अध्ययन भिन्न-भिन्न समय पर उनके व्यवहार व होने वाले परिवर्तनों के आधार पर किया जाता है वह समय अवधि शोध विधि है।
16. **अनुप्रस्थ काट विधि (Cross Sectional Method) :-** यह विधि कालानुक्रमिक विधि के विपरीत है इसके अलग-अलग उम्र व सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों को समूह बनाकर एक समय में एक साथ अध्ययन किया जाता है। सभी समूह के व्यवहार का मापन कर तुलना की जाती है।
17. **आनुक्रमिक डिजाइन विधि (Sequential Design) :-** यह कालानुक्रमिक विधि व अनुप्रस्थ काट विधि दोनों को मिलाकर अध्ययन किया जाता है। इसके शोधकर्ता विभिन्न आयु व वर्गों के सह भागियों का चयन करके एक समूह बनाकर भिन्न-भिन्न समय अन्तराल पर अध्ययन किया जाता है।
18. **साक्षात्कार विधि :-** आमने सामने बैठकर विचारों का आदान-प्रदान करन साक्षात्कार कहलाता है। इसके दो प्रकार हैं – संरचित (प्रश्न निश्चित क्रम में) व असंरचित (इसमें कोई निर्धारित क्रम नहीं होता है।)

## शिक्षा मनोविज्ञान की विधियों का सामान्य वर्गीकरण

1. **अवलोकन विधि** – इसमें 3 विधियाँ शामिल है।
   (1) अन्तर्मुखी अवलोकन (आत्मनिरीक्षण)
   (2) बाह्यमुखी अवलोकन
   (3) प्रयोगात्मक विधि
2. **प्रतिपादन की विधि में** – 5 विधियाँ शामिल हैं।
   1. मनोविश्लेषण
   2. केस इतिहास
   3. विकासात्मक
   4. तुलनात्मक
   5. रोग विज्ञान से संबंधित विधि

- **विशेष :-**

1. डेमोक्रेटस पहले दार्शनिक थे, जिन्होंने बच्चों के व्यक्तित्व विकास में घरेलू शिक्षा के महत्व पर बल दिया।
2. प्रेक्षण विधि का प्रतिपादन बाण्डुरा द्वारा किया गया।
3. जॉन डीवी ने 1894 में शिकागो विश्वविद्यालय में पहली वृहद शिक्षा मनोविज्ञान की प्रयोगशाला की स्थापना की।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

- विद्यार्थियों में सामाजिकता के गुणों का विकास करने वाली शिक्षण विधि है ?
**(अध्यापक-III ग्रेड-2009, III ग्रेड शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) समस्या समाधान विधि (B) प्रायोजना विधि
(C) समाजीकृत अभिव्यक्ति (D) व्याख्यान विधि (C)

- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक की मदद करता है, जब-
**(PTI-II ग्रेड - 2012)**
(A) वह अध्यापक को बच्चों के प्रति लापरवाह बना देता है।
(B) वह अध्यापक को दर्शनशास्त्र और सामाजिक विज्ञान के प्रति उपेक्षित बना देता है।
(C) वह आवश्यक पर्यावरण को दूर रखता है।
(D) वह अध्यापक को अधिगम के नियमों तथा प्रक्रियाओं के प्रति एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। (D)

- एक अध्यापक शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन के बिना अपना कार्य पूरा नहीं कर सकता, क्योंकि- **(PTI-III ग्रेड-2012)**
(A) शिक्षा मनोविज्ञान वैयक्तिक भिन्नताओं और शिक्षा की समस्याओं के हलों से गहन रूप से संबंधित है।

Scanned with CamScanner

(B) शिक्षा मनोविज्ञान अधिगमकर्ता के व्यक्तिगत तथा सामाजिक समायोजन की उपेक्षा करता है।
(C) शिक्षा मनोविज्ञान अधिगम के सिद्धांतों एवं नियमों का निर्धारण नहीं करता है।
(D) शिक्षा मनोविज्ञान विद्यार्थियों की केवल कतिपय तथ्यों एवं सूचनाओं को रटकर याद कर लेने में मदद करता है।(A)

❖ लिण्डग्रेन के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का नाभीय केन्द्रीय क्षेत्र नहीं है ? **(PTI -III ग्रेड-2012)**
(A) अधिगमकर्ता (B) अधिगम विषयवस्तु
(C) अधिगम प्रक्रिया (D) अधिगम परिस्थिति (B)

❖ शिक्षा मनोविज्ञान अध्ययन करता है ? **(PTI -II ग्रेड-2012, शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) आत्मा का धार्मिक परिस्थितियों में।
(B) मानव-व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों में।
(C) चेतन्यता का असीमित परिस्थितियों में।
(D) मस्तिष्क का बौद्धिक परिस्थितियों में। (B)

❖ निम्न में से कौनसा कथन, शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ को सबसे अधिक सही ढंग से प्रकट करता है ? **(Science-II ग्रेड-2010)**
(A) यह व्यक्ति के मन के अध्ययन का विज्ञान है।
(B) यह व्यक्ति के अनुभवों का विज्ञान है।
(C) इसका संबंध केवल व्यक्ति की सामाजिक प्रक्रियाओं से है।
(D) यह शिक्षा को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। (D)

❖ शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है, क्योंकि - **(अध्यापक-II ग्रेड-2011)**
(A) यह केवल विज्ञान का अध्ययन करता है।
(B) शिक्षा मनोविज्ञान में केवल सूचनाओं के आधार पर सिद्धांतों का निर्माण किया जाता है।
(C) शैक्षिक वातावरण में अधिगमकर्ता के व्यवहार का वैज्ञानिक विधियों के माध्यम से अध्ययन किया जाता है।
(D) इसमें केवल विद्यार्थियों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। (C)

❖ शिक्षा की प्रक्रिया में प्रेरणा का महत्त्व है, इस बात को ध्यान में रखकर अध्यापक को निम्न में से कौनसा कार्य नहीं करना चाहिए ? **(Science-II ग्रेड-2010)**
(A) कार्य के लक्ष्य को स्पष्ट करना।
(B) शिक्षार्थी को सामाजिक कार्यों में भाग लेने के अवसर प्रदान करना।
(C) इनामों का प्रलोभन देकर बालकों में प्रतिद्वन्द्विता पैदा करना।
(D) बालकों को अपने कार्य में सफल होने के अवसर प्रदान करना। (B)

❖ शिक्षा के प्रति मनोविज्ञान का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान निम्न में से कौनसा है ? **(English-II ग्रेड-2010)**
(A) शिक्षा के महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों का पता लगाना।
(B) व्यक्तिगत गुणों के आधार पर शिक्षार्थियों का विभाजन।
(C) मानव व्यवहार का ज्ञान प्रदान करना।
(D) उचित शिक्षण विधियों को अपनाने में सहायक होना। (C)

❖ सर्वप्रथम मनोविज्ञान को किस विषय का अध्ययन करने वाले विषय के रूप में परिभाषित किया गया?
(A) मन का अध्ययन (B) आत्मा का अध्ययन
(C) चेतना का अध्ययन (D) व्यवहार का अध्ययन (B)

❖ निम्न में से कौन मनोवैज्ञानिक नहीं है ? **(संस्कृत-II, लेवल-2010)**
(A) जॉन डीवी (B) वाटसन
(C) हल (D) स्किनर (A)

❖ ग्रीक भाषा के शब्द साइको का अर्थ है ? **(संस्कृत-II, 2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) मन (B) चेतना
(C) व्यवहार (D) आत्मा (D)

❖ निम्न में से कौनसा क्षेत्र मनोविज्ञान के अंतर्गत नहीं आता ? **(संस्कृत-II, लेवल-2010)**
(A) असामान्य मनोविज्ञान (B) औद्योगिक मनोविज्ञान
(C) आर्थिक मनोविज्ञान (D) पशु मनोविज्ञान (C)

❖ "तुम मुझे कोई भी बालक दे दो और मैं उसे कुछ भी बना सकता हूँ।" यह दावा किसका है ? **(III ग्रेड शिक्षक भर्ती, 2012, हिन्दी द्वितीय श्रेणी 2010)**
(A) मैक्डूगल (B) कोहलर
(C) वाटसन (D) पावलॉव (C)

❖ वर्तमान समय में मनोविज्ञान है ? **(हिन्दी द्वितीय श्रेणी-2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) मस्तिष्क का विज्ञान (B) व्यवहार का विज्ञान
(C) चेतना का विज्ञान (D) आत्मा का विज्ञान (B)

❖ शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन शिक्षक को इसलिए करना चाहिए ताकि ? **(हिन्दी-II ग्रेड-2010)**
(A) छात्रों को आसानी से प्रभावित कर सके
(B) स्वयं को समझा सके
(C) पशुओं पर प्रयोग कर सके
(D) शिक्षण को अधिक प्रभावी बना सके (D)

❖ साइकोलॉजी शब्द की उत्पत्ति किस भाषा से हुई थी ? **(उर्दू-II ग्रेड-2010)**
(A) अंग्रेजी (B) रूसी
(C) ग्रीक (D) स्पेनिश (C)

❖ मनोविज्ञान अध्ययन है ? **(अध्यापक-III ग्रेड-2009, III ग्रेड शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) व्यवहार का
(B) व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन
(C) आत्मा का

(D) आदतों का (B)

- शिक्षा मनोविज्ञान एक अध्यापक के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह उसे सहायता करता है ?
**(III ग्रेड शिक्षक भर्ती, 2012, विज्ञान-II ग्रेड-2010)**
(A) उद्देश्य निर्धारित करने में
(B) विद्यार्थियों को सीखने हेतु अभिप्रेरित करने में
(C) अपने पाठ की विषय वस्तु तय करने में
(D) सहायक शिक्षण सामग्री काम में लेने में (B)

- निम्नलिखित में से कौनसी समस्या शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में आती है ?
**(अध्यापक-II ग्रेड-2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) शिक्षकों की अनुपस्थिति
(B) शिक्षा का गिरता स्तर
(C) विद्यालय में बच्चों का कम नामांकन
(D) शैक्षिक पिछड़ापन (D)

- निम्न में से कौनसा क्षेत्र मनोविज्ञान के अंतर्गत नहीं आता है?
**(Urdu-II ग्रेड-2010)**
(A) प्रायोगिक मनोविज्ञान (B) वैयक्तिक मनोविज्ञान
(C) असामान्य मनोविज्ञान (D) औद्योगिक मनोविज्ञान (B)

- निम्न में से किस दृष्टि से शिक्षा मनोविज्ञान उपयोगी नहीं है?
**(Urdu-II ग्रेड-2010)**
(A) बालकों में मानसिक अस्वस्थता का पता लगाने में।
(B) शिक्षण विधियों के चयन में।
(C) छात्रों को अभिप्रेरित करने में।
(D) पशुओं पर प्रयोग करने में। (D)

- "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है।" यह कथन है ?
**(Maths-II ग्रेड-2010, तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) वुडवर्थ का (B) जैम्स ड्रेवर का
(C) वाटसन का (D) स्किनर का (C)

- निम्न में से कौनसा क्षेत्र मनोविज्ञान के अंतर्गत नहीं आता है?
**(गणित-II ग्रेड-2010)**
(A) औद्योगिक मनोविज्ञान (B) राजनैतिक मनोविज्ञान
(C) विकृत मनोविज्ञान (D) असामान्य मनोविज्ञान (B)

- निम्न में से कौनसे विचारक के अनुसार शिक्षा व्यक्ति की भीतरी शक्तियों को उभारने की प्रक्रिया है ?
**(विज्ञान-II ग्रेड-2010)**
(A) फ्रॉबेल (B) पेस्टालॉजी
(C) थार्नडाइक (D) प्लेटो (B)

- शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमताओं का परिपूर्णता में विकास करती है, यह कथन किसका है ?
**(छत्तीसगढ TET-II लेवल-2011)**
(A) स्वामी विवेकानन्द (B) स्किनर
(C) पेस्टालॉजी (D) रविन्द्रनाथ टैगोर (A)

- मनोविज्ञान का ज्ञान उपयोगी है ?
**(बिहार TET-II लेवल-2012 तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) शिक्षक के लिए
(B) अभिभावक के लिए
(C) विद्यालय प्रशासक के लिए
(D) उपर्युक्त सभी के लिए (D)

- अवलोकन विधि का उपयोग मनोवैज्ञानिक करते हैं ?
**(बिहार TET-II लेवल-2012)**
(A) बच्चों के व्यवहार के आकलन में।
(B) प्राकृतिक सुन्दरता निहारने में।
(C) व्यवस्था की कमियों का पता लगाने में
(D) उपर्युक्त सभी (A)

- शिक्षण की किस विधि से अधिगम में गुणात्मक परिवर्तन हो सकता है ? **(CTET-I लेवल-2012)**
(A) बाल केन्द्रित शिक्षा पद्धति अपनाकर
(B) रटने को प्रोत्साहित करके
(C) शिक्षण की तकनीकें अपनाकर
(D) परीक्षा परिणामों पर केन्द्रित होकर (A)

- प्रश्नोत्तर विधि का जनक किसे माना जाता है?
**(BTET-I लेवल-2012)**
(A) माण्टेसरी को (B) काल्डवैल कुक को
(C) फॉबेल को (D) सुकरात को (D)

- शिक्षा मनोविज्ञान की प्रवृत्ति की मुख्य विशेषता है ?
**(बिहार TET-I लेवल-2012)**
(A) बाल मनोविज्ञान पर बल
(B) बालक के व्यक्तित्व का आदर
(C) व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार शिक्षण
(D) इनमें से सभी (C)

- शिक्षा मनोविज्ञान के मुख्य तत्त्व है ?
**(बिहार TET-I लेवल-2012)**
(A) शिक्षार्थी (B) सीखने की प्रक्रिया
(C) अध्यापक (D) इनमें से सभी (D)

- शिक्षा शास्त्र (पैडागोगी) की अवधारणा निम्न में से किस कथन में प्रतिबिम्बित नहीं रही है ? **(प्रधानाध्यापक परीक्षा-2012)**
(A) शिक्षण एवं अधिगम का वैज्ञानिक ज्ञान
(B) शिक्षण एवं अधिगम की कला एवं विज्ञान
(C) अमूर्तिकरण एवं सामान्यीकरण का विज्ञान
(D) शिक्षक-शिक्षार्थी एवं तकनीकी संसाधनों का एकीकरण (C)

- जर्मनी के विलहेम वुण्ट जाने जाते हैं :
***[School Lect. Exam-2013]***
(A) पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला खोलने के लिए
(B) कम्प्यूटर के क्षेत्र में कार्य करने के लिए
(C) सामाजिक विकास का सिद्धान्त प्रतिपादित करने के लिए
(D) चिह्न सिद्धान्त पर कार्य करने के लिए (A)

Scanned with CamScanner

# 2 शिक्षण अधिगम में मनोविज्ञान का महत्त्व

## शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

### शिक्षण अधिगम–

- **शिक्षण का सामान्य अर्थ** – 'शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जाता है।'
- **स्कीनर** – 'शिक्षण पुनर्बलन की आकस्मिकताओं का क्रम है।'
- **गेज** – शिक्षण का उद्देश्य दूसरों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है।
- **स्मिथ** – 'शिक्षण उद्देश्य निर्देशित किया है जिसके द्वारा सीखने के लिये उत्सुकता उत्पन्न की जाती है।'
- **क्लार्क** – 'शिक्षण के प्रारूप तथा संचालन की व्यवस्था इसलिये की जाती है कि बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जा सकें।'
- **मॉरीसन** – शिक्षण में एक परिपक्व व्यक्ति कम परिपक्व को शिक्षा प्रदान करता है।
- **रायन्स** – दूसरों को सीखने के लिए दिशा निर्देश देने व अन्य प्रकार से उन्हें निर्देशित करने की प्रक्रिया शिक्षण है।
- **रायबर्न** के अनुसार – शिक्षण छात्रों को उनकी शक्तियों के विकास में योगदान देता है।
- **बर्टन** – शिक्षण अधिगम हेतु उद्दीपन मार्ग प्रदर्शन व दिशा बोध है।
- **वर्ल्ड बुक इन साइक्लोपीडिया** – शिक्षण में एक व्यक्ति दूसरे को ज्ञानकौशल व अभिरुचि सिखाने में सहायता करता है।

### शिक्षण व शिक्षा में अन्तर–

| शिक्षण (Teaching) | शिक्षा (Education) |
|---|---|
| 1. शिक्षण एक विधि है जिसके द्वारा शिक्षा को प्रभावशाली बनाया जाता है। | 1. शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास का एक साधन है। |
| 2. शिक्षण, शिक्षा के अन्तर्गत एक संकुचित प्रकरण है। | 2. शिक्षा का स्वरूप व्यापक है। |
| 3. शिक्षण का सामान्यत: क्षेत्र स्कूल तक सीमित रहता है। | 3. यह जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं। |
| 4. शिक्षण के उद्देश्य, शिक्षा के लक्ष्यों के अनुसार होते है। | 4. शिक्षा के लक्ष्य राष्ट्र के सामाजिक, राजनीतिक तथा दार्शनिक पक्षों पर आधारित होते हैं। |
| 5. शिक्षण औपचारिक प्रक्रिया है। | 5. शिक्षा, औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार की होती है। |
| 6. शिक्षण पाठ्यक्रम पर आधारित रहता है। | 6. इसमें लक्ष्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियाँ आदि सभी पक्षों पर ध्यान दिया जाती है। |

### शिक्षण व अनुदेशन में अन्तर–

| शिक्षण | अनुदेशन |
|---|---|
| 1. अन्त: क्रिया युक्त | 1. अन्त: क्रिया आवश्यक नहीं |
| 2. शिक्षक होना आवश्यक है। | 2. शिक्षक होना आवश्यक नहीं (मशीन द्वारा दिया जा सकता है।) |
| 3. अनुदेशन शिक्षण का ही भाग है। | 3. अनुदेशन में शिक्षण नहीं होता। |
| 4. शिक्षण ज्ञानात्मक व क्रियात्मक पक्ष का विकास करता है। | 4. केवल ज्ञानात्मक पक्ष का प्रयोग। |

Scanned with CamScanner

## उत्तम शिक्षण की विशेषताएँ–

1. नियोजित होना चाहिए – योजना युक्त
2. क्रियाशीलता के अवसर उपलब्ध करवाये – शिक्षक व छात्र दोनों प्रश्न उत्तर करें।
3. लोकतांत्रिक हो – बालक की रुचि आधारित
4. निदानात्मक, उपचारात्मक होना चाहिए।
5. पूर्व ज्ञान पर आधारित – प्रस्तावना प्रश्न।
6. अभिप्रेरणा से युक्त होना चाहिए।
7. बालक की रुचि, योग्यता पर आधारित हो।
8. वांछनीय सूचना प्रदान करता हो।
9. संवाद मूलक व अन्तःक्रिया युक्त हो।
10. छात्र शिक्षक संबंध मधुर हो।
11. निर्देशात्मक हो न कि आदेशात्मक।
12. प्रगतिशील हो।
13. संवेगात्मक स्थिरता प्रदान करता हो।
14. वर्तमान व भावी तैयारी प्रदान करें।
15. सहयोग पर आधारित व वातावरण के अनुकूलन में सहायता प्रदान करें।
16. शिक्षक दार्शनिक, मित्र व निर्देशक के रूप में है।

## शिक्षण की विशेषताएँ–

1. शिक्षण औपचारिक
2. कला व विज्ञान दोनों
3. मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया
4. उद्देश्य युक्त क्रिया
5. ज्ञानात्मक व क्रियात्मक प्रक्रिया
6. कौशल युक्त प्रक्रिया
7. शिक्षण के दो पक्ष होते हैं – (क) सीखने वाला (ख) सिखाने वाला
8. शिक्षण सांकेतिक क्रियात्मक व शब्दिक व्यवहार के रूप में होता है।

## शिक्षण अधिगम का योगदान–

1. शिक्षण को द्विमुखी अन्तः क्रिया का रूप देना।
2. बालक के गुणों का अधिगम में प्रयोग करना।
3. शिक्षण व सीखने की दशा में परिवर्तन।
4. नवीन शैक्षिक आविष्कार विधियों पर बल।
5. शैक्षिक लक्ष्यों को निर्धारित करने में उपयोगी।
6. शिक्षा दर्शन व सिद्धान्तों का निर्माण।
7. सार्थक अधिगम पर बल।

## शिक्षण के चर तीन प्रकार–

1. **स्वतंत्र चर** – शिक्षक
2. **आश्रित चर** – विद्यार्थी
3. **मध्यस्थ चर** – शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम

## शिक्षण चर के कार्य–

1. **निदानात्मक** – छात्रों को क्या-क्या आता है। कहाँ-कहाँ कठिनाइयाँ हैं का पता लगाना।
2. **उपचारात्मक** – शिक्षण कौशल प्रयोग व पृष्ठ पोषण देना।
3. **मूल्यांकन** – व्यवहार परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन करना।

## शिक्षण की अवस्थाएँ–

✦ P.W. जैक्सन ने तीन अवस्थाएँ बतायी हैं–

1. **पूर्व क्रिया चरण** – पाठ योजना बनाना (कक्षा कक्ष में जाने से पूर्व)
2. **अन्तः क्रिया चरण** – कक्षा – कक्ष क्रिया (कक्षा कक्ष में प्रवेश करने के बाद)
3. **उत्तर क्रिया चरण** – मूल्यांकन

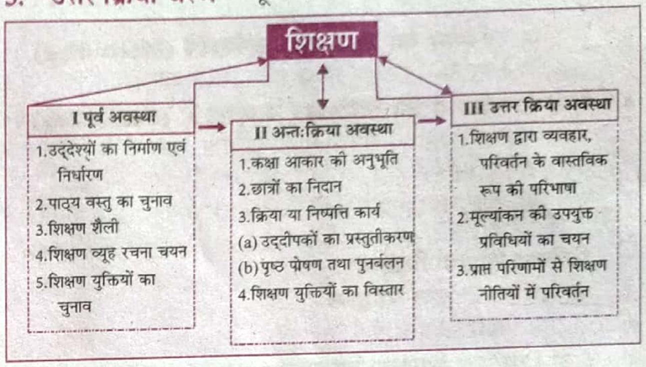


## शिक्षण अधिगम संबंध–

✦ **बर्नाड के अनुसार** – शिक्षक अधिगम का संबंध छात्र अधिगम शिक्षक से है।

बर्नाड के अनुसार शिक्षण अधिगम संबंध :-

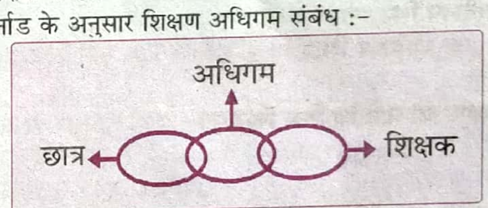


✦ शिक्षण व अधिगम एक – दूसरे के पूरक हैं, शिक्षक एक कार्य है अधिगम एक उपलब्धि, शिक्षण बाह्य है जबकि अधिगम आन्तरिक है।

**शिक्षण अधिगम अनुदेशन संबंध प्रारूप :-**

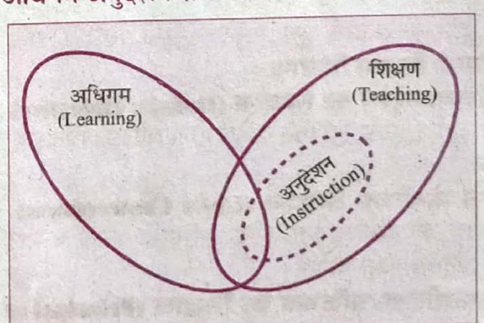


## शिक्षण अधिगम के आधार–

1. बालक की अभिवृद्धि पर बल
2. अध्यापक शिक्षण में कुशलता के साथ मानवीय गुणों से परिपूर्ण
3. छात्र शिक्षक संबंध सहयोगात्मक
4. शिक्षक को विज्ञान, कला का रूप प्रदान करना

## शिक्षण अधिगम के सोपान–

✦ I.K. डैवीज – पुस्तक -'**शिक्षण अधिगम का प्रबंधन**' पुस्तक – **मैंनजमेंट ऑफ टीचिंग एण्ड लर्निंग**

Scanned with CamScanner

**चार सोपान बताये :-**

1. **शिक्षण अधिगम का नियोजन ( प्लानिंग ) Planning :-** इसमें पाठ्यवस्तु विश्लेषण, कार्य विश्लेषण, उद्देश्यों का निर्धारण व उनको लिखना आदि क्रियाएँ की जाती हैं।
2. **शिक्षण अधिगम की व्यवस्था** Organizing **:-** इसमें शिक्षण विधि का चयन, श्रव्य-दृश्य सामग्री, सम्प्रेषण युक्तियों की सहायता से अधिगम वातावरण का निर्माण किया जाता है।
3. **शिक्षण अधिगम का अग्रसरण/मार्गदर्शन (Motivation) :-** अभिप्रेरित करना - शिक्षक छात्रों को प्रेरित करता है।
4. **शिक्षण अधिगम का नियंत्रण ( कन्ट्रोल ) (Contraling) :-** शिक्षण व अधिगम की सफलता को जाँचना, पुनः योजना बनाना व मूल्यांकन करना।

## शिक्षण सिद्धान्त–

✦ **विशिष्ट शिक्षण सिद्धान्त :-**

1. **परम्परागत शिक्षण सिद्धान्त -**
   ये निम्न प्रकार के होते हैं -
   **( अ ) म्यूटिक शिक्षण सिद्धान्त** - सुकरात - प्रश्नोतर पर बल
   **( ब ) सम्प्रेषण सिद्धान्त** - हरबर्ट
   **( स ) परिवर्तन सिद्धान्त** - थार्नडाईक, स्किनर, गुथरी
   **( द ) पारस्परिक पृच्छा सिद्धान्त** - सचमैन, पूछताछ पर बल
2. **अनुदेशन सिद्धान्त** - गार्डन
3. **शिक्षक व्यवहार सिद्धान्त** - शिक्षक एक सामाजिक प्राणी है - (म्यूक्स तथा स्मिथ)
4. **शिक्षण का मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त -** राबर्ट ग्लेशर (1962) व्याख्या की है। इसके चार भाग होते हैं - (1) अनुदेशन उद्देश्य, (2) प्रारम्भिक व्यवहार, (3) अनुदेशन सोपान, (4) मूल्यांकन
5. **शिक्षण का ज्ञानात्मक सिद्धान्त** - ब्रूनर, टाबा, आशुबेल, फिटल्सराल्ड
   • ज्ञान, समझ व बोध के विकास पर बल
6. **शिक्षण का गणितीय सिद्धान्त** - यह शिक्षण को व्यवस्थित, संगठित बनाने के लिए परिमाणात्मक दिशा का प्रयोग करता है।
   • डीयर, स्टकिन्सन, ब्रुश, मास्टेलर, एस्टे, बिडिल, हर्मन सीगल

✦ **सामान्य शिक्षण सिद्धान्त :-**

1. **निश्चित उद्देश्य का सिद्धान्त (Definite Objective)** - शिक्षण का उद्देश्य स्पष्ट, निश्चित व पूर्ण होना चाहिए। बिना उद्देश्य शिक्षण सफल नहीं है।
2. **बाल केन्द्रीयता सिद्धान्त (Child Centrerdness)** - शिक्षण बालक की आवश्यकता, रुचि, अभिवृति क्षमता व मानसिक स्तर के अनुसार होना चाहिए।
3. **क्रियाशीलता/सक्रियता का सिद्धान्त (Principal of Activeness)** - छात्र क्रियाशील होकर प्रयोगात्मक व अन्तःक्रिया द्वारा सीखे।
4. **पूर्व अनुभव का सिद्धान्त** - शिक्षण छात्र के पूर्व ज्ञान आधारित है।
5. **लोकतांत्रिक व्यवहार का सिद्धान्त** - जनतंत्रीय हो ना कि प्रभुत्ववादी।
6. **व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धान्त** - शिक्षण प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार है।
8. **वास्तविक जीवन से सम्बद्धता सिद्धान्त (Living with Actual Life)** - बालक के जीवन से जोड़कर पढ़ाया जाये।
9. **समवाय का सिद्धान्त (Principal of Carelation)** - विषयों को अन्य विषयों से जोड़ते हुये पढ़ाना।
10. **नियोजन का सिद्धान्त (Principal of Planing)** - शिक्षण योजना आधारित हो क्या व कैसे पढ़ाना है।
11. **चयन का सिद्धान्त (Principal of Selection)** - उपयुक्त व उद्देश्यों के अनुरूप विषयवस्तु का चयन हो।
12. **क्रियाओं का सिद्धान्त (Principal of Activity)** - फ्रोबेल - कार्य करके सिखना सर्वोतर शिक्षण है जैसे छात्र स्वयं करे - डाल्टन, प्रोजेक्ट, खोज विधि।
13. **प्रभावशाली व्यूह रचना सिद्धान्त (Effective Strategies)** - व्यूह रचना बालक के ज्ञान व स्तर पर आधारित हो।
14. **अनुकूल वातावरण व उचित नियंत्रण सिद्धान्त** - शिक्षण का वातावरण उचित व बिना बाधा के युक्त हो।
15. **उपचारात्मक शिक्षण सिद्धान्त (Principal of remedial teaching)** - छात्र की कमजोरी का पता लगाकर सुधार
16. **विभक्तीकरण सिद्धान्त (Principal of Division)** - विषयवस्तु को छोटे-छोटे भागों में विभक्त करके पढ़ाना।
17. **सहयोग व अभ्यास का सिद्धान्त** - शिक्षक व छात्र के सहयोग के आधार पर व पुनरावृति आधारित है।

## शिक्षण के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त–

1. **शिक्षण** का अभिप्रेरणा रुचि सिद्धान्त, अभिप्रेरणा व रुचि का प्रयोग है।
2. **तत्परता सिद्धान्त** - बालकों को मानसिक व शारीरिक रूप से तैयार करना।
3. **अभ्यास का सिद्धान्त** - बिन्दुओं की पुनरावृत्ति पर बल।
4. **पुनर्बलन का सिद्धान्त** - प्रत्येक क्रिया पर पुनर्बलन का प्रयोग है।
5. **मनोरंजन व परिवर्तन सिद्धान्त** - शिक्षण में मनोरंजन क्रिया, विराम व परिवर्तन का प्रयोग है।
6. **स्व-अधिगम सिद्धान्त** - छात्र स्वयं करके सीखे।
7. **समूह गतिशास्त्र सिद्धान्त** - समूह में अधिगम करवाना ज्यादा बेहतर होता है।
8. **सृजनात्मकता आधारित सिद्धान्त** - मौलिक क्रिया आधारित है।
9. सहानुभूति, सहयोग व उपचारात्मक आधारित शिक्षण है।
10. ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण पर आधारित है।

## शिक्षण सिद्धान्त (Principles of Teaching) विशेषताएँ/आवश्यकता–

1. शिक्षण के नियोजन, मूल्यांकन, ज्ञान को संगठित करने व उपयुक्त अधिगम परिस्थितियों के निर्माण में उपयोगी है।
2. शिक्षण के चरों का विश्लेषण करते हैं।
3. प्रभावशाली शिक्षण व शिक्षण नीतियों के बारे में ज्ञान प्रदान करते हैं।
4. शिक्षण सिद्धान्त निर्देशात्मक, सामाजिक व विशिष्ट होते हैं।
5. अनुदेशन व अधिगम पर बल।

## शिक्षण के सूत्र–

✦ अच्छा शिक्षक सदैव अपने ज्ञान तथा अनुभवों की व्याख्या छात्रों के मस्तिष्क तक पहुँचाने में सफल होता है। कुछ प्रमुख शिक्षण सूत्र आगे दिये जा रहे हैं। ये सूत्र सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत तथा विश्वसनीय माने जाते हैं :-

1. **ज्ञात से अज्ञात की ओर** - यह सूत्र हमें बताता है कि जो छात्रों को

ज्ञात है, छात्रों को जानकारी है अथवा छात्रों का पूर्व ज्ञान है, उसी के आधार पर नवीन ज्ञान प्रदान करना चाहिये। दूसरे शब्दों में छात्रों को पहले वे बातें बतानी चाहिये जो छात्रों को ज्ञात हैं। फिर इनको शिक्षक सदैव छात्रों के पूर्व ज्ञान पर नवीन ज्ञान आधारित करके पढ़ाता है।

2. **सरल से जटिल की ओर** – पाठ्य सामग्री को संगठित करते समय शिक्षक को चाहिये कि वे सरल प्रत्यय छात्र को पहले बतायें और क्रमानुसार कठिन या जटिल प्रत्ययों को उनके बाद। जब सरल प्रत्यय सीख लेते हैं, तो बाद में कठिन प्रत्यय भी समझ जाते हैं। इस प्रकार से छात्रों की रुचि शिक्षण प्रक्रिया में बनी रहती है।
3. **अनिश्चित से निश्चित की ओर** – प्रारम्भ में छात्रों के विचारों में अस्पष्टता तथा अनिश्चितता होती है। धीरे-धीरे उनमें परिपक्वता आती है नये-नये अनुभव मिलते हैं और वे स्पष्ट तथा निश्चित विचारों को स्वीकारने लगते हैं। एक अच्छा शिक्षक छात्रों की धुँधली तथा अनिश्चित धारणाओं तथा विचारों को निश्चयात्मकता प्रदान करता है।
4. **अनुभूत से युक्तियुक्त की ओर** – शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का प्रारम्भ अनुभूत ठोस अनुभवों से किया जाना चाहिये क्योंकि ठोस अनुभूत सत्यों की अनुभूति के बाद ही युक्तियुक्त चिन्तन आता है। शिक्षकों को छात्रों के समक्ष पहले प्रत्यक्ष अनुभव तथा उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिये, फिर उसे छात्रों के इन प्रत्यक्ष अनुभवों तथा उदाहरणों को तर्कयुक्त बनाने का प्रयास करना चाहिये।
5. **मूर्त से अमूर्त की ओर** – छात्र पहले मूर्त (स्थूल) वस्तुओं से परिचित होता है, उनके बारे में जानता है फिर इसके बाद वह इनसे सम्बन्धित सूक्ष्म (अमूर्त) विचारों को ग्रहण करता है। मूर्त तथ्य सरल, वस्तुनिष्ठ तथा बोधगम्य होते हैं। जबकि अमूर्त तथ्य काल्पनिक, कठिन, जटिल व भ्रामक होते हैं। अत: शिक्षा शुरू करते समय छात्रों को पहले सरल तथा मूर्त व स्थूल पदार्थों के विषय में ज्ञान देना चाहिये, बाद में उन्हें अमूर्त या सूक्ष्म तथ्यों के विषय में जानकारी।
6. **विश्लेषण से संश्लेषण की ओर** – किसी भी समस्या का विश्लेषण करने से ही छात्रों की समस्या के बारे में स्पष्ट तथा निश्चित ज्ञान प्राप्त होता है। विश्लेषण से प्राप्त सूचनाओं को जोड़कर समग्र रूप से समझना, संश्लेषण का उपयोग करना है। एक अच्छा शिक्षक पहले छात्रों के विचारों का विश्लेषण करके ज्ञान प्रदान करता है, फिर संश्लेषण के द्वारा उस ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करता है। विश्लेषण व संश्लेषण दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। ये दोनों ही छात्रों को स्पष्ट तथा निश्चित तथा सुव्यवस्थित ज्ञान देने में सहायक हैं।
7. **प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर** – एक अच्छा शिक्षक सदैव छात्रों को पहले उन वस्तुओं का ज्ञान प्रदान करता है जो उनके सामने प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होती है। तत्पश्चात् वह उन चीजों के विषय में ज्ञान प्रदान करता है, जो उनके सामने मौजूद नहीं है या जिन्हें वह देख नहीं सकता। दूसरे शब्दों में छात्रों को पहले वर्तमान का ज्ञान दिया जाना चाहिए बाद में भूत अथवा भविष्य का।
8. **विशिष्ट से सामान्य की ओर** – इस सूत्र का अभिप्राय है कि पहले छात्रों के सामने विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये जायें और बाद में उन्हीं उदाहरणों/दृष्टान्तों के माध्यम से सामान्य सिद्धान्त या सामान्य नियम निकलवायें जाये। एक अच्छा शिक्षक पहले विशिष्ट तथ्य उदाहरण, दृष्टान्त छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है और फिर उनके आधार पर छात्रों को सामान्य नियम या सिद्धान्त तक पहुँचने के लिये प्रोत्साहित करता है।
9. **मनोवैज्ञानिक से तार्किक या तर्कात्मक क्रम की ओर :–** शिक्षण प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर दी जाती है। बालक की रुचि योग्यताओं, जिज्ञासा, आवश्यकता व परिपक्वता के अनुसार पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों व शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाना चाहिये। तर्कात्मक विधि के अनुसार ज्ञान/पाठ को तर्कसम्मत ढंग से विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता है और एक-एक करके छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।

   शिक्षक को चाहिये कि वह पहले मनोवैज्ञानिक ढंग से शिक्षण आयोजित करे और फिर धीरे-धीरे उनके मानसिक विकास के अनुकूल ज्ञान को तर्कसम्मत क्रमानुसार शिक्षण को लेकर चले।
10. **आगमन से निगमन की ओर** – आगमन विधि से प्रारम्भ में छात्रों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं फिर नियमों को निकाला जाता है, जबकि निगमन मे इसके विपरीत पहले नियम प्रस्तुत किये जाते हैं, बाद में उदाहरणों की सहायता से उन नियमों (नियम) की सत्यता परखी जाती है। आगमन नये ज्ञान की खोज में सहायक होता है जबकि निगमन इन खोजों के फलस्वरूप प्राप्त होता है। एक उत्तम शिक्षक अपना शिक्षण आगमन से प्रारम्भ करता है और निगमन पर समाप्त करता है।
11. **पूर्ण से अंश की ओर** – इस सूत्र के अनुसार शिक्षण में पहले विषय-वस्तु को पूर्ण (समग्र) रूप में छात्रों के सामने रखा जाये और फिर धीरे-धीरे उसके विभिन्न भागों के विषय में ज्ञान दिया जाये तो छात्र ज्यादा प्रभावशाली ढंग से सीखते हैं। पूर्ण का परिणाम छात्र के ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ बढ़ता चला जाता है। उदाहरणार्थ छात्र को पहले छोटी-छोटी कवितायें पूर्ण रूप में याद कराई जाती हैं। बाद में एक-एक लाइन का धीरे-धीरे उनका अर्थ स्पष्ट किया जाता है। शिक्षक पहले 'कम्प्यूटर' का पूर्ण आइडिया (विचार) देता है फिर उसके विभिन्न अवयवों पर प्रकाश डालता है।

## स्तर के आधार पर शिक्षण के प्रतिमान–

### स्मृति स्तर के शिक्षण का प्रतिमान (हरबर्ट)
### (MODEL OF MEMORY LEVEL OF TEACHING)

| प्रतिमान | स्मृति स्तर शिक्षण |
|---|---|
| 1. उद्देश्य (Focus) | छात्रों में निम्नांकित क्षमताएं विकसित करना–<br>1. मानसिक पक्षों का प्रशिक्षण।<br>2. तथ्यों का ज्ञान प्रदान करना।<br>3. सीखे हुए तथ्यों को याद करना।<br>4. सीखे गये तथ्यों का प्रत्यास्मरण तथा उन्हें पुन:प्रस्तुत करना। |

Scanned with CamScanner

| | |
|---|---|
| 2. संरचना (Syntax) | स्मृति स्तर के शिक्षण की व्यवस्था को निम्नांकित 5 सोपानों में बांटा है जिसे हरबर्ट की **पंच पदीय** प्रणाली भी कहा जाता है–<br>1. प्रस्तावना व तैयारी (Preparation) तथा उद्देश्य कथन।<br>2. प्रस्तुतीकरण (Presentation)<br>3. तुलना व सम्बन्ध (Comparison & Association)<br>4. निष्कर्ष एवं सामान्यीकरण (Generalization)<br>5. प्रयोग तथा अभ्यास (Application) |
| 3. सामाजिक प्रणाली (Social System) | 1. कक्षा में शिक्षक अधिक सक्रिय तथा Dominating होता है।<br>2. वह छात्रों के सामने पाठ्य-वस्तु प्रस्तुत करता है, उनकी क्रियाओं को नियन्त्रित करता है और प्रेरणा प्रदान करता है।<br>3. छात्रों का स्थान गौण रहता है।<br>4. छात्र चुपचाप शिक्षक को आदर्श मानते हुए उसका अनुसरण करते हैं। |
| 4. मूल्यांकन प्रणाली (Support System) | 1. मूल्यांकन लिखित व अलिखित दोनों प्रकार से होता है।<br>2. परीक्षा में रटने की क्षमता पर जोर दिया जाता है।<br>3. वस्तुनिष्ठ परीक्षा में प्रत्यास्मरण तथा अभिज्ञान के पद महत्त्वपूर्ण होते हैं। |

## बोध स्तर का शिक्षण ( मॉरीसन )
## (UNDERSTANDING LEVEL OF TEACHING)

- शिक्षण के क्षेत्र में बोध एक बहुत व्यापक शब्द है। मौरिस एल० विग्गी ने बोध का प्रयोग निम्नांकित तीन पक्षों को स्पष्ट करने के लिए किया है – 1. विभिन्न तथ्यों में सम्बन्ध देखना। 2. तथ्यों के संचालन के रूप में देखना। 3. तथ्यों के सम्बन्ध तथा संचालन दोनों को समन्वित करना।
- बोध स्तर के शिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि इससे पूर्व स्मृति स्तर पर शिक्षण हो चुका है। इसके बिना बोध स्तर शिक्षण सफल नहीं हो सकता। शिक्षक इस स्तर पर छात्रों को सामान्यीकरण, सिद्धान्तों तथा तथ्यों के सम्बन्ध का बोध कराता है और शिक्षण प्रक्रिया को अर्थपूर्ण तथा सार्थक बनाता है।
- बोध स्तर के शिक्षण में **शिक्षक छात्रों के समक्ष पाठ्य-वस्तु को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि छात्रों को बोध के लिए अधिक से अधिक अवसर मिले और छात्रों में आवश्यक सूझ-बूझ उत्पन्न हो। इस प्रकार के शिक्षण में शिक्षक और छात्र दोनों ही काफी सक्रिय रहते हैं। बोध स्तर का शिक्षण उद्देश्य केन्द्रित तथा सूझ-बूझ से युक्त होता है।** मूल्यांकन के लिए निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ, दोनों प्रकार की प्रणाली का अनुसरण किया जाता है। ये तथ्यात्मक तथा विवरणात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में प्रत्यास्मरण, अभिज्ञान तथा लघु उत्तर विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। बोध स्तर पर मॉरीसन द्वारा विकसित प्रतिमान नीचे एक सारणी के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है–

### मौरीसन बोध स्तर शिक्षण प्रतिमान
### (MORRISON'S MODEL OF TEACHING AT UNDERSTANDING LEVEL)

| प्रतिमान पक्ष | बोध स्तर शिक्षण |
|---|---|
| 1. उद्देश्य (Focus) | प्रत्यय का स्वामित्व प्राप्त करना (Mastery of Concepts) |
| 2. संरचना (Syntax) | बोध स्तर की शिक्षण व्यवस्था में निम्नांकित पाँच सोपान होते हैं–<br>1. अन्वेषण (Exploration)<br>2. प्रस्तुतीकरण (Presentation)<br>3. आत्मीकरण (Assimilation)<br>4. व्यवस्था (Orgazization)<br>5. अभिव्यक्तिकरण (Recitation) |

Scanned with CamScanner

| | |
|---|---|
| 3. सामाजिक प्रणाली (Social System) | 1. शिक्षक व्यवहाहर का नियन्त्रक होता है।<br>2. शिक्षक व छात्र दोनों सक्रिय रहते हैं।<br>3. छात्र अपने विचार प्रदर्शित कर सकते हैं।<br>4. बाह्य तथा आन्तरिक दोनों प्रकार की प्रेरणा उपयोगी है।<br>5. सामाजिक व्यवस्था के प्रथम दो सोपानों में शिक्षक और अन्तिम तीन सोपानों में छात्र-शिक्षक दोनों ही अधिक क्रियाशील हो जाते हैं। |
| 4. मूल्यांकन प्रणाली (Support System) | इसमें आवश्यकतानुसार लिखित, मौखिक, निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन विधियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं। प्रत्ययों के स्पष्टीकरण पर विशेष बल दिया जाता है। |

## बोध स्तर के शिक्षण के लिए सुझाव–

1. शिक्षकों को छात्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए और उन्हें आवश्यक स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए।
2. स्मृति स्तर के बाद ही बोध स्तर के शिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।
3. प्रत्येक सोपान को क्रमबद्ध तरीके से पार किया जाना चाहिए।
4. छात्रों को अभिप्रेरणा दी जाये।
5. कक्षा के आकांक्षा-स्तर को बढ़ाया जाये।
6. शिक्षण व्यवस्था के अनुसार समस्या - समाधान किया जाये।

### चिन्तन स्तर के शिक्षण हेतु हण्ट का शिक्षण प्रतिमान

### (HUNT'S MODEL OF REFLECTIVE LEVEL OF TEACHING)

| प्रतिमान पक्ष | हण्ट का चिन्तन स्तर के शिक्षण का प्रतिमान |
|---|---|
| 1. उद्देश्य (Focus) | (1) छात्रों में मौलिक व स्वतन्त्र चिन्तन शक्ति का विकास करना।<br>(2) छात्रों में समस्या समाधान हेतु आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिन्तन-शक्ति का विकास करना। |
| 2. संरचना (Syntax) | समस्या की प्रकृति पर आधारित रहती है। यह व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों तरह की हो सकती है। इसके चार सोपान हैं -<br>(1) छात्रों के सामने समस्या-परिस्थिति उत्पन्न करना।<br>(2) छात्रों द्वारा उपकल्पना का निर्माण करना।<br>(3) उपकल्पना पुष्टि के लिए सूझ, चिन्तन, मनन का प्रयोग करना।<br>(4) उपकल्पना का परीक्षण तथा समस्या समाधान। |
| 3. सामाजिक प्रणाली (Social System) | (1) कक्षा का वातावरण पूर्ण रूप से खुला और स्वतंत्र होता है।<br>(2) छात्र क्रियाशील और स्वप्रेरित होते हैं।<br>(3) छात्रों के समाजीकरण का दृढ़ आधार है।<br>(4) सहयोग, सामाजिक संवेदनशीलता तथा सहानुभूति का वातावरण रहता है। |
| 4. मूल्यांकन प्रणाली (Support System) | (1) निबन्धात्मक मूल्यांकन अधिक उपयोगी है।<br>(2) अभिवृत्ति, समस्या-समाधान, सृजनात्मक आदि के परीक्षण उपादेय हैं। |

Scanned with CamScanner

## तीनों का तुलनात्मक विवेचन–

| बिन्दु | स्मृति-स्तर | बोध-स्तर | चिन्तन-स्तर |
|---|---|---|---|
| 1. प्रवर्तक | हरबर्ट | मॉरीसन | हण्ट |
| 2. शिक्षण की प्रकृति | विचारहीन | विचारमुक्त | पूर्ण विचारवान, स्वतन्त्र |
| 3. उद्देश्य | ज्ञानात्मक | बोधात्मक व प्रयोगात्मक | विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन |
| 4. पाठ्य-वस्तु | तथ्यात्मक | व्याख्यात्मक | चिंतन से परिपूर्ण |
| 5. कक्षा का वातावरण | निष्क्रिय | आलोचनात्मक | विवादास्पद |
| 6. अधिगम | उद्दीपन अनुक्रिया | पुनर्बलन, अन्तर्दृष्टि | आत्मनिष्ठता नियम |
| 7. अधिगम संरचना | संकेत, शृंखला | सम्बन्ध, विभेद, प्रत्यय | समस्या समाधान |
| 8. युक्तियाँ | व्याख्यान | प्रश्नोत्तर | वाद-विवाद, विचार-विमर्श |
| 9. अभिप्रेरणा | बाह्य | बाह्य व आन्तरिक | आन्तरिक |
| 10. बुद्धि से संबंध | बुद्धि व स्मृति स्तर में संबंध नहीं होता। | प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। | मौलिक तथा सृजनात्मक क्षमताओं का विकास। |
| 11. परीक्षण | मौखिक/लिखित **वस्तुनिष्ठ** – प्रत्यास्मरण तथा वाक्य पूर्ति | मौखिक/लिखित **वस्तुनिष्ठ** – अभिज्ञान, बहुचयन, सत्य/असत्य, लघु उत्तरीय | निबन्धात्मक – जैसे – वर्णन करो, विचार करो, मूल्यांकन करो। |
| 12. परीक्षण की जाँच | अनुभव उत्तरमाला से मिटाए गए है। | छात्रों के अनुभव का क्षेत्र दूसरे शब्दों के प्रयोग पर दिया गया है। | नियम को पर्याप्तता के उपयुक्त डाटा को व्यवहारिक हल के लिए उन्नत किया गया है। |

## शिक्षण के प्रकार (Types of Teaching):

- शिक्षण प्रशिक्षण लेकर अनुदेशन तक सतत प्रक्रिया मानी जाती है। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षण को विभिन्न आधारों पर विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है। ये वर्गीकरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

**( अ ) शिक्षण के उद्देश्यों के आधार पर** – शिक्षण के उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण को तीन प्रमुख वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है।

**शिक्षण**

- ज्ञानात्मक शिक्षण (Cognitive)
- भावात्मक शिक्षण (Affective)
- मनोगत्यामक शिक्षण (Psychomotor)

Scanned with CamScanner

- इसका प्रतिपादन बैंजामिन बी.एम.ब्लूम ने अपनी पुस्तक '**शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण**' में किया था।

**सामान्य प्रवृत्तियाँ**

**ज्ञानात्मक** | **भावात्मक** | **क्रियात्मक**

## 1. ब्लूम द्वारा विकसित ज्ञानात्मक क्षेत्र का वर्णन–

| स्तर (Level) | वर्ग (Class) | सीखने की उपलब्धियाँ (Learning Outcomes) | कार्य क्रियाएँ (Action Verbs) |
|---|---|---|---|
| **निम्न स्तर** | ज्ञान (Knowledge) | (1) विशिष्ट वस्तुओं का ज्ञान<br>(2) साधनों का ज्ञान<br>(3) सार्वभौम वस्तुओं का ज्ञान | परिभाषा देना, कहना, (States) पहचानना, चुनना, नाम बताना, लिखना, सूची बनाना, दोहराना, प्रत्यास्मरण, अभिज्ञान, रेखांकित, मापन, मिलाना (Matching etc.) |
| | बोध (Comprehenson) | (1) अनुवाद करना<br>(2) व्याख्या करना<br>(3) उल्लेख या बाह्य गणना करना | व्याख्या करना, सारांश देना, अन्तर बताना, उदाहरण देना, पुनः लिखना, बदलना Convert सामान्यीकरण करना, अनुमान लगाना, औचित्य सिद्ध करना, संकेत देना, वर्गीकरण करना, प्रतिनिधित्व करना, अपने शब्दों में बताना। |
| | प्रयोग (Application) | (1) नियमों व सिद्धान्तों का सामान्यीकरण करना।<br>(2) निदान करना।<br>(3) पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग करना | चयन करना, छांटना, पाना, प्रदर्शन करना, दिखाना, निर्माण करना, गणना करना, प्रयोग करना, रचना करना, खोजना, भविष्यवाणी करना, तैयारी करना, परिवर्तित करना। |
| **मध्यम स्तर** | विश्लेषण (Analusis) | 1. तत्त्वों का विश्लेषण करना<br>2. सम्बन्धों का विश्लेषण करना<br>3. व्यवस्थित सिद्धान्तों का विश्लेषण करना | विश्लेषण करना, पृथक्कीकरण करना, उदाहरण देना, संकेत करना, सम्बन्ध स्थापित करना, पहचानना, विभेदीकरण करना, आलोचना करना। |
| | संश्लेषण (Synthesis) | 1. अद्भुत सम्प्रेषण<br>2. योजना बनाना<br>3. अमूर्त सम्बन्ध खोजना | योग करना, पुर्नव्याख्या करना, सारांश देना, पुनः लिखना, मिलाना, सृजन करना, प्रारूप तैयार करना, विभाजित करना, संकलित करना, संगठित करना, वर्णन करना। |
| **उच्च स्तर** | मूल्यांकन (Evaluation) | 1. आन्तरिक साक्षियों द्वारा निर्णय<br>2. बाह्य साक्षियों द्वारा निर्णय | अवगत कराना, तुलना करना, निष्कर्ष निकालना, आलोचना करना, सारांश देना, उचित ठहराना, व्याख्या करना, निर्णय लेना, निर्धारण, मूल्यांकन करना। |

Scanned with CamScanner

## भावात्मक पक्ष–

भावात्मक पक्ष रूचियों, अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा संवेगों से सम्बन्धित उद्देश्यों की व्याख्या करता है। ब्लूम द्वारा विकसित भावात्मक उद्देश्य क्षेत्र:-

| वर्ग | सीखने की उपलब्धियाँ | कार्य क्रियाएँ |
|---|---|---|
| (1) ग्रहण करना (Receiving) | (1) क्रिया की जागरूकता<br>(2) क्रिया प्राप्ति की इच्छा<br>(3) नियंत्रित या चयनित योजना | बताना, पहचानना, स्वीकार करना, ग्रहण करना, प्रत्यक्षीकरण करना, चयन करना, पसन्द करना,सूचना देना। |
| (2) अनुक्रिया (Responding) | (1) अनुक्रिया में सहमति<br>(2) अनुक्रियाओं की इच्छा<br>(3) अनुक्रिया में सन्तोष | उत्तर देना, विकास करना, कथन करना, आलेखन, लिखना, सूची बनाना, चयन करना, सहायता करना, सूचित करना, संकलन करना, प्रस्तुत करना। |
| (3) अनुमूल्यन (Valuing) | (1) मूल्य स्वीकारना<br>(2) मूल्य क्रम प्राथमिकता<br>(3) वचनबद्धता | स्वीकारना, भाग लेना, प्रभावित करना, पहचानना, वृद्धि करना, निर्णय लेना, प्रस्तावित करना, आमंत्रित करना, पूरा करना, मिलाना, भाग लेना, दिखाना। |
| (4) व्यवस्था (Organization) | (1) मूल्य की अवधारणा<br>(2) मूल्य क्रम की व्यवस्था | क्रमिक रूप देना, परिवर्तन करना, संगठित करना, वर्णन करना, आदेश देना। संशोधन करना, निश्चय करना, बनाना, समायोजन करना। |
| (5) मूल्य समूह का विशेषीकरण (Charactenzation of a value complex) | (1) सामान्य समूह<br>(2) विशेषीकरण<br>(3) अमूर्त सम्बन्ध खेजना | कार्य करना, हल करना, दुहराना, बदलना, स्वीकारना, प्रदर्शित करना, अभ्यास करना, प्रस्तावित करना, विकसित करना। |

## 3. क्रियात्मक पक्ष/मनोगत्वात्मक पक्ष (Psychomotor)–

ब्लूम ने क्रियात्मक पक्ष को 6 भागों में बांटा है -

**1. सहज क्रियात्मक अंगसंचालन (Reflex & Movement) -**

सहज क्रियात्मक अंग संचालन में बच्चा अपने चारों ओर फैले किसी उद्दीपन के संपर्क में आता है तो वह कोई ना कोई प्रतिक्रिया अनजाने में ही व्यक्त करता है। जैसे हाथ पर चींटी गिरते ही हाथ झटक देना।

*उदाहरण* – काटना, झटका देना, ढीला करना, छोटा करना आदि।

**2. आधारभूत अंगसंचालन (Basic Fundamental Movement) -**

किसी प्रकार का आदेश मिलने पर अंग संचालन करना आधारभूत अंग संचालन कहलाता है।

*उदाहरण* – उछलना, कूदना, पकड़ना, रेंगना, पहुंचना, दौड़ना आदि।

**3. शारीरिक योग्यताएं (Physical Ability) -**

अंग संचालन क्रियाओं को करने के लिए काम करने की क्षमता को बढ़ाना।

*उदाहरण* – शुरू करना, सहन करना, झुकना, व्यवहार करना, सुधारना, रोकना, टुकड़े टुकड़े करना आदि।

**4. प्रत्यक्षीकरण योग्यताएं (Perceptual Ability) -** प्रत्यक्षीकरण योग्यताएं बच्चों के ज्ञानेन्द्रियों व कमेन्द्रिओं के सामंजस्य पर निर्भर करती है। वह वातावरण में फैले उद्दीपन को पहचानने व समझते हुए उनके साथ समायोजन करने में सफल होता है।

*उदाहरण* – सूंघकर या सुनकर पहचान करना, स्मृतिचित्रण करना, लिखना, फेंकना आदि।

**5. कौशलयुक्त अंगसंचालन (Skilled Movement) -**

अभ्यास के द्वारा किसी काम में पूर्ण होना।

*उदाहरण* – नृत्य करना, खोदना, चलाना, गोता लगाना, नाव खेना, तैरना, निशाना लगाना आदि।

**6. सांकेतिक संप्रेषण (Non Discursive Communication) -**

बिना बोले भावों को प्रदर्शित करना।

*उदाहरण* – नकल उतारना, भाव-भंगिमा बनाना, चित्रांकन करना, मुस्कुराना, चिढ़ाना आदि।

Scanned with CamScanner

## क्रियात्मक ( मनोगत्यात्मक ) उद्देश्य क्षेत्र (Psychomotor Objectives Domain)–

- क्रियात्मक (मनोगत्यात्मक) उद्देश्यों का संबंध छात्रों की शारीरिक क्रियाओं के प्रशिक्षण तथा कौशल के विकास से होता है। क्रियात्मक पक्ष के प्रमुख स्तर निम्नांकित हैं-

(1) उद्दीपन
(2) कार्य करना,
(3) नियंत्रण
(4) संयोजन (Corrdination)
(5) स्वाभावीकरण तथा
(6) आदतों का निर्माण करना।

- E.J. Sympson) ने क्रियात्मक उद्देश्यों को ब्लूम की तरह पाँच स्तरों पर बांटा है, जिनका वर्णन निम्न सारणी में किया गया है –

### क्रियात्मक ( मनोगत्यात्मक ) उद्देश्य वर्गीकरण

| वर्ग | उपलब्धियाँ | कार्य-क्रियाएँ |
|---|---|---|
| 1. प्रत्यक्षीकरण (Perception) | (1) वर्णनात्मक स्तर। (2) संक्रमण काल की स्थिति। (3) व्याख्यात्मक स्तर | निर्माण करना, चित्र बनाना। |
| 2. व्यवस्था (Set) | (1) मानसिक स्तर। (2) शारीरिक स्तर। (3) संवेगात्मक स्तर । | प्रारूप तैयार करना, बनाना। |
| 3. निर्देशात्मक अनुक्रिया (Guided Response) | जटिल कौशल वाली क्रियाओं पर बल देना। | पहचानना, स्थापित करना। |
| 4. कार्य प्रणाली (Mechanism) | (1) आत्मविश्वास व कौशल का विकास। (2) उपर्युक्त अनुक्रियाओं में सहायक | मरम्मत करना तथा अभ्यास करना। |
| 5. जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया (Complex overtresponse) | (1) क्रियात्मक पक्ष का सर्वोच्च स्तर है। (2) जटिल कार्य करने की क्षमता व कौशल का विकास। | जोड़ना, सजन करना। बदलना, पता लगाना। |

**( ब ) शिक्षण के स्तरों के आधार पर** – शिक्षण के स्तरों के आधार पर शिक्षण को तीन भागों में विभाजित किया जाता है–

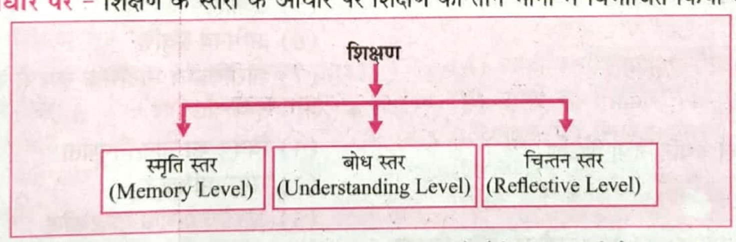


**( स ) शासन प्रणाली के आधार पर** – जैसा इस अध्याय के प्रारम्भ में बताया गया है वैसे ही प्रणाली के आधार पर शिक्षण व्यवस्था निम्न तीन भागों में विभाजित की जाती है –

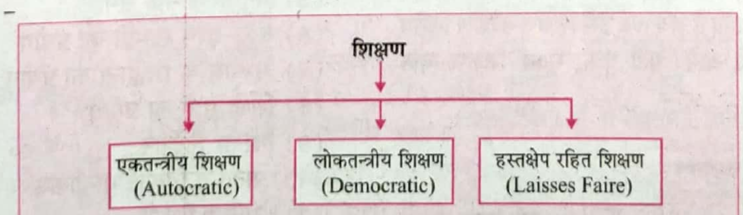


**( द ) शिक्षण के स्वरूप के आधार पर** – शिक्षण के स्वरूप के आधार पर शिक्षण सामान्यत: तीन वर्गो में वर्गीकृत किया जाता है –

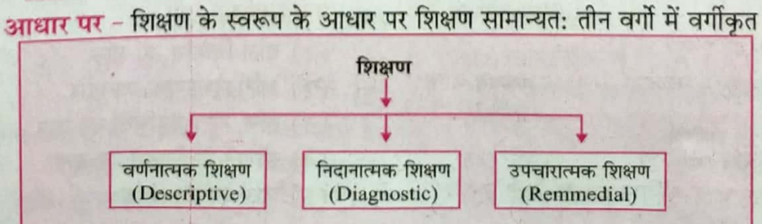


Scanned with CamScanner

**( य ) शैक्षिक क्रियाओं के आधार पर** – शिक्षण की विभिन्न क्रियाओं के आधार पर शिक्षण निम्नांकित तीन पदों में विभाजित कर सकते हैं –

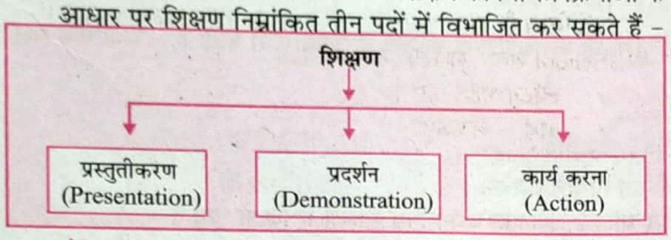


**( र ) शैक्षिक व्यवस्था के आधार पर** – शैक्षिक व्यवस्था के आधार पर शिक्षण को निम्नांकित भागों में बांटा जाता है–

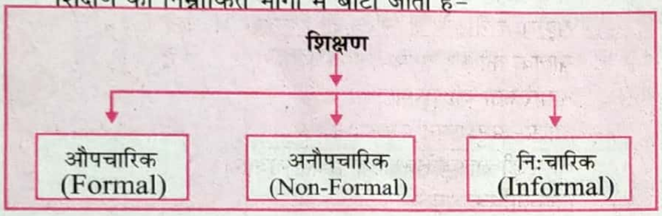


## शिक्षण उद्देश्यों को लिखने की विधियाँ–

1. **राबर्ट मेगर विधि** –
   ज्ञानात्मक व भावात्मक उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप से लिखना
2. **ग्रोनलुण्ड विधि** –
   एन.ई. ग्रोनलुण्ड–सामान्य व विशिष्ट उद्देश्यों को लिखना
3. **राबर्ट मिलर विधि** –
   राबर्ट बी. मिलर 1962 मनोगत्यात्मक व क्रियात्मक उद्देश्यों को लिखना
4. **आर.सी.ई.एम.विधिज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक उद्देश्यों को लिखके जानना** –
   **डॉ. दवे** – भारतीय विधि है इसके प्रक्रिया पर बल।
   **विशेष शिक्षण के प्रकार :-**

## अनुरूपण शिक्षण–( यथार्थवत शिक्षण )

- प्रयोगकर्ता–1966 में क्रकशेंक
- कृत्रिम परिस्थिति में बिल्कुल यथति जैसा शिक्षण

## सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Micro Teaching Cycle)–

- शिक्षण चक्र में शिक्षण, पृष्ठ–पोषण, पुन: पाठ नियोजन, पुन: शिक्षण तथा पुन: पृष्ठ–पोषण के पाँच पदक्रमों को मिलाकर एक चक्र–सा बन जाता है जो तब तक चलता रहता है जब तक उसे शिक्षण कौशल विशेष पर पूर्ण निपुणता न प्राप्त हो जाये। यही चक्र, सूक्ष्म–शिक्षण–चक्र कहलाता है।

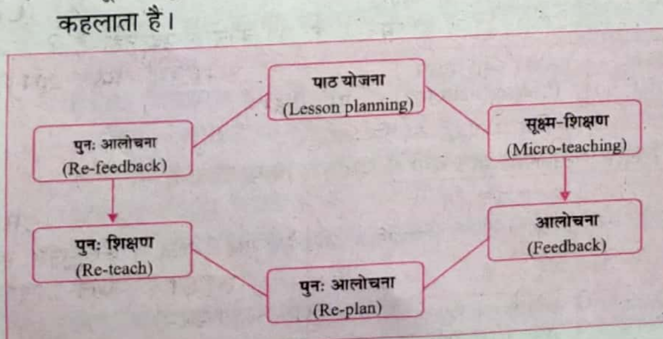


- **विशेष :-**
- इसका विकास स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी में किया गया। सन् 1961 में एचीसन, बुश तथा एलन ने सर्वप्रथम नियन्त्रित रूप में 'संकुचित अध्ययन–अभ्यास क्रम' प्रारम्भ किये, जिनके अन्तर्गत प्रत्येक छात्राध्यापक 5 से 10 छात्रों को एक छोटा सा पाठ पढ़ाता था और अन्य छात्राध्यापक विभिन्न प्रकार की भूमिका निर्वाह (Rule Play) करते थे।
- भारतवर्ष में सन् 1974 में सूक्ष्म–शिक्षण के क्षेत्र में सर्वप्रथम प्रकाशन पासी तथा शाह ने किया।
- सूक्ष्म शिक्षण एक प्रशिक्षण विधि है जिसमें छात्राध्यापक किसी एक शिक्षण कौशल का प्रयोग करते हुए थोड़ी अवधि के लिये, छोटे छात्र समूह को कोई एक सम्प्रत्यय पढ़ाता है।
- सूक्ष्म–शिक्षण प्रक्रिया में सर्वप्रथम छात्राध्यापकों के किसी शिक्षण कौशल के विषय में भली–भाँति बताया जाता है फिर प्रदर्शन द्वारा उसे स्पष्ट किया जाता है।
- भारतवर्ष में विशेष रूप से NCERT तथा CASE एवं इन्दौर विश्वविद्यालय में किये गये प्रयासों के फलस्वरूप सूक्ष्म–शिक्षण का भारतीय प्रतिमान विकसित किया गया।

## अच्छे शिक्षक के गुण–

- **जोड** – शिक्षण प्रत्येक व्यक्ति के वश की बात नहीं अपितु यह कला है।
- **संवेगात्मक गुण :-**
  (1) सहयोगपूर्ण प्रजातन्त्रीय दृष्टिकोण
  (2) निष्पक्षतापूर्व व्यवहार
  (3) मधुर स्वभाव
  (4) प्रेम, सहानुभूति, अपनत्व, धैर्य, आत्मसंयम से युक्त
  (5) उत्साही
  (6) अभिनय प्रवृत्ति
  (7) शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ
- **ज्ञान सम्बन्धी गुण :-**
  (1) विषय का ज्ञान/निपूर्णता
  (2) समसामयिकता
  (3) आलोचनात्मक दृष्टिकोण
  (4) प्रयोगात्मकता
  (5) अनुधारणात्मक समझ
  (6) श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग
  (7) अभ्यास के सिद्धान्त का प्रयोग
  (8) शिक्षा सूत्रों का प्रयोग
  (9) निरन्तर निर्देशन
  (10) सतत व निष्पक्ष मूल्यांकन
  (11) सक्रिय शिक्षण
- **मनोवैज्ञानिक गुण :-**
  (1) बाल विकास का ज्ञान
  (2) अभिप्रेरणा युक्त व्यवहार
  (3) रुचि, मूल प्रवृत्तियों का ज्ञान
  (4) सीखने के नियमों का ज्ञान
  (5) छात्र केन्द्रित शिक्षा

Scanned with CamScanner

- **सामाजिक गुण :-**
  (1) नेतृत्व का गुण
  (2) सहयोग व्यवहार
  (3) सामाजिकता
  (4) चारित्रिक रूप से सुदृढ़
  (5) परिश्रमी

## विद्यालय प्रभावशीलता

- **टी.पी. नन :-** 'एक राष्ट्र के विद्यालय उसके जीवन के अंग हैं जिनका कार्य आध्यात्मिकता का बढ़ाना, ऐतिहासिक निरन्तरता को बनाये रखना, भूतकाल की सफलताओं को सुरक्षित रखना व भविष्य की गारन्टी देना है।
- **जॉन डी.वी.** 'विद्यालय एक विशिष्ट वातावरण है जहाँ बालक के वांछित विकास के लिए विशिष्ट क्रियाओं की शिक्षा दी जाती है।'
- **मुदालियर आयोग :-** (1952 ई. में गठित) 'एक राष्ट्र को विद्यालय सौन्दर्य प्रदान करना चाहिए वहां प्रेरणादायक वातावरण उपलब्ध हो सके।'
- **जे. एस रॉस :-** 'विद्यालय सभ्य मनुष्यों द्वारा इस उद्देश्य से स्थापित किये गये हैं कि योग्य व प्रभावी बालक तैयार हो सके।'
- **बालकृष्ण जोशी :-** 'एक राष्ट्र की प्रगति का निर्माण संसद, विधायिका तथा फैक्ट्रियों में नहीं होता विद्यालय में होता है।'
- **जॉन डीवी :-** 'विद्यालय चार दिवारी के भीतर वृहत समाज का प्रतिबिम्ब है, यह एक सरल व उत्तम समाज का उदाहरण है।'
- School शब्द 'स्कोला' से बना है।
  - लैटिन भाषा का शब्द है।
  - अर्थ – अवकाश

### प्रभावशाली विद्यालय की विशेषताएँ–

(1) पर्याप्त मानवीय व भौतिक संसाधनों से युक्त
(2) लोकतांत्रिक वातावरण
(3) मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियों का प्रयोग
(4) राष्ट्रीय व नैतिक व चरित्र के विकास पर बल
(5) बालक को घर व समाज से जोड़ने पर बल दे
(6) नागरिकता की शिक्षा
(7) आत्म-अनुशासन पर आधारित
(8) बहुमुखी सांस्कृतिक चेतना का विकास
(9) लोकतांत्रिक नेतृत्व
(10) व्यवहारिक शिक्षा
(11) जीविकोपार्जन की क्षमता का विकास
(12) सर्वांगीण विकास पर बल
(13) समाज सेवा पर बल
(14) करके सीखने पर बल

## अभ्यास प्रश्न पत्र

- पाठ योजना पद जिस शिक्षाविद् ने सुझाए, वह है? **(प्रधानाध्यापक परीक्षा 2012, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
  (A) जे. एफ. हरबर्ट (B) ई. सिम्पसन
  (C) बी. एस. ब्लूम (D) ई. बी. हरलॉक (A)
- निम्नलिखित में से कौन शिक्षण सूत्र नहीं है ? **(बिहार TET-I लेवल-2012)**
  (A) ज्ञात से अज्ञात की ओर
  (B) अज्ञात से ज्ञात की ओर
  (C) प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर
  (D) पूर्ण से अंश की ओर (C)
- उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण का प्रकार नहीं है ? **(बिहार TET-I लेवल-2012)**
  (A) चिन्तन उद्देश्य (B) भावात्मक उद्देश्य
  (C) ज्ञानात्मक उद्देश्य (D) क्रियात्मक उद्देश्य (A)
- ज्ञानात्मक पक्ष का अंतिम स्तर होता है ? **(BTET-I लेवल-2011)**
  (A) ज्ञान (B) संश्लेषण
  (C) मूल्यांकन (D) विश्लेषण (C)
- शिक्षण प्रक्रिया में किसे आश्रित चर कहा जाता है ? **(BTET-I लेवल-2011)**
  (A) शिक्षक (B) छात्र
  (C) पाठ्यक्रम (D) सहायक सामग्री (B)
- आधुनिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में, शिक्षक की भूमिका होती है- **(उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011)**
  (A) सीखने हेतु एक अच्छे सुलभकर्ता की
  (B) बच्चों को गणित, विज्ञान और भाषा सिखाने में
  (C) बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा देने में
  (D) बच्चों को सभी कुछ पढ़ाने में (A)
- शिक्षा का अति महत्त्वपूर्ण उद्देश्य होता है– **(BTET-I लेवल-2011)**
  (A) आजीविका कमाना
  (B) बच्चों का सर्वांगीण विकास करना
  (C) पढ़ना एवं लिखना सीखना
  (D) बौद्धिक विकास (B)
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रारंभ करने से पहले एक कुशल अध्यापक को करना चाहिए– **(BTET-I लेवल-2011)**
  (A) छात्रों को दंडित करना
  (B) चुटकुले सुनाना
  (C) अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करना
  (D) आराम करना चाहिए (C)
- निम्नलिखित में से आगमन विधि का कौनसा पद नहीं है ? **(BTET-I लेवल-2011)**
  (A) विभिन्न उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण
  (B) परिकल्पनाओं का निर्माण
  (C) अवलोकन
  (D) सामान्यीकरण (B)
- हरबर्ट उपागम पर आधारित गणितीय पाठ्य योजना का दूसरा पद होता है– **(BTET-I लेवल-2011)**
  (A) तैयारी (B) प्रस्तुतीकरण
  (C) सामान्यीकरण (D) विश्लेषण (B)

Scanned with CamScanner

❖ विभाजन, तुलना, आलोचना इत्यादि क्रियाएँ, शैक्षिक उद्देश्यों के ज्ञानात्मक पक्ष के कौनसे स्तर से संबंधित होती हैं ? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) मूल्यांकन (B) विश्लेषण
(C) संश्लेषण (D) प्रयोग (B)

❖ निगमन प्रणाली का तात्पर्य है- **(हिन्दी II ग्रेड-2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) पहले उच्चारण देना फिर उसका निष्कर्ष जानना
(B) अनेक उदाहरण प्रस्तुत करना
(C) पहले कई नियमों को प्रस्तुत करना
(D) पहले नियम बताना फिर उसकी व्याख्या करना (D)

❖ आगमन विधि में छात्र अग्रसर होता है- **(हिन्दी II ग्रेड-2010)**
(A) विशिष्ट से सामान्य की ओर
(B) सामान्य से विशिष्ट की ओर
(C) सामान्य से सामान्य की ओर
(D) विशिष्ट से विशिष्ट की ओर (A)

❖ हरबर्ट की पंचपदीय प्रणाली में परिगणित पद नहीं है? **(हिन्दी II ग्रेड-2010)**
(A) प्रस्तावना (B) प्रस्तुतीकरण
(C) उद्देश्य (D) मूल्यांकन (D)

❖ भारत के संविधान की विशेषताएँ हैं ? यह प्रश्न है- **(सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) ज्ञान परक (B) बोध परक
(C) अनुप्रयोग परक (D) विश्लेषणात्मक (A)

❖ विज्ञान शिक्षण की वह विधि जिसमें विद्यार्थी को एक खोजी के रूप में कार्य करने का अवसर दिया जाता है, कहलाती है ? **(RPSC–2007)**
(A) प्रयोगशाला विधि (B) समस्या समाधान विधि
(C) ह्यूरिस्टिक विधि (D) प्रायोजना विधि (C)

❖ शिक्षा में कार्यरत संस्थाओं में सबसे अधिक उपयोगी है- **(RPSC–2004)**
(A) सामान्य शिक्षा (B) विषयवस्तु विशेषज्ञता
(C) व्यावसायिक शिक्षा (D) गृह निर्माण (B)

❖ अर्जित ज्ञान को स्थायी बनाने हेतु जिस शिक्षण सिद्धांत का उपयोग किया जाना आवश्यक है, वह है- **(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, RPSC–2007)**
(A) आवृत्ति का सिद्धांत
(B) लोकतांत्रिक व्यवहार का सिद्धांत
(C) नियोजन का सिद्धांत
(D) निश्चित उद्देश्यों का सिद्धांत (A)

❖ कार्यसूचक क्रिया "परिभाषित करना" किस उद्देश्य से संबंधित है?
(A) ज्ञान (B) बोध
(C) प्रयोग (D) विश्लेषण (B)

❖ जब एक छात्र कक्षा में प्राप्त अनुभवों के आधार पर गणित की समस्या को स्वयं हल कर सकता है, तो शिक्षण के किस उद्देश्य की पूर्ति कर रहा है ? **(RPSC–2009)**
(A) अभिवृत्ति (B) ज्ञान
(C) ज्ञानोपयोग (D) रुचि (C)

❖ विद्यार्थी विज्ञान में चित्र बनाना सीखते हैं या नहीं, इसका पता लगाने के लिए बनाए गए प्रश्न निम्नलिखित किस उद्देश्य से संबंधित होंगे? **(RPSC–2009)**
(A) ज्ञान (B) कौशल
(C) ज्ञानोपयोग (D) रुचि (B)

❖ सामाजिक अध्ययन शिक्षण का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम बनाया गया ? **(सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) 2003 (B) 2004
(C) 2005 (D) 2006 (C)

❖ भारतवर्ष में सामाजिक विज्ञान पढ़ाने के लिए पाठ योजना किस आधार पर बनती है ? **(सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) हरबर्ट की पंचपदीय प्रणाली
(B) मॉरिसन प्रणाली
(C) डीवी प्रणाली (D) रूसो प्रणाली (A)

❖ शिक्षण को रोचक तथा सार्थक बनाने के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है ? **(सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) चार्ट (B) पाठ्यपुस्तक
(C) कम्प्यूटर (D) श्रव्य-दृश्य सामग्री (D)

❖ अध्यापक के व्यावसायिक उन्नयन के लिए उपयोगी है? **(सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) औपचारिक शिक्षा (B) निरौपचारिक शिक्षा
(C) पत्राचार (D) अच्छे वस्त्र (B)

❖ शिक्षण में कितने प्रकार का सहसंबंध मिलता है ? **(सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5 (B)

❖ शिक्षण की क्रिया में अध्यापक के द्वारा सबसे पहले क्या बनाया जाता है ? **(सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) वार्षिक योजना (B) इकाई योजना
(C) दैनिक पाठ योजना (D) प्रतिमान (A)

❖ प्रस्तावना, प्रस्तुतिकरण, तुलना और संबंध, सामान्यीकरण और प्रयोग सोपान है? **(सामाजिक ज्ञान II ग्रेड- 2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) ब्लूम उपागम (B) हरबर्ट
(C) मौरीसन (D) ग्लोबरियन (B)

❖ निम्नलिखित में से कौनसा कथन शिक्षण के बारे में सत्य नहीं है ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) शिक्षण में सुधार किया जा सकता है।
(B) शिक्षण औपचारिक एवं अनौपचारिक है।
(C) शिक्षण विज्ञान के साथ कला भी है।
(D) शिक्षण अनुदेशन है। (D)

❖ परिवार एक साधन है ? **(UTET-I लेवल-2011)**
(A) अनौपचारिक शिक्षा का (B) औपचारिक शिक्षा का
(C) गैर औपचारिक शिक्षा का (D) दूरस्थ शिक्षा का (A)

❖ निम्न में से कौनसा शिक्षण सूत्र नहीं है ? ***[School Lect. Exam-2016]***
(A) ज्ञात से अज्ञात (B) विशिष्ट से सामान्य
(C) अंश से पूर्ण (D) सरल से जटिल (C)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 3 अधिगम

- शाब्दिक अर्थ – सीखना
- व्यवहार में वांछित परिवर्तन ही अधिगम है।
- हिलगार्ड – पुस्तक में 'Theories of Learning' अधिगम ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा क्रिया प्रारम्भ होती है।
- स्मिथ – पुस्तक 'Psychology in Teaching' में अधिगम प्रक्रिया में चालक, लक्ष्य व लक्ष्य के अवरोधक होना आवश्यक।

## अधिगम के सोपान (Steps of Learning)–

1. आवश्यकता/अभिप्रेरणा/प्रेरक (Needs)
2. लक्ष्य, उद्देश्य (Goal)
3. तत्परता/बाधा (Readiness/Barriear)
4. अधिगम स्थिति – वातावरण (Learning Situation)
5. अनुक्रिया (Interaction)
6. समायोजन (Adjustment)
7. व्यवहार में परिवर्तन – परिणाम (Change)
8. स्थायीकरण –परिवर्तनों का स्थायीकरण (Stabilization)

## अधिगम के परिणाम (Results of Learning)–

1. व्यवहार में सुधार व ज्ञानात्मक, भावात्मक क्रियारूप
2. शिक्षण अधिगम के लक्ष्यों की प्राप्ति
3. वृद्धि व विकास में सहायक
4. समायोजन में सहायक
5. जीवन लक्ष्य प्राप्ति में सहायक
6. व्यक्तित्व का अधिकतम व सर्वोत्तम विकास

नोट :- अधिगम ज्ञान, आदत, मूल्यों, कौशल, चिन्तन, तर्क, समस्या-समाधान, कल्याण में सहायक है।

- किंगजले व गैरी – अधिगम ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यवहार का अभ्यास व प्रशिक्षण द्वारा जन्म होता है उसका परिवर्तन होता है।

## परिभाषा–

- हिलगार्ड – नवीन परिस्थितियों में अपने आप को अनुकूलित करना ही अधिगम है।
- वुडवर्थ – 'सीखना विकास की प्रक्रिया है।' अनुभवों में वृद्धि ही अधिगम है।
- क्रो एण्ड क्रो – 'आदत ज्ञान एवं अभिवृत्तियों का अर्जन करना ही अधिगम है।'
- गेट्स एवं अन्य – 'प्रशिक्षण एवं अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।'
- स्कीनर – 'व्यवहार के अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया ही अधिगम है।' 'व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया ही अधिगम है।'
- गिलफोर्ड – 'व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।'
- मार्गन व किंग – अभ्यास या अनुभूति के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन सीखना है।
- रिली व लेविस – अभ्यास या अनुभूति से व्यवहार में धारण योग्य परिवर्तन सीखना है।
- पील – 'व्यक्ति में परिवर्तन ही अधिगम है।' जो वातावरण मे परिवर्तन के अनुसरण में होता है।
- डेनियल बैल के अनुसार – 'अधिगम व्यक्ति की शक्तियों तथा वातावरण की अन्त: क्रिया द्वारा सुधार का नाम है।'
- हिलगार्ड एवं एटकिन्सन – 'पुराने अनुभवों के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाला स्थायी परिवर्तन अधिगम कहलाता है।''
- कॉलविन – 'पहले से निर्मित व्यवहार में अनुभवों द्वारा सुधार अधिगम है।
- क्रानबैक – सीखना अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन द्वारा व्यक्त होता है।
- थॉर्नडाइक – उपयुक्त अनुक्रिया के चयन व उत्तेजना से जोड़ने को अधिगम कहते हैं।
- गार्डनर मरफी – अधिगम में वातावरण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवहार में होने वाले सभी परिवर्तन शक्ति हैं।
- पावलॉव :- 'अनुकूलित क्रिया के परिणाम स्वरूप आदत का निर्माण ही अधिगम है।'

## अधिगम संबंधी विभिन्न दृष्टिकोण–

1. व्यवहारवादी दृष्टिकोण (Behaviouristic View) – अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है, वातावरण से सीखता है।
2. गेस्टाल्टवादी दृष्टिकोण – अधिगम सम्पूर्ण स्थिति की सम्पूर्ण प्रतिक्रिया है।
3. हार्मिक दृष्टिकोण –
   - प्रतिपादक – मैक्डुगल
   - अधिगम लक्ष्य केन्द्रित रूप है।
4. क्षेत्रीय दृष्टिकोण (Field View) –
   - कुर्त लेविन – अधिगम किसी स्थिति का प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक संगठन है, प्रेरणा कहलाती है।
5. प्रत्यत्न व भूल दृष्टिकोण – थार्नडाइक प्रयत्न व भूल ही सीखना अधिगम है।

## अधिगम की प्रकृति/विशेषताएँ (Nature of Learning)–

1. जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया (निरन्तर प्रक्रिया) (Continous Process)
2. अधिगम एक परिवर्तन है। (व्यवहार में प्रगतिशील सुधार) (Progressive Change in behavior)
3. अधिगम सार्वभौमिक प्रक्रिया है। (प्रत्येक जगह होता है) सभी सीखते हैं। (Universal in nature)
4. अधिगम व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों हैं। (Individual and Social)
5. सीखना सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों है।
6. सीखना उद्देश्य पूर्ण है। मैसलों ने बल दिया। (Purposive)

Scanned with CamScanner

7. सीखना सक्रिय प्रक्रिया है व रचनात्मक। (Active and Creative)
8. सीखना विवेकपूर्ण प्रक्रिया है। (Insightful)
9. अधिगम उद्दीपन तथा अनुक्रिया के मध्य संबंध स्थापित करने वाली प्रक्रिया है। (Stimulus and response)
10. अधिगम ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक प्रक्रिया है। (Cognitive affective, Conative)
11. अधिगम समायोजन प्रक्रिया है। (Adjustment Process)
12. सीखना समस्या समाधान प्रक्रिया तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली प्रक्रिया है।
13. अधिगम स्थानान्तरण है। (Learning is transferable)
14. अधिगम प्रक्रिया है न कि परिमाण (Process not a Product)
15. सीखना नया कार्य करना है।
16. सीखना अनुभवों का संगठन है।
17. अधिगम अनुमानित प्रक्रिया है निष्पादन से भिन्न है।
18. अधिगम में सदैव अनुभव शामिल रहता है।
19. अधिगम अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है।
20. अधिगम अनुभव का संगठन है।

## अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक–

**( क ) व्यक्तिगत कारक (Individual Factors):-**

1. **अभिप्रेरणा (Motivation)** – स्कीनर ने इसे सर्वश्रेष्ठ राजमार्ग कहा है।

✦ **अभिप्रेरणा** – अधिगम को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कारक है। यह व्यवहार में परिवर्तन, ध्यान केन्द्रित करने, मानसिक विकास में रुचि, अनुशासन, शीघ्र अधिगम में उपयोगी है।

✦ **स्टीफेन्स** – शिक्षक के पास जितने भी साधन हैं उनमे प्रेरणा सबसे महत्त्वपूर्ण है।

✦ अधिगम की शुरुआत
✦ अधिगम की सुनहरी सड़क
✦ अधिगम के लिये अनिवार्य स्थिति
✦ अधिगम का सर्वोत्तम आधार

2. **इच्छाशक्ति (Will Power)** – अभिप्रेरणा के बाद सर्वाधिक प्रभावित करता है।
3. **शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, अरस्तु** – स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।
4. **परिपक्वता** – आयु – अधिगम परिपक्वता व आयु से प्रभावित होती है।

**परिपक्वता** – आन्तरिक सुधार प्रक्रिया ही परिपक्वता है, यह शारीरिक योग्यताओं का आन्तरिक विकास है।

• **गैसेल** – जीवन चक्र के जीवाणु के समूचे प्रभाव को परिपक्वता कहा जाता है।

## परिपक्वता और अधिगम–

✦ परिपक्वता और अधिगम दोनों अन्तर्सम्बन्धित है। दोनों व्यक्ति के विकास में योगदान देते हैं। इनके सम्बन्ध में विचार करने से पूर्व हम संक्षेप से 'परिपक्वता' के अर्थों पर विचार करते हैं।

✦ **परिपक्वता का अर्थ (Meaning of Maturation) :** क्षमता का नाम

1. **गैसल का विचार (Gesell's view)** – 'आत्मसीमित जीवन चक्र में कार्यरत जीवाणु (Gene) के समुचे स्वभाव को परिपक्वता कहते हैं' (Maturation is the "net of the gene effects operating in a self-limited life cycle.")
2. **बोरिंग, लैंगफैल्ड वैल्ड का विचार** (View of Boring, Langfeld and Weld) – 'परिपक्वता का अर्थ वृद्धि और विकास है जो किसी अनमोल व्यवहार के अस्तित्व में आने या किसी विशिष्ट व्यवहार के अस्तित्व में आने से पहले अत्यन्त आवश्यक होता है।' ("Maturation means growth and development that is necessary either before any unlearned behaviour can occur or before the learning of any particular behaviour can take place.")
3. **गेट्स और जर्सिल्ड का विचार** (View of Gates and Jersild) – 'परिपक्वता वह वृद्धि है जो वातावरण की व्यापक स्थितियों में नियमित रूप से होती रहती है या जो उत्तेजना की विशिष्ट स्थितियों जैसे प्रशिक्षण।

✦ **परिपक्वता का अर्थ परिपक्वता की विशेषताओं से अधिक स्पष्ट हो जाएगा :-**

1. **जीवाणुओं का समूचा प्रभाव (Sun of gene effects)** – परिपक्वता आत्म-सीमित जीवन चक्र कार्यरत जीवाणु का समूचा प्रभाव है। यह वंशानुक्रम पर आधारित है। (Maturation is based on heredity) वह व्यक्ति की योग्यता की व्याख्या की प्रक्रिया है।
2. **स्वचलित प्रक्रिया (Automatic Process)** – परिपक्वता शारीरिक एवं मानसिक विभेदीकरण एवं एकात्मकता की प्रक्रिया है। (Maturation is an automatic process of somatic, physiological and mental differentiation and integration)
3. **बुद्धि एवं विकास (Growth and development)** – परिपक्वता का अर्थ वृद्धि एवं विकास है जो या तो व्यक्ति के बिना सीखे व्यवहार या किसी विशिष्ट व्यवहार को सीखने से पहले घटित होने के लिए अनिवार्य है। इसमें संरचनात्मक एवं कार्यात्मक परिवर्तन शामिल है (It involves both structural and functional changes or performance) यह व्यक्ति की सरंचनात्मक परिवर्तन से कार्यात्मक तत्परता की अवस्था पर पहुंचने में सहायता करती है।
4. **वृद्धि की पूर्णता (Completion of growth)** – परिपक्वता वृद्धि की पूर्णता की अवस्था है।
5. **विकास की सुदृढ़ता (Consolidation of development)** – परिपक्वता मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास की सुदृढ़ता की अवस्था है।
6. **आन्तरिक सुधार (Modification from within)** – परिपक्वता व्यक्ति के आन्तरिक सुधार, जन्मजात परिपक्वता एवं क्षमताओं के विकास की प्रक्रिया है। (Maturation is essentially a process of modification from within, an innate ripening and development of capacities of the organism)
7. **अधिगम का कारक (Condition of learning)** – परिपक्वता अधिगम का आवश्यक कारक है। यह अधिगम का आधार है और अधिगम मानव विकास को पूर्ण करने का एकमात्र स्रोत है। (Maturation is the basis of learning and learning is the only source that makes human development complete)
8. **परिपक्वता के कारक (factors of maturation)** – परिपक्वता को अधिगम की प्रक्रिया माना गया है। अधिगम की प्रक्रिया में तीन कारक निहित हैं–

(i) **अर्जित करना** (Acquisition) – अर्जित व्यवहार सुधार करने में

Scanned with CamScanner

सहायक होता है। अर्जन ही अधिगम का अर्थ, स्वरूप एवं क्षेत्र निर्धारित करता है।

(ii) **धारण (Retention)** – धारण के बिना अधिगमकर्त्ता अर्जित गुण की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता।

(iii) **पुनःस्मरण (Recall)** – अच्छे पुनः स्मरण से हम शिक्षार्थी की परिपक्वता एवं अधिगम व्यवहार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

9. **अधिगम कौशल के लिए अनिवार्य (Essential for learning skill)** – परिपक्वता शारीरिक एवं मानसिक प्रशिक्षण के लिए अनिवार्य है। शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता की प्राप्ति किसी कार्य की कुशलता के लिए अनिवार्य है।

10. **परिपक्वता एवं शारीरिक कुशलता (Maturity and physical fitness)** – परिपक्व अधिगम व्यवहार का विकास अधिगमकर्ता की शारीरिक कुशलता पर निर्भर करता है। अर्जन, धारण एवं पुनः स्मरण अपने कार्य की सफलतापूर्वक कर सकते हैं यदि शारीरिक उपकरण इन कारकों के भली-भांति विकास के योग्य हो। शारीरिक कमी अथवा बीमारी बालक की अधिगम प्रक्रिया में बाधा डालती है। यदि शरीर स्वस्थ नहीं या मांसपेशियां शक्तिशाली नहीं तो बालक के व्यवहार में वांछित सुधार सम्भव नहीं होता। इस संदर्भ में परिपक्वता को शारीरिक कुशलता कहा गया है।

11. **परिपक्वता से पहले प्रशिक्षण बेकार है (Training before maturity is useless)** – किसी क्रिया को सीखने के लिए परिपक्वता से पूर्व प्रशिक्षण देना व्यर्थ है। शारीरिक परिपक्वता मानसिक परिपक्वता जितनी ही महत्त्वपूर्ण है। इसलिए बालक को प्रशिक्षण देने से पहले माता-पिता एवं अध्यापकों का यह कर्त्तव्य है कि वे देखें कि क्या बालक शारीरिक एवं मानसिक दृष्टिकोण से पूर्ण रूप से परिपक्व है या नहीं। इसकी अवहेलना करने से निराशा ही होगी। परिपक्वता एवं अधिगम एक ही प्रक्रिया के दो पहलू हैं। (Maturation and learning have been considered as the two different aspects of the same process)

## अधिगम व परिपक्वता में अन्तर–

| अधिगम (Learning) | परिपक्वता (Maturity) |
|---|---|
| 1. वातावरण पर आधारित | वंशानुक्रम पर आधारित |
| 2. नियोजित प्रक्रिया | स्वतः चालित प्रक्रिया |
| 3. निरन्तर चलने वाली | परिपक्वता 20-25 तक पूर्ण होती है। |
| 4. अभ्यास आवश्यक है | अभ्यास आवश्यक नहीं है। |
| 5. अभिप्रेरणा का प्रभाव पड़ता है | परिपक्वता पर नहीं पड़ता |
| 6. व्यक्तिगत प्रकिया | सामान्य प्रक्रिया |
| 7. मानसिक व मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया | परिपक्वता शारीरिक क्रिया |

## अन्य व्यक्तिगत कारक :-

5. **स्मृति** – तीव्र स्मृति तेज अधिगम में उपयोगी है।
6. **रुचि, महत्त्वकांक्षा** – रूचियाँ कार्य की गति को प्रभावित करती हैं।
7. **मानसिक स्वास्थ्य**
8. **भोजन व औषधियाँ**
9. **संवेदना व प्रत्यक्षीकरण**
10. **ध्यान/अवधान (Attention)**
11. **थकान** – कार्य की कुशलता को प्रभावित करता है।
12. **जीवन उद्देश्य** – निश्चित उद्देश्य प्रभावित करते हैं।

**( ख ) शिक्षक संबंधी कारक :-**

1. विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण
2. विषय वस्तु में निपुणता, अधिकार
3. शिक्षक का व्यक्तित्व व व्यवहार
4. शिक्षण की विधि, कौशल
5. शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य

**( ग ) कार्य संबंधी कारक ( विषयवस्तु ) (Task Factor) :-**

1. कार्य की लम्बाई (Lenght)
2. कार्य की उपयोगिता (Meaning Fullness)
3. कार्य की रोचकता
4. कार्य की कठिनाई (Difficulty)
5. कार्य की समानता

**( घ ) वातावरण संबंधी कारक :-**

1. **भौतिक वातावरण** – जलवायु, शॉर आदि
2. **सामाजिक वातावरण** – परिवार, समाज, विद्यालय आदि
3. **सांस्कृतिक वातावरण** – रीति-रिवाज, परम्पराएँ, शिक्षा आदि।

**( च ) विधि संबंधित कारक :-** करके सीखना, अभ्यास, निर्देशन, सूझ, परिणाम का ज्ञान, सीखने का समय, परीक्षा सक्रिय प्रयत्न

**( छ ) संगठन कारक :-** समय सारणी, अध्यापक-छात्र संबंध प्रतियोगिता, पुरस्कार, दण्ड, लोकतांत्रिक संगठन, निर्देशन, सम्बन्ध।

**( ज ) सामाजिक कारक सम्बन्ध :-** विद्यालय, समूह

## अधिगम के नियम (Laws of Learning)–

- प्रतिपादक :- थार्नडाइक (अमेरिका)
- पुस्तक – 'शिक्षा मनोविज्ञान (1913) में तीन मुख्य व पाँच गौण नियमों का प्रतिपादन किया है –

## अधिगम के मुख्य नियम–

1. **तत्परता का नियम :- ( मानसिक तैयारी का नियम ) (Law of Readiness)**

किसी कार्य को करने के लिये यदि शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार है तो उसे करना सीख जाते हैं। वुडवर्थ ने इसे मानसिक तैयारी का नियम कहा है।

Scanned with CamScanner

**जैसे :-** घोड़े को तालाब तक ले जाया जा सकता है। लेकिन पानी पीने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता।
इस नियम का उपयोग बालक में रूचि उत्पन्न करने, तैयार करने जिज्ञासा जागृत करने तथा ध्यान केन्द्रित करने में किया जाता है।

2. **अभ्यास का नियम/श्रम का नियम (Law of Exercise) :-**
अभ्यास मनुष्य को दक्ष बनाता है। - **''करत-करत अभ्यास के जड़मत होय सुजान।''**
**प्रकार -**
**(क) उपयोग का नियम (Use)** - सीखे गये विषय का बार-बार दोहराना उद्दीपन अनुक्रिया के संबंध को मजबूत बनाता है।
**(ख) अनुपयोग का नियम (Disuse)** - ना दोहराने पर विषय का विस्मरण हो जाना अनुपयोग कहलाता है।
इस नियम का प्रयोग आदत निर्माण, बुरी आदतों को छोड़ने (संगीत, चित्रकारी) लेखन सुधार तथा कलाओं के विकास में उपयोगी है।

3. **प्रभाव/सन्तोष/परिणाम का नियम/प्रसन्नता व दुःख का नियम (Law of Effect) :-**
क्रिया या कार्य करने के बाद यदि सन्तुष्टि प्राप्त होती है तो उसे करना सीख लिया जाता है अन्यथा नहीं।
अभिवृत्ति व मनोभावों का विकास करने में उपयोगी, क्रोध व ईर्ष्या के संवेग को दूर करने, समस्या व कदाचारी व्यवहार का सुधार, रुचि व स्मृति इससे सम्बन्धित है।

## गौण नियम-

1. **बहुप्रतिक्रिया का नियम (Multiple Response)** - बहुप्रक्रियाओं को करते हुए सीख जाना। जैसे - बिल्ली का पिंजरे से निकलना।
2. **आंशिक क्रिया का नियम (Law of Partial Activity)** - विषयवस्तु को छोटे-छोटे भागों में विभाजित करते हुए अंश से पूर्ण की ओर जाना।
3. **मनोवृत्ति का नियम (Law of Attitude)** - सीखना सकारात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करता हैं।
4. **आत्मीकरण का नियम (Law of Assimilation)** - पूर्व ज्ञान से संबंध स्थापित करके सीख जाना।
5. **साहचर्य परिवर्तन का नियम (Law of Associative Shifting)** - (संबंधित परिवर्तन का नियम)
किसी एक परिस्थिति में किये गए व्यवहार को उसी के समान दूसरी परिस्थिति मे दोहराना।
इसे अनुकूल अनुक्रिया का नियम भी कहते हैं। जैसे - बेटे के दूर जाने पर माँ द्वारा उसकी फोटो के साथ बातचीत करना।

**उप नियम :-**

6. **नवीनता का नियम** - नई चीजें जल्दी याद होना।
7. **प्राथमिकता का नियम** - पहला प्रभाव स्थायी होता है।
8. **सम्बन्धता का नियम** - सम्बन्ध जल्दी याद होना।
9. **उत्तेजक का तीव्रता का संयम** - उत्तेजक बलवान होने पर अनुक्रिया जल्दी होना। जैसे - प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड

## अधिगम के उपागम-

इनका सम्बन्ध कार्यशैली प्रविधि तथा अधिगम तकनीकों से होता है मुख्य रूप से दो प्रकार के है -

1. **तल उपागम (Bottom Approach)** - इस उपागम में विद्यार्थी का उद्देश्य कार्य अपेक्षाओं की पूर्ति करना है। विषयवस्तु को ठीक से समझने की बजाय वह मात्र पूर्वानुमानिक प्रश्नों, सूचनाओं को स्मरण करता है, रट लेता है, वह इस कार्य को एक बाह्य दबाव या भार समझता है।
2. **नितल/गहन उपागम (Intensive Approach)** - इस उपागम में विद्यार्थी का उद्देश्य अधिगम सामग्री को अर्थ को समझना है वह पाठ्यसामग्री के क्रियाशील होकर क्रिया करता है। नवीन विचारों का पूर्वज्ञान व दैनिक जीवन के अनुभवों के साथ संबंध स्थापित करता है निष्कर्षों की जांच करता है व वैकल्पिक समाधान तलाश करता है।
3. **कार्यनीति उपागम** - तल उपागम व नितल उपागम दोनों में से एक शाखा निकली जिसे **कार्यनीतिक उपागम** कहा जायेगा। इस उपागम में विद्यार्थी का उद्देश्य आवधिक परीक्षा में सर्वाधिक अंक या ग्रेड प्राप्त करना होता है इसके लिए वह दोनों में से किसी भी उपागम को चुन सकता है।

**कार्यनीति उपागम की प्रमुख विशेषता** -अध्ययन विधि सुनियोजित व सुव्यवस्थित हो जिसमें समय व क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित हो।
**इन उपागमों में तीन प्रमुख विचारधारा निकली है -**
(1) व्यवहारवादी (2) संज्ञानवादी
(3) निर्मितवादी

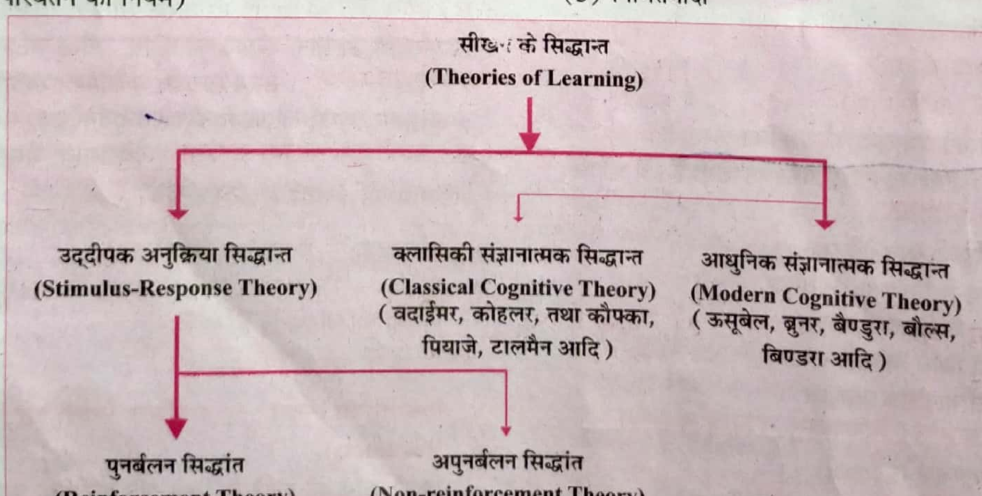

## अधिगम के सिद्धांत–व्यवहारवादी, संज्ञानवादी व निर्मितवादी

✦ **अधिगम की व्यवहारवादी अवधारणा :-**

**प्रमुख विशेषताएँ :-**

1. अधिगम उद्दीपक - अनुक्रिया के संबंध के रूप में व्यक्त होता है।
2. अधिगम उसी अवस्था में होता है जब अपेक्षित वातावरण उपलब्ध हो। (वातावरण पर बल)
3. व्यवहारगत परिवर्तन वस्तुगत रूप में प्रेक्षणीय होता है।
4. व्यवहार को वस्तुगत अध्ययन में विश्वास।
5. अधिगम की मुख्य विधि अनुबंधन है।
6. ज्ञान की एक इकाई का दूसरी इकाई का साहचर्य समानता विषमता, समय/स्थान की निकटता जैसे गुणों के कारण होता है।
7. अनुभव व प्रशिक्षण पर बल

✦ **व्यवहारवादी उपागम की सीमाएँ :-**

1. मानव की तुलना एक मशीन से की गई है जो गलत है।
2. इसमें भावनाओं, चिंतन व कार्यों को मात्र व्यक्ति के प्रत्यक्ष व्यवहार के संदर्भ में ही स्पष्ट किया जाता है।
3. संरचनात्मक व वंशानुगत कारकों की अवहेलना की है।
4. व्यवहार को केवल अर्जित मानता भी एकपक्षीय है।

**व्यवहारवादी विचारधारा :-**

**समर्थक** - पिता - J.B. वाट्सन -I

✦ स्कीनर II
✦ थार्नडाइक
✦ वुडवर्थ
✦ मैक्डूगल
✦ पोलेन्सकी
✦ C.L. हल
✦ पावलॉव
✦ एडविन गूथरी
✦ पिल्सबल्ली

**व्यवहारवादी सिद्धान्त :-**

1. थॉर्नडाइक का प्रयास व त्रुटि
2. पावलॉव का शास्त्रीय अनुबंधन
3. सी.एल. हल का प्रबलन सिद्धान्त
4. स्कीनर का क्रिया प्रसूत
5. गूथरी का समीपता सिद्धान्त
6. मिल्लर का सिद्धान्त

✦ व्यवहावादी विचारधारा मानती है वातावरण व्यक्ति को बदल सकता है।

✦ व्यवहावादी विचारधारा के अनुसार अध्यापक उचित अधिगम परिस्थितियों का निर्माता होता है, उद्दीपक व अनुक्रिया के सम्बन्ध पर बल।

## 1. प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त (Trial and Error Theory)–

✦ **अन्य नाम :-**

(i) संबंधवाद का सिद्धांत (Connectionism)
(ii) योजनवाद का सिद्धांत
(iii) आवृत्ति का सिद्धांत
(iv) बन्ध का सिद्धांत (Bond)
(v) हर्ष व दु:ख का सिद्धांत
(vi) परिश्रम एवं धैर्य का सिद्धांत
(vii) S.R. सिद्धान्त
(viii) उद्दीपन - अनुक्रिया का सिद्धान्त (Stimulus Response)

✦ **अर्थ** - हम अपनी गलती व अनुभवों से सीखते हैं।

✦ **थॉर्नडाइक** के अनुसार सीखना संबंध स्थापित करना है, संबंध स्थापित करने का कार्य मस्तिष्क करता है।

✦ **थॉर्नडाइक** ने भूखी बिल्ली पर प्रयोग किया है। भूखी बिल्ली पिंजरे के बाहर उद्दीपक मछली के टुकड़े को प्राप्त करने के लिए प्रयास करती है, त्रुटियाँ करती है तथा उनमें संबंध स्थापित करते हुए पिंजरा खोलना सीख जाती है।

प्रतिपादक - **थॉर्नडाइक** (अमेरिका)

✦ 1898 में पुस्तक **'एनीमल इन्टेलिजेन्स'** में यह सिद्धांत दिया।

✦ इस सिद्धांत में **भूखी बिल्ली** पर प्रयोग किया गया।

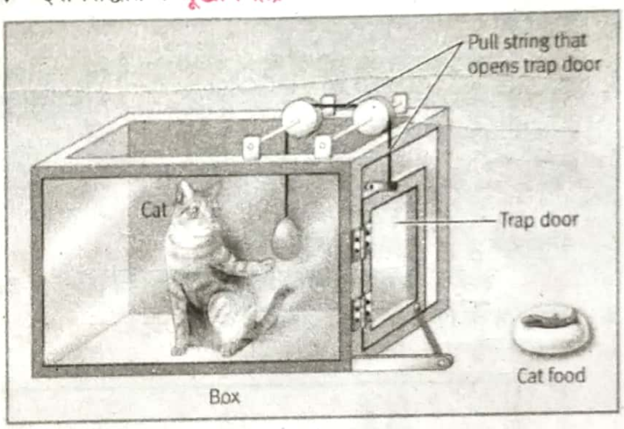


✦ 10 दिन तक प्रयोग

✦ उद्दीपन - सुगन्धित मछली का टुकड़ा

**चरण :-**

1. प्रयास करना ।
2. असफल होना।
3. फिर प्रयास करना जब तक सफलता नहीं मिलती।

### शिक्षा में उपयोगिता

1. मन्द बुद्धि बालकों के लिये यह सिद्धांत उपयोगी है।
2. यह सिद्धांत प्रेरणा पर बल देता है।
3. यह सिद्धांत क्रमिक रूप से सिखाने पर बल देता है, सरल से कठिन पर बल। (सीखना क्रमोत्तर होना।)
4. उस सिद्धांत के द्वारा बालक में धैर्य व परिश्रम के गुणों का विकास किया जा सकता है, स्वअधिगम पर बल।
5. गणित, विज्ञान, समाजशास्त्र आदि को सिखाने में उपयोगी है।
6. यहं सिद्धांत अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता का विकास करने में सहायक है।
7. पश्च दृष्टि का प्रयोग किया जाता है, करो व सीखो पर बल।
8. यह सिद्धांत विभिन्न प्रकार के कौशल जैसे - लिखना, पढ़ना, दौड़ना, चलना आदि को सीखाने में उपयोगी।
9. स्वअधिगम द्वारा सीखने पर बल दिया जाता है।

10. ड्राइविंग, टेनिस आदि सीखने में उपयोगी।
11. परिश्रम के प्रति आशा का संचार होता है।
12. आर्कमीडिज का सिद्धान्त इसी पर आधारित है।

दोष :-

1. व्यर्थ के प्रयत्नों पर बल - अन्तर्दृष्टि का अभाव
2. सीखने में यांत्रिकता पर बल देता है।
3. सीखने का कारण स्पष्ट नहीं करता है। प्रतिभाशाली बच्चों के लिए अनुपयोगी
4. बाह्य पुनबर्लन बल।
5. सीखने की गति का अनियमित होना।
6. सीखने में चिंतन का स्थान नहीं होना।

नोट :- अर्जित ज्ञान को उपयोगी बनाने वाला सिद्धांत

- सिद्धान्त के तत्त्व :-

(1) प्रेरणा (2) बाधा (3) निरर्थक प्रतिक्रिया (4) व्यर्थ अनुक्रिया को दूर करना (5) सफलता (6) सही अनुक्रिया की स्थापना कर लक्ष्य की प्राप्ति

नोट :- इस सिद्धान्त पर लॉयड मार्गन ने कुत्ते व मैक्डूगल ने चूहे पर प्रयोग किया।

## 2. अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धांत (Conditioned Response Theory)-

- अन्य नाम -

1. परम्परागत/प्राचीन अनुबंधन सिद्धांत
2. सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धांत
3. शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत (साहचर्य अनुबंधन)
4. प्रतिवादी अनुबंध सिद्धांत
5. प्रतिस्थापक सिद्धांत (Substitution)
6. क्लासिकल (शास्त्रीय अनुबंध सिद्धांत)
7. उद्दीपन अनुबंधन सिद्धांत
8. अनुक्रियात्मक अनुबंधन उद्दीपन साहचर्य सिद्धांत
9. S अनुबंधन सिद्धान्त
10. प्रतिक्रियात्मक अनुबंधन

- अर्थ :-
- अस्वाभाविक उद्दीपक के प्रति स्वाभाविक उद्दीपक के समान होने वाली प्रतिक्रिया को संबद्ध सहज क्रिया या अनुबंधित क्रिया कहा जाता है। इसका कारण अनुबंधन होता है इसे कुत्ते पर प्रयोग किया गया जो मूल उद्दीपक के प्रति जो क्रिया करता है वही क्रिया कृत्रिम उद्दीपक के प्रति भी अनुबंधन के कारण करने लग जाता है।

प्रतिपादक - I.P. पावलॉव (इवान पत्रोविच पावलॉव), रूस

नोट :- रूस के शरीर विज्ञानी जिन्हें 1904 में पाचन क्रिया के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया।

- अनुबंधन के पिता/गोचर की शुरूआत - आई.पी. पावलॉव
- सीखना एक अनुकूलित अनुक्रिया है।

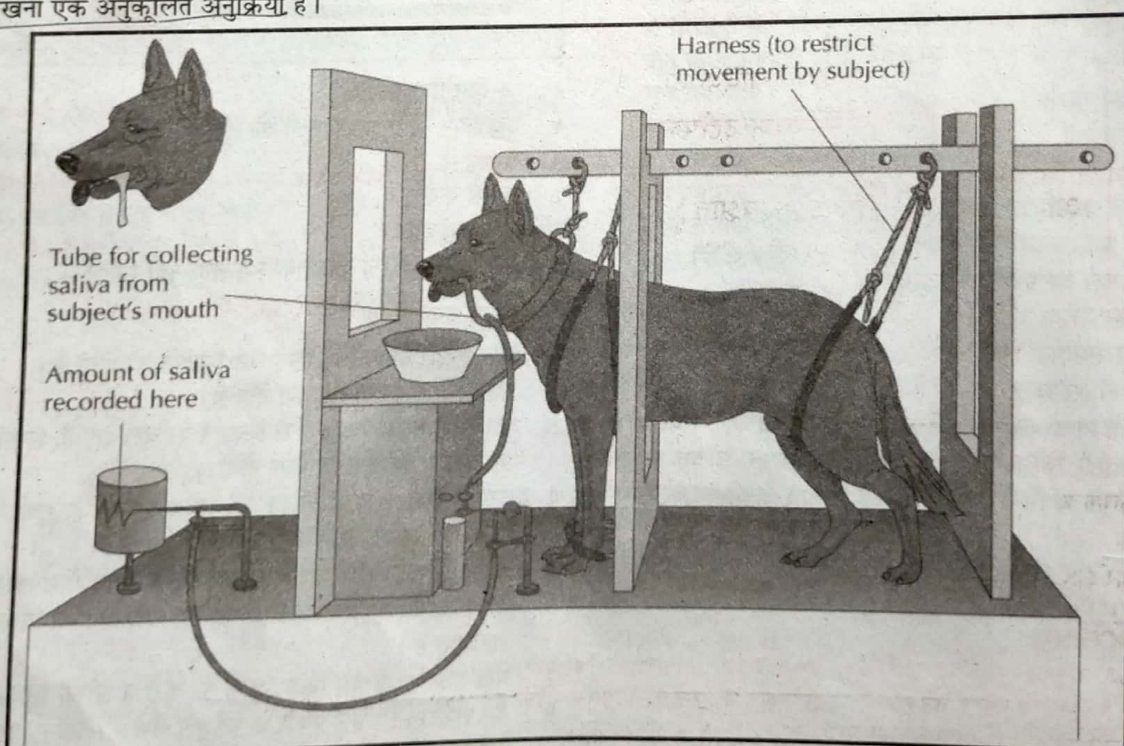


प्रयोग - कुत्ते पर

यह नियम साहचर्य नियम (Association) पर आधारित है।

Scanned with CamScanner

| | UCS (Unconditional Stimulus) | UCR (Unconditional Response) |
|---|---|---|
| अनुबंधन से पूर्व :- | भोजन | लार टपकना |
| | ↓ | ↓ |
| | मूल उद्दीपक | स्वाभाविक प्रतिक्रिया |
| | ↓ | ↓ |
| मूल उद्दीपक के अन्य नाम | स्वाभाविक उद्दीपक | मूल प्रतिक्रिया |
| | ↓ | |
| | अननुबंद्धित उद्दीपक | |
| | ↓ | |
| | प्राकृतिक उद्दीपक | |

**अनुबंधन के समय :-**

| | CS | UCS | UCR |
|---|---|---|---|
| | घण्टी | + भोजन | लार टपकना |
| | ↓ | ↓ | ↓ |
| कृत्रिम उद्दीपक | कृत्रिम उद्दीपक | | स्वाभाविक प्रतिक्रिया |
| उद्दीपक के अन्य नाम | ↓ | | |
| | अनुबंद्धित उद्दीपक | | |
| | ↓ | | |
| | अस्वाभाविक उद्दीपक | | |
| | सहायक उद्दीपक | | |

**अन्तिम स्थिति ( अनुबंधन के पश्चात ):-**

घण्टी (CS) — लार टपकना (CR)

CS - CR संबंद्ध प्रतिक्रिया/अनुबंद्धित प्रतिक्रिया (Conditional Response)

UCS - UCR

CS - UCS - UCR

CS- CR

- **नोट :-** केवल घण्टी के उपस्थित होने पर लार टपकना सम्बद्ध प्रतिक्रिया कहलाती है।
- **विलोपन :-**
जब लगातार CS को उपस्थित किया जाता है तो CR का बंद हो जाना विलोपन कहलाता है।

**अनुबंधन के प्रकार–**

1. **सहकालिक अनुबंध** – घण्टी + भोजन, साथ-साथ (Simultaneous Conditioning)
2. **विलम्बित अनुबंधन** – CS की UCS से शुरूआत व अन्त दोनों पहले होता है। (Delayed Conditioning)
3. अवशेष अनुबंधन – CS , UCS से पहले लेकिन समय अन्तराल होता है। (Trace Conditioning)
4. **पश्चगामी अनुबंधन** – UCS, CS से पहले दिया जाता है। (Backward Conditioning)

**नोट :-** इस सिद्धांत में उद्दीपन सामान्यीकरण, व्यवस्थित विसंवेदीकरण, अनावृत्ति व विभेदन पर बल दिया जाता है।

Scanned with CamScanner

## अनुकुलित अनुक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक–

1. प्रेरक का प्रभाव
2. उत्तेजकों के संबंध का प्रभाव (निकट का संबंध)
3. उत्तेजकों की पुनरावृत्ति (Repetition) (बार-बार दोहराने से जल्दी अनुबंध होना।)
4. नियंत्रित वातावरण (बाधा डालने वाले तत्व ना होना।)
5. मानसिक स्वास्थ्य (अस्वस्थ में नहीं होता।)
6. लिंग का प्रभाव (लड़कियों में ज्यादा होना)
7. बुद्धि का प्रभाव (मंद बुद्धि में ज्यादा)
8. विभेदीकरण (Discrimination)
9. आयु (Age) (छोटे बच्चों में ज्यादा)
10. विलोप (Extinction)
11. सामान्यकरण व साहचर्य नियम का प्रभाव

## I.P. पावलॉव अधिगम सिद्धान्त (विशेष)–

- सीखने का आधार अनुबन्धन है। (Conditioning)
  इस सिद्धान्त के प्रमुख नियम –

1. **उत्तेजन का नियम (Law of excitation)** – तटस्थ/अनुबन्धित उद्दीपक (CS) को UCS के साथ उपस्थित करने पर CS प्राणी में उत्तेजना उत्पन्न करता है।
2. **आन्तरिक अवरोध का नियम (Law of Internal Inhibition)** – इसके अनुसार CS के बाद UCS नहीं मिलने पर प्राणी CS के प्रति अनुक्रिया करना कम कर देता है तो विलोपन प्रारम्भ हो जाता है।
3. **बाह्य अवरोध का नियम (Law of external inhibition)** – इसके अनुसार सीखने के दौरान CS (अनुबन्धित उद्दीपक) के साथ नया उद्दीपक दिया जाता है तो सीखने की गति धीमी हो जाती है। जैसे – घण्टी व भोजन के मध्य किसी गाड़ी की आवाज।
4. **उद्दीपक (CS) तथा स्वाभाविक उद्दीपक (UCS) का क्रम** – मध्य का समय अन्तराल अधिगम को प्रभावित करता है। अन्तराल अधिक होने पर सीखना कमजोर होता है।
5. **उद्दीपक सामान्यीकरण (Stimulus Generalization)** – मूल उद्दीपक के प्रति की जाने वाली क्रिया मिलते जुलते अन्य उद्दीपकों के प्रति भी वही अनुक्रिया करना।
7. **विभेदन (Discrimiration)** – प्रयासों के साथ-साथ प्राणी मूल अनुबंधित उद्दीपक व अन्य समान उद्दीपकों के प्रति अन्तर करना सीख लेता है। यही विभेदन है।
8. **उच्चकोटि अनुबन्धन (Higher order conditioning)** – इसका तात्पर्य जब बार-बार घण्टी को भोजन से पहले उपस्थित किया जाता है तो इतना प्रबल हो जाता है कि लार की प्रक्रिया जो पहले घण्टी की आवाज पर होती है वह रोशनी जलते ही होने लगती है यही उच्च कोटि अनुबन्धन है।
9. **विलोपन तथा स्वत: पुनर्लाभ (Extinction and sponetaneous recovery)** –
   **विलोपन** – लगातार CS को उपस्थित करने पर CR का बन्द होना।
   **स्वत: पुनर्लाभ** – इसका तात्पर्य विलोपन के कुछ समय बाद जब पुन: CS दिया जाता है तो कुता फिर से CR करता है।
10. **पुनर्बलन (Reinforcement)** – पावलॉव के सिद्धान्त में भोजन पुनर्बलन है।
11. **आभासी अनुबंधन** – प्रयोगात्मक परिस्थिति में पूर्व अनुभव के कारण अपने आप लार स्त्राव की प्रतिक्रिया शुरू हो जाती है यही आभासी अनुबंधन है।

## अनुबन्धन अनुक्रिया की विशेषताएँ (Condition Response) –

1. विशिष्ट केवल उद्दीपन से उत्पन्न
2. अस्थायी व अस्थिर
3. सम्पूर्णता पर आधारित
4. बच्चों में अनुबन्ध अनुक्रिया जल्दी होगी।
5. लड़कियों में लड़कों की अपेक्षा जल्दी होगी।
6. अनुबन्धन अनुक्रिया बच्चों में भी जल्दी होती है।

## अननुबद्धित उद्दीपक के प्रकार–

1. प्रवृत्यात्मक – सकारात्मक (Appetitive) – भोजन
2. विमुखी – नकारात्मक (Aversive) – दण्ड

**शिक्षा में उपयोगिता :-**

- **क्रो एण्ड क्रो** – यह सिद्धान्त बालकों में अच्छे व्यवहार व उत्तम अनुशासन की भावना का विकास करता है व सुलेख व अक्षर विन्यास में उपयोगी है।

1. बालक के भाषात्मक विकास में सहायक
2. समूह निर्माण में उपयोगी
3. बालक में भय को दूर करने में उपयोगी, भ्रम को दूर करने में उपयोगी (वाटसन ने खरगोश व बच्चे पर प्रयोग किया)।
4. आदतों के निर्माण में उपयोगी, बुरी आदतों को दूर करने में उपयोग
5. सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करने में उपयोगी।
6. धनात्मक व्यवहार, अभिवृत्ति, मूल्य के विकास के सहायक।
7. यह सिद्धान्त मानसिक रोगियों को सुधारने में उपयोगी है।
8. यह सिद्धान्त भय के सिद्धान्त की सर्वोत्तम व्याख्या करता है।
9. यह सिद्धांत शिक्षण में साहचर्य व सहायक सामग्री के उपयोग पर बल देता है। (श्रव्य दृश्य सामग्री)(Audio Visual)
10. भय, प्रेम व घृणा के भाव जागृत करने के उपयोग में यह प्रयोग साहचर्य नियम पर आधारित है।
11. वाटसन ने इसी सिद्धांत पर अपने 11 माह के बच्चे अल्बर्ट व खरगोश पर प्रयोग किया।
12. कदाचारी, समस्यापरक व कुसमायोजित बच्चों का उपचार में उपयोगी।
13. समायोजन के सहायक

## 3. प्रबलन सिद्धांत (Reinforcement Theory)–

- **अन्य नाम :-**

1. क्रमबद्ध व्यवहार का सिद्धांत (Systenatic Behaviour Theory)
2. गणित निगमन सिद्धांत (Mathematics Deductive Theory)
3. विधिक सिद्धांत
4. आवश्यकता, अवकलन सिद्धांत, सबलीकरण अवकलन सिद्धांत, चालक न्यूनता का सिद्धांत (Drive Reduction), यथार्थ का सिद्धांत, परिष्कार का सिद्धांत/निगमन सिद्धांत/प्रेरणा प्रबलन हास सिद्धान्त

- प्रतिपादक – **सी. एल. हल 1915 'अमेरिका'**
- पुस्तक – **व्यवहार के सिद्धांत**
- यह सिद्धांत थार्नडाइक एवं पावलॉव के अधिगम सिद्धांत पर आधारित है।

Scanned with CamScanner

✦ सी. एल. हल :-

आधार वाक्य - 'सीखना आवश्यकता की पूर्ति के द्वारा होता है।' कोई कार्य तभी सीखा जाता है जब आवश्यकता की पूर्ति हो अन्यथा नहीं। आवश्यकता की पूर्ति होने पर चालक की शक्ति कम हो जाती है ना होने पर क्रियाशील बन जाता है प्राणी।

✦ प्रयोग - चूहे पर

✦ S.O. R. सूत्र को स्वीकार किया है।

✦ इन्होंने स्वयं एक सूत्र का प्रतिपादन किया है - B = D × H

✦ B - व्यवहार, D - चालक, H - आदत

✦ शिक्षा में उपयोगिता :-

1. यह सिद्धांत सीखने में आवश्यकता तथा प्रेरणा के ऊपर बल देता है। व्यक्तिगत शिक्षा पर बल।
2. यह सिद्धांत वास्तविक जीवन से जोड़ने पर बल देता है। अभ्यास पर बल, कृत्रिम प्रोत्साहन व पुरस्कार के प्रयोग पर बल।

✦ स्कीनर के अनुसार :- 'यह सिद्धांत अधिगम का सर्वश्रेष्ठ व आदर्श सिद्धांत है।'

✦ क्लार्क (C.L.) हल अधिगम सिद्धान्त ( विशेष ) :-

- यह अधिगम सिद्धान्त व्यापक है इसमें स्थानापन्न का सिद्धान्त व प्रभाव का नियम भी शामिल है ।
- अधिगम की विधिवत व स्पष्ट प्रकृति प्रस्तुत करता है।
- खोज व अनुसंधान को महत्त्व देता है।
- गणित के 17 नियम व 17 उपनियम पर आधारित है।

✦ हल द्वारा प्रतिपादित मध्यवर्ती चर (Intervening Variables)

(1) आदत शक्ति (2) चालक (3) प्रोत्साहन अभिप्रेरणा(4) प्रतिक्रियात्मक प्रतिरोध (5) अनुबन्धित अवरोध (6) सशक्त प्रतिक्रया (7) सामान्यीकृत आदत शक्ति (8) सामान्यीकृत सशक्त प्रक्रिया (9) कुल अवरोधात्मक शक्ति (10) अनिश्चित प्रतिक्रयात्मक शक्ति

✦ पूर्ववर्ती चर (Antecedent Variables) :-

(1) पुनर्बलन की संख्या
(2) चालक स्थितियाँ
(3) उत्तेजक की तीव्रता
(4) अनुक्रियात्मक कार्य
(5) पुरस्कार की मात्रा

✦ C.L. हल प्रबलन सिद्धान्त विशेष तथ्य :-

- हल का सिद्धान्त परिसीमित प्रयोगात्मक आधार पर
- यह अधिक गणितीय, संख्यात्मक, सैद्धान्तिक पूर्ण व स्थाई है।
- यह नियमों, उपनियमों व निष्कर्षों पर आधारित है।

### हल के नियम :-

1. **शारीरिक प्रसाधन ( नियम 1 व 2 )**

- शरीर में जन्म के समय लक्ष्य उन्मुख अनुक्रिया का उत्तरोत्तर क्रम होता है।
- स्नायु सम्बन्धी उत्तेजनाओं में अन्तःक्रिया होती है जो बाद में अन्तःकार्यों को प्रभावित करती है।

2. **चालक व अनुक्रिया प्रोत्साहन ( नियम 3 )** -यदि अनुक्रिया उत्तेजना संकेत के साथ सम्बन्धित हो तो और दोनों चालक प्रसूत उत्तेजना को कम करने वाले हो तो उस उत्तेजना संकेत में अनुक्रिया को प्रोत्साहन करने की अधिक शक्ति होगी।
3. **आदत निर्माण व पुनर्बलन ( नियम 4 )** - आदत शक्ति क्रमिक, पुनर्बलन से बढ़ती जाती है।
4. **प्रतिक्रियात्मक शक्ति को प्रभावित करने वाले तत्व ( नियम 5 से 8 )** - प्रतिक्रियात्मक शक्ति अनुक्रिया को करने की प्रवृत्ति की शक्ति है। इसको निम्न तत्व प्रभावित करते हैं-

✦ चालक ( नियम 5 ) - चालक अनुक्रिया, आदत की शक्ति को प्रतिक्रियात्मक शक्ति की और सक्रिय बनाता है।

✦ उद्दीपक तीव्रता ( नियम 6 ) - प्रतिक्रियात्मक शक्ति इस पर आधारित है।

✦ प्रोत्साहन अभिप्रेरणा ( नियम 7 ) - प्रतिक्रियात्मक शक्ति प्रोत्साहन के रूप पर आधारित है।

✦ आदत की शक्ति ( नियम 8 ) - प्रतिक्रियात्मक शक्ति उस आदत की शक्ति पर आधारित है जो चालक, उद्दीपक, अभिप्रेरणा के द्वारा प्रभावी बनाती है।

✦ प्रतिक्रियात्मक शक्ति का अवरोध ( नियम 9 )

5. **सामान्यीकृत आदत शक्ति व सामान्यीकृत प्रतिक्रियात्मक शक्ति ( नियम 10, 11, 12 )**

- जब उत्तेजक समान हो तो आदत की शक्ति सामान्यीकृत शक्ति बन जाती है (नियम 10)
- आदत की शक्ति चालक, प्रोत्साहन अभिप्रेरणा व उद्दीपन तीव्रता पर आधारित होती है। (नियम 11)
- प्रतिक्रियात्मक शक्ति समय-समय पर बदलती रहती है। (नियम 12)

6. **वास्तविक अनुक्रिया ( नियम 13 )** - प्रतिक्रियात्मक शक्ति पर वास्तविक अनुक्रिया घटित होती है।
7. **निष्कर्ष प्रतिक्रियात्मक शक्ति ( नियम 14 )** - अव्यक्त प्रतिक्रिया जितनी कम होगी प्रतिक्रियात्मक शक्ति उतनी ही अधिक होगी।
8. **नियम 15** - प्रतिक्रियात्मक शक्ति प्रतिक्रियात्मक विस्तार पर आधारित होती है।
9. **नियम 16** - प्रतिक्रियात्मक शक्ति निरन्तर अनुर्बलन का परिणाम है।
10. **नियम 17 - व्यक्तिगत विभिन्नताएँ** - व्यक्तियों में विभिन्नताएँ होती है तथा विभिन्न समय में एक ही व्यक्ति की शारीरिक स्थिति अलग-अलग होती है।

## 4. क्रिया-प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत (Operant Conditioning Theory)-

✦ अन्य नाम :-

1. सक्रिय अनुबंधन सिद्धांत, कार्यात्मक प्रतिबद्धता सिद्धान्त
2. नैमितिक अनुबंधन सिद्धांत (लीवर दबाना भोजन प्राप्त करने का निमित है।)
3. साधनात्मक अनुबंधन सिद्धान्त (Instrumental Conditioning Theory)
4. R-Type अनुबन्ध सिद्धान्त
5. सम्भावित पुनर्बलन का सिद्धांत
6. R-S अनुबंधन सिद्धान्त/R-R सिद्धान्त (Response Reinforcement)

✦ प्रतिपादक - **बी. एफ. स्कीनर** (बुरहस फ्रेडरिक स्कीनर) 1938 अमेरिका (हावर्ड विश्वविद्यालय)

Scanned with CamScanner

- पुस्तक - साईन्स इज हयुमन बिहेवियर, द बिहेवियर ऑफ ऑरगेनिज्म
- स्किनर ने उद्दीपन नहीं तो अनुक्रिया नहीं का विरोध किया है।
- क्रिया - प्रसूत व्यवहार :-
- वह व्यवहार जिसमें उद्दीपन की जानकारी नहीं होती क्रिया प्रसूत व्यवहार कहलाता है।
- यह सिद्धांत 'प्रभाव के नियम' पर आधारित है।
- इन सिद्धांत में अनुक्रिया तथा उसके बाद मिलने वाले परिणाम को महत्त्व मिलता है।
- इस सिद्धांत में कबूतर तथा सफेद चूहे पर प्रयोग किया गया।

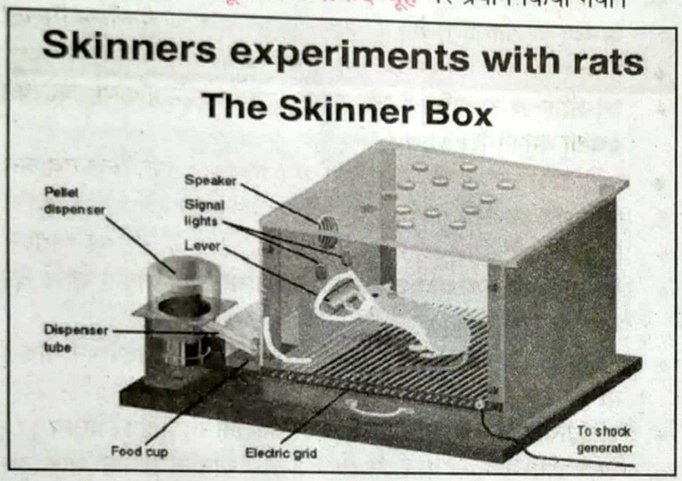


- अनुक्रिया सामान्यीकरण पर बल दिया है। (Response Generalization)
- सूत्र :- अनुक्रिया (Response) ⟶ पुनर्बलन (Reinforcement) ⟶ पुनरावृत्ति (Repetition) ⟶ साधन - अनुबन्ध (Instrumental Conditioning)
- श्रृंखला (Chaining) - जटिल कार्यो को छोटे-छोटे खण्डों में तार्किक क्रम में जोड़ना।
- वंचन - वांछित अनुक्रिया होने तक पुनर्बलन को रोके रखना।
- शेपिंग (Shaping)/आकृतिकरण/रूप निर्धारण/क्रमिक सन्निकट - बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिये पुनर्बलन का आंशिक प्रयोग करना।
  इसके दो प्रकार - (1) विभेदी पुनर्बलन (2) क्रमिक उपागम
- आधार वाक्य - 'किसी क्रिया को करने के बाद यदि बल प्रदान करने वाला उद्दीपन मिलता है तो उस क्रिया को करने की शक्ति में वृद्धि हो जाती है। यदि कोई सक्रिय घटना पुनर्बलन उद्दीपन प्रस्तुत करती है तो सक्रिय अनुबंधन और अधिक शक्तिशाली हो जाता है।
  नोट :- पुनर्बलन अनुसूची शब्द का प्रयोग किया है स्कीनर ने
- पुनर्बलन (Reinforcers):-
  अनुक्रिया की गति में वृद्धि करता है।

1. स्वीकारात्मक (Positive) -
   (1) प्राथमिक, (भोजन, पानी) (2) गौण/द्वितीयक (धन, प्रशंसा, पुरस्कार)
2. नकारात्मक पुनर्बलन (Negative) जैसे - शोर, दण्ड, पीड़ा, अपमान आदि।
3. दण्ड देने वाला पुनर्बलन

- पुनर्बलन के प्रकार:-

1. सतत पुनर्बलन - निरन्तर प्रयोग
2. आंशिक पुर्नबलन - दो प्रकार
   (अ) अनुपात पुनर्बलन - प्रतिक्रयाओं की संख्या पर
   (ब) अन्तराल पुनर्बलन - समय अन्तराल पर
   नोट :- पुनर्बलन इस सिद्धांत की केन्द्रीय अवधारणा है।

- शिक्षा में उपयोगिता :-

1. बालक के शब्द भण्डार को बढ़ाने में सहायक (अनुक्रिया व पुनर्बलन को महत्वपूर्ण मानना।)
2. आत्म-विश्वास को बढ़ाने व चिन्ताओं को दूर करने में सहायक
3. सरल से कठिन बल देता हैं।
4. निदानात्मक उपचारात्मक शिक्षण में सहायक
5. अभिक्रमिक अनुदेशन में यह सिद्धांत उपयोगी है।
6. व्यवहार परिमार्जन या व्यवहार चिकित्सा में उपयोगी।
7. यह सिद्धांत सकारात्मक पुनर्बलन पर बल देता है।
8. परिणामों की जानकारी प्रदान करने में सहायक
9. रेडियो, कैमरा, टीवी चलाना इसी सिद्धान्त के आधार पर होता है।

- आलोचना :-

1. आनुवांशिक कारकों को महत्त्व नहीं।
2. जिज्ञासा व सृजनात्मकता का मापन।
3. आन्तरिक योग्यताओं को महत्त्व नहीं।
4. क्रमबद्धता नहीं।
5. यान्त्रिकीकरण पर बल
6. मन की गहराई जानने में असफल
7. प्राकृतिक वातावरण के उपयुक्त

- स्कीनर का अधिगम सिद्धान्त - स्कीनर अधिगम सिद्धान्त को रिक्त प्राणी उपागम (Empty Organism Approch) भी कहा जाता है।
- क्रिया प्रसूत (Operant) अनुबन्धन के नियम :-

1. क्रिया प्रसुत अनुक्रिया जिसके बाद पुनर्बलित उद्दीपक दिया जाता है उसे प्राणी बार-बार करता है।
2. पुनर्बलित उद्दीपक वह उद्दीपक होता है जिससे क्रियाप्रसूत अनुक्रिया होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

**विशेष तथ्य :-**

- सिद्धान्त की प्रमुख क्रियायें :-

1. संचयी रिकार्डिंग (Cumulative Recording) - स्कीनर ने पशु के व्यवहार को रिकार्ड करने के लिए इसका प्रयोग किया। इसमें अनुक्रिया की दर का पता लगता है।
2. वंचन (Deprivation) - पशु को निश्चित समय तक भूखा रखा जाता है।
3. मैगजिन प्रशिक्षण - इसमें चूहे को भोजन कप के पास मैगजिन की आवाज को उसके पास जाना सिखाया जाता है।
4. कार्यक्रमित सीखना (Programmed Learning) - यह सिद्धान्त अभिक्रमित अनुदेशन पर आधारित है -
   (i) सीखी जाने वाली सूचना को छोटे-छोटे चरणों में विभाजन।
   (ii) शिक्षार्थी क्रिया के तुरन्त बाद परिणाम दिया जाता है।
   (iii) शिक्षार्थी अपनी गति से सीखता है।

Scanned with CamScanner

5. पुनर्बलन का महत्त्व -
दो प्रकार -

(i) स्वीकारात्मक/धनात्मक (Positive reinforcement) - वह पुनर्बलन जिससे अनुक्रिया की सम्भावना बढ़ जाती है जैसे - भोजन। दो प्रकार (क) प्राथमिक - भोजन, पानी, (ख) द्वितीयक/गौण - प्रशंसा, सम्मान

(ii) नकारात्मक/ऋणात्मक (Negative) - वह पुनर्बलन जिसके हटने से अनुक्रिया की सम्भावना को शक्ति मिलती है। जैसे - शोर, पीड़ा, अपमान आदि।

6. दण्ड (Punishment) - जब किसी अनुक्रिया के होने से कुछ धनात्मक चीज परिस्थिति से हट जाती है तो इसे दण्ड कहा जाता है।

7. पुनर्बलन अनुसूची - दो प्रकार

(i) सतत पुनर्बलन अनुसूची (Continous Reinforcement Schedule) - प्रत्येक अनुक्रिया पर पुनर्बलन।

(ii) आंशिक पुनर्बलन अनुसूची (Partial) - कुछ अनुक्रिया पर

✦ इसके 4 प्रकार होते हैं–

(A) निश्चित अनुपात पुनर्बलन अनुसूची - प्रत्येक निश्चित संख्या में अनुक्रिया पर पुनर्बलन। जैसे - प्रत्येक 5 व 7 अनुक्रिया पर।

(B) परिवृत्य (Variable) अनुपात अनुसूची - अनुक्रिया की संख्या निश्चित नहीं होती कभी 8 वीं पर या 2 के बाद।

(C) निश्चित अन्तराल पुनर्बलन अनुसूची (Fixed Interval) - निश्चित 50 सैकेण्ड या 30 सैकेण्ड क बाद पुनर्बलन देना।

(D) परिवृत्य (Variable) अन्तराल पुर्नबलन अनुसूची - निश्चित ना होकर अनियमित अन्तराल होना।

नोट :- सतत पुनर्बलन की अपेक्षा आंशिक पुनर्बलन में क्रिया प्रसूत अनुक्रिया ज्यादा।

- परिवर्त्य अनुपात पुनर्बलन में अनुक्रिया पर सबसे ज्यादा
- निश्चित अनुपात अनुसूची में उच्च अनुक्रिया पर
- परिवर्त्य अन्तराल अनुसूची में साधारण पर
- निश्चित अन्तराल अनुसूची में सबसे कम होती है।

8. शेपिंग (Shaping) - ( ढलना ) - वांछित अनुक्रिया को पुनर्बलित करना।

दो तत्त्व - (1) विभेदी पुनर्बलन - कुछ अनुक्रिया को पुनर्बलित करना (2) क्रमिक उपागम - उसी अनुक्रिया को पुनर्बलित जिसे वह सीखना चाहता है।

9. शाब्दिक व्यवहार (Verbal Behaviour) - स्कीनर ने इसको 4 भागों में बांटा है -

✦ माण्ड - ( मांग ) - मांग की पूर्ति होने पर शब्द को पुनर्बलन मिलता है।

✦ टैक्ट (Tects) - किस वस्तु का नाम बताने की प्रक्रिया, चूहे को देखकर चूहा बोलना।

✦ प्रतिध्वनिक व्यवहार (Echoic Bahaviour) - पुनर्बलन तब जब दूसरे द्वारा बोले गये शब्द को हू-ब-हू दोहराना।

✦ ऑटोक्लिटिक व्यवहार (Autoclitic Behaviour) - वह व्यवहार जो अन्य शाब्दिक व्यवहार पर आधारित होता है।

नोट :- सक्रिय अनुबन्धन प्रक्रिया के आठ वर्ग है -

(1) पुरस्कार द्वारा सीखना
(2) उपेक्षा द्वारा सीखना
(3) पलायन द्वारा सीखना
(4) दण्ड से बचने के लिए सीखना
(5) विभेदक उद्दीपन की उपस्थिति में सीखना
(6) विभेदक उपेक्षा करके सीखना
(7) सक्रियता के टालने के लिए सीखना
(8) विभेदक दण्ड प्रसुत सीखना।

## पावलॉव व स्कीनर के सिद्धान्तों में अन्तर–

| पावलॉव | स्कीनर |
|---|---|
| 1. उद्दीपक प्रधान | 1. अनुक्रिया प्रधान |
| 2. उद्दीपक सामान्यीकरण | 2. अनुक्रिया सामान्यीकरण |
| 3. पुनर्बलन पहले | 3. पुनर्बलन बाद में |
| 4. वातावरण प्राणी पर कार्य करता है। | 4. प्राणी वातावरण पर कार्य करता है। |
| 5. सीखना उद्दीपक के स्थानान्तरण पर | 5. सीखना अनुक्रिया की श्रृंखला व परिष्कार पर |
| 6. UCS व CS का युगलीकरण | 6. अनुक्रिया व पुनर्बलन उद्दीपक का युगलीकरण |
| 7. अनुक्रियात्मक व्यवहार आन्तरिक | 7. अनुक्रियात्मक व्यवहार बाह्य |

## 5. समीपता अनुबंधन का सिद्धांत/स्थानापन्न–

✦ प्रतिपादक - एडविन गुथरी

✦ इस सिद्धांत में 'उत्तेजना' तथा 'अनुक्रिया' के मध्य संबंध स्थापित करने पर बल दिया जाता है।

✦ प्रयोग - खरगोश पर

गुथरी का प्रतिस्थापन्न सिद्धान्त :-

✦ गुथरी के अनुसार सीखना उद्दीपक व अनुक्रिया के मध्य पुनर्बलन के आधार पर नहीं अपितु समीपता के आधार पर होता है।

✦ सीखना एक ही प्रयास का परिणाम होता है। इसलिए इसे एकल प्रयास सिद्धान्त भी कहा जाता है।

- गुथरी के अनुसार सीखना अनुक्रिया को उत्तेजकों की तरफ प्रतिस्थापित करने की प्रक्रिया है।

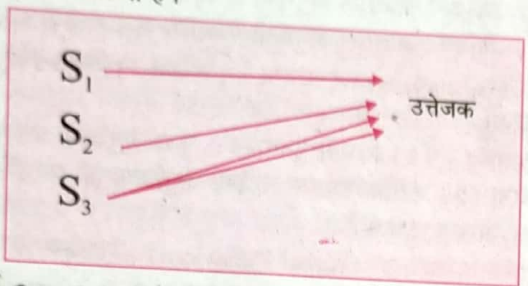


- इस सिद्धान्त में प्रयोग - 3 साल का बालक पीटर पर इसका प्रयोग किया गया जिसमें पहले पीटर उत्तेजकों के विशेष गुट मैत्रीपूर्ण मिसेज जोन्स व पसन्द वाले भोजन के प्रति प्रतिक्रिया उत्पन्न की अनुबन्धन की क्रिया द्वारा वे प्रतिक्रियाएं एक नये उत्तेजक खरगोश की तरफ प्रतिस्थापित हो गई।
- **आधार वाक्य :-**

"एक उत्तेजक प्रतिमान जो एक प्रतिक्रिया के समय क्रियाशील है, यदि यह दोबारा होगा तो उस प्रतिक्रिया को उत्पादित करने की प्रवृति रखेगा अर्थात सीखना सामीप्य" के आधार पर होता है।

**एडविन गुथरी विशेष :-**

गुथरी ने बुरी आदतों को दूर करने के लिए 3 विधियों का प्रतिपादन किया -

1. **सीमा विधि ( देहली विधि )-**
इस विधि का प्रयोग बालक में भय, क्रोध जैसे संवेगात्मक अनुक्रिया को कम करने में किया जाता है। इसमें आवांछनीय अनुक्रिया को उत्पन्न करने उद्दीपन की तीव्रता को देहली (Threshald) से नीचे करके उपस्थित किया जाता है कुछ समय बाद उद्दीपन की तीव्रता देहली से ऊपर होने पर अनुक्रिया नहीं होती है।
2. **थकान विधि (Fatigue) -**
अवांछनीय अनुक्रिया को दूर करने के लिए उस अनुक्रिया को इतनी अधिक बार करवाया जाता है। वो थक जायें ताकि उसमें उस अनुक्रिया को दुबारा ना करने का भाव उत्पन्न हो जाये!
3. **परस्पर विरोधी उद्दीपन विधि -**
इसमें अवांछित अनुक्रिया उत्पन्न करने वाले उद्दीपक को उपस्थित किया जाता है। इससे अनुक्रिया कुछ समय बाद विरोधी उद्दीपक के साथ सम्बन्धित हो जाती है। गुथरी ने इस पर कॉलेज छात्रा पर प्रयोग किया जो आवाज के कारण अध्ययन नहीं कर पा रही थी उसने ऐसी आवाज होने पर मंनोरजक उपन्यास पढ़ना प्रारम्भ किया। कई बार करने पर उसका ध्यान भंग होना बन्द हो गया।

## व्यवहारवाद व संज्ञानवाद में अन्तर–

| व्यवहारवाद | संज्ञानवाद |
|---|---|
| 1. विषयवस्तु-व्यवहार, अनुभव अभ्यास, उद्दीपक अनुक्रिया, पुनर्बलन, प्रशिक्षण को महत्त्वपूर्ण मानना। | 1. मानसिक क्रिया-संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, झूना, समस्या समाधान, सूचना संघठन, आत्मनुभूति को महत्त्वपूर्ण मानना। |
| 2. अधिगम-अभ्यास, उद्दीपक, अनुक्रिया के संबंध से यंत्रवत् होता है व क्रमिक रूप में होता है। | 2. अधिगम सूचना संघठन से आकस्मिक व अवबोध से होता है। |
| 3. अनुबंधन व पुर्नबलन को अधिगम का कारण मानते हैं। | 3. अधिगम समस्या समाधान की प्रक्रिया है। |
| 4. पशु प्रयोग पर बल | 4. मानव प्रयोग पर बल |

# संज्ञानवादी अधिगम सिद्धांत

## अधिगम का संज्ञानवादी उपागम–

- संज्ञानात्मक सिद्धान्त में इस बात की विवेचना की जाती है कि व्यक्तियों में स्वयं के प्रति व अपने वातावरण के प्रति विवेक किस प्रकार विकसित होता है।
- **प्रमुख विशेषताएँ -**
- बोध को महत्त्व दिया जाता है। विवेक/अन्तर्दष्टि पर बल।
- इस उपागम में अधिगम को जटिल प्रक्रिया माना है जिसके फलस्वरूप संज्ञानात्मक संरचना में परिवर्तन आता है। यह परिवर्तन तीन प्रकार की प्रक्रिया द्वारा आता है।

1. **विभेदीकरण** - स्वयं के व वातावरण के विशिष्ट पहलुओं में करता है।
2. **सामान्यीकरण** - अवधारणाओं में वर्गीकरण व एकीकरण करता है।
3. **पुनर्सचना** - विभेदीकरण व व्यापकीकरण के बाद संज्ञानात्मक संरचना को पुनः व्यवस्थित करना।

- अधिगम को सक्रिय व गतिशील प्रक्रिया मानना।
- यह उपागम सम्प्रत्यय निर्माण, समस्या समाधान व उच्च मानसिक प्रक्रिया में उपयोगी है।
- यह उपागम मानसिक क्रियाओं, जैसे :- तर्क, चिन्तन, प्रत्यक्षीकरण, कल्पना व समस्या - समाधान को मनोविज्ञान का केन्द्र मानता है।
- व्यवहार की व्याख्या आत्मगत अनुभूति या संज्ञान (Cognitive) के सन्दर्भ में करता है।
- आत्म पुनर्बलन व सूचना संसाधन पर बल।

Scanned with CamScanner

**नोट :-** संज्ञानवादी सिद्धान्त के दो वर्गीकरण हैं-

(1) क्लासिकी संज्ञानवादी - वर्दीमर, कोहलर, कोफ्का, पियाजे, टालमैन, लैविन

(2) आधुनिक संज्ञानवादी - आशुबेल, ब्रूनर, बाण्डुरा, नारमैन, बोल्स, बिण्डरा आदि।

**संज्ञानात्मक सिद्धान्त-**

1. पियाजे का संज्ञानात्मक विकास - बौद्धिक विकास को आयु से संबंधित विकास बताया है।
2. अन्त:दृष्टि का सिद्धान्त - कोहलर
3. कुर्त लेविन - क्षेत्र सिद्धान्त
4. बाण्डूरा - सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
5. गेने - अधिगम सोपान
6. टॉलमेन - चिह्न अधिगम

## 1. जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत-

✦ जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास का व्यवस्थित अध्ययन किया है।

✦ पुस्तक - **'बाल चिन्तन की भाषा'**

✦ कथन - **'बालक वातावरण के साथ संबंध बनाते हुए समझ का विकास करता है।' व बच्चा अपने मन का निर्माण सक्रिय रूप से करता है।**

✦ प्रयोग - लारेन्ट, ल्यूसीन व जेक्लीन पर प्रयोग

✦ **पुस्तकें** - Six psychology of studies, cognitive development of child
The Psychology of Intelligence
The Psychology of Child
The Language and thought of the child
The Child conception of the world
The Origins of intalligence in Child
Play, Dreams and Imitation in Childhood
The Construction of reality in the child
Behaviour nad Evolution
Psychology and Epistemology

## जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास की देन-

निम्न से उच्चतर चलता है- संज्ञानात्मक विकास।

✦ पियाजे के अनुसार मानव विकास के तीन पक्ष होते हैं -
(1) जैविक परिपक्वता
(2) भौतिक वातावरण से प्राप्त अनुभव
(3) सामाजिक वातावरण से प्राप्त अनुभव
इन तीनों पक्षों में सन्तुलन स्थापित करने वाली तथा संज्ञानात्मक संरचना में परिवर्तन करने वाली शक्ति 'स्कीमा है।

✦ **पियाजे** - बुद्धि की व्यवहारिक व्याख्या करते हुये बुद्धि को अर्जित योग्यता बताया है।

पियाजे संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त की महत्त्वपूर्ण धारणा निम्न है -

1. **स्कीमा (Schemas) :-** व्यक्ति या वस्तु के प्रति व्यवहार का तरीका या ढंग स्कीमा है। जिदंगी के विशेष पहलू या क्षेत्र के बारे में सूचनाओं की संघठित संरचना 'स्कीमा' है।
यह दो प्रकार - (1) व्यवहारात्मक स्कीमा - शारीरिक क्रिया (2) ज्ञानात्मक/मानसिक - मानसिक क्रिया
**नोट :- स्कीम्स** - व्यवहारों का संपठित पैटर्न जिसे आसानी से दोहराया जा सकता है जैसे बालक स्कूल में प्रतिदिन ड्रेस पहनना, जूता पहनना इत्यादि।

2. **अनुकूलन (Adapation)** - परिवेश के साथ सीधे पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया द्वारा योजना बनाना अनुकूलन है इसमें तीन क्रिया होती है -
**(1) आत्मीकरण (Assimilation) -**
**(2) संमजन/समायोजन (Accommodation) -**
**(3) सन्तुलीकरण (Equilibration) :-**

1. **समावेशीकरण/आत्मीकरण/Assimilation** - पूर्व ज्ञान में नवीन ज्ञान व विचार जोड़ना। यह ऐसी जीव वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें बालक किसी समस्या समाधान में पहले से सीखी गई मानसिक प्रक्रिया की सहायता लेता है। बाहरी संसार को समझने के लिए पहले से बनी योजना का प्रयोग - स्कूल पूर्व की बच्ची पहली बार चिड़ियाघर में ऊंट को घोड़ा कहना।
2. **समायोजन/Accommodation** - नयी योजना बनाना या पुरानी को संशोधित करना जैसे ऊंट को देखने पर उसे कुबड़ वाला घोड़ा कहना। तय विचारों को समायोजित करने के लिए विद्यमान स्कीमा में परिवर्तन करना। पुरानी स्कीमा के काम ना करने पर पुराने के साथ समायोजन करना।
3. **संतुलीकरण** - समावेशीकरण व समायोजन में संतुलन जैसे वह बच्ची जब कुछ समय बाद किताब में ऊंट का चित्र देखने पर कहती है ऊंट और टीवी में देखने पर भी ऊंट बोलती है। यह मानसिक सन्तुलन की अवस्था/आत्मीकरण व समंजन की पूरक क्रिया सन्तुलन पैदा करती है। नई स्कीम विकसित करना व पुरानी स्कीम में परिवर्तन करना।

✦ **विशेष :-**

- पियाजे अनुसार सीखना क्रमिक व आरोही होता है।
- सन्तुलीकरण (Equilibration) व अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण पर बल दिया।
- छात्र केन्द्रित शिक्षा व स्वअधिगम (Self Learning) पर बल।
- तार्किक कानून (Logical Laws) पर बल।
- बुद्धि के विकासात्मक पहलू पर ध्यान केन्द्रित किया।

## पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ-

1. **ज्ञानात्मक/क्रियात्मक/संवेदनात्मक अवस्था/संवेद पेशीय अवस्था :-** (0 से 2 वर्ष) (Sensorimotor stage) (**ज्ञानेद्रियगामक**) - इस अवस्था में बालक शारीरिक रूप से वस्तुओं को इधर-उधर करना, वस्तु की पहचान करने की कोशिश करना, वस्तु को पकड़ना, मुंह में डालकर अध्ययन करना प्रमुख है।
इस अवस्था का संज्ञानात्मक विकास 6 उप अवस्था से गुजरता है-

1. **प्रतिवृत्त ( सहज ) - क्रियाओं की अवस्था (Reflex Activities)** -

- जन्म से 30 दिन कार्यकाल
- केवल प्रतिवृति किया करना विशेष रूप से चूसने।

2. **प्रमुख वृतीय प्रतिक्रियाओं की अवस्था (Stage of primary circulation reactions)** -

- 1 माह से 4 माह तक
- इस अवस्था में बालक की प्रतिवृति क्रिया उसकी अनुभूति द्वारा

Scanned with CamScanner

परिवर्तित होती है, दुहराई जाती है दुहराने के कारण वृतीय कहा जाता है।

3. **गौण वृत्तीय प्रतिक्रियाओं की अवस्था (Stage of secodnary circular reaction) –**

- 4 – 8 माह
- बालक वस्तुओं को उलटने, पलटने व छूने पर ध्यान अधिक देता है ना की प्रतिवृति क्रिया पर/वह जान बुझकर कुछ ऐसी अनुक्रिया करता है जो रोचक व मनोरंजक है।

4. **गौण स्कीमैटा के समन्वय की अवस्था (Coordinational secondary schemata) –**

- 8–12 माह तक
- बालक इसमें उद्देश्य व उस तक पहुँचने के साधन में अनतर करना।
- खिलौने को छुपा देने पर उसको खोजने की कोशिश करना।
- वयस्कों के कार्यो का अनुकरण प्रारम्भ।
- बालक जो स्कीमा सीखते हैं उसका सामान्यीकरण।

5. **तृतीय वृतीय प्रतिक्रियाओं की अवस्था (Stage of secodnary tertiary circulat reaction) -**

- 12 माह – 18 माह
- बालक प्रयास व त्रुटि विधि से वस्तु के गुणों को सीखने का प्रयास
- शारीरिक क्रियाओं में अभिरूचि कम।
- उत्सुकता अभिप्रेरक की वजह से स्वयं वस्तु पर प्रयोग।

6. **मानसिक संयोग द्वारा नये साधनों की खोज की अवस्था (Stage of invention of new means through mental combination)–**

- 18 माह से 24 माह
- वस्तु स्थायित्व की प्रवृति का प्रारम्भ।

✦ **विशेष :–**

प्रथम दो वर्षो में वृत्ताकार प्रतिक्रिया (बार–बार दोहराना) कई तरीके से बदलती है प्रारम्भ में यह शिशु के स्वयं के शरीर पर केन्द्रित बाद में बर्हिमुखी होकर वस्तुओं को इधर–उधर करने की और मुड़ जाती है अन्त में यह प्रयोगात्मक व सृजनात्मक हो जाती है। बुद्धि का प्रदर्शन गत्यात्मक क्रिया व शारीरिक अन्त:क्रिया आधारित होता है।

- उस अवस्था में बालक संवेदना तथा शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सीखता है।
- बालक स्वार्थी व आत्मकेन्द्रित होता है।
- क्रिया व उसके परिणाम में संबंध स्थापित करता है।
- बालक में स्मृति , अनुकरण, जिज्ञासा की शक्ति का विकास हो जाता है।
- व्यवहारिक बुद्धि, बड़ों की तरह नहीं सोचना। सर्वाधिक–पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में होती है। (Practical Intelligence)
- स्वयं को वातावरण से अलग समझना।
- वस्तु स्थायीत्व के गुण का विकास (Object Permanence) – किसी वस्तु का अस्तित्व तभी तक रहता है जब तक वह वस्तु उसकी आंखों के सामने रहती है।

**जैसे :–** खिलौने को बिल्ली ले गई। सत्य मान लेना व लेकिन 20 – 24 महीने में स्वतः अस्तित्व को मानने लगता है।

2. **प्राक संक्रियात्मक अवस्था :–** 2–7 वर्ष (यह प्रारम्भिक बाल्यवस्था का भाग होता है।)

इसके दो भाग है –

(i) **प्राक सम्प्रत्यात्मक अवधि ( आत्म केन्द्रित ) (Pre Conceptual)** – 2 – 4 वर्ष

(ii) **अंतदर्शी अवधि ( अन्तः प्रज्ञात्मक )(Intuitive)** – 4 – 7 वर्ष

### प्राक सम्प्रत्यात्मक विशेषताएँ–

1. **सूचकता का विकास (Signifiers)** – वस्तु, शब्द प्रतिमा व चिंतन का इस्तेमाल किस चीज के लिए कहा जाता है सुचकता में संकेत व चिह्न आते है। संकेत व चिन्ह महत्वपूर्ण साधन होते है।
2. चिंतन व कार्य में संकेत व चिह्न का प्रयोग (इसे लाक्षणिक कार्य) कहा जाता है। जो दो अनुक्रियाओं अनुकरण व खेल द्वारा होता है। चिंतन अतार्किक होता है।
3. खेलों में स्वांग करना/नकल करना/ खेल नाटक
4. खेल नाटक प्रतिकात्मक योजनाओं का अभ्यास मात्र है। – पियाजे

- हाव–भाव से अभिनय, रेखाचित्र व रंगीन तस्वीर बनाना।
- कहानी व गीत सुनने का उल्लास इस समय रहता है। मौखिक भाषा विकास।

### प्राक सम्प्रत्यात्मक अवस्था की सीमायें–

1. **आत्मकेन्द्रित (Ego centerism)** – स्वयं के अलावा दूसरों के प्रतिकात्मक दृष्टिकोण को समझ नहीं पाता। दूसरे भी वैसा ही देखते, सोचते व अनुभव करते हैं, जैसा वे स्वयं करते हैं। यह विश्वास होता है कि इस समस्या को उन्होंने तीन पर्वतों की समस्या के रूप में व्याख्यातित किया।
2. **जीववाद (Animism)** – आत्मकेन्द्रित ही जीववादी सोच को जन्म देता है – निर्जीव वस्तुओं में जीवन के गुण होना जैसे विचार, भावना इत्यादि। गतिशील वस्तु को सजीव समझना, कल्पनाशील होना।
   - सूर्य बादलों पर नाराज है। सूर्य आज उदास है।
   - भौतिक घटनाओं को मानवीय अभिप्रायों से युक्त कर देना।
3. **स्वयं से बातें करना।** (कलैक्टिव मोलेलोज) (2 – 4 वर्ष)
4. **आत्म केन्द्रित चिंतन/सह चिंतन** (Ego-Centric Thinking) (2 – 4 वर्ष)
5. **केन्द्रीकरण** की प्रवृत्ति वस्तु के एक ही पक्ष को देखना।
6. **अहम्भाव** – स्वयं के दृष्टिकोण को महत्त्व देना, कोई वस्तु मेरा पीछा कर रही है।

### अन्तर्दशी अवधि (Intuitive Period)– ( 4 से 7 वर्ष )

✦ साधारण मानसिक क्रिया जैसे जोड़, घटाव, गुणा, भाग कर पाना। (लेकिन इनके नियम को नहीं समझ पाता)

✦ क्रमबद्ध तर्क नहीं होना। चिंतन सहज होता है। भाषा सीख लेते हैं। प्रत्यक्षात्मक चिन्तन (Perceptual Thought), सहज चिन्तन

Scanned with CamScanner

(Intuitive Thought), सामाजिक रुचियों का विकास। (4 - 7 वर्ष)

- ✦ अनपलटन का दोष/विपरीत प्रक्रिया (Reversibility) का ना होना जैसे 4 × 4 = 8 हुआ परन्तु 16/2 = 8 कैसे हुआ यह नहीं समझ पाना।
- ✦ पदानुक्रम में ऊपर नीचे के क्रम में वर्गीकरण का अभाव पाया जाता है।

**3. ठोस/मूर्त सक्रियात्मक अवस्था (Concrete) - 7-11/12 वर्ष**

- चिंतन व तर्क का क्रमबद्ध होना (ठोस वस्तु आधार), मूर्त रूप में चिन्तन करना। (मूर्त वस्तुओं का तार्किक चिन्तन) (Logical Thinking of Concrete)
- बालक तरल, भार, लंबाई व तत्व के संरक्षण सम्बन्धी समस्या का समाधान कर लेता है।
- पंक्तिबद्धता का विकास/विपरीतकरण की प्रक्रिया का विकास
- क्रमिकता (Seriotion) वस्तु को लम्बाई वजन क्रम में निर्धारित करना।
- ✦ बहुविध व विपरीत योग्य विचार का विकास (Multiple and Reversible Thought)
- ✦ विचारों में क्रमबद्धता व जटिलता आ जाती है। (Sequencing and Complexity)
- ✦ वस्तुओं को पहचानने, वर्गीकरण करने व संबंध स्थापित करने की शक्ति का विकास। (Classification and grouping objects)
- ✦ **पलटन** - कोई वस्तु कितनी दूसरी से हल्की या भारी होती है। (सम्प्रत्यय निर्माण की अवस्था)
- ✦ दूसरों के दृष्टिकोण को महत्त्व देना, आत्मकेन्द्रीयकरण को छोड़ना (Waving of Ego-Centralism)
- ✦ दिशाओं का ज्ञान।
- ✦ संरक्षण की समझ - लम्बाई, चौड़ाई, क्षेत्रफल का ज्ञान। (Understand of Conservation)
- ✦ यथार्थ का ज्ञान

**विकेन्द्रीकरण प्रारम्भ (यथार्थतवादी व व्यवहारिक बन पाते हैं।)**

- स्थानिक सोच - स्थान विस्तार समझ, दिशा/नक्शों की समझ (संज्ञानात्मक नक्शे की समझ)

  **कमी :-** केवल ठोस/मूर्त/प्रत्यक्ष वस्तु पर चिंतन कर पाना।

**4. औपचारिक संक्रिया अवस्था (रूपात्मक) (Formal operational stage)** - 11/12 वर्ष से वयस्कावस्था

- चिंतन में पूर्ण क्रमबद्धता। चिंतन में वास्तविकता व वस्तुनिष्ठता का विकास।
- विकेन्द्रण पूर्वत: विकसित। प्रयोग द्वारा सीखना।

  **परिकाल्पनिक निगमन तर्क का विकास (Hypothetico deductive Resoning) -**
- संभावना से वास्तविकता की ओर बढ़ते हुये समस्या समाधान।
- पेंडुलम (ढोलक) की समस्या का हल, 4 परिकल्पना -

  1. धागे की लम्बाई
  2. उससे लटक रही वस्तु का वजन
  3. वह ऊंचाई जिस तक ढोलक को खींचकर छोड़ा जाता है।
  4. उस धक्के का बल जिससे वस्तु को छोड़ा जाता है।
- तार्किक गणितीय अनुभवों की प्रधानता।
- ✦ सभी प्रकार के सम्प्रत्ययों का विकास, उच्च स्तरीय संतुलन का विकास (High Degree of Equilibrant)
- ✦ सभी समस्याओं पर तार्किक चिन्तन (मूर्त व अमूर्त दोनों)
- ✦ अमूर्त चिन्तन का विकास, अमूर्त नियमों का प्रयोग करने की योग्यता (Abstractrules)
- ✦ अपसारी चिन्तन (सृजनात्मक चिन्तन)(Divergent Thinking)
- ✦ सम्बन्धात्मक व योबनाबद्ध चिन्तन (Relational and systematic thought)
- ✦ निगमन तर्क का विकास
- ✦ स्थानान्तरण की योग्यता का विकास, भाषा सम्बन्धी व संप्रेषणशीलता का विकास।
- ✦ सभी मानसिक सम्प्रत्ययों का विकास
- ✦ परिकल्पनात्मक, निगमनात्मक तर्कणा का विकास (Hypothetical deductive reposing)

  **जैसे :-** समस्या, समाधान, तर्क, चिन्तन, निरीक्षण, निष्कर्ष निकालने की योग्यता का विकास।

  व्यवस्थित चिन्तन, संश्लेषण, विश्लेषण, नियमीकरण व सूक्ष्म सिद्धांत की समझ।

  अन्वेषणशीलता, मौलिकता, रचनात्मकता आदि का विकास।
- ✦ **प्रस्थापनात्मक सोच (Propositional thought) :-** किशोर वास्तविक संसार की परिस्थितियों का सहारा लिये बिना शब्दिक वक्तव्यों के तर्क का मूल्यांकन कर सकते हैं। इस पर मुट्ठी में लाल व हरे रंग के टुकड़ों पर को दिखाकर प्रयोग किया गया।
- ✦ **आत्मचेतना व आत्मध्यान का विकास दो रूप में होता है -**

1. **काल्पनिक श्रोता (Imaginary audience)** - यह विश्वास की वे सभी लोग के ध्यान व फिक्र का केन्द्र हैं, लोग उनके प्रदर्शन का निरीक्षण करते हैं।
2. **व्यक्तिगत/निजी गाथा/महा छवि** - स्वयं को बढ़ा-चढ़ाकर देखना, वे विशिष्ट व अनोखे हैं।
   - आदर्शवाद व आलोचना का विकास/निर्णय करना।

## 2. अन्तःदृष्टि का सिद्धांत (Insight Theory) -

- ✦ **अन्य नाम** :-

  (i) सूझ का सिद्धांत

  (ii) समग्रता का सिद्धांत

  (iii) गेस्टालटवादी सिद्धांत
- ✦ प्रतिपादक :- कोहलर (1917)
- ✦ पुस्तक - Mentality of Apes (1925)
- ✦ सहयोगी - कोफ्का (जर्मनी), मैक्स वर्दीमर
- ✦ प्रयोग - सुल्तान नामक चिम्पाजी पर (केनारी द्वीप) चार परिस्थितियों में प्रयोग किये गये।

Scanned with CamScanner

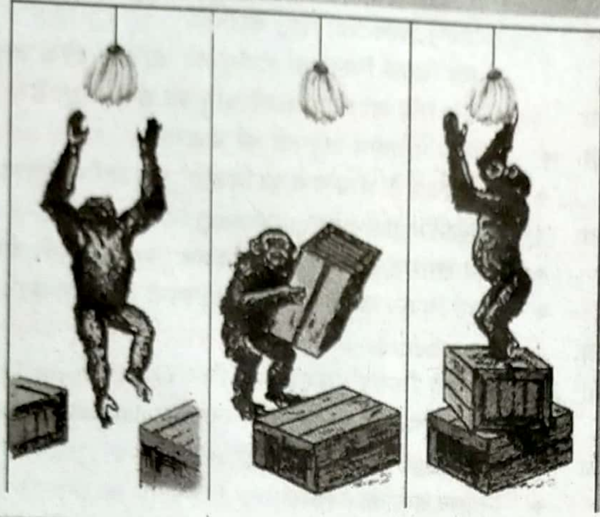

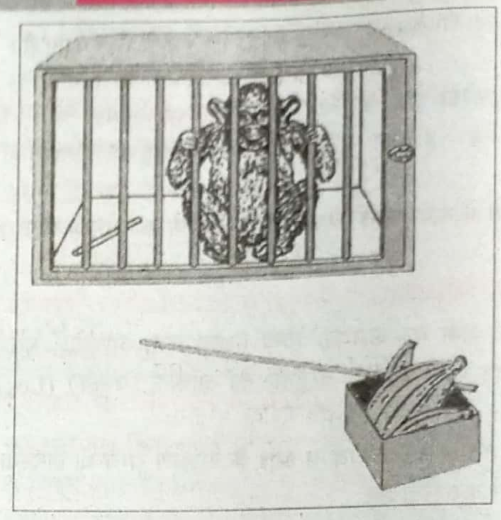

### सूझ क्या है–

- **गुड के अनुसार** :- 'सूझ वास्तविक स्थिति का आकस्मिक, तात्कालिक तथा स्थायी ज्ञान है।
  किसी समस्या के केन्द्रीय भाव को देखने व समझने की शक्ति सूझ कहलाती है।
- **वुडवर्थ अनुसार** :- अन्तर्दृष्टि का अर्थ अच्छा निरीक्षण, स्थिति को पूर्व ईकाई के रूप में समझना है।
  **अर्थ** – प्रयोग में चिम्पाजी को पिंजरे में बंद किया गया, बाहर केले रखे गये व छड़ रखी गयी, चिम्पाजी पहले हाथ से प्रयास करता है फिर अचानक छड़ पर ध्यान जाता है उसकी सहायता से केले प्राप्त कर लेता है।

### अन्तःदृष्टि को प्रभावित करने वाले कारकः–

1. बुद्धि – व्यक्ति जितना प्रभावशाली उसमें उतनी ज्यादा बुद्धि पायी जाती है।
2. कल्पना
3. प्रत्यक्षीकरण
4. पूर्व अनुभव का प्रभाव
5. प्रयास व त्रुटियों का प्रभाव
6. क्षमता
7. सम्पूर्ण अनुभव

### सिद्धान्तों में 3 नियमों का प्रयोग–

1. **समता का नियम (Law of Similarity)** – रूप, आकार, रंग में समता सहायक है।
2. **निकटता का नियम (Law of Proximity)** – निकटता सहायक होती है सूझ के।
3. **निरन्तरता का नियम (Law of Continuity)** – निरन्तरता या लगातार कार्य करने से सूझ का विकास होता है।

### अन्तःदृष्टि अधिगम की आवश्यकता–

1. सम्पूर्ण इकाई का बोध अधिगम के लिए आवश्यक।
2. लक्ष्य का स्पष्ट होना आवश्यक
3. अधिगमकर्ता में विभेदन व सामान्यीकरण की शक्ति आवश्यक
4. आकस्मिक चिन्तन आवश्यक
5. अन्तः दृष्टि से व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है।
6. तत्पर आवृत्ति – समाधान शीघ्र दोहराया जाता है।
7. वस्तु नये रूप में दिखाई देती है।
8. सूझ का प्रयोग नई स्थिति में किया जा सकता है।

### सिद्धांत के महत्त्वपूर्ण शब्द–

1. **आकस्मिकता (Sudden)** - अहा अनुभव
2. **समग्रता (Whole) ( सम्पूर्णता )** – सम्पूर्ण अंशों के योग से बड़ा है – वर्दिमर
3. **प्रत्यक्षीकरण (Perception)** – सम्पूर्ण अवलोकन
4. **पूर्व दृष्टि (Foresight)** – प्रयास करने से पूर्व लक्ष्य को देख लेना।

- **गेट्स एवं अन्य** :- 'यह सिद्धांत स्वयं खोज करके सीखने पर बल देता है।'

**शिक्षा में उपयोगिता :-**

- सम्पूर्ण ईकाई का बोध कराने में सहायक।

1. बालक में बुद्धि, कल्पना तर्क व रचनात्मकता का विकास करने में उपयोगी है।
2. यह सिद्धांत गठित व भौतिक शास्त्र जैसे विषयों के लिये उपयोगी है।
3. यह सिद्धांत समझकर सीखने पर बल देता है (रटने का विरोध करता है।)
4. वैज्ञानिक कार्यो व अवबोध पर बल देने वाला सिद्धांत।

- **गैरीसन व अन्य** :- यह सिद्धांत समस्या समाधान व्यवहार पर बल देता है। (समस्या के समाधान को गहराई से देखना।)

5. यह सिद्धांत सामान्यीकरण या अधिगम स्थानान्तरण पर बल देता है।

- **क्रो एण्ड क्रो** :- 'कला, संगीत व साहित्य की शिक्षा में उपयोगी है।', तार्किक प्रस्तुतीकरण में उपयोगी।

6. एकीकृत सिलेबस व पाठ निर्माण में उपयोगी।
7. उच्च मानसिक योग्यताओं के विकास

### अन्तर्दृष्टि अधिगम विशेष–

- **वुडवर्थ** – अन्तर्दृष्टि का अर्थ – अच्छा निरीक्षण, स्थिति को पूर्ण ईकाई के रूप में समझना है।

- इस अधिगम में समस्या को एक इकाई के रूप में रखा जाता है।
- यह एकीकृत सिलेबस पाठ व तार्किक प्रस्तुतीकरण में उपयोगी है।

| व्यवहारवाद | संज्ञानवाद |
|---|---|
| 1. थार्नडाईक (1898) | 1. कोहलर (1917) |
| 2. सीखना प्रयास पर निर्भर | 2. सीखना सूझ पर |
| 3. शारीरिक कुशलता, संवेदना व गाम क्रिया प्रधान | 3. बौद्धिक क्रियायें व प्रत्यक्षीकरण प्रधान |
| 4. मन्द बुद्धि बालक व सभी के लिए उपयोगी | 4. उच्च बौद्धिक योग्यता वालों के लिए |
| 5. अधिगम धीरे-धीरे/क्रमिक | 5. अधिगम आकस्मिक |
| 6. मन चेतन ज्यादा सक्रिय | 6. अचेतन क्रियाशील |
| 7. यांत्रिकता आधारित | 7. अवबोध आधारित |

**नोट :-** सूझ को अहाअनुभव भी कहा जाता है। इसमें अन्वेषणात्मक व्यवहार व प्रत्यक्षीकरण प्रमुख है।

### 3. सामाजिक अधिगम का सिद्धांत (Social Learning Theory 1977) –

**अन्य नाम** –

- प्रत्यक्ष अधिगम सिद्धांत/प्रतिरूप अधिगम सिद्धान्त/अवलोकन अधिगम सिद्धान्त
- सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत/अनुकरण सिद्धांत
- आधार वाक्य – व्यक्ति दूसरे के व्यवहार को देखकर सीखता है।
- प्रतिपादक – **अल्बर्ट बाण्डूरा (कनाडा),** वाल्टर – सहयोगी
- इस सिद्धान्त में अनुकरण पर बल दिया है। यह प्रेक्षण द्वारा सीखने पर बल देता है।

**नोट :-** प्रेक्षण विधि के प्रतिपादक बाण्डुरा है।

- **बाण्डुरा :-** व्यक्ति का व्यवहार संज्ञान व प्रत्याशा द्वारा प्रमाणित होता है।

प्रत्याशा दो प्रकार – (1) परिणाम प्रत्याशा (परिणाम ) (Out come Expaction) (2) प्रभावोत्पादकता प्रत्याशा (सफलतापूर्वक, क्रियात्मक) (Efficacy Expectation)

- **लिण्डग्रेन के अनुसार :-**

**परिभाषा** – 'सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया सम्पर्क के कारण आरम्भ होती है।'

### सामाजिक अधिगम के सोपान (Stages of Social Learning) –

1. **अवधान/ध्यान/अवलोकन** – देखना (Attention)
2. **धारण करना** – व्यवहार को धारण करना। (Retention)
3. **पुनः प्रस्तुतीकरण** / पुनः उत्पादन दूसरों के सामने प्रस्तुत करना। (Re-production)
4. **पुनर्बलन/अभिप्रेरणा** – सकारात्मक मिलने पर व्यवहार सीखता है। (Reinfomation)

- **अल्बर्ट बाण्डूरा :-** 'सामाजिक अधिगम अवलोकन अनुकरण तथा अन्त:क्रिया द्वारा सीखा जाता है।'

इस सिद्धांत में छोटे बालक पर प्रयोग किया गया। बालक **( अल्बर्ट ) पर, बेबी डॉल पर, जोकर**

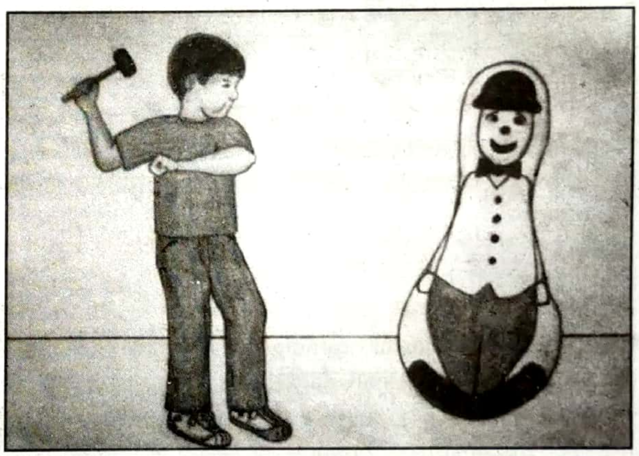

### सामाजिक अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक–

- **सामाजिक कारक :-**

1. अवलोकन
2. समानता, तादात्मीकरण (Identification)
3. सहानुभूति (Sympathy)
4. सुझाव, सहयोग, प्रतिस्पर्धा
5. अनुकरण (Imitation)

### मनोवैज्ञानिक कारण–

1. रुचि (Interest)
2. इच्छा (Will)
3. अभिप्रेरणा/ पुनर्बलन
4. ध्यान (Attention)
5. चालक (Drive)
6. अभ्यास (Practice)
7. सामान्यीकरण विभेदीकरण (Generalisation and Discrinination)
8. संकेत (Cue)

Scanned with CamScanner

**शारीरिक कारक–**

- शारीरिक रोग या दोष, अन्त:स्रावी ग्रंथिका, आयु, परिपक्वता, थकान, केन्द्रीय स्नायु मण्डल (Central Nervous System)

**शिक्षा में उपयोगिता :-**

1. व्यक्तित्व निर्माण में उपयोगी (Development of Personality)
2. भाषा निर्माण में (Language Development)
3. सामाजिक विकास में (Social)
4. कलाओं के विकास में (Art Development)
5. अवांछित व्यवहार में सुधार के उपयोगी (Modification in Behavior)

**नोट :-** (1) **मिलर व डोलर्स** ने तुल्यबल व्यवहार सिद्धान्त जो अनुकरण व साहचर्य अधिगम पर आधरित है।

(2) **जेम्स** – अनुकरण व आविष्कार दो टांगे हैं जिन पर मानव जाति सैद्धान्तिक रूप से चलती है।

- **मोरर** ने द्वि–रूपी अनुकरणात्मक सिद्धान्त दिया है।
- सामाजिक अधिगम जन्म से मृत्यु तक चलता है।
- सामाजिक अधिगम सम्पर्क, चुनौती व समस्या से प्रारम्भ होता है।
- सामाजिक अधिगम का अधिकांश भाग भूमिका अधिगम (Rate Learning) से सम्बन्धित होता है।

**नोट :- मिलर व डोलर्स** ने अपनी पुस्तक 'सोशल लर्निंग एण्ड इमिटेशनन' में अनुकरणात्मक व्यवहार को 3 भागों में बांटा है – (1) समान व्यवहार (2) प्रतिलिपि व्यवहार (3) सुमेलित आश्रित व्यवहार

## 4. अधिगम सोपान का सिद्धांत–

प्रतिपादक – राबर्ट गैने (1965)

पुस्तक – Condition of Learning (अधिगम की शर्ते) प्रतिपादन किया, अधिगम के 8 प्रकार बताये।

प्रकार – आठ

1. **संकेत अधिगम (Signal Learning) :-** आई.पी. पावलॉव का सिद्धांत इसका उदाहरण है।
   **जैसे** – अध्यापक को देखकर बच्चों का चुप हो जाना।
   - सबसे निम्न अधिगम माना जाता है।
2. **उद्दीपन –अनुक्रिया अधिगम (Stimulus response Learning) :-** उद्दीपक की उपस्थिति से अनुक्रिया का होना। इसमें व्यवहारवादी सिद्धान्त आते हैं।
3. **शृंखला अधिगम (Chain Learning) :-** क्रमिक रूप से सीखना। **स्कीनर** ने व्याख्या की – उद्दीपन अनुक्रिया को एक क्रम से उपस्थित किया जाता है।
   यह दो प्रकार का होता है–
   **(अ) शाब्दिक श्रृंखला** – अभिक्रमित अनुदेशन
   **(ब) अशाब्दिक श्रृंखला** – चित्रों के माध्यम से
4. **शाब्दिक साहचर्य अधिगम** (Verbal Association Learning) जैसे – कविता, पाठ, गीतों के माध्यम से सीखना।
   **नोट :-** डेविड आसुबेल ने अर्थग्रहण अधिगम, खोजपूर्ण अधिगम पर बल दिया है।
   **विशेष :-** शाब्दिक सीखने की विधियाँ –
   1. क्रमिक/अनुक्रमिक सीखना – इबिंगहास
   2. मुक्त पुनः स्मरण विधि – शब्दों को दिखाने के बाद पुनः बोलना।
   3. अनुबोधन तथा पूर्वाभास विधि – अर्थहीन व सार्थक शब्दों को सीखना।
   4. युग्मित सहचर विधि – युग्मित शब्दों के जोड़े होते हैं।
   5. प्रत्याभिज्ञान विधि – पहले देखे गये शब्दों का प्रत्याभिज्ञान करना होता है।
5. **बहुविभेदन अधिगम** (Discrimination Learning) :- बहुत से उद्दीपको में से सही उद्दीपकों का चुनाव करके उसके अनुसार अनुक्रिया करना।
   **जैसे :** ब, व में अन्तर करना, रंगों में अन्तर करना
6. **प्रत्ययात्मक अधिगम/अवधारणा अधिगम** (Concept Learning) :- कैण्डलर ने व्याख्या की किसी वस्तु या घटना की व्याख्या, किसी वर्ग या गुण के आधार पर करना। जैसे – रंग के आधार लाल, काला, सफेद की व्याख्या।
7. **सिद्धांत अधिगम** (Principal Learning) :- नियमों के आधार पर समस्या की व्याख्या की जाती है जैसे – न्यूटन का गुरूत्वाकर्षण का नियम, थार्नडाईक के नियम आदि। सिद्धान्तों को सीखना व प्रयोग करना।
8. **समस्या समाधान अधिगम** (Problem Solving Learning) :- सर्वोत्तम प्रकार, इसे व्यक्तिगत अधिगम का प्रकार भी कहा जाता है, श्रेष्ठ अधिगम भी कहा जाता है।
   **जैसे** – रेखागणित में किसी प्रमेय को हल करना।

## 5. क्षेत्रीय सिद्धांत (Field Theory)– (तलरूप सिद्धान्त/प्राकृतिक दशा सिद्धान्त) (Topological Theory) /थ्री फैज थ्योरी–

- **प्रतिपादक** – कुर्त लेविन (जर्मनी) 1917, सामाजिक मनोविज्ञान के प्रतिपादक/संगठनात्मक विकास के प्रतिपादक/समूह गतिशीलता के प्रतिपादक
- **कथन** – व्यवहार व्यक्ति तथा वातावरण का उत्पाद है। कुर्त लेविन ने जीवन क्षेत्र (Life Space) के आधार पर मानव व्यवहार की व्याख्या की है।
  1. बालक अपने उद्देश्यों से प्रेरणा प्राप्त करता है।
  2. जीवन के वातावरण को अधिगम का आधार माना है।
  3. वेक्टर्स – लक्ष्य के पास ले जाने वाली शक्ति
  4. प्रत्यक्षीकरण प्रेरणा पर बल।
- **कुर्त लेविन** ने इच्छा के स्तर, लक्ष्य आकर्षण, स्मृति की गतिशीलता व पुरस्कार, दण्ड पर बल दिया, स्मृति की गतिशीलता पर बल।
- **कुर्त लेविन** ने मानवीय व्यवहार, अभिप्रेरणा तथा वातावरण के संबंध पर बल दिया है।

Scanned with CamScanner

- सूत्र B = F(p×e) (**B** = Behaviour (व्यवहार), **p** = Person (व्यक्ति), **e** = Environment (वातावरण))

कुर्त लेविन ने तीन तत्व बताये है :-

(i) भर्त्सना (ii) लक्ष्य (iii) अवरोध (Barrier)

नोट :- इस सिद्धान्त को टोपोलोजीकल या वेक्टर साइकोलोजी भी कहते हैं।

**लेविन का अधिगम क्षेत्र सिद्धान्त ( 1917 ) :-**

**महत्त्वपूर्ण शब्द/अवधारणा -**

1. **जीवन दायरा (Life Space)** - व्यक्ति व उसके मनोवैज्ञानिक वातावरण की अन्त:क्रिया का प्रतिफल होता है।
2. **वेक्टर्स (Vectors)** - आकर्षण व विकर्षण शक्ति जो कर्षण शक्ति सकारात्मक व नकारात्मक होती है। जीवन लक्ष्य की ओर आकर्षित करने वाले सकारात्मक व दूर ले जाने वाली नकारात्मक होती है।
3. **टोपोलोजी ( तलरूप ) (Topalogy)** - गणित से ग्रहण किया गया विचार जिसका प्रयोग व्यक्ति के जीवन दायरे में प्रत्यक्षीकण, अन्त: क्रिया के परिणामस्वरूप होने वाले विभिन्न परिवर्तनों, उतार-चढ़ाव आदि आकृतिजन्य परिवर्तनों के लिए किया।

- **विशेष :-**

- लेविन ने अधिगम को सापेक्षिक प्रक्रिया कहा है।
- अधिगम की भविष्यवाणी सामान्यीकृत ना होकर वैयक्तिक एवं सदैव है।
- अधिगमकर्ता को मनोवैज्ञानिक व्यक्ति मानना।
- अधिगम के नियोजन, संघठन, व्यवस्थीकरण व समूह गतिशाखा को महत्त्वपूर्ण मानना।
- अभिप्रेरणा, लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान, जीवन दायरे का ज्ञान महत्त्वपूर्ण है।

## अव्यक्त अधिगम सिद्धांत (Sign Learning theory) -

**अन्य नाम :-**

(i) उद्देश्य पूर्ण अधिगम सिद्धांत - संकेत संकेतन सिद्धान्त, प्रत्याशात्मक सिद्धान्त (Expectancy)

(ii) प्रतीक अधिगम सिद्धांत

(iii) चिह्न अधिगम सिद्धांत (Sign)

- विशुद्ध व्यवहारवाद पर आधारित है।
- मोलार व्यवहार - लक्ष्य निर्देशित पर बल।
- हम अर्थ सीखते हैं गति नहीं

- प्रतिपादक - एडवर्ड टोलमैन (अमेरिका) (प्रयोजन मुल्क सम्प्रदाय से संबंधित)
- पुस्तक - Purposive behaviour in animals and men.
- प्रयोग - चूहे पर (1932) टी मेज भूल-भूलैया पर प्रयोग

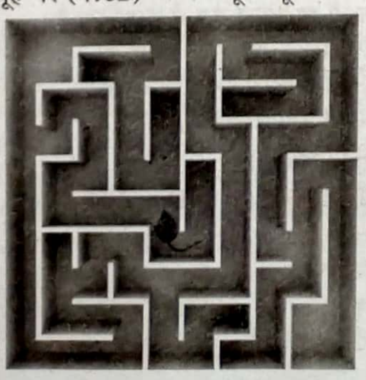

- सुनिश्चित लक्ष्य ही व्यवहार का नियमन करता है।
- व्यवहार पर्यावरणीय उद्दीपकों से अभिप्रेरित होता है।
- उसके अनुसार लक्ष्य में मार्ग पर ध्यान दिया जाता है न कि अनुक्रियाओं पर। हम उन चिह्नों की सहायता लेते हैं जो अर्थ सिखाते हैं। चूहों पर भुलभुलैया में प्रयोग किया गया।
- टालमैन का सिद्धान्त विशुद्ध व्यवहारवाद पर आधारित है। इसके अलावा वाटसन का व्यवहारवाद, मैक्डूगल का हार्मिक मनोविज्ञान, वुडवर्थ का गत्यात्मक मनोविज्ञान, गैस्टाल्ट मनोविज्ञान व मनोविश्लेषणवाद व संज्ञानवाद पर आधारित है।
- यह सिद्धान्त स्थान अधिगम (Palace Learning), गुप्त अधिगम (Latent Learning) पुरस्कार प्रत्याशा (Reward Expectancy) पर बल देता है।

## टॉलमैन प्रणाली का नवीन रूप (New Version of Tolman's system) -

सन् 1949 में टालमैन ने अपनी प्रणाली का नवीन रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने निम्नलिखित छ: प्रकार के अधिगम का उल्लेख किया है -

1. **कैथैक्स (Cathexes)** - चालक (Drive) और लक्ष्य के बीच में विकसित होने वाले धनात्मक (Positive) या ऋणात्मक (Negative) सम्बन्धों को कैथैक्स (Cathexes) कहते हैं।
2. **समतुल्य विश्वास (Equivalence beliefs)** - लक्ष्यों तथा उपलक्ष्यों में उपस्थित सम्बन्धों के ज्ञान को समतुल्य विश्वास कहते हैं। टालमैन ने इस बात पर बल दिया है कि समतुल्य विश्वास अधिगम में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।
3. **क्षेत्र प्रत्याशाएं (Field Expectancies)** - इससे तात्पर्य उन चिह्न स्वरूप प्रत्याशाओं से हैं जिनसे व्यक्ति छोटे रास्तों का प्रयोग करता है।
4. **क्षेत्र ज्ञान विधियां (Field cognition modes)** - क्षेत्र ज्ञान विधियां अधिगम में प्रयोग की जाने वाली जटिल मानसिक विधियां हैं। ये प्रत्यक्षात्मक (Perceptual), स्मृत्यात्मक (Memorial) तथा निष्कर्षात्मक (Inferential) प्रक्रियाओं पर आधारित क्षेत्र प्रत्याशाएं प्राप्त करने की योग्यता का प्रतिनिधित्व करती हैं।
5. **चालक विभेदात्मकता (Drive discrimination)** - चालक विभेदात्मकता ऐसा अधिगम है जिसमें प्राणी विभिन्न चालकों (Drives) में भेद करना सीखता है।
6. **गामक प्रतिमान (Motor patternsn)** - इसका सम्बन्ध प्रस्तुत स्थिति में किसी प्रकार के गामक प्रतिमान की प्राप्ति के साथ है। टालमैन का विश्वास है कि इस प्रकार की प्राप्ति सरल अनुबन्धन (Simple conditioning) पर आधारित है।

- **शैक्षिक निहितार्थ अथवा महत्त्व (Educational implications or significance) :**

1. **लक्ष्य परिभाषित करना (Defining the goal objects)** - अध्यापकों और माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के अनुकूल उचित लक्ष्य स्पष्ट रूप से परिभाषित करें।
2. **पुरस्कार और दण्ड का प्रयोग (Use of reward and punishment)** - लक्ष्यों की स्थापना में पुरस्कार और दण्ड की उचित व्यवस्था भी करनी चाहिए।
3. **ठीक विधियों पर बल (Emphasis on right methods)** - लक्ष्य की अपेक्षा रास्ता अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। अत: ठीक विधियां अपनाई जानी चाहिए। सार्थक अधिगम को प्रोत्साहित करना

Scanned with CamScanner

चाहिए। अन्धगतियों (Blind movement) को उत्साहित नहीं करना चाहिए। पूर्ण और उसके अंशों में स्पष्ट सम्बन्ध स्थापन पर बल देना चाहिए। गैस्टाल्ट सिद्धान्तों (Gestalt principles) को अपनाना चाहिए। शिक्षण और अधिगम में कोई अस्पष्टता नहीं होनी चाहिए।

4. **व्यक्ति शिक्षा (Individualised education)** - शिक्षा शिक्षार्थी की आयु, बुद्धि, पूर्व अनुभवों तथा क्षमताओं पर आधारित होनी चाहिए।

## टॉलमैन के अधिगम के नियम (Tolman's Laws of Learning)–

1932 में टालमैन ने निम्नलिखित नियमों का प्रतिपादन किया -

1. **क्षमता नियम (Capacity laws)** - अधिगम व्यक्ति की विभिन्न क्षमताओं पर निर्भर करती है। क्षमता नियमों में टालमैन ने छः उपनियम सम्मिलित किये हैं - (1) औपचारिक साधन साध्य क्षमताएँ (Formal mean end capacities) (2) विभेदात्मक एवं प्रबन्धात्मक क्षमताएं (Discriminating and manipulating capacities) (3) धारणात्मक क्षमता (Receptivity) (4) विकल्पात्मक मार्गों के लिए आवश्यक साधन साध्य क्षमताएं (Mean end capacities needed for alternative routes, detours etc.), (5) विचारात्मक क्षमता (Ideational capacity) (6) रचनात्मक क्षमता (Creativity)।
2. **उद्दीपन नियम (Stimulus laws)** - टालमैन ने पांच उद्दीपन नियम बताये हैं - (1) अनिवार्य चिन्ता का इकट्ठे होना और साधन-साध्य के प्रति उनका सम्बन्ध (Togetherness of essential signs and their mean end relationship), (2) एकरूप होने की योग्यता (Fusibility), (3) गैस्टाल्ट जैसे अन्य नियम (Other Gestalt-like laws), (4) विकल्पों की स्थानीय, समयात्मक एवं भौतिक विकल्पों में परस्पर सम्बन्ध (Interrelation among spatial, temporal and characters of the alternatives), (5) क्षेत्र के नये अवरोधों और विस्तारों के अनुकूल सामग्री की चारित्रिक विशेषताएं (Characteristics in the material favouring new closures and expansions of the field)
3. **प्रस्तुतीकरण विधि के नियम (Lasw concerning manner of presentation)** - इसमें ये नियम सम्मिलित हैं - (1) आवृत्ति, नवीनता (Frequency), (2) अभिप्रेरणा (Motivation), (3) प्रभाव नहीं बल्कि बल (Note effect but emphasis), (4) विकल्पों के प्रस्तुतीकरण का क्रम और अनुक्रम (Temporal orders and sequences in the presentation of alternatives), (5) पहले से दिये गये विकल्पों और वास्तविक समाधान के प्रस्तुतीकरण में समयात्मक सम्बन्ध (Temporal relations between the presentations of the already given alternative and the true solution)

## 7. अधिगम का सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त

इसमें निम्न सिद्धान्त शामिल है -

1. **त्रिचरणी सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त (Three Stage Information Processing)**
   - आटकिन्सन व शिफरिन (1968)

## सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त (अधिगम) (Information Processing Theory)–(एटकिन्सन व शिफरिन)

✦ यह अधिगम का ज्ञानात्मक सिद्धान्त है जो जानकारी की स्मृति में प्रवेश करने के ढंग, भंडारित होने तथा स्मृति से पुनः प्राप्ति किये जाने के ढंग की जाँच करता है। सिद्धान्त के तीन अवयव :-

**1. सूचना भंडार -**

**(क) ज्ञानेन्द्रिय स्मृति (संवेदनात्मक स्मृति)** - इसमे सर्वप्रथम सूचना आती है तथा कुछ सैकेण्डों के लिए रुकती है तथा कार्यात्मक स्मृति में चली जाती है।

**(ख) कार्यात्मक स्मृति- लघुकालिक स्मृति** - इसमे सूचना उस समय तक रहती है जब तक व्यक्ति चेतन रूप में कार्य करता है यह सूचनाओं का वर्गीकरण करती है कि किन सूचनाओं को रखना है किनको बाहर निकालना है।

**(ग) दीर्घकालिक स्मृति** - यह स्थायी सूचना स्मृति होती है इसमें सूचनाएँ विस्तृत व टिकाऊ होती हैं।

**2. ज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ** - यह बौद्धिक क्रियाएँ होती है जो सूचना को रूपान्तरित करती हैं व एक स्थान से दूसरी स्थान पर ले जाती है। जैसे - ध्यान, बोध, अभ्यास

**3. बहुज्ञान** - ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को जानने व उन पर नियन्त्रण होने को बहुज्ञान कहा जाता है।

2. **त्रिमार्गी अन्तः क्रिया :-**

✦ **अध्यापक से छात्र को सम्प्रेषण** - (1) सूचना प्रक्रियाकरण, (2) सूचना प्रस्तुतीकरण

✦ **शिक्षार्थी से अध्यापक को सम्प्रेषण** - (1) सूचना प्राप्ति (2) सूचना प्रक्रियाकरण (3) अनुक्रियाकरण

✦ **पुनः अध्यापक से शिक्षर्थी को सम्प्रेषण** - (1) निदान (2) मूल्यांकन (3) सूचना प्रस्तुतीकरण

## सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त के सोपान–

1. सूचना भेजना
2. सूचना प्राप्त करना
3. सूचना का प्रक्रियाकरण करना
4. सूचना सम्प्रेषित करना।

**प्रक्रिया स्तर सिद्धान्त (Theory of levels of processing)**

- फ्रेंक व लेखार्ट
- स्मृति केवल एक ही प्रकार की होती है।
- सीखने की योग्यता सूचना के प्रक्रियाकरण पर निर्भर करती है।

3. **मिलर का सूचना प्रक्रियाकरण सिद्धान्त**

- जार्ज ए. मिलर (1956) - इसमें सूचना प्रक्रिया के सभी स्तरों पर विषयवस्तु के सार्थक संघठन व एनकोडिंग चैकिंग (Chunking) की अवधारणा दी
- सूचना की धारण क्षमता में वृद्धि करती।
- इसमें TOTE (Test operate test exist) परीक्षण लेना व प्रयत्न करना जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।

4. **सूचना प्रक्रियाकरण का दोहरा कोडिंग सिद्धान्त (Duel coding theory) :-**

- ए. पेवियों ने प्रतिपादन करते हुये अधिगम में शब्दिक व अशाब्दिक दोनों सूचनाओं पर समान रूप से बल दिया है।
- प्रक्रियाकरण (Processing) 3 प्रकार का होता है -
  (1) प्रतिनिध्यात्मक (Representational)
  (2)संदभत्मिक (Referential)
  (3) सहचयत्मिक (Associative)

## संज्ञानवादी विचारधारा के समर्थक विद्वान–

1. जीन पियाजे
2. कोहलर
3. कोफ्का
4. मैक्स वर्दीमर
5. कुर्त लेविन
6. राबर्ट गैने
7. टॉलमेन

Scanned with CamScanner

## अधिगम के निर्मितवादी सिद्धान्त/संरचनात्मक अधिगम सिद्धान्त (Constructivist Learning) –

✦ **समर्थक :-**
- जॉन डीवी
- जीन पियाजे
- जेरोम ब्रूनर (1960) – विकास की किसी भी अवस्था पर कुछ भी सीखा जा सकता है।
- वाइगोत्सकी
- हावार्ड गार्डनर

✦ यह संज्ञानवाद का उच्चतम स्तर है जिसमें बालक द्वारा सक्रिय मानसिक प्रविधि द्वारा ज्ञान का निर्माण होता है। बालक अर्थ व ज्ञान का निर्माता व सृष्टिकर्ता है।

✦ **केन्द्रीय भाव** – ज्ञान के आधार पर अनुभव द्वारा नवीन ज्ञान का निर्माण बालक द्वारा होता है। अधिगम एक सक्रिय प्रविधि है।

1. संज्ञानात्मक निर्मितवाद (विकासात्मक स्तर से समझ निमार्ण), जनक – जीन पियाजे
2. सामाजिक निर्मितवाद (सामाजिक परिवेश व अन्वेषण से समझ निर्माण), जनक – वायगोत्सकी

✦ **निर्मितवाद में अधिगमकर्ता –**
1. अधिगमकर्ता समावेशक (Inalasion) है।
2. निरीक्षण करने वाला है।
3. विचारों को आकार देते हुये निर्माण करता है।
4. स्वयं अर्थो का निर्माण करता है।

**विशेषताएँ :-**

✦ इसकी उत्पत्ति संज्ञानात्मक मनोविज्ञान से हुई है।

1. यह बाल केन्द्रित उपागम है।
2. इसके अनुसार बालक पूर्व अनुभव के आधार पर तुलना करके नवीन ज्ञान की संरचना करता है।
3. ज्ञान सक्रिय व सामाजिक प्रक्रिया है।
4. इस उपागम में छात्रों को छोटे-छोटे समूह में विभाजित करके समस्या प्रदान कर दी जाती है जिसका समाधान वे स्वयं में चर्चा करके निकालते है।
5. शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक/अनुदेशक/मित्र/सहायककर्ता की होती है।
6. निर्मितवादी उपागम का उद्देश्य एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जो जहां बालक स्वयं ज्ञान का निर्माण कर सके।
7. यह एक व्यापक अवधारणा है जिसमें समस्या समाधान खोज उपागम, पूछताछ व सम्पूर्ण से अंश की ओर शिक्षण विधियों पर बल दिया जाता है।
8. अध्ययन सामग्री – पाठ्य पुस्तकों के स्थान पर मेलीपुलेटिड अध्ययन सामग्री
9. यह उपागम शिक्षक की सीमित भूमिका पर बल देता है।
10. इसके अन्तर्गत बालक की जिज्ञासा को जागृत करके पूर्व अनुभव के प्रशिक्षण पर बल देने, तथा स्वतंत्र शिक्षार्थी बनने पर बल दिया जाता है (आत्मानुशासन पर बल)

✦ निर्मितवादी अधिगम के अन्तर्गत बालक ने आलोचनात्मक चिन्तन अपसारी चिन्तन तथा समस्या – समाधान अधिगम स्थानान्तरण, चिन्तन पर बल दिया जाता है।

## रचनात्मक अधिगम का स्वरूप–

1. **अधिगम कर्ता का स्वरूप** – अधिगम कर्ता की पृष्ठभूमि, पूर्व अनुभव, अभिप्रेरणा तथा वैयक्तिक उत्तरदायित्व का महत्त्व।
2. **अध्यापक का स्वरूप** – मित्र दार्शनिक, निर्देशक, सहायक, सरलीकर्ता।
3. **अधिगम क्रिया स्वरूप** – अधिगम सक्रिय जहां छात्र एक दूसरे के साथ वार्तालाप करते हुये वातावरण की सहायता से ज्ञान का निर्माण करते है।
4. **विधि** – सम्पूर्ण से अंश, पूछताछ, समस्या- समाधान, अवलोकन।
5. **पाठ्यक्रम** – सूचना अधिगम, सहयोगात्मक अधिगम, अन्वेषणात्मक, अन्त:क्रियात्मक, अधिगम।

## सामाजिक निर्मितवाद (Social Constructivist)–

✦ **प्रतिपादक** – लेव वाइगोत्सकी (रूस का मनोवैज्ञानिक)

✦ पुस्तक – Thought and Language

✦ **लेव वाइगोत्सकी** – मानव मन का विकास सामाजिक व सांस्कृतिक प्रक्रिया के माध्यम से होता है। मन एक संयुक्त सांस्कृतिक निर्मित है जो वयस्क व बच्चों की अन्त:क्रिया के परिणामस्वरूप होता है।

✦ वायगोत्सकी ने बालक के संज्ञानात्मक विकास में समाज व उसके सांस्कृतिक सम्बन्धों को महत्वपूर्ण माना।

✦ बालक ज्ञान का निर्माण सामाजिक व सांस्कृतिक सन्दर्भ में करता है।

✦ भाषा संज्ञानात्मक विकास का महत्वपूर्ण औजार है – आत्मभाषा

✦ संज्ञानात्मक विकास की प्रकृति सामाजिक होती है न की संज्ञानात्मक

✦ ज्ञान बाह्य वातावरण में स्थित व सहयोगी होता है।

✦ परिवार, समुदाय, मित्र व विद्यालय बालक के विकास में भूमिका निभाते हैं।

**विशेष अवधारणायें :-**

✦ **ZPD – समीपस्य विकास का क्षेत्र** – यह एक कठिन कार्यो की एक सीमा है जिन्हें वह अकेला नहीं कर सकता है लेकिन कुछ योग्य, बड़े व कुशल सहयोगियों की सहायता से कर लेता है। निकटस्थ विकास/समीपस्थ विकास का सिद्धांत (Zone of Proxi Development) भी कहा जाता है। उसके अनुसार बालक अपने माता-पिता तथा सहयोगी की सहायता से ज्ञान का निर्माण करता है।

✦ **मॉर नालेजेबल्ल अदर्स (MKO) (More knowledgeable others)** वायगोत्सकी के अनुसार विचारों, मूल्यों, तकनीकियों तथा भाषा का ज्ञान बालक बड़े व्यक्ति जैसे माता-पिता, शिक्षक के सहयोग से सीखता है जिसे उसने MKO कहा है।

✦ **ढाँचा निर्माण (Scaffolding)** – यह एक तकनीक है जो सहायता के स्तर में परिवर्तन करती है संवाद ढांचा निर्माण का महत्वपूर्ण उपकरण है। बच्चों के पास अव्यवस्थित व असंघठित सम्प्रत्यय होते है जबकि कुशल सहायक के पास क्रमबद्ध तार्किक संगत विचार होते हैं, बच्चे व कुशल सहायक संवाद के परिणामस्वरूप बालक के विचार ज्यादा क्रमबद्ध संगठित तर्कसंगत व औचित्य पूर्ण होते हैं।

✦ **भाषा विचार** – संज्ञानात्मक विकास में भाषा व चिंतन महत्वपूर्ण है निज भाषा को महत्वपूर्ण माना है। भाषा के तीन प्रकार बताये हैं – (1) सामाजिक भाषा (2) आत्म भाषा (3) स्वकेन्द्रित व व्यक्तिगत भाषा

✦ **खेल व भाषा** – वायगोत्सकी ने खेल के विकास को महत्वपूर्ण माना है जिससे वह आत्मनुशासन, आत्मसंतुष्टि, आत्म बोध व आत्मनियमीकरण सीखता है।

✦ उसने सामाजिक व सांस्कृतिक कारकों को मानव विकास व अधिगम में महत्त्वपूर्ण माना है।

Scanned with CamScanner

**निर्मितवाद उपागम की उपयोगिता–**

1. छात्र के लिए उपागम – सक्रिय अधिगम होता है।
2. सम्प्रेषित कौशलों का विकास। जैसे – वार्तालाप
3. ज्ञानात्मक योग्यताओं का विकास चिंतन बोध समस्या समाधान
4. जिज्ञासा की संतुष्टी
5. सतत् व समग्र मूल्यांकन के सहायक अधिगम स्थानान्तरण पर बल।

**विशेष** – जीन पियाजे – ज्ञान न तो पूरी तरह वस्तुओं को अनुभव से और न ही कर्ता पर जन्मजात प्रोग्रामिंग से लेकिन लगातार निर्माण से आगे बढ़ता है।

निर्मितवादी उपागम

**ज्ञान निर्माण की विधियाँ :-**

1. सम्प्रत्यय मानचित्रण 2. समस्या समाधान विधि
3. जाँच पड़ताल उपागम 4. सामाजिक जाँच उपागम

निर्मितवाद कक्षा में पाठ्यक्रम 'पूर्ण से अंश' और होता है।

**आधुनिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त–**

- **पुस्तक** – Relevance of Education/प्रोसेस ऑफ एजुकेशन
- ब्रुनर ने पियाजे के संज्ञानात्मक विकास को अधिक विकसित करते हुये चिंतन में भाषा को अधिक महत्व दिया।
- उनके अनुसार बालक अपनी अनुभूति को मानसिक रूप से 3 तरीकों द्वारा बताता है –

1. **सक्रियता (Enactive)** – क्रिया द्वारा व्यक्त करना जैसे दूध की बोतल देखकर हाथ, पैर व मुँह चलाना।
2. **दृश्य प्रतिमा (Iconic)** – मन में दृश्य प्रतिमा बनाकर अनुभूति की अभिव्यक्ति
3. **सांकेतिक (Symbalic)** – भाषा के संकेतो से अनुभूति की अभिव्यक्ति

**ब्रुनर के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ–**

1. **विधि निर्माण अवस्था/एनेक्टिव अवस्था** (0 से 3 वर्ष)(क्रिया का चरण)

- उस अवस्था में बालक गामक क्रिया/शारीरिक क्रिया द्वारा सीखता है। जैसे – वस्तु को पकड़ना, चलना आदि।

2. **मूर्तप्रतिनिधान अवस्था/अनुप्रतिकात्मक/प्रतिमात्मक (Iconic stage) – ( 4 से 8 वर्ष )**

- इस अवस्था में बालक प्रत्यक्षीकरण तथा मानसिक प्रतिमाओं के माध्यम से सीखता है।
- यह वास्तविकता का चरण होता है।
- बोधात्मक क्षेत्र की प्रतिमाओं का चरण है।

3. **प्रतिकात्मक अवस्था – ( 8 से 13 वर्ष ) (Symbolic Stage)**

- बौद्धिक विकास की सर्वश्रेष्ठ अवस्था, शब्द चरण कहा जाता है।
- बालक अपने अनुभवों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करना सीख जाता है।
- समय व दूरी की समझ, भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- विचारक विचार एक आन्तरिक भाषा है।
- अध्यापक की महत्त्वपूर्ण भूमिका
- कक्षा शिक्षण में अंतर्दर्शी चिंतन
- अन्वेषण विधि पर बल (Intuitive) पर
- सम्बद्धता पर बल।
- **ब्रूनर का योगदान** – ज्ञान की संरचना पर बल, (Concept Attainment Model) (सप्रत्यय प्राप्ति प्रतिमान) जिज्ञासा, स्वतंत्र शिक्षार्थी पर बल आदि।
  - ब्रुनर में कक्षा शिक्षण को अर्थपूर्ण बनाने पर बल दिया।
  - **आगमनात्मक विधि पर बल।**
  - **ब्रुनर ने अंतदर्शी चिंतन (Intuitive thinking) किसी विषय के तात्कालिक ज्ञान पर बल दिया।**
  - विषय की संरचना (नियम/प्रविधियों) पर बल।
  - अन्वेषणात्मक सीखने की विधि पर बल।
  - सीखने में सामाजिक संबद्धता व व्यक्तिगत संबद्धता पर बल।
  - तत्परता व शिक्षार्थी द्वारा स्वयं कार्य करने को महत्व देना।
  - सीखना सक्रिय रूप से सूचना का प्रक्रियाबद्ध करना है।
  - सीखने में स्वायत्तता पर बल देता है।

| ब्रूनर और पियाजे के सिद्धांत की समानताएँ | ब्रूनर और पियाजे के सिद्धांत की असमानताएँ |
|---|---|
| बच्चे पूर्ववत अनुकूलन के आधार पर अधिगम करते है। | ब्रूनर विकास को एक सतत प्रक्रिया मानते है जबकि पियाजे इसे विभिन्न चरणों की श्रृंखला मानते है। |
| बच्चों में एक स्वाभाविक रूप भाषा के विषय में जिज्ञासा होती है। | ब्रूनर भाषा विकास को संज्ञानात्मक विकास का एक महत्वपूर्ण कारक मानते है जबकि पियाजे इसे संज्ञानात्मक विकास का एक परिणाम के रूप में स्वीकार करते है। |
| बच्चों की संज्ञानात्मक संरचनाएं समय के साथ-साथ विकसित होती रहती है। | ब्रूनर का मानना है कि संज्ञानात्मक विकास की गति को बढ़ाया जा सकता है, बच्चों के लिए तैयार होने का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं है जबकि पियाजे का मानना है कि बच्चों में संज्ञानात्मक विकास स्तर और परिपक्वता के अनुसार स्व-गति से होता है। |
| बच्चे अधिगम प्रक्रियाओं में सक्रिय सहभागिता लेते हुए अधिगम करते है। | ब्रूनर वयस्कों एवं अधिक ज्ञानी या जानकार साथियों की अधिगम प्रक्रिया में प्रतिभागिता को महत्व देता है। जबकि पियाजे ऐसा नहीं स्वीकार करते हैं। |
| संज्ञानात्मक विकास की अन्तिम चरण या सीमा प्रतीकों या संकेतों या चिन्हों के अभिग्रहण तक चलता है और प्रमुखता भी इन्हीं की दी गई है। | ब्रूनर का मानना है कि प्रतीकात्मक चिंतन के पूर्व में अपनाए के तरीकों के प्रतिनिधित्व का स्थानापत्र नहीं होता है। जबकि पियाजे का मानना है कि ये बदल जाते है। |

Scanned with CamScanner

## मानवतावादी सिद्धान्त (Humanistic Theory)–

- ✦ प्रतिपादक - मैस्लो (अब्राहिम मैस्लो) व कार्ल रोजर्स
- ✦ अधिगम में मानव को केन्द्रीय स्थान देता है, छात्र केन्द्रीत उपागम।
- ✦ इस सिद्धांत ने श्रेष्ठ मानव, श्रेष्ठ विद्यार्थी, आत्म अभिप्रेरणा, आत्मसिद्धि पर बल दिया जाता है।
- ✦ इसमें आवश्यकता पदानुक्रम का सिद्धांत इसके अन्तर्गत आता है जिसमें 5 आवश्यकताओं के प्रकार बताये हैं -
- ✦ इस सिद्धान्त में सृजनात्मकता, मानसिक स्वास्थ्य, सम्बद्धता, सहअस्तित्व, मूल्य, आदर अनुशासन, सक्रिय अधिगम पर बल।

1. आत्मसिद्धि की आवश्यकता
2. सम्मान पाने व देने की आवश्यकता
3. प्रेम
4. सुरक्षा
5. शारीरिक आवश्यकता

- ✦ स्व की पूर्व कार्यप्रणाली
- ✦ यह सिद्धांत मानव कल्याण, सह अस्तित्व, आत्म अभिप्रेरण, आत्मसिद्धि मूल्यों, सृजनात्मकता, आत्म निर्देश, व्यक्तिगत विभिन्नता, सक्रिय अधिगम, आदर्श आत्म व आत्म अनुशासन आदि पर बल देता है।
- ✦ बालक के लिए शिक्षा मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल देता है।

नोट :- रोजर्स ने स्वकी पूर्ण कार्यप्रणाली, अनुभव में स्पष्टता, सामाजिक संबंध, आत्मधारणा व आत्मसिद्धी पर बल दिया है।

## अनुभव जन्य अधिगम सिद्धान्त (Experiential Learning)–कार्ल रोजस

- ✦ इसका सम्बन्ध अर्जित ज्ञान को उपयोग में लाने से होता है इसके अधिगमकर्ता की व्यक्तिगत रुचि व तत्परता का समावेश होता है। विद्यार्थी स्वयं ही अधिगम हेतु पहल करता है तथा स्वयं ही मूल्यांकन करता है। करके सीखने पर बल व सीखने की इच्छा (Self Initiative) पर बल।

## अधिगम स्थानान्तरण (Transfer of Learning)–

- ✦ जब पहले के सीखने का प्रभाव किसी नई अनुक्रिया के सीखने पर पड़ता है।
- ✦ कोलसेनिक - स्थानान्तरण पहली परिस्थिति से प्राप्त ज्ञान, कुशलता, आदतों, अभियोग्यता का दूसरी परिस्थिति में प्रयोग करना है।
- ✦ सोरेन्सन - 'अधिगम स्थानान्तरण एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, प्रशिक्षण व अनुभवों को दूसरी परिस्थिति में स्थानान्तरण करने में का उल्लेख करता है।'
- ✦ क्रो एण्ड क्रो - ''सीखने के एक क्षेत्र में प्राप्त होने वाले ज्ञान, कुशलता, सोच, अनुभव व कार्य की आदतों को सीखने के दूसरे क्षेत्र में प्रयोग करना अधिगम स्थानान्तरण है।''
- ✦ विटेकर - किसी एक कौशल या विषय वस्तु के सीखने का प्रभाव दूसरे कौशल या विषयवस्तु पर पड़ता है।
- ✦ पीटरसन - स्थानान्तरण सामान्यीकरण है क्योंकि यह नये क्षेत्र में विचारों का विस्तार है।
- ✦ ब्लेयर, जोन्स, सिम्पसन - जब पहले के सीखने का प्रभाव किसी नई अनुक्रिया के निष्पादन का सीखने पर पड़ता है तो सीखने का अंतरण कहलाता है।

प्रकार - तीन :-

### 1. सकारात्मक/धनात्मक/भावात्मक (Positive)–

जहाँ सहायता मिलती हो। जैसे - गणित का प्रयोग भौतिक विज्ञान में करना। सकारात्मक के निम्न प्रकार हैं -

1. पार्श्वीय अंतरण (Lateral Transfer) - जब सीखे गये ज्ञान का अंतरण ऐसी परिस्थितियों या विषय में होता है जो उसी स्तर का है। जैसे कक्षा कक्ष में शिक्षक से यह सीखा 6-3 = 3 सीखा और बालक घर जाकर फ्रिज में से 6 आम में से 3 आम निकाल कर समझता है कि 3 शेष रहे होंगे।
2. अनुलम्ब (Vertical) - सीखे गये कौशल का प्रयोग उच्च स्तर के कौशल के सीखने में होता है।
3. अनुक्रमिक अंतरण (Sequential Transfer) - विषयों को एक क्रम में सीखने के बाद किसी नये विषय या नये कौशल को सीखने में पड़ने वाले प्रभाव को अनुक्रमिक कहा जाता है इसमें सीखना धनात्मक होता है। जैसे - बाकी, गुणा सीखकर भाग देना सीखना।
4. समस्तर अंतरण (Horizontal) - यह समान स्तरीय कौशल सीखने में है पार्श्वीय व अनुक्रमिक इसी के भाग हैं।
5. द्विपार्श्वीय अंतरण/क्रॉस शिक्षा (Bilakeral) - जब शरीर के एक अंग से किये कार्य का प्रभाव को दूसरे अंग से भी करना।

### 2. नकारात्मक (Negative)–

- ऋणात्मक
- जहाँ नुकसान होता हो। जैसे - नाव चलाने वाले को साईकिल चलाने के लिये कहना।

### 3. शून्य अधिगम स्थानान्तरण (Zero Transfer)–

- जहाँ न सहायता न नुकसान होता हो।

जैसे - बल्लेबाजी करने वाले वाला बालक यदि गेंदबाजी का अभ्यास करता है तो उसकी बल्लेबाजी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

- गणित व भाषा के मध्य संबंध।

✦ शुन्क ने अधिगम स्थान्तरण के निम्न प्रकार बताए हैं–

(1) समीपवर्ती अंतरण
(2) दूरवर्ती अंतरण
(3) निम्न रोड अंतरण
(4) उच्च रोड अंतरण

1. समीपवर्ती अंतरण (Near) - कोई बालक टाईपराईटर पर टाईप करके सीखता है। यह Computer key board पर भी उसे प्रयोग करता है।
2. दूरवर्ती अंतरण (Far) - भिन्न परिस्थिति में प्रयोग करना सीखना।
3. निम्न रोड अंतरण - जब सीखा गया ज्ञान स्वतः अचेतन रूप में में दूसरी परिस्थिति में हो जाता है।
4. उच्च रोड अंतरण - यह स्वतः ना होकर प्रयास करने से चेतन रूप में होता है।

अन्य प्रकार :-

- ✦ अविशिष्ट अन्तरण :- जब पूर्व अधिगम व्यक्ति को दूसरे कार्य

Scanned with CamScanner

को अच्छे तरीके से सीखने के अनुकुल बना देता है। एक कार्य का सीखना व्यक्ति को अगला कार्य ज्यादा सुविधा से सीखने में ऊर्जा प्रदान करता है।

- **विशिष्ट अंतरण** – पहले सीखे कार्य 'अ' का अंतरण प्रभाव बाद में सीखे जाने वाले 'ब' पर पड़े तो वह विशिष्ट अंतरण होगा यह सरल या कठिन या बिना प्रभाव का भी बना सकता है।

### अधिगम स्थानान्तरण के सिद्धान्त–

1. **मानसिक शक्तियों के प्रशिक्षण का सिद्धांत ( औपचारिक अनुशासन ) (Mental discipline theory)** –
   **जैसे** – कल्पना का प्रयोग लैटिन व हिन्दी साहित्य दोनों के किया जा सकता है।
2. **समान तत्वों का सिद्धांत (Identical Elements)** – दो तत्व जहां समान हो। (अनुरूप तत्वों का सिद्धान्त)(समरूप)
   - प्रतिपादक – थार्नडाइक
   जैसे – भूगोल व इतिहास का संबंध
3. **सामान्यीकरण का सिद्धांत (Theory of Generalization)** –
   - प्रतिपादक – सी.एच.जड़
   - एक परिस्थिति में किये गये व्यवहार को दूसरी परिस्थिति में करना। सामान्य नियम या सिद्धान्त निकालकर उसका प्रयोग करना।
4. **सामान्य व विशिष्ट बुद्धि का सिद्धांत (Two factor theory G-S)** –
   - प्रतिपादक – स्पीयरमैन
   - उसके अनुसार G बुद्धि का स्थानान्तरण (सामान्य बुद्धि) होता है S का नहीं (विशेष)
5. **आदर्श व मूल्यों का सिद्धांत (Ideals Theory)** – बागले
6. **अवयववादी सिद्धांत** –
   - गेस्टॉल्टवादी पूर्ण से अंश की ओर होता है। (पक्षान्तर सिद्धान्त (Transposion) भी कहा जाता है।)
7. **संयोजनवादी सिद्धांत** –
   - **थॉर्नडाइक** –
     - स्थानान्तरण संबंध स्थापित करता है।

### अधिगम स्थानान्तरण को प्रभावित करने वाले कारक–

1. सीखने वाले की इच्छा।
2. सीखने वाले की सामान्य बुद्धि व सामान्यीकरण की योग्यता।
3. समान विषयवस्तु व समान शिक्षण विधियाँ।
4. शिक्षक का प्रभाव
5. समझ

- **अधिगम स्थानान्तरण में शिक्षक की भूमिका** – समझ कर सीखने पर बल, चिन्तन का विकास, सहसम्बन्ध पर बल, दृष्टान्तों का प्रयोग, सामान्यीकरण की योग्यता का विकास, साहचर्य के नियम का प्रयोग करना इत्यादि।

### अधिगम स्थानान्तरण की विशेषताएँ–

1. यह एक उद्देश्यपूर्ण क्रिया है।
2. इससे सूझ या अर्न्तदृष्टि का विकास होता है।
3. इसमें पहले से सीखे गये ज्ञान का प्रयोग दूसरी परिस्थिति में किया जाता है।

### अधिगम असमर्थता के प्रकार–

- **अधिगम अशक्ता (Learning Disability)**
- यह उन विकारों के समूह को व्यक्त करता है जिनके कारण व्यक्ति में सीखने, पढ़ने, लिखने, बोलने तर्क करने व गणित के प्रश्न हल करने में कठिनाई होती है।
- इन विकारों के कारण बालकों में जन्मजात रूप से निहित होते है माना जाता है केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र की कार्यविधि में समस्याओं के कारण अधिगम अशक्तता पायी जाती है। यह उन बालकों में पायी जा सकती है जो सामान्य से श्रेष्ठ बुद्धि वाले, सामान्य संवेदी प्रेरक तंत्र वाले तथा जिनको सीखने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं यह सूचित प्रबंधन द्वारा दूर भी की जा सकती है।

## अधिगम क्षमता/कठिनाई

- शब्दिक अर्थ – सीखने की क्षमता की अनुपस्थिति से है।
- अधिगम अक्षमता शब्द का प्रयोग 1963 ई. में सैमुअल किर्क ने किया इसका अर्थ – "अधिगम अक्षमता को वाक, भाषा, पठन, लेखन या अंकगणितीय प्रक्रिया में से किसी एक या अधिक प्रक्रियाओं में मंदता, विकृति व अवरुद्ध विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो मस्तिष्क कार्य विरूपता/संवेगात्मक व व्यावहारिक विक्षोभ का परिणाम है।'
- 1994 में अमेरिका की अधिगम अक्षमता की राष्ट्रीय संयुक्त समिति ने इसे इस प्रकार परिभाषित किया – "अधिगम अक्षमता के सुचारू रूप से नहीं कार्य करने के कारण उत्पन्न आंतरिक विकृतियों के विषम समूह जिसमें की बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने तर्क करने व गणितीय क्षमता की कठिनाई शामिल है यह जीवन के किसी भी पड़ाव में उत्पन्न हो सकती है। यह स्वभाव में आंतरिक होता है।

**अधिगम अक्षमता का अध्ययन :-**

- क्रुकशैक (1972) में 40 शब्दों का शब्दकोष तैयार किया।
- कुर्त गोल्डस्टिन ने 1927 से 1939 में प्रथम विश्वयुद्ध के मस्तिष्क क्षतिग्रस्त सैनिकों की अधिगम समस्याओं का अध्ययन किया।
- स्ट्रॉस (1939) अधिगम अक्षमता का अध्ययन किया।
- क्रुकशैक, वाइस व वैलने (1957) बुद्धिलब्धि न्यून का अध्ययन किया।
- सैमुअल क्रिर्क ने 'एसोशियशन फॉर चिल्ड्रेन विद लर्निंग डिसएबलिटी' एक संघ बनाया।

**प्रकृति/विशेषाताएँ :-**

1. आंतरिक व स्नायुजनित होती है।
2. स्थायी स्वरूप (कुछ)
3. विकृतियों का विषम समूह है।
4. जैविक समस्या व मनोवैज्ञानिक समस्या है।

Scanned with CamScanner

प्रकार :-

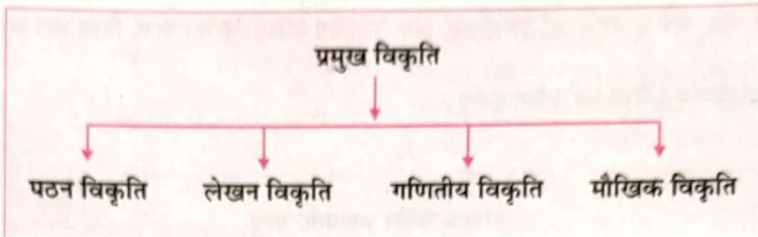


**( 1 ) पठन वैकल्य/विकृति - इसमें (Reading Problem)**

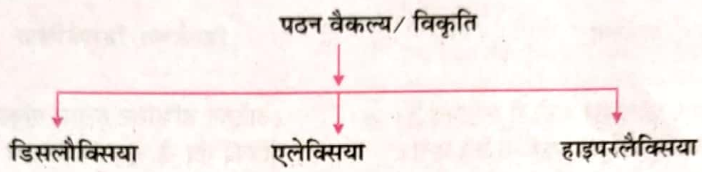


1. **डिसलैक्सिया** - रूडोल्फ बर्लिन द्वारा 1887 में सर्वप्रथम खोजा गया इसे 'शब्द अंघता' कहा गया।
   **लक्षण** - वर्णमाला अधिगम में कठिनाई, अक्षरों की ध्वनि नहीं सीख पाना, स्वर वर्णो का लोप होना, शब्दों को उल्टा पढ़ना मान को नाम, समान उच्चारण ध्वनियों को पहचान ना पाना, शब्दकोष का अभाव, भाषा के अथपूर्ण प्रयोग का अभाव, स्मरण शक्ति कमजोर, हस्तकौशलनिपुणता अभाव, पेन्सिल नहीं पकड़ पाना, बटन बंद नहीं कर पाना।
   **पहचान परीक्षण :-**
   (a) बोड टेस्ट ऑफ रीडिंग स्पेलिंग पैटर्न, 1973, ऐलेना बॉर्डर
   (b) डिसलैक्सिया अर्ली स्क्रीनिंग परीक्षण व डिसलैक्सिया स्क्रीनिंग टेस्ट (भारत में)
   **उपचार** - पूर्ण उपचार संभव नहीं लेकिन निम्नतम स्तर पर उचित शिक्षण अधिगम द्वारा लाया जा सकता है।
2. **एलेक्सिया** - पठन अक्षमता, पढ़ने की शक्ति का लोप हो जाना-(सीखने अक्षमता)
3. **हाईपरलैक्सिया** - शब्द या वाक्यों का अवबोध ना होना।

**( 2 ) लिखने/लेखन विकृति अक्षमता ( Writing )**

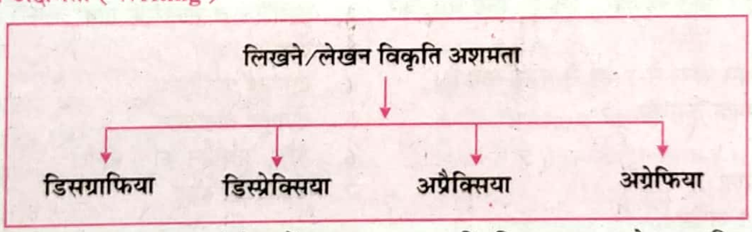


1. **डिसग्राफिया** - लेखन विकृति, लिखते समय स्वयं से बातें करना, अशुद्ध, अनियमित आकार वाले अक्षर लिखना, लेखन सामग्री पर कमजोर पकड़/अपठनीय हस्तलेखन, अपूर्ण अक्षर/शब्द लिखना।
   **उपचार** - लेखन अभ्यास
2. **डिस्प्रेक्सिया** - लिखने व चित्रांकन में कठिनाई महसूस करता। (लिखने व चिंत्राकन में कठिनाई) सूक्ष्म व स्थूल गामक योग्यता/कठिनाई
3. **अप्रेक्सिया** - शारीरिक विकार जिसके कारण व्यक्ति मांसपेशियों के संचालन से संबंधित सूक्ष्म गति कौशल जैसे लिखना नहीं कर पाता है। वह हाथ व आंखों में समन्वय नहीं स्थापित कर पाता है। यह तंत्रिका तंत्र संबंधी विकार है।
4. **अग्रेफिया** - इसमें बालक द्वितीय भाषा के प्रति अक्षरता प्रदर्शित करते हैं।

**( 3 ) गणित अक्षमता विकृति (Mathematical)**

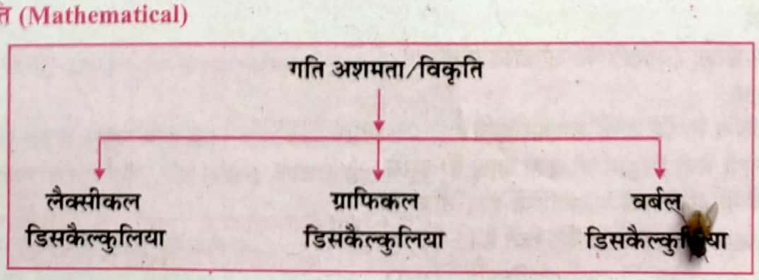

1. **डिसकैल्कुलिया** - इसमें अंकों, संख्या के अर्थ को समझने की अयोग्यता से लेकर सूत्र व सिद्धान्तों के प्रयोग की अयोग्यता शामिल है जैसे - चिनह नहीं पहचान पाना, नाम व चेहरा नहीं पहचानना, अंक गणितीय प्रक्रिया ना कर पाना, दिशा ज्ञान अभाव, चैक बुक व नकद भुगतान से भय, समय असंगम।

**उपचार** - फ्लैश कार्ड/कम्प्यूटर गैम्स का प्रयोग करना।

**(4) मौखिक संचार (Verbal) अक्षमता/वाक् -**

मौखिक संचार अशमता/वाक्
↓
अफेज्या | डिस्फेज्या/डिसफैसिया

1. **अफेज्या** - मौखिक भाषा को ग्रहण करने में कठिनाई है।
Aphasia - मौखिक रूप विचारों को व्यक्त ना कर पाना।
2. **डिस्फैसिया** - वक अक्षमता इससे ग्रसित बालक विचार की अभिव्यक्ति के समय कठिनाई महसूस करते हैं। इसका कारण ब्रेन डैमेज को माना जाता है।

**अन्य विकृतियाँ :-**

1. **डिसआर्थोग्राफिया** - वर्तनी सम्बन्धी विकार
2. **ऑडिटरी प्रोसेसिंग डिसऑर्डर** - श्रवण सम्बन्धी विकार
3. **ऑडिटेक्तिया** - श्रवण बाधा विकार
4. **विजुअल परसेप्शन डिसऑर्डर** - दृश्य प्रत्यक्षण क्षमता विकार
5. **सेंसरी इटिग्रेशन ऑर प्रोसेसिंग डिसऑर्डर** - इन्द्रीय समन्वयन क्षमता विकार
6. **ऑर्गनइजेशनल लर्निंग डिसऑर्डर** - संगठनात्मक पठन विकार
7. **ऑटिज्म** - (आत्मविमोह/स्वपरायणता)
   - लक्षण - सीमित व दोहराव युक्त व्यवहार (एक ही शब्द बार-बार बोलना।)
   - मानसिक रोग जिसके लक्षण जन्म से 3 वर्ष से नजर आते है।
   - सामाजिक व्यवहार व सम्पर्क कमजोर
   - स्नायुतंत्र विकार
   - परिचित को पहचान ना पाना।
   - विश्व ऑटिज्म दिवस - 2 अप्रैल
8. **डिस्थीमिया** - एक अवसाद जो भावात्मक विकृति है गंभीर तनाव की स्थिति।
9. **डिस्मेमोग्राफिया** - एक स्मृति दोष विकार
10. **मोनेप्लेसिया** - एक हाथ/एक पैर प्रभावित विकार
11. **हेमी प्लेसिया** - दोनों हाथ या दोनों पैर प्रभावित
12. **क्वाड्रिप्लेसिया** - हाथ और पैर चारों प्रभावित
13. **एक्यूटेशन** - अंग-विच्छेदन
14. **एपिलेप्सी** - मिर्गी के दौरे
15. **ग्लूकोमा** - उच्च दाब से रेटिना (आंख) का क्षतिग्रस्त होना।
16. **लोकोमोटर** - गामक बाधा
17. **डिमेंशिया** - चिंतन, स्मृति व निर्णय शक्ति कमजोर होना।
18. **हाइपोटोनिया** - इसे फ्लोपी बेबी सिंड्रोम भी कहा जाता है। इससे ग्रस्त बालक के मस्तिष्क के संकेत को मांसपेशियों द्वारा ठीक से अनुकरण नहीं होता ऐसे बालक ढीले-ढाले बैठे रहते हैं।
19. **अवधान विकास** - ध्यान अभाव अतिक्रियाशीलता विकृति ADHD (अटेशन डेफिसिट हाईपर एक्टिविटी डिसऑर्डर) तंत्रिका तंत्र से जुड़ा विकार जो ध्यान को प्रभावित करता है इसमें बैचेनी, दोषपूर्ण व्यवहार, ध्यान भटकना लक्षण है, कई बार अतिसक्रियता भी व्यवहार में दिखती है। एक जगह स्थिर होकर बैठना पाना, इधर-उधर घूमना, भागना, ऊपर नीचे चढ़ना, उतरना, सड़क पर नियमों का पालन नहीं करना, जिद करना, गलती ना मानना, बातचीत के बीच में बोलना, जल्दबाजी व आवेश में कार्य करना, लड़ाई करना।

**अधिगम पठार (Plateaus In Learning)-**

✦ **रॉस** - अधिगम का पठार उस अवधि को व्यक्त करता है जब सीखने की गति एकदम रुक जाती है।

**अधिगम के पठार के कारण-**

1. अभिप्रेरणा का अभाव
2. शारीरिक व मानसिक दोष
3. दोषपूर्ण विधि
4. दोषपूर्ण पाठ्यक्रम
5. दोषपूर्ण वातावरण
6. रुचि, अवधान का न होना।
7. थकान का होना

## अधिगम वक्र (Learning Curve)

✦ **गेट्स व अन्य के अनुसार** -
अधिगम वक्र सीखने की मात्रा गति तथा उन्नति को व्यक्त करते हैं।

1. **नकारात्मक (उन्नतोदर) (ऋणात्मक त्वरण वक्र) (Convex Curve) :-**
सीखने की गति आरम्भ में तेज होती है, धीरे-धीरे मंद होती जाती है।

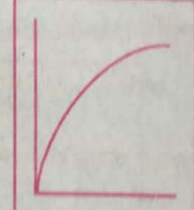

2. **सकारात्मक (नतोदर) (वर्धमान निष्पादन वक्र/धनात्मक) (Concave Curve) :-**

शुरूआत में धीमी बाद में तेज हो जाती है।

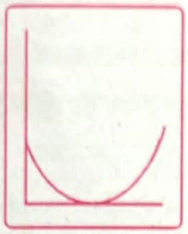

3. **मिश्रित (Conbination Curve) (S-Shaped Curve) :-**
शुरूआत में धीमी, मध्य में तेज व अन्त में फिर धीमी होती है।

✦ **सरल रेखीय वक्र ( समान निष्पादन वक्र ) (Straight Line Curve) :-**
सीखने की गति एक समान बनी रहती है।

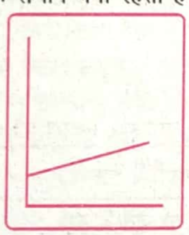

✦ **शून्य त्वरित वक्र (Zero Curve) :-**
अधिगम में सकारात्मक परिवर्तनों का न होना।

## अधिगम अशक्तताएँ (Learning Disability)–

1. अक्षरों, शब्दों, वाक्यों को लिखने, पढ़ने व बोलने में कठिनाई होती है।
2. अवधान विकार पाया जाता है। गतिशील होते हैं।
3. स्थान व समय की समझदारी की कमी– पहचान न कर पाना दिया बोध का अभाव।
4. हस्त निपुणता का अभाव–साईकिल ना चला पाना, शारीरिक संतुलन का अभाव।
5. मौखिक अनुदेशों को समझने व अनुसरण में कठिनाई।
6. प्रात्यक्षिक विकार– दरवाजे की घंटी व फोन की घंटी में अन्तर ना कर पाना।
7. पठनवैकल्य – अक्षर व शब्दों की नकल ना कर पाना जैसे 'प' व 'फ' में अन्तर ना करना।

## अधिगम के प्रकार–

1. **ज्ञानात्मक** – इसमें प्रत्यक्षात्मक, प्रत्यायत्मक व साहचर्यात्मक रूप में सीखा जाता है।
2. **भावात्मक** – इसमें महसूस करके सीखा जाता है।
3. **क्रियात्मक** – विभिन्न कौशल जैसे – नृत्य, चार्ट बनाना, चित्रकला आदि।

**अधिसंज्ञान** – स्वयं की मानसिक क्रियाओं को जानना।
नोट : आगमन व निगमन भी अधिगम के प्रकार माने गये हैं।

## अधिगम के अन्य प्रकार :-

1. **वाचिक अधिगम** –
यह केवल मनुष्य में होता है शब्दों के माध्यम से ज्ञान का अर्जन होता है इसमें निरर्थक शब्दांश, परिचित शब्द, वाक्य व अनुच्छेद का प्रयोग होता है।

✦ **वाचिक अधिगम की विधियाँ :-**

- **युग्मित सहचर विधि** – इसमें मातृभाषा के शब्दों के किसी विदेशी भाषा के पयार्य सीखने में होता है। युग्म का पहला शब्द उद्दीपक के रूप में निरर्थक शब्दांश होता है दूसरा शब्द अंग्रेजी संज्ञा में अनुक्रिया होता है।
- **क्रमिक अधिगम** – इसमें यह देखा जाता है कि प्रतिभागी शद्बाब्दिक एकांश को किस तरह सीखता है।
- **मुक्त पुनः स्मरण** – शब्दों को किसी भी क्रम में पुनः स्मरण करने के लिए कहा जाता है।

2. **सम्प्रत्यय अधिगम** – सम्प्रत्यय एक श्रेणी है जिसका उपयोग अनेक वस्तु व घटना के लिए किया जाता है। यह दो प्रकार के होते है –

- **कृत्रिम सम्प्रत्यय** – जो सुपरिभाषित हो व आवश्यक विशेषताओं के साथ पर्याप्त हो। जैसे – वर्ग
- **स्वाभाविक** – अच्छे से परिभाषित नहीं होते व बहुत सी विशेषताऐं होती हैं। जैसे – मकान, कपड़े

3. **कौशल अधिगम** – जटिल कार्य को दक्षता के साथ करना कौशल अधिगम है। कौशल की प्रक्रिया 3 चरणों में होती है। संज्ञानात्मक साहचर्यात्मक व स्वायत।

4. **परिपृच्छा अधिगम (Inquing Learning)**

- यह समस्या समाधान के कौशल पर आधारित है। यह छात्र केन्द्रित उपागम है इसमें प्रश्न पूछकर और उत्तर का विवेचन करके नवीन ज्ञान की खोज होती है –
- यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा विद्यार्थी कुछ न कुछ सीखता रहता है व सीखे हुये ज्ञान का चिंतन व मनन करता है इसमें बालक अपनी जिज्ञासा व मन में चल रहे प्रश्नों को अध्यापक के समक्ष रखता है व शंका को दूर करता है।
- **परिपृच्छा के अधिगम के अनुसार पर प्रकार** – (1) सत्यापत्र (2) संरचनात्मक (विश्लेषण) (3) मार्गदर्शित परिपृच्छा (4) सर्वविदित व सत्य परिपृच्छा – समस्या ढूढ़ना व समाधान (5) वैज्ञानिक परिपृच्छा

## अधिगम की विधियाँ–पाँच

1. **करके सीखना** – सबसे महत्त्वपूर्ण सीखेना।

- **डॉ मेस** – हम करके सीखते है।

**नोट :-** किलपैट्रिक ने इसका सर्वाधिक समर्थन किया है।

2. **निरीक्षण करके सीखना** –
संगीत नृत्य – वॉटसन ने बल दिया है।
3. **परीक्षण करके सीखना** –
प्रयोग द्वारा – विलियम वुण्ट ने बल दिया है।
4. **सामूहिक विधि द्वारा सीखना** –
योजना, सेमीनार, वाद-विवाद, कार्यशाला
5. **मिश्रित विधि द्वारा सीखना** – पूर्ण व आंशिक विधि का मिला जूला रूप

Scanned with CamScanner

## अधिगम के अनुक्षेत्र (Domains of Learning)–

1. **संज्ञानात्मक अनुक्षेत्र (Cognitive)** – इसमें बौद्धिक व्यवहार जैसे – सोचना, कल्पना करना, तर्क अनुमान करना, विश्लेषण व संश्लेषण करना वर्णन, व्याख्या, स्मरण, सामान्यीकरण, सरलीकरण, संक्षिप्तीकरण, नियमीकरण उदाहरण देना, विस्तारीकरण, निष्कर्ष, आलोचना, समालोचना करना ये क्रियाएँ होती हैं।
2. **क्रियात्मक क्षेत्र (Conative)** – इन्द्रियों की भूमिका होती है।
   **जैसे** – चलना, दौड़ना, चढ़ना, पकड़ना, फेंकना, नाचना, गाना, खाना-पीना, सुनना, स्पर्श, चखना, लिखना, पढ़ना आदि क्रियाएँ।
3. **भावात्मक (Affective)** – भाव व भावनाओं से दुःखी, सुखी, क्रोध, हर्ष, भय, उदासीन, पसन्द, नापसन्द बताना, रूचि दृष्टिकोण व मान्यताओं को व्यक्त करना, त्याग व बलिदान की भावना, प्रेम घृणा भावों की अनुभूति संवेगों को व्यक्त करना आदि क्रियाएँ हैं।

## अधिगम शैली (Learning Styles)–

- अधिगमकर्ता द्वारा उद्दीपकों को उपयोग करने व अनुक्रिया करने की सुसंगत शैली अधिगम शैली कहलाती है।
- अधिगम शैलिया मुख्यतः प्रात्यक्षिक प्रकारता, सूचना प्रक्रमण व व्यक्तित्व प्रतिरूप से उत्पन्न होती हैं।
- **प्रात्यक्षिक प्रकारता** – भौतिक वातावरण के प्रति जैविक रूप से आधारित प्रतिक्रियाएँ जो श्रवण, दृष्टि, घृणा, गति व स्पर्श से गृहण करते हैं।
- **सूचना प्रकमण** – यह हमारे सोचने, स्मरण, समस्या समाधान के तरीके में अन्तर करते है। जैसे – सक्रिय/विमर्शी, संवेदी/अन्तः प्रज्ञात्मक अनुक्रमिक/सार्वभौमिक क्रमिक/सहकांलिक
- **व्यक्तित्व प्रतिरूप** – परिवेश के साथ अन्तः क्रिया करने का प्रत्येक का विशिष्ट तरीका है।

**प्रमुख अधिगम शैलियां :–**

1. **आवेगशील/चिंतनशील शैली (Impulsive/refelective)** –

| आवेगशील | चिंतनशील शैली |
|---|---|
| छात्र प्रश्न के उत्तर तेजी व आवेशील ढंग से देते है। | छात्र विचार करके उत्तर देते है इस सम्प्रत्यात्मक शैली भी कहते है। |
| गलतियाँ ज्यादा होती है। | कम होती है। |
| शैक्षिक निष्पादन निम्न | शैक्षिक निष्पादन उच्च |
| समस्या समाधान व निर्णय कमजोर | समस्या समाधान व निर्णय शक्ति मजबूत |

2. **गहरी व सतही शैली (Deep/Surface)** -

| गहरी | सतही |
|---|---|
| छात्र किसी विषय का अर्थ समझकर सीखते है। | ऊपर-ऊपर की बाते सीखते है। |
| सक्रिय ढंग स व अर्थपूर्ण सीखते है। | निष्क्रिय व रटकर सीखते है। |
| आत्मप्रेरित होकर सीखेते है। | बाह्य पुरस्कार से प्रेरित होकर सीखते है। |

3. **क्षेत्र निर्भरता/क्षेत्र स्वतंत्रता (Field dependance/Field Inidependene)** -

| क्षेत्र निर्भरता | क्षेत्र स्वतंत्रता |
|---|---|
| ये लोक परिस्थिति के सम्पूर्ण तत्त्वों का समग्र रूप से प्रत्यक्ष करते हैं। यह अलग-अलग तत्त्वों का विश्लेषण नहीं कर पाते हैं। | ये लोग परिस्थिति के अलग-अलग अंशो/तत्वों का प्रत्यक्षण करते है। ये विश्लेषण करके वैयक्तिक तत्वों को समझते है। |
| समूह में कार्य अच्छा होता है। | सामाजिक सूचनाओं की स्मृति कमजोर |
| इतिहास में साहित्य में रूचि | गणित व विज्ञान में रूचि |

Scanned with CamScanner

**4. संबंधात्मक शैली/विश्लेषणात्मक शैली -**

| संबंधात्मक शैली | विश्लेषणात्मक शैली |
|---|---|
| सूचना को समग्र रूप से प्रत्यक्षण | समग्र चित्र में किसी सूचना को निकालने की योग्यता |
| अंतर्ज्ञानात्मक चिंतन | अनुक्रमिक व संरचित चिंतन |
| मानवीय, सामाजिक व सांकृतिक सामग्री का अधिगम | अचेतन व अवैयक्तिक सामग्री का अधिगम |
| मौखिक विचार व प्रासंगिक सूचना की स्मृति अच्छी | अमूर्त विचार व अप्रांसगिक सूचना की स्मृति अच्छी |
| अशैक्षणिक क्षेत्र में कार्य उन्नमुख | शैक्षणिक क्षेत्र में कार्य उन्मुख |
| पारस्परिक विद्यालय परिवेश के साथ द्वन्द्व होना। | सभी विद्यालय परिवेश से संबंधित होना |

## अधिगम सिद्धान्त सम्बन्धी तथ्य-

- अधिगम आकर्षण - विकर्षण से प्रभावित होता है - कुर्त लेविन
- स्थान अधिगम व गुप्त अधिगम का प्रयोग- टोलमैन,
- प्रत्याशात्मक सिद्धान्त - टोलमैन
- अधिगमित असहायपन - सेलिगमैंन व मायर - कुत्तों पर प्रयोग किया - यह अवसादग्रस्त व्यक्तियों में पाया जाता है। बार-बार असफलता की वजह से उत्पन्न होता है।
- संज्ञात्मक मानचित्र के प्रतिपादक टोलमैन
- अधिगम एक अनुमानित प्रक्रिया है।
- अणिगम निष्पादन से भिन्न होता है।
- अधिगम व्यवहार में तुलनात्मक रूप से स्थायी परिवर्तन है।
- अधिगम वृद्धि व परिपक्वता के कारण नहीं होता है।
- **आई.पी. पावलॉव** - उद्दीपक-उद्दीपक के मध्य साहचर्य होता है।
- **विभेदन** - (सामान्यीकरण की पुरक प्रक्रिया है) - कुत्ता विशिष्ट घंटी से मिलती जुलती आवाज के प्रति लार नहीं टपकाता है।
- प्रेक्षणात्मक अधिगम - बाण्डूरा
- अव्यंक्त अधिगम - संज्ञानात्मक अधिगम है।
- **जेरोम ब्रूनर** - विकास की किसी भी अवस्था में कुछ भी सिखाया जा सकता है।
- **प्रेसी** - अधिग्म अनुभव है जिसके द्वारा कार्य में परिवर्तन या समायोजन होता है।

## अवधारणा मानचित्रण/संकल्पना नक्शा (Concept Maping)-

- इस अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग जोसेफ डी. नोवक द्वारा 1960 में किया गया।
- इसकी उत्पत्ति निर्मितवाद से हुई है।

**अर्थ :-**

- यह ज्ञान की संरचना को स्पष्ट करने के लिए प्रभावी उपकरण है।
- यह समस्या केन्द्रित व छात्र केन्द्रित दोनों है। इसमें "मैं छात्रों को क्या सिखना चाहता हूँ" पर बल दिया जाता है।
- अवधारणाओं के संबंधों को चित्र द्वारा दर्शाता है।
- विचारों व जानकारियों को श्रेणीबद्ध संरचना में लेबल तीर के साथ जोड़ता है।
- ज्ञान को संघठित रूप से व्यक्त करता है।

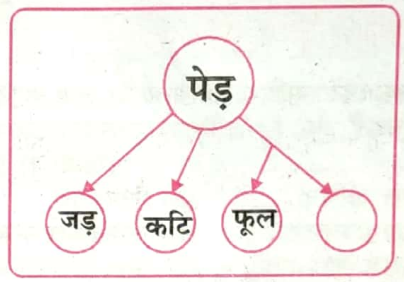


**उपयोगिता :-**

1. अर्थग्राहयता को बढ़ाने में उपयोगी।
2. पाठ्यक्रम की योजनाओं के विकास में।
3. क्रमिक त्रुटियों को समाप्त करने।
4. अंत: विषय पाठ्यक्रमों को विकसित करने में।
5. पाठ्यक्रम डिजाइन में।
6. ज्ञान को व्यवस्थित करने व अनुदेशानात्मक सामग्री का चयन करने।
7. छात्रों के मध्य चर्चा को आधार प्रदान करने के लिए।
8. अर्थ निर्माण के तरीकों को विकसित करने में।
9. मार्टिन पी - कॉन्सेप्ट मानचित्र अर्थ पूर्ण, प्रांसगिक, शैक्षणिक रूप में ध्वनि व छात्रों के लिए दिलचस्प है।
10. नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान के आधार पर विकसित करने में।

    **नोट :-** अर्थपूर्ण अधिगम की अवधारणा डेविड आशुबेल ने 2000 में दी थी। (पूर्व अधिगम से नवीन अधिगम को सम्बन्धित करना) अवधारणा मानचित्रण इस पर आधारित।
11. नये ज्ञान की रचना करने में उपयोगी।

## आशुबेल का आधुनिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त-

**अधिगम के प्रकार (Kinds of Lerning)** - प्रतिपादक - आशुबेल

प्रकार - 4

1. **अधिग्रहण सीखना (Reception Lerning)** - बालक को विषयवस्तु को बोलकर या लिखकर दी जाती है बालक उसे आत्मसात कर लेते है।
2. **अन्वेषण सीखना (Discovery Learning)** - बालक दी गई सामग्री में से नये विचार की खोज करके सीखता है। यह अर्थपूर्ण भी हो सकता है रटकर भी हो सकता है। यह समस्या समाधान आधारित होता है।
3. **रटकर सीखना (Rote Learning)** - बालक दी गई सामग्री को बिना समझे सीखता है।

Scanned with CamScanner

4. **अर्थपूर्ण सीखना (Meaningful Learning)** - इसमें सीखने वाली सामग्री के सार तत्व को समझना व उसे पूर्ण ज्ञान से जोड़ना।

**नोट :-** आशुबेल ने अर्थपूर्ण सीखने को सबसे महत्वपूर्ण बताते हुए इसके आत्मसात्करण को महत्वपूर्ण माना है यह 4 प्रकार का होता है - (1) संयोगात्मक सीखना (2) अधीनस्थ सीखना (3) सह संबंधात्मक सीखना (4) महाकोटि सीखना।

- आशुबेल ने सीखने को निगमनात्मक माना है।
- **उत्तम सूचना संसाधन मॉडल** - प्रेसली, बोर्कोवस्की स्कनिडर

इस मॉडल के अनुसार बालकों में उत्तम संज्ञान कई अंतक्रियात्मक कारकों, अंतर्वस्तु का ज्ञान, अभिप्रेरणा तथा मेटासंज्ञान का परिणाम होता है।

- **मेटा स्मृति के 3 तत्व** - ज्ञान, मानिटरिंग व नियंत्रण
- **S-O-R ( उद्दीपन - प्राणी - अनुक्रिया )** मॉडल - वुडवर्थ (प्रकार्यवादी)

इसमें 'O' - Organism (प्राणी) की विशेषताएँ, चिंतन, व्यक्तित्व, सांवेगिक कियाएं के उद्दीपक के प्रति की गई अनुक्रिया पर प्रभाव की व्याख्या की गई व 'O' के द्वारा अभिप्रेरणा की व्याख्या की जाती है।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ जब बालक छोटे समूहों में समस्याओं पर चर्चा कर स्वयं निष्कर्ष तक पहुँचते हैं, ऐसी स्थिति किस उपागम की ओर संकेत करती है? **(हिन्दी-II ग्रेड-2010)**
(A) पैनल परिचर्चा (B) निर्मितवाद
(C) सिस्टम उपागम (D) अभिक्रमित अनुदेशन (B)

❖ जब शिक्षक द्वारा छात्रों के लघु समूह बनाकर प्रत्येक समूह को विषय संबंधी समस्या दी जाए, छात्र चर्चा कर समाधान या निष्कर्ष निकालते हैं। यह किस उपागम की ओर संकेत कर रहा है? **(हिन्दी-II ग्रेड-2010)**
(A) पैनल चर्चा
(B) सिस्टम उपागम
(C) अभिक्रमित अनुदेशन
(D) निर्मित्तवाद (D)

❖ प्राय: शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ-........ की ओर संकेत करती है ? **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) वे कैसे सीखते हैं
(B) यांत्रिक अभ्यास की आवश्यकता
(C) सीखने की अनुपस्थिति
(D) शिक्षार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर (C)

❖ एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की सदैव इस रूप से सहायता करती है कि वे एक विषय क्षेत्र से प्राप्त ज्ञान को दूसरे विषय क्षेत्रों के ज्ञान के साथ जोड़ सकें, इससे-....... को बढ़ावा मिलता है ? **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) पुनर्बलन को
(B) ज्ञान के सह संबंध एवं अंतरण को
(C) वैयक्तिक भिन्नताओं को
(D) शिक्षार्थी की स्वायत्तता को (B)

❖ एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों को अनेक तरह की सामूहिक गतिविधियों में व्यस्त रखती है, जैसे-समूह चर्चा, समूह-परियोजनाएँ, भूमिका निर्वाह आदि। यह सीखने के किस आयाम को उजागर करते हैं ? **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम
(B) मनोरंजन द्वारा अधिगम
(C) भाषा निर्देशित अधिगम
(D) प्रतियोगिता आधारित अधिगम (A)

❖ "छात्र समूह में चर्चा कर समस्या का हल निकाले, तथा शिक्षक सुविधा प्रदत्त की भूमिका में हो।" यह उपागम है ?
(A) सिस्टम उपागम (B) मल्टी मिडिया उपागम
(C) निर्मितवाद उपागम (D) मृदु उपागम (C)

❖ किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार "सीखने का मतलब ज्ञान का निर्माण करना है।" **(छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)**
(A) स्किनर (B) पियाजे
(C) थार्नडाइक (D) लेव वाइगॉत्स्की (D)

❖ मैंने एक बच्चें को एक अवधारणा समझाने का प्रयास किया पर वह इसे नहीं समझ पाया, परन्तु कुछ वर्षों बाद जब मैंने उसी बच्चे को इस अवधारणा को समझाने का प्रयास किया तो बच्चा तुरंत समझ गया। ऐसा होने का कारण है- **(अध्यापक संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) अभ्यास (B) संयोग
(C) परिपक्वता (D) अधिक प्रयास (C)

❖ सीखना समृद्ध हो जाता है, यदि ? **(CTET-I, 2011)**
(A) कक्षा में आवधिक परीक्षाओं पर अपेक्षित ध्यान दिया जाए।
(B) वास्तविक दुनिया से उदाहरणों को कक्षा में लाया जाए जिसमें विद्यार्थी एक दूसरे से अंत:क्रिया करें और शिक्षक उस प्रक्रिया को सुगम बनाए।
(C) कक्षा में अधिक से अधिक शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जाए
(D) शिक्षक विभिन्न प्रकार के व्याख्यान और स्पष्टीकरण का प्रयोग करें (B)

❖ निम्न में से कौनसे कथन को सीखने की प्रक्रिया को विशेषता नहीं मानना चाहिए ? **(CTET-I, 2011)**
(A) अन-अधिगम भी सीखने की प्रक्रिया है।
(B) शैक्षिक संस्थान ही एकमात्र स्थान है जहाँ अधिगम प्राप्त होता है।
(C) सीखना एक व्यापक प्रक्रिया है।
(D) सीखना लक्ष्योन्मुखी होता है। (B)

❖ जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर सीखता है, न कि प्रत्यक्ष अनुभव को, को कहा जाता है ? **(RTET-II, 2011)**
(A) सामाजिक अधिगम (B) अनुबंधन
(C) प्रायोगिक अधिगम (D) आकस्मिक अधिगम (A)

Scanned with CamScanner

❖ कौनसा सीखना स्थायी होता है ? **(छत्तीसगढ़ TET-II, 2011)**
(A) रटकर (B) सुनकर
(C) समझकर (D) देखकर (C)

❖ वाइगॉत्सकी बच्चों के सीखने में निम्नलिखित में से किस कारक की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर बल देते हैं ? **(CTET-I, 2012)**
(A) आनुवंशिक (B) नैतिक
(C) शारीरिक (D) सामाजिक (D)

❖ निम्नलिखित में से कौनसा शिक्षक से संबंधित अधिगम को प्रभावित करने वाला कारक है ? **(CTET-I, 2012)**
(A) बैठने की उचित व्यवस्था
(B) शिक्षण-अधिगम संसाधनों की उपलब्धता
(C) विषय-वस्तु या अधिगम अनुभवों की प्रकृति
(D) विषय-वस्तु में प्रवीणता (D)

❖ निम्नलिखित में से कौनसा सीखने का क्षेत्र है- **(CTET-I, 2012)**
(A) आनुभाविक (B) भावात्मक
(C) आध्यात्मिक (D) व्यावसायिक (A)

❖ जब बालक कार्य करते हुये ऊबने लगता है, तो यह इस बात का संकेत है कि- **(CTET-I, 2012)**
(A) संभवतः कार्य यांत्रिक रूप से बार-बार हो रहा है।
(B) बालक बुद्धिमान नहीं है।
(C) बालक में सीखने की योग्यता नहीं है।
(D) बालक को अनुशासित करने की जरूरत है। (A)

❖ सहयोगी अधिगम में अधिक उम्र के प्रवीण विद्यार्थी, छोटे और कम निपुण विद्यार्थियों की मदद करते हैं, इससे- **(CTET-II, 2012)**
(A) गहन प्रतियोगिता होती है।
(B) उच्च नैतिक विकास होता है।
(C) समूहों में द्वंद्व होता है।
(D) उच्च उपलब्धि और आत्मसम्मान विकसित होता है (B)

❖ यदि आपकी कक्षा का बच्चा 'C' को 'D', 'D' को 'C' लिखे/पढ़े तो वह कौनसे रोग से पीड़ित है? **(छत्तीसगढ़ TET-I, 2011)**
(A) मलेरिया (B) डिसलेक्सिया
(C) फादलेरिया (D) टाइफाइड (B)

❖ सीखने से संबंधित तथ्य निम्नलिखित में से नहीं है ? **(बिहार TET-I, 2012)**
(A) सीखना व्यवहार में परिवर्तन
(B) सीखना केवल विद्यालय में होता है।
(C) सीखना व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक है।
(D) सीखना एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। (B)

❖ सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है। यह कथन है? **(III ग्रेड शिक्षक भर्ती, 2012, छत्तीसगढ़ TET-II, 2011)**
(A) क्रो व क्रो (B) पियाजे
(C) स्किनर (D) कोहलर (C)

❖ सामाजिक अधिगम आरंभ होता है ? **(छत्तीसगढ़ TET-I, 2011)**
(A) अलगाव से (B) भीड़ से
(C) सम्पर्क से (D) दृश्य-श्रव्य सामग्री से (C)

❖ निम्नलिखित में से कौनसा विशिष्ट अधिगम विकलांगता का उदाहरण है ? **(छत्तीसगढ़ TET-II, 2011)**
(A) मानसिक मंदता
(B) डिसलेक्सिया
(C) एटेंशन डेफिस्टि हाइपर डिस आर्डर
(D) ऑटिज्म (B)

❖ व्यवहारवादी विचारक है ? **(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) वाटसन (B) कॉहलर
(C) पियाजे (D) ब्रूनर (A)

❖ बच्चों में संज्ञानात्मक विकास को सबसे अच्छे तरीके से कहाँ परिभाषित किया जा सकता है- **(UTET-I, 2011)**
(A) खेल के मैदान में
(B) विद्यालय एवं कक्षा में
(C) आडिटोरियम में (दर्शक दीर्घा)
(D) गृह में (B)

❖ सीखने का वह सिद्धांत जो पूर्ण रूप से और केवल अवलोकनीय व्यवहार पर आधारित है, सीखने के ......... सिद्धांत से सम्बद्ध है ? **(CTET-I, 2011)**
(A) संज्ञानवादी (B) विकासवादी
(C) व्यवहारवादी (D) रचनावादी (C)

❖ वाटसन के अनुसार शैशवावस्था में सीखने की सीमा व तीव्र विकास और किसी भी अवस्था की तुलना में अधिक होती है, इस कथन को ध्यान में रखकर शैशवावस्था में शिक्षा के आयोजन हेतु निम्न में कौनसी क्रिया निषेध होनी चाहिए? **(अंग्रेजी-II ग्रेड, 2010)**
(A) आत्मनिर्भरता का विकास
(B) जिज्ञासा संतुष्टि
(C) मूल प्रवृत्तियों का दमन
(D) क्रिया द्वारा सीखना (C)

❖ एक क्रिकेट खिलाड़ी अपनी गेंदबाजी के कौशल को विकसित कर लेता है पर यह उसके बल्लेबाजी के कौशल को प्रभावित नहीं करता, इसे कहते हैं- **(RTET-II, 2011)**
(A) विधेयात्मक प्रशिक्षण अंतरण
(B) निषेधात्मक प्रशिक्षण अंतरण
(C) शून्य प्रशिक्षण अंतरण
(D) इनमें से कोई नहीं (C)

❖ सीखने की प्रथम अवस्था में सीखने की गति होती है- **(BTET-I, 2011)**
(A) तेज (B) धीमी
(C) सामान्य (D) कोई नहीं (A)

❖ साइकिल चलाने वाला स्कूटर चलाना शीघ्र ही सीख लेता है, यह है- **(RPSC, Maths-II Grade, 2010)**
(A) शून्य स्थानांतरण (B) लम्बवत् स्थानांतरण
(C) ऋणात्मक स्थानांतरण (D) धनात्मक स्थानांतरण (D)

❖ क्रिस्टीना अपनी कक्षा को क्षेत्र भ्रमण पर ले जाना चाहती है और वापस आने पर अपने विद्यार्थियों के साथ भ्रमण पर चर्चा करती है, यह ...... की ओर संकेत करता है- **(CTET-I, 2011)**
(A) सीखने का आंकलन
(B) सीखने के लिए आंकलन

Scanned with CamScanner

(C) आंकलन के लिए सीखना
(D) आंकलन का सीखना (A)

❖ कम गति से सीखने वाले बच्चों के लिए अध्यापक को क्या करना चाहिए ? **(BTET-I, 2011)**
(A) टोली-शिक्षण (B) अतिरिक्त ध्यान
(C) प्रोत्साहन (D) इनमें से सभी (D)

❖ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रारंभ करने से पहले एक कुशल अध्यापक को क्या करना चाहिए ? **(BTET-I, 2011)**
(A) छात्रों को दंडित करना चाहिए।
(B) चुटकुले सुनाने चाहिए।
(C) अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए।
(D) आराम करना चाहिए। (C)

❖ अधिगम में वृद्धि की जा सकती है- **(RPSC, 2007)**
(A) प्रोत्साहन देकर (B) विटामिन देकर
(C) विदेशों में भेजकर (D) कोई नहीं (A)

❖ अधिगम सर्वोत्तम होगा जब ?
**(गणित II ग्रेड-2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) बुद्धि होगी (B) अनुशासन होगा
(C) अभिप्रेरणा होगी (D) प्रवृत्ति होगी (C)

❖ निम्न में से कौनसा कथन अधिगम की प्रक्रिया को उचित ढंग से प्रस्तुत करता है ? **(विज्ञान II ग्रेड-2010)**
(A) व्यवहार में परिवर्तन
(B) सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन
(C) कक्षा-कक्ष में अधिगम
(D) संवेदनाओं में परिवर्तन (A)

❖ एक शिक्षक होने के नाते आप सीखने के किस नियम को नहीं अपनायेंगे ? **(RPSC- II ग्रेड, 2011)**
(A) आंशिक क्रिया का नियम
(B) तत्परता का नियम
(C) अभ्यास का नियम
(D) प्रलोभन का नियम (D)

❖ ''स्थानान्तरण एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान प्रशिक्षण और आदतों का किसी दूसरी परिस्थिति में स्थानान्तरण किये जाने की चर्चा करता है,'' प्रशिक्षण के स्थानान्तरण के बारे में कथन संबंधित है- **(PTI-III, 2012)**
(A) क्रो व क्रो (B) पीटरसन
(C) सौरेंसन (D) चार्ल्स जूड (C)

❖ डिस्लेक्सिया किससे संबंधित है ? **(CTET-II, 2011)**
(A) पठन विकार (B) व्यवहार संबंधी विकार
(C) मानसिक विकार (D) गणितीय विकार (A)

❖ एलेक्सिया है ? **(BTET-II, 2011)**
(A) पढ़ने की अक्षमता (B) लिखने की अक्षमता
(C) सीखने की अक्षमता (D) सुनने की अक्षमता (C)

❖ एक कॉलेज जाने वाली लड़की ने फर्श पर कोट फेंकने की आदत डाल ली, लड़की की माँ ने उससे कहा कि कमरे से बाहर जाओ और कोट को खूँटी पर टांगों। लड़की अगली बार घर में प्रवेश करती है, कोट को हाथ पर रखकर अलमारी की तरफ जा कर कोट को खूँटी पर टांग देती है, यह उदाहरण है- **(RTET-II, 2011)**
(A)शृंखलागत अधिगम
(B) उद्दीपक-अनुक्रिया अधिगम का
(C) प्रत्यय अधिगम का
(D) इनमें से सभी (A)

❖ निम्न में से कौन-सा उदाहरण अधिगम को प्रदर्शित करता है ? **(RTET-I, 2012)**
(A) हाथ जोड़ कर अध्यापक का अभिवादन करना
(B) स्वादिष्ट भोजन देखकर मुँह में लार का आना
(C) चढ़ना, भागना एवं फेंकना तीन से पाँच वर्ष की अवस्था में
(D) इनमें से सभी (A)

❖ अधिगम निर्योग्यताओं वाले बालकों में प्रकरण संबंधी निम्न में से किस प्रकार की कमी पायी जाती है ? **(RTET-II, 2012)**
(A) संख्याओं संबंधी सूचनाओं को याद करने में समय एवं दिशा की कम समझ
(B) प्राय: अत्यधिक सक्रिय व्यवहार
(C) मांसपेशियों पर कम नियंत्रण
(D) कम मानसिक सक्रियता (A)

❖ ''अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन होना ही अधिगम है।'' अधिगम की यह परिभाषा किसने दी है ? **(PTI-III, 2012)**
(A) बर्नहार्स्ट (B) ई. ए. पील
(C) गेट्स व अन्य (D) स्किनर (C)

❖ निम्न में से कौनसा कारक अधिगम के हस्तान्तरण में मदद नहीं करता है ? **(PTI-III, 2012)**
(A) इच्छा शक्ति (B) उचित वातावरण
(C) परिपक्वता (D) थकान (D)

❖ अधिगमकर्ता में बढ़ते हुए क्रोध को रोकने के लिए अध्यापक को करना चाहिए- **(PTI-III, 2012)**
(A) उसके सभी हितों की सुरक्षा करे, भले ही वे अनुचित हों
(B) बालक के दिन-प्रतिदिन के मामलों में कोई हस्तक्षेप न करे
(C) उसको अधिक काम दे ताकि उसको क्रोध करने का समय नहीं मिले
(D) यह सुनिश्चित करे की कक्षा-कक्ष में उसको अति पक्षपातपूर्ण व्यवहार मिले (C)

❖ अधिगम को प्रभावित करने वाला व्यक्तिगत कारक है- **(RTET-I, 2011)**
(A) संचार के साधन (B) समवयस्क समूह
(C) अध्यापक (D) परिपक्वता एवं आयु (D)

❖ यदि गणित का ज्ञान भौतिकी के अधिगम में सहायक हो तो वह है- **(हिन्दी-II ग्रेड-2010)**
(A) शून्य स्थानांतरण (B) लम्बवत् स्थानांतरण
(C) सकारात्मक स्थानांतरण (D) नकारात्मक स्थानांतरण (C)

❖ उद्दीपक अनुक्रिया के मध्य साहचर्य स्थापित करने वाले प्रक्रम को कहते है ? **(संस्कृत-II ग्रेड-2010)**
(A) प्रेरणा (B) संवेग
(C) अधिगम (D) संप्रत्यय (C)

❖ व्यवहार का करना-पक्ष ....... में आता है-**(CTET-II, 2012)**
(A) सीखने के गतिक क्षेत्र
(B) सीखने के मनोवैज्ञानिक क्षेत्र
(C) सीखने के संज्ञानात्मक क्षेत्र

Scanned with CamScanner

(D) सीखने के भावात्मक क्षेत्र (A)

❖ बार-बार दोहराने से अधिगम को बढ़ावा मिलता है, किस नियम से इसकी पुष्टि होती है ?
**(बिहार TET-I लेवल-2012, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) अभ्यास का नियम (B) प्रयास का नियम
(C) दोहराने का नियम (D) अनुकरण का नियम (A)

❖ ''तत्परता का नियम'' किसने दिया है ?
**(BTET-I लेवल-2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) पावलॉब (B) एबिंगहास
(C) थार्नडाइक (D) स्किनर (C)

❖ मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने व्यक्ति को किस आधार पर बाँटा है ? **(BTET-II लेवल-2011)**
(A) चिन्तन व कल्पना शक्ति के आधार पर
(B) प्रभुतापूर्ण व अधीनस्थापूर्णता के आधार पर
(C) स्वतंत्रता व निर्भरता के आधार पर
(D) इनमें से कोई नहीं (A)

❖ ''प्रयास व त्रुटि'' में सबसे महत्त्वपूर्ण क्या है ?
**(BTET-II लेवल-2011)**
(A) अभ्यास (B) प्रेरणा
(C) लक्ष्य (D) वाद-विवाद (A)

❖ एक बच्चा अतीत की समान परिस्थिति में की गई अनुक्रियाओं के आधार पर नई स्थिति में भी समान अनुक्रिया करता है, यह किस नियम से संबंधित है ? **(CTET-I लेवल-2011)**
(A) सीखने की प्रक्रिया का ''अभिवृत्ति नियम''
(B) सीखने का ''तत्परता-नियम''
(C) सीखने का सादृश्यता-नियम
(D) सीखने का प्रभाव-नियम (C)

❖ अधिगम के निम्न सिद्धांतों में से किसमें प्रतिक्रिया होने पर पुनर्बलन देने का सुझाव दिया गया है ?
**(अंग्रेजी II ग्रेड-2011)**
(A) संबद्ध प्रतिक्रिया सिद्धांत (B) सूझ का सिद्धांत
(C) चालक-न्यूनता सिद्धांत (D) क्रिया-प्रसूत सिद्धांत (D)

❖ क्रिया-प्रसूत अनुबंधन के सिद्धांत का शिक्षकों के लिए निम्नलिखित में से निहितार्थ है- **(अंग्रेजी II ग्रेड-2011)**
(A) विद्यार्थी को पर्याप्त अभ्यास करवाना चाहिए।
(B) उचित व्यवहार का पुनर्बलन किया जाये।
(C) प्रवृत्ति को रोचक बनाये।
(D) विद्यार्थियों को बार-बार प्रयत्न करने हैं। (B)

❖ अभिक्रमित अधिगम प्रक्रिया में वैयक्तिक विभिन्नताओं का ध्यान रखा जाता है, इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि-
**(विज्ञान-II ग्रेड-2010, संस्कृत शिक्षा)**
(A) विद्यार्थी अपनी गति से सीखते हैं।
(B) सामग्री बहुत रोचक होती है।
(C) सामग्री को आसान ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।
(D) सामग्री बहुत आकर्षक होती है। (A)

❖ अधिगम अन्तर्निष्ठ विधि शीर्षक दिया गया है-
**(प्रधानाध्यापक परीक्षा-2012)**
(A) डेलार्श कमीशन
(B) कोठारी कमीशन
(C) डकार कमीशन
(D) विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (A)

❖ अधिगम से संबंधित मनोविज्ञान की विचारधाराओं एवं उनके प्रतिपादकों के जोड़े यहाँ दिए गए हैं। इंगित कीजिए कि कौनसा जोड़ा सही मिलान का नहीं है ? **(पी.टी.आई.-II ग्रेड-2012)**
(A) व्यवहारवाद-वाटसन एवं गुथरी
(B) फेकल्टी मनोविज्ञान-बुल्फ एवं रीड
(C) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान-थार्नडाइक
(D) पुनर्बलन-हल एवं स्कीनर (C)

❖ नीचे अधिगम के सिद्धांतों और उनके प्रतिपादकों के जोड़े दिये गये हैं। इंगित कीजिए कि किस जोड़े का मिलान सही नहीं है?
**(पी.टी.आई.-II ग्रेड-2012)**
(A) अनुकूलन अनुक्रिया-बुल्फ एवं रीड
(B) अन्त:दृष्टि का सिद्धांत-वर्दीमर एवं कोहलर
(C) उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धांत-थार्नडाइक एवं अन्य
(D) पुनर्बलन सिद्धांत-हल एवं स्किनर (A)

❖ थार्नडाइक के ''प्रभाव का नियम'' का शैक्षणिक महत्त्व नहीं है? **(PTI-III ग्रेड-2012)**
(A) रुचियों में वृद्धि
(B) संवेगों पर नियंत्रण
(C) अपराधी बालकों का उपचार
(D) स्मरण शक्ति में कमी (D)

❖ ''सीखने के नियमों'' के प्रतिपादक हैं-
**(छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2012)**
(A) फ्रायड (B) स्किनर
(C) थार्नडाइक (D) एडलर (C)

❖ हल का सिद्धांत किस प्रक्रिया से संबंधित है ?
**(सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2010)**
(A) सीखने की व्याख्या से
(B) सीखने की व्याख्या के सबलीकरण से
(C) ध्येय क्रमारोह से
(D) सीखने की पुन: व्याख्या से (B)

❖ सुल्तान नामक चिम्पांजी पर परीक्षण करने वाले मनोवैज्ञानिक हैं- **(सामान्य ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) स्किनर (B) कोहलर
(C) वुडवर्थ (D) वाटसन (B)

❖ समग्रता के सिद्धांत (Gestalt Theory) के प्रवर्तक हैं-
**(सामान्य ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) आर.एस. गैने (B) क्रो व क्रो
(C) बी.एस. ब्लूम (D) बी.एफ. स्कीनर (B)

❖ कोहलर ने अधिगम संबंधी प्रयोग किए-
**(गणित II ग्रेड-2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) चिम्पांजी पर (B) कुत्ते पर
(C) बिल्ली पर (D) कबूतर पर (A)

❖ गेस्टाल्ट का अर्थ है ?
**(हिन्दी II ग्रेड-2010, III-ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) पूर्णाकार (B) संज्ञान
(C) निराकार (D) अनुबंधन (A)

Scanned with CamScanner

❖ कौनसा सिद्धांत व्यक्त करता है कि मानव मस्तिष्क एक बर्फ की बड़ी चट्टान के समान है जो कि अधिकांशत: छिपी रहती है एवं उसमें चेतन के तीन स्तर है ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) गुण सिद्धांत
(B) प्रकार सिद्धांत
(C) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत
(D) व्यवहारवादी सिद्धांत (C)

❖ जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती है, उनका भण्डार गृह निम्नलिखित में से कौनसा है ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) इदम् (Id) (B) अहम् (Ego)
(C) परम अहम् (Super Ego) (D) इदम् अहम् (A)

❖ मनोविश्लेषणवादी सिद्धांत के प्रवर्तक हैं- **(BTET-I लेवल-2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) कैटेल (B) आलपोर्ट
(C) फायड (D) साइमन बिने (C)

❖ पियाजे के अनुसार मूर्त संक्रियात्मक अवस्था का समय काल है? **(BTET-I लेवल-2012, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) 2-7 वर्ष (B) 7-11 वर्ष
(C) 11-5 वर्ष (D) 15-18 वर्ष (B)

❖ पियाजे के अनुसार बच्चा अमूर्त स्तर पर चिंतन बौद्धिक क्रियाएँ और समस्या समाधान किस अवस्था में करने लगता है ? **(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)**
(A) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष)
(B) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष)
(C) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11-16 वर्ष)
(D) संवेदी पेशीय अवस्था (0-2 वर्ष) (C)

❖ पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक बाल विकास की कितनी अवस्थाएँ हैं ? **(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)**
(A) 3 अवस्थाएँ (B) 4 अवस्थाएँ
(C) 5 अवस्थाएँ (D) 6 अवस्थाएँ (B)

❖ वह अवस्था जब बच्चा तार्किक रूप से वस्तुओं व घटनाओं के विषयों में चिंतन प्रारंभ करता है- **(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, CTET-I लेवल-2011)**
(A) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
(B) मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था
(C) संवेदी प्रेरक अवस्था
(D) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (B)

❖ बच्चों के बौद्धिक विकास के चार सुस्पष्ट स्तरों को पहचाना गया था ? **(CTET-I लेवल-2011)**
(A) कोहलबर्ग द्वारा
(B) एरिक्सन द्वारा
(C) स्किनर द्वारा
(D) पियाजे द्वारा (D)

❖ पियाजे के अनुसार निम्नलिखित में से कौनसी अवस्था में बच्चा अमूर्त संकल्पनाओं के विषय में तार्किक चिंतन करना प्रारंभ करता है ? **(CTET-I लेवल-2011)**
(A) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था
(B) मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था
(C) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था
(D) संवेदी प्रेरक अवस्था (C)

❖ पियाजे का सिद्धांत किसके अवलोकन पर आधारित है? **(CTET-I लेवल-2012)**
(A) कुत्ता (B) बिल्ली
(C) अपने बालक (D) चिम्पांजी (C)

❖ पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के चरणों के अनुसार इंद्रिय गामक (संवेदी प्रेरक) अवस्था किसके साथ संबंधित है ? **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) अनुकरण, स्मृति और मानसिक निरूपण
(B) तार्किक रूप से समस्या समाधान की योग्यता
(C) विकल्पों के निर्वचन और विश्लेषण करने की योग्यता
(D) सामाजिक मुद्दों से सरोकार (A)

❖ चिंतन अनिवार्य रूप से है एक- **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) संज्ञानात्मक गतिविधि
(B) मनोगतिक प्रक्रिया
(C) मनोवैज्ञानिक परिघटना
(D) भावात्मक व्यवहार (A)

❖ पावलॉव के प्रयोग में भोजन को अनुबंधन की भाषा में क्या कहा है ? **(उर्दू II ग्रेड-2010)**
(A) अनुबंधित उद्दीपक (B) अनुबंधित अनुक्रिया
(C) अनानुबंधित उद्दीपक (D) अनानुबंधित अनुक्रिया (C)

❖ अनुबंधन स्थापित होने के बाद यदि बार-बार मात्र अनुबंधित उद्दीपक ही उपस्थित किए जाने पर अन्ततोगत्वा अनुबंधित अनुक्रिया का बन्द हो जाना, कहलाता है ? **(उर्दू II ग्रेड-2010)**
(A) बाह्य अवरोध (B) विलम्ब अवरोध
(C) अनुबंधित अवरोध (D) विलोप (D)

❖ पावलॉव के अनुबंधन प्रयोग में केवल ध्वनि के उपस्थित करने पर होने वाली अनुक्रिया को कहते हैं- **(गणित II ग्रेड-2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) अनानुबंधित अनुक्रिया (B) अनुबंधित अनुक्रिया
(C) अव्यक्त अनुक्रिया (D) अदृश्य अनुक्रिया (B)

❖ अधिगम का संबंध प्रतिक्रिया सिद्धांत निम्न में से किसने प्रतिपादित किया ? **(विज्ञान II ग्रेड-2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) स्किनर (B) सी.एल. हल
(C) थार्नडाइक (D) पावलॉव (D)

❖ आप अपने जूते एक रैक पर रखते हो। उस रैक को उस स्थान से हटा दिया है फिर भी आप जूते रखने उसी स्थान पर जाते हो जहाँ पर पहले रैक रखी थी। ऐसा होने का कारण है- **(विज्ञान II ग्रेड-2010)**
(A) पुनर्बलन (B) अन्तर्दृष्टि
(C) भूल (D) अनुबंधन (D)

❖ अनुबंधन के गोचर की शुरुआत .......के द्वारा की गई थी- **(संस्कृत III ग्रेड-2009)**
(A) कोहलर (B) लेविन
(C) थार्नडाइक (D) पावलॉव (D)

Scanned with CamScanner

❖ पाँच वर्ष का राजू अपनी खिड़की के बाहर तूफान को देखता है, बिजली चमकती है और कड़कने की आवाज आती है, राजू शोर सुनकर उछलता है, बार-बार यह घटना होती है, फिर कुछ देर शांति के पश्चात् बिजली कड़कती है, राजू बिजली की गर्जना सुनकर उछलता है, राजू का उछलना सीखने के किस सिद्धांत का उदाहरण है ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) शास्त्रीय अनुबंधन (B) क्रिया प्रसूत
(C) प्रयास एवं भूल (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं (A)

❖ राजू खरगोश से डरता था। शुरू में खरगोश को राजू से काफी दूर रखा गया। आने वाले दिनों में हर रोज खरगोश और राजू के बीच की दूरी कम कर दी गई। अंत में राजू की गोद में खरगोश को रखा गया और राजू खरगोश से खेलने लगा। यह प्रयोग उदाहरण है- **(RTET-I लेवल-2012)**
(A) प्रयत्न एवं त्रुटि सिद्धांत का
(B) शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत का
(C) क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत का
(D) इनमें से सभी (B)

❖ अधिगम के शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत से संबंधित है- **(बिहार TET-I&2012)**
(A) थार्नडाइक (B) स्किनर
(C) कोहलर (D) पावलॉव (D)

❖ सीखने का "क्लासिकल कंडीशनिंग" सिद्धांत प्रतिपादित किया था- **(छत्तीसगढ़ TET -II, 2011,III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) स्किनर (B) पावलॉव
(C) थार्नडाइक (D) कोहलबर्ग (B)

❖ निम्नलिखित में से शास्त्रीय अनुबंधन का उदाहरण है? **(आन्ध्रप्रदेश TET-II-2011)**
(A) कुत्ता विद्युत शाक की मजबूरी को सीख लेता है
(B) चूहा भोजन प्राप्ति हेतु लीवर को दबाना सीख लेता है
(C) कुत्ता घंटी बजने पर लार टपकाना सीख लेता है
(D) कबूतर भोजन प्राप्ति हेतु कुंजी में से झाँकना सीख लेता है (C)

❖ कक्षा प्रथम का विद्यार्थी एक शिक्षक से मार खाने के उपरान्त सभी शिक्षकों से डरने लगता है, यह उदाहरण है- **(आन्ध्रप्रदेश TET-II लेवल-2011)**
(A) सामाजिक अधिगम सिद्धांत का
(B) अनुबंधित सिद्धांत का
(C) गेस्टाल्ट सिद्धांत का
(D) संज्ञानात्मक विकास का (B)

❖ पावलॉव ने अधिगम का कौनसा सिद्धांत प्रतिपादित किया ? **(बिहार TET-II लेवल-2012)**
(A) बहुक्रिया (B) आंशिक क्रिया
(C) अनुकूलित अनुक्रिया (D) पाठ्य क्रिया (C)

❖ बुरी आदतों को सुधारा जा सकता है- **(बिहार TET-II लेवल-2012)**
(A) डाँट-डपट कर (B) दोषारोपण द्वारा
(C) अनुबंधन द्वारा (D) इनमें से सभी (C)

❖ पियाजे के अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना को संशोधित किया जाता है ......... कहलाती है ? **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) प्रत्यक्षण (B) समायोजन
(C) समावेश (D) स्कीमा (B)

❖ गेस्टाल्टवाद के प्रतिपादक हैं- **(संस्कृत-II ग्रेड-2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) स्किनर (B) वर्दीमर
(C) पावलॉव (D) फायड (B)

❖ बालक की सोच अमूर्तता (Abstractions) की अपेक्षा मूर्त (Concrete) अनुभवों एवं प्रत्ययों से होता है, यह अवस्था है ? **(RTET-II लेवल-2011)**
(A) 7 से 12 वर्ष (B) 12 से वयस्क तक
(C) 2 से 7 वर्ष (D) जन्म से 2 वर्ष तक (A)

❖ निम्नलिखित में से कौन पियाजे के अनुसार बुद्धि का निर्धारक तत्त्व नहीं है ? **(RTET-II लेवल-2011)**
(A) सामाजिक संचरण (B) अनुभव
(C) संतुलीकरण (D) कोई नहीं (A)

❖ वैचारिक क्रिया अवस्था होती है ? **(RPSC–2004)**
(A) जन्म से 2 वर्ष तक (B) 2 से 7 वर्ष तक
(C) 7 से 12 वर्ष तक (D) 12 से 15 वर्ष तक (C)

❖ पियाजे के अनुसार विकास की पहली अवस्था (जन्म से 2 वर्ष की आयु) के दौरान बच्चा ........ सबसे बेहतर सीखता है- **(CTET-II लेवल-2011)**
(A) इंद्रियों द्वारा
(B) शब्दों के द्वारा
(C) अमूर्त तरीके से चिंतन द्वारा
(D) भाषा के नए अर्जित ज्ञान के अनुप्रयोग से (A)

❖ बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ का सृजन करते हैं, इसका श्रेय ..... को जाता है- **(CTET-I लेवल-2011)**
(A) स्किनर (B) पियाजे
(C) पावलॉव (D) कोहलबर्ग (B)

❖ पावलॉव के शास्त्रीय अनुबंधन में ? **(संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) पहले भोजन, इसके बाद ध्वनि उत्पन्न की गयी।
(B) पहले ध्वनि, तत्पश्चात् भोजन प्रस्तुत किया गया।
(C) भोजन व ध्वनि साथ-साथ प्रस्तुत किए गए।
(D) सिर्फ भोजन प्रस्तुत किया गया। (B)

❖ पावलॉव के अनुबंधन प्रयोग में भोजन के पूर्व उपस्थित ध्वनि को क्या कहते हैं ? **(हिन्दी II ग्रेड-2010)**
(A) अनुबंधित उद्दीपक (B) अनानुबंधित उद्दीपक
(C) विलम्बित उद्दीपक (D) ध्वन्यात्मक उद्दीपक (A)

❖ कौनसी जैविक आवश्यकता कम जरूरी है ? **(संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) यौन (B) भूख
(C) प्यास (D) कोई नहीं (A)

❖ एक बालक अधिक सीखता है, यदि उसे- ***[School Lect. Exam-2016]***
(A) व्याख्यान विधि से पढ़ाया जाए
(B) पाठ्य पुस्तक को पढ़ाया जाए

Scanned with CamScanner

(C) कम्प्यूटर से पढ़ाया जाए
(D) क्रिया विधि से पढ़ाया जाए (D)

❖ अधिगम के लिए क्या आवश्यक है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) स्वानुभव (B) स्व-चिन्तन
(C) स्व-क्रिया (D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ निर्मितिवादी अधिगम के पक्षधर हैं- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) स्किनर (B) लिव वाइगोत्सकी
(C) कोहलर (D) मैसलो (B)

❖ अर्थपूर्ण शाब्दिक अधिगम किसके द्वारा समझाया गया था- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) राबर्ट गैग्ने (B) जीन पियाजे
(C) जेरॉम ब्रूनर (D) डेविड आसुबेल (D)

❖ निम्न में से कौन सा युग्म सही है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) अधिगम के प्रकार - कोहलर
(B) अनुभवजन्य अधिगम - कार्ल रोजर्स
(C) सामाजिक अधिगम - गैग्ने
(D) अन्तर्दृष्टिपूर्ण अधिगम - बण्डूरा (B)

❖ निम्नलिखित में से कौन सा आसुबेल द्वारा दिया गया अधिगम का प्रकार नहीं है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) विभेदीकरण सीखना (B) अभिग्रहण सीखना
(C) रटकर सीखना (D) अन्वेषण सीखना (A)

❖ निम्नलिखित में से कौन सी अधिगम की विशेषता नहीं है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) अधिगम व्यवहार में परिवर्तन है।
(B) व्यवहार में परिवर्तन अभ्यास या अनुभूति के फलस्वरूप होता है।
(C) व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।
(D) व्यवहार में क्षणिक अस्थायी परिवर्तन जो प्रेरणात्मक अवस्था के फलस्वरूप होते हैं। (D)

❖ जीन पियाजे ने बालक एवं उसके वातावरण के मध्य चलने वाली परस्पर क्रिया द्वारा निर्मित समतुल्यन को कहा है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) अनुकूलन (B) स्कीमा
(C) संरक्षण (D) अंत:प्रज्ञा (A)

❖ अधिगम का कौन सा सिद्धान्त व्यवहारवाद और समग्रवाद का अनोखा मिश्रण है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) उद्दीपन-परिवर्तन सिद्धान्त (B) व्यवस्थित व्यवहार सिद्धान्त
(C) चिह्न पूर्णाकार सिद्धान्त (D) अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त (C)

❖ कौन सी अन्तर्दृष्टि की विशेषता नहीं है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) आकस्मिकता (B) नवीन परिस्थिति में अनुक्रिया
(C) अनुक्रिया का सहजता से होना (D) भविष्योन्मुखी सोच (D)

❖ कौन सी मूर्त संक्रियात्मक अवस्था की विशेषता नहीं है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) विचारों की विलोमीयता
(B) संरक्षण
(C) क्रमबद्धता व पूर्ण-अंश प्रत्ययों का उपयोग
(D) आंतप्रज्ञ चिन्तन अवस्था (D)

❖ पुनर्बलन का सिद्धान्त सम्बन्धित है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) पावलॉव से (B) स्किनर से
(C) कोहलबर्ग से (D) थॉर्नडाइक से (B)

❖ अन्तर्दृष्टि अधिगम परिणाम है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) उद्दीपन अनुक्रिया (B) गेस्टाल्ट प्रत्यक्षीकरण
(C) उद्दीपन सामान्यीकरण (D) पुनर्बलन (B)

❖ अधिगम एक प्रक्रिया है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) तथ्यों के संग्रह की (B) अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण की
(C) परीक्षा की तैयारी की (D) याद करना (B)

❖ पृच्छा अधिगम किसके विकास में सहायक है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) कल्पना (B) सृजनात्मकता
(C) संज्ञानात्मक कौशल (D) स्मृति (C)

❖ सहयोगात्मक अधिगम आयोजित किया जाता है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) कक्षा-कक्ष परिस्थितियों में
(B) कक्षा-कक्ष से बाहर की परिस्थितियों में
(C) (1) एवं (2) दोनों में
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं (C)

❖ निर्मितिवादी सिद्धान्त आधारित शिक्षण का आधार है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) करके सीखना
(B) अध्यापक को सुनना
(C) अध्यापक कथित विषयवस्तु को दोहराना
(D) अध्यापक तथा शिक्षार्थी के सम्बन्ध (A)

❖ सामाजिक अधिगम आरम्भ होता है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) अलगाव से (B) भीड़ से
(C) सम्पर्क से (D) श्रव्य-दृश्य सामग्री से (C)

❖ अल्बर्ट बण्डूरा द्वारा प्रतिपादित अधिगम का प्रकार कहलाता है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) सक्रिय अधिगम (B) प्रेक्षणात्मक अधिगम
(C) अन्त:दृष्टि अधिगम (D) अनुभवजन्य अधिगम (B)

❖ निम्न में से कौन सा सहयोगी अधिगम का तत्व नहीं है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) विषमांग समूह
(B) समान अवसर
(C) सामाजिक अन्त:क्रिया का अभाव
(D) सकारात्मक परस्पर आश्रितता (C)

❖ 'प्रयत्न व भूल' सिद्धान्त को दर्शाने के लिए थॉर्नडाइक ने किस पर प्रयोग किया था ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) बन्दरों पर (B) बिल्ली पर
(C) चूहों पर (D) मनुष्यों पर (B)

❖ निर्मितवादी शिक्षण सिद्धान्त मॉडल के अनुसार सही क्रम है : *[School Lect. Exam-2016]*
(A) अन्वेषण करना, व्याख्या करना, विस्तार करना, मूल्यांकन करना
(B) व्याख्या करना, अन्वेषण करना, विस्तार करना, मूल्यांकन करना
(C) व्याख्या करना, अन्वेषण करना, मूल्यांकन करना, विस्तार करना
(D) विस्तार करना, अन्वेषण करना, व्याख्या करना, मूल्यांकन करना
(A)

Scanned with CamScanner

❖ निम्नलिखित में से कौन सा लेविन के अधिगम सम्बन्धी क्षेत्र सिद्धान्त की एक मुख्य अवधारणा नहीं है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) विभेदीकरण (B) जीवन दायरा
(C) वेक्टर्स और कर्षण (D) तलरूप **(A)**

❖ सीखना केवल ज्ञान या कौशल प्राप्ति ही नहीं है वरन् यह कहीं अधिक *[School Lect. Exam-2016]*
(A) व्यवहारगत परिवर्तन है।
(B) व्यवहारिक जीवन में क्रियान्विति है।
(C) विद्यार्थियों के लिए मार्गनिर्देशिका है।
(D) दृष्टिकोण में परिवर्तन है। **(A)**

❖ सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) पावलोव (B) थॉर्नडाइक
(C) स्किनर (D) कोहलर **(A)**

❖ प्रभावशाली अधिगम के आयाम हैं- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) संकेत अधिगम (B) उत्तेजन अनुक्रिया अधिगम
(C) शृंखला अधिगम (D) उपर्युक्त सभी **(D)**

❖ "आदतें, ज्ञान और अभिवृत्तियों को अर्जित करने की प्रक्रिया ही सीखना है।" यह कथन जिसका है, वह है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) किंग्सले (B) गेट्स
(C) क्रो व क्रो (D) क्रोनबेक **(C)**

❖ अधिगम का सर्वाधिक उपयुक्त उद्देश्य है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) वैयक्तिक समायोजन
(B) व्यवहार का रूपान्तरण
(C) सामाजिक व राजनैतिक चेतना
(D) अपने को रोजगार के लिए तैयार करना **(B)**

❖ निम्न में से कौन सा सीखने की प्रक्रिया का परिणाम नहीं है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) अभिवृत्ति (B) संकल्पना
(C) ज्ञान (D) परिपक्वता **(D)**

❖ संकेत अधिगम के अन्तर्गत सीखा जाता है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) पारम्परिक अनुकूलन (B) मनोविज्ञान
(C) वातावरण (D) मनोदैहिक **(A)**

❖ सीखने का प्रकार जिसमें प्रक्रिया का विवेचन किया जाता है जिसके द्वारा शिक्षार्थी परिकल्पना या सामान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करता है तथा अनेक प्रकार की जाँच को क्रियान्वित करता है जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह सही है या नहीं, इसे कहते हैं : *[School Lect. Exam-2016]*
(A) निगमन अधिगम (B) आगमन अधिगम
(C) कल्पनात्मक अधिगम (D) संज्ञानात्मक अधिगम **(A)**

❖ यह कथन कि, एक उत्तेजक प्रतिमान, जो एक प्रतिक्रिया के समय क्रियाशील है, यदि वह दोबारा होगा तो उस प्रतिक्रिया को उत्पादित करने की प्रवृत्ति रखेगा : निम्न में से किस सीखने के सिद्धान्त को इंगित करता है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) हल का प्रबलन का सिद्धान्त
(B) गुथरी का प्रतिस्थापन का सिद्धान्त
(C) सीखने का क्षेत्रीय सिद्धान्त
(D) स्किनर का प्रबलन का सिद्धान्त **(B)**

❖ निर्मितिवादी सीखने के सिद्धान्तों के विषय में निम्नलिखित में कौन सत्य नहीं है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) शिक्षार्थी अपने स्वयं के ज्ञान एवं समझ का निर्माण करते हैं।
(B) नवीन जानकारी का निर्माण पूर्व ज्ञान से किया जाता है।
(C) सम्पूर्ण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है।
(D) सीखना एक सक्रिय एवं गतिशील प्रक्रिया है। **(C)**

❖ निम्नलिखित में से कौन सा प्रकार्य के अनुसार अधिगम का प्रकार नहीं है ? *[School Lect. Exam-2016]*
(A) कल्पनाशील अधिगम (B) संज्ञानात्मक अधिगम
(C) निपुणता द्वारा अधिगम (D) अभिवृत्यात्मक अधिगम **(A)**

❖ जे. पी. गिलफोर्ड के अनुसार, अधिगम है : *[School Lect. Exam-2013]*
(A) सोच में परिवर्तन (B) ज्ञान का सर्जन
(C) अनुभव प्राप्त करना (D) व्यवहार में परिवर्तन **(D)**

❖ किसी व्यक्ति का अधिगम होता है : *[School Lect. Exam-2013]*
(A) बचपन तक (B) किशोरावस्था तक
(C) प्रौढ़ावस्था तक (D) जीवन पर्यन्त **(D)**

❖ एक बालक पहाड़े सीख कर उसका उपयोग गुणा और भाग करने में करता है। अधिगम स्थानान्तरण के जिस प्रकार का यह उदाहरण है : *[School Lect. Exam-2013]*
(A) मानसिक से शारीरिक (B) शारीरिक से शारीरिक
(C) मानसिक से मानसिक (D) शारीरिक से मानसिक **(C)**

❖ निम्नलिखित में से कौन-सा प्राकृतिक अभिप्रेरणा का उदाहरण नहीं है ? *[School Lect. Exam-2013]*
(A) प्यास (B) प्रतिष्ठा
(C) सुरक्षा (D) भूख **(B)**

❖ निम्नलिखित में से कौनसी अधिगम की आधारभूत शर्त नहीं है ? *[School Lect. Exam-2013]*
(a) संलग्नता (b) प्रतिपादन
(c) अभ्यास (d) पुनर्बलन
नीचे दिये गये कोड से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(A) केवल (a) (B) केवल (b)
(C) (b) एवं (d) (D) (a) एवं (c) **(B)**

❖ पियाजे के अनुसार विकास की अवस्थाओं में वह अवस्था जिसमें बालक अनभिज्ञ होता है कि 'यद्यपि कोई वस्तु दिखाई नहीं दे रही है, फिर भी वह अस्तित्व में है', वह अवस्था कहलाती है- *[School Lect. Exam-2013]*
(A) संवेदी - गामक अवस्था
(B) प्राक-संक्रिया अवस्था
(C) औपचारिक-संक्रिया अवस्था
(D) मूर्त प्रयोगों का काल **(A)**

❖ निम्नलिखित में से कौन-सा कारक सीखने के अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त को प्रभावित करने वाला नहीं है ? *[School Lect. Exam-2013]*
(A) बुद्धि (B) व्यक्तित्व
(C) प्रत्यक्षीकरण (D) अनुभव **(B)**

Scanned with CamScanner

❖ राबर्ट एम. गेने के अनुसार निम्न में से कौन-सा अधिगम का प्रकार नहीं है ? *[School Lect. Exam-2013]*

(A) अन्तर्दृष्टि अधिगम (B) संकेत अधिगम
(C) श्रृंखला अधिगम (D) शाब्दिक साहचर्य अधिगम **(A)**

❖ 'गेस्टाल्टवाद' के जन्मदाता कौन हैं ? *[School Lect. Exam-2013]*

(A) स्किनर (B) बरदाईमर
(C) बिने (D) स्पिनोविच **(B)**

❖ रॉबर्ट गेने ने अधिगम की कितनी परिस्थितियाँ बताई हैं ? *[School Lect. Exam-2013]*

(A) 5 (B) 7
(C) 8 (D) 6 **(C)**

❖ कक्षा में भावी अनुशासन के लिए अध्यापक को चाहिए- *[School Lect. Exam-2013]*

(A) छात्रों को जो चाहे करने दे।
(B) छात्रों के साथ कठोर-व्यवहार करे।
(C) छात्रों को कुछ समस्याएँ हल करने को दे।
(D) उनसे नरमी व दृढ़ता के व्यवहार करे। **(D)**

❖ "बच्चे अपने वातावरण के साथ सम्बन्ध बनाते हुए अपनी समझ का विकास कर लेते हैं"- यह कथन किसका है ? *[School Lect. Exam-2013]*

(A) स्कीनर (B) गिलफर्ड
(C) पियाजे (D) बर्ट **(C)**

❖ संज्ञानात्मक विकास पर व्यवस्थित कार्य करने वाला मनोवैज्ञानिक था: *[School Lect. Exam-2013]*

(A) वुडवर्थ (B) पेस्टालॉजी
(C) गाल्टन (D) जीन पियाजे **(D)**

❖ एक बच्चे को लाल गुलाब का काँटा चुभ गया जिससे उसे काफी चोट पहुँची। आगे चलकर वह लाल **पोषक** या लाल किसी भी चीज को देखकर डरने लगा/लगी। यह उदाहरण है- *[School Lect. Exam-2013]*

(A) उद्दीपक सामान्यीकरण
(B) अनुक्रिया सामान्यीकरण
(C) उद्दीपक एवं अनुक्रिया दोनों सामान्यीकरण
(D) न तो उद्दीपक सामान्यीकरण न तो अनुक्रिया सामान्यीकरण **(A)**

❖ पियाजे द्वारा प्रयुक्त न किया गया नाम खोजे- *[School Lect. Exam-2013]*

(A) आत्मीकरण (B) संगठन
(C) स्कीमा (D) उद्दातीकरण **(D)**

❖ निम्न में से कौनसा ब्रूनर के सिद्धान्त से नहीं है ? *[School Lect. Exam-2013]*

(A) नवीन ज्ञान अथवा सूचना का ग्रहण करना
(B) अर्जित ज्ञान का रूपान्तरण
(C) ज्ञान की पर्याप्तता की जाँच
(D) ज्ञान की अपर्याप्तता की जाँच **(D)**

❖ सूची-**I** को सूची-**II** से सुमेलित कीजिए तथा दिये गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए : *[School Lect. Exam-2013]*

| सूची-**I** | सूची-**II** |
|---|---|
| A. कार्ल रोजर | I. कार्य-क्षेत्र सिद्धान्त |
| B. कर्ट लेविन | II. सामाजिक अधिगम सिद्धान्त |
| C. बन्डूरा | III. स्व-सामर्थ्य सिद्धान्त |
| D. ब्रुनर | IV. मनो-विश्लेषणात्मक सिद्धान्त |
| | V. संज्ञानात्मक सिद्धान्त |

| | A | B | C | D |
|---|---|---|---|---|
| (A) | III | IV | II | V |
| (B) | II | I | V | III |
| (C) | I | II | IV | V |
| (D) | III | I | II | V |

**(D)**

❖ यह विचार **कि** "विकास की किसी भी अवस्था पर कुछ भी सिखाया जा सकता है", व्यक्त किया है- *[School Lect. Exam-2013]*

(A) पियाजे (B) आसुबेल
(C) ब्रूनर (D) गेने **(C)**

❖ अनुबन्धन होने के लिए घटनाओं का उपयुक्त क्रम इस प्रकार है- *[School Lect. Exam-2013]*

(A) US - UR - CR (B) CS - CR - UR
(C) CS - US - UR (D) UR - US - CS **(C)**

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 4 अभिप्रेरणा

- **अभिप्रेरणा** – जीवन की सफलता का आधार। अधिगम का प्रमुख कारक अनिवार्य स्थिति, सुनहरी सड़क (Golden Road of Learning), अधिगम का हृदय (Heart of Learning)।
- Motivation शब्द की उत्पत्ति लैटिक भाषा के Motum, Movere हुई है – जिसका अर्थ होता है गति करना (To Move)

### अभिप्रेरणा की परिभाषाएँ–

- **लॉवेल** – अभिप्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक या आन्तरिक प्रक्रिया है जो आवश्यकता से उत्पन्न होती है और ऐसी क्रिया की ओर ले जाती है जो आवश्यकता को संतुष्ट करती है।
- **ब्लैयर, जोन्स, सिम्पसन** – अभिप्रेरणा एक प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाले की आन्तरिक शक्तियाँ उसे वातावरण में विभिन्न लक्ष्यों की ओर ले जाती हैं।
- **क्रो एण्ड क्रो** – अभिप्रेरणा का सम्बन्ध सीखने में रुचि उत्पन्न करने से है, इसी रूप में वह सीखने का आधार है।
- **स्कीनर** – स्कूल अधिगम में प्रेरणा में वांछनीय व्यवहार को उत्तेजित करना, स्थायित्व करना, जारी रखना, नियमित करना व निर्देशित करना शामिल है।
- **गिलफ्रेर्ड** – प्रेरणा भी विशेष कारक या दशा है जो किसी क्रिया को आरम्भ करने व बनाये रखने के लिए प्रवृत्त करती है।
- **अटकिन्सन** – अभिप्रेरणा शब्द से अभिप्राय भावना का क्रिया के लिए उत्तेजित होकर प्रभाव उत्पन्न करना है।
- **गुड के अनुसार** – ''किसी क्रिया को आरम्भ करने, जारी करने तथा नियमित करने की प्रक्रिया अभिप्रेरणा कहलाती है।''
- **मैकडुगल के अनुसार** – ''अभिप्रेरणा वह शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दशा है जो किसी कार्य को करने के लिये प्रेरित करती है।''
- **क्रैच व क्रैचफिल्ड के अनुसार** – ''अभिप्रेरणा हमारे क्यों का उत्तर देती है।''
- **वुडवर्थ** – ''अभिप्रेरणा वह तात्कालिक बल है जो व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करता है।''
- **जॉनसन** – अभिप्रेरणा सामान्य क्रियाओं का प्रभाव है जो मानव के व्यवहार को उचित मार्ग पर ले जाती है।

### अभिप्रेरणा की प्रकृति (Nature of Motivation)–

- अभिप्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया, शारीरिक व आन्तरिक प्रक्रिया है।
- आवश्यकता या प्रेरक से उत्पन्न होने वाली प्रक्रिया है।
- आन्तरिक प्रक्रिया जो निश्चित लक्ष्य की ओर प्रेरित करती है।
- अभिप्रेरणा उत्सुकता (तत्परता) युक्त प्रक्रिया है।
- ध्यान केन्द्रित प्रक्रिया।
- उद्देश्य प्राप्ति तक चलने वाली निरन्तर प्रक्रिया।
- प्रत्येक व्यक्ति में गति-गति अलग होती है।
- लक्ष्य निर्देशित व्यवहार पर आधारित प्रक्रिया।
- अभिप्रेरणा साध्य ना होकर साधन है।
- अभिप्रेरणा भावात्मक क्रिया है।
- अभिप्रेरणा में व्यक्ति चयनात्मक क्रिया करता है जो लक्ष्य की ओर ले जाती है।
- अभिप्रेरणा एक क्रमिक प्रक्रिया है।

### अभिप्रेरणा के प्रकार (Types of Motivation)–

1. **आन्तरिक अभिप्रेरणा (प्राकृतिक/जन्मजात/अनसीखी अभिप्रेरणा) (Internal/Primary/Unlearnt Motivation) :-**

- किसी क्रिया या कार्य को स्वयं की इच्छा से करते हैं तथा जिसको करने से हमें सुख व सन्तोष की अनुभूति होती है।
- यह व्यक्ति के जन्म के साथ ही आती है इनकी पूर्ति अनिवार्य व आवश्यक है। वुडवर्थ ने मूल प्रवृतियों को अनसीखी अभिप्रेरणा कहा है।
- यह कार्य को प्रारम्भ करती है।

  **जैसे** – भूख, प्यास, नींद, मलमूत्र परित्याग, काम, मातृत्व, बचाव, प्रभुत्व प्रयास, प्रेम, आत्मसम्मान, श्रद्धा, आराम, अनुकरण, खेल, सफलता की इच्छा, नेतृत्व इत्यादि।

2. **द्वितीय/बाह्य/नकारात्मक अभिप्रेरणा (Secondary, External)**

- जब किसी क्रिया या कार्य को हम बाहरी व्यक्ति के दबाव में आकर करते हैं –

  **जैसे** – प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड, प्रतिस्पर्धा, सहयोग, परिणामों की जानकारी, श्रव्य-दृश्य सामग्री, लक्ष्य आदर्श या उद्देश्य प्रदान करना, मूल्यांकन, अध्यापक-छात्र सम्बन्ध इत्यादि।

### अभिप्रेरणा के तत्त्व (Elements of Motivation)–

1. **आवश्यकता (Needs) : -**

   शरीर में किसी चीज की कमी या अति की अवस्था आवश्यकता कहलाती है।

   **आवश्यकता के 2 वर्ग :-**

- **शारीरिक आवश्यकता/जैविक** – पानी, काम, भोजन, निंद्रा, मलमूत्र त्याग
- **सामाजिक मनोविज्ञान आवश्यकता** – सुरक्षा, आत्मविश्वास, उपलब्धि, स्नेह, आत्म पहचान, आत्म सम्मान, साथी बनाने, स्वतंत्र होने, आत्मनिर्भर बनने की आवश्यकता।
- चक्रीय आवश्यकता – भोजन, पानी, काम।
- सबसे कम जरूरी आवश्यकता – काम।

Scanned with CamScanner

- "आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त" मैस्लो ने 1954 में दिया।
- **5 (पांच) आवश्यकताएँ (आत्मबल का सिद्धान्त) :-** श्रेष्ठ में आत्मसिद्धि प्रथम व क्रम में प्रथम शारीरिक आवश्यकताएँ आती हैं। (आवश्यकता पदानुक्रम (Needhierarchy))

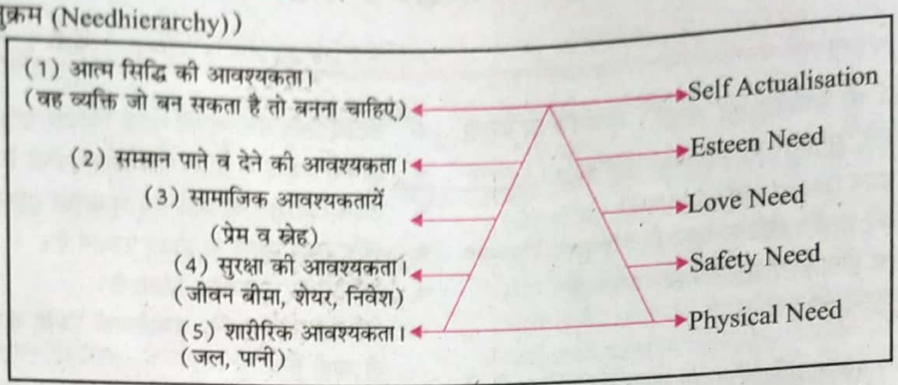


**विशेष** - मैस्लो ने 1959 में आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धान्त में 3 नये तत्वों को शामिल किया है -

(i) **उत्तेजना आवश्यकता** - इसमें अन्वेषण, कार्य, यौन संबंध, उद्यमिता व जाँच पड़ताल को शामिल किया है। (यह शारीरिक आवश्यकता के बाद व सामाजिक आवश्यकता (प्रेम) से पूर्व आती है।)

(ii) **एकीकरण/समग्र आवश्यकता (Whole Needs)** - यह प्रतिष्ठा/सम्मान आवश्यकता की पूर्ति के बाद तथा आत्मसिद्धि आवश्यकता से पूर्व आती है। इसमें व्यक्ति यह सोचता है उसकी एकीकृत व सुसंगत छवि बने जिसके सभी से मनमुटाव समाप्त हो जावे व निष्पक्ष व अच्छे व्यवहार की स्थिति आ जाये।

(iii) **आध्यात्मिक आवश्यकता (Meta Needs)** - यह आत्मसिद्धि के बाद आती है। यह व्यक्ति को वृद्धि लक्ष्य की ओर ले जाती है इस अभिप्रेरणा को मैस्लो ने 'B' Motivation कहा है जो सत्य, न्याय, सौन्दर्य, कल्पना व परमार्थ से जुड़ी होती है।

यह इस आवश्यकता की पूर्ति आत्मसिद्धि के बाद ना हो तो व्यक्ति ने मैस्लो के अनुसार आध्यात्मिक व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है इससे अवसाद, विलगाव, अरुचि, निराशा तथा संसार कुछ होता है या नहीं जैसे विचार उत्पन्न हो जाते हैं।

2. **चालक (Drive)/प्रणोद/अन्तर्नोद :-**

चालक शरीर की आन्तरिक क्रिया दशा है जो विशेष प्रकार का व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। जैसे - भूख, प्यास।

- **शेफर व अन्य** - चालक एक सुदृढ़ व अचल उत्तेजक है जो मानव प्राणी को क्रियाशील बनाता है।

3. **उद्दीपन (Incentive) या प्रोत्साहन:-**

जिस तत्व द्वारा चालक की सन्तुष्टि होती है उसे उद्दीपन या प्रोत्साहन कहते हैं। प्रोत्साहन/उद्दीपक दो प्रकार से (1) सकारात्मक - प्रशंसा, पुरस्कार इत्यादि। (2) नकारात्मक - दुःख, दण्ड इत्यादि। कहा जाता है। जैसे - भूख चालक के लिए भोजन उद्दीपन या प्रोत्साहन होगा।

- **बोरिंग व अन्य** - एक स्थिति या क्रिया जो व्यवहार को उद्दीपन करती है, कायम रखती है व निर्देशित करती है।

## आवश्यकता चालक व उद्दीपन का सम्बन्ध-

आवश्यकता (Need) → चालक (Drive) → प्राणी में आन्तरिक तनाव (Tension) → प्रोत्साहन (Incentive) → लक्ष्य प्राप्ति व संतुष्टि (Goal)

- **हीलगार्ड** के अनुसार - आवश्यकता से चालक की उत्पत्ति होती है और चालकों की प्रोत्साहन द्वारा संतुष्टि होती है।

## अभिप्रेरणा चक्र-

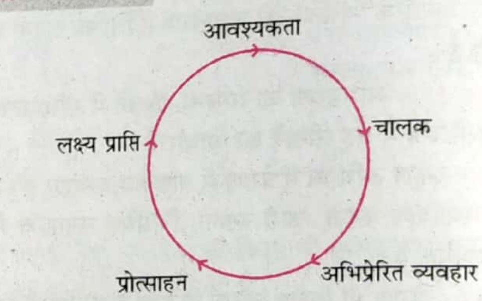


4. **प्रेरक:** - (Motive) = (M = N + D + I) प्रतिपादक - वुडवर्थ यह एक व्यापक शब्द है जिसमें आवश्यकता, चालक, तनाव प्रोत्साहन सभी आ जाते हैं।

## परिभाषा-

- **मैक्डूगल** - प्रेरक शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दशाएँ हैं, जो किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित करती हैं।
- **शेफर** - प्रेरक एक ऐसी प्रवृति है जो चालक द्वारा उत्पन्न होती है, समयोजन द्वारा समाप्त होती है।
- **वुडवर्थ** के अनुसार:- प्रेरक व्यक्ति की वह दशा है जो निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए निश्चित व्यवहार को स्पष्ट करता है।
- **गेट्स व अन्य:** - प्रेरक प्राणी के भीतर की वे शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दशाएं हैं जो निश्चित विधियों के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।
- **मन** - प्रेरक आन्तरिक उत्तेजक अथवा सुधारक है।

## मैस्लो के अनुसार प्रेरक का वर्गीकरण-

**(A) जन्मजात (Inborn motive) :-**

1. **भूख (Hunger) - कैनन व वाशबर्न** - अमाशय में मांसपेशियों में संकुचन व शरीर में चीनी की मात्रा कम होने पर उत्पन्न होता है।
2. **प्यास (Thirst) - डबल-डिप्लेसन सिद्धान्त** - प्यास का सिद्धान्त जिसके अनुसार प्यास दो शारीरिक क्रियाओं का परिलाभ है - इपस्टीन
   (अ) पानी की कमी हो जाना। (Cellular Dehydration)
   (ब) रक्त की मात्रा में कमी हो जाना। (हाइपोभोलेमिया)

Scanned with CamScanner

3. काम (Sex) ( सबसे कम आवश्यक प्रेरक ) - इसका अध्ययन फ्रायड ने किया।
4. नींद (Sleep) -
नींद प्रेरक दो प्रकार का होता है -
(अ) तीव्र आँख गतिक नींद (स्वप्न नींद)(Rapid Eyemovement) (Ren Sleep) - एसरीनस्काई तथा क्लिटमैन
(ब) अतीव्र आँख गतिक नींद (गहरी नींद) (Non Ren Sleep) - संवेदना नहीं, श्वसन, हृदय गति व रक्तचाप कम हो जाता है।
5. मलमूत्र त्याग प्रेरक (Eliminative Motive)
नोट:- सिग्मण्ड फ्रायड ने मलमूत्र त्याग प्रेरक को व्यक्ति के आचरण निर्माण में महत्त्वपूर्ण माना है।

(B) अर्जित प्रेरक (Acquired Motive) -
1. उपलब्धि अभिप्रेरक (Achivement Motive) :-
प्रतिपादक - मैक्लीलैण्ड व एटकिन्सन ( 1961 )
अर्थ - चुनौतीपूर्ण व कठिन कार्यों में सन्तोषजनक निपुणता प्राप्त करने की आशा उपलब्धि अभिप्रेरक है।
विशेषताएँ :-
- यह प्रेरक श्रेष्ठता की खोज पर बल देता है।
- यह व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति की ओर ले जाता है।
- प्रत्येक उस कार्य में जिसमें सफलता की सम्भावना अधिक हो, कार्य करता है।
- इस पर स्वतन्त्र वातावरण/परिवेश का प्रभाव पड़ता है।

उच्च उपलब्धि प्रेरित बालक/व्यक्ति की विशेषताएँ :-
- आकांक्षा का स्तर उच्चतर होता है। जोखिम उठाने का स्तर।
- सफलता के लिए अधिक चिन्तित होते हैं, साधारण कठिनाई वाले कार्य करते हैं।
- कार्य में अधिक निरन्तरता पायी जाती हैं।
- अधिक प्रभावशीलता दर्शाते हैं।
- दूसरों से आगे निकलने व श्रेष्ठता की इच्छा रखते हैं।
- सफलता पर अधिक प्रसन्नता व्यक्त करते हैं, अपनी कमियों को स्वीकार करते हुये निरन्तर सुधार करते हैं।

नोट :- रिली व लेविस - किसी चीज को अपने से करने, उसे अच्छे से अच्छे ढंग से करने व उसमें विशिष्टता दिखाने की स्वीकारात्मक इच्छा को उपलब्धि अभिप्रेरणा कहा जाता है।

### उपलब्धि अभिप्रेरक को प्रभावित करने वाले कारक-
- घर का वातावरण - माता-पिता का व्यवहार, निर्देशन, स्वतंत्रता।
- विद्यालय वातावरण - शिक्षक का प्रभाव, समूह, पाठ्यसहगामी क्रिया।
- समाज - रूढ़ियाँ, परम्पराएँ, शिक्षा, साहित्य, भाग्यवादी सोच।

### उपलब्धि प्रेरक के विकास में शिक्षक की भूमिका-
- प्रभावी वातावरण उपलब्ध करवाना।
- उच्च उपलब्धि व महापुरुषों की गाथा बताना।
- उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौंपना।
- प्रतिबद्धता का विकास करना।
- अनुशासन व आत्म मूल्याँकन की योग्यता का विकास।
- अभिप्रेरणा का प्रयोग।
- उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण -
दो परीक्षण प्रचलित है -
1. T.A.T. - प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण।
2. C.I.E. - उपलब्धि परीक्षण। (डॉ. एन.के. दत्त व के.जी. रस्तोगी)

2. सम्बन्ध प्रेरक (Affilication Motive) :- कारपेन्टर, स्क्रेक्टर ने अध्ययन किया। यह 13-15 वर्ष की आयु स्पष्ट व विशिष्ट हो जाता है।
3. अनुमोदक प्रेरक (Approval Motive) :- क्राउनी व मारलो ने अध्ययन किया।
प्रत्येक व्यक्ति में प्रशंसा प्राप्त करने या पुरस्कार करने की स्वाभाविक इच्छा होती है।
4. शक्ति प्रेरक (Power Motive)/स्तर प्रेरक (Status Motive) :- प्रभाव व नियंत्रण स्थापित करने का भाव। शक्ति या सत्ता प्रेरक - क्रिस्टी व गिस ने इस प्रेरक को मैकाईभेलियनिज्म कहा है।
5. आक्रमणशीलता (Aggressiveness) :- डोलार्ड, मिलर, हिलगार्ड
प्रेरक - फ्रायड ने इसको जन्मजात प्रेरक माना है। डोलार्ड ने इसे अर्जित कहा है, इसका कारण कुण्ठा होता है।
नोट :- मैस्लो के अनुसार व्यक्तिगत अर्जित प्रेरक -
(1) रुचि, (2) आदत, (3) आकांक्षा स्तर, (4) मदव्यसन।
चिंता (Anxity) - अर्जित प्रेरक होती है।

### थॉमसन के अनुसार प्रेरक का वर्गीकरण-
1. स्वाभाविक :- खेल, सुझाव, अनुकरण, सहानुभूति, स्नेह, प्रेम।
2. कृत्रिम प्रेरक :- प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड, सहयोग।

### गैरेट के अनुसार प्रेरक का वर्गीकरण-
1. जैविक प्रेरक - भूख प्यास, काम, नींद, मलमूत्र त्याग (जन्मजात)।
2. मनोवैज्ञानिक प्रेरक - सुख, दुःख, प्रेम, भय, क्रोध।
3. सामाजिक प्रेरक - आत्मगौरव, आत्मप्रतिष्ठा, सामूहिकता, संग्रह की प्रवृत्ति, रचनात्मकता, जिज्ञासा।

### अभिप्रेरणा के सिद्धान्त-
1. मनोविश्लेषण सिद्धान्त (Psychoanalytic Theory) :-
प्रतिपादक - फ्रायड
इसके अनुसार अचेतन मन मानव के व्यवहार का प्रमुख चालक है। अचेतन मन ही दमन की हुई इच्छाओं को पुंज है।
2. मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त (InstinctiveTheory) :-
प्रतिपादक - विलियम मैक्डूगल
मूल प्रवृत्तियाँ मानव व्यवहार की प्रमुख चालक हैं।
3. उद्दीपन अनुक्रिया का सिद्धान्त :-
प्रतिपादक - थॉर्नडाइक (व्यवहारवादी)
मनुष्य का व्यवहार शरीर के द्वारा उद्दीपन के फलस्वरूप होने वाली प्रतिक्रिया है।
4. व्यवहार के अधिगम का सिद्धान्त या चालक न्यूनता का सिद्धान्त (Drive Reduction Theory) :-
प्रतिपादक - सी.एल. हल
इसके अनुसार व्यक्ति का व्यवहार आवश्यकताओं की सन्तुष्टि पर निर्भर करता है।
5. आत्मसिद्धि का सिद्धान्त ( स्व यथार्थीकरण का सिद्धान्त ) (Self Actualisation) :-
प्रतिपादक - मैस्लो (आत्मगत अनुभूति पर बल)

Scanned with CamScanner

6. **अधिगम क्षेत्रीय सिद्धान्त (Field Theory) :-**
व्यक्ति का व्यवहार उन घटक द्वारा प्रभावित होता है जो उसके व वातावरण के मध्य कार्य करते हैं।
प्रतिपादक - कुर्तलेविन
लेविन ने स्थान विज्ञान (Topology) की सहायता से इसकी व्याख्या की है।

7. **प्रोत्साहन का सिद्धान्त (Incentive Theory) :-**
प्रतिपादक - कोफमैन, वोल्फ

8. **अभिप्रेरणा का शारीरिक सिल्वर :-**
प्रतिपादक - विलिमय जेम्स, क्रेचमर, शेल्डन

9. **मर्रे का द्वि आवश्यकता सिद्धान्त**
1930 में आवश्यकता के दो प्रकार बताये हैं -

- **दैहिक आवश्यकता** - इसमें भोजन, पानी सहित 12 आवश्यकतायें बताई हैं।
- **मनोवैज्ञानिक आवश्यकता** - इसमें संबंध प्रेम, उपलब्धि सहित 28 आवश्यकतायें होती है।

10. **विरोधी प्रक्रिया सिद्धान्त -**
प्रतिपादक - सोलोमैन व कोरविट, 1974
सुख देने वाले लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित होता है व दुःख देने वालों से दूर रहता है।

11. **अभिप्रेरणा का द्विघटक सिद्धान्त (Two Factor Theory)**
प्रतिपादक - फ्रेडरिक हजबर्ग
इस सिद्धान्त के अनुसार संघठन में दो घटक कार्मिको की संतुष्टि व असंतुष्टि को प्रभावित करते हैं।

- **आरोग्य घटक (Hygiene)** - जो संगठन के वातावरण के संबंधित है इसमें कम्पनी की नीति प्रशासन, पर्यवेक्षण, वेतन, स्थिति, सुरक्षा अन्तरवैयक्तिक संबंध व कार्य दशा है।
ये निम्न स्तरीय आवश्यकता का प्रतीक है, वातावरण से संबंधित है।
- **अभिप्रेरक ( कार्य घटक ) (Motivators)** - ये कार्य संतुष्टि के वास्तविक कारक हैं, ये उच्च स्तरीय आवश्यकता को बताते हैं इसमें उपलब्धि, उपलब्धि की मान्यता, कार्य में रुचि, उत्तरदायित्व व प्रगति शामिल है।

**विशेष :-** मानव की द्वि आवश्यकता सिद्धान्त

- हजबर्ग ने 1966 में द्विघटक सिद्धान्त का विस्तार करते हुये अपनी पुस्तक Work and the nature of man में द्वि आवश्यकता सिद्धान्त दिया।

- **शारीरिक आवश्यकता** - आरोग्य घटक ( मनुष्य व पशु में समान)
- **मनोवैज्ञानिक आवश्यकता** - अभिप्रेरक घटक से संबंधित

12. **अभिप्रेरण का X व Y सिद्धान्त** - मैक्ग्रेगर
मैक्गेगर ने पुस्तक - The Human side of enterprise

- **X - सिद्धान्त** - यह मानवीय व्यवहार को नकारात्मक अवधारणा से विश्लेषित करता है इसके अनुसार व्यक्ति कामचोर, नकारा, आलसी, क्षमताविहीन, आकांक्षा विहीन, सृजनात्मकता विहीन, मूलत: आर्थिक मानव होता है। शारीरिक व सुरक्षा आवश्यकता तक सीमित।
- **Y - सिद्धान्त** - महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, स्वनिर्देशित, क्षमतायुक्त, सृजनात्मक, शारीरिक से लेकर आत्मसिद्ध तक का अभिप्रेरणा स्तर होता है, वह सकारात्मक सोच युक्त होता है। समन्वय से युक्त गतिशीलता युक्त व आत्मनियंत्रण युक्त होता है। व्यक्ति आर्थिक व अनार्थिक मानव है।

13. **संशोधित आवश्यकता सिद्धान्त (ERG सिद्धान्त)**
**प्रतिपादक - क्लेटन एल्डरफर**
क्लेटन एल्डरफने निम्न आवश्यकता बताई है -
1. अस्तित्वजन्य आवश्यकता
2. संबंद्धतापरक आवश्यकता
3. अभिवृद्धि आवश्यकता

14. **प्रत्याशा सिद्धान्त -**
प्रतिपादक - एच. वरूम, 1960
यह व्यक्ति की अपेक्षा व प्रयासों के मध्य सहसंबंध बताया है।
अभिप्रेरणात्मक बल : शक्ति × प्रत्याशा

15. **निष्पादन संतुष्टि सिद्धान्त -**
प्रतिपादक - पोर्टर व लॉलर
यह संतुष्टि व निष्पादन के संबंधों की व्याख्या करता है।

## अभिप्रेरणा संघर्ष के प्रकार-

- कुर्त लेविन ने अभिप्रेरणा संघर्ष के 4 प्रकार बताएँ हैं -

1. **उपागम** - उपागम संघर्ष (दो सकारात्मक विचारों में)(Approach - Approach)
2. **परिहार** - परिहार संघर्ष (दो नकारात्मक विचारों में) (Avoidence - Avoidence)
3. **उपागम** - परिहार संघर्ष (एक सकारात्मक व एक नकारात्मक) (Approach - Avoidence)
4. **बहु उपागम** - परिहार संघर्ष (बहुत से सकारात्मक व नकारात्मक) (Multiple Approach Avoidence Conflict)

## अधिगम में अभिप्रेरणा का स्थान (Functions of Motivation in Learning)-

- बालक के व्यवहार में परिवर्तन करने में सहायक व व्यवहार का पथ प्रदर्शन करती है व्यवहार में शक्ति का संचार करती है।
- ध्यान केन्द्रित करने में सहायक।
- चरित्र का निर्माण करने में सहायक।
- रुचि तथा अनुशासन स्थापित करने में सहायक।
- सामाजिक व मानसिक गुणों का विकास करने में सहायक।
- तीव्र गति से ज्ञान का अर्जन करने में सहायक।
- व्यक्तिगत विभिन्निताओं के अनुसार प्रगति में सहायक।
- अधिक ज्ञान का अर्जन करने में सहायक।
- क्रमिक रूप से अभिप्रेरित करने में उपयोगी।

## अभिप्रेरणा की विधियाँ/अभिप्रेरित्त करने के उपाय (Teachniques of Motivation) -

1. रूचि उत्पन्न करना।
2. सफलता।
3. प्रतिस्पर्द्धा।
4. सामूहिक कार्य, सहयोग।
5. नवीनता।
6. आवश्यकता या परिणाम का ज्ञान।
7. प्रशंसा, पुरस्कार व दण्ड का प्रयोग। (उचित प्रयोग)
8. लक्ष्य आदर्श सामने रखना।
9. मूल्याँकन।

Scanned with CamScanner

10. श्रव्य-दृश्य साधन का प्रयोग
11. अध्यापक - विद्यार्थी सकारात्मक सम्बन्ध
12. शिक्षा को बाल केन्द्रित बनाना।
13. खेल आधारित विधियों का प्रयोगकत्व करना।
14. शिक्षण के सूत्र - ज्ञात से अज्ञात, सरल से जटिल का प्रयोग करना।
15. करके सीखने पर बल देना।
16. आत्मनुशासन का विकास।
17. पुनर्बलन का प्रयोग। (सकारात्मक व नकारात्मक दोनों)

**विशेष तथ्य-**

- अभिप्रेरणा जन्मजात व अर्जित दोनों होती है।
- मातृत्व प्रेरक जन्मजात होता है।
- वुडवर्थ ने मूल प्रवृत्तियों को अनसीखी अभिप्रेरणा कहा है।
- उद्दीपक/प्रोत्साहन दो प्रकार के होते हैं:-
  (i) सकारात्मक - प्रशंसा पुरस्कार, पैसे (ii) नकारात्मक - दुःख, दण्ड इत्यादि
- **मेल्टन :-** अभिप्रेरणा सीखने की एक आवश्यक शर्त है।
- **हिलगार्ड :-** आवश्यकताओं से चालक की उत्पत्ति होती है और चालकों को प्रोत्साहन द्वारा सन्तुष्टि होती है।
- **किम्बले व अन्य -** अभिप्रेरणा एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यवहार को उसकी शक्ति व लक्ष्य दोनों ही प्राप्त होते हैं।
- **थार्मसन :-** अभिप्रेरणा आरम्भ से लेकर अन्त तक मानव व्यवहार के प्रत्येक प्रतिकारक को प्रभावित करती है।
- **मार्गन, किंग, विस्ज, स्कोपलर -** अभिप्रेरणा से तात्पर्य एक प्रेरक व कर्षण बल से होता है जो खास लक्ष्यों की ओर व्यवहार को ले जाता है।
- काम प्रेरक को सबसे महत्त्वपूर्ण माना है - मनो विश्लेषणवादी
- उपलब्धि प्रेरक में शिक्षक की भूमिका - महान लोगों के उदाहरण देना, उपयुक्त वातावरण, यथार्थवादी प्रेरक, जीवन लक्ष्य की शिक्षा, प्रतिबद्धता एवं अध्ययन, स्वानुशासन पर बल देकर विकास कर सकता है।
- Drive Reduction theory of motivation - C.L. हल
- Intririsic Motivation - हारलो व अन्य - बन्दर पर प्रयोग
- **जॉन पी डिसेको** ने अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले 4 कारक बताये हैं -
  **( 1 ) उत्तेजना (Arousal) -** व्यक्ति की सजगता का स्तर
  **( 2 ) प्रत्याशा/आकांक्षा (Expactancy) -** एक विशेष परिणाम की आकांशा
  **( 3 ) प्रोत्साहन (Incentives) -**
  **( 4 ) दण्ड (Punishment) -** नकारात्मक अभिप्रेरणा जो अवांछित व्यवहार को रोकता है।
- आवश्यकता प्रणाली व आत्म सिद्धि पर सर्वाधिक बल दिया- अब्राहिम मैस्लो
- ल्यूबा द्वारा आवश्यकता का वर्गीकरण:-
  **( 1 ) शारीरिक आवश्यकता -** भोजन पानी इत्यादि
  **( 2 ) अर्जित आवश्यकता -** सामूहिक, ध्यान, अनुमोहन इत्यादि
- **मैक्लीलैण्ड तथा एटकिन्सन -** उपलब्धि अभिप्रेरणा उच्च स्तर की उपलब्धि व दूसरों के साथ स्पर्धा की भावना को व्यक्त करती है।
- चालक/प्रणोद सदैव अर्जित होता है।
- **मन -** प्रेरक आन्तरिक ओजक/ सुधारक है।
- **जैविक अभिप्रेरणा ( शरीर क्रियात्मक अभिप्रेरक )** जैसे - भूख, प्यास, नींद, काम, मलमूत्र।
- **मनोसामाजिक अभिप्रेरणा** - सबंधन, शक्ति प्रेरक
- समवस्थान (होमियो स्टेसिस) W.B. केनन ने प्रयोग किया ऐसा प्रक्रय या कार्य व्यवहार जो शरीर में आवश्यक संतुलन बनाये रखने में सहायक होता है।
- **यौन हार्मोन -** एस्ट्रोजन्स (स्त्री) टेस्टोस्ट्रोन (पुरूष)
- **उपलब्धि की आवश्यकता -** को-n-Actt भी कहा जाता है।
- उच्च उपलब्धि प्रेरक व्यक्ति ऐसे कार्यो को वरीयता देते हैं जो मध्यम कठिनाई स्तर व चुनौती वाले होते है।
- **आत्मसिद्धि व्यक्ति -** आत्म जागरूक समाज के प्रति अनुक्रियाशील, सर्जनात्मक, स्वतः स्फूर्त, नवीनता व चुनौती से मुक्त होता है व हास्यभावना से परिपूर्ण व गहरे अंतर्वैयक्तिक संबंध बनाने की क्षमता होती है।
- डेसी ने अभिप्रेरणा चक्र में संज्ञान को चौथा तत्व बताया है।
- अभिप्रेरित व्यवहार चक्रिय होता है, सक्रिय व सतत् होता है।
- **कार्यान्यन अभिप्रेरक ( रार्बट व्हाईट ) -** वातावरण की वस्तु व व्यक्तियों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करना।
- **अन्वेषण अभिप्रेरक ( हारलो ) -** खोज करने में बल देना।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा- **(CTET-I, 2011)**
(A) शिक्षार्थियों में सीखने के प्रति रुचि का विकास करती है।
(B) विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति को पैना बनाती है।
(C) ज्ञान का पृथक्करण करती है।
(D) शिक्षार्थियों को एक दिशा में सोचने योग्य बनाती है। (A)

❖ निम्नलिखित में किस एक परिवर्तन को सीखने की श्रेणी में रखा जायेगा ?
**(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, सामान्य-III ग्रेड-2009)**
(A) व्यवहार में होने वाले परिवर्तन
(B) व्यवहार में परिवर्तन
(C) परिपक्वता के कारण परिवर्तन
(D) अभ्यास या अनुभूति दोनों से होने वाले अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन (D)

❖ निम्न में से कौनसी जन्मजात या आंतरिक अभिप्रेरणा नहीं है ?
**(PTI-III ग्रेड-2012)**
(A) भूख (B) प्यास
(C) उपलब्धि की आवश्यकता
(D) यौन प्रवृत्ति (C)

❖ अभिप्रेरणा से संबंधित सही क्रम इंगित कीजिए-
**(PTI-II ग्रेड-2012)**
(A) प्रणोद-आवश्यकता-प्रोत्साहन
(B) प्रोत्साहन-आवश्यकता-प्रणोद

Scanned with CamScanner

(C) आवश्यकता-प्रणोद-प्रोत्साहन
(D) आवश्यकता-प्रोत्साहन-प्रणोद (C)

❖ सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा-
**(BTET-I लेवल- 2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) बच्चों में सीखने के प्रति रुचि का विकास करती है।
(B) बच्चों की स्मरण शक्ति को मजबूत करती है।
(C) बच्चों को एक दिशा में सोचने की योग्यता को विकसित करती है।
(D) गत सीखे हुए को नए अधिगम से अलग करती है। (A)

❖ अभिप्रेरणा पर किस कारक का प्रभाव नहीं पड़ता है ?
**(सामान्य ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) आवश्यकता (B) भौतिक संरचना
(C) वातावरण (D) जन्मजात (D)

❖ प्रेरक प्राणी में विद्यमान शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दशाएँ हैं, जो उसे निश्चित विधियों के अनुसार कार्य करने के लिए उत्तेजित करती हैं। प्रेरक की इस परिभाषा को देने वाले हैं-
**(सामान्य ज्ञान-II ग्रेड-2011)**
(A) शेफर (B) गेट्स व अन्य
(C) ब्लेयर व अन्य (D) मर्शेल (B)

❖ बाह्य अभिप्रेरणा में समावेशित किया जाएगा-
**(RTET-II लेवल-2011)**
(1) प्रशंसा व दोषारोपण (2) प्रतिद्वन्द्विता
(3) पुरस्कार एवं दण्ड (4) परिणाम का ज्ञान
इनमें से
(A) 1 व 3 (B) 1, 2, 3
(C) केवल 2 (D) 1, 2, 3, 4 (D)

❖ निम्नलिखित में से कौनसा कथन अभिप्रेरणा की प्रक्रिया के संदर्भ में उपयुक्त नहीं है ? **(RTET-II लेवल-2011)**
(A) यह व्यक्ति को लक्ष्य की ओर ले जाता है।
(B) यह व्यक्ति की शारीरिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है।
(C) यह मनोवैज्ञानिक आकांक्षाओं को प्राप्त करने में सहायता करता है।
(D) यह व्यक्ति को अप्रिय स्थिति से दूर रखता है। (D)

❖ निम्नलिखित में से कौनसी विशेषता आंतरिक रूप से अभिप्रेरित बच्चों के लिए सही नहीं है?
**(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, RTET-I लेवल-2011)**
(A) वे हमेशा सफल होते हैं।
(B) उन्हें कार्य करने में आनंद आता हैं।
(C) वे कार्य करते समय उच्च स्तर की ऊर्जा प्रदर्शित करते हैं।
(D) वे चुनौती भरे कार्यों को पसंद करते हैं। (A)

❖ मूल प्रवृत्तियाँ कैसी होती हैं ?
**(BTET-I लेवल-2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) जन्मजात (B) अर्जित
(C) जन्मजात व अर्जित (D) इनमें से सभी (A)

❖ निम्नलिखित में से जन्मजात अभिप्रेरक कौनसा है ?
**(BTET-I लेवल-2011)**
(A) निद्रा (B) खेलना
(C) प्रशंसा (D) क्रोध (A)

❖ निम्न में से कौनसे प्रेरकों का वर्गीकरण गैरेट द्वारा किया गया?
**(अंग्रेजी II ग्रेड-2011)**
(A) जन्मजात, स्वाभाविक और सामाजिक
(B) कृत्रिम, दैहिक और सामाजिक
(C) मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं स्वाभाविक
(D) दैहिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक (D)

❖ प्रेरकों का वर्गीकरण अनेक विद्वानों ने किया, मैस्लो द्वारा किया गया वर्गीकरण सही ढंग से निम्न में से किस विकल्प में दिया गया है ?
**(विज्ञान II ग्रेड-2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) जन्मजात एवं स्वाभाविक (B) जन्मजात एवं अर्जित
(C) जैविक एवं जन्मजात (D) सामाजिक एवं कृत्रिम (B)

❖ शिक्षा की प्रक्रिया में प्रेरणा का महत्त्व है। इस बात को ध्यान में रखें तो अध्यापक को निम्न में से कौनसा कार्य नहीं करना चाहिए ? **(विज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) कार्य के लक्ष्यों को स्पष्ट करना
(B) शिक्षार्थी को सामाजिक कार्यों में भाग लेने का अवसर प्रदान करना
(C) इनामों का प्रलोभन देकर बालकों में प्रतिद्वंद्विता पैदा करना
(D) बालकों में अपने कार्य में सफल होने के अवसर प्रदान करना (C)

❖ अभिप्रेरणा के संदर्भ में "भूख" है-
**(गणित II ग्रेड- 2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) आवश्यकता (B) अन्तर्नोद
(C) प्रेरणा (D) उद्देश्य (B)

❖ निम्न में से कौनसा तत्व अभिप्रेरणा से संबंधित नहीं है?
**(हिन्दी II ग्रेड-2010)**
(A) मूल प्रवृत्ति (B) प्रेरणा
(C) अन्तर्नोद (D) आवश्यकता (A)

❖ अभिप्रेरणा के संदर्भ में "प्यास" है ?
**(संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) आवश्यकता (B) प्रवाहिता
(C) अन्तर्नोद (D) मूल प्रवृत्ति (C)

❖ अधिगम तक पहुँचाने के राजमार्ग को कहते हैं ?
**(संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) उद्दीपन (B) प्रवाहिता
(C) संवेदना (D) अभिप्रेरणा (D)

❖ "स्नेह प्राप्त करने की इच्छा" अभिप्रेरणा के संदर्भ में क्या है?
**(उर्दू II ग्रेड-2010)**
(A) स्वाभाविक अभिप्रेरक (B) कृत्रिम अभिप्रेरक

(C) नकारात्मक अभिप्रेरक (D) अर्जित अभिप्रेरक (A)

❖ क्रिया को आरंभ करने, जारी रखने तथा नियंत्रित रखने की प्रक्रिया है ? (उर्दू II ग्रेड-2010)

(A) अधिगम (B) सृजन
(C) संतुलन (D) अभिप्रेरणा (D)

❖ निम्नलिखित में से अधिगम को अभिप्रेरित करने का कौनसा तरीका कम से कम काम में लाना चाहिए ? (अध्यापक संस्कृत II ग्रेड-2010)

(A) पुरस्कार
(B) मिलजुल कर काम करने की प्रवृत्ति
(C) प्रवृत्ति को रोचक बनाना
(D) बच्चे के अनुभवों से जोड़ना (A)

❖ निम्न में से कौनसा उदाहरण अभिप्रेरणा का परिणाम नहीं है ? (RTET-I लेवल-2012)

(A) कृष्णा ने नृत्य का समय एक घंटे से बढ़ा कर दो घंटे कर दिया।
(B) जॉन स्टुअर्ट मिल ने 12 वर्ष की उम्र में दर्शन का अध्ययन आरंभ कर दिया था।
(C) जगन ने श्वास लेने की प्रक्रिया में रुचि दिखानी प्रारंभ कर दी।
(D) राम ने तेजी से आधुनिक एवं प्राचीन ऐतिहासिक प्रवृत्तियों में सह-संबंध स्थापित करने में प्रगति की है। (C)

❖ गिलफोर्ड के अनुसार संवेगों का प्रकार नहीं है- (BTET-I लेवल-2011)

(A) प्राथमिक (B) द्वितीय
(C) नवीन (D) कृत्रिम (C)

❖ निम्नलिखित में से जन्मजात अभिप्रेरक नहीं है- (BTET-I लेवल-2011)

(A) प्यास (B) निद्रा
(C) भूख (D) सुरक्षा (D)

❖ प्रेरणा का स्रोत निम्नलिखित में से कौनसा नहीं है? (BTET-I लेवल-2012)

(A) आदत (B) चालक
(C) प्रेरक (D) उद्दीपन (A)

❖ एक विद्यार्थी मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेने के लिए कठिन परिश्रम करता है ताकि वह प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो सके यह विद्यार्थी रूप से अभिप्रेरित है- (CTET-II लेवल-2012)

(A) वैयक्तिक (B) आनुभाविक
(C) आंतरिक (D) बाह्य (C)

❖ एक अध्यापक को निम्न में से किस कथन से सहमत होना चाहिए ? (RTET-II लेवल-2012)

(A) आंतरिक अभिप्रेरणा तब होती है, जब अधिगमकर्ता बाह्य संतोषजनक परिणाम का अनुभव करने के लिए कार्य करते हैं।
(B) बाह्य अभिप्रेरणा तब होती है, जब अधिगमकर्ता बाह्य पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कार्य करते हैं।
(C) बाह्य पुरस्कार से स्थायी व्यवहार परिवर्तन होता है।
(D) बाह्य पुरस्कार आंतरिक अभिप्रेरणा प्रदान करते हैं। (B)

❖ निम्नलिखित में से जन्मजात है- (आन्ध्रप्रदेश TET-II लेवल-2011)

(A) प्रेरणा (B) रुचि
(C) अभियोग्यता (D) अभिवृत्ति (C)

❖ अभिप्रेरणा के सिद्धांतों के अनुसार एक शिक्षक......के द्वारा सीखने को संबंधित कर सकता है? (RTET-II लेवल-2012)

(A) विद्यार्थियों से वास्तविक अपेक्षाएँ रखने
(B) अपेक्षाओं का एकरूप स्तर रखे
(C) विद्यार्थियों से किसी प्रकार की अपेक्षाएं न रखे
(D) विद्यार्थियों से बहुत अपेक्षाएं रखे (A)

❖ किसी व्यक्ति को सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत कार्य करने हेतु कौनसा प्रेरक प्रेरणा देता है ? (CTET-II लेवल-2012)

(A) उपलब्धि प्रेरक (B) आक्रोश प्रेरक
(C) शक्ति प्रेरक (D) स्वीकृति प्रेरक (D)

❖ **सशक्त अभिप्रेरणा सीखने का प्रभावशाली घटक है इससे बालक** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) स्वस्थ रहता है। (B) ध्यान करता है।
(C) प्रसन्न रहता है। (D) शीघ्र सीखता है। **(D)**

❖ **प्रेरक के अन्तर्गत सम्मिलित है-** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) प्रोत्साहन (B) आवश्यकताएँ
(C) प्रबल प्रेरणा (D) उपर्युक्त सभी **(D)**

❖ एक आन्तरिक मानसिक दशा जो किसी व्यवहार को आरम्भ करने, तथा बनाए रखने को प्रवृत्त करती है, कहलाती है : *[School Lect. Exam-2013]*

(A) अभिरुचि (B) अभिधारणा
(C) अभिवृत्ति (D) अभिप्रेरणा **(D)**

❖ एक छात्र बोर्ड परीक्षा के लिए कठिन परिश्रम कर रहा है। उसके पिता ने उसे अच्छे अंक आने पर मोटर साइकिल देने का वादा किया है। इसका अर्थ है- *[School Lect. Exam-2013]*

(A) आन्तरिक प्रेरणा (B) बाह्य प्रेरणा
(C) गणितीय प्रेरणा (D) आन्तरिक तथा बाह्य प्रेरणा **(B)**

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 5 बाल विकास

## बाल विकास स्मरणीय तथ्य–

- बाल विकास का वैज्ञानिक अध्ययन – पैस्टालॉजी ( 1774 ई. )
- बाल विकास का सर्वप्रथम अध्ययन – जॉन लॉक व थॉमस होब्स ने किया।
- रूसो ने अपनी पुस्तक 'ईमाइल' ( रूसों का काल्पनिक शिष्य ) में बच्चों की शिक्षा का अध्ययन किया है।
- बाल अध्ययन आन्दोलन की शुरूआत – अमेरिका (न्यूयार्क 1893 ई०) स्टेनले हॉल ने की है।
- दो समितियों की स्थापना की ( स्टेलने हॉल ) –
  (1) बाल अध्ययन समिति
  (2) बाल कल्याण समिति

  नोट :- बाल विकास का प्रश्नावली विधि द्वारा सर्वप्रथम अध्ययन करने वाले – स्टेनले हॉल, पत्रिका – 'पेडो लोजिकल सेमेनरी'
- प्रथम बाल सुधार गृह की स्थापना – अमेरिका ( न्यूयार्क 1887 )
- प्रथम बाल निर्देशन स्थापना – विलियम हिली, शिकागो में ( 1909 )
- भारत में बाल अध्ययन की शुरूआत – 1930 ई ( ताराबाई मोडेक द्वारा)
- भारत में गिजू भाई बधेका ने मॉण्टेसरी से प्रभावित होकर 1920 में बाल मंदिर संस्था ( गुजरात) में स्थापित की।
- जेम्स ड्रेवर – बालमनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसके जन्म से परिपक्वावस्था तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन होता किया जाता है।
- आइनजेक – बाल मनोविज्ञान का संबंध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के विकास से है।
- मारिया मॉण्टेसरी – बालक में सच्ची शक्ति का निवास होता है उसकी मुस्कराहट ही सामाजिक प्रेम व उल्लास की आधारशीला है।
- फ्रोबेल – बालक स्वयं विकासोन्मुख होने वाला पौधा है।
- गैरेट – आनुवांशिकता व वातावरण एक दूसरे के सहयोगी हैं दोनों ही बालक की सफलता के लिए अनिवार्य है।

## बाल विकास की प्रकृति/उपागम–

1. प्रयोगात्मक उपागम – इस उपागम द्वारा विकास की विभिन्न समस्याओं के अध्ययन में कार्य कारण संबंध को जानने का प्रयास किया जाता है।
2. दैहिक उपागम (Physialogical Approach) – इसके अनुसार नाड़ी संस्थान (nervous system) व्यक्ति के शरीर की संपूर्ण क्रियाओं को नियंत्रित करता है। इसके द्वारा गर्भस्थ शिशु व शिशुओं के व्यवहार की समस्याओं का समाधान किया जाता है।
3. विकासात्मक उपागम – इस उपागम की विभिन्न अवस्थाओं में बालक के विकास की मात्रा, गति व विशिष्टताओं की जानकारी प्रदान की जाती है।
4. व्यक्तित्व उपागम – व्यक्तित्व के शीलगुणों आधार पर व्यक्ति के व्यवहार, समायोजन, अभिवृत्ति व आदतों का अध्ययन किया जाता है।

## बाल अध्ययन की विधियाँ–

1. क्रमबद्ध चरित्र लेखन विधि – प्रेयर
2. निरीक्षण – वाटसन
3. प्रयोगात्मक विधि – विलियम वुण्ट
4. प्रश्नावली – सुकरात/वुडवर्थ
5. साक्षात्कार
6. व्यक्ति इतिहास – टाईडमैन
7. समकालीन व दीर्घ कालीन विधि
8. लम्बात्मक विधि के जनक – कार्ल सी. गैरिसन

## बाल विकास का क्षेत्र/वृद्धि व विकास के आयाम (Aspects of Development)–

1. शारीरिक विकास (Physical) – ऊँचाई, भार, मांसपेशियां, स्नायुमण्डल, हड्डियां, रक्तसंचार, ग्रन्थियों का विकास, दाँत, हड्डियाँ, हाथ, पैर, फेफड़े सभी का विकास।
2. मानसिक विकास (Mental) – चिन्तन, तर्क, कल्पना, स्मृति, समस्या समाधान, जिज्ञासा, बुद्धि प्रत्यक्षीकरण आदि।
3. सामाजिक विकास (Social) – समान नियम, परम्परा, मूल्यों सहयोग आदि का विकास
4. संवेगात्मक विकास (Emotional) – संवेगात्मक व्यवहार का विकास जैसे – प्रेम, क्रोध, भय आदि।
5. नैतिक विकास (Moral) – नैतिक मूल्यों का विकास
6. मनोगत्यात्मक विकास (Motor Skill) – चलना, दौड़ना, नृत्य करना आदि गामक क्रिया, शक्ति, गति व स्पष्टता का विकास, लिखना आदि।
7. सौन्दर्यात्मक विकास (Aesthetic Development) – सौंदर्यांतमक भाव व कला का विकास।
8. भाषात्मक विकास (Language Development) –

## परिभाषाएँ–

- क्रो एण्ड क्रो – 'बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें गर्भाकाल से लेकर किशोरावस्था के प्रारम्भ तक का अध्ययन किया जाता है।'
- मुनरो – विकास परिवर्तन श्रृंखला की वह अवस्था है जिसमें बच्चा भ्रूण अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक गुजरता है।
- अभिवृद्धि क्या है?

  शरीर तथा उसके अवयवों में होने वाला 'मात्रात्मक' परिवर्तन
- हरलॉक – विकास व्यक्ति के नवीन विशेषताओं व योग्यता को प्रस्फुटित करता है।
- विकास क्या है?

  क्रमशः व क्रमिक जैविकीय परिवर्तन

  वृद्धि + क्षमता + परिपक्वता + वातावरण के साथ अन्त:क्रिया है।

  शरीर तथा मन में होने वाला सभी प्रकार का परिवर्तन विकास कहलाता

Scanned with CamScanner

है। (मात्रात्मक व गुणात्मक)

- हरलॉक :- परिवर्तनों की प्रगतिशील श्रृंखला जो परिपक्वता व अनुभव के परिणाम स्वरूप होती है विकास कहलाता है।
- परिपक्वता क्या है :-
- गैसले - बालक में होने वाली शारीरिक प्रक्रिया जो स्वतः व आनुवंशिक रूप से निर्धारित तथ्यों द्वारा निर्देशित होती है।

| अभिवृद्धि (Growth) | विकास (Development) |
|---|---|
| 1. मात्रात्मक | मात्रात्मक + गुणात्मक |
| 2. मध्य किशोरावस्था तक (निर्धारित समय) | जीवन पर्यन्त |
| 3. अभिवृद्धि केवल शारीरिक परिवर्तनों को व्यक्त करता है। | सभी प्रकार के परिवर्तन - शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, मनोगत्यात्मक |
| 4. अभिवृद्धि एकीकृत नहीं होती है। विकास प्रक्रिया का एक भाग होती है। | विकास एकीकृत होता है क्योंकि ये सभी पहलुओं को आपस में संबंधित करके चलता है। |
| 5. संरचना में सुधार से संबंधित | संरचना व कार्य में सुधार करते। |
| 6. माप का विषय | मूल्यांकन का विषय |
| 7. वृद्धि वातावरण पर निर्भर | विकास वातावरण व जीवन दोनों पर निर्भर |

## विकास तथ्य (विशेष)–

- विकास लचीला व संशोधन योग्य होता है।
- गैसेल - विकास का अवलोकन, मूल्यांकन कुछ सीमा तक 3 रूपों शरीर रचनात्मक, शरीर क्रिया विज्ञानात्मक व व्यवहारात्मक में मापन किया जाता है।
- सोरेन्सन - विकास परिपक्वता व कार्यपरक सुधार की प्रक्रिया है जो गुणात्मक, परिमाणात्मक परिवर्तनों के फलस्वरूप होती है।
- विकास का अर्थ - अधिक प्रगति, अधिक प्रकटीकरण व अधिक परिपक्वता की ओर जाना है।
- हरलॉक - विकास व्यक्ति में नवीन विशेषताओं व गुणों को प्रस्फुटित करता है।
- प्रभाविकता व वियोग का नियम - मेंडल ने दिया है।
- विकास सांस्कृतिक परिवर्तन से प्रभावित होता है।
- विकास की प्रत्येक अवस्था में जोखिम होता है।
- विकास संचयी होता है।
- विकास स्वीकृत प्रक्रिया (Integrated Process) - हरलॉक
- प्रत्येक विकासात्मक अवस्था में समाज बच्चों से कुछ उम्मीद करता है जिसे सामाजिक प्रत्याशा कहा जाता है। हेविगहर्स्ट ने इसे विकासात्मक पाठ कहा है।
- प्रारम्भिक विकास परवर्ती विकास से महत्वपूर्ण होता है। (5-6 वर्ष ज्यादा महत्वपूर्ण)
- विकास परिपक्वता व सीखने का परिणाम है।
- विकास स्वीकृत होता है।
- विकास निर्वात में नहीं घटित होता है यह विशिष्ट सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ में सन्निहित होता है।
- ब्रानफेन ब्रेनर का विकास का परिस्थिति परक दृष्टिकोण विकास में परिवेश की भूमिका पर बल देता है।
- विकास ऐतिहासिक दशाओं से भी प्रभावित होता है।
- विकास व्यक्तिगत प्रक्रिया है।

## बाल विकास से संबंधित महत्त्वपूर्ण मान्यताएँ–

(Important assumptions related to child development)

1. जैविक परिपक्वता की मान्यताएं -
   प्रमुख प्रतिपादक - स्टेल हॉल, गैसेल
   इस मान्यता के अनुसार विकास मुख्यतः आनुवंशिकता से प्रभावित है तथा व्यवहार प्राकृतिक नियमों द्वारा तय होता है।
2. व्यवहारवादी सिद्धांत की मान्यताएं -
   प्रमुख प्रतिपादक - जे. बी. वाटसन, बी. एफ. स्किनर
   इस मान्यता के अनुसार पर्यावरण के कारक पालक के विकास में सहायक हैं अर्थात विकास में इंद्रिय अनुभूतियों का गहरा प्रभाव पड़ता है।
3. संज्ञानात्मक विकास संबंधी मान्यता -
   प्रमुख प्रतिपादक - जीन पियाजे
   इस विचारधारा के अनुसार उनके विकास को सर्वाधिक प्रभावित उनकी मानसिक क्रिया करती है।
4. सामाजिक सांस्कृतिक विकास संबंधी मान्यताएं -
   प्रमुख प्रतिपादक - लेव वाईगोतस्की
   यह बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र की नवीनतम विचारधारा है, जो बाल विकास में सामाजिक व सांस्कृतिक कारकों को महत्वपूर्ण मानती है।

## बाल-विकास के सिद्धांत (Principles of Child Development)–

1. सतत् विकास का सिद्धांत – हरलॉक (विकास निरन्तर चलता रहता है। गर्भाधान से मृत्यु तक )
2. अंगों की गति में भिन्नता का सिद्धांत - सिर का विकास पहले, हाथ पैर का अंत में।
3. अवस्थाओं में गति की भिन्नता का सिद्धांत - शैशवावस्था व किशोरावस्था में तीव्र होता है।
4. विकास की दिशा का सिद्धांत /मस्तकोधमुखी सित। (सिर से पैर की और लम्बवत करना होता है।) विकास निश्चित दिशा में होता है।

Scanned with CamScanner

5. **केन्द्र से दूर की ओर विकास का क्रम** केन्द्र से प्रारम्भ होकर फिर बाहरी विकास जैसे पहले रीढ़ की हड्डी का विकास, फिर भुजाओं , बाद मे सम्पूर्ण विकास होता है। (निकट से दूर सिद्धान्त)
6. **समान प्रतिमान का सिद्धांत** - सम्पूर्ण मनुष्य जाति का विकास एक ही क्रम से होता है। (सिर से पैर)
7. **एकीकरण का सिद्धांत** - पहले सम्पूर्ण अंग को, फिर अंग के भागों को, फिर दोनों में समन्वय स्थापित कर लेना।
8. **विकास की भविष्यवाणी** (पूर्वानुमेय) की जा सकती है। वृद्धि व विकास गति देखकर आगे बढ़ने की भविष्यवाणी की जा सकती है।
9. **व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सिद्धांत** - प्रत्येक बालक का विकास अलग-गति से होता है।
10. **वंशानुक्रम : - वातावरण की अन्तःक्रिया का सिद्धांत** - विकास = वंशानुक्रम × वातावरण
11. **अधिगम व परिपक्वता का सिद्धांत** - अधिगम व परिपक्वता विकास को प्रभावित करते हैं।
12. **परस्पर संबंध का सिद्धांत** - विकास सभी पहलुओं में आपस में संबंधित होते हैं।
13. **वर्तुलाकार प्रगति का सिद्धांत** - विकास रेखीय नहीं होता बल्कि वर्तुलाकार होता है। (पूर्व अनुभवों को समाहित करते हुये)
14. **सामान्य से विशिष्ट क्रियाओं का सिद्धांत** -विकास सामान्य से विशिष्ट होता है।

## वृद्धि और विकास के सामान्य सिद्धान्त (General Principles of Growth and Development)-

1. **क्रमिक विकास का सिद्धान्त (Principle of sequential development) -** विकास निर्धारित क्रमिक रूप में होता है। इसमें निम्न अनुसरण किया जाता है -

- प्रत्येक प्रजाति (पशु या मनुष्य) विकास के सामान्य या विशिष्ट प्रतिमान (General or specificpattern) का अनुसरण करती है। मनुष्यों के मामले में विकास की प्रक्रिया में निश्चित प्रतिमान का अनुसरण किया जाता है।
- इसमें शिरःपुच्छीय दिशा/मस्तकाधोमुखी (सिर से पैरों की ओर) अनुक्रम (Cephalo-caudal sequence) का अनुसरण किया जाता है। जिसका अर्थ है शरीर पर नियन्त्रण और संरचना में सुधार। हम सिर से आरम्भ करके धड़ और बाद में नीचे की ओर बढ़ने लगते है।
- विकास का क्रम रीढ़ की हड्डी के अनुक्रम (Proximodistal sequence) से शुरू होता है और फिर बाह्य विकास होता है, का अनुसरण किया जाता है अर्थात् पहले व्यक्ति की सुषुम्ना (Spinal cord) विकसित होती है और फिर बाहर की ओर विकास होता है।

2. **सुव्यवस्थित विकास का सिद्धान्त (Principle of orderly development) -** विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ता है। उदाहरण के लिए बालक प्रारम्भ में सभी को पापा कहता है बाद में केवल अपने पापा को ही पापा कहता है।
3. **प्रारम्भिक वर्षों में तेज विकास का सिद्धान्त (Principle of rapid development during early years)-** शैशवावस्था में वृद्धि और विकास तेजी से हाता है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास बहुत तेज गति से होता है - इसका अर्थ यह है कि अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा कुछ विशेष अवस्थाओं में विकास अधिक तेजी से होता है।
4. **सतत् विकास/निरन्तर विकास का सिद्धान्त (Principle of continuous development) -** विकास निरन्तर जारी रहता है।
5. **विकास की विभिन्न गति का सिद्धान्त (Principle of different rates of development) -** शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों के लिए विकास विभिन्न दरों से होता है। कुछ क्षेत्रों में शारिरीक वृद्धि तेज हो सकती है जबकि अन्य क्षेत्रों में यह धीमी हो सकती है।
6. **अन्तर्सम्बन्धित विकास का सिद्धान्त (Principle of inter-related development) -** विकास सम्पूर्ण रूप से होता है। उसके शारिरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक और अन्य प्रकार के विकास अन्तर्सम्बन्धित और परस्पर निर्भर होते हैं।
7. **भविष्यवाणी का सिद्धान्त (Principle of predictability) -** विकास के विषय में भविष्यवाणी की जा सकती है।
8. **संचय और पुनरावृत्ति सिद्धान्त (Principle of cumulative and recapitulatory development) -** संचयी का अर्थ है - ''जोड़ते जाना'' विकास में एकल अनुभव का भी महत्त्व होता है और यह व्यर्थ नहीं जाता। विकास की पुनरावृत्ति होती है क्योंकि एक अवस्था की विशेषताओं को अन्य अवस्थाओं में स्थापित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, शैशवावस्था का आत्म-प्रेम किशोरावस्था में भी देखा जा सकता है।
9. **वंशानुक्रम और वातावरण की अन्तर्क्रिया का सिद्धान्त (Principle of interaction of heredity and environment) -** विकास वंशानुक्रम और वातावरण दोनों के कारण होता है। व्यक्ति वंशानुक्रम और वातावरण दोनों की उपज है।
10. **परिपक्वता और अधिगम की अन्तर्क्रिया का सिद्धान्त (Principle of interaction of maturation and learning) -** वृद्धि और विकास दोनों परिपक्वता और अधिगम के परिणामस्वरूप घटित होते हैं। परिपक्वता और अधिगम परस्पर क्रियाशील होते हैं।
11. **अद्वितीय विकास का सिद्धान्त (Principle of unique development) -** इसका अर्थ यह है कि सभी व्यक्तियों में विकास एक समान नहीं होता। (Development is not uniform in all individuals)
12. **भेदात्मक विकास का सिद्धान्त (Principle of differential development) -** बालक और बालिका में भेदात्मक विकास का सिद्धान्त होता है। लड़कों की तुलना में लड़कियां जल्दी परिपक्व होती हैं।
13. **एकीकरण का सिद्धान्त (Principle of integration) -** इस सिद्धान्त का अर्थ है कि बालक का विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर और विशिष्ट से सामान्य की ओर (दोनों ओर) होता है। (Development of the child proceeds both from general to specific and from specific to general)
14. **संघर्ष का सिद्धान्त (Principle of struggle) -** परिपक्वता की ओर विकसित होते समय बालक के मन में विरोधी आवेग ओर मांगें होती हैं। परिपक्वता प्राप्त करने के प्रयास में बालक इनके विरुद्ध संघर्ष करता है।

Scanned with CamScanner

15. **पूर्वानुमान का सिद्धान्त (Principle of anticipation)** – अपने विकास की प्रक्रिया में बालक स्व–मूल्यांकन की अपनी क्षमता का भी उपयोग करता है। भविष्य में वह क्या बनने वाला है, इस बात को ध्यान में रखते हुए वह अपने व्यवहार और आदतों में भी परिवर्तन करता है। इस प्रकार वह विकास की अपनी भावी दिशा का निरन्तर पूर्वानुमान लगाता रहता है।
16. **स्वाभाविक अभिप्रेरणा का सिद्धान्त (Principle of indigenous motivation)** – जैसे-जैसे बालक की करने, सोचने और महसूस करने की क्षमता विकसित होती है, उसे इनको उपयोग में लाने की अभिप्रेरणा होती है और वह जी-जान से यह करता है। जर्सिल्ड (Jersild) ने इसका वर्णन 'स्वाभाविक अभिप्रेरणा' (indigenous motivation) के रूप में किया है।
17. **वर्तुलाकार बनाम रेखीय प्रगति का सिद्धान्त (Principle of spiral versus liner advancement)** – विकास में बालक द्वारा अनुसरण किया हुआ मार्ग सीधा और रेखीय नहीं होता और किसी भी अवस्था में विकास स्थित या नियमित गति से नहीं होता। अत: आगे प्रगति करते समय विकास में वर्तुलाकार नमूने में पीछे की ओर घुमाव होता है और फिर आगे की प्रगति होती है।

## बाल विकास को प्रभावित करने वाले कारक

### 1. वंशानुक्रम–

- **रूथ बेंडिक्ट :-** वंशानुक्रम माता–पिता से संतान को प्राप्त करने वाले गुणों का नाम है।
- **बी.एन.झा :-** 'वशांनुक्रम हमारी जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है।
- **वुडवर्थ :** –'वशांनुक्रम में वे समस्त बातें आ जाती हैं जो जन्म के समय से नहीं अपितु 9 महीने उपस्थित हो जाती हैं।'
- **सोरेन्सन :** –पित्र्यैक बच्चों की प्रमुख विशिष्टताओं व गुणों को निर्धारित करते है।
- **वंशानुक्रम की प्रक्रिया :-**
- **जेम्स ड्रेवर** – माता–पिता की शारीरिक व मानसिक विशेषताओं का संतानों में हस्तान्तरण होना वंशानुक्रम है।
- शरीर का आरम्भ केवल एक कोष से होता है जिसे संयुक्त कोष कहा जाता है। जो मातृ + पितृ कोष से बनता है।

| मातृकोष | + | पितृकोष |
|---|---|---|
| 23 | + | 23 = 46सामान्य बच्चा |
| | | 45 – टर्नर सिण्ड्रोम |
| | | 47 – डाउन्स सिण्ड्रोम (मंगोलिज्म बालक) |
| | | बुद्धि लब्धि (25-50) |

**नोट :-** क्रोमोसोम्स – आकार धागे के समान लम्बा, कुल संख्या 46 होती है प्रत्येक क्रोमोसोम्स में जीन्स पाये जाते हैं। जिसमें आनुवांशिक गुण संचित होते हैं।

- **क्रोमोसोम्स की विसंगति :-**

1. **xyy की असामान्यता** – पुरुष अपराधी बन जाता।
2. **xxy की असामान्यता** – देखने में पुरुष जैसा लेकिन वह अप्रजायी होता है इसे क्लाइनफेल्टर्स सलक्षण कहते हैं।
3. **xo** – महिला होते हुये महिला का गुण नहीं, वह बांझ होती है – टर्नर सिण्ड्रोम

- **आनुवांशिकता के वाहक** – जीन्स, आनुवांशिकता की ईकाई इसमें डीएनए व आरएनए पाये जाते हैं। (दो जीन्स क्रोमोसोम्स में एक साथ एक जगह पर होते हैं। उन्हें होमोलॉग जीन्स कहते है। वह दो जीन्स असमान हो तो वे एलेल्स कहलाते हैं।)
- **वंशानुक्रम के नियम :-**

1. **बीजकोष की निरन्तरता का नियम** – बीजमैन (चूहे पर प्रयोग),
- बीजकोष पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। बीज कोष नष्ट नहीं होता है।
2. **समानता का नियम** – जैसे माता-पिता वैसे ही संतान
3. **विभिन्नता का नियम** – डार्विन व लैमार्क – माता-पिता के गुणों से कुछ भिन्न होगा। (प्राकृतिक चयन का सिद्धान्त भी डार्विन पर दिया। वातावरण में जीवन संघर्ष है यहां वही जीवित रह सकता है जो योग्य है।)
4. **प्रत्यागमन ( विपरीत ) का नियम** – विपरीत गुणों का पाया जाना। जैसे – बाबर का पुत्र हुमायूँ
5. **अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम**– लैमार्क ने उस नियम का विरोध करते हुए कहा है कि माता -पिता द्वारा अपने जीवनकाल में जो गुण अर्जित किया जाता है वो आने वाली सन्तानों में स्थानान्तरित हो सकता है। (जिराफ पर प्रयोग)
6. **वर्ण संकरता का नियम :** – मैण्डल (वंश सूत्रों का नियम भी कहा जाता है।) (आनुवांशिकता का आधारभूत नियम)
प्रयोग – उद्यान मटर
वर्ण संकर प्राणी या वस्तुएँ हमेशा अपने मौलिक स्वरूप की ओर अग्रसर होती है। मैण्डल ने इस नियम के दो उपनियम भी बताये हैं–
- **प्रथक्करण का सिद्धान्त** – जो गुण पहली पीढ़ी में दबा रहता है व समाप्त नहीं होता बल्कि बाद की पीढ़ियों के सदस्यों में दिखाई देता है।
- **स्वतंत्र छंटाई का सिद्धान्त** – एक आनुवांशिक गुण का वितरण दूसरे वितरण अनुवांशिक गुण के वितरण से प्रभावित होता है। वह स्वतंत्र होता है।
7. **बायोमेट्री सिद्धांत** –
- **गाल्टन** – वर्तमान माता-पिता नहीं बल्कि बालक के सभी पूर्वज घटते हुये प्रभाव के आधार पर कुछ न कुछ योगदान जरूर देते हैं।

- **वंशानुक्रम का प्रभाव :-**

1. **शारीरिक संरचना पर प्रभाव** – कार्ल पियरसन ने लम्बाई, रंग आदि का उदाहरण दिया।
2. **मानसिक विकास पर प्रभाव** – मार्टिन कालिकाक ने अध्ययन किया तथा गाडर्ड ने बल दिया।
3. **व्यावसायिक योग्यता पर प्रभाव** – कैटेल ने अध्ययन किया ।
4. **सामाजिक स्थिति पर प्रभाव** – विनशिप ने अध्ययन किया।
5. **चरित्र व महानता पर प्रभाव** – डगडेल – ज्यूक परिवार का अध्ययन किया व बल दिया।
6. **मूल शक्तियों पर प्रभाव** – थॉर्नडाइक
7. **प्रजाति की श्रेष्ठता पर बल** – क्लार्क

### 2. वातावरण–

- **एनास्टसी** –वातावरण वह वस्तु है जो पित्र्येको के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु को प्रभावित करती है।

Scanned with CamScanner

Since 1949 आर.बी.डी. "ये नाम ही विश्वास है...."

- जे.एस. रॉस –'वातावरण वह बाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।
- वुडवर्थ – 'वातावरण में वे समस्त बाह्य तत्व आ जाते हैं जिन्होंने बालक को जन्म से प्रभावित किया है।'
- बोरिंग, लेगफील्ड, वेल्ड – जीन्स के अलावा प्रत्येक कारक वातावरण है।
- जे.बी.वाट्सन – 'मुझे चाहे जो बालक दे दो आप जो कहोगे उसे मैं वो बना दूँगा।'
- वातावरण का प्रभाव :-

1. शारीरिक विकास पर प्रभाव
2. मानसिक विकास पर प्रभाव
3. सामाजिक विकास पर प्रभाव
4. संवेगात्मक विकास पर प्रभाव
5. सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर प्रभाव

- वुडवर्थ – मार्विस – 'वातावरण में समस्त बाह्य तत्व आ जाते है जिन्होंने बालक को जन्म से प्रभावित किया है।'
- वुडवर्थ :- वंशानुक्रम आत्मा है व वातावरण शरीर दोनों एक – दूसरे के पूरक हैं।'
  वशानुक्रम व वातावरण का समान महत्त्व है दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।
- वुडवर्थ :- वंशाक्रम × वातावरण का परिणाम विकास होता है। इसकी तुलना बीज (वंशानुक्रम) व धरती (वातावरण से किये)

3. बुद्धि का प्रभाव :-बालक का मानसिक विकास होगा सम्पूर्ण विकास अच्छा होगा।
4. लिंग का प्रभाव :- लड़कियों का विकास जल्दी होता है।
5. अन्तः स्रावी ग्रंथियों का प्रभाव :- जैसे पीयूष ग्रंथि के कम सक्रिय होने पर व्यक्ति बौना हो जाता है तथा अधिक होने पर अत्यधिक लम्बा हो जाता है। थाइराइड ग्रन्थि के अधिक होने पर तनाव, चिन्ता व उत्तेजना अधिक होती है। थाईमस ग्रन्थि की अधिक होने पर शारीरिक व मानसिक विकास बाध्य होता है।
6. जन्म के क्रम का प्रभाव – मध्यम जन्म क्रम के बालक का विकास अच्छा होता है प्रथम की अपेक्षा।
7. सन्तुलित भोजन का प्रभाव
8. भंयकर रोग या चोट का प्रभाव
9. मनोवैज्ञानिक कारक – रुचि, आदत, महत्त्वाकांक्षा।
10. सामाजिक व सांस्कृतिक कारक – परिवार, पड़ोस, मित्र-साथी, स्कूल, रेडियो, टी.वी. मन्दिर, वेशभूषा, इन्टरनेट

## बाल विकास की अवस्थाएँ–

मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिकों गर्भधारण से लेकर सम्पूर्ण जीवनकाल को 10 भागों में विभाजित किया है–

1. पूर्व प्रसूतिकाल (Prenatal Period) – यह गर्भधारण से जन्म तक (यह भी 3 भागों में होता है, 270/280 दिन)
   1. बीजावस्था – 2 सप्ताह
   2. भ्रूणावस्था – 2 सप्ताह के 2 माह
   3. गर्भावस्था – 2 माह से जन्म

   विशेष – प्रसव पूर्व अवस्था में विकास माता की विशेषताओं से प्रभावित होता है। जैसे माँ की आयु, पोषक आहार, संवेगिक स्थिति, मादक द्रव्य, विकिरण प्रदूषण का प्रभाव पड़ता है।
2. शैशवावस्था (Infancy) – जन्म से 2 वर्ष (सामान्यत सभी ने स्वीकार किया है।)

   नोट : कुछ मनोवैज्ञानिक इसे जन्म से प्रथम 10-14 दिन माना है।
3. बचपनावस्था (Babyhood) – कुछ मनोवैज्ञानिक जो शैशवावस्था को जन्म से 14 दिन मानते है उन्होंने इसका उल्लेख किया है व कार्यकाल 2 सप्ताह से 2 वर्ष माना है।
4. बाल्यावस्था (Childhood) – 2 वर्ष से 10-12 वर्ष तक बालिका में 10 वर्ष बालक मे 12 वर्ष

   दो भाग –

   (1) प्रारंभिक बाल्यवस्था – 2 वर्ष से 4 वर्ष तक

   (2) उत्तर बाल्यवस्था – 6 से 10 वर्ष – बालिका, 6 – 12 बालक
5. तरूणवस्था/प्राक किशोरवस्था (Puberty or pre Adolescence) – बालिका में 11 से 13 वर्ष व बालक में 12 से 14 साल।
6. प्रारंभिक किशोरवस्था (Early Adolescence) – 13-14 वर्ष से 17 वर्ष तक

   शारीरिक व मानसिक विकास अधिकतम।
7. परवर्ती किशोरवस्था (Later Adolescence) – 17 से 19-20 वर्ष

   17 से 19-20 वर्ष तक – बालक शारीरिक व मानसिक रूप से पूर्व स्वतंत्रा/योजना बनाना प्रारंभ।
8. प्रारंभिक वयस्कावस्था (Early Adulthood) – 21 वर्ष से 40 वर्ष तक

   गृहस्थ जीवन का प्रारूप
9. मध्यवस्था – 40-60 वर्ष

   पूर्व प्राप्त उपलब्धि व आकांक्षा को मजबूत बनाया।
10. सठियावस्था/बुढ़ापा (Old age) – 60 वर्ष से मृत्यु – शारीरिक मानसिक प्रारम्भ।

### अन्य विद्धवानों के अनुसार अवस्थाएँ :-

- कोल के अनुसार विकास की अवस्थाएं –

| | | |
|---|---|---|
| 1. | शैशवावस्था | – जन्म से 2 वर्ष तक |
| 2. | प्रारम्भिक बाल्यावस्था | – 2 से 5 वर्ष तक |
| 3. | मध्य बाल्यावस्था | – बालक 6 से 12, बालिका 6 से 10 |
| 4. | पूर्व किशोरावस्था | – बालक 13 से 14, बालिका 11 से 12 |
| 5. | प्रारम्भिक किशोरावस्था | – बालक 15 से 16, बालिका 12 से 14 |
| 6. | मध्य किशोरावस्था | – बालक 17 से 18, बालिका 15 से 17 |
| 7. | उत्तर किशोरावस्था | – बालक 19 से 20, बालिका 18 से 20 |
| 8. | प्रारम्भिक प्रौढ़ अवस्था | – 21 से 34 वर्ष |
| 9. | मध्य प्रौढ़ अवस्था | – 35 से 49 वर्ष |
| 10. | उत्तर प्रौढ़ अवस्था | – 50 से 64 |
| 11. | प्रारम्भिक वृद्धावस्था | – 65 से 74 |
| 12. | वृद्धावस्था | – 75 से लगातार |
| विशेष | – पूर्व प्रसूतिकाल | – गर्भाधारण से जन्म तक |

## सामान्य वर्गीकरण–

| | | |
|---|---|---|
| 1. | शैशवावस्था | – जन्म से 5 या 6 वर्ष तक |
| 2. | बाल्यावस्था | – 6 से 12 वर्ष तक |
| | प्रारम्भिक बाल्यवस्था | – 2 वर्ष से 4 वर्ष |
| | (तरूण/प्राक किशोर | – लड़कियों में 11-13 वर्ष, लड़कों में 12-14 वर्ष) |
| 3. | किशोरावस्था | – बालक 12 से 18/19 वर्ष (पूर्व किशोरावस्था 12 से 16 तथा उत्तर किशोरावस्था 17 से 19 वर्ष तक) |
| 4. | प्रौढ़ अवस्था | – 19 वर्ष के बाद। |

Scanned with CamScanner

✦ **शैले के अनुसार :-**
1. शैशवावस्था – 0 से 5 वर्ष
2. बाल्यावस्था – 6 से 12 वर्ष
3. किशोरावस्था – 13 से 18 वर्ष

✦ **रॉस के अनुसार :-**
(a) शैशवावस्था – 1-3 वर्ष
(b) पूर्व बाल्यावस्था – 3-6 वर्ष
(c) उत्तर-बाल्यावस्था – 6-12 वर्ष
(d) किशोरावस्था – 12-18 वर्ष

✦ **हरलॉक के अनुसार :-** बाल विकास और बाल अध्ययन की दृष्टि से हरलॉक के द्वारा किया गया वर्गीकरण सामान्य माना गया है –
1. गर्भावस्था – गर्भाधान से जन्म तक
2. शैशवावस्था – जन्म से दो सप्ताह तक
3. बचपनावस्था – तीसरे सप्ताह से 2 वर्ष तक
4. पूर्व-बाल्यावस्था – 3 वर्ष से 6 वर्ष तक
5. उत्तर-बाल्यावस्था – 7 वर्ष से 12 वर्ष तक
6. वय: संधि – 12 वर्ष से 14 वर्ष तक
7. पूर्व-किशोरावस्था – 13-14 से 17 वर्ष तक
8. उत्तर-किशोरावस्था – 18 से 21 वर्ष तक
9. प्रौढ़ावस्था – 21 वर्ष से 40 वर्ष तक
10. मध्यावस्था – 41 वर्ष से 60 वर्ष तक
11. वृद्धावस्था – 60 वर्ष के बाद

✦ **अर्नेस्ट जोन्स का वर्गीकरण :-**
1. शैशवकाल – जन्म से 5 या 6 सप्ताह तक
2. बाल्यकाल – 6 से 12 वर्ष तक
3. किशोरावस्था – 12 से 18 वर्ष
4. प्रौढ़ावस्था – 18 वर्ष के बाद

✦ **कॉलसनिक का वर्गीकरण :-**
1. गर्भाधान से जन्म तक – जन्म पूर्वकाल
2. शैशवकाल – जन्म से 3 या 4 सप्ताह तक
3. आरम्भिक शैशवकाल – 1 माह से 15 माह तक
4. उत्तर शैशवकाल – 15 माह से 30 माह तक
5. पूर्व बाल्यकाल – 2.5 से 5 वर्ष तक
6. मध्य बाल्यकाल – 5 वर्ष से 9 वर्ष तक
7. उत्तर बाल्यकाल – 9 वर्ष से 12 वर्ष तक
8. किशोरावस्था –12 से 15 वर्ष तक
9. उत्तर किशोरावस्था – 15 वर्ष से 21 वर्ष तक

**रिचर्ड बरेट्ट के अनुसार मनोवैज्ञानिक विकास की अवस्था का वर्गीकरण**

| मनोवैज्ञानिक विकास की अवस्थाएं | समयावधि | प्रमुख विशेषताएं/आवश्यकताएं | मूल्य की प्रमुखता |
|---|---|---|---|
| जीवित अवस्था (Surviving Stage) | जन्म से 2 वर्ष तक | मनोदैहिक आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए प्रयास करना जिससे वह अपने आप को जीवित व स्वस्थ रख सके। | अस्तित्व परक |
| समनुरूपता अवस्था (Conforming Stage) | 2 से 8 वर्ष | अपने परिवार, परिचित एवं समुदाय के पास रहना जहाँ वह अपने आप को सुरक्षित एवं संरक्षित महसूस करे। | निर्भयत्व या सुरक्षा |
| विभेद अवस्था (Integrating Stage) | 8 से 24 वर्ष तक | अपने कौशल और प्रतिभा का विकास व प्रदर्शन किसी विशेष समूह का अंश बनने हेतु करना। | विश्वास या अभद्र |
| एकीकरण अवस्था (Integrating Stage) | 25 से 39 वर्ष तक | अपनी पहचान को स्थापित करना, विश्वासों व मूल्यांक पर आधारित जीवन जीना तथा अपने आप को साधन संपन्न बनाना। | स्वतंत्रता |
| एकीकरण अवस्था (Integrating Stage) | 40 से 49 वर्ष तक | अपनी प्रतिभाओं व योग्यता को अभिव्यक्त करना तथा स्वयं को पूर्ण संसाधन व साधन युक्त बनाना। | सत्यनिष्ठा या समेकता |
| एकीकरण अवस्था (Integrating Stage) | 50 से 59 वर्ष तक | उन लोगों के प्रति सहयोग का भाव होना जो समान आचार-विचार व मूल्य रखते हो। | अभिदान या सहयोग |
| सेवारत अवस्था (Serving Stage) | 60 + वर्ष तक | मानवता एवं प्रकृति के कल्याण व भलाई हेतु कार्य व चिंतन युति | सामाजिक न्याय |

Scanned with CamScanner

## शैशवावस्था (Infancy Period) ( 0 से 6 वर्ष )

- ✦ शैशवावस्था - (जन्म से 2 वर्ष)
- ✦ पूर्व बाल्यावस्था - (2 से 6 वर्ष) (प्राक स्कूल अवस्था) (प्रारम्भिक बाल्यावस्था)
- ✦ **महत्त्वपूर्ण कथन -**
  - जीवन का आधार शिला व महत्त्वपूर्ण काल
  - अतार्किक चिन्तन की अवस्था
  - बक्की अवस्था - कुछ न कुछ बोलना। (पूर्व बाल्य अवस्था)
  - खिलौनों की आयु (पूर्व बाल्यावस्था)
  - अजीबो गरीब अवस्था
  - सीखने का आदर्श काल - वेलन्टाइन
  - खतरनाक काल या अपीली काल - हरलॉक
- ✦ **न्यूमैन** - '5 वर्ष की अवस्था बालक के शरीर व मस्तिष्क के लिये ग्रहणशील होती है।'
- ✦ **फ्रायड** - 'बालक को जो कुछ भी बनना होता है वह प्रथम 4 या 5 वर्षों में बन जाता है।'
- ✦ **एडलर** - शिशु बाल जीवन ढंग के लिए तैयार करता है।
- ✦ **स्ट्रेंग** - 'प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन की आधारशिला रखता हैं।'

### विशेषताएँ

1. शारीरिक व मानसिक विकास की तीव्रता (वृद्धि व विकास की तीव्र गति शुरूआत के 3 वर्षों में)

✦ **गुडएनफ** - 'बालक का जितना भी मानसिक विकास होता है उसका आधा प्रथम तीन वर्षों में हो जाता है।'

2. काल्पनिक जगत् में निवास - कल्पना की सजीवता (उपजाऊ कल्पना (Fertile imagination) परियों की कहानियां)
3. दूसरों पर निर्भर होने की प्रवृति - माता-पिता पर
4. आत्म प्रेम की प्रवृत्ति
5. आत्म गौरव की प्रवृत्ति (Self Assertion)
6. नैतिकता का अभाव
7. दोहराने की प्रवृत्ति
8. सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता
9. मूल प्रवृत्तियों पर आधारित व्यवहार
10. संवेगों की अभिव्यक्ति (संवेगात्मक अस्थिरता) - स्वाभाविक संवेग रोक नहीं सकता है।
11. स्वार्थी व आत्मकेन्द्रित
12. जिज्ञासा की प्रवृत्ति
13. अनुकरण की प्रवृत्ति
    अंहभाव - (Ego Centrism) (2 - 6 वर्ष)
14. एकान्त में व साथ खेलने की प्रवृत्ति
15. काम प्रवृति - अंगूठा चूसना, स्तनपान करना - पूर्वाग्रह (2 - 6 वर्ष)
16. नकारात्मक व्यवहार (2 - 6 वर्ष)
17. धारणाओं व प्रत्यक्ष ज्ञान का विकास - यौन विरोध - प्रारम्भिक बाल्यवस्था
18. सामाजिकता का अभाव

**नोट :-** 3 वर्ष में सामाजिक खेल खेलता है।

19. रटने पर आधारित स्मृति
20. प्रतिवर्त व सहज क्रिया (Reflex Action) - चूसना, निगलना, करतल करना आदि।
21. उद्देश्य पूर्ण क्रिया (2 वर्ष से प्रारम्भ)
22. लिंग पहचान की समझ (3 वर्ष)

**नोट :-**

- प्रारम्भिक बाल्यावस्था (2-6 वर्ष) इसमें बालकों की रुचि खिलौनों में अधिक होती है इसे प्राक स्कूली अवस्था कहा जाता है। इसे उत्सुकता व अन्वेषण की अवस्था भी कहा जाता है। इसमें अनुकरण की प्रवृति तेज होती है।
- प्रारम्भिक बाल्यवस्था में सहयोग प्रतिस्पर्धा,उदारता, सामाजिक अनुमोदन, सहानुभूति, निर्भरता, अनुकरण प्रमुख सामाजिक व्यवहार होते हैं तथा आक्रामकता नकारात्मकता, झगड़ा करना, दूसरों को चिढ़ाना, भयभीत करना प्रमुख असामाजिक व्यवहार होते है। इस अवस्था को समूह पूर्व या स्कूल पूर्व की अवस्था कहा जाता है।
- प्रारम्भिक बाल्यावस्था में मानसिक में जीवन मृत्यु का ज्ञान, भार संख्या, दूरी, समय, यौन भूमिका के बारे में सम्प्रत्य बन जाता है। इसे प्रश्न की अवस्था व प्राक् परिचलन अवस्था भी कहा जाता है।
- प्रारम्भिक बाल्य अवस्था में क्रोध, भय, ईर्ष्या, उत्सुकता, खुशी, दुःख व अनुराग स्वयं प्रधान होते हैं।

### शैशवावस्था में शिक्षा–

✦ **वाटसन :-** शैशवावस्था में सीखने की सीमा व तीव्रता सभी अवस्थाओं से अधिक होती है।

1. उचित वातावरण व उचित व्यवहार
2. अच्छी आदतों के निर्माण की शिक्षा
3. वास्तविक वस्तुओं द्वारा शिक्षा
4. आत्म निर्भरता की शिक्षा - स्वयं करने का अवसर
5. चित्र व कहानियों के माध्यम से शिक्षा
6. क्रिया व खेल विधि का प्रयोग

- **स्ट्रेंग** - बालक अपने व संसार के बारे में अधिकांश बातें खेल द्वारा सीखते हैं।

7. जिज्ञासा की सन्तुष्टि
8. सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा
9. मूल प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन
10. विभिन्न अंगों की शिक्षा।
11. मातृभाषा से शिक्षा।

✦ **शैशवावस्था के विकासात्मक कार्य (Development Tasks of Infancy) -**

- रेंगना, खड़ा होना, चलना, दौड़ना, कूदना, फेंकना, आदि सीखना।
- साधारण रूप से खाने-पीने आदि की क्रियाओं को सीखना।
- शारीरिक रूप से अपना संतुलन बनाये रखना सीखना।
- मल-मूल के विसर्जन पर नियन्त्रण करना सीखना।
- सही गलत में विभेद करना (2 - 6 वर्ष)
- माता-पिता, भाई-बहन व अन्य के साथ सांवेगिक संबंध बनाना। (2 - 6 वर्ष)

Scanned with CamScanner

## बाल्यावस्था (Childhood) ( 6 से 12 वर्ष )

**महत्वपूर्ण कथन :-**

- जीवन का निर्माण कार्यकाल – फ्रायड
- जीवन का अनोखा काल – कॉल व ब्रुश
- प्रतिद्वन्द्वात्मक सामाजीकरण की अवस्था – किलपैट्रिक
- मिथ्या परिपक्वता का काल – जे. एस. रॉस
- वैचारिक क्रिया अवस्था – 7 से 12 वर्ष
- विद्यालय की आयु –ब्लेयर जोन्सन ने शैक्षिक आयु कहा है।
- टोली की आयु (गिरोह अवस्था)
- उत्पाती अवस्था (उत्तर बाल्यवस्था)
- सारस अवस्था (उत्तर बाल्यवस्था)
- चुस्ती की आयु (उत्तर बाल्यवस्था)
- गंदी आयु (Dirty Age)
- सृजनात्मक क्रियाओं के प्रारम्भ की अवस्था
- भाषा विकास की तीव्र गति अवस्था (रंग शब्दवाली, समय शब्दावली, मुद्रा शब्दावली, गंदे शब्दों की शब्दावली का विकास)
- मूर्त परिचालन की अवस्था (Concrete Operation)

**विशेषताएँ–**

1. शारीरिक व मानसिक विकास में स्थिरता
2. प्रबल जिज्ञासा की प्रवृत्ति (अद्भुत प्रश्न पूछना)
3. वास्तविकता में प्रवेश
4. सामाजिक व नैतिक मूल्यों का विकास (सामाजिक अनुमोदन)
5. रचनात्मकता की प्रवृत्ति/विधायकता/मौलिकता
6. संग्रह की प्रवृत्ति
7. बर्हिमुखी व्यक्तित्व का विकास
8. काम प्रवृत्ति की न्यूनता
9. निरूद्देश्य भ्रमण की प्रवृति
10. सामूहिक खेलों में रुचि

- स्ट्रेंग – शायद ही कोई ऐसा खेल हो जिसे 10 वर्ष का बालक ना खेलता हो।

11. समलैंगिक मित्रता
12. यथार्थवादी दृष्टिकोण
13. काल्पनिक भय का अन्त
14. तार्किक व वैज्ञानिक कार्यों में रुचि
15. नेतृत्व के गुण की शुरूआत (12 वें वर्ष में)
16. भविष्य की चिन्ता नहीं पायी जाती है।
17. संवेगात्मक स्थिरता व नियंत्रण
18. स्थायीभावों का विकास (Forms of Sentiments)
19. विचार शक्ति का विकास
20. संकल्पना का विकास – लम्बाई व दूरी का ज्ञान
21. भावना ग्रन्थियों का बनना।
22. सुझावग्रहीता व विपरीत सुझाव ग्रहीता (बड़ो के विरुद्ध)
23. सामाजिक सूझ का विकास
24. उत्तरदायित्व की भावना

**बाल्यावस्था की शिक्षा–**

- ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन :– 'बाल्यावस्था वह समय है जब बालक के आधारभूत दृष्टिकोण मूल्यों तथा आदर्शों का निर्माण बहुत कुछ सीमा तक हो जाता है।'

1. भाषा ज्ञान पर बल

- स्ट्रेंग – बालक की भाषा में सर्वाधिक रुचि होती है।

2. संवेगों की अभिव्यक्ति पर बल
3. जिज्ञासा की सन्तुष्टि
4. रचनात्मकता व संग्रह की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन
5. रोचक व उपयोगी पाठ्यक्रम – हास्य, नाटक, वीर पुरूष, साहसी कार्य, भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, चित्रकला, रचना, सुलेख इत्यादि।
6. सामाजिक नैतिक मूल्यों की शिक्षा
7. क्रिया व खेल विधि का प्रयोग
8. पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था

**पूर्व बाल्यावस्था के विकासात्मक कार्य (Development Tasks of Early Childhood) -**

- विभिन्न गामक कौशलों (Motor Skills) जैसे – चलना दौड़ना, कूदना-फॉदना, चढ़ना-उतरना, तीन पहियों की साइकिल चलाना, रस्सी कूदना, फेंकना, पकड़कर छलांग लगाना आदि में प्रवीणता अर्जित करना।
- बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने आदि भाषायी कौशलों से सम्बन्धित आधारभूत समझ रखना।
- लिंग भेद और यौन आचरण सम्बन्धी कुछ साधारण बातों की जानकारी।
- भले बुरे, सही-गलत व्यवहार में अन्तर समझना तथा आत्म चेतना का उदय
- सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश सम्बन्धी उचित संप्रत्ययों का निर्माण
- माँ-बाप के साये से बाहर निकल अपने साथ बालकों की संगत को पसंद करना।
- 'मैं' की भावना के स्थान पर 'हम' की भावना तथा सामूहिक खेलों और कार्यों को महत्त्व देना।
- वस्तुओं में समानता, असमानता की तलाश करने की योग्यता में वृद्धि और उसी के अनुरूप तुलना करने की योग्यता का विकास।
- अपने संवेगों की बाह्य अभिव्यक्ति पर उचित नियन्त्रण करना सीखना।

**उत्तर बाल्यावस्था के विकासात्मक कार्य (Development Tasks of Later Childhood)**

- अपने संवेगों की बाह्य अभिव्यक्ति पर उचित नियन्त्रण करना सीखना।
- विभिन्न प्रकार के इनडोर और आउटडोर गेम्स (Indoor and Outdoor Games) को खेलने हेतु आवश्यक शारीरिक और गामक कौशलों का अर्जन
- अपने हम उम्र साथियों के साथ समायोजित होना।
- उचित यौन व्यवहार और भूमिका निर्वाह की शिक्षा देना।
- स्वयं के प्रति उचित दृष्टिकोण एवं मान्यता बनाना।
- सप्रेषण एवं भाषा कौशलों में प्रवीणता अर्जित करने तथा गणना, आलेख और रचना कार्य में सहायक आवश्यक दक्षता का विकास करना।
- वस्तुओं, व्यक्तियों, विचारों तथा प्रक्रियाओं के बारे में स्कूल तथा सूक्ष्म आधारों को विकसित करना।
- आत्म-चेतना, नैतिकता और मूल्यों का विकास होना।

Scanned with CamScanner

- तर्क, चिन्तन और समस्या समाधान सम्बन्धी क्षमताओं का विकास होना।
- समूह के प्रति भक्तिभाव और लगाव उत्पन्न होना।

## किशोरावस्था (Adolescence) ( 12 से 19 वर्ष )

- पूर्व किशोरावस्था/वयसंधि काल - 12 से 16 वर्ष (एज ऑफ प्यूबर्टी)
- उत्तर किशोरावस्था - 17 से 19 वर्ष
- **महत्वपूर्ण कथन :-**

1. **सामाजिक स्वीकृति की अवस्था**
   - औपचारिक परिचालन की अवस्था
   - अस्पष्ट वैयक्ति स्थिति, वयस्क अवस्था की दहलीज
2. **उलझन व अटपटी अवस्था**
   - समस्या अवस्था, अवास्तविक का समय
3. **बसन्त ऋतु**
   - विशिष्टता की खोज अवस्था (अलग पहचान)
4. **स्वर्णिम काल/Golden Age/सुनहरी अवस्था**
5. **अस्पष्ट व्यक्तिक स्थिति ( ना तो बच्चा ना वयस्क )**
6. **समस्या उम्र/अवास्तविकता का समय**

- **स्टेनले हॉल** - 'तनाव, तूफान व संघर्ष की अवस्था।' भयभीत करने वाली अवस्था है।
- **रोजर** - किशोरावस्था समाज में प्रभावशाली भाग लेने के लिए अभिवृतियों व विश्वासों की प्राप्ति कर सकती है।
- **कुहलन** - 'किशोरावस्था 'बाल्यावस्था व प्रौढ़ावस्था के मध्य परिवर्तन काल है।'
- **किलपैट्रिक** - 'जीवन का सबसे कठिन काल।'
- **बिग एवं हण्ट** - 'किशोरावस्था को व्यक्त करने वाला एक ही शब्द है वह परिवर्तन।'
- **जरशील्ड** - 'किशोरावस्था वह समय है जब विचारशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्व अवस्था की ओर संक्रमण करता है।'
- **ब्लेयर जोन्स व सिम्पसन** - 'किशोरावस्था वह समय है जो बाल्यावस्था के अंत में शुरू तथा प्रौढ़ अवस्था के प्रारम्भ से पहले समाप्त हो जाती है।'
- **स्टेनले हॉल** - 'किशोरावस्था एक नया जन्म है जिसमें श्रेष्ठ विशेषताओं के दर्शन होते हैं।'
- **जीन पियाजे** - 'किशोरावस्था महान आदर्शों व वास्तविकताओं से अनुकुलन का समय है।'
- **क्रो एण्ड क्रो** - 'किशोर वर्तमान तथा भावी जीवन की आशा को व्यक्त करता है।'

### किशोरावस्था के विकास के सिद्धांत-

1. **आकस्मिक विकास का सिद्धांत :-** स्टेनले हॉल (1904 ई.) - परिवर्तन अचानक होते है।
   पुस्तक - एडोलेसन्स
2. **क्रमिक विकास का सिद्धांत :-** थार्नडाइक, किंग व हॉलिंगवर्थ - परिवर्तन धीरे-धीरे होते है।

- **किंग :-** 'जिस प्रकार एक ऋतु के समाप्त होने पर दूसरी ऋतु का आगमन होता है तथा पहली वाली में दूसरी के लक्षण दिखायी देने लग जाते हैं उसी प्रकार बाल्यावस्था व किशोरावस्था एक- दूसरे से संबंधित होती है।'
- **एडोलेसन्स** शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के **'एडोलेसियर'** (परिपक्वता की ओर) से हुई है।
- **हैडोकमेटी रिपोर्ट :-** 11 या 12 वर्ष की अवस्था में बालक की नसों में एक ज्वार उठता है यदि उसे दिशा दे दी जाये तो सफलता अन्यथा विनाश की स्थिति उभरती है।

### किशोरावस्था की समस्याएँ

1. शारीरिक परिवर्तनों की समस्या कोलसेनिक - शरीर व स्वास्थ्य की चिन्ता रहती है।
2. मानसिक विकास में जिज्ञासा की समस्या
3. संवेगों की अस्थिरता की समस्या - क्रोध, घृणा, चिड़चिड़ापन
4. महत्त्वाकांक्षा की समस्या - एक साथ विभिन्न कार्य
5. अपराधी प्रवृत्ति की समस्या
6. मानसिक द्वन्द्व की समस्या - उलझन में रहता है।
7. सामाजिक दबाव की समस्या
8. मादक द्रव्य की समस्या - नशा करना
9. अपचार की समस्या - चोरी करना, झूठ बोलना, घर से भाग जाना।
10. आहार-विकार की समस्या

- **एलोक्सा नरवोसा** - (क्षुदा अभाव)अपने आप को पतला रखने का प्रयास
- **बुलिमिया** - ज्यादा खाना।
- **रोजर :-** 'किशोरावस्था समाज में प्रभावशाली भाग लेने के लिए विश्वासों की प्राप्ति का समय है।'
  शरीर के अवयवों में परिवर्तन - मासिक धर्म, स्वप्न दोष

### किशोरावस्था की विशेषताएँ ( अधिगमकर्ता )-

1. अधिकतम शारीरिक विकास - सभी प्रकार के शारीरिक परिवर्तन
2. अधिकतम मानसिक विकास
3. दिवास्वप्न की प्रवृत्ति
4. व्यक्तिगत व घनिष्ठ मित्रता - वेलन्टाइन
5. संवेगात्मक विकास की प्रबलता - संवेग अस्थिर हो जाते हैं, संवेग अनुभवों में वास्तविकता आती है।
6. समायोजन का अभाव

- **जॉन्स** - किशोरावस्था शैशवावस्था का पुनरावर्तन है।

7. वीर पूजा (नायक पूजा)
8. चिन्ताओं में वृद्धि -
9. रुचियों में परिवर्तन - पूर्व किशोरावस्था में होती हैं।
   सिनेमा, साहित्य, संगीत, खेल व ललित कला आदि।

- **स्ट्रंग :-** '15 वर्ष तक रुचियाँ बदलती रहती हैं इसके बाद स्थिर हो जाती हैं।'

10. समाजसेवा की भावना

- **जे. एस रॉस** - 'किशोर समाज सेवा के आदर्शों का निर्माण तथा पोषण करता है।'

11. समूह के प्रति भक्ति

- **बिग एवं हण्ट** - 'किशोरावस्था में बालकों के प्रत्येक कार्य समूह से प्रभावित होते हैं।'

12. स्थिति व महत्त्व की अभिलाषा:-

- **ब्लेयर जोन्स** - किशोर महत्त्वपूर्ण बनाना, समूह मे स्थिति प्राप्त करना चाहता है।

Scanned with CamScanner

13. स्वतंत्रता एवं विद्रोह की भावना
- कोलसेनिक :- 'किशोर प्रौढ़ों को अपने मार्ग में बाधा समझता है।'

14. अपराध प्रवृति
- वेलेन्टाइन:- 'किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है।'

15. ईश्वर एवं धर्म में विश्वास
16. आत्मसम्मान की भावना
17. आत्मचेतना का विकास – उत्तर किशोरावस्था
18. लिंगीय चेतना – विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण
19. कामप्रवृति की परिपक्वता –

1. आत्मप्रेम (Auto-erocticism) – अपने शरीर से प्रेम (नार्सीसिज्म)
2. समलिंगी कामुकता (Homo Sexuality) – लड़के-लड़कों के साथ/लड़किया-लड़कियों के साथ
3. विषमलिंगी प्रेम (Hetero Sexuality) – लड़के का लड़की के प्रति।

- गेट्स व अन्य – 40 प्रतिशत बालकों का विषम लिंगीय अनुभव होता है।

20. अहम् भाव –

✦ काल्पनिक श्रोता (Imaginary audiance) – दूसरे लोग भी उतने ही ध्यान आकर्षित हैं जितना की वे स्वयं कल्पना करते हैं कि लोग उनकी ओर ध्यान दे रहे हैं।

✦ व्यक्तिगत दन्त कथा (Personal Fabel) – स्वयं के अद्वितीय होने का भाव।

21. नेतृत्व का सर्वाधिक विकास
22. जीवन दर्शन का निर्माण

- कुलहन – किशोरावस्था वह काल है जिसमें लिंगीय चेतना, सामाजिक व्यावसायिक, आदर्श संबंधित समायोजन व माता-पिता पर निर्भरता से मुक्ति की चेष्टा करता है।
- रॉस – काम प्रवृत्ति किशोरावस्था का बुनियादी पक्ष है जो जीवन के मुख्य क्षेत्रों को सींचनी व उपजाऊ बनाती है।

## किशोरावस्था की आकांक्षाएँ (Aspirations of Adolescents)

### आत्म निर्भरता की आकांक्षा :-

1. स्वतंत्रता की आकांक्षा (निर्भरता से) (Freedom)

✦ स्कीनर – किशोर के व्यवहार का अंतिम व महत्त्वपूर्ण स्वरूप व्यक्तित्व प्रौढ़ता की दिशा में बढ़ने से लक्षित होता है।

2. विरोधी लिंग के साथ संबंध की आकांक्षा (यौन)
3. सफलता व उपलब्धि की आकांक्षा
4. आत्म पहचान की आकांक्षा, जीवन दर्शन की आकांक्षा (Aspiration for Self recognition)
5. नये अनुभवों की आकांक्षा (New Experience)
6. समाजसेवा की आकांक्षा – देश व समाज के लिए बलिदान, सेवा कामना।
7. जीवनसाथी की आकांक्षा
8. स्थिति व महत्त्व की आकांक्षा (प्रभुत्व की इच्छा)
9. अनुसंधान की आकांक्षा (Discovery)
10. जीवन के उद्देश्य की आकांक्षा (Goal of Life)
11. आत्मसम्मान व आत्म अवधारणा की आकांक्षा (Self respect and self concept)
12. विश्व को देखने व जानने की आकांक्षा
13. उन्मुक्त वातावरण की आकांक्षा
14. सुरक्षा व सामाजिक स्वीकृति की आकांक्षा

## किशोरावस्था में शिक्षा–

1. निर्देशन एवं परामर्श – निरन्तर प्रयोग।

✦ स्किनर – किशोर को निर्णय करने का अनुभव नहीं होता है अत: निर्देशन व परामर्श दे।

2. अभिप्रेरणा का प्रयोग
3. शारीरिक विकास की शिक्षा – खेलकूद, योग की शिक्षा, स्काउटिंग
4. मानसिक विकास की शिक्षा – करके सीखना, समस्या समाधान विधि, पर्यटन-विधि, वाद-विवाद, पाठ्यसहगामी क्रिया
5. संवेगात्मक विकास की शिक्षा – उदात्तीकरण विधि का प्रयोग, संवेगों का प्रशिक्षण
6. सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा – कोठारी आयोग ने बल दिया
7. जीवन कौशल की शिक्षा (यौन शिक्षा)
8. व्यावसायिक शिक्षा – अच्छे उदाहरण देने चाहिए।
9. उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य सौंपना
10. किशोर के व्यक्तित्व का आदर
11. व्यक्ति विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करना।
12. संवेगशील संबंधों का प्रशिक्षण
13. सुरक्षित वातावरण उपलब्ध करवाना
14. किशोर मनोविज्ञान का ज्ञान
15. सहानुभूति व प्रेम पूर्ण व्यवहार
16. लोकतंत्रीय वातावरण – नेतृत्व का प्रशिक्षण
17. अच्छे उदाहरण देना (स्वयं का)

## किशोरावस्था–हैविंगहर्स्ट के अनुसार विकासात्मक कार्य–

1. किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य (Developmental Tasks of Adolescence)

- दोनों यौन के समान उम्र के साथियों के साथ संबंध बनाना।
- उचित पुरूषोचित व स्त्रियोचित सामाजिक भूमिका सांवेगिक स्वतंत्रता, व्यवसाय का चुनाव करना। जीवन की प्रतियोगिता के लिए बौद्धिक कुशलता अर्जित करना। पारिवारिक जीवन व शादी के लिए तैयार होना।
- सभी प्रकार के खेलकूदों में अच्छी तरह भाग ले सकने हेतु आवश्यक शारीरिक, गामिक तथा बौद्धिक क्षमताओं का समुचित विकास होना।
- स्थूल या सूक्ष्म कार्य व्यापार हेतु सभी तरह के आवश्यक संप्रत्ययों का विकास होना।
- अपने रंग-रूप तथा शारीरिक बनावट से संतुष्ट होकर अपने को अपने सहज रूप में स्वीकार करना, सीखना।
- अपने लिंगानुसार अपेक्षित भूमिका निभाना सीखना।
- अपने सभी लड़के या लड़कियों से नवीन सम्बन्ध या सहयोग स्थापित करने में पहल करना सीखना।
- यौन व्यवहार में परिपक्वता अर्जित करना।
- अपनी एक अलग पहचान बनाने की ओर बढ़ना।
- अधिक आत्मनिर्भरता की ओर उचित कदम बढ़ाना।
- वस्तुओं, व्यक्तियों, स्थान और मूल्यों के प्रति आवश्यक स्थायी भाव विकसित होना।
- सामाजिक, उत्तरदायित्व, नागरिक कर्त्तव्यों को समझकर जनतांत्रिक जीवन जीने के ढंग सीखना।
- समाज, देश, धर्म और मानवता के लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने को तैयार रहने की भावना पैदा होना।
- अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए आगे के शैक्षणिक तथा

Scanned with CamScanner

व्यावसायिक कोर्सों में प्रवेश हेतु अपनी योग्यता तथा क्षमता में वृद्धि करने के प्रति जागरूक रहना।

- अपनी विशिष्ट रुचियों तथा अभिरुचियों की संतुष्टि हेतु आवश्यक कुशलताओं और दक्षताओं का अर्जन करना।
- मानसिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक परिपक्वता की ऊँचाइयों को छूने के लिए प्रयत्नरत रहना।
- सामग्री और भौतिक परिवेश में स्थित वस्तुओं के संदर्भ में साधारण संप्रत्ययों का निर्माण करना सीखना।
- धीरे-धीरे खेल सामग्री की अपेक्षा अपने साथियों पर अधिक ध्यान देना सीखना।
- अने हम उम्र तथा अन्य बड़े बालकों के साथ समय व्यतीत करने में रुचि लेना।
- अपने माता-पिता, भाई-बहिन तथा अन्य के साथ भावानात्मक रूप से रिश्ता बनाने की ओर बढ़ना।

✦ **टेगोर** - मानव मामलों में संसार में 14 वर्ष की आयु से किशोर से अधिक परेशानी वाली कोई चीज नहीं होती।

✦ **विलियम एवं बर्टन** - किशोर एक विचित्र, कठिन, शिष्ट, स्वार्थी, परोपकारी, आदर्शवाली, सहानुभूतिपूर्व व क्रूर व्यक्ति होता है।

### किशोरवस्था के सिद्धान्त-

1. स्टेनेल हॉल का सिद्धान्त - आकस्मिक विकास
2. फ्रायड - मनोलैंगिक विकास का सिद्धान्त
3. बाण्डूरा - सामाजिक - सीखना - किशोरावस्था के व्यवहार की व्याख्या प्रेक्षण सीखने की आधार पर की है।
4. इरिक्सन - मनो सामाजिक विकास सिद्धान्त
5. रूथ बेनडिक्ट/मार्गेरेट मीड - मानव शास्त्रीय सिद्धान्त (संस्कृति को आधार)

### किशोर की अभिरुचियों के प्रकार-

1. मनोरंजनात्मक - खेल सिनेमा, अध्ययन, धूमना।
2. सामाजिक - समूह में रहना, जीविका पार्जन
3. व्यक्तिगत - वसा, रूप, रंग, सजना।
4. शैक्षिक - अध्ययन
5. व्यावसायिक
6. धार्मिक
7. प्रतिष्ठा अभिरुचि

### किशोर के लिए शैक्षिक निर्देशन-

1. किशोर की योग्यता, रुचियों की पहचान व विकास में सहायता करना।
2. पाठ्यसहगामी क्रिया व पाठयक्रम चयन में सहायता करना।
3. व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षण विधियों का चयन। जैसे - पिछड़े के लिए अभ्यास विधि, श्रव्य दृश्य, करके सीखना खेल विधि। प्रतिभाशाली के लिए सह पाठ्यान्तर क्रियाओं में संवर्धन व विविधता लाना।
4. पाठ्यपुस्तकों के चयन में सहायता व पुस्तकालय की विशेष सुविधा।
5. परीक्षा व विषयों की तैयारी के लिए विशेष निर्देशन।
6. विभिन्न शैक्षिक व व्यावसायिक संस्थानों की जानकारी प्रदान करना।

✦ **रॉस** - विषयों का शिक्षण व्यावहारिक ढंग से करते हुए दैनिक जीवन की बातों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित करना।

**विशेष :-**

✦ **जेम्स मार्सिया** - विकासात्मक मनोविज्ञान ये किशोरों के ईगो पहचान के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध है इन्होंने किशोरों के पहचान संकट का अध्ययन किया है इन्होंने पहचान निर्माण की चार दशा का (पहचान संकट, पहचान स्थगन काल, पहचान प्रसार व पहचन उपलिब्ध का विश्लेषण किया) तथा संकट (पहचान विकास में किशोर की विकल्प खोज) तथा प्रतिबद्धता (प्रतिज्ञा) पहचान विकास का हिस्सा का भी अध्ययन किया है।

## शारीरिक विकास (Physical Development)

✦ **विकास के पहलु :-**

✦ **नोट** - शारीरिक परिवर्तनों में ऊँचाई, भार, शारीरिक अनुपात आदि बाह्य परिवर्तनों के साथ आन्तरिक अवयवों

**जैसे** - स्नायु संस्थान, पाचन संस्थान, रक्त व उत्सर्जन संस्थानों में परिवर्तन शामिल।

| | शैशवास्था | | बाल्यवस्था | किशोरावस्था |
|---|---|---|---|---|
| भार | 7.15 - लड़का<br>7.13 - लड़की | औसत<br>7 पौण्ड | 80 - 95 पौण्ड | लड़के का लड़की से 25 पौण्ड ज्यादा होता है। |
| लम्बाई | 20.5 इंच लड़का<br>20.3 इंच लड़की | | सबसे कम वृद्धि होती है। | लड़का 18 - 21 वर्ष तक बढ़ती है।<br>लड़की 16 वर्ष तक बढ़ती है। |
| सिर | कुल शरीर का मस्तिष्क 25 प्रतिशत विकास - 95 प्रतिशत भाग 1/4 - विकास 90%<br>वजन - 350 ग्राम | | विकास - 95 प्रतिशत<br>वजन 1260 ग्राम | भाग 1/8 वां भाग<br>विकास 100 प्रतिशत<br>वजन - 1350 ग्राम |
| हड्डियां | 270 | | 350 | 206 (अस्थिकरण की प्रक्रिया पूर्ण) |
| दांत | 20 पहले नीचे के आते है<br>4 वर्ष तक सभी दांत आ जाते है | | 27-28 (स्थायी दांत)<br>लड़कियों में पहले | 32 प्रज्ञा दन्त |
| मांस पेशिया | कुल 23 प्रतिशत भार | | भार का 27 प्रतिशत | 44-45 प्रतिशत |
| धड़कन | 1 मिनट में 140<br>6 वर्ष तक 100 | | 85 | 72<br>लड़कियों में 69 |

Scanned with CamScanner

नोट :- शैशवास्था के 2-3 वर्षों में शारीरिक गति तीव्र, बाद में मन्द तथा किशोरावस्था के पहले 3 वर्षों में तीव्र हो जाती है।

## शारीरिक विकास-

1. स्नायु संस्थान (Nervous System)
   उपयोगिता - शारीरिक आधार, बीमारियों को समझने, व्यक्तिगत भेद को समझने व भावी विकास की भविष्यवाणी में उपयोगी
   स्नायू संस्थान का विभाजन
   1. बाह्य स्नायु संस्थान
2. केन्द्रीय नाड़ी संस्थान

✦ सुषुणा -
मेरूदण्ड में स्थित यह सहज क्रियाओं, आदत क्रियाओं व स्वतंत्र क्रिया पर नियंत्रण रखता है।

✦ मस्तिष्क -
चेतन व्यवहार पर नियंत्रण

- वृहद मस्तिष्क - मानसिक नियंत्रण का स्थल। कल्पना तर्क, स्मृति का केन्द्र, इन्द्रियों द्वारा वस्तुओं को देखने, समझने, सोचने की योग्यता प्रदान करना, इच्छा व भावना का नियंत्रण।
- लघु मस्तिष्क - वृहद मस्तिष्क के पीछे व नीचे स्थित
- कार्य - मांसपेशियों से संबंधित गति, जैसे - चलना, बैठना, खड़े होना, शरीर संतुलन रखना।

3. पॉनज वेरोली - पिछले मस्तिष्क का भाग, लघु मस्तिष्क को दो स्थलों को आपस में जोड़ता है।
4. मध्य मस्तिष्क/अन्तर मस्तिष्क - लघु मस्तिष्क के उपर जो भाग
   (1) थेलेमस - शरीर की साधारण क्रिया पर नियंत्रण
   (2) हाइपोथेलेमस - भावनाओं की अभिव्यक्ति पर नियंत्रण
5. सुषुरणा शीर्ष (Medulla Oblongata) - यह पिछले मस्तिष्क का भाग पाचन, श्वास क्रिया व रक्त परिभ्रमण व दिल धड़कन का नियंत्रण।
6. स्वतंत्र स्नायु संस्थान - यह अनैच्छिक प्रतिक्रिया, रक्त परिभ्रमण, पाचन, स्व-श्वास क्रिया व ग्रन्थि क्रिया का नियंत्रण।

## विशेष क्रियाएं-

1. रूटिंग -
   गाल को स्पर्श करने पर मुख खोलते हुये सिर को घुमाना (0 - 2 माह तक)
2. मोरो -
   तेज शोर होने पर बालक कमर को मोड़ते हुए भुजा को आगे की ओर फेंकता है, फिर भुजाओं को साथ लाते हुये जैसे कुछ पकड़ रहा हो (2 - 5 माह तक)
3. पकड़ना -
   बालक की हथेली को दबाने पर उंगलियों से पकड़ लेना (1 - 3 माह तक)
4. बेबिन्स्की -
   बालक के पैर को तलवे को ठोकने पर पैर की उंगलियां उपर की ओर जाती हैं फिर मुड़ जाती हैं। (0 - 7 माह तक)

विशेष :-

✦ मेरीडिथ व टेन्नर के अनुसार पूर्व प्रसूति काल व जन्म के 6 माह में शारीरिक गति तीव्र 7 -8 माह बाद धीमी फिर 15 से 16 वर्ष में फिर गति तेज हो जाती है। (15 से 16 वर्ष तारूण्य विकास लहर कहलाता है।)

✦ गैसेल के अनुसार फिनोजेनैटिक क्रिया परिपक्वता आधारित होती है। जैसे बालक द्वारा खिसकना, घुटनों के बल चलना, बैठना, इत्यादि।

## शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक-

1. वंशानुक्रम (पैतृक विशेषताएं व गुण)
2. वातावरण
3. नियमित दिनचर्या
4. नियमित विश्राम (निद्रा)
5. खेल कूद व योग का प्रभाव
6. अन्तः स्रावी ग्रंथियाँ
7. संवेगात्मक व सामाजिक समायोजन
8. पर्याप्त या अपर्याप्त चिकित्सा सुविधा

नोट :- शिक्षक व विद्यालय का सबसे कम प्रभाव पड़ता है।

## शिक्षक के लिए शारीरिक विकास का महत्त्व-

1. बालक के सर्वांगीण विकास पर बल
2. शारीरिक विकास पर ही अन्य विकास निर्भर
3. शारीरिक योग्यता व क्षमताओं के पर्याप्त विकास में सहायता

नोट :- तारूण्य विकास लहर - 15 से 16 वर्ष में शारीरिक विकास की गति का तेज होना।

## मानसिक विकास (Congnitive Development)

✦ हरलॉक - 'कोई भी दो बालक समान मानसिक योग्यता के नहीं होते हैं।

✦ मानसिक क्रियाएं :- स्मृति, संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, तर्क, विचार, निरीक्षण, कल्पना, चेतना, परीक्षण, सामान्यीकरण, भाषा, समस्या-समाधान, निर्णय।

## शैशवस्था में मानसिक विकास-

✦ संवेदना की क्षमता

✦ जॉन लॉक :- 'जन्म के समय बालक का मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है जिस पर वह अपने अनुभव लिखता है।'

- 10 से 11 माह - सहज क्रिया, चूसना, निगलना, करतल आदि।
- 17 से 18 माह - ऐच्छिक क्रिया
- 2 वर्ष - उद्देश्य क्रिया करना।
- 22 से 24 माह - समय, आज कल का ज्ञान।
- 1 वर्ष का बालक - 3 से 4 शब्द
- 2 वर्ष का बालक - 100 से 200 शब्द, दो शब्दों का वाक्य बनाता है।
- 3 वर्ष का बालक - रेखाएँ खींचना व नाम बताना।
- 4 वर्ष का बालक - नाम लिखना शुरू, वस्तुओं को क्रमबद्ध रखना।
  - 5 वर्ष का बालक - 10 से 11 शब्दों का वाक्य बनाना, रंगों में अन्तर करना।
- पूर्व बाल्यवस्था में मानसिक विकास में अन्वेषण प्रवृति, दिकस्थान सम्प्रत्य (4 से 6 वर्ष), जोड़ना, घटाना, गुणा-भाग क्रियाएँ प्रारम्भ हो जाती हैं।

## बाल्यावस्था में मानसिक विकास-

✦ क्रो एण्ड क्रो :- 'बालक जब 6 वर्ष का हो जाता है तो उसकी

Scanned with CamScanner

मानसिक योग्यताओं का लगभग विकास हो जाता है।'

- 6 वर्ष का बालक – 14 तक गिनती करना, सरल प्रश्नों के उत्तर देना, शरीर के अंगों के नाम बताना।
- 7 वर्ष का बालक – तुलना व समानता।
- 8 वर्ष का बालक – कविता व कहानियों को दोहराना/16 शब्दों का बार-बार दोहराना।
- 9 वर्ष का बालक – दिनाँक , समय व सिक्कों का ज्ञान
- 10 वर्ष का बालक – दैनिक जीवन के नियम व परम्परा का ज्ञान 3 मिनट के 60-70 शब्द
- 11 वर्ष का बालक – तर्क, जिज्ञासा व निरीक्षण शक्ति का विकास
- 12 वर्ष का बालक – समस्या समाधान व सन्धि

विशेष :– ठोस व सक्रियात्मक चिंतन, जीवन मृत्यु का सम्प्रत्यय, मुद्रा सम्बन्धी सम्प्रत्यय का विकास

### किशोरावस्था में मानसिक विकास–

- इस अवस्था में चिंतन में औपचारिक सक्रियाएँ, एकाग्रचिन्तन, तथ्यों के सामान्यीकरण की योग्यता, संचार की क्षमता में वृद्धि समस्या को अमूर्त संकेत द्वारा समाधान करने की क्षमता का विकास।
- एलिस क्रो – किशोर का चिंतन पक्षपात व पूर्व निर्णयों से प्रभावित रहता है।
- वुडवर्थ – '15 से 20 वर्ष की अवस्था में मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमा (Climax) तक पहुंच जाता है।'
- रॉस – मसतरंगी कल्पना कम व यथार्थ सामने आता है।
- ब्लेयर, जोन्स, सिम्पसन – अधिगम की योग्यता विकास के क्षितिज पर पहुंच जाती है।

1. बुद्धि का अधिकतम विकास –
   थार्नडाईक–19 वर्ष
   स्पीयरमैन–14 से 16 वर्ष
   टर्मन –16 वर्ष
2. मानसिक स्वतंत्रता का विकास – एलिस क्रो –
   किशोर में उच्च मानसिक योग्यताओं का प्रयोग करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।
3. किशोरावस्था में बालक में तर्क –
   क्रमबद्ध निगमन चिन्तन, अमूर्त चिन्तन, समस्या –समाधान, निर्णय करने, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान देने, कल्पना, का सर्वाधिक विकास, अधिगम योग्यता, कौशल विकास, एकाग्रता, भावात्मक विवेक का विकास, सामान्यीकरण।

### प्रभावित करने वाले कारक-

1. वंशानुक्रम
- गेट्स व अन्य – किसी का विकास उससे ज्यादा नहीं हो सकता जितना कि वंशानुक्रम संभव बनाता है।
2. वातावरण
3. शारीरिक स्वास्थ्य
- अरस्तु – स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।
4. परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति
5. माता-पिता की शिक्षा
6. विद्यालय व शिक्षक का प्रभाव
7. परिपक्वता/अधिकतम

विशेष :-

- मेटा संज्ञान –
- प्रतिपादक – जॉन फ्लेवेल्ल
- अर्थ – संज्ञानात्मक परिघटना के बारे में संज्ञान (जानने के बारे में जानना)
- इसमें उत्तम सूचना संसाधन मॉडल की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

## सामाजिक विकास (Social Development)

### सामाजिक विकास की अवधारणा/अर्थ–

1. सोरेन्सन लिखता है – 'सामाजिक वृद्धि तथा विकास से भाव है अपने आप के साथ तथा दूसरों के साथ भली-भांति निर्वाह करने की योग्यता प्राप्त करना।'
2. हरलॉक का कथन है – 'सामाजिक विकास सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता प्राप्त करने का नाम है। सामाजिक प्रत्याशा के अनुसार व्यवहार करने की क्षमता ही सामाजिक विकास है।
3. फ्रांसिस एफ. पावर – 'सामाजिक विकास को क्रमशः सुधार कहता है जिसे व्यक्ति की सामाजिक विरासत को समझने और उसके अनुसार व्यवहार के लचीले प्रतिमान बनाने से प्राप्त किया जाता है।'
4. फ्रीमैन एवं अन्य का विचार – 'सामाजिक विकास सीखने की वह प्रक्रिया है जो स्वयं को समूह की परम्पराओं और रीतिरिवाजों के अनुसार ढालना और एकता, मेलजोल और आपसी सहयोग की भावना के विकास में सहायक होती है।'
5. ऑगबर्न एवं निमकॉफ का विचार है –'सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिमें व्यक्ति मनुष्य के रूप में परिवर्तित होता है।'
6. चाइल्ड का कथन है – 'सामाजिक विकास वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति में उसके समूह के मानकों के अनुसार वास्तविक व्यवहार का विकास होता है।'
7. रॉस महोदय लिखते हैं – 'सहयोग करने वाले लोगों में 'हम भावना' का विकास और उनके साथ काम करने की क्षमता का विकास तथा संकल्प समाजीकरण कहलाता है।'
8. एलकिन्ड और वेनर का विचार – 'समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चे वे सामाजिक निर्णय और आत्म-नियंत्रण प्राप्त करते हैं जो उनके समाज के जिम्मेदार प्रौढ़ सदस्यों के लिए आवश्यक होते हैं।'

- सारे व टेलफोर्ड के अनुसार – 'बालक में सामाजीकरण की प्रक्रिया दूसरे व्यक्तियों के साथ प्रथम सम्पर्क से आरम्भ होती है व आजीवन चलती रहती है।'
- हरलॉक – 'सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक संबंधों में परिपक्वता प्राप्त करता है।'
- क्रो एण्ड क्रो – 'जन्म के समय बालक ना तो सामाजिक होता है और ना ही असामाजिक ।'
- फ्रीमैन – शौवल – सामाजिक विकास सीखने की वह प्रक्रिया है जो समूह के स्तर परस्पराओं व रीति रिवाजों के अनुकूल हाल में व सहयोग की भावना के विकास की प्रक्रिया।
- सामाजिक विकास गत्यात्मक प्रक्रिया है।
- सामाजिकरण क्या है ? – जब मनुष्य समूह का सदस्य बनता है उसके आदर्शों के अनुसार कार्य करता है नियम, रीति रिवाजों के अनुसार व्यवहार वाली।

Scanned with CamScanner

## शैशवावस्था में सामाजिक विकास–

- ✦ 3 महीने का बालक – अपनी माँ को पहचानना व दूर जाने पर रोना। (पहला सामाजिक व्यवहार), सामाजिक मुस्कान का प्रारम्भ।
- ✦ 4 महीने का बालक – साथ खेलने पर हँसना
- ✦ 5 महीने का बच्चा – प्रेम व क्रोध के व्यवहार को समझना।
- ✦ 8 व 9 महीने – दूसरों की बोली हाव भाव व अंग संचालन की नकल
- ✦ 1 साल का बच्चा – मना किये जाने वाले कार्य को नहीं करना।
- ✦ 2 साल का बच्चा – सामाजिक अनुमोदन की प्रवृत्ति।
- ✦ 3 साल का बच्चा – दूसरे बच्चों के साथ खेलना व संबंध बनाना। (समाजीकरण का प्रारम्भ)
- ✦ 4 साल का बच्चा – सहानुभूति व समानुभूति का भाव, प्रतिस्पर्धा
- ✦ 5 साल का बच्चा – वस्तुओं का लेन-देन करना, भाईयों की रक्षा का भाव, डींगे हाँकना, मित्र बनाना।

✦ **बचपन के विशेष सामाजिक व्यवहार :-**

| व्यवहार/क्रियाएँ | उम्र |
|---|---|
| • ध्यानाकर्षण (Attention Seeking) | 1 वर्ष 6 महीने |
| • सहयोग (Co-Operation) | 1 – 1 वर्ष 6 वर्ष |
| • स्व-प्रेमी (Self-Centered) | 1 वर्ष |
| • अनुकरण (Imitation) | 1 वर्ष |
| • पराश्रितता (Dependency) | 0 – 2 वर्ष |
| • लज्जाशीलता (Shyness) | 1 – 2 वर्ष |
| • ईर्ष्या (Rivalry) | 1 वर्ष |
| • निषेधात्मक प्रवृत्ति (Negativism) | 1 – 1 वर्ष 6 महीने |
| • यौन विरोध | 3 वर्ष |
| • पूर्वाग्रह | 2 – 3 वर्ष |

✦ **सामाजिक विकास :-** हरलॉक पुस्तक 'Child Psychology' में बताया है –

| आयु | सामाजिक विकास का रूप |
|---|---|
| 1 मास | मानवीय आवाज और अन्य आवाजों में अन्तर ना समझ पाना। |
| 2 मास | मनुष्य की आवाज पहचानना और व्यक्ति को देखकर मुस्कुराना। |
| 3 मास | अपनी माता को पहचानना और उसकी अनुपस्थिति में प्रसन्न न रहना। |
| 4 मास | व्यक्तियों की तरफ विशेष ध्यान देना और उनको देखकर प्रसन्नता महसूस करना। |
| 5 मास | मुस्कान और डांट की भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया तथा मैत्रीपूर्ण और क्रुद्ध आवाजों में अन्तर समझना। |
| 6 मास | जाने-पहचाने लोगों को देखकर मुस्कुराना और अजनबियों को दखकर डर की अभिव्यक्ति करना। बड़ों के प्रति विद्रोही भाव दिखाना जैसे बड़ों के बाल, कपड़े, चश्मा खींचना। |
| 8-9 मास | दूसरों के बोले जाने वाले शब्दों और हाव-भाव का अनुकरण करने लगना। |
| 10-12 मास | अपने प्रतिबिम्ब के साथ खेलना और इसे दूसरा व्यक्ति समझकर चुम्बन लेना। |
| 15 मास | बड़ों के साथ रहने की प्रवृत्ति दिखाई देना। |
| 13-18 मास | अपने खिलौने से हटकर अपने साथियों में रूचि हो जाना। |
| 2 वर्ष | बालकों को कई कामों में सहयोग देना और परिवार का सक्रिय सदस्य बनना। |
| 4-5 वर्ष | शिशु का विद्यालय में जाना और नई दुनिया में प्रवेश करना है। उसके व्यवहार में परिवर्तन होना और नए सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करना। |
| 5-6 वर्ष | नैतिक भावना का विकास होने लगता है। |

✦ **पूर्व बाल्यावस्था के कुछ प्रमुख सामाजिक व्यवहार :-**

| | |
|---|---|
| • खेल (Play) | 2-5 वर्ष |
| • अनुकरण (Imitation) | 3-4 वर्ष |
| • निषेधात्मक (Negativism) | 2-5 वर्ष |
| • झगड़ा तथा मार-पीट (Ouarrel and Aggression) | 3 वर्ष |
| • सहयोग और सहानुभूति (Co-operation and Sympathy) | 3-4 वर्ष |
| • चिढ़ाना व तंग करना (Teasing) | 3 वर्ष |
| • आक्रामकता (Aggression) | |
| • ईर्ष्या (Rivalry) | |
| • प्रतियोगिता/प्रतिस्पर्धा (Competition) | 4 वर्ष |
| • मित्रता (Friendship) (Co-operation and Sympathy) | 3 वर्ष |

## बाल्यावस्था में सामाजिक विकास–

- ✦ बालक में सामाजिकता का सर्वाधिक विकास होता है।
  **जैसे :-** सहयोग, उत्तरदायित्व, बड़ों का सम्मान करना, अति संवेदनशीलता, सामाजिक सूझ।
- ✦ टोली का सदस्य बन जाना – समूह समायोजन, समूह के प्रति वफादारी।
- ✦ सुझाव ग्रहण करने की प्रवृत्ति – सामाजिक प्रतिस्पर्धा, सामाजिक सूझ का विकास। (संसूच्यता (Suggestibility)/प्रति संसूच्यता (Counter Suggestibility)
- ✦ लैंगिक अलगाव 8 वें वर्ष में
- ✦ स्तर चेतना
- ✦ नेता बनने की इच्छा, वास्तविक जगत से सम्बन्ध
- ✦ सुझाव और ग्रहणशीलता की आयु 7 – 8 वर्ष

Scanned with CamScanner

✦ उत्तर - बाल्यावस्था में सामाजिक विकास :-
- स्तर चेतना - 6 से 7 वर्ष लैंगिक अलगाव - 8 वर्ष
- सामुदायिकता (Gregariousness) सहयोग (Co-operation)
- समूह शक्ति (Group Loyalty) सहानुभूति (Sympathy)
- समलैंगिक मित्रता (Friendship) सामूहिक खेल (Play)
- यौन-विरोध (Sex Antagonism) - 8 वर्ष सहिष्णुता (Tolerance)
- नेतृत्व (Leadership) -10-12 वर्ष प्रतियोगिता एवं स्पर्धा (Competition and Rivalry)
- उत्तरदायित्व

## किशोरावस्था में सामाजिक विकास-

1. जटिल सामाजीकरण की अवस्था
2. सामाजिक चेतना का विकास - समाज में स्थान का ज्ञान
3. लिंग चेतना (Sex Consciousness) - विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण
4. सामाजिक परिपक्वता (Social Maturity) - बड़ों के समान व्यवहार
5. समाज सेवा की भावना (Social Service)
6. समूह के प्रति वफादारी (Group Logalty)
7. सामाजिक रुचियों का विकास - मित्र बनाना, नेतृत्व, समाज सेवा, वीरगाथा, स्काउटिंग, ललित कला
   - नया सामाजिक समूहन, दोस्तों में चयन का नया मूल्य।
   - सामाजिक स्वीकृति का नया मूल्य।
8. नेतृत्व के गुण का सर्वाधिक विकास (Leadership)
9. स्वयं के समूह का सक्रिय सदस्य बन जाता है।
10. स्थिति व महत्त्व की अभिलाषा।
11. माता-पिता से मतभेद।
12. आत्मरक्षा - लड़कियों के ज्यादा।
13. नायक पूजा (Hero-Worship)
14. लैंगिक रुचियां - प्यार क्या है ? लैंगिक सम्बन्ध इत्यादी।

## किशोरावस्था में सामाजिक विकास :-

- नेतृत्व का विकास (चरम विकास)
- सामाजिक परिपक्वता
- समूह का घनिष्ठ सदस्य होना
- स्पर्धा और प्रतियोगिता
- सामाजिक संबंधों की स्थापना
- सामाजिक रुचियों का विकास
- समलैंगिक व विषम लैंगिक मित्रता (Friendship)
- सामाजिक चेतना का विकास
- सामाजिक परिपक्वता (Social Maturity)
- पारिवारिक संबंधों में सुधार
- जटिल समाजीकरण

**विशेष :-** वाइनलैण्ड सामाजिक परिपक्वता मापन - डॉ एडलर डोल ने इसका निर्माण सामाजिक व्यवहार का मापन करने के लिए किया। इसमें 117 सामाजिक क्रियाओं का मापन होता है जो किशोरावस्था से संबंधित है।

## सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक-

✦ **गेट्स व अन्य** - सामाजिक प्राणी के रूप में व्यक्ति के व्यवहार का विकास उसके व्यक्तित्व के विकास के रूप में होता है।

1. वंशानुक्रम
- **क्रो एण्ड क्रो :**-'बालक की पहली मुस्कान वंशानुक्रम की देन होती है।'
2. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
3. संवेगात्मक स्वास्थ्य
- **क्रो एण्ड क्रो :**- 'सामाजिक व संवेगात्मक विकास साथ - साथ चलते हैं।'
4. परिवार का प्रभाव - सर्वाधिक प्रभावित, शुरूआत आधार। (पैस्टोलॉजी - बच्चे का पहला स्कूल परिवार)
- **दुर्खिम** - परिवार जीवन की प्रथम पाठशाला है।
5. शिक्षक व विद्यालय का प्रभाव (ओटावे ने विद्यालय को सामाजिक आविष्कार कहा है।)
6. लिंग का प्रभाव - लड़कियाँ ज्यादा सामाजिक होती हैं।
7. सिनेमा व साहित्य का प्रभाव
8. खेलकूद
- **स्कीनर व हैरीमैन** - खेल का मैदान बालक निर्माण स्थल है।
9. समूह का प्रभाव -
- **हरलॉक** - समूह के प्रभाव के कारण बालक सामाजिक व्यवहार का महत्त्वपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
10. मित्र मण्डली का प्रभाव, समुदाय, धार्मिक संस्था का प्रभाव
- **क्रो एण्ड क्रो :**- 'जब बालक 13 या 14 वर्ष की आयु में प्रवेश करता है तब उसके अनुभव व दृष्टिकोण के साथ सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन होने लग जाता है।'
11. पालण पोषण की विधि का प्रभाव - अत्यधिक लाड प्यार वाला बालक एंकान्तवासी बन जाता है।
12. भाषा विकास का प्रभाव

## मनोसामाजिक विकास सिद्धांत-

✦ इस सिद्धान्त में व्यक्तिगत, सांवेगिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विकास को समत्वित किया गया है।

प्रतिपादक - इरिक इरिक्सन, इन्हें Ego मनोवैज्ञानिक कहा जाता है, क्योंकि इन्होंने Ego पर बहुत दिया है। इन्होंने मनोसामाजिक विकास क्रे तीन प्रकार बताये है -

(1) कर्म काण्डता, (2) कर्म काण्ड, (3) कर्म काण्डवत

पुस्तक - बचपन व समाज (Childhood and Socity) (1963)

✦ **आठ अवस्थाएँ (जीवन अवधि विकास सिद्धान्त) :-**

1. विश्वास अविश्वास की अवस्था (जन्म से 18 माह तक) (Trust versus untrust)
2. स्वतंत्रता व सन्देह की अवस्था (18 माह से 3 वर्ष) (Autonomy Versus doubt)
3. पहल व अपराध की अवस्था (3 से 6 से वर्ष) (Initiative versus guilt)
4. परिश्रम व हीनता की अवस्था (6 - 12 वर्ष)(उधम हीनता की अवस्था) (Industriousness versus inferiority)
5. पहचान भूमिका, द्वन्द्व की अवस्था (12 - 18 वर्ष) (Identity versus rale diffvesion)
6. मित्रता व अलगाव की अवस्था (19 - 35 वर्ष) (Intimacy versus isalation)

Scanned with CamScanner

7. सृजनात्मकता व निष्क्रियता की अवस्था (35 - 65 वर्ष) (प्रजनन व गतिहीनता की अवस्था) (Generativity versus stognation)
8. ईमानदारी व निराशा या एकात्मकता व निराशा की अवस्था (65 से अधिक) (सम्पूर्णता व हताशा की अवस्था) (Integrity versus despair)

**नोट** - ब्रोन केन ब्रेन्नर का पारिस्थितिपरक मॉडल - बालक के विकास की व्याख्या सामाजिक संदर्भ में की जाती है। पर्यावरण की भूमिका को महत्व दिया गया है।

### सामाजिक विकास

| विकासावस्था | काल | विकासात्मकघटक /अविश्वास |
|---|---|---|
| 1. शैशवकाल/मुखीय (Infancy) | जन्म से 1½ वर्ष | विश्वास बनाम अविश्वास (आशक्ति का विकास) (Trust Vs. uristrust) |
| 2. पूर्व बाल्यकाल/गुदीय (Early Childhood) | 1½ वर्ष से 3 वर्ष | स्वायतता बनाम लज्जा एवं सन्देह (Autonomy Vs. Shame and doubt) |
| 3. पूर्व स्कूलकाल/लैगिंक काल (Pre-school age) | 3 वर्ष से 5 वर्ष | पहल बनाम अपराध भावना (Initiative Vs. guilt) |
| 4. स्कूल काल/सुप्तवस्था (School age) | 6 वर्ष 12 वर्ष | परिश्रमशीलता बनाम हीनता (Industriousness Vs. inferiority) |
| विकासावस्था | काल | विकासात्मकघटक /अविश्वास |
| 5. किशोरावस्था (Adolescence) | 12 वर्ष से 18 वर्ष | भ्रांति पहचान बनाम भूमिका संभ्रांति/ (Identity Vs. role confusion) |
| 6. पूर्व प्रौढ़ावस्था (Early Adulthood) | 18 वर्ष से 35 वर्ष | घनिष्ठता/बनाम अलगाव/एकाकीपन (Intimacy Vs. isolation) |
| 7. उत्तर प्रौढ़ावस्था (Late Adulthood) | 35 वर्ष से 65 वर्ष | प्रजनन बनाम स्थिरता/ठहराव/सृजनात्मकता (Generativity Vs. stagnation) |
| 8. वृद्धावस्था/परिपक्वस्था (Old age) | 65 वर्ष से ऊपर | स्व-संगठन बनाम निराशा/सम्पूर्णता बनाम हताशा (Ego integrity Vs. despair) |

### ब्रोन फेन ब्रेन्नर का सिद्धान्त

- **ब्रोन फेन ब्रेन्नर** का पारिस्थिति परक सिद्धान्त (Ecological Theory) -
- बालक पर पर्यावरण के 5 स्तरों का प्रभाव पड़ता है - सामाजिक संदर्भ में व्याख्या करना।

**पाँच तंत्र :-**

1. **लघु मण्डल** - इसमें बालक के निकटतम वातावरण में की गई अन्तः क्रिया शामिल होती है, परिवार, स्कूल, साथी व समूह आते हैं।
2. **मध्य मंडल** - लघु मण्डल के कारकों के आपसी सम्बन्धों से बनता है।
3. **बाह्य मण्डल** - इसमें बालक स्वयं नहीं होता। जैसे - माता-पिता का कार्यस्थल, धार्मिक संस्थान।
4. **वृहत मण्डल** - इसमें सांस्कृतिक मूल्य, सामाजिक प्रथा, सामाजिक व आर्थिक स्तर शामिल है।
5. **घटक मण्डल** - इसमें छात्रों के विकास की सामाजिक व ऐतिहासिक अवस्था शामिल होती है।

### समाजीकरण-

- जन्म से मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति समाज मान्य व्यवहार सीखकर सामाजिक भूमिका निभाता है, फ्रायड के अनुसार यह बाल्यकाल से प्रारम्भ होती है। समाजीकरण में Ego (अहम) का मजबूत होना जरूरी है।
- **सी.एच. कुल** ने सामाजिक प्रक्रिया में पारस्परिक संबंध को महत्वपूर्ण माना है व कल्पना व प्राथमिक समूह की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। मार्गरीड ने सामाजीकरण में आत्मचेतना को महत्वपूर्ण माना है व व्यक्ति जब 'मैं' व 'मेरा' का एकीकरण कर लेता है जिससे उसकी आवश्यकता समाज की मान्यताओं व मनोवृति के अनुकूल होती हैं।
- **समाजीकरण के प्रकार्य** - (1) व्यक्ति के अन्तः क्रिया का विकास करना, सस्मृति का अध्ययन व अंग बन जाना, निर्णय क्षमता, उचित-अनुचित का ज्ञान, आत्म मूल्यांकन का विकास, समायोजन क्षमता विकास, प्रत्यक्षीकरण विकास, समाजीकरण व्यवहार का विकास करता है।
- **समाजीकरण के साधन** - परिवार, जाति व्यवस्था, विवाह, विद्यालय, समाज, खेल, समूह

Scanned with CamScanner

## संवेगात्मक विकास

- इमोशन शब्द की उत्पत्ति 'इमोवेयर' से हुई है। अर्थ – उत्तेजित होना।

1. **क्रो एण्ड क्रो :**– संवेग भावात्मक अनुभूति है जो व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक उत्तेजना पूर्ण अवस्था तथा आन्तरिक समायोजन के साथ जुड़ी होती है।
2. **जे.एस. रॉस** – संवेग चेतना की अवस्था है जिसमें भावात्मक तत्व की प्रधानता होती है।
3. **वुडवर्थ :**– 'संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।'
4. **जरशील्ड :**– 'किसी आवेग के उत्पन्न होने, उत्तेजित हो जाने तथा भड़क जाने की अवस्था संवेग कहलाती है।'
5. **गेलडार्ड :**– संवेग क्रियाओं का उत्तेजक है।

### संवेगों की विशेषताएँ

1. संवेग तीव्र होते हैं।
2. सार्वभौमिक, व्यापकता (प्रत्येक व्यक्ति में पाये जाते है।)
3. शारीरिक व मानसिक स्थिति में परिवर्तन
4. सुखात्मक व दुखात्मक दोनों प्रकृति – (प्रेम, आमोद, सुखदायक, क्रोध, दुःखदायक)
5. संवेगों का संबंध मूल प्रवृत्ति से होता है।
   **नोट :**– मैक्डूगल ने 14 मूल प्रवृत्तियाँ व 14 ही संवेग बताये हैं।
   **मैक्डूगल** – संवेग मूल प्रवृत्ति का हृदय है।
6. संवेग अन्तमुर्खी होते हैं, भावना संवेग का दिल होती है।
7. बुद्धि कल्पना व तर्क का संवेगों से निषेधात्मक संबंध होता है।

### मूल प्रवृत्तियाँ–

- प्रतिपादक – विलियम मैक्डूगल ने 1908 में अपनी पुस्तक "सामाजिक मनोविज्ञान एक परिचय" में मूल प्रवृत्तियों का प्रतिपादन किया।
- **मैक्डूगल** के अनुसारः– **"मूल प्रवृत्तियां मानव व्यवहार की अद्भुत चालक है।"**

| मूल प्रवृत्ति | संवेग |
|---|---|
| 1. पलायन | भय |
| 2. युद्धप्रियता | क्रोध |
| 3. निवृत्ति | घृणा |
| 4. शिशु रक्षा | वात्सल्य |
| 5. संवेदना | दुःख/कष्ट |
| 6. काम | कामुकता |
| 7. जिज्ञासा | आश्चर्य |
| 8. आत्महीनता | अधीनता का भाव |
| 9. आत्म गौरव/प्रदर्शन | घमण्ड/गर्व |
| 10. भोजन अन्वेषण | भूख |
| 11. सामुहिकता | एकाकी भाव |
| 12. रचनात्मकता | कृति भाव |
| 13. संग्रहशीलता | अधिकार का भाव/लोभ |
| 14. हास | आमोद |

### मूल प्रवृत्तियों की विशेषताएँ–

- जन्मजात होती हैं।
- नष्ट नहीं होती, संशोधन होता रहता है।
- संवेगों के साथ जुड़ी हुई होती हैं।
- प्रत्येक के तीन पक्ष होते हैं –
  (क) ज्ञानात्मक
  (ख) भावात्मक
  (ग) क्रियात्मक।

6. क्षणिक होते हैं।
7. संवेगों का संबंध भावनाओं से होता है।
8. संवेगों में व्यक्तिगत विभिन्नता पायी जाती है।
9. संवेगों में स्थानान्तरण का गुण पाया जाता है।

### शैशवस्था में संवेगात्मक विकास–

- **गेट्स व अन्य** – बालक का संवेगात्मक व्यवहार उसके विकास के अन्य पहलुओं के अनुरूप होता है।

1. संवेग अस्थायी होते हैं।
2. आरम्भ में ही तीव्र व धीरे–धीरे मन्द होते जाते हैं।
3. संवेगों की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है। (हरलॉक ने कहा है)
4. संवेगों की हिंसात्मक अभिव्यक्ति – रोना, चिल्लाना, काट लेना।
   सबसे महत्त्वपूर्ण संवेग – भय, प्रेम, क्रोध (वॉटसन ने माना है।)

- **ब्रिजेज के अनुसार** – जन्म के समय उत्तेजना –
  - 3 माह – व्यथा, आनन्द
  - 6 माह – प्रेम, भय, क्रोध, घृणा
  - 12 माह – उल्लास, अनुराग
  - 18 माह – ईर्ष्या, क्रोध
  - 24 माह – आनन्द, खुशी, हर्ष

### बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास–

1. संवेग स्थिर व निश्चित हो जाते हैं। (बहाने बनान, स्थायी भावों का विकास)
2. उस समय बालक पर शिक्षक व विद्यालय का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।
3. उपनाम से पुकारना अच्छा नहीं लगता।
4. चूमा जाना पसन्द नहीं होता।
   **मुख्य संवेग :**– क्रोध, भय, ईर्ष्या, उत्सुकता, हर्ष, दुःख, अनुराग

### किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास–

- **कॉल व ब्रुश :** – 'किशोरावस्था के आगमन का मुख्य लक्षण संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन है।'
- **रॉस :**– किशोर का संवेगात्मक जीवन उग्र होता है कभी जोश कभी उदासी कभी स्वीकारात्मक व कभी नकारात्मक व्यवहार दिखाई देगा।
- संवेगात्मक विकास जटिल (Complexity)

1. संवेगों की चरम सीमा, संवेग अनुभव करने की योग्यता, संवेगात्मक अनुभवों में वास्तविकता।
2. अमूर्त संवेग (Abstract Emotions)
3. सर्वाधिक अस्थिर हो जाते हैं व अनियन्त्रित। (Noturider Control)
4. संवेगों में आंधी व तूफान की अवस्था– आत्महत्या, उतेजना की स्थिति।

Scanned with CamScanner

- बी. एन. झा :- ' काम नामक संवेग किशोरावस्था पर असाधारण प्रभाव डालता है।'
- प्रमुख संवेग - काम, भय, क्रोध, ईर्ष्या, प्रेम, दया आदि।

5. शारीरिक शक्ति का सर्वाधिक प्रभाव संवेगों पर पड़ता है।

1. दमन - अवांछित संवेगों पर दण्ड व कठोर नियंत्रण का प्रयोग
2. मानसिक व्यस्तता - शारीरिक व मानसिक रूप से व्यस्त रखना।
3. मार्गन्तीकरण - संवेगों की प्रवृत्ति व दिशा को बदल देना।
4. संवेगों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अवसर देना।

नोट :- संवेगों को प्रशिक्षित करने की विधियां

6. संवेगात्मक अनुभवों में वास्तविकता

   नोट :- विनीफ्रेड वी. रिचमॉड के अनुसार - बैचेनी, बदली हुई मन:स्थिति, दिवास्वप्न, आत्मधारणा व आत्म आग्रह लड़कियों में ज्यादा होती है।

7. संवेगों में अयुक्ति संगतता

## संवेगात्मक समस्याएँ-

1. हकलाना - तुतलाना (संवेगों का तीव्र प्रवाह)
2. पलायन करना।
3. शर्मिलापन
4. बिस्तर गीला करना
5. अंगुठा चुसना, नाखून चूसना
6. वामहस्तता

## संवेगों के सिद्धांत-

- स्पिटज - संवेग जन्म से विद्यमान नहीं होते हैं। मानव व्यक्तित्व के किसी भी अंग के समान उनका विकास होता है।

1. जेम्स लॉज का सिद्धांत - पहले व्यवहार तथा उसके बाद संवेग की अनुभूति।
2. केनन बोर्ड का सिद्धांत - व्यवहार व अनुभूति दोनों साथ - साथ होते हैं।
3. मौलिक संवेगों का सिद्धांत - वाट्सन (तीन संवेग मौलिक होते है- भय, प्रेम, क्रोध)
4. संवेगों का द्विकारक सिद्धांत - स्टेनले शेचटर (संज्ञान व उत्तेजना दो कारक होते है)
5. संवेगात्मक विकास सिद्धान्त/संज्ञानात्मक मूल्यांकन सिद्धान्त

- लेजारस - संवेगों का आधार अलग-अलग तरह की सूचनाओं का मूल्यांकन है।
- ब्रिजेज :- 'जन्म के समय केवल उत्तेजना होती है दो वर्ष तक सभी संवेगों का विकास हो जाता है।'

6. संवेग संक्रियाकरण सिद्धान्त (Emotion Avtivation Theory)

- लिंडस्ले - संवेग प्रमस्तिष्क वल्क के सक्रियण स्तर पर निर्भर करता है।
- संवेगों का नियंत्रण केन्द्र- हाईपोथेलेमस ग्रंथि (परिधीय तंत्रिका - प्रणाली)

## संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक-

- जरशील्ड - परिवार के लिए विद्यालय दूसरा कारक है जो भावनाओं पर प्रभाव डालता है।

1. थकान, अभिलाषा का पूरा ना होना
2. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
3. विद्यालय व शिक्षक का प्रभाव
4. सिनेमा, साहित्य, लिंग का प्रभाव, सामाजिक विकास का प्रभाव
5. परिवार का प्रभाव
6. पालन-पोषण की विधि का प्रभाव
7. निर्धनता
8. सामाजिक स्थिति

## संवेगों का महत्त्व-

1. शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य व सामाजिक जीवन को संतुलित बनाने में।
2. चरित्र निर्माण में
3. भाषा विकास में
4. अभिवृत्ति निर्माण में
5. अधिगम व अभिप्रेरणा में

## संवेगात्मक विकास (विशेष)-

- मैक्डूगल - संवेग मूल प्रवृति का हृदय है।
- किम्बल यंग - संवेग प्राणी की उत्तेजित मनोवैज्ञानिक व शारीरिक दशा है।
- सांवेगिक भाव शांति -
  - उत्तर बाल्यवस्था
  - दमित संवेगों की अभिव्यक्ति
- कोल - संवेगात्मक परिपक्वता की प्रमुख कसौटी - तनाव सहन करने की योग्यता है।
- बाल्यावस्था में संवेग - भय, चिन्ता, कुण्ठा, ईर्ष्या, जिज्ञासा, स्नेह व स्थायी भावों का निर्माण
- 2 से 5 वर्ष में संवेग स्वाभाविक होते हैं।
- गेल्डार्ड - संवेग क्रियाओं के उत्तेजक हैं।
- सांवेगिक विवेचन - सांवेगिक घुटन व शक्तियों को बाहर निकलने की प्रक्रिया।
- सकारात्मक संवेग - खुशी, परानुभूति, आशावादी, आभार
- नकारात्मक संवेग - भय, क्रोध, दुश्चिन्ता
- संवेगों के नियमन में केन्द्रिय व स्वायत तंत्रिका तंत्र भूमिका निभाते हैं।
- मस्तिष्क का बायां गोलार्द्ध सकारात्मक संवेगो के लिए उत्तरदायी है।
- मस्तिष्क का दाहिना गोलार्द्ध ऋणात्मक संवेगों के लिए होता है।
- व्यक्ति भालू को देखकर भाग जाता है - जेम्स लॉज सिद्धान्त
- मूल संवेग - हर्ष, भय, क्रोध, आश्चर्य, विरुचि
- संवेग जन्मजात होते हैं - विन व होलिंगवर्थ
- संवेग अर्जित होते हैं - ब्रिजेज

## नैतिक विकास (Moral Development)

- सैमुअल स्माईल - 'चरित्र आदतों का पुंज है। संगठन'
- डमविल - 'चरित्र उन सब प्रवृत्तियों का योग है जो एक व्यक्ति में पायी जाती है।'
- मैक्डूगल - चरित्र स्थायी भावों की एक व्यवस्था है।
- रॉस - संगठित आत्मा ही वास्तव में चरित्र है।
- कारमाइकेल - चरित्र गतिशील धारणा है यह व्यक्ति के दृष्टिकोण व व्यवहार की विधियों का पूर्ण योग है।

Scanned with CamScanner

## शैशवावस्था में नैतिक विकास–

- **कारमाइकेल** – व्यक्ति का चारित्रिक विकास जन्मजात कारकों व वातावरण कारकों के एकीकरण का परिणाम है। इस समय बालक में नैतिकता का अभाव पाया जाता है लेकिन वह माता-पिता के पथ में नैतिकता का पालन करता है।
  - 2 वर्ष का बच्चा – अच्छे लड़के व बुरे लड़के में अन्तर करना
  - 4 वर्ष का बच्चा – अच्छे कार्य व बुरे कार्य में अन्तर समझना।

## बाल्यावस्था में नैतिक विकास–

- सर्वाधिक नैतिक विकास व नियमों का उल्लघंन भी करते हैं।
- **स्ट्रेंग** :– 'बालक में न्याय विवेक व ईमानदारी के गुणों का विकास हो जाता है।'
- नैतिक सापेक्षता की शुरूआत, झूठ बोलना, चोरी करना, दूसरो की आलोचना करना प्रारम्भ।

## किशोरावस्था में नैतिक विकास–

- **पैक व हैविंग हर्स्ट** :– 'किशोरावस्था में बालक नैतिक सिद्धांतों का निर्माण करता है तथा इनके आधार पर अपने कार्यो का मूल्यांकन करता है।' इसे नैतिक सापेक्षवाद की अवस्था कहा जाता है।

1. आदर्श व्यक्ति की कल्पना करना व उसके अनुसार बनने की कोशिश करना।
2. दूसरे व्यक्तियों के साथ अपने नैतिक मूल्यों की तुलना करना।
3. मेडिनिस – किशोर धर्म की संकीर्णता को त्याग कर सहिष्णुता व मानवधर्म का समर्थन करता है।
4. नैतिक संहिता का निर्माण
5. अधिकार व कर्तव्यों द्वारा नैतिकता को परिभाषित करता है।
6. अन्त:करण के आधार पर नैतिकता का पालन।
7. धार्मिक रूचियाँ, जैसे – परमात्मा, स्वर्ग, नरक, पाप इत्यादी में रूचियाँ।

## प्रभावित करने वाले कारक–

1. मूल प्रवृत्तियाँ
2. संवेग
3. आदतें + सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक
4. स्थायीभाव – देशभक्ति, नैतिक, धार्मिक, बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक, आत्मसमान (आत्मसमान सर्वोच्च स्थायी भाव होता) यह अर्जित प्रवृत्ति होती है जो संवेगों की स्थायी संरचना स्थायी भाव कहलाती है।
5. वंशानुक्रम
6. परिवार का प्रभाव
7. विद्यालय व शिक्षक
8. सिनेमा व साहित्य का प्रभाव
9. साथी व समूह का प्रभाव

## कोलहर बर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत (1969)–

- कोलहर बर्ग ने 10 से 16 वर्ष को नैतिक तर्कणा वर्ष कहा है।
- तीन स्तर व छह अवस्थाएँ – नैतिक विकास विशिष्ट से सामान्य होता है।

### 1. प्री कनवेशनल स्टेज–

- पूर्व परम्परागत स्तर/पूर्व औपचारिक स्तर/रूढ़िगत पूर्व अवस्था
- कार्यकाल – (0 से 6 वर्ष) नैतिकता का अभाव
- नैतिक चिन्ता का निचला स्तर व बाहर से मिलने वाली सजा व उपहार का प्रभाव पड़ता है।

**(i) आज्ञा व दण्ड की अवस्था (Punishment and obedience stage) ( 0 से 2 वर्ष )** – नैतिकता का पालन आज्ञा व दण्ड के आधार पर करता है।
जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।

**(ii) सरल अंहकार की अवस्था/यांत्रिक साक्षेप अवस्था (Instrumental relativist stage) ( 3 से 6 वर्ष )( सापेक्ष साधन उन्मुख अवस्था )** – व्यक्ति केन्द्रित/स्वकेन्द्रित अवस्था/सहायक उद्देश्य की अवस्था।

- अपनी आवश्यकताओं के प्रति सचेत व दूसरों के अधिकारों को समझना। बाहरी सत्ता पर आधारित बराबरी का लेन देन होना। पारस्परिकता/सहयोग व छल आधारित नैतिकता।

### 2. कनवेशनल स्टेज–

- परम्परागत स्तर/औपचारिकता अवस्था/रूढ़िगत अवस्था (6 से 12 वर्ष)
- बच्चे का व्यवहार माता-पिता व बड़ों के बनाये नियमों पर आधारित।
- **सर्वाधिक नैतिक विकास :–**

**(iii) प्रशंसा की अवस्था/अच्छा लड़का या अच्छी लड़की की अवस्था (Nice boy-girl stage) :–** आपसी व्यवहार व सम्बन्धों पर आधारित प्रशंसा प्राप्त करने के लिए नैतिकता का पालन करता है। बालक का नैतिक व्यवहार बड़ो व माता-पिता के नैतिक नियमों पर आधारित होता है।

**(iv) सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था (Law and order stage) :–** कानून न्याय व कर्तव्यों पर आधारित होगी। सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के लिए नैतिकता का पालन। समाज के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए नैतिकता का पालन करता है।

### 3. पोस्ट कनवेशनल स्टेज ( उत्तर औपचारिक/उत्तरपम्परागत )

- रूढ़ि से ऊपर उठकर चिन्तन व्यक्तिगत नैतिक व्यवहार का रास्ता तलाशना (आधारहीन आत्मचेतना अवस्था)। कार्यकाल 12 से 18 वर्ष बालक नैतिक सिद्धांतों का निर्माण करता है।

**(v) सामाजिक समझौते की अवस्था (Social Contact) ( 12 से 16 वर्ष )** अनुबंध उपयोगिता व्यक्तिगत आधार पर आधारित। लोगों के कल्याण व बहुसंख्यक की इच्छा को महत्व देना।

**(vi) आन्तरिक विवेक की अवस्था ( 17 से 18 वर्ष )** अन्तरात्मा के आधार पर निर्णय। यह सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर आधारित होती होती है। उच्चतर सामाजिक स्तर की अवस्था।

- इसमें बालक तर्क व विवेक के आधार पर नैतिकता का पालन करता है। नैतिक आचरण संज्ञानात्मक आधार पर होता है।

## पियाजे के नैतिक विकास के चरण–

चार (संज्ञात्मक सिद्धान्त – दी मोरल जजमेंट ऑफ दी चाईल्ड पुस्तक में किया (1932))

1. **अनामी चरण** – कानून रहित चरण – 0 से 5 वर्ष नैतिकता का अभाव – प्राकृतिक परिणामों पर अनुशासन, परायत नैतिकता अवस्था
2. **हेटरोनॉमी चरण** – 5 से 8 वर्ष –कृत्रिम परिणामों का अनुशासन

Scanned with CamScanner

– पुरस्कार व दण्ड नियन्त्रित करते, नैतिक दबाव की अवस्था।

3. **हेटरोनॉमी पारस्परिक आदान प्रदान** – 8 से 13 वर्ष, हमें दूसरों के साथ वह नहीं करना चाहिए जो हमारे लिए अपमाजनक हो। सहयोग की नैतिकता का विकास, नैतिक समानता की अवस्था।
4. **स्वायत्तता चरण (Autonomy)**- 13 से 18-नैतिक व्यक्ति व्यवहार के लिए स्वयं जिम्मेदार है (समता का चरण), नैतिक सापेक्षता की अवस्था।

**विशेष :-** पियाजे ने 9 से 11 को स्वायत्त नैतिकता भी कहा है।

- केरोलगिल्लिगन कोहलरबर्ग के शिष्य थे इन्होंने नैतिक विकास के 3 चरण बताये हैं, यह सिद्धान्त महिला आधारित या देखभाल व रिश्तें की विशेषता पर आधारित था।

1. **पूर्व पारम्परिक चरण** – इसमें व्यक्ति स्वयं को केन्द्र में रखता है। इसमें व्यक्तिगत जरूरतों को दूसरों की जरूरतों पर प्रमुखता दी जाती है।
2. **पारम्परिक चरण** – इसमें दूसरों की आवश्यकता को पहचानना व मदद करने में नैतिक संतुष्टि मिलती है, आत्मबलिदान के आधार पर दूसरों की देखभाल करना।
3. **प्रसव पारंपरिक चरण** – इसमें जरूरतों के औचित्य को साबित करना, जरूरतों को पूरा करने के वैकल्पिक तरीकों की तलाश करना है। ताकि हर कोई उनकी देखभाल के साथ आगे बढ़ सके।

- **हैविंग हर्स्ट** के अनुसार अवस्थाएँ पाँच हैं-

1. नैतिक निरपेक्ष (A Moral Stage) – 0 से 2 वर्ष, अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं।
2. आत्म केन्द्रित (Self Centered) – 2 से 6 वर्ष, स्वयं के हितों के बारे में सोचता है।
3. परम्परानुकूल अवस्था (Conventional) – 7 से 12 वर्ष, समाज द्वारा स्वीकृत मान्यताओं के अनुसार व्यवहार
4. विवेकहीन सचेत अवस्था (Irrational Conscientious Stage) – 13 से 16 वर्ष, भावानात्मक आधार पर पालना करना।
5. विवेकशील परोपकारी अवस्था (Rational Altruistic Stage) – नैतिक विकास की उच्चतम अवस्था, भावनाओं की अपेक्षा मौलिक स्तर पर पालना।

## नैतिक/चारित्रिक विकास में शिक्षा/शिक्षक की भूमिका-

1. मूल प्रवृत्तियों व संवेगों का उचित प्रशिक्षण
2. संकल्प शक्ति का प्रशिक्षण
3. अच्छी आदतों व उचित आदर्शों का विकास
4. स्थायी भावों का विकास
5. नैतिक धार्मिक व सामाजिक मूल्यों की शिक्षा
6. उदाहरण व आदर्श प्रस्तुत करना (सबसे उपयुक्त)
7. महापुरुषों की जीवनियाँ
8. पाठ्य सहगामी व दिवसों का आयोजन

## नैतिक विकास की विमाएँ (Dimensions of Moral Development)

1. संवेगात्मक भाव
2. व्यवहार/परिणाम
3. संज्ञान/समझ

## नैतिक विकास के सिद्धान्त-

1. **मनोवैश्लेषिक सिद्धान्त** – फ्रायड
   नैतिक विकास Supper Ego के कारण होता है।
2. **सामाजिक अधिगम सिद्धान्त** – बाण्डुरा
   नैतिक विकास का आधार प्रेक्षण होता है। दूसरो को देखकर सीखते हैं।
3. **संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त** – जीन पियाजे

## नैतिक विकास (विशेष)

- **क्रो एण्ड क्रो** – बाल्यवस्था में नैतिकता की सामान्य धारणाओं का विकास हो जाता है।
- **मेडिनिस** – किशोर धर्म की संकीर्णता त्याग कर सहिष्णुता व मानवधर्म का समर्थन करता है। किशोर अपनी संस्कृति के व्यवहार के प्रतिमानों का अनुसरण करता है।
- नैतिक तर्कणा – पूर्व किशोरावस्था (10-16 वर्ष)
- **कारमाईकेल** – चरित्र दृष्टिकोण व धारणाओं का स्थायी प्रतिमान है नैतिक व्यवहार के प्रकार व प्रकृति की भविष्यवाणी है।
- **बाउले व अन्य** – चरित्र के गुण व लक्षण विद्यालय कार्य व सामाजिक जीवन दोनों में प्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण है।
- **बाउले** – आचरण आत्म नियंत्रण की शक्ति है।
- **अच्छे/आचरण के गुण :-** आत्मनियंत्रण, विश्वसनीयता, निस्तरता, कर्मनिष्ठा, अन्तःकरण की शुद्धता, उत्तरदायित्व की भावना।
- **हैमिंग** – पुस्तक The Development of Children Moral Values में नैतिक विकास एक सतत प्रक्रिया है।
- नैतिक विकास में व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
- **जॉन लॉक** के अनुसार बालक नैतिक रूप से तटस्थ होता है। (टेबुला रेसा)
- **रूसो** के अनुसार – बालक में जन्मजात शुद्धता होती है व अनैतिक व्यवहार वयस्को के दोषपूर्ण व्यवहार से उत्पन्न होता है।
- **संत ऑगस्टिन के अनुसार** – बच्चे संभवत दोषी प्रवृत्ति के होते हैं।

## क्रियात्मक/गामक विकास (Motor Development)

- गामक विकास भुजाओं, टांगों व शरीर की अन्य मांसपेशियों की शक्ति, गति व स्पष्टता का विकास है। हाथ व आँख की हरकतें, वस्तुओं को उठाना, रखना, बैठना, खड़े होना, चलना, दौड़ना, उछलना, चढ़ना, नृत्य करना, स्वर निकालना, लिखना आदि महत्त्वपूर्ण गामक क्रिया है। क्रियात्मक विकास मांसपेशियों व तंत्रिकाओं के समन्वित कार्य द्वारा अपने शारीरिक क्रियाओं पर पूर्ण नियंत्रण करने से प्राप्त होती है।

## मनोगत्यात्मक गतिविधि के विकास के चरण-

1. वस्तु के प्रति आकर्षित होना।
2. वस्तु को पकड़ना/प्राप्त करने की कोशिश करना।
3. वस्तुओं को समझने की कोशिश करना।
4. वस्तु के बारे में सोच का ध्रुवीकरण।

## गामक विकास की सामान्य प्रवृत्तियाँ-

1. पिंड से विशिष्ट (शरीर से विभिन्न अंगों की ओर)
2. बड़ी मांसपेशियों से छोटी मांसपेशियों की प्रवृत्ति
3. शिरो अधोगामी एवं निकट दूर प्रवृत्ति (सिर से पैर की ओर)
4. द्विमुखी से एकमुखी प्रवृत्ति (पहले दोनों हाथ फिर एक हाथ)
5. पूर्वानुमेय पैटर्न होता है।

Scanned with CamScanner

6. वैयक्तिक भिन्नता होती है।
7. मांसपेशियों व तत्रिकाओं की परिपक्वता पर निर्भर करता है।

**गामक कौशल के प्रकार–**

1. **सूक्ष्म पेशीय कौशल** – जो अंगुलियों की सहायता से होता है। जैसे – लिखना
2. **स्थूल पेशीय कौशल** – जिनमें मांसपेशियों को व्यापक रूप से क्रियाकलाप की आवश्यकता होती है। जैसे – टहलना व दौड़ना।

**गामक विकास का क्षेत्र–**

1. **आत्मपोषण :–** 8 माह का बच्चा दूध की बोतल पकड़ना, दो वर्ष का चम्मच से खाना, 3 वर्ष का अंगुलियों से खाना, 6 वर्ष का मेज पर बैठकर व 10 वर्ष का सम्पूर्ण नियंत्रण।
2. **स्वप्रसाधन :–** 4-5 वर्ष का बालक कपड़े पहनना व निकालना तथा नहाना।
3. **लिखना :–** 18 माह का बालक पैंसिल से घसीटे मारना, 3 वर्ष का सरल प्रतीक ईकाइयाँ बनाना व रेखा खींचना, 4 वर्ष का अक्षर लिखना, 5-6 वर्ष का सम्पूर्ण वर्णमाला को लिख लेता है, सूक्ष्म गामक क्रौशल।
4. **गेंद फेंकना व लपकना :–** 2 वर्ष का बालक गेंद फेंकना व 4 वर्ष का लपकना प्रारम्भ कर देता है तथा 6 वर्ष का पूर्ण नियंत्रण करता।
5. **ब्लॉक बनाना :–** 3 वर्ष का बालक।
6. **ट्राईसाईकिल व बाईसाईकिल :–** 2 वर्ष का ट्राईसाईकिल व 8 वर्ष का बाईसाईकिल चलाना।
7. **नृत्य :–** 3 वर्ष का बालक नृत्य प्रांरभ व 6 वर्ष का नियंत्रण के साथ।
8. **तैरना :–** 8 वर्ष का बालक।
9. **बालगति :–**

- ठोडी ऊपर करना – 1 माह
- छाती उठाना – 2 माह
- वस्तु को पकड़ना व छोड़ना – 3 माह
- सहारे से बैठना – 4 माह
- गोद में बैठना – 5 माह
- कुर्सी पर बैठना – 6 माह
- सहारे से खड़े होना – 8 माह
- चारपाई पकड़कर चलना – 9 माह
- घुटनों के बल चलना – 10 माह
- सहारा लेकर स्वयं उठना – 12 माह
- अकेले खड़े होना व चलना – 14-15 माह (1½ वर्ष)
- दौड़ना-उछलना/बड़ी आंत पर नियंत्रण वर्ष – 2-3 वर्ष
- सीढ़ीया चढ़ना व उतरना/ मूत्राशय पर नियंत्रण – 4 वर्ष
- कूदना – 6-7 वर्ष।

**नोट :–** सूक्ष्म पेशीय कौशल – 3 वर्ष का ब्लॉक बनाना, वस्तुओं को उठाना, 4 वर्ष – चिन्तात्मक पहेली को जोड़ना व लिखना। 5 वर्ष – हाथ, भुजा व शरीर का आँख की गति के साथ समन्वय।

- ✦ पीठ के बल लेटकर सिर उठाना – 6 माह
- ✦ शरीर को बगल से पीठ व पीठ से बगल – 2-4 माह
- ✦ बचाव अनुक्रिया – जन्म के 2 सप्ताह बाद

**गामक विकास को प्रभावित करने वाले कारक–**

1. स्वास्थ्य
2. भोजन/पोषण
3. लिंग
4. बुद्धि
5. प्रेरणा
6. वातावरण
7. इच्छाशक्ति
8. जन्मक्रम (प्रथम का शीघ्र)
9. अभ्यास
10. परिपक्वता

## भाषा विकास

- ✦ **स्वीट के अनुसार** – भाषा ध्वनि द्वारा मानव के भावों की अभिव्यक्ति है।

**भाषा विकास के चरण–**

1. सुनकर भाषा को समझना। (6 से 7 माह)
2. ध्वनि पैदा करके बोलना। (8 से 9 माह)
3. अक्षरों को पहचानना व शब्द वाक्य निर्माण। (2 से 3 वर्ष)
4. लिखना (4 वर्ष)

**भाषा विकास शब्द भण्डार–**

- ✦ 10 महीने का बच्चा पहला सार्थक शब्द बोलता है। (स्मिथ)
- ✦ 1 वर्ष का बच्चा 3 से 5 शब्द बोलता है। (स्मिथ)
- ✦ 2 वर्ष का बच्चा 100 से 200 शब्द बोलता है। दो शब्दों की अवस्था में प्रवेश, वाक्य बनाना। (स्मिथ)
  *(ट्रिक शब्दावली (18 से 24 माह) वे शब्द जो माता-पिता के आग्रह पर बालक बोलता है। जैसे – दूध, पानी, खाना)*
- ✦ 3 वर्ष का बच्चा 896 शब्द बोलता है। 3-4 वर्ष के मध्य शिष्टाचार शब्दावली का विकास जैसे – नमस्कार, धन्यवाद। (स्मिथ)
- ✦ 4 वर्ष का बच्चा 1540 शब्द बोलता है। समय संख्या शब्दावली का विकास (स्मिथ)
- ✦ 5 वर्ष का बच्चा 2072 शब्द बोलता है। समय शब्दावली का विकास (स्मिथ)
  (मुद्रा/रंग शब्दावली का विकास)(4-5 वर्ष)
- ✦ 6 वर्ष का बच्चा 2562 शब्द बोलता है। गुप्त शब्दावली का विकास (स्मिथ)
- ✦ 8 वर्ष का बच्चा 3600 शब्द बोलता है। (टर्मन)
- ✦ 10 वर्ष का बच्चा 5400 शब्द बोलता है। (टर्मन)
- ✦ 12 वर्ष का बच्चा 7200 शब्द बोलता है। (टर्मन)
- ✦ 16 वर्ष का बच्चा 11700 शब्द बोलता है।
- ✦ 18 वर्ष का बच्चा 15000 से 19000 शब्द बोलता है। (स्मिथ)

**किशोर के अनुसार भाषा विकास–**

- ✦ 4 वर्ष का बच्चा 5600 शब्द बोलता है।
- ✦ 5 वर्ष का बच्चा 9600 शब्द बोलता है।
- ✦ 6 वर्ष का बच्चा 14700 शब्द बोलता है।
- ✦ 8 वर्ष का बच्चा 26300 शब्द बोलता है।

Scanned with CamScanner

- 10 वर्ष का बच्चा 34300 शब्द बोलता है।
- शब्दावली :-
  - 18 माह - 10 शब्द
  - 24 माह - 29 शब्द
  - 3 वर्ष - 200 - 300 शब्द
  - स्कूल प्रारम्भ - 20000 से 24000 शब्द
  - कक्षा 6 में - 50000 शब्द
  - 9 व 10 कक्षा में - 80000 शब्द
- थॉमसन तथा लिपसिट के अनुसार :-

| | |
|---|---|
| 18 माह के बालक का शब्द भण्डार | - 10 शब्द |
| 2 वर्ष | - 272 शब्द |
| 2½ वर्ष | - 450 शब्द |
| 3 वर्ष | - 1000 शब्द |
| 3½ वर्ष | - 1250 शब्द |
| 4 वर्ष | - 1600 शब्द |
| 4½ वर्ष | - 1900 शब्द |
| 5 वर्ष | - 2100 शब्द |
| कक्षा 6 में पढ़ने वाले बालक | - 50,000 शब्द |
| हाई स्कूल | - 80,000 शब्द |

- बालकों की तुलना में बालिकाओं का शब्द भण्डार अधिक होता है।

## भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक–

- परिपक्वता - गैसेल ने दिया।
- मानसिक स्वास्थ्य या बुद्धि।
- शारीरिक स्वास्थ्य।
- अभिप्रेरणा।
- लिंग का प्रभाव। (लड़कियों में पहले)
- जन्म क्रम का प्रभाव। (प्रथम का जल्दी)
  वाक विकार - तुतलाना, हकलाना, अस्पष्ट उच्चारण, श..श..ह करना, संकूल ध्वनि (तीव्र अव्यवस्थित)

## भाषा सीखने के साधन

1. अनुकरण
2. खेल
3. कहानी सुनाना
4. वार्तालाप
5. प्रश्नोत्तर

## भाषा के प्रकार–

1. **वाचिक भाषा** - शब्दों, वाक्यों, वाणी के रूप में सूचना को व्यक्त करना।
2. **सांकेतिक भाषा** - संकेतों के माध्यम से व्यक्त करना।
3. **आलेखिय भाषा** - लिखकर विचारों को व्यक्त करना।

## भाषा की संरचना–

1. **ध्वनिग्राम** - बोली जाने वाली भाषा की सबसे छोटी ईकाई जैसे - D.K. की आवाज।
2. **रूपाग्राम** - जब ध्वनिग्राम आपस में संयोजित कर लिया जाता है रूपाग्राम कहलाता है। जैसे - VAT
3. **वाक्य विन्यास** - रूपाग्राम को संयोजित करके जटिल शब्द वाक्य बनाये जाते हैं - सतही सरंचना व गहरी सरंचना वाक्य विन्यास नियमों का तंत्र है जो बताता है किस तरह शब्दों का उपयोग व्याकरणीय वाक्यों के निर्माण करता है।
4. **अर्थ विज्ञान** - व्यक्ति रूपग्रामों व वाक्यों से अर्थ किस तरह निकालता है।

## भाषा का विकास–

- **क्रन्दन** - प्रारम्भिक रूप - हावभाव। (भाषा विकास की पहली अवस्था)
- **बलबलाना** - भाषा विकास की दूसरी अवस्था।
- **रूपिम** - Morphemes किसी भाषा में सबसे छोटी अर्थ पूर्ण ईकाई
- **स्वपनिम** - Phonems किसी भाषा में ध्वनि की सबसे छोटी ईकाई।
- **व्यवहारवादियों के अनुसार** भाषा विकास साहचर्य, अनुकरण, व पुनर्बलन पर आधारित है।

## विचार व भाषा–

- **बेंजामिन ली व्होर्फ** - भाषा विचार की अन्तर्वस्तु का निर्धारण काफी है, यह सिद्धान्त भाषायी सापेक्षता प्रावकल्पना कहलाता है। व्यक्ति क्या व किस प्रकार सोच सकता है इसका निर्धारण प्रयुक्त भाषा व भाषायी वर्गो पर निर्भर करता है।
- **जीन पियाजे** - भाषा न केवल विचार का निर्धारण करती है अपितु यह इससे पहली भी उत्पन्न होती है।
- **स्कीनर** - भाषा का विकास अनुकरण, पुनर्बलन व साहचर्य पर आधारित है।
- **नॉम चॉमस्की** - भाषा विकास की जन्मजात प्रतिज्ञप्ति का प्रतिपादन किया है। भाषा विकास शारीरिक परिपक्वता की तरह है जो उपयुक्त देखभाल करने पर स्वत: होता है बच्चे सर्वभाषा व्याकरण के साथ जन्म लेते हैं वे किसी भाषा को सुनते है उसके व्याकरण को सरलता से सीख जाते हैं। चौमस्की व्याकरण सीखने की अंतर्निहित तत्परता पर बल देते हैं।
- **वायगोत्सकी के अनुसार** - 2 वर्ष तक भाषा व विचार मिल जाते है बालक में विचार व भाषा का विकास अलग- अलग होता है। भाषा व चिन्तन की उत्पत्ति अलग-अलग होती हैं यह विकास समानान्तर व विभिन्न चरणों में होता है।
- **वायगोत्सकी के अनुसार** - भाषा विकास अवस्था - दो वर्ष से पहले विचार पूर्व वाचिक होते है। दो वर्ष के बाद वाचिक सम्प्रत्यात्मक चिंतन आन्तरिक भाषा की गुणवता पर निर्भर व आन्तरिक भाषा की गुणवता सम्प्रत्यात्मक चिंतन होता है।

1. **अबौद्धिक/चिंतनशून्य वाक् सहज अवस्था** - इसमें शब्दों के प्रतीकात्मक आशय सीखे जाते है।
2. **आत्मक्रेन्द्रित भाषा** - बच्चे प्रसन्नता के साथ बात कहते हैं जिन्हें वे कर रहे होते हैं चाहे कोई सुने या नहीं।
3. **आंतरिक भाषा** - ध्वनी रहित वाणी का प्रयोग करते हैं।

- **जीन पियाजे** - चिंतन भाषा का निर्धारण ही नहीं करता वरन इससे पहले उपस्थित होता हैं भाषा चिंतन के वाहकों में से एक है भाषा की समझ के लिए चिंतन आवश्यक है। चिंतन व भाषा में निकटवर्ती सम्बन्ध है लेकिन भिन्न-भिन्न प्रणालियाँ हैं। चिंतन के साधनों में भाषा केवल एक साधन, भाषा को समझने के लिए चिंतन आधारभूत व आवश्यक तत्व है।
- **ब्रूनर** - विचार आन्तरिक भाषा है और संरक्षण पर स्वामित्व व अन्य सिद्धान्तों की व्याख्या करने के लिए भाषा की अपेक्षा भाषा वाक्य रचना नियमों का प्रयोग किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

✦ आनुवांशिकता में शामिल है – गुणसूत्र व जीन्स

## अन्तः स्त्रावी ग्रंन्थियों का विकास व व्यक्तित्व पर प्रभाव

1. **पीयूष ग्रन्थि** – मस्तिष्क में विद्यमान इसे मास्टर ग्रन्थि कहा जाता है। इसमें से अग्रवर्ती भाग से सोमैट्रोपीन हार्मोन निकलता है। शरीर की लम्बाई व बौनेपन को निर्धारित करता है। परवर्ती भाग से पिटयूट्रीन हार्मोन जो रक्तचाप, माँसपेशियों में सजगता लाता है।

- एड्रीनल कोर्टक्स (कार्टिन हार्मोन)
  - यह कार्बोहाइट्ड्रेट नमक व चपापचय का नियंत्रण होता है कमी से निष्क्रियता, थकान, अनिन्द्रा, बेहोशी उत्पन्न होती है।
- एड्रीनल मेडुला हार्मोन
  - एड्रीनालीन
    - संवेगात्मक स्थिति पर नियंत्रण इसे आपातिक हार्मोन्स भी कहा जाता है।
  - नारएड्रीनालीन

2. **एड्रीनल ग्रन्थि** – यह वृक्क (Kidney) के ऊपर होती है इसके दो भाग है –
3. **कण्ठ ग्रंथि ( अवटु ग्रंथि ) ( थाईराईड )** – हार्मोन थायराक्सीन होता है। यह सम्पूर्ण शरीर के चयापचय प्रक्रिया पर नियंत्रण करता है। इसकी कमी से विशेष शारीरिक अवस्था जिसे माएक्सडेमा की स्थिति उत्पन्न होती है जिससे हृदय की गति, श्वसन गति, रक्तचाप व शरीर का तापक्रम कम हो जाता है, अधिक होने पर हाईपरथायरिज्म उत्पन्न होता है जिससे व्यक्ति अधिक सक्रिय, जोशीला नजर आता है, रक्तचाप का बढ़ना व वजन का कम होना, स्वभाव का चिड़चिड़ा होना आदि, इसकी कमी से होने वाले प्रमुख लक्षण होता है।
4. **पेराथायराईड/उपकठ ग्रंथि** – हार्मोन – पराथोरामोन – यह रक्त में कैल्सियम व फॉस्फेट की मात्रा का निर्धारण करता है। यह शरीर में अधिक होने से उत्तेजनशीलता को बढ़ावा व कम होने से व्यक्ति में शिथिलता को बढ़ावा मिलता है।
5. **यौन ग्रंथि (Sex Gland)** – पुरूष की यौन ग्रंथि को टेस्टीक्ल- हार्मोन-टेस्टस्ट्रोन व एण्ड्रोस्ट्रोन – जो पुरूषों में लैगिक व यौन गुणों को प्रभावित करता है। महिला यौन ग्रंथि ओवरी – हार्मोन – एस्ट्रोजेन्स व प्रोजेस्ट्रोन कहा जाता है ये आवाज का पतला होना व अन्य यौन गुणों को प्रभावित करते हैं।
6. **पेंक्रियाज** – यह आमाशय के नीचे होती है–

- बीटा कोशिका → इन्सुलिन (हार्मोन) → कम होने से मधुमेय रोग अधिक होने से हाइपोग्लिसेमिया जो चिड़ड़ापन, बैचेनी व थकान, चिंता को बढ़ाता है।
- अल्फा कोशिका → ग्लूकागोन → ऊर्जा की मात्रा

✦ कम होने से मधुमेय रोग

✦ अधिक होने से हाइपोग्लिसेमिया जो चिड़ड़ापन, बैचेनी व थकान, चिंता को बढ़ाता है।

## व्यवहार के जैविकीय आधार ( विभिन्न कोशिकाएँ )–

✦ **तंत्रिका कोशिकाएँ** – विशिष्ट कोशिकाएँ जो उद्दीपकों को विद्युतीय आवेग में परिवर्तित करने की योग्यता रखती हैं ये ज्ञानेन्द्रियों व पास की तंत्रिका कोशिकाओं से सूचना प्राप्त करती है उसे केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र से सूचना को मांसपेशियों व अन्य ग्रंथियों तक ले के जाती है। तंत्रिकाएँ मुख्य रूप दो प्रकार की होती है –

प्रकार
- संवेदी (सूचना को ज्ञानेन्द्रियों से केन्द्रिय तंत्रिका तक ले जाती है।)
- पेशिय (सूचना को केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र से मांसपेशियों तक ले जाती है।)

तंत्रिका तंत्र
- केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र
  - मस्तिष्क
  - मेरूरज्जु
- परिधीय तंत्रिका तंत्र
  - कायिक संवेदी/ पेशीय व ऐच्छिक कार्य
  - स्वायत्त वे कार्य जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं होता। जैसे – सांस लेना, रक्त संचार, लार स्त्राव व सांवेगिक प्रतिक्रिया
    - अनुकपी खण्ड आपातकालीन स्थिति को संभालता है।
    - परानुकपी खण्ड ऊर्जा के संरक्षण व्यक्ति को सामान्य स्थिति में लाता है।

## केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र

1. **मस्तिष्क व व्यवहार** – मस्तिष्क के भाग

✦ **पश्च मस्तिष्क** – इसमें निम्न संरचना होती है

- **मेडुला ऑबलागाटा** – मूलभूत जीवन गतिविधि जैसे श्वास लेना, हृदयगति व रक्तचाप को नियमित।
- **सेतु** – निद्रा रचनातंत्र से जुड़ा होता है विशेषत: स्वप्न निंद्रा
- **अनुमस्तिष्क** – यह शारीरिक मुद्रा व संतुलन को बनाये रखने व नियंत्रण का कार्य करता है।

✦ **मध्य मस्तिष्क** – पश्च व अग्र मस्तिष्क को जोड़ता है इसमें रेटिक्यूलर एक्टिवेटिंग सिस्टम होता है जो भाव जाग्रत के लिए उत्तरदायी होता है।

✦ **अग्र मस्तिष्क** – यह सभी प्रकार की संज्ञानात्मक, संवेगात्मक व प्रेरक गतिविधि को करता है।

- **अधश्चेतक** – यह शारीरिक प्रक्रिया को नियमित जैसे भोजन करना, पानी पीना, सोना, कामोत्तेजना व शरीर के आंतरिक वातावरण हृदयगति, रक्तचाप व तापमान को नियत्रित व नियमित करता है।
- **चेतक** – यह प्रसारण यंत्र की तरह ज्ञानेद्रिया से संकेतों को वल्कुट

Scanned with CamScanner

के हिस्से में भेजता है व वल्कुट से निकलने वाले संकेतों को शरीर के विभिन्न भागों में भेजता है।

- **उपवल्कुटीय यंत्र** – शरीर में शारीरिक तापमान, रक्तचाप व रक्तशर्करा का नियमन करके, आंतरिक समस्थिति को कायम रखता है यह अधश्चेतक से संबंधित है।

**2. प्रमस्तिष्क ( मानव मस्तिष्क 2/3 भाग ) :-**

- यह भाग सभी उच्चस्तरीय संज्ञानात्मक कार्य करता है– जैसे – अवधान, प्रत्यक्षण, अधिगम, स्मृति, भाषा व्यवहार, तर्क व समस्या समाधान को नियमित करता है।

प्रमस्तिष्क गोलार्द्ध

बायां गोलार्द्ध – भाषा व्यवहार पर नियंत्रण

दायां गोलार्द्ध – प्रतिमा, देशिक संबंध प्रारूप प्रत्याभिज्ञान इत्यादि कार्य

✦ **प्रमस्तिष्क वल्कुट के भाग :-**

1. **ललाट पालि (Frontal Lobe)** – संज्ञान कार्य – अवधान, चिंतन, तर्क इत्यादि।
2. **पार्श्विक पालि (Parietal)** – त्वचा संवेदना, चक्षु व श्रवण संवेदन कार्य।
3. **शंख पालि (Temporal)** – श्रवण, शब्द, ध्वनि, भाषा व वाणि को समझना।
4. **पश्चकपाल पालि (Occipital)** – चक्षु सूचना।

✦ **मेरूरज्जु** – इसका कार्य शरीर के निचले भागों से आने वाले संवेदी आवेगों को मस्तिष्क तक पहुंचाना व मस्तिष्क से आने वाले पेशिया आवेगों को शरीर तक पहुँचाना।

✦ **प्रतिवृति क्रिया क्या है** – ये अनैच्छिक होती है स्वत: होती हैं जैसे आँखें झपकना, सांस लेना, गरम या ठण्डी वस्तु से हाथ हटाना।

## बाल विकास स्मरणीय तथ्य–

✦ बाल विकास परिणाम होता है – वंशानुक्रम व वातावरण की अन्त: क्रिया का

✦ **हैडो कमेटी** रिपोर्ट का सम्बन्ध है – किशोरावस्था

✦ किशोर वर्तमान की शक्ति या भावी को प्रस्तुत करता है – क्रो एण्ड क्रो

✦ किशोरावस्था तूफान, तनाव, संघर्ष व विरोध की अवस्था – स्टेनले हॉल

✦ किशोरावस्था एक नया जन्म है – स्टेनले हॉल

✦ 1904 में लिखित पुस्तक 'Adolsence' – स्टेनले हॉल

✦ जीवन का कठिन काल – किलपेट्रिक

✦ किशोरावस्था के लिए एक ही शब्द है – परिवर्तन – बिग/हण्ट

✦ दिवास्वप्न की प्रवृत्ति – किशोरावस्था

✦ **विग-हण्ट** – जिन समूह से किशोरों का सम्बन्ध होता है वे उनके सभी कार्यो को प्रभावित करते हैं।

✦ **के.के..स्ट्रांग** – किशोर की रुचियों में 15 वर्ष तक स्थिरता आ जाती है।

✦ आत्मचेतना किसकी विशेषता है – किशोर

✦ किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है – वैलेन्टीन।

✦ **स्कीनर** – किशोर के व्यवहार का अन्तिम व महत्त्वपूर्ण स्वरूप व्यक्तित्व प्रौढ़ता की दशा में बढ़ने में लक्षित होता है।

✦ किशोर के संवेगात्मक विकास के लिए उपयुक्त विधि शोधन/मार्गन्तीकरण

✦ सामाजिक स्वीकृति की अवस्था – किशोरावस्था

✦ पूर्व किशोरावस्था 12 से 16 वर्ष, उत्तर किशोरावस्था 17 से 19 वर्ष

✦ संवेग अत्यधिक अस्थिर होते हैं – पूर्व किशोरावस्था

✦ शारीरिक विकास की चरम अवस्था है – किशोरावस्था

✦ दो बालक समान मानसिक योग्यता के नहीं होते हैं – हरलॉक

✦ मानसिक विकास के लिए उपयुक्त विधि – करके सीखना।

✦ किशोरावस्था में बुद्धि का अधिकतम विकास – जोन्स – कोनार्ड 16 वर्ष

✦ एलिस क्रो – किशोर का चिन्तन शक्तिशाली पक्षपात व पूर्ण निर्णय से होता है।

✦ संवेदना ज्ञान की पहली सीढ़ी है – मानसिक विकास

✦ बालक के सामाजीकरण का प्रथम स्थान – परिवार

✦ जटिल सामाजीकरण की अवस्था – किशोरावस्था

✦ संवेग जन्म से ही विद्यमान नहीं होते – स्प्ट्स

✦ किशोर के संज्ञानात्मक विकास की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता – तर्क के साथ समस्याओं के समाधान की योग्यता।

✦ किशोरावस्था के दौरान विकासात्मक परिवर्तनों की मुख्य समस्या है – समायोजन की कमी।

✦ किशोरावस्था में सा. विकास पर प्रभाव नहीं पड़ता है – रुचि, आवश्यकता, अभिवृत्ति।

✦ किशोरावस्था में सा. विकास पर प्रभाव पड़ता है – असुरक्षा।

✦ किशोरावस्था में चरित्र निर्माण से सम्बन्धित अवस्था है – आधारभूत आत्मचेतना अवस्था।

✦ किशोर के समायोजन की प्रक्रिया में शिक्षक का योगदान होता – आकांक्षा का उचित स्तर तय करना

✦ विकास व्यक्ति में नवीन विशेषताएं व योग्यताओं का विकास करता है – हरलॉक

✦ किशोर के जटिल अवस्था के कारण किशोरों के अध्ययन का विषय होना – शरीर व मन सम्बन्धी।

✦ मनुष्य के शरीर में हड्डियों की संख्या कम होती है – किशोरावस्था के बाद।

✦ किशोर जो दिग्भ्रमित है का पथ प्रदर्शन होगा – अच्छे व्यवहार की प्रशंसा करके, निर्देशन का प्रयोग।

✦ वह परीक्षण जो जीवन पर्यन्त चलने वाले अनौपचारिक अधिगम पर आधारित है – व्यक्तित्व परीक्षण।

✦ विशिष्ट अधिगम अनुभव प्रदान करने के बाद अधिगम जांचने का परीक्षण – उपलब्धि परीक्षण।

✦ अन्त:स्रावी ग्रन्थियों का कार्य नहीं है – नैतिक आचरण नियंत्रित करना।

Scanned with CamScanner

- अन्त:स्रावी ग्रन्थियों का कार्य है - रासायनिक संतुलन बनाना, अभिवृद्धि व स्वास्थ्य को प्रभावित करना।
- मानसिक हीनता की समस्या - जी.डी.मेज - किशोरावस्था में।
- किशोरावस्था यौवनावस्था तथा वयस्कता के मध्य संचरण काल है - कुप्पूस्वामी।
- नैतिक विकास का सिद्धान्त - कोहलरबर्ग (1969) - छ: अवस्थाएं।
- किशोर के नैतिक विकास की विशेषता - स्वयं नैतिक मूल्यों व सिद्धान्तों का निर्माण।
- प्रौढ़ावस्था में प्रवेश के समय किशोर स्थायी नैतिक सिद्धान्तों का निर्माण कर लेता है - पैक व हैविंगहार्ट
- भय को मूलभूत संवेग बताया - वाट्सन
- मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त - इरिक इरिक्सन - 8 अवस्था।
- परिपक्वता सिद्धान्त - गैसेल
- मनोलैंगिक विकास सिद्धान्त - फ्रायड
- प्रगतिशील परिवर्तनों का नियमित क्रमबद्ध व सुव्यवस्थित प्रतिमान है विकास - हरलॉक
- भाषा विकास सिद्धान्त - चॉमस्की
- व्यक्तित्व/विकास वंशानुक्रम व वातावरण का गुणनफल होता है - वुडवर्थ
- सामाजीकरण का मापदण्ड - सामाजिक अन्त: क्रिया, सामाजिक परिपक्वता, सामाजिक अनुरूपता।
- काम प्रवृत्ति किशोर के संवेगात्मक व्यवहार को सर्वाधिक प्रभावित करती है - बी.एन.झा
- संवेगात्मक समस्या है अंगूठा चूसना, दांतों से नाखून कुतरना, शर्मीलापन, पलायन, आक्रामक व्यवहार, वामहस्तता, हकलाना, तूतलाना।
- स्थानिक सोच - मूर्त संक्रियात्मक अवस्था।
- प्रस्थापनात्मक सोच - शाब्दिक वाक्यों के तर्क का मूल्यांकन, औपचारिक अवस्था।
- मूल संवेग- क्रोध, भय, दु:ख, आश्चर्य, प्रसन्नता, विरुचि
- सबसे प्राचीन प्रक्षेपी प्रविधि - शब्द साहचर्य परीक्षण (गाल्टन 1879)
- वाल्टर माइकल (Introductions to Personality) साईंस एंड हयूमन बिहेविअर (पुस्तक)
- अब्राहिम मैस्लो - मोटिवेशन एण्ड पर्सनल्टी (पुस्तक)
- **सोरेन्सन** - पित्र्यैक (जीन) बच्चों की प्रमुख विशेषताएँ व गुणों को निर्धारित करते हैं।
- **थार्नडाईक** - मूल शक्तियाँ वंशानुक्रम से निर्धारित होती है।
- **क्लिनबर्ग** - वंशानुक्रम प्रजाति की श्रेष्ठता पर प्रभाव डालता है।
- **गाल्टन** - वंशानुक्रम महानता पर प्रभाव डालता है।
- **डगडेल** - चरित्र वंशानुक्रम का परिणाम होता है।
- **एनास्टसी** - वातावरण वह हर वस्तु है जो व्यक्ति के पित्र्यैकों के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु को प्रभावित करता है।
- **डगलस व हॉलैण्ड** - वातावरण वह बाह्य शक्ति व प्रभाव है जो जीवन, स्वभाव, व्यवहार, बुद्धि, विकास व परिपक्वता पर प्रभाव डालता है।
- **फ्रेंज बोन्स** - शारीरिक अन्तर प्रजातियों में वातावरण से होता है।
- **क्लार्क** - प्रजाति के श्रेष्ठता का कारण वंशानुक्रम ना होकर वातावरण है।
- **कैडोल** - बुद्धि वातावरण से ज्यादा प्रभावित होती है।
- **कुले** - व्यक्तित्व निर्माण पर वातावरण का ज्यादा प्रभाव पड़ता है।
- **क्रो एण्ड क्रो** - व्यक्ति का निर्माण न केवल वंशानुक्रम व वातावरण से होता है वास्तव में वह जैविक दान व सामाजिक विरासत के एकीकरण की उपज है।
- **एडलर (शैशवावस्था)** - बालक के जन्म के कुछ पश्चात यह निश्चित किया जाता है कि जीवन में उसका क्या स्थान है।
- **कुप्पूस्वामी** - 4 वर्ष के बालक में कल्पना की सजीवता पायी जाती है।
- **ड्राईडेन** - पहले हम अपनी आदतों का निर्माण करते हैं फिर आदतें हमारा।
- **कोल ब्रुश** - 6-12 वर्ष की अपूर्व विशेषता है - मानसिक रुचियों के स्पष्ट परिवर्तन।
- **क्रो एण्ड क्रो** - स्वस्थ विकास का निवास की उत्तम दशाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध है।
- **सोरेन्सन** - जैस-जैसे शिशु प्रतिदिन, प्रति मास, प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है वैसे-वैसे उसकी मानसिक शक्तियों में परिवर्तन होता जाता है।
- हारमोन ने बुद्धि का विकास 15 वर्ष जोन्स-कोनार्ड-16 वर्ष माना है।
- **हरलॉक** - टोली बालक में आत्मनियंत्रण, साहस, न्याय, सहनशीलता व सद्भावना का विकास करती है।
- **क्रो एण्ड क्रो** - 6-10 वर्ष का बालक अपने वांछनीय या अवांछनीय व्यवहार में निरन्तर प्रगति करता रहता है।
- **स्कीनर व हैरीमैन** - वातावरण व संगठित साधनों के कुछ ऐसे कारक हैं जो सामाजिक विकास पर प्रभाव डालते हैं।
- **हरलॉक** - समूह के प्रभाव के कारण बालक सामाजिक व्यवहार का ऐसा महत्वपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करता है जो प्रौढ़ समाज में भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं।
- **जस्टिन** - 3 वर्ष की आयु में बालक में प्रेम का विकास हो जाता है।
- **क्रो एण्ड क्रो** - सम्पूर्ण बाल्यकाल में संवेगों की अभिव्यक्ति के निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं।

Scanned with CamScanner

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ बाल विकास की दृष्टि से निम्न में से कौनसी युक्ति महत्त्वपूर्ण है ? **(प्रधानाध्यापक परीक्षा-2012)**
(A) भोजन एवं पोषण (B) वंशानुक्रम एवं वातावरण
(C) प्रेम एवं देखभाल (D) वंशानुक्रम एवं शिक्षा (B)

❖ अपने शिष्य के संवेगात्मक विकास के लिए अध्यापक को चाहिए कि ? **(PTI-II ग्रेड-2012)**
(A) वह माता-पिता का स्थान हड़पने की कोशिश न करे।
(B) वह अपने शिष्य के प्रति प्रेम तथा स्नेह विकसित करे।
(C) वह अपने शिष्य की शरारतों के प्रति भी प्रेम का रवैया अपनाये।
(D) अपने कुछ चुनिंदा शिष्यों के प्रति पक्षपातपूर्ण व्यवहार करे। (B)

❖ कोहलबर्ग के अनुसार, सही और गलत प्रश्न के बारे में निर्णय लेने में शामिल चिंतन प्रक्रिया को कहा जाता है ? **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) सहयोग की नैतिकता (B) नैतिक-तर्कणा
(C) नैतिक यथार्थवाद (D) नैतिक दुविधा (B)

❖ निम्नलिखित में से कौनसी मूल प्रवृत्ति बच्चों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करने हेतु काम में ली जा सकती है ? **(विज्ञान-II ग्रेड-2010)**
(A) आत्मरक्षा (B) जिज्ञासा
(C) पुत्रेष्णा (D) पलायन (B)

❖ हकलाने का मनोवैज्ञानिक कारण है ? **(गणित-II ग्रेड-2010)**
(A) घर तथा विद्यालय का तनावपूर्ण वातावरण।
(B) शब्द भण्डार अपर्याप्त होना।
(C) संवेगों का तीव्र प्रवाह।
(D) त्रुटिपूर्ण वाक्‌शैली। (C)

❖ जिस प्रक्रिया में व्यक्ति मानव कल्याण के लिए परस्पर निर्भर रहकर व्यवहार करना सीखता है, वह प्रक्रिया है- **(PTI-III, 2012)**
(A) सामाजीकरण (B) भाषा विकास
(C) वैयक्तिक मूल्य (D) सामाजिक परिपक्वता (A)

❖ विकास के किस आयाम के संबंध में पियाजे के विचार कोहलबर्ग के विचार समान हैं ? **(बिहार TET-II लेवल-2012)**
(A) सामाजिक विकास (B) संवेगात्मक विकास
(C) शारीरिक विकास (D) ज्ञानात्मक विकास (D)

❖ **निम्न में से कौनसा विकास का सिद्धान्त नहीं है ?** ***[School Lect. Exam-2016]***
(A) निश्चित प्रतिमान का सिद्धान्त
(B) विशिष्ट से सामान्य अनुक्रियाओं की ओर बढ़ने का सिद्धान्त
(C) समन्वय का सिद्धान्त
(D) निरन्तरता का सिद्धान्त **(B)**

❖ **विकास का मनोसामाजिक अवस्था दृष्टिकोण प्रतिपादित किया गया :** ***[School Lect. Exam-2016]***
(A) बण्डूरा (B) फ्रायड
(C) कोहलबर्ग (D) एरिक्सन **(D)**

❖ वृद्धि एवं विकास का मुख्य सिद्धांत है ? **(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) तत्परता का नियम
(B) एकता का नियम
(C) वैयक्तिक अंतर का सिद्धांत
(D) इनमें से सभी (C)

❖ किशोरावस्था की अवधि है ? **(गणित II ग्रेड-2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) 12 से 19 वर्ष (B) 10 से 14 वर्ष
(C) 15 से 20 वर्ष (D) 20 से 25 वर्ष (A)

❖ विधायकता की मूल प्रवृत्ति किस अवस्था में विकसित होती है? **(सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) शिशु अवस्था में (B) किशोरावस्था में
(C) युवा अवस्था में (D) बाल्यावस्था में (D)

❖ खिलौनों की (Toy Age) आयु कहा जाता है ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) पूर्व बाल्यावस्था (B) उत्तर बाल्यावस्था
(C) शैशवावस्था को (D) उपर्युक्त सभी (A)

❖ निम्नलिखित में से कौनसी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) दल/समूह में रहने की (B) अनुकरण करने की
(C) प्रश्न करने की (D) खेलने की (A)

❖ शैशवावस्था में बालक में कौनसी विशेषताएँ पाई जाती हैं ? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) सहयोग लेना (B) अनुकरण करना
(C) आश्रित होना (D) ये सभी (D)

❖ सामान्य बालक प्रायः किस आयु में बोलना सीख जाते हैं ? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) 11 माह (B) 16 माह
(C) 20 माह (D) 24 माह (A)

❖ बच्चे सबसे पहले कौनसी भाषा सीखते हैं ? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) राज्यभाषा (B) राष्ट्रीय भाषा
(C) मातृभाषा (D) सांकेतिक भाषा (C)

❖ बाल मनोविज्ञान के आधार पर कौनसा कथन सत्य है? **(उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011)**
(A) सभी बच्चे एक जैसे होते हैं।
(B) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है।
(C) कुछ बच्चे विशिष्ट होते हैं।
(D) कुछ बच्चे एक जैसे होते हैं। (B)

Scanned with CamScanner

- निम्नलिखित में से किस अवस्था में बच्चे अपने समवयस्क समूह (Peer Group) के सक्रिय सदस्य हो जाते हैं ? **(CTET-I लेवल-2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) पूर्व बाल्यावस्था (B) बाल्यावस्था
(C) किशोरावस्था (D) प्रौढ़ावस्था (C)
- व्यक्तिगत रूप से शिक्षार्थी एक दूसरे से ......... में भिन्न होते हैं ? **(CTET-II लेवल-2011)**
(A) वृद्धि एवं विकास के सिद्धांतों
(B) विकास की दर
(C) अभिप्रेरणा
(D) विकास की सामान्य क्षमता (B)
- 6 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक रुचि लेना प्रारंभ करते हैं? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) धर्म में (B) मानव शरीर में
(C) यौन संबंधों में (D) विद्यालय में (D)
- निम्नलिखित में से कौनसा व्यवहार भावात्मक बाधा को प्रदर्शित नहीं करता है ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) बाल अपराध
(B) कमजोरों को डराने वाला
(C) भगोड़ापन
(D) स्वाधीनता (D)
- प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए निम्नलिखित में से किसे बेहतर मानते हैं ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) वीडियो अनुकरण को
(B) प्रदर्शन को
(C) स्वयं के अनुभव
(D) उपर्युक्त सभी (C)
- दूसरे वर्ष के अंत तक शिशु का शब्द भण्डार हो जाता है ? **(छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011)**
(A) 100 शब्द (B) 60 शब्द
(C) 50 शब्द (D) 10 शब्द (A)
- संवेगों की उत्पत्ति होती है ? **(छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011)**
(A) मूल प्रवृत्तियों से (B) गत्यात्मक क्रियाओं
(C) पोषण (D) कोई नहीं (A)
- शर्म तथा गर्व जैसी भावना का विकास किस अवस्था में होता है? **(छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)**
(A) शैशवावस्था (B) बाल्यावस्था
(C) किशोरावस्था (D) वृद्धावस्था (B)
- विकास शुरू होता है ? **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) बाल्यावस्था से (B) प्रसव पूर्व अवस्था से
(C) शैशवावस्था से (D) पूर्व-बाल्यावस्था से (B)
- बाल्यावस्था में सामाजिक विकास के रूप में मुख्य है ? **(BTET-I लेवल-2012)**
(A) सामाजिक चेतना का यथेष्ट विकास
(B) बालक व बालिकाओं में एक साथ रहने की प्रवृत्ति
(C) अपनी अवस्था के गिरोह से अलग रहना
(D) बाल्याकाल की अंतिम अवस्था में माता-पिता में स्वास्थ्य सामंजस्य (B)
- लारेंस कोहलबर्ग विकास के किस क्षेत्र में शोध के लिए जाने जाते हैं? **(छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011)**
(A) संज्ञानात्मक (B) शारीरिक
(C) नैतिक (D) गामक (C)
- बालक के शारीरिक व क्रियात्मक विकास की दिशा होती है ? **(छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011)**
(A) सिर से पैर तथा शरीर के छोरों से मध्य की ओर
(B) सिर से पैर तथा शरीर के मध्य से छोरों की ओर
(C) पैर से सिर तथा शरीर के छोरों से मध्य की ओर
(D) पैर से सिर तथा शरीर के मध्य से छोरों की ओर (B)
- मैक्डूगल के अनुसार मूल प्रवृत्ति ''जिज्ञासा'' से संबंधित संवेग कौनसा है ? **(छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)**
(A) भय (B) घृणा
(C) आश्चर्य (D) भूख (C)
- शैशवावस्था की मुख्य विशेषता कौनसी नहीं है? **(छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)**
(A) सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता
(B) जिज्ञासा की प्रवृत्ति
(C) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति
(D) चिंतन प्रक्रिया (D)
- किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार ''विकास एक सतत् और धीमी प्रक्रिया है''। **(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)**
(A) कॉलेसनिक (B) पियाजे
(C) स्किनर (D) हरलॉक (D)
- बाल्य अवस्था होती है ? **(छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) 5 वर्ष तक (B) 12 वर्ष तक
(C) 21 वर्ष तक (D) कोई नहीं (B)
- बाल विकास का सही क्रम है ? **(बिहार TET-II लेवल-2012, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) प्रौढ़ावस्था-किशोरावस्था-बाल्यावस्था
(B) पूर्व किशोरावस्था-मध्य किशोरावस्था-उत्तर किशोरावस्था
(C) बाल्यावस्था-किशोरावस्था-प्रौढ़ावस्था
(D) इनमें से कोई नहीं (C)
- विकास कैसा परिवर्तन है ? **(बिहार TET-II लेवल-2012, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) गुणात्मक (B) रचनात्मक
(C) गणनात्मक (D) नकारात्मक (A)
- वृद्धि का संबंध किससे है ? **(बिहार TET-II लेवल-2012)**
(A) आकार व भार से (B) केवल आकार से
(C) केवल भार से (D) कोई नहीं (A)

Scanned with CamScanner

❖ निम्नलिखित में से कौनसा विकास का सिद्धांत है ?
**(CTET-I लेवल-2012)**
(A) सभी की विकास दर समान नहीं होती है।
(B) विकास हमेशा रेखीय होता है।
(C) यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया नहीं है।
(D) विकास की सभी प्रक्रियाएँ अंत:संबंधित नहीं हैं। (A)

❖ मानव विकास को क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है, जो है ?
**(CTET-I लेवल-2012)**
(A) शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक
(B) संवेगात्मक, संज्ञानात्मक, आध्यात्मिक और शारीरिक
(C) मनोवैज्ञानिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और शारीरिक
(D) शारीरिक, आध्यात्मिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक (A)

❖ कोहलबर्ग के अनुसार शिक्षक बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास कर सकता है ? **(CTET-I लेवल-2012)**
(A) धार्मिक शिक्षा को महत्त्व देकर
(B) व्यवहार के स्पष्ट नियम बनाकर
(C) नैतिक मुद्दों पर आधारित चर्चाओं में उन्हें शामिल करके
(D) कैसे व्यवहार किया जाना चाहिए इस पर कठोर निर्देश देकर (C)

❖ बालक अपने व्यवहार की सामाजिक स्वीकृति किस अवस्था में चाहता है ? **(सामान्य ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) किशोरावस्था (B) बाल्यावस्था
(C) शैशवावस्था (D) प्रौढ़ावस्था (A)

❖ एक बच्चा कक्षा में प्राय: प्रश्न पूछता है, उचित रूप से इसका अर्थ है कि ?
**(उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011)**
(A) वह शरारती है (B) जिज्ञासु है
(C) असामान्य है (D) प्रतिभाशाली है (B)

❖ निम्न में से किसका अर्थ आकार बढ़ने से है ?
**(संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) अभिवृद्धि (B) विकास
(C) परिपक्वता (D) उन्नयन (A)

❖ मानव विकास किन दोनों के योगदानों का परिणाम है?
**(RTET- II लेवल-2011)**
(A) अभिभावक एवं अध्यापक
(B) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारण
(C) वंशानुक्रम एवं वातावरण
(D) इनमें से कोई नहीं (C)

❖ विकास का अर्थ है ?
**(RTET-I लेवल-2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) परिवर्तनों की उत्तरोत्तरश्रृंखला
(B) अभिप्रेरणा के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रृंखला
(C) अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रृंखला
(D) परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की श्रृंखला (A)

❖ लॉरेंस कोह्लबर्ग के द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित चरणों में से प्राथमिक विद्यालयों के बच्चे किन चरणों का अनुसारण करते हैं–
**[सीटेट-18 नवम्बर, 2012 द्वितीय लेवल]**
1. आज्ञापालन और दण्ड-उन्मुखीकरण
2. वैयक्तिकता और विनिमय
3. अच्छे अंत: वैयक्तिक संबंध
4. सामाजिक अनुबंध और व्यक्तिगत अधिकार
(A) 1 और 2 (B) 2 और 4
(C) 1 और 4 (D) 1 और 3 (C)

❑❑❑

# 6 व्यक्तित्व

- व्यक्तित्व निर्माण की शुरूआत परिवार से होती है तथा समाज में जाकर पूर्ण बनता है।
- व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Persona (परसोना) से हुई है जिसका अर्थ है मुखौटा या नकाब।

## व्यक्तित्व संबंधी दृष्टिकोण–

- **सामान्य दृष्टिकोण के अनुसारः–** जो व्यक्ति रूप, रंग, भाषा तथा वेशभूषा की दृष्टि से जितना अधिक प्रभावित करता है वह उतना ही अच्छा व्यक्तित्व माना जाता है।
- **दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसारः–** जो व्यक्ति सम्पूर्णता का आदर्श है वह उतना ही अच्छा व्यक्तित्व है।
- **समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसारः–** व्यक्तित्व उन गुणों का संगठन है जो समाज में उसका स्थान निर्धारित करते हैं। (फ्ररिस, बगैस)
- **मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के अनुसारः–** जो व्यक्ति Id, Ego, Super Ego का समन्वय है उसका उतना ही अच्छा व्यक्तित्व है।
- **मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसारः–** व्यक्तित्व वंशानुक्रम तथा वातावरण का गुणनफल है।
  वुडवर्थ – $H \times E = P$

## परिभाषाएँ

- **आर.बी.कैटल –** जिसके द्वारा हम भविष्यवाणी कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति किस परिस्थिति में क्या करेगा?
- **वुडवर्थ –** व्यक्ति के व्यवहार का समूचा गुण उसका व्यक्तित्व है।
- **आलपोर्ट** के अनुसार – व्यक्तित्व उन मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ अपूर्व समायोजन निर्धारित करता है।
- **वेलेन्टाइन** के अनुसार – व्यक्तित्व जन्मजात तथा अर्जित परिवर्तितयों का योग है।
- **बोरिंग** के अनुसार – व्यक्तित्व वातावरण के साथ सामान्य व स्थायी समायोजन है।
- **वाटसन** के अनुसार – हम जो कुछ भी करते हैं, वही व्यक्तित्व है।
- **आइजेन्क** के अनुसार – व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, ज्ञानशक्ति व शरीर गठन का स्थायी व टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।
- **मन** के अनुसारः– व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार, तरीकों, रुचियों तथा योग्यताओं का विशिष्ट संगठन है।

**वाल्टर मिसेकल** ने अपनी पुस्तक **इन्ट्रोडक्शन टू पर्सनल्टी** में कहा है कि व्यक्तित्व व्यवहार के विशिष्ट पैटर्न में होता है जो प्रत्येक व्यक्ति जिंदगी की परिस्थितियों के साथ सामयोजन का निर्धारण करता है।

- **डेशील** के अनुसार – व्यक्तित्व व्यक्ति के संगठित व्यवहार का सम्पूर्ण चित्र है।
- **गिलफोर्ड –** व्यक्तित्व व्यक्ति के गुणों का समन्वित रूप है।

## व्यक्तित्व की विशेषताएँ–

- आत्मचेतना (Self Consciousness)
- सामाजिकता।
- गत्यात्मकता/गतिशीलता। (Dynamic)
- उत्तम शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य।
- उत्तम समायोजन शक्ति।
- (वुडवर्थ) विकास की निरन्तरता। (Consistency)
- महत्त्वाकांक्षी।
- अनुपम (Unique)
- दृढ़ इच्छा शक्ति।
- लक्ष्य निर्देशित। (Goal directed)
- संवेगीय स्थिरता (Emotional Mature)

## व्यक्तित्व के आयाम/तत्त्व–

- **शारीरिक तत्त्व –** इसके रूप आकार, भार, आवाज, नाड़ी संस्थान, ग्रंथि संस्थान आदि। (स्वस्थ व्यक्तित्व के लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक)
- **बौद्धिक तत्त्व –** (स्मृति, कल्पना, विचार, तर्क, निरीक्षण, निर्णय, ध्यान, बुद्धि व समायोजन की योग्यता)
- **भावात्मक तत्त्व –** अर्न्तमुखी, बर्हिमुखी, प्रसन्नचित, उदास, साहसी, कायर, प्रेमयुक्त, मनोविनोदी आदि।
- **सामाजिक तत्त्व –** सामाजिक व्यवहार, सामाजिक विचार, सामाजिक समायोजन व सामाजिक प्रभावशीलता।
- **संकल्पात्मक तत्त्व –** इच्छा शक्ति, रुचियाँ, चरित्र व समयोजन की योग्यता आदि आती है।

## व्यक्तित्व अध्ययन के प्रमुख उपागम–

1. **प्रारूप उपागम (Type Approach) :–** व्यक्ति के प्रेक्षित व्यवहार विशेषताओं को मापन करता है। इसमें चरक संहिता (वात, पित, कफ), (त्रिगुण सत्व/रजतम) इसमें क्रेचमर, शेल्डन, हिप्पोक्रेटस युंग, फ्रीडमैन व रोजनमैन के व्यक्तित्व प्रकार आते हैं।

Scanned with CamScanner

2. **विशेषक उपागम (Trat Approach) :-** विशिष्ट मनोवैज्ञानिक गुणों पर बल देता है इसमें आलपोर्ट का विशेषक सिद्धान्त (प्रमुख विशेषक, केन्द्रीय विशेषक व गौण विशेषक), कैटेल का व्यक्तित्व कारक (16 कारक), आइजेंक का सिद्धान्त जिसके (तंत्रिका तापिता बनाम सांवेगिक स्थिरता, बर्हिमुखरता बनाम अंतर्मुखता, मन-स्तापिता बनाम सामाजिकता) आते हैं।
3. **मनोगतिक उपागम** - इसमें सिग्मण्ड फ्रायड का मनोविश्लेषण उपागम आता है।
4. **पश्च फ्रायडवादी उपागम (नव विश्लेषणवाद)** - जिन्होंने फ्रायड के साथ मिलकर काम किया बाद में उन्होने इसमें फ्रायड के तत्वों के स्थान पर सर्जनात्मकता, क्षमता, सामाजिक कारकों आदि मानवीय गुणों पर बल दिया इसमें निम्न सिद्धान्त हैं-

(i) **कार्ल युंग** - विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान यह मानता है कि व्यक्तित्व में प्रतिस्पर्धी शक्तियाँ व संरचनाएँ कार्य करती हैं। सामूहिक अचेतन पर बल। युंग ने मदर आर्किटाईप, फादर आर्किटाईप, हीरो आर्किटाईप, एनीमा एमोमस शेडो का प्रयोग किया है।

(ii) **कैरेन हार्नी - आशावादी** - फ्रायड की अनुयायी जिसने मानव संवृद्धि व आत्मसिद्धि व मानवजीवन के आशावादी दृष्टिकोण पर बल दिया है। फ्रायड के इस विचार का की महिलाएँ महिलाएँ हीन होती हैं का विरोध किया।

(iii) **अल्फ्रेड एडलर** - (जीवनशैली - सामाजिक अभिरुचि) एडलर सिद्धान्त व्यष्टि - वैयक्तिक मनोविज्ञान भी कहा जाता है, व्यक्ति का व्यवहार उद्देश्यपूर्ण होता है।

(iv) **एरिक फ्रॉम** - मानवीय महत्व - फ्रॉम ने मनुष्य को सामाजिक प्राणी माना है सामाजिक कारकों को महत्व दिया है।

(v) **एरिक इरिक्सन - अनन्यता की खोज** - इरिक्सन ने व्यक्तित्व में तर्कयुक्त, सचेतन अहं की प्रक्रिया पर बल दिया है। यह (अहं अनन्यता प्रमुख) किशोर अवस्था में उत्पन्न होता है तथा स्वयं की पहचान से संबंधित होता हैं।

5. **व्यवहारवादी उपागम** - व्यवहारवादी वातावरण, अनुक्रिया को व्यक्तित्व में ज्यादा महत्वपूर्ण मानते है।
6. **सांस्कृतिक उपागम** - यह सांस्कृतिक पर्यावरण के सन्दर्भ में व्यक्तित्व को समझने पर बल देता है।
7. **मानवतावादी उपागम** - कार्ल रोजर्स, अब्राहिम मैस्लो रोजर्स ने पूर्णत: प्रकार्यशील व्यक्ति तथा मैस्लो ने आत्मसिद्धि पर बल दिया है।
8. **विमीय उपागम** - व्यक्तित्व की व्याख्या एक प्रकार के रूप में की है। इसमें आईजैंक का सिद्धान्त व कोस्टामेक्रे का सिद्धान्त आते हैं।
9. **भाव मूलक उपागम** - विशिष्ट व्यक्तियों के व्यक्तित्व की व्याख्या करना। (आलपोर्ट का सिद्धान्त)
10. **नियमान्वेशी उपागम** - इसमें अध्ययन किये जाने वाली व्यक्ति की तुलना कुछ खास विमाओं जैसे अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी के आधार पर किया जाता है। **जैसे** - आईजेंक का सिद्धान्त

## व्यक्तित्व के प्रकार (प्रारूप उपागम)

### 1. हिप्पोक्रेटस का वर्गीकरण-शारीरिक द्रव्य के आधार

- ✦ **कफ (Phlegmatic)** - मन्द व निष्क्रिय व्यक्तित्व।
- ✦ **पीलापित (Choleric)** - क्रोधित स्वभाव वाला व्यक्तित्व।
- ✦ **कालापित (Malancholic)** - उदासीन, निराशावादी व्यक्तित्व।
- ✦ **रक्त (Sanguine)** - प्रसन्नचित्त रहने वाला, आशावादी व्यक्तित्व।

**नोट :-** 400 ई. पू. का सबसे पहले व्यक्तित्व का वर्गीरण करने वाले विद्वान - हिप्पोक्रेटस।

2. **भारतीय वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार :-**
तीन (3) प्रकार :- (1) सत, (2) रज, (3) तम
3. **चरक संहिता के अनुसार :-** वात, पित्त, कफ

### 4. शारीरिक दृष्टिकोण के अनुसार-

क्रेश्मर व शैल्डन ने बताये हैं -

✦ **क्रेश्मर के अनुसार चार** - (4) पुस्तक प्रकार - 1925 (Physique and Character)

1. सुडौलकाय, 2. लम्बाकाय/कृशकाय 3. गोलाकाय/साईक्लोआड 4. विशालकाय/ डिस्प्लास्टिक

1. **सुडौलकाय :-** (ऐथलेटिक/खिलाड़ीकाय)
न अधिक लम्बा, न अधिक छोटा, न अधिक पतला, न अधिक मोटा, आत्मविश्वासी, समायोजित।
2. **लम्बाकाय/कृशकाय/सिजोआड :-** (शक्तिहीन), दुबलाकाय (Asthenic)
न बहुत अधिक लम्बे, दुबले, निराशावादी, कल्पनावादी, चिंतित रहने वाले, मनोविदालिता रोग की संभावना।
3. **गोलाकाय/साईक्लोआड :-** (स्थूलकाय) (Pyknic)
नाटे-मोटे, गोल आकार के मिलनसार, खाने-पीने के शौकीन आरामप्रिय, उत्साहविषाद होने की संभावना
4. **विशालकाय/डिस्प्लास्टिक :-** मिश्रित। (Dyplastic)
इनका शरीर विशाल होता है तथा ऊपर वाले व्यक्तियों का मिला-जुला रूप होता है।

✦ **शेल्डन के अनुसार :-** सिद्धान्त का नाम:- सोमोटाईप (3 प्रकार) (1940 में)

1. लम्बाकृति/सेरीटोनिया/एक्टोमार्फी (1-1-7) (एकान्तवासी संकाची, लज्जाशील, नींद की समस्या)
2. आयताकृति/सोमेटोनिया/मेसोमार्फी (2-7-1) (सुडौल, बहादुर, आक्रामक)
3. गोलाकृति/एण्डोमार्फी/ भिसरोटेनिया (7-3-1) (नाटे, मोटे, गोलाकार)

Scanned with CamScanner

Since 1949 आर.बी.डी. "ये नाम ही विश्वास है...."

**नोट :-** इन्होंने 1-7 की श्रेणियों में व्यक्तित्व को विभाजित किया है। सबसे संतुलित व्यक्तित्व का श्रेणीकरण 4-4-4 होता है।

## 5. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के आधार पर 6 प्रकार

- यह प्रकार व्यक्तित्व के रुचि पक्ष पर आधारित है।
- स्प्रेंगर ने इस दृष्टिकोण के आधार व्यक्तित्व का विभाजन किया।
- पुस्तक - Types of Man

1. **सैद्धान्तिक व्यक्तित्व** (Theoretical) - जैसे - लेखक, साहित्यकार, पत्रकार, दार्शनिक।
2. **आर्थिक व्यक्तित्व** (Econamic) - जैसे - दुकानदारी, व्यापारी, उद्योगपति।
3. **सामाजिक व्यक्तित्व** (Social) - जैसे - सामाजिक कार्यकर्त्ता (अन्ना हजारे), शिक्षक
4. **राजनैतिक व्यक्तित्व** (Political) - जैसे - राजनेता।
5. **धार्मिक व्यक्तित्व** (Religious) - जैसे - पुजारी, सन्त, महात्मा।
6. **सौन्दर्यात्मक/कलात्मक व्यक्तित्व** (Aesthetic) :- जैसे - चित्रकार, कलाकार, मूर्तिकार।

## 6. मनोवैज्ञानिक प्रकार–

- युंग या जुंग ने मनोवैज्ञानिक **दो प्रकार** बताये हैं।
- पुस्तक - **साइक्लोजिकल टाइप** (मनोवैज्ञानिक प्रकार)

**नोट :-** यह प्रकार युंग के अलावा आइजेक व गिलफोर्ड ने भी बताया है।

(1) अर्न्तमुखी व्यक्तित्व
(2) बर्हिमुखी व्यक्तित्व
(3) उभयमुखी व्यक्तित्व

- **अन्तर्मुखी व्यक्तित्व व बहिर्मुखी व्यक्तित्व :-**

| अन्तर्मुखी (Introverts) | बहिर्मुखी (Extroverts) |
|---|---|
| सरल स्वभाव/आत्मपरक दृष्टिकोण (Subjective) | वस्तु परक दृष्टिकोण (Objective) |
| आत्मकेन्द्रित (Self-Centred) | लोककेन्द्रित |
| मितभाषी, स्वार्थी स्वभाव | वाचाल |
| सामाजिकता का अभाव | अत्यन्त सामाजिक |
| मनोविनोद का अभाव (हंसी मजाक) | मनोविनोदी |
| दोस्तों का अभाव | मित्र ज्यादा होते है। |
| मानसिक शक्तियों का विकास विशेष रूप से होता है। | सामान्य रूप से होता है। |
| आदर्शवादी (Idealist) | यथार्तवादी (Realists) |
| उत्तम लेखन | उत्तम भाषण |
| निर्णय क्षमता कमजोर | निर्णय क्षमता उत्तम |
| आज्ञापालक व्यवहार (Submissive) | प्रभुत्व पूर्ण व्यवहार (Dominant) |
| चिन्तायुक्त | चिन्तामुक्त |
| नेतृत्व का अभाव | नेतृत्व का गुण उत्तम |
| समायोजन कमजोर | समायोजन उत्तम |
| एकान्तवासी, शर्मीले स्वभाव के | स्पष्टवादी |
| आध्यात्मिक तथा साहित्यिक विषयों में रूचि। जैसे - लेखक, विचारक, दर्शनिक, वैज्ञानिक आदि। | सामाजिक/राजनैतिक जैसे - राजनेता, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता |

- **उभयमुखी व्यक्तित्व** (Ambiverts) - अन्तर्मुखी व बर्हिमुखी का मिश्रण अथवा मध्यमुखी

## 7. आइजेंक का वर्गीकरण–

1. बहिर्मुखी, 2. अन्तर्मुखी, 3. साइकोटिसिज्म, 4. न्युरोटिसिज्म

**नोट:-**

- बुद्धि के आधार पर व्यक्तित्व का विभाजन करने वाला विद्वान - टरमन।
- कल्पनाशक्ति के आधार पर थार्नडाइक ने किया।
- आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार - भावुक, कर्मशील, विचारशील।

Scanned with CamScanner

## 8. आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व के प्रकार

1. **भावुक व्यक्तित्व (Man of Feeling)** - दिमाग से ज्यादा दिल की बात सुनते हैं। **मार्गनव गिलीलैण्ड** ने इनके प्रकार बताये हैं- (1) प्रसन्नचित (2) उदासीन (3) चिड़चिड़ा (4) अस्थिर
2. **कार्यशील व्यक्ति (Man of Action)** - रचनात्मक क्रिया में रत, हस्तकौशल में उत्तम, इनमें कलाकार, सिपाही, खिलाड़ी, पहलवान आदि।
3. **विचारशील व्यक्ति (Man of Thought)**- दिल से ज्यादा दिमाग की बात सुनते हैं। **थार्नडाईक** ने चिंतन आधारित, इनके निम्न तीन प्रकार बताये हैं -
   (1) सूक्ष्म चिन्तक (2) प्रत्यक्ष चिन्तक (3) स्थूल चिन्तक

## 9. व्यक्तित्व का A टाईप व B टाईप व्यक्तित्व प्रकार

प्रतिपादक - फ्रीडमैन व रोजेनमैन

1. **टाईप A** उच्च अभिप्रेरणा, धैर्य की कमी, उतावलापन व कार्य के बोझ से ग्रस्त रहते हैं। वे अतिरक्तदाब, हृदय रोग के प्रति ज्यादा संवेदनशील होते हैं।
2. **टाईप B उपयुक्त A टाईप** की विशेषताओं का अभाव पाया जाता है।

- **मॉरिस** के अनुसार - **टाईप C** बताया है जो कैंसर के प्रति संवेदनशील होता है।
- **डेमोलेट** के अनुसार- **टाईप D** है व्यक्तित्व जो अवसाद में प्रवण होता है।
- **कोबासा** के अनुसार - **टाईप H** मनोवैज्ञानिक कठोर वचनबद्धता, चुनौती व नियंत्रण का मिश्रण।
- **फ्रेंक फॉरले** के अनुसार - **टाईप T** जोखिम उठाने तथा सृजनात्मक व ध्वंसात्मक होते है।

## व्यक्तित्व का पंचकारक मॉडल-

✦ प्रतिपादक - पॉल-कॉस्टा- राबर्ट मैक्रे
✦ (1) अनुभवों के लिए खुलापन (2) बर्हिमुखता (3) सहमतिशीलता (4) तंत्रिका ताप (5) अंतर्विवेकशीलता

## व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक-

1. **वंशानुक्रम** - सबसे पहले प्रभावित करने वाला कारक। फ्रांसीसी गाल्टन ने व्यक्तित्व निर्माण में वंशानुक्रम को सबसे महत्त्वपूर्ण माना है।
2. **वातावरण:-**

**(i) भौतिक वातावरण** - जलवायु का प्रभाव।
**(ii) सामाजिक वातावरण** - परिवार, पड़ोसी, साहित्य, विद्यालय।

## व्यक्तित्व पर परिवार का प्रभाव-

✦ परिवार का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, इसमें परिवार का वातावरण का बालक के अभिवृत्ति, विश्वास, आदत, रूचि, संवेग, चरित्र व सम्पूर्ण व्यवहार प्रभावित होता है जैसे -
✦ घर का वातावरण - शांत हो तो वह सहनशील अन्यथा विरोधी रूप होगा।
✦ जन्म क्रम - पहला बच्चा अधिक निर्भर, एकान्तप्रिय व अन्तर्मुखी होता है।
✦ माता-पिता की उपेक्षा या अत्यधिक प्यार।
✦ खण्डित परिवार
✦ परिवार का आकार
✦ एकल परिवार
✦ संयुक्त परिवार
✦ सौतेले माता-पिता
✦ निर्धनता
✦ ये सब कारक व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।
**नोट :-** एडलर के अनुसार मध्यम जन्मक्रम का बालक का व्यक्तित्व श्रेष्ठ उसके आत्मविश्वास का भाव होता है।

## विद्यालय का प्रभाव-

✦ विद्यालय का वातावरण, अनुशासन, शिक्षा विधि शिक्षकों का व्यवहार व्यक्तित्व को प्रभावित करती।
✦ **क्रो एण्ड क्रो** - बालक के विकसित होने वाले व्यक्तित्व पर स्कूल के अनुभवों का बहुत प्रभाव पड़ता है।

**(iii) सांस्कृतिक वातावरण** - रीतिरिवाज, परम्परा, वेशभूषा, रहन-सहन, सांस्कृतिक वातावरण का अध्ययन निम्न लोगों ने किया है-

- **मीड- मानवशास्त्री महिला** - व्यक्तित्व के शीलगुणों में जो यौन विभिन्नता होती है उसका कारण संस्कृति में विभिन्नता होती है, इसने न्यूगिनिया की 3 जाति ऐरोपेश, मुण्डुगुमोर व शाम्बुली का अध्ययन किया उसने बताया कि ऐरोपेश जाति के व्यक्तित्व में सहयोग, भद्रता व विनम्रता शांतिप्रियता अधिक है क्योंकि यौन विभिन्नता कम होती है तथा मुण्डुगुमोर जाति जहाँ यौन विभिन्नता ज्यादा व पुरूषत्व पर बल दिया जाता है इसमें स्त्री व पुरूष दोनों में आक्रामकता, विद्रोही प्रवृति ज्यादा।
- शाम्बुली जाति की संस्कृति में पुरुष की भूमिका हमारे समाज की नारी वाली व नारी की भूमिका पुरुष वाली होती है। पुरुष घर के कार्य व नारी बाहरी कार्य अत: वहाँ पुरुष को व्यक्तित्व में नारी गुण विनम्रता, लज्जा ज्यादा व नारियों में पुरूष गुण आक्रामकता, प्रभुत्व पाये जाते है। मीड ने समोआ संस्कृति के बारे में कहा यहाँ लड़किया समाज के दबाव व तनाव से मुक्त होती हैं। उन्हें विवाह पूर्व यौन सम्बन्ध की अनुमति।
- **रूथ बेनडिक्ट** का अध्ययन - 3 आदिम जाति क्वाक्यिुट डोबू व जूनी का अध्ययन किया और बताया कि संस्कृतिक विभिन्नता के कारण व्यक्तित्व के शीलगुणों में ज्यादा विभिन्नता पायी जाती है।
- **मैलिनोस्की ने ट्रोब्रियान्दर** जाति का अध्ययन करके बताया इसके किशोरावस्था में दबाव व तनाव नहीं होता।

Scanned with CamScanner

- कलरखान में लिखा है "संस्कृति प्रत्येक मोड़ पर हमारे जीवन को नियमित करती है।"
- बॉल्डविन फूले ने भी संस्कृति का व्यक्तित्व पर अध्ययन किया।

3. **अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियां** - जैसे - पीयूष ग्रन्थि के कम सक्रिय होने पर व्यक्ति बौना हो जाता है तथा ज्यादा होने पर अत्यधिक लम्बा हो जाता है। एड्रीनल ग्रन्थि संवेगों को प्रभावित करती है। थॉयराइड ग्रन्थि के अधिक क्रियाशील होने पर तनाव चिन्ता व बैचेनी बढ़ जाती है, कम होने पर थकान, व्याकुलता व मानसिक दुर्बलता होती है।
   यौन ग्रन्थि - एस्ट्रोजन व टेस्टास्टोल लैंगिक विकास को प्रभावित करती है।
4. **शारीरिक रचना व स्वास्थ्य** - सुन्दर व स्वस्थ व्यक्ति में आत्मविश्वास, श्रेष्ठता का भाव, सामाजिकता व उत्तरदायित्व का भाव ज्यादा होता है।
5. **स्नायु मण्डल** - मानसिक विकास को प्रभावित करती है।
6. **मूल प्रवृतियाँ व प्रेरक** - इनका दमन व्यक्तित्व में हीनता मनोग्रन्थी को जन्म देता है।
7. **लिंग** - बालक व बालिका का स्वभाव, कार्यशैली व व्यक्तित्व भिन्नता पायी जाती है।
8. **मनोवैज्ञानिक कारक** - बुद्धि, रुचि, आदत, आकंक्षा स्तर, महत्त्वकांक्षा, इच्छाशक्ति, चरित्र, स्थायी भाव, स्मृति, तर्क, अधिगम, चिन्तन इत्यादि भी व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

## व्यक्तित्व के सिद्धान्त

### 1. मनोविश्लेषण सिद्धान्त (Psychoanalytical Theory)

- ✦ प्रतिपादक - सिगमण्ड फ्रायड
- ✦ इस सिद्धान्त को क्लासिकी मनोविश्लेषण भी कहा जाता है। इस सिद्धान्त के तीन भाग -
  **1. व्यक्तित्व की संरचना** - जिसमें आकारात्मक और गत्यात्मक मॉडल आते हैं।
  **2. व्यक्तित्व की गतिकी** - इसमें मूल प्रवृत्ति, चिंता व अहम रक्षा युक्ति का उल्लेख किया है।
  **3. व्यक्तित्व का मनोलैंगिक विकास** - पांच अवस्थाओं का उल्लेख है।

**1. आकारात्मक मॉडल (Topographical) (मनोगतिकी उपागम) :-**

✦ **चेतन मन - 1/10 भाग (Conscious) -**

- इसका सम्बन्ध वर्तमान तथा वास्तविकता से है। इसमें व्यक्तिगत नैतिक सामाजिक व सांस्कृतिक आदर्शो का भण्डार होता है।
- बर्फ से तैरते हुए टुकड़े के ऊपरी हिस्से से चेतन मन की तुलना की है।
- तत्काल जानकारी, बिना प्रयास किये स्मरण आ जाता है। यह अर्द्धचेतन व अचेतन पर प्रतिबन्धक का कार्य करता है।

✦ **अर्द्ध चेतन मन (अवचेतन) (Pre Conscious) -**

- ना चेतन व ना अचेतन का।
- जैसे ही किसी को कोई वस्तु देकर भूल जाना।
- प्रयास करने पर जानकारी का आना

✦ **अचेतन मन** - 9/10 भाग (Un Conscious)

- सबसे व्यापक मन।
- दमित इच्छाओं का भण्डार।
- सर्वाधिक प्रभावित करने वाला मन।
- स्वप्न अवस्था से इसका सम्बन्ध सम्मोहन (Hypnosis), गलती से निकले शब्द इत्यादि।
- दमित, कामुक, अनैतिक, असामाजिक व घृणित इच्छाओं का स्थान।
- गत्यात्मक होता है। तथा छदम रूप में होता है।
- व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर होता है।
- निद्राभ्रमण (स्वप्नचारिता), समस्या का अचानक समाधान, एनेस्थेसिया (चेतना विहिन)

**2. गत्यात्मक/संरचनात्मक मॉडल (Dynamic) :-**

✦ **(Id) इदम्/ उपाह- पशुत्व**

- जन्म के साथ
- आनन्द सिद्धान्त (Pleasure) से निर्धारित।
- यह अचेतन मन का स्वामी है इसका सम्बन्ध दमित इच्छाएं तथा सुखवादी इच्छाओं से है।
- यह सबसे पहले विकसित होता है। जैसे - खाओ, पिओ, मौज करो।
- मूल प्रवृत्ति का केन्द्र, नैतिकता से परे, तर्कहीन, यौन प्रवृत्ति/काम प्रवृति से युक्त।
- वास्तविकता से सम्बन्ध नहीं, पूर्णत अचेतन/असंघटित।

✦ **Ego - अहम् - मानत्व- मन का प्रशासक**

- 1-2 वर्ष के विकास प्रारम्भ
- वास्तविकता सिद्धान्त (Reality Principle) से निर्धारित।
- यह चेतन, अर्द्धचेतन व अचेतन तीनों स्तर पर निर्धारत।
- यह चेतन मन का स्वामी है इसका सम्बन्ध वर्तमान, वास्तविकता तथा मानवता से है।
- न तो पूर्णतया सुखवादी व न ही आदर्शवादी। तर्क पूर्ण होता है।
- व्यक्तित्व की कार्यपालक शाखा महत्त्व है। (Executive Branch)
- मनोवैज्ञानिक वातावरण से उत्पन्न। (अभियोजन (Adjuster) के रूप में कार्य)
- सपनों पर नियंत्रण
- सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेना।
- बुद्धि से कार्य करना तथा सिपाही के रूप में कार्य करना।

✦ **Super Ego पराह/परम अहम् (अन्तरात्मा) परम आदर्श**

Scanned with CamScanner

- 3-4 वर्ष से विकास प्रारम्भ
- आदर्शवादी सिद्धान्त (Idealistic) से नियन्त्रित।
- इसका सम्बन्ध देवत्व से है।
- यह चेतन, अर्द्धचेतन व अचेतन तीनों ही होती है।
- यह आदर्शों व नैतिक मूल्यों की बात करता है। इदम् व अहम् पर नियंत्रण, नैतिक समीक्षक।
- यह मत करो, वो मत करे।
- यह अवास्तविक होता है।
- सामाजिक वातावरण से उत्पन्न सहवर्ती इच्छाओं का प्रतीक, जैसे – प्रेम करना व प्रेम पाना।

### व्यक्तित्व की गतिकी के विभिन्न भाग–

✦ **फ्रायड के अनुसार मूल प्रवृत्तियाँ–**

- **इरोस :-** जीवन मूल प्रवृत्ति – रचनात्मक कार्यों से सम्बन्ध।
- **थेनाटोसः-** मृत्यु मूल प्रवृत्ति – विध्वंसात्मक कार्यों से सम्बन्ध।

✦ फ्रायड ने काम प्रवृत्ति को **लिबीडो** कहा है – यह जीवन मूल प्रवृत्ति में आती है।

✦ फ्रायड ने चिंता के 3 प्रकार बताये – (1) वास्तविक चिन्ता (2) स्नायुविकृत (3) नैतिक चिन्ता

- **वास्तविक दुश्चिन्ता (Realistic Anxiety)** – दुश्चिन्ता वातावरण के बाह्य खतरों को देखकर जैसे तूफान, आग इत्यादि से उत्पन्न।
- **तंत्रिकातापी दुश्चिन्ता (Neurotic)** – इसमें व्यक्ति को Id उपाह से खतरा उत्पन्न होता है।
- **नैतिक दुश्चिन्ता** – जब अहम Ego को Super Ego से दण्डित करने का भय हो।

✦ **अहम रक्षात्मक प्रक्रम** – इसमें समायोजन स्थापित करने की रक्षात्मक युक्तियों का उल्लेख किया गया है।

### फ्रायड का मनोलैंगिक विकास–

**पांच अवस्थाएँ ( 5 ):-**

1. **मुखावस्थाः-** 0–1 वर्ष (Oral Stage)

- इसके बालके मुख प्रधान होते हैं।
- जैसे मुख के माध्यम से काम क्रियाएं करना। अंगूठा चूसना, दांतों से काटना।
- इसके कम होने पर मुखवृति निष्क्रिय व्यक्तित्व तथा अधिक होने पर अनुवृति आक्रामक व्यक्तित्व हो जाता है।

(i) मुखवर्ती चूषण (0–6 माह – स्तनपान, अंगूठा चूसना) – यह आत्म कामुकता की अवस्था होती है।

(ii) मुखवर्ती दंशवरान अवस्था – 7 – 12 माह (दांतों से काटना)

2. **गुदावस्थाः-** 02 से 03 वर्ष (Anal Stage)

- इस अवस्था में बच्चा मल-मूत्र सम्बन्धी क्रियाओं में आनन्द लेता है।
- इनके ज्यादा या कम होने पर बालक का व्यक्तित्व आक्रामक व धारणात्मक व्यक्तित्व बन जाता है।

3. **लिंग प्रधान अवस्थाः-** 03–04 से 05 वर्ष (Phallic Stage)

✦ **ओडिपसः-** मातृ मनोग्रन्थि।

- लड़कों में पायी जाती है।
- मां के प्रति प्रेम।

✦ **एलेक्ट्राः-** पितृग्रन्थि।

- लड़कियों में पायी जाती है।
- पिता के प्रति प्रेम।
- लिंग के प्रति ईर्ष्या का भाव लिंग प्रधान अवस्था में आता है। बधिया होने की चिंता।

4. **अव्यक्तवस्था :-** 06 से 12 वर्ष (Latency Stage)

इस अवस्था में बालक किसी भी प्रकार का काम व्यवहार नहीं करता है।

5. **जननेन्द्रिय अवस्था :-** 13 वर्ष से लगातार (Genital Stage)

विषम लैंगिक प्रेम, समलिंगी प्रेम।

### फ्रायड के सिद्धान्त का महत्त्व

✦ बाल्यावस्था के अनुभवों को महत्त्व प्रदान करना

✦ अचेतन अभिप्रेरणा पर सर्वाधिक बल।

✦ बाल निर्देशन, मानसिक स्वास्थ्य, छात्र केन्द्रित अवधारणाओं को प्रोत्साहित करना।

✦ शिक्षा के उद्देश्य को विस्तृत करना।

✦ सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर बल।

✦ मानव व्यवहार के निर्धारण में मूल प्रवृतियों पर महत्व देना।

### 2. आइजेन्क का व्यक्तित्व सिद्धान्त–

व्यक्तित्व के 3 आधारभूत आयाम बताये –

1. **अन्तर्मुखता बनाम बहिर्मुखता (Interoversion Versus Extroversion)** –

- **अन्तर्मुखता** – बहुत आसानी से प्रभावित, निराशावादी चिन्ताग्रस्त, कम उत्तेजित, कम महत्वाकांक्षी व गंभीर परम अहम प्रभावी
- **बहिर्मुखता** – आवेगशील, परिवर्तनशील, क्रियाशील, सामाजिक इदम प्रभावी होता है।

2. **उत्तेजनशीलता उन्माद (Neuroticisn) बनाम भावात्मक स्थिरता (Enotional Stability)** –

उत्तेजनशील या उन्मादी सुझावग्राही, भावात्मक कमजोर, आक्रामक बैचेन होते हैं। जबकि भावात्मक स्थिर शांत व विश्वासी होते।

3. **मनस्तापिता (Psychoticism)** -

एकाग्रता, स्मरण पठन में कमजोर व कम धारा प्रवाही होता है। इनमें अनुवांशिक व तंत्रिका कारक महत्वपूर्ण व मनोवैज्ञानिक गुण गौण होते है।

Scanned with CamScanner

### 3. नव मनोविश्लेषात्मक सिद्धान्त–

- प्रतिपादक – युंग/एडलर। हॉर्नी/इरिक फ्रोम, इरिक्सन, सुल्लीवान, अन्ना फ्रायड, हार्टमैन।
- इसके अनुसार व्यक्तित्व केवल जैविक कारकों से प्रभावित नहीं होता, अपितु सामाजिक कारकों से भी प्रभावित होता है।
- इन्होंने व्यक्ति की आशावादी छवि के ऊपर बल दिया है।
- युंग – अचेतन का संबंध आध्यात्मिकता से होता है।

1. **कार्ल युंग – विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान**

- व्यक्ति के व्यक्तित्व में प्रतिस्पर्धी शक्तियां व संरचना कार्य करती है न की व्यक्ति व समाज की मांग या वास्तविकताओं के बीच कोई द्वन्द्व होता है।
- सामूहिक अचेतन पर बल।
- मदर आर्कीटाईप, फादर आर्कीटाईप, हीरो, आर्कीटाईप, एनीया, एनीमस शेडो का प्रयोग किया।
- कार्ल युंग ने 1913 में विश्लेषण मनोविज्ञान सम्प्रदाय की स्थापना की।
- सार्थक जीवन पर बल दिया है व दो मनों का उल्लेख किया है।
  1. चेतन मन – जिसका संबंध Ego से होता है।
  2. अचेतन मन – जिनका अनुभव Ego को नहीं होता वो अचेतन है।

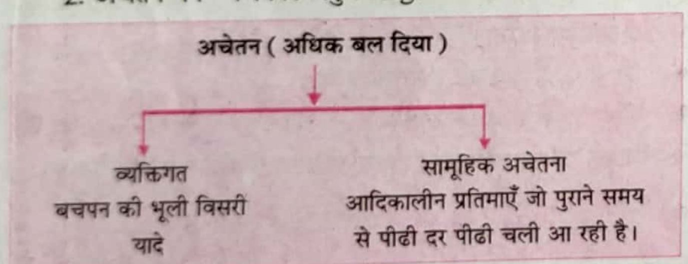


इसमें व्यक्तित्व के पांच प्रकारों की चर्चा की है –

1. परसोना – बाहरी व्यक्ति
2. एनिमा – पुरुष स्त्रेण पहलू
3. एनिम्स – स्त्री का पौरुष पहलू
4. छाया – पाश्विक मूल्य प्रवृतियां
5. आत्म – सम्पूर्णता की ओर ले जाने वाला व्यक्तित्व

**नोट :-** युंग ने व्यक्तित्व विकास के 4 अवस्थाओं का उल्लेख किया है –

(1) बाल्यावस्था (2) प्रारम्भिक यौन अवस्था (3) मध्य अवस्था (4) वृद्धावस्था

2. **केरोन हार्नी** – प्रत्येक लिंग के व्यक्ति में गुण होते हैं जिसकी प्रशंसा विपरीत लिंग को करनी चाहिए।

- महिला जैविक कारक की अपेक्षा सामाजिक व सांस्कृतिक कारक से ज्यादा प्रभावित होती है।
- मनोवैज्ञानिक विकास बाल्यावस्था में विक्षुब्ध अंतवैयक्तिक संबंधों के कारण उत्पन्न होते है।
- माता-पिता अपने व्यवहार से बच्चों में मूल दुश्चिन्ता उत्पन्न करते हैं।

3. **इरिक फ्रॉम** – मानवीय महत्व व सामाजिक उन्मुखता का समर्थन

- मानव एक सामाजिक प्राणी।
- व्यक्ति विकास में कोमलता व प्रेम गुणों को महत्व दिया।
- चरित्र विशेषक समाज के अनुभवों से विकसित होते हैं।
- स्वतंत्रता की इच्छा व न्याय तथा सत्य के लिए संघर्ष को संवृद्धि व क्षमता विकास में महत्वपूर्ण माना है।

4. **अल्फ्रेड एडलर** – वैयक्तिक मनोविज्ञान के प्रतिपादक

- व्यक्ति का व्यवहार उद्देश्यपूर्ण व लक्ष्योन्मुख होता है।
- व्यक्तिगत लक्ष्य अभिप्रेरणा के स्त्रोत होते है।
- प्रत्येक व्यक्ति अपर्याप्तता व अपराध की भावना से ग्रसित होता है यह हीनता मनोग्रंथि है।

**अल्फ्रेड एडलर** – वैयक्तिक मनोविज्ञान के जनक

- **सम्प्रत्यय :-**
  - **जीवन शैली** – यह लक्ष्य पर पहुँचने का व्यक्ति का अपूर्व तरीका व स्वयं व दूसरों के प्रति विकसित मनोवृत्ति है। इसका निर्माण 4/5 वर्ष में हो जाता है। यह प्रमुख नियंत्रक बल है यह प्राथमिक स्मृति होती है इसमें बाद में परिवर्तन नहीं होता है इसके दो भाग है–
    (i) गलत जीवन शैली
    (ii) निरोगी जीवन की शैली
  - **व्यक्तित्व की एकता** – सभी मनोवैज्ञानिक घटना, व्यक्ति के भीतर आत्मसंगत ढंग से एकीकृत होती है।
  - सफलता के प्रयास पर बल दिया है।
  - **हीनता (Inferioritly)** – एडलर के अनुसार यह भाव जन्मजात होता है। इस तरह की हीनता की भावना को दूर करने के लिए व्यक्ति में श्रेष्ठता के प्रयास का जन्म होता है। हीनता की भावना से आक्रामक प्रणोद उत्पन्न होता है।
  - **पुरुषोचित विरोध** – एडलर के अनुसार हीनता व दमित भावना से क्षतिपूर्ति के लिए श्रेष्ठ बनने की कोशिश से है।

5. **सुल्लीवान अंत वैयक्तिक उपागम** – सुलीवान (हेरी स्टेक) – इस प्रारूप के अनुसार दोषपूर्ण संचार व असंतोषप्रद अंतवैयक्तिक संबंध मानसिक विकृति को जन्म देते हैं। यह बाल्यकाल से प्रारम्भ हो जाता है। इसमें सुधार करने संचार व संबंधों में सुधार करना है यह उपागम पारस्परिक संबंधों को महत्वपूर्ण मानता है।

### 4. जीवन अवधि उपागम सिद्धान्त

- प्रतिपादक – इरिक इरिक्सन
- इसके अनुसार व्यक्तित्व का विकास जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

### 5. मानवतावादी सिद्धान्त–

- प्रतिपादक – मैस्लो/रोजर्स
- इसके अनुसार व्यक्तित्व आत्मगत अनुभूतियों से सर्वाधिक प्रभावित होता है।

Scanned with CamScanner

## 6. शीलगुण उपागम/विशेषक सिद्धान्त (Trait Theory)

- प्रतिपादक – आलपोर्ट
- पुस्तक – **पैटर्न एण्ड ग्रोथो ऑफ पर्सनलिटी**, कैटेल (सहयोगी)
- आईपोर्ट ने भाव चित्रात्मक उपागम का प्रतिपादन किया जिसमें व्यक्तित्व के अनोखेपन पर बल दिया जाता है व खंडित तथा असतत प्रकृति धारणा पर बल दिया जाता है।

(i) **कॉर्डिनल गुण** – वह गुण जिससे हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व तथा प्रत्येक कार्य प्रभावित होता है।
जैसे – गांधीजी का सत्य व अहिंसा।

(ii) **केन्द्रीय गुण** – जैसे – आत्मविश्वास व सामाजिकता, उदासी।

(iii) **गौण गुण – जैसे** – विशेष तरीके से बैठना, खाना, बोलना।

**विशेष :-** आलपोर्ट **कार्यात्मक – स्वायत्तता** (Functional autonomy) पर बल देता है जिस कार्य व साधन से एक बार उद्देश्य को पूरा करने के बाद वे कार्य बाद की अवस्था में स्वायत्ता प्राप्त कर लेते हैं।

**नोट :-** प्रोप्रियम – वह नियम शीलगुण व मूल्यों को संगठित करता है।

## 7. प्रतिकारक सिद्धान्त/विशेषक सिद्धान्त–

- प्रतिपादक – कैटेल
- इसके अनुसार सामान्य व्यक्ति में 23 गुण
- इसके अनुसार असामान्य व्यक्ति में 12 गुण
- **16 प्रधान** गुण माने जाते हैं।

✦ कैटेल के अनुसार मुख्य शीलगुणों के प्रकार –

1. **सतही शीलगुण** – ऐसे गुण जल्दी अभिव्यक्त होते है – प्रसन्नता, परोपकारिता, सत्यनिष्ठा।
2. **मूल शीलगुण** – (1) भावुक (2) विवेकशील (3) स्वयं में सीमित (4) दबंग (5) गंभीर (6) अंतरात्मा से प्रेरित (7) प्रेरित (8) नाजुक (9) शंकालु (10) व्यवहारशील (11) चालाक (12) आत्मविश्वास (13) रूढ़िवादी (14) दूसरों पर निर्भर (15) अनुशासनहीन (16) चिंतामुक्त

**नोट :-** कैटेल ने व्यक्तित्व मापन के लिए 16 कारक प्रश्नावली का निर्माण किया। केटल ने सतही शीलगुण में प्रसन्नता परोपकारिता, सत्यनिष्ठा को शामिल किया है।

✦ **कैटल ने शीलगुणों के 3 आधार और बताये हैं –**

1. **गत्यात्मक शीलगुण (Dynamic Trait)** – व्यक्ति का व्यवहार खास लक्ष्य की प्रेरित जैसे मनोवृत्ति, मनोभाव आदि।
2. **क्षमता शीलगुण (Ability Trait)** – जो किसी लक्ष्य तक पहुंचाने में प्रभावकारी है। जैसे – बुद्धि
3. **चितप्रवृत्ति शीलगुण (Temperanent Trait)** – जो किसी लक्ष्य तक पहुंचने के प्रयास में उत्पन्न हो। जिनका सम्बम्ध व्यक्ति की संवेगात्मक स्थिति, अनुक्रिया करने की शक्ति हो। जैसे – सांवेगिक स्थिरता, मस्तमौलापन आदि।

## 8. सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त–

- प्रतिपादक – अल्बर्ट बाण्डूरा, वाल्टर (सहयोगी) मार्टन सैलिगमैन
- पुस्तक – **सामाजिक अधिगम एवं व्यक्तित्व विकास।**
- इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तित्व निर्माण में अनुकरण व पर्यावरण कारक महत्त्वपूर्ण है।

## 9. स्वप्रत्यय/व्यक्तित्व का सावृतिक सिद्धान्त

- प्रतिपादक – कार्ल रोजर्स
- पूर्णत प्रकार्यशील व्यक्ति का सम्प्रत्यय दिया।
- यह सिद्धान्त घटना विज्ञान/सावृतिशास्त्र के नियमों पर केन्द्रित है। (सावृतिशास्त्र – व्यक्ति की अनुभूति, भाव मनोवृति तथा स्वयं के बारे में व दूसरों के व्यक्तिगत विचारों का अध्ययन किया जाता है।)
- इस सिद्धान्त में आत्मन पर विशेष बल दिया जाता है। जो प्रासंगिक क्षेत्र का (चेतन व अचेतन अनुभूति के योग से बना) एक भाग अधिक से अधिक विशिष्ट होता है आत्मन कहलाता है।
- रोजर्स में व्यक्तित्व गतिकी की व्याख्या करने के लिए वस्तुवादी (Actualizing Tendency) प्रवृति प्राणी में सभी क्षमता को विकसित करने वाली जन्मजात प्रवृत्ति का प्रयोग किया है।

## 10. मांग सिद्धान्त–

- प्रतिपादक – हेनरी मुर्रे
- मनुष्य का व्यवहार वातावरण द्वारा उत्पन्न 40 मांगों से प्रेरित होता है।

## 11. शारीरिक रचना सिद्धान्त

- प्रतिपादक – क्रेशमर व शैल्डन
- इसमें शरीर रचना व व्यक्तित्व के सम्बन्ध पर बल दिया जाता है।

## 12. संज्ञानात्मक उपागम–

- कुर्त लेविन व कैली के व्यक्तित्व सिद्धान्त आते हैं।
- यह उपागम इस बात पर बल देता है कि व्यक्ति किन तरीकों से अपने वातावारण व अपने आप को जानता है प्रत्यक्षीकरण व मूल्यांकन करता है। सीखता व समस्या समाधान करता है।]

**व्यक्तित्व का मापन**

(1) आत्मनिष्ठ (2) वस्तुनिष्ठ (3) प्रेक्षपण/प्रेक्षपी (4) मनोविश्लेषण

## 1. आत्मनिष्ठ विधियाँ (Subjective Method)

✦ **आत्मकथा निरीक्षण विधि** – विलियम वुण्ट, टिनेचर।
- अर्थ – स्वयं का स्वयं द्वारा निरीक्षण।

✦ **व्यक्ति इतिहास विधि या जीवन इतिहास विधि** – टाईडमैन (Case Study) – असामान्य व्यक्तियों का अध्ययन किया जाता

है। जैसे - बाल अपराधी, समस्यात्मक बालक, प्रतिभाशाली इत्यादि।

- ✦ **प्रश्नावली विधि** - आदि जनक- सुकरात।
- मनोविज्ञान में शुरूआत - वुडवर्थ।
- प्रश्नावली 4 प्रकार की होती है - (i) मुक्त प्रश्नावली (ii) प्रतिबंधित प्रश्नावली (iii) चित्रित प्रश्नावली (iv) मिश्रित प्रश्नावली

**नोट:-** 1880 में फ्रांसीसी गाल्टन ने सर्वप्रथम व्यक्तित्व का मापन के लिये प्रश्नावली का निर्माण किया।

- ✦ **साक्षात्कार विधि:-** 02 प्रकार, आमने-सामने बैठकर विचारों का आदान-प्रदान, यह विधि प्रेक्षण विधि में भी शामिल है - (क) औपचारिक (संगठित) (ख) अनौपचारिक (असंगठित)

## 2. वस्तुनिष्ठ विधियां (प्रेक्षण विधियाँ) (Objective Method)

- ✦ **निरीक्षण विधि** - जे.बी. वाटसन
- औपचारिक विधि - निर्धारित समय व स्थान।
- अनौपचारिक विधि - समय व स्थान निर्धारित नहीं होता।
- ✦ **समाजमिति विधि** - जे.एल. मोरेनो 1934
- इस विधि द्वारा किसी भी समूह की संरचना का अध्ययन किया जाता है।
- श्रेष्ठ, तटस्थ व तिरस्कृत व्यक्तित्व का पता लगाया जाता है।
- ✦ **रेंटिग स्केल या निर्धारत मापना** - फ्रांसीसी गाल्टन
- सर्वप्रथम प्रयोग **फैक्नर** ने, गाल्टन ने 1883 में प्रतिपादन किया।
- सर्वप्रथम 3 या 5 बिन्दुओं के आधार पर व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है। **गिलफोर्ड व फ्रीमैन** ने इसका प्रयोग किया है।
- ✦ **शारीरिक परीक्षण विधि** - शरीर के अंगों का मापन होता है।
- ✦ **परिस्थिति परीक्षण विधि**
- विशेष परिस्थिति में रखकर व्यक्तित्व की जांच करना। दो भाग -
  (क) वास्तविक परिस्थिति परीक्षण।
  (ख) काल्पनिक परिस्थिति परीक्षण।

## 3. प्रेक्षपण/प्रेक्षपी विधियां (Projection Method)

- सर्वप्रथम प्रयोग करने वाले - सिगमण्ड फ्रायड
- इन विधियों द्वारा व्यक्ति के अचेतन मन में दबी हुई दमित इच्छाओं का पता लगाया जाता है।

### 1. I.B.T. विधि (Ink Blot Test) स्याही धब्बा परीक्षण-

- प्रतिपादक - हरमन रोर्शा, 1921 स्विट्जरलैण्ड के।
- इसके 1. बिन्दुओं के आधार पर मूल्यांकन किया -
  (1) स्थान (Location) (2) विषयवस्तु (Content)
  (3) मौलिकता (Original) (4) निधरिक (Determinants)
- 10 कार्ड होते हैं।
- **5 बिल्कुल काले व सफेद तथा 5 विविध रंग के होते हैं। (2 - काले व लाल, 3 - अन्य रंग)**

**नोट :-** इसका प्रतिरूप होल्डजमैन ने 1961 में बनाया, भारत में जी.जी. प्रभू ने अनुकूलन किया।

- ✦ **I.B.T. परीक्षण उपयोगिता :-**
- असामान्य व्यक्तियों की समस्याओं का पता लगाना।
- कदाचारी समस्यापूर्ण बच्चों की विभिन्न गलत क्रियाओं का पता लगाने में उपयोगी।
- बुद्धि/बौद्धिक स्तर को जानने के उपयोगी।
- व्यक्तित्व के मानसिक, भावात्मक व सामाजिक पहलु के बारे में जानकारी देगा।
- ✦ **कमियाँ :-** बच्चों के लिए अनुपयुक्त, समय अधिक, व्यक्तिनिष्ठ व विशेषज्ञ नहीं मिलते है।

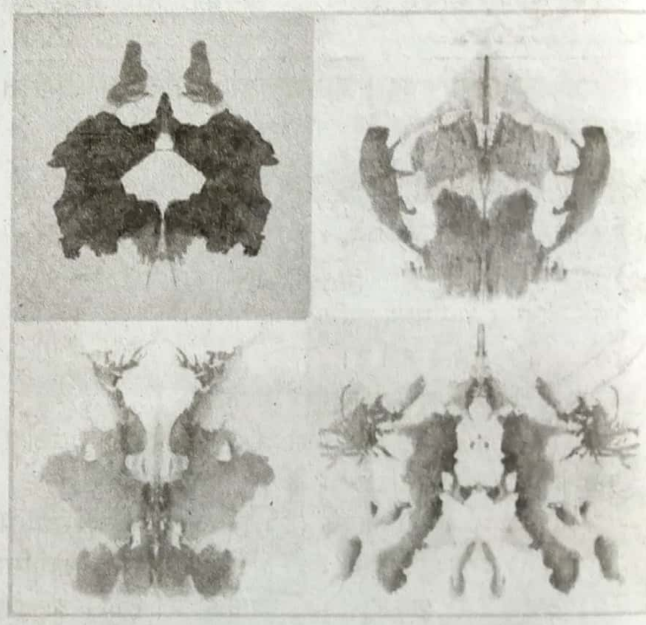

### 2. T.A.T. विधि (Thematic Appercepation Test)-

- प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण।
- प्रतिपादक - मार्गन व मुर्रे, 1935 (संशोधन - 1938)
- 30 कार्ड होते है व 1 खाली कार्ड। (व्यक्ति दिये गये चित्र में स्वयं को पात्र मानकर चार बिन्दुओं के आधार पर लिखता है।) = 30 + 1 (30 कार्ड काले व सफेद रंग के होते है व एक बार में 20 कार्ड (19 सचित्र व एक रिक्त) का प्रयोज्य पर प्रयोग होता है।)
- 10 पुरुष, 10 महिला, 10 दोनों के लिये, 1 खाली कार्ड।
- 14 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों के लिये।
- व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों परीक्षण
- ✦ **T.A.T. परीक्षण उपयोगिता :-**
- अभिवृत्ति, आवश्यकता, उपलब्धि स्तर, भाव, संवेग, सम्बन्ध व मानसिक जटिलताओं का पता लगाने में उपयोगी।

Scanned with CamScanner

### 3. C.A.T. विधि (Child Apperception Test) बालक अन्तर्बोध परीक्षण

- प्रतिपादक – लियोपोल्ड बैलक, 1948
- 10 कार्ड होते है जानवरों के। (बच्चे को जानवर के चित्र देखकर उनसे घनिष्ठता स्थापित करके कहानी बनाते है वे स्वयं को इनका पात्र मान लेते है।)
- 3 से 10/11 वर्ष के बच्चों के लिये उपयोगी।
- डॉ. अर्नेस्ट क्रिस ने 1951 में इस विधि का विकास किया।

✦ **C.A.T. की उपयोगिता** :-

बच्चों के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने, समयोजन, आवश्यकताओं, अभिवृत्ति इत्यादि का पता लगाने में उपयोगी।

### 4. F.W.A.T विधि (Free Word Association Test) स्वतंत्र शब्द साहचर्य परीक्षण–

- उद्दीपक शब्द को सुनकर उससे सम्बन्धित शब्द बोलने होते हैं।
- प्रतिपादक – फ्रांसीसी गाल्टन, 1879 (75 शब्दों की सूची तैयार की।)
- सर्वप्रथम प्रयोग युंग व फ्रायड।
- 1904 में युंग 100 शब्दों की मापक सूची तैयार की।

**नोट :-** मुक्त सहचर्य परीक्षण का निर्माण केण्ट व रोजन एफ. ने किया इसमें 100 शब्दों की सूची है।

✦ **F.W.A.T. की उपयोगिता :-**

असामान्य व्यक्ति का मूल्यांकन, दमित प्रवृति, कुसमायोजन, निराशा का पता लगाने में उपयोगी।

### 5. S.C.T. विधि (Sentence Complete Test) वाक्य पूर्ति परीक्षण–

- प्रतिपादक – पायने व टेण्डलर, 1930
- अधूरे वाक्यों का परीक्षण – अधूरे वाक्यों (40) को पूरा करना होता है। जो मुझे दुःख अनुभव होता है जब........।
- यह 14 से 19 वर्ष के बच्चों के लिए होता है।
- सबसे पहले प्रयोग – एबिंग हॉस। (भारत में विश्वनाथ मुखर्जी ने किया)

✦ **S.C.T. की उपयोगिता** :-

दबी हुई दमित इच्छाओं, अचेतन मन का अध्ययन करने में।

### 6. नाटक या अभिनय विधि-खेल (Role Play)

- प्रतिपादक – जे.एल. मोरेनो

### 7. S.A.T. विधि (Senior Apperception Test) प्रौढ़ बोध परीक्षण–

- प्रतिपादक – लियोपोल्ड बैलक
- इसमें 16 कार्ड होते हैं। 50 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों के लिये उपयोगी।

**नोट :-** उमाचौधरी ने 1978 में भारत में इसका अनुवाद किया।

### 8. मोजेक परीक्षण–

- प्रतिपादक – मार्गरेट लोवेनफील्ड

Scanned with CamScanner

- ड्राईंग, पेंटिंग, मूर्तिकला व हस्तलेख के मूल्यांकन में उपयोगी।

**9. चित्र कहानी बनाओ परीक्षण–**
- प्रतिपादक – स्नीडमैन
- इसमें 22 चित्र होते हैं।

**10. घर पेड़ व्यक्ति परीक्षण HTP–**
- प्रतिपादक – बक

**11. ड्रॉ ए.परसन परीक्षण–**
- प्रतिपादक – मैकहोवर, 1926

**12. खेल विधि–**
- बच्चों को खिलौने के साथ खेलने की पूर्व स्वतंत्रता दी जाती है।

**13. रोजनविग तस्वीर कुण्ठा अध्ययन विधि– 1949**
- इसमें 24 चित्र होते हैं।

**14. रॉबर्ट्स आत्मबोध परीक्षण–**
- राबर्ट्स – 27 कार्ड (बच्चे अन्त:क्रिया करते हुये)

**15. कोहन टेस्ट ऑफ सिम्बल अरेंजमेंट–**
- कोहन, 1955
- इसमें 16 कार्ड होते है।

**16. मनोविश्लेषण विधि–**
- प्रतिपादक – फ्रायड
- विकास – युंग व एडलर ने किया।

1. स्वतंत्र साहचर्य विधि – सिग्मण्ड फ्रायड – जो कुछ मन में आये वो कहना।
2. स्वप्न विश्लेषण विधि – सिग्मण्ड फ्रायड
3. शब्दों की मिलने की विधि

**17. सजोन्दी विधि–**
- इसमें 48 फोटोग्राफ होते हैं।

**नोट:–** (i) व्यक्तिक मनोविज्ञान के जनक – एडलर (ii) S.A.T. T.A.T. टेस्ट का भारतीय रूपान्तरण डॉ. उमा चौधरी ने किया। (1960) (iii) S.C.T. दुबे व अर्चना व दुबे, 1987 (iv) भग्नाशा सम्बन्धी चित्र अध्ययन – रोजन विग (24 कार्टुन) (भारत में इसका अनुवाद डॉ. उदय पारिख ने किया।)

## व्यक्तित्व आविष्कारिका–

- ✦ आल्पोर्ट – प्रभुत्व सम्बन्धी अनुसूची (1928)
- ✦ बैल अनुकूलन परिसूची – बैल (1934), समायोजन कठिनाईयों का पता
- ✦ **स्वप्रतिवेदन मापक** – व्यक्तित्व मापन की इस विधि में स्वयं से पूछकर व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है।

1. **मिनीसोटा बहुपक्षीय व्यक्तित्व सूची (MMPI) (हाथवे व मेकिन्ले) (निर्माण 1940)** – 1943 में प्रकाशित, इसमें 567 कथन होते है। इसका प्रयोग 16 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों की मानसिक असामान्यता जैसे – हिस्टीरिया, साईकॉपैथ, साईकोसिस, हाइपॉमैनिया, स्काईजोफैनिया व पैरानॉईया जैसे लोगों का मापन होता है। इसमें 10 नैदानिक मापनी व 3 वैधता मापनी होती है।
2. **आइजेंक व्यक्तित्व प्रश्नावली (आइजेंक)** – इसमें व्यक्तित्व के आयाम, अन्तर्मुखता, बहिर्मुखता, सांवेगिक स्थिरता, अस्थिरता व मनास्तापिता का माप होता है।
3. **16 P.F. कारक** – कैटेल (भारत में इसका अनुवाद एस.डी. कपूर ने किया।)

- ✦ बर्नरीटर की व्यक्तित्व परिसूची – बर्नरीटर (1931) 6 पक्षों का मापन
- ✦ गिलफोर्ड – जिमरमैन स्वभाव सर्वेक्षण (1949)
- ✦ थर्स्टन – स्वभाव सूची, इसमें 140 मद होते हैं तथा सात तत्वों की पहचान।
- ✦ शिप्ले की व्यक्तित्व प्रश्न सूची
- ✦ कैटेल 16 कारक सूची (17 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए)
- ✦ **वुडवर्थ** ने 1918 में व्यक्तित्व आविष्कारिका तैयार की जिसमें 116 प्रश्न थे। सैनिकों की संवेगात्मक अस्थिरता का पता लगाना।
- ✦ व्यक्तित्व आविष्कारिका का वैज्ञानिक प्रयोग प्रथम विश्वयुद्ध के समय हुआ। सर्वप्रथम वुडवर्थ ने 1918 में व्यक्तित्व आविष्कारिका तैयार किया जिसका नाम वुडवर्थ पर्सनल डाटा इन्वेन्ट्री था, इसमें 116 प्रश्न थे।

## भारत में प्रसिद्ध परिसूचियाँ–

1. **सकसैना** – व्यक्तित्व परिसूची – एम.एस.एल. सक्सेना, 1959 (11 वर्ष से वयस्क व्यक्ति का मापन)
2. **ताराचन्द** – व्यक्तित्व परीक्षण – डॉ. डी.टी. ताराचन्द 1965
3. **पालसेन** – व्यक्तित्व परीक्षण – एम.एन. पालसेन 1965

- ✦ **प्रक्षेपण विधियों व व्यक्तित्व आविष्कारिका में अन्तर –**

| प्रक्षेपण विधियाँ | व्यक्तित्व आविष्कारिका |
|---|---|
| 1. सम्पूर्ण मापन | 1. कुछ विशेष शीलगुण मापन |
| 2. उद्दीपक के प्रति अनुक्रिया अस्पष्ट व असंगठित होती है। | 2. स्पष्ट व संगठित |
| 3. अनुक्रिया वास्तविक | 3. अनुक्रिया बनावटी भी हो सकती है। |
| 4. अप्रत्यक्ष मापन | 4. व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष मापन |

## व्यक्तित्व आविष्कारिका–

- ✦ T.A.T. परीक्षण को कथानक सम्प्रत्यय परीक्षण भी कहते हैं।
- ✦ **स्वप्रत्यय** – व्यक्ति का स्वयं के बारे में क्षमताओं व योग्यताओं का प्रत्यक्षण स्वप्रत्यय कहलाता है।
- ✦ व्यवहार विश्लेषण विधियाँ (व्यक्तित्व मापन) – (1) साक्षात्कार (2) प्रेक्षण (निरीक्षण) (3) स्थितिपरक परीक्षण/परिस्थिति परीक्षण
- ✦ **फ्रायड व हैड ब्रेडर** ने अर्न्तमुखी, बर्हिमुखी परीक्षण का निर्माण किया।
- ✦ **नॉरमैन** ने बहिर्मुखता, सहमति शीलता, कर्तव्य निष्ठा, स्नायु विकृति व अनुभूति का खुलापन इन पांच गुणों को **'द बिग फाइव'** कहा है।

Scanned with CamScanner

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ **मनोविश्लेषण में जिसके अध्ययन पर बल दिया जाता है :** ***[School Lect. Exam-2013]***
(A) संचेतना (B) अर्द्ध-संचेतना
(C) अचेतन (D) बहु चेतन **(C)**

❖ फ्रायड के अनुसार मन की संरचना की सही कोटि है- ***[School Lect. Exam-2013]***
(A) अति अहंम् -इदम् - अहंम्
(B) इदम् - अहंम् - अति अहंम्
(C) अहम् - अति अहंम् - इदम्
(D) इदम् - अति अहंम् - अहम् **(B)**

❖ व्यक्तित्व के मापन के लिए निम्न में से कौनसा व्यक्तिनिष्ठ परीक्षण है ? **(PTI-III ग्रेड-2012)**
(A) रोर्शाख परीक्षण (B) थिमेटिक एपरसैप्सन परीक्षण
(C) शब्द साहचर्य परीक्षण (D) जीवन कथा परीक्षण (D)

❖ व्यक्तित्व एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की- **(RTET-II लेवल-2011)**
(A) नाममात्र की भूमिका है (B) महत्त्वपूर्ण भूमिका है
(C) अपूर्वानुमेय (D) आकर्षक भूमिका (B)

❖ बालक प्रसंग बोध परीक्षण 3 वर्ष से 10 वर्ष की आयु के बालकों के लिए बनाया गया है। इस परीक्षण में कार्ड में प्रतिस्थापित किये गये हैं ? **(RTET-II लेवल-2011)**
(A) सजीव वस्तुओं के स्थान पर जानवरों का
(B) लोगों के स्थान पर जानवरों का
(C) पुरुषों के स्थान पर महिलाओं को
(D) वयस्क के स्थान पर बालकों का (B)

❖ निम्न में से कौनसा कारण बालक के स्वस्थ भावात्मक विकास में सहायक नहीं है ? **(विज्ञान II ग्रेड-2010)**
(A) बालक के कार्यों को सामाजिक स्वीकृति मिलना
(B) परिवार एवं विद्यालय में संवेगों का दमन
(C) विद्यालय में उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग
(D) शिक्षक द्वारा व्यवहार के सही उदाहरण प्रस्तुत करना (B)

❖ ''व्यक्तित्व मनोदैहिक व्यवस्थाओं का वह गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है'' इन शब्दों में व्यक्तित्व की परिभाषा दी है ? **(पी.टी.आई. III ग्रेड-2012, RTET-II Level-2012)**
(A) आलपोर्ट (B) एडलर
(C) एरिक्सन (D) वुडवर्थ (A)

❖ एक अन्तर्मुखी व्यक्तित्व होता है ? **(PTI-III ग्रेड-2012)**
(A) क्रिया करने की तीव्र इच्छा रखने वाला व्यक्ति
(B) प्रबल और सरलता से परेशान हो जाना वाला नहीं
(C) विनम्र, सरल स्वभाव वाला
(D) व्यक्ति जो अपने पर्यावरण के प्रभाव के प्रति तुरंत प्रतिक्रिया करता है। (C)

❖ किस मनोवैज्ञानिक ने व्यक्तित्व की संरचना के अंतर्गत गत्यात्मकता एवं स्थालाकृतिक पक्ष का अध्ययन किया? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) फ्रायड (B) लेविन व फ्रायड
(C) स्मिथ व लेनिन (D) इनमें से सभी (B)

❖ ''पर्सनेलिटी'' शब्द किस भाषा के मूल से लिया गया है ? **(गणित II ग्रेड-2010)**
(A) अंग्रेजी (B) रोमन
(C) जर्मन (D) लैटिन (D)

❖ ''रोशाख स्याही धब्बा परीक्षण'' व्यक्तित्व परीक्षण का कौनसा प्रकार है- **(गणित II ग्रेड-2010)**
(A) व्यक्तिगत (B) प्रक्षेपी
(C) अप्रक्षेपी (D) अर्द्धप्रक्षेपी (B)

❖ अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की विशेषता है ? **(संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) इसका मुख अंदर की ओर धंसा होता है।
(B) इनके मुख की बनावट अन्य से भिन्न है।
(C) इनमें नेतृत्व के गुण पाए जाते हैं।
(D) इसमें सामाजिकता के गुण कम पाए जाते हैं। (D)

❖ व्यक्तिगत शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के किस शब्द से हुई है ? **(संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) पर्सोना (B) पर्सन
(C) पर्सनल (D) पर्सनलिटी (A)

❖ सी.ए.टी. व्यक्तित्व परीक्षण की कौनसी विधि है ? **(संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) व्यक्तिनिष्ठ (B) प्रक्षेपी
(C) अप्रक्षेपी (D) अर्द्धप्रक्षेपी (B)

❖ अंतर्मुखी व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं ? **(उर्दू II ग्रेड-2010)**
(A) संदेही, शंकालु तथा एकान्तप्रिय रहने वाले
(B) दूसरों के साथ हँसी-मजाक करने वाले
(C) समूह का नेतृत्व करने वाले
(D) दूसरों को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता (A)

❖ किशोरों में द्वंद्व उभरने का मुख्य कारण है ? **(RPSC-2004)**
(A) पीढ़ियों का अंतर
(B) अवसरों की प्रतिकूलता
(C) किशोरावस्था में स्वप्न दर्शन
(D) निराश व निस्सहायता (B)

❖ वांछित व्यक्तित्व होता है ? **(RPSC-2007)**
(A) अन्तर्मुखी (B) संवेगीय स्थिर
(C) बहिर्मुखी (D) मनस्तापी (B)

❖ छात्र के असामान्य व्यवहारों के अध्ययन के लिए निम्नांकित में से किस प्रणाली का प्रयोग सही है ? **(RPSC-2007)**
(A) अन्त:दर्शन प्रणाली (B) व्यक्ति इतिहास प्रणाली
(C) समाजमिति प्रणाली (D) विकासात्मक प्रणाली (B)

Scanned with CamScanner

❖ व्यक्तित्व को अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी वर्गों में पहले वर्गीकरण किसने किया ? (संस्कृत III ग्रेड-2009)
(A) शेल्डन (B) क्रेश्मर
(C) युंग (D) रोजर (C)

❖ बच्चे का विकासशील व्यक्तित्व किसके द्वारा प्रभावित होता है? (PTI–II ग्रेड-2012)
(A) व्यक्ति के शरीर में ग्रंथियों द्वारा
(B) परिवार द्वारा
(C) विद्यालय में प्राप्त अनुभव द्वारा
(D) ग्रंथियों, परिवार और विद्यालय में प्राप्त अनुभवों द्वारा (D)

❖ बहिर्मुखी व्यक्तित्व होता है- (PTI–III ग्रेड-2012)
(A) केवल अपने में समाये रहने वाला, कम क्रियाशील व्यक्ति
(B) विनम्र स्वभाव वाला व्यक्ति जो शीघ्र ही परेशान होने लगता है।
(C) व्यक्ति जो हमेशा अपने स्वयं के बारे में सोचता रहता है
(D) प्रबल व्यक्ति जो सरलता से परेशान हो जाने वाला नहीं होता है। (D)

❖ किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के मापन के लिए व्यक्तिनिष्ठ विधि है- (PTI–II ग्रेड-2012)
(A) नियंत्रित निरीक्षण विधि
(B) वैयक्तिक गुणों का मूल्यांकन
(C) आत्मकथा विधि
(D) व्यक्तित्व में मनोवैज्ञानिक परिवर्तन (C)

❖ एरिक्सन के अनुसार आप व्यक्तित्व समायोजन नहीं कर सकते, यदि आप- (PTI–III ग्रेड-2012)
(A) अपने आपको नियंत्रित करने में असमर्थ हैं।
(B) समर्थी, योग्य एवं परिश्रमी है।
(C) कोई उत्तरदायित्व वहन करने में असमर्थ हैं।
(D) स्वयं पर एवं दूसरों पर विश्वास करते हैं। (A)

❖ बहिर्मुखी विद्यार्थी, अन्तर्मुखी विद्यार्थी से किस विशेषता के आधार पर भिन्न होता है ? (तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती, 2012)
(A) मजबूत भावनाएँ, पसंदगी एवं नापसंदगी
(B) मन ही मन परेशान होने की अपेक्षा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है।
(C) अपने बौद्धिक कार्यों में डूबा रहता है।
(D) बोलने की अपेक्षा लिखने में बेहतर होता है। (B)

❖ बालक के व्यक्तित्व को किस प्रकार का अधिगम अधिक प्रभावित करता है ? (TET-II लेवल-2012)
(A) प्रयत्न एवं त्रुटि अधिगम (B) अनुकरण अधिगम
(C) अन्तर्दृष्टि पूर्ण अधिगम (D) अनुदेशनात्मक अधिगम (D)

❖ निम्न में से कौनसी तकनीक प्रक्षेपण तकनीक नहीं है? (BTET-II लेवल-2012)
(A) खेल तकनीक
(B) शब्द साहचर्य परीक्षण
(C) चित्र साहचर्य परीक्षण
(D) व्यक्तिगत अध्ययन (D)

❖ व्यक्तित्व मापन की 'प्रक्षेपी' परीक्षण विधि को, पहचानिये- (प्रधानाध्यापक परीक्षा-2012)
(A) साक्षात्कार (B) शब्द साहचर्य परीक्षण
(C) व्यक्ति-अध्ययन (D) चैक लिस्ट (B)

❖ व्यक्तित्व का स्थायी समायोजन है ? (छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)
(A) पर्यावरण के साथ (B) जीवन के साथ
(C) प्रकृति के साथ (D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ एक संतुलित व्यक्तित्व वह है, जिसमें ? (RTET-I लेवल-2012)
(A) इदम् एवं परम् अहम् के बीच संतुलन स्थापित किया जाता है
(B) इदम् एवं अहम् के बीच संतुलन स्थापित किया जाता है
(C) अहम् एवं परम् अहम् के बीच संतुलन स्थापित किया जाता है
(D) मजबूत अहम् को बनाया जाता है (B)

❖ अन्तर्मुखी बालक की मुख्य विशेषता होती है ? (बिहार TET-II लेवल-2012)
(A) वह कक्षा में सभी से मेलजोल रखता है
(B) वह पाठ्य सहगामी क्रियाओं में निरन्तर भाग लेता है
(C) एकान्त में रहकर कम बातचीत करने वाला होता है
(D) उपर्युक्त सभी (C)

❖ मानव व्यक्तित्व परिणाम है ? (CTET-II लेवल-2012, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)
(A) पालन-पोषण और शिक्षा का
(B) आनुवांशिकता और वातावरण की अंतःक्रिया का
(C) केवल वातावरण का
(D) केवल आनुवांशिकता का (B)

❖ लैटिन भाषा में पर्सोना का अर्थ है ? (हिन्दी II ग्रेड-2010)
(A) व्यक्ति (B) व्यक्तिगत
(C) अपूर्ण (D) मुखौटा (D)

❖ "ब्रेल लिपि" से किसको पढ़ाना चाहिए ? (हिन्दी II ग्रेड-2010)
(A) बहरे (B) अंधे
(C) गूंगे (D) विकलांग (B)

❖ एकान्त में विश्वास रखने वाला व्यक्ति कहलाता है ? (RPSC II ग्रेड-2011)
(A) अन्तर्मुखी (B) बहिर्मुखी
(C) उभयमुखी (D) शून्यमुखी (A)

❖ टी.ए.टी. परीक्षण में कार्ड की संख्या है ? (उर्दू II ग्रेड -2010, सामान्य ज्ञान II ग्रेड-2011)
(A) 10 (B) 20
(C) 30 (D) 40 (C)

❖ प्रश्नावली "व्यक्तित्व परीक्षण" की कौनसी विधि है ? (उर्दू-II ग्रेड-2010)
(A) प्रक्षेपी (B) अर्द्धप्रक्षेपी
(C) अप्रक्षेपी (D) व्यक्तिगत (D)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 7 समायोजन क्रियाविधि व कुसमायोजन

- समायोजन शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है सम + आयोजन। यहां सम का अर्थ होता है भली भांति/अच्छी तरह से तथा आयोजन का अर्थ होता है व्यवस्था करना अर्थात् अच्छी तरह से व्यवस्था कर परिस्थितियों के अनुकूल सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया है।
- शारीरिक व मानसिक संतुलन बनाये रखने की योग्यता समायोजन कहलाती है।

### परिभाषाएँ–

- **ट्रैक्सल** – वह अवस्था जिसमें व्यक्ति जीवन के सभी पहलुओं से परिपूर्ण प्रसन्न व संतुष्ट रहता है।
- **एच.सी. स्मिथ** – अच्छा समायोजन यर्थाथवादी व संतोषप्रद दोनों होता है।
- **गेट्स एवं अन्य के अनुसार** – 'समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने एवं वातावरण के मध्य सन्तुलन बनाये रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।'
- **बोरिंग लेगफील्ड एवं वेल्ड / एलएस शेफर** – 'समायोजन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं तथा उनको प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में एक में संतुलन बनाये रखता है।
- **एडलर के अनुसार** – 'समायोजन श्रेष्ठता प्राप्ति का आधार है।'
- **कोलमैन** – 'समायोजन तनाव के साथ व्यवहार करने व वातावरण के साथ सुसंगत संबंधों को बनाने का प्रयास है।'
- **गेट्स व अन्य** – कुसमायोजन व्यक्ति व वातावरण में असंतुलन का उल्लेख करता है।
- **स्कीनर** – 'समायोजन एक अधिगम प्रक्रिया है।'
- **आइजनजैक** – 'समायोजन वह अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकता व दूसरी और वातावरण के अधिकारों में पूर्ण संतुष्टि होती है।

### समायोजन की प्रकृति–

1. निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया। (Continual Process)
2. समायोजन शारीरिक व मानसिक संतुलन बनाये रखने की योग्यता है। (Physical and mental balance)
3. समायोजन व्यक्ति के व्यवहार तथा वातावरण दोनों में परिवर्तन करता है। (Change in behavior and environment)
4. समायोजन एक उपलब्धि व प्रक्रिया है। (An achievement and process)
5. समायोजन मानसिक स्वास्थ्य के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित है।
6. मनोवैज्ञानिक व शारीरिक दोनों है। (Psychological and physiological)
7. समायोजन अनुरूपता की अवस्था है। (Condition of Harmony)
8. बहुआयामी होता है। (Multi Dimensional)
9. व्यक्ति व वातावरण के मध्य सुसंगत सम्बन्ध (Harmonious Relationship) स्थापित करने की प्रकिया है।
10. उचित परिमाण की सामजिक भावना व सामाजिक जिम्मेदारी की स्वीकृति है।

### समायोजन के प्रकार–

1. **रचनात्मक समायोजन** – इसमें व्यक्ति रचनात्मक क्रिया जैसे चित्र बनाकर समायोजन स्थापित करता है।
2. **मानसिक मनोरचना समायोजन** – अवांछनीय लक्षणों को वांछनीय लक्षणों में बदलना ।
3. **स्थानापन्न समायोजन** – दूसरों पर उत्तरदायित्व डालकर समायोजन स्थापित करते हैं।

### समायोजित व्यक्ति की विशेषताएँ–

- **गेट्स व अन्य :**- समायोजित व्यक्ति वह है जिसकी आवश्यकताओं व तृप्ति सामाजिक दृष्टिकोण व सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ संगठित रहती है।

1. परिस्थितियों के अनुकूल आचरण
2. अपने गुण व कमियों की समझ
3. सामाजिकता का गुण
4. स्वतंत्र निर्णय शक्ति (Self Decision Power)
5. आत्मसम्मान की भावना। (Self Respect)
6. आत्ममूल्यांकन की योग्यता
7. प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता।
8. मूलभूत अवाश्यकताओं की पूर्ति
9. व्यवहार में लचीलापन।
10. शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ (Physical and Mentel Helath)
11. संतुष्टि की भावना।
12. संवेगात्मक रूप से नियन्त्रित
13. स्वस्थ अभिवृत्तियाँ व रुचियाँ (Healthy attituedes and interests)
14. कार्यकुशलता

### समायोजन का क्षेत्र (Scope of Adjustment) –

1. स्वास्थ्य समायोजन (Helath Adjustment) – स्वस्थ शरीर में समायोजन रहता है।
2. संवेगात्मक समायोजन (Emotional Adjustment) – संवेगात्मक स्थिर समायोजित होता।
3. मानसिक समायोजन (Mental Adjustment)
4. सामाजिक समायोजन (Social Adjustment)
5. व्यावसायिक समायोजन (Occupational Adjustment)
6. घरेलू समायोजन (Home Adjustment) – घर का अनुकूल वातावरण
7. विद्यालय समायोजन (School Adjustment)
8. लैंगिक समायोजन

### समायोजन को दूषित/प्रभावित करने वाले कारक–

1. **अवसाद/भग्नाशा/कुण्ठा :**- (Frustration) इसमें तनाव, क्रोध, चिन्ता, दबाव सब मिले जुले होते हैं।
   प्रयत्नों में लगातार विफलता की स्थिति कुण्ठा कहलाती है।

Scanned with CamScanner

- **कार्टर गुड के अनुसार** - 'किसी इच्छा या आवश्यकता की पूर्ति में बाधा के आने से उत्पन्न संवेगात्मक तनाव भग्नाशा कहलाता है।'
- **कॉलसेनिक** - 'व्यक्ति द्वारा महत्त्वपूर्ण समझी गई आवश्यकता के अवरुद्ध होने की प्रक्रिया भग्नाशा कहलाती है।'
- **कैरोल** - 'किसी अभिप्रेरक की संतुष्टि में आने वाली बाधा के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली स्थिति कुण्ठा है।'

✦ **भग्नाशा के प्रकार :-**

(i) **आन्तरिक (Internal) भग्नाशा** - 'स्वयं की कमी की वजह से उत्पन्न होने वाली भग्नाशा।

(iii) **बाह्य (External) भग्नाशा** - कोई भी बाहरी कारक

✦ **भग्नाशा के कारण (Causes of Frustration):-**

(i) **बाह्य कारण (External Factors) :-**

1. भौतिक (Physical) वातावरण - बाढ़, भूकम्प, सुनामी आदि।
2. आर्थिक (Economic) कारण (निर्धनता)
3. सामाजिक (Social) कारण (रीति रिवाज, परम्परायें)
4. अन्य व्यक्ति (Other Person)

(ii) **आन्तरिक कारण (Internal Factors):-**

1. शारीरिक दोष (आन्तरिक कारक) (Physical Defect)
2. विरोधी इच्छाएँ (आन्तरिक कारक) (Conflicting Desires)
3. असंगत आवश्यकताएँ (आन्तरिक कारक)
4. मानसिक संघर्ष - भग्नाशा का सबसे बड़ा आन्तरिक कारक (Mental Conflict)
5. नैतिक आदर्श (आन्तरिक कारक) (Moral Values)

✦ **नोट :-** भग्नाशा का मापन 'रोजनवीग' नामक व्यक्ति ने किया है। (जिसमें 24 कार्टुन होते हैं इस टेस्ट का नाम 'तस्वीर कुण्ठा अध्ययन' है।)

### कुण्ठा-आक्रामकता की परिकल्पना-

✦ **डोलार्ड मिलर :-** इसके अनुसार आक्रामकता ही कुंठा का उत्पादन है।

**भग्नाशा की स्थिति में बालक का व्यवहार :-**

| | |
|---|---|
| 1. एकान्तवादी बन जाना।<br>2. रोगग्रस्त होने की बात करना।<br>3. आक्रमणकारी बन जाना।<br>4. आत्मसमर्पण कर देना।<br>5. पलायन करना/भाग जाना | मूल रूप से ही व्यवहार करता है। |

2. **तनाव** (Tension) -

- **ड्रेवर** - तनाव का अर्थ संतुलन के नष्ट होने की सामान्य भावना है।
- **गेट्स एवं अन्य के अनुसार** - 'तनाव असन्तुलन की दशा है जो व्यक्ति को अपनी उत्तेजित दिशा का अंत करने के लिए प्रेरित करती है।'

3. **दुश्चिन्ता** (Anixity) - भय व आशंका की अवस्था, जब व्यक्ति उपयुक्त अहम रक्षा को ना अपनानेपर असफल होता है तब विकसित हो जाती है।
'चेतन तथा अचेतन के मध्य उत्पन्न होने वाली संघर्ष की स्थिति दुश्चिन्ता कहलाती है।'

- यह दो प्रकार की होती है-

(क) **सामान्य दुश्चिन्ता** - तनाव ग्रस्त हो जाना
(ख) **आतंक दुश्चिन्ता** - दहशत का माहौल जैसे : फोबिया।

4. **दबाव (Stress)** - इसकी उत्पति Stringer (अर्थ - कसना) से हुई है। दबाव किसी मांग के प्रति शरीर की अनुक्रिया है। आधुनिक दबाव शोध के जनक **हैंससैल्ये** है।

- **लक्षण :-** ध्यान केन्द्रित ना कर पाना, स्मृति हास, आत्मसम्मान में कमी, गलत निर्णयन, आकुलता, भावात्मक अस्थिरता, भय, दुश्चिन्ता, अवसाद, निन्द्रा में समस्या, शारीरिक समस्या जैसे हृदय गति, रक्तचाप स्तर आदि में परिवर्तन इत्यादि।
- दबाव का प्रभाव संवेगात्मक, शरीर क्रियात्मक, संज्ञात्मक व व्यवहारात्मक रूप से पड़ता है।
- **दबाव का स्वास्थ्य पर प्रभाव :-** दीर्घकालिक दबाव का प्रभाव शारीरिक परिश्रांति जैसे थकान, कमजोरी, मानसिक परिश्रांति जैसे दुश्चिन्ता, असहायता व संवेगात्मक परिश्रांति के रूप में पड़ता है इसे बर्नआउट (Burnout) भी कहा जाता है।

✦ **सेल्वे** नामक विद्वान ने दीर्घकालिक प्रभाव के प्रतिरूप को सामान्य अनुकूलन संलक्षण (Gas) नाम दिया इसके 3 चरण होते हैं -

1. **सचेत प्रतिक्रिया चरण** - इसमें एडीनल-पीयूष कोटैक्स तंत्र उन सभी अन्त: स्त्रावों को छोड़ता है जिनसे दबाव उत्पन्न होता है।
2. **प्रतिरोध चरण** - दीर्घकालिक दबाव की स्थिति में प्रारम्भ होता है। परानुकम्पी तंत्रिका तंत्र शरीर के संसाधनों का सावधानी पूर्वक सामना करने के लिए तैयार करता है।
3. **परिश्रांति चरण** - दीर्घकालिक दबाव की स्थिति में शरीर के संसाधन निष्कासित हो जाते हैं।

**नोट :-** एडलर व पार्कर ने दबाव से सामने की 3 युक्तियां बतायी हैं-

1. **कृत्य अभिविन्यस्त युक्ति** - दबाव स्थिति के बारे में सूचना एकत्रित करना, विकल्प की तलाश व संभावित परिणाम के बारे में सोचना।
2. **संवेग अभिविन्यास युक्ति** - इसमें संवेगों पर नियंत्रण शामिल होता है।
3. **परिहार - अभिविन्यास युक्ति** - दबावपूर्ण विचारों को नकारना या दमन करना शामिल है।

✦ **दबाव के आयाम :-**

1. तीव्रता (कम या अधिक)
2. अवधि (अल्पकालिक व दीर्घ कालिक)
3. जटिलता (कम या अधिक)
4. भविष्य कथनीयता

✦ **दबाव विशेष :-**

1. **संज्ञानात्मक व्यवहार तकनीक** - मीचेनबाम
गलत विचारों के स्थान पर सकारात्मक विचार रखना।
2. **दबाव प्रतिरोधी व्यक्तित्व की कोबासा ने 3 विशेषताएँ बताई** - (1) प्रतिबद्धता (Commitment) (2) नियंत्रण (Control) (3) चुनौती (Challenge)
3. **दबाव पूर्ण घटना की मापनी निर्माण हॉलमश/राहेनिकिया ने किया।**

✦ **दबाब के तीन प्रकार हैं:-**

✦ **मोरिस :-** दबाव मनोवैज्ञानिक प्रतीकात्मक अवस्था है जिसमें व्यक्ति अनुभव करता है कि उसे विशिष्ट भावना के अनुसार रहना या व्यवहार करना है।

Scanned with CamScanner

**(क) भौतिक दबाव** - बाढ़, भूकम्प
**(ख) मनोवैज्ञानिक दबाव** - कुण्ठा, तनाव
**(ग) सामाजिक दबाव** - पारिवारिक स्थिति, नियम, रीति-रिवाज आदि।

**दबाव के मुख्य प्रकार–**

1. **सकारात्मक ( यूस्ट्रेस )**
2. **नकारात्मक ( डिस्ट्रेस )**

**दबाव की तकनीक–**

✦ लैजारस व फॉकमेन द्वारा

1. **समस्या केन्द्रित** - समस्या का विश्लेषण, समझना व समाधान करने के विकल्प पर ध्यान देना।
2. **संवेग केन्द्रित** - स्वयं को संवेगात्मक रूप से प्रभावित नहीं होने देना।

✦ **अन्य उपाय :-** ध्यान, बायोफीडबैक (शरीर पर नियंत्रण), व्यायाम।

**दबाव का प्रभाव–**

1. संज्ञानात्मक
2. संवेगात्मक
3. व्यवहारात्मक

**5. द्वन्द्व :- ( संघर्ष ) (Conflicts)**

✦ **मन के अनुसार** - निरन्तर रहने वाला संघर्ष कष्टदायक होने के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी है।

✦ **डगलस व हौलेण्ड के अनुसार :-** 'दो विरोधी विचार तथा विरोधी उद्देश्यों की वजह से उत्पन्न होने वाली कष्टदायक संवेगात्मक दशा द्वन्द्व है।'

✦ **बोरिंग व लेगफिलवेल्ड :-** वह अवस्था जिससे विरोधी व समान शक्तियाँ प्रेरणाएँ एक ही समय कार्यरत होती हैं।

✦ **शेफर :-** ऐसी स्थिति जिससे दो या दो अधिक विरोधी व्यवहार संबंधी विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिनकी पूर्ति एक समय में नहीं की जा सकती है।

✦ **कर्थविन :-** मानसिक द्वन्द्व अभिप्रेरणा का टकराव होता है।

✦ **क्रो एण्ड क्रो :-** 'द्वन्द्व इस स्थिति को व्यक्त करता है जब वातावरण मे ऐसी शक्तियों का सामना करना पड़ता है जो इसकी इच्छा के विपरीत हो।

✦ **सिग्मण्ड फ्रायड :-** 'ID, Ego तथा Super Ego में समन्वय का अभाव द्वन्द्व कहलाता है।'

✦ **द्वन्द्व के प्रकार** - कुर्त लेविन ने दिये है-

**(i) उपागम-उपागम द्वन्द्व ( पहुँच-पहुँच उपागम/पद्धति-पद्धति )** (Approach - Approach Conflict) -(ग्राह्य/ग्राह्य द्वन्द्व) दो सकारात्मक विचारों के मध्य उत्पन्न होने वाला संघर्ष। जैसे - दो सुन्दर लड़कियों में से एक को जीवन साथी चुनने में होने वाला संघर्ष

**(ii) परिहार - परिहार द्वन्द्व ( त्याग-त्याग/वर्जन-वर्जन )** (Avoidance - Avoidance) -
दो नकारात्मक विचारों के मध्य उत्पन्न होने वाला संघर्ष - अवांछनीय विकल्पों में से एक का चुनाव।
जैसे - ना पढ़ना चाहता ना ही मैच देखना चाहता है।

**(iii) उपागम- परिहार द्वन्द्व ( पद्धति व वर्जन उपागम )** (Approach - Avoidance):-
एक सकारात्मक व एक नकारात्मक स्थिति में उत्पन्न होने वाला द्वन्द्व। जैसे - गाड़ी खरीदनी है लेकिन पैसे नहीं देना है।

**(iv) बहुउपागम-परिहार द्वन्द्व :-**
दो या दो से अधिक सकारात्मक व नकारात्मक में होने वाली स्थिति।

**संघर्ष से बचने के उपाय–**

1. उच्च आदर्श प्रस्तुत करें
2. परिवार व विद्यालय का वातावरण स्वस्थ हो
3. निर्देशन व परामर्श
4. अभिप्रेरणा का प्रयोग हो
5. समायोजन का प्रशिक्षण
6. मानसिक चिकित्सा
7. अप्रत्यक्ष विधियों का प्रयोग

**समायोजन स्थापित करने की प्रत्यक्ष विधियाँ (Direct Methods of Adjustment)–**

1. **बाधा का विनाश (Removing the barrier)**
2. **अन्य उपाय की खोज/कार्यविधि के परिवर्तन (Seeking Another Path)**
3. **लक्ष्य का प्रतिस्थापन (Substitution of other goals)**
4. **विरोधी तथ्यों मे से व्याख्या के निर्णय लेना। (Analysis Decision)**

**समायोजन स्थापित करने की अप्रत्यक्ष विधियाँ/मानसिक मनोरचनाएँ/रक्षात्मक युक्तियाँ (Defence Ormental Mecharisns) –**

✦ मनोवैज्ञानिकों ने कई रक्षा-युक्तियों का वर्णन किया है जिन्हें मूलतः दो भागों में बाँटकर अध्ययन किया गया है–

(i) प्राथमिक मानसिक मनोरचनाएँ ( Primary mental mechanisms)
(ii) गौण मानसिक मनोरचनाएँ ( Secondary mental mechanisms )

• **प्राथमिक मानसिक मनोरचनाएँ ( Primary mental mechanisms )** - प्राथमिक मानसिक मनोचरचनाएँ या जिन्हें मुख्य मनोरचनाएँ (major mechanism) भी कहा जाता है, वे मनोरचनाएँ हैं जो स्वतंत्र रूप से या तो मानसिक तनाव, संघर्ष एवं चिन्ता को दूर कर देती हैं या उनकी तीव्रता कम कर देती है। ऐसी मनोरचनाओं में मानसिक संघर्षों से उत्पन्न तनाव को कम करने की शक्ति होती है। इस श्रेणी में आने वाले प्रमुख मनोरचनाए हैं - दमन (Repression), प्रतिगमन (Regression), प्रतिक्रिया निर्माण (Reaction Formation), यौक्तिकीकरण (Rationalization), रूपान्तर (Conversion) उदात्तीकरण (Sublimation) आदि।

• **गौण मानसिक मनोरचनाएँ (Secondary Mental Mechanisms)**-गौण मानसिक मनोरचना या अप्रधान मनोरचनाओं (minor mental mechanism ) से तात्पर्य वैसे मनोरचनाओं से होता है जो स्वयं मानसिक संघर्ष से उत्पन्न तनाव आदि को दूर करने की क्षमता नहीं रखती हैं परन्तु इन तनावों को कम करने में वे मुख्यतः अन्य मानसिक मनोरचनाओं की मदद करती हैं। ऐसी मनोरचनाओं में वास्तविकता के पलायन (denial or reality ), आत्मीकरण (iden-

Scanned with CamScanner

tification) प्रेक्षपण (projection), अन्त:क्षेपण (introjection), विस्थापन (displacement) क्षतिपूति (compensation), स्थानान्तर (transference) स्वप्न-चित्र: (fantasy) आदि प्रमुख हैं।

- ये युक्तियाँ 'अचेतन' होती हैं।
- एच.ए. करौल - इनका प्रयोग आवश्यकता को किसी अप्रत्यक्ष ढ ंग से संतुष्टि के लिए किया जाता है ताकि तनाव को कम कर सके।

1. युक्तिकरण (Rationalization) - औचित्य स्थापन, तार्किक कारण/परिमैयकरण :- अपनी असफलता के पीछे तर्क संगत कारण तलाश करके औचित्य स्थापित करना।

जैसे :- अंगूर खट्टे हैं। निम्बू मीठे है, बहाने बनाना, अनुचित बात का औचित्य स्थापित करना।

नौकरी उसके योग्य नहीं थी।

2. दमन (Repression) :- फ्रायड ने सबसे पहले प्रयोग लिया। (बिना जानाकरी के) दुःखदायी विचार या घटना को अचेतन मन में भेज देना। यह अवचेतन प्रक्रिया है जिसमें उन बातों को भूलना चाहता है जो उसे हीन दोषी व अयोग्य बनाती है।

3. प्रतिगमन/प्रत्यावर्तन :- regression

मार्गन - जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए बाल्यवस्था में लौटने की प्रवृत्ति है।

- शाब्दिक अर्थ :-

पीछे की ओर लौटना उस युक्ति में व्यक्ति छोटे बच्चे के समान व्यवहार करके समायोजन स्थापित करता है।

जैसे - आठ वर्ष का बच्चा अपने छोटे भाई के साथ घुटने के बल चलता है।

अंगूठा चूसना, बिस्तर पर पेशाब करना।

4. रूपान्तरण (Conversation) :-

व्यक्ति तनाव को शारीरिक लक्षणों में बदल लेता है। जैसे - बीमारी में पलायन

5. उदात्तीकरण (Sublimation) :- शोधन/मार्गन्तीकरण - उस युक्ति में व्यक्ति अपनी समाज विरोधी या गलत इच्छाओं को समाज मान्य रूप में बदल लेता है। इसे सृजित विश्व में पलायन भी कहते है।

जैसे - लड़ाई झगड़े करने वाला बालक, मुक्केबाज/पहलवान बन जाता है।

प्रेम के असफल व्यक्ति युद्ध क्षेत्र में वीरता चक्र प्राप्त करता है।

6. प्रतिक्रिया निर्माण (Reaction formation) :- (विपरीतात्मक निर्माण)

अन्तर्निहित इच्छा के बिल्कुल विपरीत व्यवहार करना।

जैसे - मन बनावे मुँह हिलावे।

मुँह में राम बगल में छूरी।

बगुला भगत

7. शमन (Supression) :-

स्वयं अपनी इच्छा को दबा लेना। इसमें हम सचेतन व बल पूर्वक उत्पीड़क विचारां को भूलना चाहते है।

गौण मनो रचनाएं :-

1. क्षतिपूर्ति (Compensation) :- अपनी एक अयोग्यता को दूसरे क्षेत्र की योग्यता से ढक लेना। किसी एक कार्य की पूर्ति किसी दूसरे कार्य के माध्यम से करना।

जैसे :- विकलांग बालक कक्षा में प्रथम स्थान लाकर समायोजन स्थापित करता है।

2. आत्मीकरण /तादात्म्य (Identification) :-

आदर्श व्यक्ति के गुणों या अवगुणों का अनुकरण करना शुरू कर देना। दूसरों के व्यक्तित्व को अपना समझना।

असफल व्यापारी सफल व्यापारी की सफलताओं से आत्मीकरण करना।

3. अन्त:क्षेपण (Introjection) :- 'मैं ही ईश्वर हूँ।'

दूसरों की विशेषताओं को अपने अन्दर देखना। किसी के दुःख में दुःखी होकर स्वयं उसके जैसा व्यवहार करना।

4. विनिवर्तित व्यवहार/विलोपन/प्रत्याहार (withdrawal) :-

भावी असफलता से डरकर उस स्थिति में अपने आपको अलग कर लेना। जैसे - परीक्षा में असफलता के भय से परीक्षा देने ना जाना।

5. नकारात्मक व्यवहार (Negativion) :- (निषेधवाद)

गलत व्यवहार करके अपने महत्त्व को स्थापित करना।

जैसे - प्रतिबन्धित स्थान पर गाड़ी चलाना।

6. आक्रामक व्यवहार (Aggression Behave) :-

दो प्रकार होते हैं - अप्रिय स्थिति के प्रति गुस्सा दिखाना

1. प्रत्यक्ष आक्रामक:- मूल वस्तु पर ही अपना गुस्सा उतारना।

2. अप्रत्यक्ष आक्रामक व्यवहार / विस्थापन्न (Displacement) :- मूल व्यक्ति या वस्तु के स्थान पर दूसरे व्यक्ति या वस्तु पर गुस्सा उतारना।

जैसे - पिता द्वारा पिटाई होने पर छोटे भाई की पिटाई करना, छोटे भाई द्वारा अपने कुत्ते की पिटाई करना।

7. वास्तविकता अस्वीकरण युक्ति :- वास्ताविकता को अस्वीकार कर देना। (नकारना/Denial)

जैसे - कैन्सर पीड़ित होने पर यह कहना कि मुझे कुछ भी नहीं हुआ।

8. सहानुभूति युक्ति (Synpathism) :-

दुःखद स्थिति में दूसरों की सहानुभूति अर्जित करने की कोशिश करना है।

9. विपर्याय :- दमन की गयी मनाग्रंथि को शारीरिक लक्षण द्वारा अभिव्यक्त करना।

10. मनतरंग/कल्पनातरंग/दिवास्वप्न (Day Dreaming) :-

हवाई किले बनाना। इसके अन्तर्गत हम कल्पना में वह प्राप्त करने का प्रयास करते हैं जो वास्तविक रूप में प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

11. अन्तर्वेशन :- अन्य व्यक्ति के व्यवहार को स्वयं के व्यवहार की तरह अपनाना।

12. बौद्धिकीकरण :- व्यक्तिक घटना का सामान्यीकरण करके समायोजन स्थापित करना।

Scanned with CamScanner

13. **प्रतिस्थापन (Substitution) :-** इसमें मौलिक लक्ष्य व इच्छा के स्थान पर अन्य लक्ष्य या ईच्छा को अपनाया जाता है।
जैसे – एक व्यक्ति डॉक्टर बनने का लक्ष्य बनाता है असफल होने पर कम्पाउडर बनकर संतुष्टि प्राप्त करता है।
14. **प्रक्षेपण युक्ति (Projection) :-** स्वयं की कमी या दोष का आरोपण दूसरे व्यक्ति विशेष या परिस्थिति विशेष पर कर देना।
**जैसे** – 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा'
अपनी असफलता का दोष असहयोगी कारकों को देना। जैसे – गेंद अच्छी नहीं थी।
कामी व्यक्ति दूसरों को कामी कहता है। चरित्रहीन व्यक्ति अपनी पत्नी पर चारित्रिक दोषारोपण करता है।

## कुसमायोजन के प्रकार (Types maladjustment):-

1. **साधारण कुसमायोजन (Ordinary Maladjustment):-**
**जैसे** – चोरी करना, झूठ बोलना, विद्यालय से भाग जाना, झगड़ा करना।
2. **गम्भीर कुसमायोजन (Serious Maladjustment) :-**
लम्बे समय तक बालक मानसिक द्वन्द्वों का समाधान नहीं कर पाता है। जैसे न्यूरोसिस, हिस्टीरिया, बहुविविध व्यक्तित्व
3. **अत्यधिक गम्भीर कुसमायोजन (Grave Maladjustment) :-** साइकोसिस पागलपन
जैसे – उन्मादी, स्काईजोफ्रीनिया, पैरानायड

## कुसमायोजित व्यक्तियों की विशेषताएँ

1. निराशावादी, हीनता का भाव, असुरक्षा का भाव
2. चिन्तित
3. एकान्तवासी
4. मित्र ना बनाने वाले
5. गाली-गलौच करने वाले, आक्रामक व्यवहार करने वाले।
6. हकलाने व तुतलाने वाले।
7. अंगूठा चूसने वाले।
8. नाखुनों को दांतो से कुतरना।
9. पैर व अंगुलियाँ हिलाना।
10. विद्यालय से भाग जाना।
11. भय ग्रस्त रहना
12. चोरी करना, झूठ बोलना।
13. मानसिक विचारों से ग्रस्त
14. धैर्य, सहनशीलता का अभाव

## कुसमायोजन के कारण (Causes of Maladjustment)

1. **व्यक्तिगत कारण – शारीरिक दोष/रोग**
   - ग्रंथि विकार
   - निम्न बुद्धि लब्धि
   - वंशानुक्रम कारण
2. **पारिवारिक कारण :-**
   - पारिवारिक निर्धनता
   - आवश्यकताओं की पूर्ति न होना
   - माता-पिता का व्यवहार
   - पक्षपात, उपेक्षापूर्ण व्यवहार
   - माता-पिता की मृत्यु हो जाना
   - झगड़े अनुचित व्यवहार
3. **सामाजिक कारण :-**
   - समाज की संरचना (जातिवाद, वर्ग भेदभाव, ऊँच-नीच का भेदभाव, साहित्य)
4. **विद्यालय संबंधी कारण :-**
   - दोषपूर्ण वातावरण
   - शिक्षकों का पक्षपात पूर्ण व्यवहार
   - दोषपूर्ण शिक्षण विधि व पाठ्यक्रम
   - शिक्षण सहायक सामग्री का अभाव
   - पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अभाव
5. **भौतिक वातावरण :-**
   - बाढ़, भूकम्प, सुनामी आदि।

## कुसमायोजन पहचानने की विधियाँ

1. निरीक्षण
2. साक्षात्कार
3. हैगरी ओल्सन विकमैन की व्यवहार रैटिंग स्केल
4. रोजर का व्यक्तित्व समायोजन परीक्षण
5. मूनी जाँच सूची
6. टेलर की व्याकुलता स्केल
7. बेल समायोजन सूची
8. मिनी सोटा – बहुपक्षीय व्यक्तित्व अनुसूची
9. गिलफोर्ड जैमर मैन – स्वभाव सर्वेक्षण
10. रोजर्स ने 1931 में विद्यालय बच्चों के लिए समायोजन सूची का निर्माण किया।

## समायोजन में शिक्षक की भूमिका–

1. निदानात्मक – उपचारात्मक विधि का प्रयोग (कारणों का पता लगाकर समाधान)
2. सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करना।
3. प्रेम, सहयोग व सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार ।
4. व्यंग्यात्मक टिप्पणी का प्रयोग न करना।
5. अच्छा उदाहरण/आदर्श प्रस्तुत करें।
6. सामाजिक, नैतिक मूल्यों व हस्तकौशल की शिक्षा।
7. निर्देशन व परामर्श का प्रयोग
8. विद्यालय का उत्तम वातावरण उत्पन्न करना।

## माता पिता का व्यवहार–कुसमायोजित बालकों के साथ–

1. मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
2. बालक के सामने झगड़ा नहीं करें।
3. बालक की दूसरे बच्चों से तुलना ना करें।
4. बालक के भविष्य के प्रति ज्यादा उत्सुक ना हो।

Scanned with CamScanner

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ प्रतिरक्षा प्रक्रिया है- *[School Lect. Exam-2016]*
(A) चेतन व्यवहार (B) न्यायसंगत एवं तार्किक
(C) प्रत्यक्ष विधि (D) व्यक्तित्व का रक्षा कवच **(D)**

❖ एक विकलांग बालक अत्यधिक परिश्रम करके कक्षा में प्रथम आने का प्रयास करता है, इसे किस प्रतिरक्षण प्रणाली में रखेंगे? **(संस्कृत II ग्रेड-2010)**
(A) पुष्टिकरण (B) प्रक्षेपण
(C) प्रतिगमन (D) क्षतिपूर्ति (D)

❖ रक्षा तंत्र बहुत सहायता करता है- **(RTET-I लेवल- 2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) हिंसा से निपटने में (B) दबाव से निपटने में
(C) थकान से निपटने में (D) अजनबियों से निपटने में(B)

❖ शारीरिक निर्योग्यता वाले व्यक्ति के लिए निम्नलिखित में से कौनसी युक्ति तंत्र सबसे संतोषजनक होगी? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) तादात्मकीकरण (B) विवेकीकरण
(C) अतिकल्पना (D) इनमें से कोई नहीं (C)

❖ कुछ लोगों का कहना है कि जब बालकों को गुस्सा आता हैं, तो वे खेलने के लिए चले जाते हैं। जब तक पहले से अच्छा महसूस नहीं करते हैं उनके व्यवहार में निम्नलिखित में से कौनसा प्रतिरक्षा तंत्र प्रतिलक्षित है ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) प्रक्षेपण (B) विस्थापन
(C) प्रतिक्रिया निर्माण (D) उदात्तीकरण (B)

❖ भग्नाशा का सबसे बड़ा आंतरिक कारण है- **(सामाजिक विज्ञान -II ग्रेड-2010)**
(A) असंगत आवश्यकताएँ (B) मानसिक संघर्ष
(C) परिस्थिति (D) नैतिक आदर्श (B)

❖ निम्नलिखित में से कौनसा मेल सही नहीं है ? **(सामान्य ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) अन्तर्मुखी-स्वयं अपने में रहना
(B) प्रक्षेपण-अपनी गलती दूसरों पर डालना
(C) युक्तिकरण-अपना गुस्सा दूसरों पर उतारना
(D) प्रतिगमन-पुरानी आदतों में लौटना (C)

❖ किसी व्यक्ति द्वारा अपना अस्तित्व भुलाकर किसी दूसरे व्यक्ति के गुणों व अवगुणों का अनुकरण करना कहलाता है- **(गणित II ग्रेड-2010)**
(A) प्रतिगमन (B) दमन
(C) प्रक्षेपण (D) तादात्मीकरण (D)

❖ जब व्यक्ति असफलता, दु:ख, पीड़ा को बलपूर्वक भूलने का प्रयास करता है, इसे कहते हैं- **(हिन्दी II ग्रेड-2010)**
(A) प्रतिगमन (B) तादात्मीकरण
(C) प्रक्षेपण (D) दमन (D)

❖ समायोजन से तात्पर्य स्वयं का विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन करना है ताकि संतुष्ट किया जा सके ? **(RTET-I लेवल-2011)**
(A) दूसरों को (B) प्रेरकों
(C) उद्देश्यों को (D) आवश्यकताओं को (D)

❖ एक छोटे कद की लड़की ऊँची एड़ी के जूते पहन कर लंबी दिखना चाहती है। उसने निम्न में से किस रक्षा युक्ति का प्रयोग किया ? **(विज्ञान II ग्रेड-2010)**
(A) क्षतिपूर्ति (B) औचित्य स्थापन
(C) दमन (D) उत्क्रमण (A)

❖ निम्न में से कौनसा तरीका प्रत्यक्ष समायोजन का है ? **(RTET-II लेवल-2012)**
(A) प्रक्षेपण (B) दमन
(C) प्रतिगमन (D) लक्ष्यों का प्रतिस्थापन (D)

❖ एक बालक जो पढ़ने में कमजोर है, अपनी असफलता का कारण अध्यापक का पक्षपात बताता है। वह निम्न में से किस रक्षा युक्ति का प्रयोग कर रहा है ? **(अंग्रेजी II ग्रेड-2011)**
(A) उत्क्रमव रचना (B) प्रक्षेपण
(C) दमन (D) क्षतिपूर्ति (B)

❖ दिवास्वप्न किसकी एक सामान्य समस्या है-
(A) बहिर्मुखी बालक (B) अपराधी बालक
(C) रचनात्मक बालक (D) प्रतिभाशाली बालक (B)

❖ "किशोरों को निर्णय लेने का कोई अनुभव नहीं होता है" यह कथन है-
(A) सिम्पसन (B) जोन्स
(C) स्कीनर (D) वेलेन्टाइन (C)

❖ समायोजन नहीं कर पाने का कारण है-
(A) कुण्ठा (B) तनाव
(C) द्वन्द्व (D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ "दमन वह प्रतिक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी चेतना से उन विचारों तथा आवेगों को हटा देता है, जो चिंता को उत्तेजित करते हैं" यह कथन है-
(A) बरनार्ड का (B) फ्रायड का
(C) विलियम जोन्स का (D) मैक्डूगल का (B)

❖ कुसमायोजित बालक-
(A) प्रसन्नचित्त होता है। (B) पढ़ने में तीव्र होता है।
(C) पूर्ण स्वस्थ होता है। (D) तनावयुक्त होता है। (D)

❖ शिक्षक के कुसमायोजन को प्रकट करने वाला उदाहरण है-
(A) शिक्षक द्वारा मित्रों में दोष निकालना
(B) आत्मविश्वास में कमी
(C) छात्रों के साथ क्रूर व्यवहार करना
(D) उपर्युक्त सभी (D)

Scanned with CamScanner

❖ समायोजन करने वाले व्यक्ति का लक्षण है-
(A) संतुलन
(B) संतुष्टि एवं सुख
(C) समाज के अन्य व्यक्तियों का ध्यान
(D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ व्यक्तित्व का कुसमायोजन प्रकट करता है-
(A) आक्रमणकारी के रूप में
(B) पलायनवादी प्रवृत्तियों में
(C) झगड़ालू प्रवृत्तियों में
(D) उपर्युक्त सभी में (D)

❖ जब बालक अपनी असफलताओं के दोष को किसी दूसरे के ऊपर लादने की कोशिश करके अपने तनाव को कम करने का प्रयास करता है, वह विधि कहलाती है-
(A) स्थानापन्न समायोजन (B) मानसिक मनोरचनाएँ
(C) रचनात्मक समायोजन (D) उपर्युक्त सभी (A)

❖ निम्नांकित में से कुसमायोजित बालक है-
(A) साधारण-सी बाधा उत्पन्न होने पर मानसिक संतुलन खो देता है।
(B) असामाजिक, स्वार्थी व सर्वथा दु:खी होता है।
(C) परिवेश से अनुकूलन स्थापित करने में असमर्थ होता है।
(D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ बाह्य विषय के गुणों को अपना लेने या दूसरे व्यक्ति के गुणों को अपने व्यक्तित्व में ग्रहण कर लेना कहलाता है-
(A) प्रक्षेपण (B) तादात्म्य
(C) निर्भरता (D) कोई नहीं (B)

❖ "भग्नाशा उस आवश्यकता की पूर्ति या लक्ष्य की प्राप्ति में अवरुद्ध होने या निष्फल होने की भावना है, जिसे व्यक्ति महत्त्वपूर्ण समझता है।" किसकी परिभाषा है ?
(A) गुड (B) कॉलेसनिक
(C) मोर्स (D) विंगो (B)

❖ "तनाव का अर्थ है-संतुलन के नष्ट होने की सामान्य भावना और परिस्थिति के किसी अत्यधिक संकटपूर्ण कारक का सामना करने के लिए व्यवहार में परिवर्तन करने की तत्परता है।"
(A) गेट्स व अन्य (B) ड्रेवर
(C) गुड (D) कॉलेसनिक (B)

❖ "संघर्ष का अर्थ है-विरोध और विपरीत इच्छाओं में तनाव के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली कष्टदायक संवेगात्मक दशा।" किसका कथन है?
(A) डगलस व हॉलैण्ड (B) कॉलेसनिक
(C) क्रो व क्रो (D) गेट्स व अन्य (A)

❖ दिवास्वप्न देखने वाला प्रसन्न रहता है-
(A) कल्पनाशीलता से (B) तर्क से
(C) नियंत्रण से (D) कोई नहीं (A)

❖ किशोरों में द्वन्द्व उभरने का प्रमुख कारण है-
(A) समायोजन का अभाव (B) निराशा
(C) पीढ़ियों का अंतर (D) अवसरों की प्रतिकूलता (D)

❖ एक स्कूल से भागने वाले बालक के अध्ययन की सर्वाधिक उपयोगी विधि है-
(A) प्रयोगात्मक विधि (B) केस स्टडी
(C) प्रश्नावली विधि (D) सर्वेक्षण विधि (B)

❖ "समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।" किसकी परिभाषा है?
(A) बोरिंग, लैंगफेल्ड व वेल्ड
(B) गेट्स व अन्य
(C) क्रो व क्रो
(D) फ्रोबेल (A)

❖ छात्रों को अपना अधिकतम विकास करने में सहायता देने के लिए आवश्यकता पड़ती है-
(A) निर्देशन की (B) परामर्श की
(C) समायोजन की (D) कोई नहीं (B)

❖ समायोजन की प्रक्रिया है-
(A) स्थिर (B) गतिशील
(C) स्थानापन्न (D) कोई नहीं (B)

❖ समायोजन दूषित होता है-
(A) संघर्ष से (B) कुण्ठा से
(C) उपर्युक्त दोनों (D) धन से (C)

❖ एक बालक नवीन पुस्तक चाहता है, लेकिन माता-पिता अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण पुस्तक दिलाने में असमर्थ हैं। बालक अपनी फटी-पुरानी पुस्तक से ही संतोष अनुभव करता है और शांत व प्रसन्न रहता है। यह उदाहरण है-
(A) समायोजन का (B) अधिगम का
(C) प्रेरक का (D) कोई नहीं (A)

❖ समायोजन के प्रकार हैं-
(A) स्थापना समायोजन (B) मानसिक मनोरचनाएँ
(C) रचनात्मक समायोजन (D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ समायोजन की विधियाँ हैं-
(A) प्रतिगमन (B) प्रक्षेपण
(C) उदात्तीकरण (D) उपर्युक्त सभी (D)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 8 मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान

- प्रतिपादक – सी० डब्ल्यू बीयर्स ( 1908 ई० )
- प्रेरणा – एडोल्फ मेयर (मानसिक स्वास्थ्य आन्दोलन)
- पुस्तक – 'ए माइन्ड दैट फाउण्ड इट शेल्फ' A mind that Found it Self - C.W. बीयर्स
- मानसिक स्वास्थ्य आन्दोलन अमेरिका में डोराथिया ने चलाया था।
- विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस– (10 अक्टूबर)
- सामान्य अर्थ – मानसिक स्वास्थ्य मानवीय व्यक्तित्व की क्रियाशीलता की स्थिति है।

**परिभाषाएँ–**

- केटेल व मैस्लो – ऐसी योग्यता जो जीवन की कठिन स्थितियों के प्रति समायोजन स्थापित करने में सहायता देती है।
- शेफर – मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का उद्देश्य है प्रत्येक व्यक्ति का सम्पूर्ण, अधिक प्रसन्न, एकसार व अस्तित्व प्राप्त करने में सहायता करना।
- जेम्स ड्रेवर – 'मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ मानसिक स्वास्थ्य के नियमों की खोज करना व संरक्षण करना।'
- क्रो एण्ड क्रो – 'मानसिक स्वास्थ्य का संबंध मानव कल्याण से है तथा यह मानवीय संबंधों को प्रभावी करता है।'
- हेडफील्ड – 'मानसिक स्वास्थ्य व्यक्तित्व का सामन्जस्य पूर्ण व संतुलित क्रिया अवस्था को व्यक्त करता है।' यह मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा व मानसिक अव्यवस्थापन्न को दूर करता है।
- कुप्पुस्वामी – 'दैनिक जीवन में इच्छाओं, भावनाओं आदर्शों तथा महत्त्वकांक्षाओं में संतुलन स्थापित करने की योग्यता।'
- लैडेल – 'वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से पर्याप्त सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता।'
- स्कीनर – 'मानसिक स्वास्थ्य का संबंध समग्र मानव संबंधों के विकास से है।'
- फ्रेंडसन – 'मानसिक स्वास्थ्य व अधिगम का सफलता से घनिष्ठ संबंध है।'
- कॉलसेनिक – 'मानसिक स्वास्थ्य नियमों का समूह है जो व्यक्ति को स्वयं के साथ तथा दूसरों के रहने के योग्य बनाता है।'
- विश्व स्वास्थ्य संगठन – 'मानसिक स्वास्थ्य मानसिक रोगों या विकारों की अनुपस्थिति को नहीं अपितु शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक कुशलता को व्यक्त करता है।'
- कुप्पूस्वामी – मानसिक स्वास्थ्य समायोजन की वह प्रक्रिया है जिसमें समझौता व सामंजस्य विकास की निरन्तरता का समावेश रहता है।
- लियुकन – जो प्रसन्न, शांतिपूर्वक रहता है वह समाज हित में काम करता है, वहीं मानसिक स्वास्थ्य है।
- कार्ल मेनिंगर – मानसिक स्वास्थ्य अधिकतम खुशी व प्रभावशीलता के साथ वातावरण व दूसरे व्यक्तियों के साथ समायोजन है।

**मानसिक स्वास्थ्य अवधारणा की विशेषताएँ–**

1. स्वीकारात्मक स्थिति – सकारात्मकता से सम्बन्धित है।
2. गतिशील अवधारणा है बदलता रहता है।
3. शारीरिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित है।
4. नैतिक स्तर से भिन्न अवधारणा है।
5. सामाजिकता से भिन्न अवधारणा है।
6. कार्यकुशलता से सीधा सम्बन्ध नहीं है।

**मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की विशेषताएँ–**

1. आत्मविश्वासी – वह सफलता प्राप्त कर सकता है।
2. सहनशील – निराशाओं को सहन करने की योग्यता।
3. संवेगात्मक रूप से परिपक्व – संवेगों को नियंत्रण में रखता है।
4. वातावरण व उसकी शक्तियों का ज्ञान – जीवन की वास्तविकताओं का सामना करना।
5. निश्चित जीवन दर्शन – कर्त्तव्यों व उत्तरदायित्व की अवहेलना नहीं करता।
6. प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता – संघर्ष करने की योग्यता।
7. आत्मसम्मान व आत्ममूल्यांकन की योग्यता – गुण व दोषों की समझ।
8. वास्तविक जगत में निवास (यर्थाथवादी) – कल्पना में विश्वास नहीं।
9. व्यक्तिगत सुरक्षा की भावना।
10. स्वस्थ रुचियाँ व अभिरुचियाँ।
11. व्यवसाय से संतुष्टि।
12. सामाजिक व मानसिक रूप से समायोजन
13. बौद्धिक रूप से विकसित
14. व्यवहार में लचीलापन
15. आत्मबोध का होना।
16. सुरक्षा का भाव।
17. वास्तविक प्रत्यक्षण
18. स्पष्ट जीवन लक्ष्य

**मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक अथवा मानसिक स्वास्थ्य के सिद्धान्त (Factors affecting Mental Health or Principles of Mental Health or Hygience) –**

''मानसिक स्वास्थ्य'' के सिद्धान्तों का अध्ययन दो वर्गों में किया जा सकता है– (1) अपने आप से समायोजन स्थापन के सिद्धान्त और (2) अपने वातावरण से समायोजन स्थापन के सिद्धान्त।

1. अपने आप से समायोजन स्थापन के सिद्धान्त (Principles seeking adjustment with are self) –

- आत्म-ज्ञान का सिद्धान्त (Principle of self-knowledg) – इस का अर्थ है अपने आप को गहराई से समझना। जो व्यक्ति अपना ज्ञान रखता है वह अपनी शक्तियों एवं कमजोरियों के प्रति जागरूक होता है।

Scanned with CamScanner

- **आत्म-स्वीकृति का सिद्धान्त (Principle of self-acceptance)** - मानसिक स्वास्थ्य का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धान्त है - आत्म स्वीकृति। व्यक्ति को अपने आप को स्वीकार करना चाहिए। आत्म-स्वीकृति में भी अपनी सीमाओं के समझना तथा स्वीकार करना सम्मिलित है।
- **अपने आप स्वाभाविक होने का सिद्धान्त (Principle of be thyself)** - इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति जो है उसे वही होना चाहिए अर्थात् उसे स्वाभाविक होना चाहिए कृत्रिम नहीं।
- **आत्म नियंत्रण का सिद्धान्त (Principle of self-control)** - इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति से अपने आप पर नियन्त्रण करना चाहिए।
- **अपने आप को पूर्ण इकाई बनाने/एकीकरण का सिद्धान्त (Principle of intergrating the self)** - इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को अपने आप को एक पूर्ण-इकाई बनाना चाहिए। उसे अपने आप को विघटित नहीं होने देना चाहिए।
- **आप निर्माण का सिद्धान्त (Principle of self-shaping)** - व्यक्ति को प्रत्यत्न करके उसे आप का स्वयं निर्माण करने देना चाहिए। दूसरों को उस की इच्छाओं के विरुद्ध उसके भाग्य का निर्माण करने के लिए प्रयत्न नहीं करना चाहिए।
- **इच्छा स्तर को सन्तुलित करने का सिद्धान्त (Principle of balancing the level of aspiration)** - इच्छा स्तर सन्तुलित होना चाहिए। यह एक ओर व्यक्ति की योग्यताओं तथा प्राप्त अवसरों के अनुकूल होना चाहिए और दूसरी ओर लक्ष्यों के अनुकूल होना चाहिए।
- **विकास को सन्तुलित करने का सिद्धान्त (Principle of balancing development)** - इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के सन्तुलित विकास-शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सौन्दर्यात्मक एवं नैतिक के लिये प्रयत्न करना चाहिए।

2. **वातावरण के साथ समायोजन स्थापन के सिद्धान्त (Principles seeking adjustment with environment)**

- **स्वीकारात्मक दृष्टिकोण का सिद्धान्त (Principle of positive attitude)** - जीवन के प्रति स्वीकरात्मक दृष्टिकोण व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।
- **सक्रिय दृष्टिकोण का सिद्धान्त (Principle of active attitude)** - सम्पूर्ण समायोजन एवं स्वीकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है कि व्यक्ति केवल बाते ही न करें बल्कि कुछ काम करे। उसे संवेगात्मक एवं सामाजिक सन्तुष्टि के लिये अपने आप को उपयोगी क्रियाओं में सक्रिय रहना चाहिए।
- **रचनात्मक अनुभव का सिद्धान्त (Principle of creative experience)** - अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए रचनात्मक (सृजनात्मक) अनुभव प्राप्त करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।
- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सिद्धान्त (Principle of scientific approach)** - अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिये व्यक्ति को जीवन की समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
- **अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य का सिद्धान्त (Principle of positive attitude)** - स्वस्थ मन स्वस्थ शरीर में रहता है। स्वस्थ शरीर अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति में सहायक होता है।
- **संवेगों के प्रशिक्षण का सिद्धान्त (Principle of training the emotions)** - संवेगात्मक शक्ति का उचित प्रयोग मानसिक स्वास्थ्य पर स्वीकारात्मक प्रभाव डालता है। संवेगात्मक शक्ति का दमन मानसिक स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होता है।
- **आवश्यकताओं की उचित संतुष्टि का सिद्धान्त (Principle of proper utilisation of needs)** - हमारी कई शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आवश्यकताएं होती हैं। शारीरिक आवश्यकताओं में पानी, भोजन तथा ऑक्सीजन का स्थान सर्वोपरि है। जीवन के लिये इनका होना अत्यन्त आवश्यक है। कई सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं - जैसे प्रेम, संरक्षण, स्वीकृति, स्वतन्त्रता, आत्म-वास्तवीकरण, आत्म-निर्भरता, समूह-जीवन आदि - हमारी वृद्धि, विकास तथा प्रसन्न जीवन-यापन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति का स्तर हमारे मानसिक स्वास्थ्य को बहुत प्रभावित करता है।
- **स्व समाजीकरण का सिद्धान्त (Principle of socialising the self)** - अपने आप का समाजीकरण अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है। अत: मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिये व्यक्ति का उचित सामाजीकरण होना चाहिए। उस अपने स्वास्थ्य तथा दूसरों के साथ समायोजन स्थापित करना चाहिए। उसे समाज सेवा के कार्यों में संलग्न रहना चाहिए।
- **दूसरों को समझने का सिद्धान्त (Principle of understanding others)** - व्यक्ति को केवल अपने आप को ही नहीं बल्कि दूसरों को भी समझना चाहिए। उसे दूसरों की रुचियों, योग्यताओं, दृष्टिकोणों, आवश्यकताओं, स्वभावों, शक्तियों तथा सीमाओं को अच्छी तरह समझना चाहिए।
- **दूसरों को स्वीकारने तथा सम्मान करने का सिद्धान्त (Accepting and resections individualities)** - आत्म-स्वीकृति का विस्तार परस्वीकृति में होता है। दूसरों को स्वीकारने के लिए वस्तु पाकर तथा सहनशीलता की आवश्यकता होती है। परस्वीकृति मे सामाजिक समायोजन निहित है। यह स्वीकारात्मक स्थिति मानसिक स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त आवश्यक है।
- **कार्य-संसार के साथ समायोजन का सिद्धान्त (Principle of adjustment of the world of work)** - कार्य-संसार के साथ उचित समायोजन मानसिक स्वास्थ्य के लिए सहायक होता है। अपने कार्य एवं व्यवसाय से समायोजन स्थापित न करने वाला व्यक्ति तनावों, चिन्ताओं, हताशाओं तथा कई समस्याओं का शिकार हो जाता है। व्यक्ति का अपने कार्य-संसार से स्वीकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होना चाहिए।
- **जीवन के दबावों का सामना करने का सिद्धान्त (Principle of facing he stress and strains)** - हमें जीवन में कई उतार चढ़ाव देखने होते हैं। जीवन में कई असफलताओं, कठिनाइयों, चुनौतियों, समस्याओं तथा संघर्षों का सामना करना होता है। अध्यापकों तथा माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों को इनका सामना साहस, उत्साह तथा परिश्रम से करना सिखायें। जीवन के दबावों को सहने का सिद्धान्त मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण में सहायक सिद्ध होता है।
- **सर्वशक्तिमान में विश्वास (Faith in Almighty)** - ईश्वर विश्वास सभी रोगों के लिये अचूक उपचार है और व्यक्ति को मानसिक तनावों एवं चिन्ताओं से मुक्त करता है। अत: ईश्वर-विश्वास का सिद्धान्त मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने तथा उस के विकास में सहायक सिद्ध होता है।

Scanned with CamScanner

## बिगड़े हुए मानसिक स्वास्थ्य के कारण
### (Causes of Bad Mental Health or Mental Hazards)–

1. **निर्धनता (Poverty)**-व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर निर्धनता का निषेधात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके प्रभाव के कुछ परिणाम ये हैं-

(i) **हीनभाव (Inferiority complex)** – निर्धनता के कारण बच्चों में हीनभाव आ जाता है। यह हीनभाव उसमें कई प्रकार की निराशाएं पैदा करता है और मानसिक स्वास्थ्य को नष्ट करता है।

(ii) **असुरक्षा की भावना (Fellings of insecurity)** – निर्धनता के कारण असुरक्षा की भावना पैदा होती है। यह भावना असंतुष्टि का कारण बनती है और असन्तुष्टि का मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

(iii) **आत्म-विश्वास की कमी (Leck of slef confidence)** – बुरी आर्थिक अवस्था के कारण कई बार बच्चे को असफलताओं का मुंह देखना पड़ता है। इस प्रकार उसमे आत्म-विश्वास की कमी हो जाती है जिसके कारण उसके मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

2. **सौतेली माता या सौतेले पिता का होना (Presence of step mother or step father)** – सौतेले बच्चों के प्रति सौतेले बाप या सौतेली माँ का व्यवहार ठीक नहीं होता। जब बच्चे को माता-पिता से उचित प्यार नहीं मिलता तो वह अपने आप को ठुकराया गया अनुभव करता है और इस प्रकार एक संवेगात्मक बोझ के नीचे दब जाता है। कई बार कुछ समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं जो मानसिक स्वास्थ्य की खराबी का कारण बन जाती है।

3. **माता-पिता का हद से अधिक प्यार (Over protection of parents)** – अधिकता सदा बुरी होती है और यह माता-पिता तथा बच्चों के समबन्ध में भी बुरी होती है। माता-पिता का बच्चे के प्रति हद से अधिक प्यार बच्चे के व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव डालता है। इस प्रकार के बच्चों में आत्म-विश्वास की भावना नहीं होती। वे सदा आश्रय की खोज करते है और जब उन्हें आश्रय नहीं मिलता तो वे अपने आप को असमर्थ पाते हैं। असमर्थता की भावना का किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है।

4. **बच्चों से भेद-भाव पूर्ण व्यवहार (Discriminatory treatment towards children)** – यह आम देखने में आता है कि माता-पिता एक बच्चे की बाकी बच्चों से अधिक प्यार करते हैं। दूसरे बच्चों का अपमान किया जाता है और उन्हें डांट दी जाती है। उन्हें स्नेह भी नहीं मिलता। भेद-भाव वाला व्यवहार बच्चों में ईर्ष्या, निराशा तथा असंतुलित व्यक्तित्व को जन्म दे सकता है।

5. **माता-पिता के बहुत ऊंचे आदर्श (Very high ideals of parents)** – कई बार माता-पिता बच्चों के सामने बहुत ऊंचे आदर्श रखते है। वे अपने बच्चों को आदेश देते हैं कि सिनेमा न जायें, ताश न खेलें, आवारा न फिरे तथा उपन्यास न पढ़े। जब ऐसे बच्चे देखते हैं कि दूसरे बच्चे उन्हें दिए गए आदेशो के विपरीत काम करते है तो आदर्श तथा वास्तविकता के बीच संघर्ष आरम्भ हो जाता है। इस मानसिक संघर्ष का उनके नाड़ी संस्थान पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है।

6. **खंडित घर (Broken homes)** – खंडित घरों के बच्चे मानसिक रूप से रोगी होते हैं। उन घरों, जहां पति-पत्नी अलग रहते हो तो या तलाक ले चुके हो या उनमें से एक की मृत्यु हो चुकी हो, के बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

7. **पड़ोस (Neighbourhood)** – यदि के घर के पास जुआरी, शराबी तथा वैश्यायें रहती हो तो बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर निषेधात्मक प्रभाव पड़ेगा।

8. **बुरी संगति (Bad companionship)** – यदि बच्चे के मित्र, साथी तथा सहपाठी कदाचारी या कुसमंजित हैं तो वह मानसिक तौर पर रोगी हो सकता है। जेब काटना, चोरी करना, शराब पीना, जुआ खेलना तथा लिंग सम्बन्धी अपराध बुरी संगति का परिणाम हैं।

9. **फिल्में (Films)** – यदि बच्चा ऐसी फिल्में देखता है जो घटिया प्रकार की हैं तो उसके व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

10. **स्कूल का प्रतिकूल वातावरण (Uncongenial school atmosphere)** – स्कूल का प्रतिकूल वातावरण मानसिक रोगों का एक मुख्य कारण है। इसमें निम्नलिखित बातें शामिल हैं –

- अध्यापक का सहानुभूति रहित तथा कठोर व्यवहार या कठोर अनुशासन।
- शिक्षा का अमनोवैज्ञानिक तथा अकुशल विधियां।
- घर के लिए बहुत अधिक कार्य।
- निराश तथा बे-मेल अध्यापक।
- कठिन कोर्स।
- मनोरंजन क्रियाओं का अभाव।
- स्कूल में बहुत अधिक मुकाबला।

बच्चों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के विकास की निम्नलिखित विधियां हैं :-

✦ **वे विधियां जिन्हें माता-पिता अपना सकते हैं (Methods which can be Adopted by Parents)**:–

1. सहानुभूतिपूर्ण तथा स्नेहपूर्ण व्यवहार (Sympathetic and affectionate attitude)
2. घर का अच्छा वातावरण (Congenial atmosphere in the home)
3. मनोविज्ञान तथा बच्चों के निर्देशन का ज्ञान (Knowledge of psychology and child guidance)
4. आदर्श पेश करना (Provide models)
5. न बहुत अधिक न बहुत कम रखवाली(No over-protection or under-protectio) –
6. अधिक जेब खर्च नहीं (No liberal pocket money)
7. परिवार नियोजन की विधियों का ज्ञान (Knowledge of methods of family planning)
8. बच्चों के मित्रों का ध्यान (Watch on children's friends)
9. अपने बच्चों को समझना और अन्य प्रतिबन्धक कदम उठाना (Understanding their childres and taking other preventive measures)
10. बच्चों की शिक्षा (Education of the children)

✦ **विद्यालय द्वारा अपनायी जा सकने वाली विधियां (Methods which can be adopted by school)**

1. छात्र-केन्द्रित शिक्षा (Pupil-centred education)
2. अनुकूल वातावरण (Congenial environment)
3. लोकतांत्रिक अनुशासन (Democratic discipline)
4. सह-पाठ्यान्तर क्रियायों का प्रबंध (Provision of co-curricular activities)
5. अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता (Freedom of expression)

Scanned with CamScanner

6. अध्यापक की भूमिका (Teacher's role)
   - व्यवहार का ज्ञान
   - सकारात्मक अभिवृत्ति
   - छात्रों में रुचि
   - मैत्री पूर्ण व्यवहार
   - पक्षपात रहित
   - स्वस्थ्य दार्शनिकता
   - आत्म-विश्वास का विकास
   - आलोचना नहीं
   - सामाजिक गुणों का विकास
   - सामाजिक वातावरण
7. मानव सम्बन्धों पर कक्षाएं (Classes in human relations)
8. शिक्षण की कुशल विधियां (Efficient methods of teaching)
9. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा (Health and physical education)
10. यौन शिक्षा (Sex education)
11. नैतिक शिक्षा (Moral education)
12. मानसिक स्वास्थ्य के लिए पठन (Reading for mental health)
13. सन्तुलित गृह कार्य (Balanced home assignment)
14. अच्छी आदतों का निर्माण (Formation of good habits)
15. अस्वस्थ प्रतिस्पर्धाओं को रोकना (Checking unhealthy)
16. निर्देशन (Guidance)

### मानसिक स्वास्थ्य के उद्देश्य (Aims of Mental Hygiene)–

✦ शेफर – व्यक्ति को अधिक पूर्ण, अधिक सुखी, सामंजस्यपूर्ण व प्रभावपूर्ण जीवन जीने में सहायता देना।

1. मानसिक रोगों व विकारों को दूर रखना। (संरक्षात्मक पहलू)
2. मानसिक (निरोधात्मक उद्देश्य) स्वास्थ्य की सुरक्षा व देखभाल करना।
3. मानसिक स्वास्थ्य का उपचार करना
4. मानसिक स्वास्थ्य को वातावरण के अनुकूल करवाना।
5. अपनी अन्त: शक्तियों से अनुभव कराना।

### मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के तत्त्व (Elements of Mental Hygiene)

✦ क्रो एण्ड क्रो :- स्वस्थ व्यक्ति का विकास, मानसिक अव्यवस्थाओं की रोकथाम, संरक्षण व रोगों को दूर करना।

1. शारीरिक स्वास्थ्य
2. बौद्धिक रूप से स्वस्थ (Intellctual Health)
3. संवेगात्मक रूप से स्वस्थ
4. स्वस्थ रुचियाँ व अभिवृतियाँ
5. स्वस्थ वातावरण

## बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारण–

1. वंशानुक्रम – मानसिक निर्बलता, अस्वास्थ्य व स्नायु रोग
2. पारिवारिक वातावरण – परिवार का विघटन, कठोर, अनुशासन, निर्धनता, संघर्ष, माता-पिता का व्यवहार
3. सामाजिक वातावरण – समाज के झगड़े, जातिवाद, वर्ग-संघर्ष, ऊँच-नीच, सुरक्षा का अभाव
4. विद्यालय का वातावरण – दोषपूर्ण वातावरण पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, परीक्षा प्रणाली, शिक्षक का व्यवहार
5. शारीरिक दोष या रोग –

✦ कुप्पूस्वामी – शारीरिक दोष बालक में हीनता की भावना व समायोजन कठिनाई पैदा करती है।

✦ प्लान्ट ने पुस्तक Personality And Cultural Pattern में परिवार की निर्धनता को उत्तरदायी माना।

✦ फ्रेंडसन – अच्छा परिवार जिसके माता-पिता में सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध होता है, जिसमें आनन्द व स्वतंत्रता का वातावरण होता है बालक के मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति में योगदान देता है।

### शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारण

1. कम वेतन
2. पद की सुरक्षा ना मिलना।
3. निरंकुश प्रशासन – परेशान करना।
4. जातीय विद्यालय – भेदभाव करना।
5. सहायक सामग्री का अभाव
6. अनियमित वेतन – समय पर ना मिलना।
7. अपरिपक्व बालकों से सम्पर्क – मंद बुद्धि बालकों से सम्पर्क
8. अतिरिक्त कार्यभार
9. शिक्षकों का आपसी संघर्ष
10. मनोरंजन के साधनों का अभाव
11. बाहरी कार्यों पर प्रतिबंध
12. अस्वस्थ निवास स्थान

### बालक के मानसिक स्वास्थ्य में उन्नति करने वाले–

1. समाज का उत्तम वातावरण, आवश्यकताओं की पूर्ति
2. विद्यालय शिक्षक का अच्छा व्यवहार, लोकतांत्रिक अनुशासन, रुचिपूर्ण पाठ्यक्रम, अल्प गृहकार्य, पाठ्य सहगामी क्रिया, निर्देशन व परामर्श।
3. परिवार का उत्तम वातावरण, सहयोग व प्रेम व्यवहार, व्यक्तित्व का सम्मान, आवश्यकताओं की पूर्ति, अवसर प्रदान करना।

### मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षक के लक्षण–

1. आत्मचेतना – अपने गुण व कमियों की समझ।
2. आत्मस्वीकृति – गुण व कमियों की समझ।
3. स्वाभाविकता का प्रदर्शन , उत्साहपूर्ण, औचित्यपूर्ण व्यवहार।
4. वैज्ञानिक व तार्किक सोच का होना।
5. सहयोगी व्यवहार, पर्यावरण का ज्ञान
6. दूसरों की आलोचना नहीं करना।
7. शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होना।
8. संतुष्टि की भावना।
9. संवेगात्मक रूप से परिपक्व
10. स्वस्थ जीवन दर्शन–
    - निष्पक्षता
    - उत्तरदायित्व की चेतना
    - विनोद का भाव
    - विषयवस्तु में प्रवीणता
    - पाठयोत्तर क्रिया में रूचि

Scanned with CamScanner

- प्रभावशाली संचार
- व्यवसाय के प्रति सम्मान
- समसामयिकता

## शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य के उन्नति वाले कारक–

1. कार्यभार में कमी
2. पद की सुरक्षा
3. वेतन वृद्धि व नियमित वेतन
4. शारीरिक स्वास्थ्य व मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा
5. विद्यालय का जनतांत्रिक वातावरण
6. सामाजिक सम्मान की प्राप्ति
7. शिक्षक संघों का गठन किया जाये
8. शिक्षण सहायक सामग्री
9. मनोरंजन साधनों की व्यवस्था
10. शिक्षण दशाओं में सुधार हो

## मानसिक स्वास्थ्य की विधियाँ (Methods of Mental Health)

1. **निदानात्मक विधियाँ :-**
   - प्रश्नावली
   - व्यक्ति इतिहास विधि
   - उपलब्धि परीक्षण
   - निरीक्षण विधि
   - साक्षात्कार
   - बुद्धि परीक्षण
   - अनौपचारिक विवरण
2. **उपचारात्मक विधियाँ :-**
   - निर्देशन
   - परामर्श
   - मनोविश्लेषण विधि
   - मनोभिनय विधि
   - मनोचिकित्सा विधि
   - संगीत चिकित्सा
   - जल चिकित्सा
   - समूह चिकित्सा
   - शल्य चिकित्सा

## विधियाँ-असामान्य व्यवहार–

1. **अनुदैर्ध्य विधि (Longitudinal Method)** **अग्रदर्शी विधि (Prospective Method)** भी कहा जाता है इसमें व्यक्तियों के एक ही समूह का अध्ययन विभिन्न अवसरों पर एक पूर्वनिर्धारित समय तक किया जाता है।

   असमान्य व्यवहार का अध्ययन में दो डिजाइन का प्रयोग –

   ✦ **वंशांगत उच्च जोखिम डिजाइन** – मेडनिक, जॉन, स्कूसिंग ने अध्ययन किया।

   ✦ **व्यवहारपरक उच्च जोखिम डिजाइन** – चैपमैन ने प्रयोग किया।
2. **अनुरूप/तुल्यरूप प्रयोग** – असामान्य व्यवहार अध्ययन में उपयोगी। इसमें प्रयोग के समान या तुल्य परिस्थिति कायम करके असामान्य व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
3. **एकाकी केस प्रयोग शोध विधि** – एक ही व्यक्ति का अध्ययन करके किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है।
4. **सर्वे विधि** – इसमें निर्धारित जनसंख्या से प्रतिदर्श का चयन करके अध्ययन।
5. **अनुप्रस्थ काट विधि/क्रॉस वर्गीय विधि** – इसमें विभिन्न चयनित व्यक्तियों की तुलना एक समय में एक साथ की जाती है। यह अनुदैर्ध्य विधि के विपरीत है। इसमें प्रसिद्ध अध्ययन स्कोफिल्ड व बालियन ने किया।
6. **सहसम्बन्धात्मक विधि** – इसमें दो कारकों के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करके असामान्य व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
7. प्रयोगात्मक विधि
8. प्रेक्षण विधि

## मानसिक स्वास्थ्य के प्रमुख मॉडल–

1. **नैदानिक मॉडल** – इस मॉडल में व्यक्ति विशेष के शारीरिक व मनोवैज्ञानिक स्थिति के अनुसार ईलाज किया जाता है इसमें दो मॉडल आते हैं।

   ✦ **अभिरक्षात्मक मॉडल (Custodial Mode)** – इस मॉडल का केन्द्रीय बिन्दु रोगी व उसकी मनोचिकित्सीय अवस्था होती है इसमें रोगी को मानसिक अस्पताल में उपचार मेडिकल निर्देशों के अनुसार होता है व सुरक्षित निगरानी भी की जाती है। इसमें मनोचिकित्सा को महत्वहीन माना जाता है।

   ✦ **चिकित्सीय मॉडल (Therapeutic Model)** – इसमें केन्द्र बिन्दु रोगी से हटकर व्यक्ति होता है इसमें रोगी की उत्पत्ति कारण मनोजनिक होता है व उपचार मनोचिकित्सा की विधि से होता है इसमें रोगी को रोगी ना मानकर व्यक्ति के रूप में देखा जाता है जिसे मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।
2. **सामुदायिक मॉडल (Community Mode)** – इसमें रोग के उपचार व निदान का केन्द्र बिन्दु व्यक्ति विशेष से हटकर उसकी सामाजिक परिस्थिति हो जाती है। सामाजिक हालातों को ध्यान में रखकर उपचार व रोकथाम होती है। इस मॉडल में दो मॉडल आते हैं –

   ✦ **नैदानिक ध्रुव मॉडल (Clinical Pak Mode)** – इस मॉडल में रोगी के साथ सहानुभूति, स्नेह सहायता व स सामाजिक वातावरण के अनुसार चिकित्सा की जाती है। इस समुदायन्मुखी चिकित्सा में चिकित्सक रोगी के दिन प्रतिदिन की जिन्दगी व सामाजिक समस्याओं को महत्वपूर्ण मानकर चिकित्सा करता है।

   ✦ **जनस्वास्थ्य ध्रुव मॉडल (Public Health Pak model)** – इस मॉडल में व्यक्ति की समस्या की बजाय उन विशेष सामाजिक अवस्था की ओर ध्यान दिया जाता है जिनसे सम्पूर्ण समुदाय प्रभावित होता है। इसमें सामाजिक तनाव को कम किया जाता है जिसकी वजह से मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है।
3. **सामाजिक क्रिया मॉडल (Social action mode)** – इस मॉडल में यह माना जाता है सम्पूर्ण समाज क्षुब्ध या बीमार होता है ना की समाज का व्यक्ति।अत: सम्पूर्ण समाज में परिवर्तन करके मानसिक रोगों का उपचार किया जा सकता है। मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप या रोकथाम पूरे सामाजिक संस्थान में परिवर्तन लाकर की जा सकती है यह अभिरक्षात्मक मॉडल के विपरीत है।
4. **मनोगतिक मॉडल** – फ्रायड (सबसे प्राचीन व प्रसिद्ध मॉडल) मानव का व्यवहार आंतरिक मनोवैज्ञानिक शक्तियों में निर्धारित होता है जो अचेतन रूप में होती है इन शक्तियों के बीच अन्त:क्रिया के

Scanned with CamScanner

दौरान द्वन्द्व के फलस्वरूप असामान्य लक्षण उत्पन्न होती है।

फ्रायड - 3 केन्द्रीय शक्ति - (1) मूल प्रवृत्ति (2) अंतर्नोद (3) इदम्, अहम् व परम अहम् जो व्यक्तित्व का निर्धारण करती है।

5. **व्यवहारात्मक मॉडल** -

व्यवहार ही सामान्य व असामान्य लक्षण को निर्धारित करता है इसमें प्राचीन अनुबन्धन, क्रिया प्रसूत अनुबन्धन, सामाजिक अधिगम को असामान्य या सामान्य व्यवहार के लिए उत्तरदायी माना गया है।

6. **संज्ञानात्मक मॉडल (Cognitive Model)** -

यह मॉडल अपसामान्य व्यवहार का कारण संज्ञानात्मक समस्याओं को मानता है।

7. **मानवतावादी अस्तित्वपरक मॉडल (Humanistic Existential)**

श्रेष्ठता, अभिव्यक्ति, आवश्यकता अस्तित्व सिद्धि को अपसामान्य व्यवहार को प्रभावित करना बताया है।

8. **सामाजिक सांस्कृतिक मॉडल (Socio-cultural) - वायगोत्सकी**

सामाजिक व सांस्कृतिक कारक जैसे - युद्ध, हिंसा, पूर्वाग्रह, जातिवाद, बेरोजगारी, अपसामान्य व्यवहार के कारक हैं।

9. **रोगोन्मुखता दबाव मॉडल (Diathesis Stress Model)** -

रोग व दबाव कारक है।

## मनोवैज्ञानिक विकार/असामान्य व्यवहार/रोग-

1. मनोवैज्ञानिक विकारों का वर्गीकरण अमेरीकी मनोरोग संघ (डी.एस.एम. IV) 'डायग्नोस्टिक एण्ड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिसऑर्डर' द्वारा जारी किये हैं।
2. भारत में ICD 10 - व्यवहारात्मक व मानसिक विकारों का वर्गीकरण जारी करता है।

## मनोवैज्ञानिक विकार/अपसामान्य व्यवहार के कारक-

1. **जैविक कारक ( जैविक मॉडल ) (Biological)**- दोषपूर्ण जीन्स, हार्मोन का असंतुलन, कुपोषण, चोट तंत्रिका संचारक की अपसामान्य क्रिया। आनुवांशिक कारक की वजह से मनोविदालिता, मानसिक मंदता आदि उत्पन्न हो जाना।
2. **मनोवैज्ञानिक कारक** - प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारक जैसे माँ से अलग होना, प्रेम करना, माता-पिता व बच्चे के मध्य अच्छे सम्बन्धों का ना होना, पारिवारिक संरचना (झगड़े) इत्यादि प्रभावित करते हैं।

## मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सा-

1. **अत: स्फोटक चिकित्सा (Implosive Therapy)** - असामान्य, अतार्किक भय व परिघर अनुक्रिया को दूर करने के लिए प्रयोग होता है।
2. **क्रमिक विसंवेदीकरण (Systematic desensitisation)** - पावलॉव के अनुबंधन से संबंधित है यह व्यवहार चिकित्सा का वह रूप है जिसका उपयोग भयग्रस्त रोगी की दुश्चिन्ता अनुक्रिया को प्रतिअनुबंधन के माध्यम से कम किया जाता है।
3. **विरुचि चिकित्सा (Aversion therapy)** - हानिकारक व अवांछनीय आदतों को छुड़ाने के लिए विरूचि चिकित्सा का उपयोग किया जाता है।
4. **आग्रहिता प्रशिक्षण (Assertiveness)** - शर्मिले स्वभाव व जिनको अन्त: क्रियात्मक करने में कठिनाई महसूस होती है उन्हें यह प्रशिक्षण दिया जाता है।
5. **जैव प्रतिप्राप्ति (Biofeed back)** - मानसिक अशांति वाले, श्वास गति का बढ़ना, रक्तचाप का बढ़ना, भूख कम होना, ऐसे रोगियों के लिए प्रयोग होता है।

## प्रमुख मनोवैज्ञानिक विकार/रोग

### 1. दुश्चिन्ता (Anxity)-

इस विकार में निम्न रोग आते हैं-

- **दुर्भीति (Phobia)** - किसी विशिष्ट वस्तु, दूसरों के साथ अन्त:क्रिया तथा अपरिचित स्थितियों के प्रति अविवेकी भय का होना। इसके तीन प्रकार हैं -
  - **विशिष्ट (Specific)** - विशिष्ट जानवर, स्थान के प्रतिमान
  - **सामाजिक (Social)** - दूसरों के साथ बातचीत करने के भय
  - **विवृत्ति (Agoraphobia)** - अपरिचित स्थान से भय
- **मनोग्रसित बाध्यता विकार (Obsessive Conpulsive disorder)** - विशेष क्रिया को बार-बार करना, बार-बार हाथ धोना।
- **मनोग्रसित विकार (Obsessive Behaviour)** - व्यक्ति अपने विचारों को अप्रिय व शर्मनाक समझना।
- **अभिघातज दबाव विकार (Post Traumatic Stress disorder (PTSD))** - प्राकृतिक आपदा या इन्द्र घटना के फलस्वरूप बार-बार स्वप्न का आना, व सांवेगिक शून्यता की स्थिति।

### 2. विच्छेदी विकार-

चेतन में अचानक व अस्थाई परिवर्तन जो कष्ट कर अनुभवों को रोक देता है। इसमें निम्न रोग आते हैं -

- **व्यक्तित्व लोप (Depersonalization)** - स्वप्न अवस्था जिसमें व्यक्ति को स्व व वास्तविकता दोनों से अलग होने की अनुभूति।
- **विच्छेदी स्मृतिलोप (Dissociative Amnesia)** - अतीत तथा कुछ विशिष्ट घटनाओं को याद नहीं कर पाना वैसे स्मृति ठीक होती है।
- **विच्छेदी आत्मविस्मृति (Dissociative Fugue)** - घर व कार्य स्थान से अप्रत्याशित यात्रा, एक नयी पहचान की अवधारणा व पुरानी पहचान को याद न कर पाना।
- **विच्छेदी पहचान विकार (Dissociative Identify Disorder)/ ( बहु व्यक्तित्व विकार )** - व्यक्ति दो या दो से अधिक, भिन्न और वैषम्यात्मक व्यक्तित्व को प्रदर्शित करना जो शारीरिक दुर्बलता से युक्त होता है।

### 3. भाव दशा विकार-

इसमे तीन विकार आते है -

- **अवसाद (Depression)** - भावदशा विकार में आता है इसमें महत्वपूर्ण हानि के बाद की स्थिति जिसमें क्षोभ मृत्यु, आत्महत्या का विचार, निकम्मेपन की भावना निंद्रा की समस्या आदि।
- **उन्माद (Mania)** - भाव विकार में आता है यह पीड़ित व्यक्ति अत्यधिक उल्लासी, अत्यधिक सक्रिय, अत्यधिक बोलने वाले व अस्थिर होते हैं।
- **द्विध्रुवीय भावदशा विकार (Bipolar Mood Disorder)** - भावदशा विकार जिसमें उन्माद व अवसाद दोनों साथ होते हैं।

### 4. मनोविदालिता (Schizophrenia)-

इसमें चिंतन प्रक्रिया में बाधा, विचित्र प्रत्यक्षण, अस्वाभाविक सांवेगिक स्थितियाँ, दुर्बलता इत्यादि से संबंधित विकार आते हैं।

Scanned with CamScanner

### मनोविदालिता के लक्षण/प्रकार–

1. **सकारात्मक लक्षण** – विकृत अतिशयता व विलक्षणता का बढ़ना।

- **भ्रमशक्ति (Delusions)** – गलत विश्वास जिसका वास्तविकता से सम्बन्ध नहीं होता है इसके निम्न प्रकार होते हैं। इसमें –
- **उत्पीड़न भ्रमशक्ति** – कोई मेरे खिलाफ जासूसी कर रहता है,
- **संदर्भ भ्रमशक्ति** – दूसरों के कार्यों में व्यक्तिगत अर्थ जोड़ देना,
- **अत्यंहमन्यता भ्रमशक्ति** – अपने आप बहुत सारी शक्तियों से संपन्न मानना व नियंत्रण भ्रमशक्ति जिसमें मेरे विचार, भावना व क्रिया दूसरों के द्वारा नियंत्रित की जा रही है।

2. **औपचारिक चिंतन विकार (Formal Thought Disorder)** – तर्कहीन व विचित्र बोलना।
3. **विभ्रांति (Hallucination)** – बिना बाह्य उद्दीपक के प्रत्यक्षण करना इसमें (i) श्रवण विभ्रांति – ऐसी आवाज सुनना जो उससे संबंधित हो, (ii) स्पर्शी विभ्रांति-जलन, (iii) दैहिक विभ्रांति शरीर में सांप का रेंगना, (iv) दृष्टि विभ्रांति – रंगों का गलत प्रत्यक्षण, (v) रस संवेदी विभ्रांति (खाने पीने की वस्तुओं का विचित्र स्वाद) (vi) घ्राण विभ्रांति –(धुएँ व जहर की गंध)
2. **नकारात्मक लक्षण (Negative Sympton) :-** इसमें वाक् अयोग्यता कुंठित भाव, इच्छाशक्ति का ह्रास व सामाजिक विनिवर्तन है।

- **अलोगिया (Alogia)** – वाक् अयोग्यता, बोलने में समस्या।
- **कैटाटोनिया (Catatonia)** – विचित्र मुख्य विकृति, मुखमुद्रा व गति में विचित्रता पायी जाती है। इसमें कैटाटोनिक जड़िया (रोगी गतिहीन व चुप), केटाटोनिक दृढ़ता – एक मुद्रा में रहना, कैटाटोनिक स्थिति – विचित्र उटपटांग मुद्रा को लम्बे समय तक प्रदर्शित करना।

## 5. व्यवहारात्मक विकार व विकासात्मक विकार (बाल्यवस्था में उत्पन्न)–

1. **अवधान न्यूनता अतिक्रिया विकार (Attention deficit Hyper-activity disorder)** – बाल्यवस्था से प्रारम्भ होता। यह बहि:करण विकार में आता है। इसमें लक्षण तीन होते हैं –

- **अनवधान (Inattention)** – ध्यान एक स्थान या वस्तु पर लगा नहीं पाना। जैसे – बालक सुनता नहीं है, भुलक्कड़ है।
- **आवेगशीलता (Impulsive)** – तात्कालिक प्रतिक्रिया पर नियंत्रण नहीं, प्रतीक्षा नहीं कर पाना व कार्य करने से पहले सोच नहीं पाता।
- **अतिक्रिया (Hyperactivity)** – शांत नहीं बैठ पाना, उपद्रव करना, निरूद्देश्य दौड़ना, शरारत करना।

2. **विरुद्धक अवज्ञाकारी (Oppositional Defiant Disorder)** – हठ या जिद प्रदर्शित करना यह बाल्यवस्था का विकार है। चिड़चिड़े, अवज्ञाकारी व शत्रुतापूर्ण व्यवहार। जैसे – शाब्दिक आक्रामकता, शारीरिक आक्रामकता, शत्रुतापूर्ण आक्रामकता, अग्रलक्ष्मी आक्रामकता (बिना उकसाये भी डराना)
3. **वियोगज दुश्चिन्ता विकार (Separation Anxiety Disorder)**

- आंतरिक विकार में आता है बाल्यवस्था में उत्पन्न।
- माता-पिता से अलग होने पर अतिशय भय का भाव।
- अवसाद भी आंतरिक विकार में आता है।

### 6. व्यापक विकासात्मक विकार–

1. **ऑटिज्म (Autism) स्वालीनता विकार** –

- सामाजिक अन्त:क्रिया, संप्रेषण कौशल नहीं कर पाना, सीमित अभिरुचियाँ व 70 प्रतिशत बालक मानसिक मंद होते हैं।
- दूसरों से मित्रवत् ना हो पाना, भावनाओं के प्रति क्रिया ना करना, अनुभव व संवेगों को व्यक्त नहीं करना, भाषा समस्या।
- व्यवहार पुनरावर्ती – वस्तुओं को एक लाईन से लगाना, शरीर को बार-बार हिलाना, दीवार से सर पटकना इत्यादि। हाल ही में ऑटिज्म ग्रसित 22 बच्चों की फुटबाल टीम का गठन किया गया है।

2. **भोजन विकार** – (1) क्षुधा अभाव (Anorexia Nervosa) भुखा रखना। (2) क्षुधातिशयता (Bulimia Nervosa) – बहुत मात्रा में खाना।

### महत्त्वपूर्ण-दुर्भतियों–

1. ऐरोफोबिया – हवा
2. पायरोफोबिया – आग
3. आकलोफोबिया – भीड़
4. हाइड्रोफोबिया – पानी
5. स्क्रोफोबिया – ऊँचाई
6. पेथोफोबिया – रोग
7. क्लाउस्ट्रफोबिया – बंद जंगर से

### मानसिक स्वास्थ्य की उपयोगिता–

1. शारीरिक विकास में उपयोगी
2. मानसिक विकास में उपयोगी
3. सामाजिक विकास में उपयोगी
4. संवेगात्मक विकास में उपयोगी
5. नैतिक विकास में उपयोगी
6. लक्ष्य प्राप्ति विकास में उपयोगी
7. व्यक्ति विकास में उपयोगी
8. योग्यताओं के विकास में उपयोगी
9. मानसिक अस्वस्थता के बचाव में सहायक
10. समायोजन स्थापित में सहायक
11. समाज की प्रगति में सहायक

### मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के कार्य–

1. **निरोधात्मक (Preventive)** – मानसिक विकारों व कुसमायोजन के रोकथाम के उपाय बताना।
2. **संरक्षात्मक (Preservative)**–व्यक्ति व समूह के मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण में सहायता करना।
   जैसे – सकारात्मक चिन्तन, क्षमताओं का विकास, आत्मनिर्भरता, सवेगात्मक परिपक्वता का विकास, स्वस्थ मानव संसाधनों का विकास
3. **उपचारात्मक कार्य (Curative)** –चिकित्सा, पुनर्समायोजन, निर्देशन आदि मानसिक रोगों को दूर करने के उपाय।
4. **सुसंगत कार्य (Harmonious) :-** व्यक्ति को वातावरण के अनुसार समायोजन स्थापित करने में सहायता करना।
   **विशेष :-**

✦ **डी.बी. क्लेन :-** मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मन को नीरोग तथा विकासशील रखने के साधनों व विधियों का अध्ययन है।

Scanned with CamScanner

- **फ्रेंडसन :-** मानसिक स्वास्थ्य का विकास शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य व प्रभावशाली अधिगम की शर्त दोनों है।

**मानसिक दुर्बलता की श्रेणियाँ–**

1. 20 से कम – अति गंभीर मानसिक दुर्बलता
2. 20 – 35 – गंभीर मानसिक दुर्बलता
3. 35 – 50 – औसत मानसिक दुर्बलता
4. 50 – 70 – साधारण मानसिक दुर्बलता

- व्यक्तित्व विभाजन में मनोविदालिता शब्द का प्रयोग किया।
- मनोगत्यात्मक चिकित्सा के प्रतिपादक – फ्रायड
- व्यवहार चिकित्सा के प्रतिपादक – ओल्प
- अंगुली पकड़ कर हाथ पकड़ना – कौनसी सामाजिक तकलीफ है – अनुपालन
- खेल मनोविज्ञान के पिता – कोलमेन ग्रिफिथ

**नोट :-** भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य ए.वी. शाह ने किया।

**मानसिक स्वास्थ्य ( विशेष )–**

- आन्दोलन का प्रारम्भ – महिला शिक्षिका – डोराथियाडिक्स (अमेरिका) 19वीं शताब्दी
- विहिहेल्म ग्रिसिंगर – मानसिक रोगों का कारण दैहिक
- ऐमिल क्रेपलिन (जर्मनी) – मानसिक रोगों का वर्गीकरण
- फ्रायड – मानसिक रोगों हेतु मुक्त साहचर्य विधि व स्वप्न विश्लेषण पुस्तक – दी इन्टरप्रेटेशन ऑफ ड्रीम
- एडोल्फ मेयर – प्रतिपादक – मनोजैविक दृष्टिकोण दिया। जन्म – स्विट्रलैण्ड बाद में अमेरिका बस गये।
- मानसिक रोगों का कारण मानसिक, शारीरिक व सामाजिक वातावरण को माना।

**असामान्य व्यवहार की विशेषताएँ–**

1. समाज विरोधी व्यवहार
2. मानसिक असंतुलन
3. अपर्याप्त समायोजन
4. सूझपूर्ण व्यवहार की कमी
5. विघटित व्यक्तित्व
6. आत्मज्ञान व आत्मसम्मान की कमी
7. असुरक्षा की भावना
8. संवेगात्मक अपरिपक्वता
9. तनाव व असंवेदनशीलता

## मार्नसिक स्वास्थ्य चिकित्सा मनोसामाजिक

**मनोसामाजिक सिद्धान्त–**

असामान्य व्यवहार की व्याख्या इसमें कोई सिद्धान्त/विचारधारा शामिल है।

**1. मनोगतिकी विचारधारा (Psychodynanic)**

सिगमण्ड फ्रायड मूलतः प्रतिपादक बाद में संशोधन इसके निम्न भाग है–

- **क्लासिकी मनोविश्लेषण सिद्धान्त –** फ्रायड द्वारा प्रतिपादित इसमें उपाह, अहम व पराहं (Id, Ego, Super Ego) मनोलैंगिक विकास की अवस्था, चिंता के 3 प्रकार, रक्षा प्रक्रम पर बल दिया जाता है।
- **नया मनोगतिकी संदर्भ –** अन्ना फ्रायड, युंग व अन्य – यह उपागम Id के बजाय Ego को कार्य पालक मानता है।
- **मनोवैश्लेषिक चिकित्सा –** फ्रायड के मौलिक चिकित्सा पद्धति के अलावा इसमें केरोन हार्नी, सुल्लीभान, इरिक्सन हार्टमैन के विचार शामिल है।

**विशेष :-** व्यक्तित्व कुसमायोजन व समायोजन में आंरभिक बाल्यवस्था की अनुभूतियाँ महत्वपूर्ण होती है।

**2. व्यवहारवादी विचारधारा –**

वाटसन द्वारा प्रतिपादित विकसित – स्कीनर, पॉवलॉव, थार्नडाईक ने आगे बढ़ाया।

- **पॉवलॉव का क्लासिकी – अनुबंधन, प्रमुख चिकित्सा विधि – फ्लडिंग (Flooding) –** रोगी को लगातार उस स्थान पर रखना जिससे भय उत्पन्न होता है ऐसा करने से धीरे-धीरे भय समाप्त हो जाता है।
- **अन्तः स्फोटात्मक चिकित्सा (Implosive Theory) –** रोगी के डर या चिंता उत्पन्न करने वाली वास्तविक परिस्थिति में न रखकर केवल उसके बारे में कल्पना करने के लिए कहा जाता है।
- **क्रमबद्ध संवेदीकरण (Systematic Desensitization) –** जोसेफ वोल्फ ने विकसित किया। इसमें रोगी उत्तरोत्तर अधिक चिन्ता करने वाले दृश्यों के बारे में कल्पना करना व उस डर से असंगत अनुक्रिया भी करता है इससे धीरे-धीरे CS चिंता का विलोपन हो जाता है।
- **विमुखी अनुबन्धन (Aversive Conditioning) –** अवांछित अनुक्रिया के विमुखी परिणाम के साथ पुनरावृत्त साहचर्य से है।
- **स्कीनर क्रियाप्रसूत की चिकित्सा विधि :-**
- **निषेधात्मक प्रबलन (Negetive Reinforcement) –** खतरनाक उद्दीपकों से दूर भागना सीखना।
- **सकारात्मक प्रबलन –** सही कार्य पर पुरस्कार देना ।
- **टोकन इकोनोमी ( अर्थव्यवस्था ) –** व्यवहार समस्याओं वाले लोगों को वांछित व्यवहार करने पर पुरस्कार के रूप में टोकन देना। ये टोकन संग्रहीत कर किसी पुरस्कार से उनका विनिमय किया जाता है। जैसे रोगी को बाहर घुमाना, बच्चों को होटल में खाना खिलाना
- **अन्योन्य प्रावरोध का सिद्धान्त (Principle of reciprocal inhibition) :-** दो विरोधी शक्तियों की एक ही समय उपस्थिति कमजोर शक्ति को अवरूद्ध करती है।
- **प्रतिस्थानिक अधिगम –** दूसरों का निरीक्षण करते हुये सीखना। अन्य के टाईम आऊट, प्रसंभाव्यता अनुबन्ध अनुक्रिया लागत आदि।

**3. संज्ञानात्मक चिकित्सा/विचारधारा-**

- यह विचारधारा प्रत्यक्षण, स्मृति, चिंतन तर्कणा के आधार व्यवहार की व्यवस्था।
- यह विचारधारा असामान्य व्यवहार की व्याख्या में 3 कारक पर बल देती है।

(i) **संज्ञानात्मक मूल्यांकन –** इसके अनुसार 5 संज्ञानात्मक चर क्षमता, कुटसंकेतन, प्रत्याशा, मूल्य व योजना के कारण व्यक्ति घटना की व्याख्या अलग-अलग ढ़ंग से करता है।

(ii) **आत्म पुनर्बलन** को महत्वपूर्ण माना है।

(iii) **सूचना संसाधन (Information Processing) –** इसमे 3 क्षेत्र शामिल है – (1) अवधान (2) स्मृति (3) संगठनात्मक संरचना

Scanned with CamScanner

- ✦ संगठनात्मक संरचना :- तीन प्रकार की होती है :-
- स्कीमा - सूचनाओं की संगठित संरचना होती है। इसमें आत्म स्कीमा सबसे महत्त्वपूर्ण होती है व्यक्ति के बारे में सूचनाओं का संगठन।
- विश्वास - गलत विश्वास/पराजित विश्वास असामान्य व्यवहार का कारण
- जिंदगी का कार्य - वैसा कार्य जिसे व्यक्ति अपने लिए निर्धारित करता है।
- ✦ संज्ञानात्मक चिकित्सा :-
- संवेग तर्क चिकित्सा - अल्बर्ट एलिस - यह व्यक्ति के व्यवहार कुसमायोजन का कारण अतर्कसंगत विश्वास को मानता है।
- आटेन बेक ने अप्रक्रियात्मक संज्ञानात्मक संरचना के उल्लेख में 3 संज्ञानात्मक विकृति बतायी है -

(i) अतिरंजन (Magnification) - छोटी/साधारण घटना को ज्यादा महत्व देकर सोचना।

(ii) अतिसामान्यीकरण (Cover Generalization) - इसमें साधारण सबूत के आधार पर बड़ा निष्कर्ष निकाल लेना।

(i) चयनात्मक अमूर्तीकरण (Selective Obstraction) - विशेष सबूतों के अलावा महत्त्वपूर्ण सबूतों की उपेक्षा करना।

### 4. मानवतावादी अस्तित्वात्मक चिकित्सा-

- ✦ प्रारम्भ 1950–1960 दशक में कार्ल रोजर्स व मैस्लो। मानवतावादी व अस्तित्ववादी में शेलो में, विक्टर फ्रैक्ल व आर डी लॉग प्रमुख है।

1. मानवतावादी व्याख्या :-

- आत्मसिद्धि पर बल - व्यक्ति द्वारा अपनी अंत:शक्ति को जानने व पूरा करने की प्रक्रिया आत्मसिद्धि है।
- रोजर्स द्वारा असामान्य व्यवहार का उपचार करने में विशेष चिकित्सा विधि का प्रतिपादन किया गया जिसे (सेवार्थी केन्द्रित) 'क्लायट-केन्द्रित चिकित्सा' कहते हैं।

2. अस्तित्ववादी व्याख्या :- इसमें व्यक्ति का संसार में होने व अन्य लोगों के साथ उसकी सतत अनुक्रिया को महत्त्वपूर्ण माना जाता है-

- विक्टर फ्रेक्ल - असामान्यता के उपचार के लिए लोग चिकित्सा (उदबोधक चिकित्सा) प्रतिपादन किया। इसमें चिकित्सक रोगी को उसके अस्तित्व के उत्तरदायित्व से सामना कराता है। आज व अभी पर जोर।
- गैस्टाल्ट चिकित्सा - फ्रेडरिक व लारा पर्ल्स - आत्मजागरूकता व आत्मस्वीकृति के स्तर को बढ़ाना।

### 5. अन्तर्वैयक्ति चिकित्सा-

- सामाजिक अन्त:क्रिया पर बल देता है। एडलर, इरिक फ्रोम, केरोन हार्नी, इरिक इरिक्सन, सुल्लीवान। यह मॉडल असामान्य व्यवहार को दूर करने के सम्बन्धों को अच्छा करना, अपअनुकूली व्यवहार पर बल देता है।

### 6. सामाजिक सांस्कृतिक मॉडल-

- असामान्य व्यवहार की व्याख्या सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण के पड़ने वाले प्रभाव के रूप में करता है।
- रूथ बेनडिक्ट, कॉडिनर, मार्गरेट मीड, लिन्टन, फ्रैंच वोउस प्रमुख हैं।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ **सम्पूर्ण व्यक्तित्व की पूरी एवं सन्तुलित क्रियाशीलता को मानसिक स्वास्थ्य कहते हैं, परिभाषा किसके द्वारा दी गई ?** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) जोन्स (B) हेडफील्ड

(C) ड्रेवर (D) बीयर्स **(B)**

❖ **बालक का मानसिक स्वास्थ्य निर्भर करता है-** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) परिवार पर (B) विद्यालय पर

(C) समुदाय पर (D) उपर्युक्त सभी **(D)**

❖ **एक मानसिक सशक्त व्यक्ति निम्नलिखित में से कौन सा व्यवहार प्रदर्शित करेगा ?** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) दूसरों की गलतियों को बताना।

(B) स्वयं की गलतियों को सुधारने के तरीके ढूँढना।

(C) दूसरों की कमजोरियाँ ढूँढना। (D) इनमें से कोई नहीं **(B)**

❖ **एक मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति हर नई स्थिति समझता है। मानसिक स्वस्थ व्यक्ति-** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) अच्छी प्रकार से समायोजित हो सकता है।

(B) कहीं भी समायोजित नहीं हो पाता।

(C) शान्तिप्रद जीवन नहीं जी पाता।

(D) सही व्यवहार नहीं करता। **(A)**

❖ **मानसिक स्वास्थ्य के द्वारा एक व्यक्ति खुश तथा स्वस्थ रहता है, क्योंकि-** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) मानसिक तनाव दूर हो जाएगा।

(B) हर परिस्थिति को सम्भाल लेता है।

(C) व्यक्ति एवं समाज के साथ अच्छी प्रकार समायोजित हो जाता है।

(D) उपर्युक्त सभी **(D)**

❖ **बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर बाधा डालने वाला तत्व है-** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) पारिवारिक संघर्ष (B) विकास की उत्तम दशाएँ

(C) शिक्षक का सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार

(D) जनतंत्रीय अनुशासन **(A)**

❖ **बालक का मानसिक स्वास्थ्य निर्भर करता है, वह है-** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) विद्यालय (B) परिवार

(C) समुदाय (D) उपर्युक्त सभी **(D)**

❖ **एक मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति सक्षम है-** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) आसानी से समायोजित होता है।

(B) सन्तुष्टप्रद रूप से सहयोग देता है।

(C) हमेशा खुश रहने की कोशिश करता है।

(D) उपर्युक्त सभी **(D)**

Scanned with CamScanner

❖ **निम्नलिखित में से कौन सा कथन मानसिक स्वास्थ्य के विषय में सत्य नहीं है ?** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) व्यक्तित्व की पूर्ण एवं सन्तुलित क्रियाशीलता
(B) प्रक्षेपण एवं प्रतिक्रिया निर्माण की प्रक्रिया
(C) तनाव, अंत:द्वन्द्व एवं हताशा को कम करना।
(D) जीवन की वास्तविकताओं को स्वीकार करने एवं सामना करने की योग्यता **(B)**

❖ **किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पोषण के लिए निम्नलिखित में से कौन सी निर्देशन तकनीकी नहीं है ?** *[School Lect. Exam-2016]*

(A) हास्य, मित्रता, रुचियाँ (B) ध्यान एवं आध्यात्मिक
(C) कठोर कार्य, प्रतिस्पर्धा एवं गृहकार्य
(D) स्व-अनुशासन, स्व-नियंत्रण, सरल शिक्षाशास्त्र **(C)**

❖ **मानसिक स्वास्थ्य के सम्प्रत्यय की पूर्ण जानकारी एक शिक्षक को योग्य बनाती है :** *[School Lect. Exam-2013]*

(A) अन्य विद्यार्थियों से अन्त: क्रिया में
(B) उपयुक्त शिक्षण व्यूहरचना चयन में
(C) विद्यार्थियों के अवांछित व्यवहार में गहन सूझ विकसित करने में
(D) विषय-वस्तु के संप्रत्यय स्पष्टीकरण में **(C)**

❖ **किस पहलू में मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने की विधियाँ बताई जाती है ?** *[School Lect. Exam-2013]*

(A) निरोधात्मक पहलू (B) संरक्षणात्मक पहलू
(C) सकारात्मक पहलू (D) उपचारात्मक पहलू **(B)**

❖ **अच्छे मानसिक स्वास्थ्य का संकेतक है-** *[School Lect. Exam-2013]*

(A) दूसरों की आलोचना करना (B) संवेगों पर नियन्त्रण रखना
(C) अपनी बात पर अड़े रहना (D) दिवास्वप्न देखना **(B)**

❖ **किसी समुदाय में आसानी से सम्बन्ध बनाने व समायोजित होने की क्षमता कहलाती है-** *[School Lect. Exam-2013]*

(A) बौद्धिक क्षमता (B) आध्यात्मिक क्षमता
(C) अभिक्षमता (D) सांवेगिक बुद्धि **(D)**

❖ **मानसिक स्वास्थ्य का लक्षण नहीं है।** *[School Lect. Exam-2013]*

(A) सहनशीलता (B) सामंजस्य की योग्यता
(C) आत्मविश्वास (D) अपरिपक्वता **(D)**

❖ **बालक के मानसिक स्वास्थ्य में बाधा डालने वाले कारक है-** *[School Lect. Exam-2013]*

(A) वंशानुक्रम का प्रभाव (B) परिवार का विघटन
(C) शारीरिक दोष (D) उपर्युक्त सभी **(D)**

❖ **अध्यापक के मानसिक स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है-** *[School Lect. Exam-2013]*

(A) सामाजिक सम्मान की प्राप्ति
(B) विद्यालय का जनतंत्रीय वातावरण
(C) पद की सुरक्षा (D) पर्याप्त शिक्षण सामग्री

❖ **अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के संकेतक है—** *[School Lect. Exam-2013]*

(A) दूसरों की आलोचना करना (B) जिद्दी प्रवृत्ति
(C) दिवास्वप्न (D) सांवेगिक नियन्त्रण **(D)**

❖ **"मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अभिप्राय मानसिक स्वास्थ्य के नियमों की खोज करना और उसके संरक्षण के लिये उपाय करना अथवा बतलाना है।" यह परिभाषा दी गयी है:** *[School Lect. Exam-2013]*

(1) ड्रेवर द्वारा (2) क्रो व क्रो द्वारा
(3) मैक्डूगल द्वारा (4) वुडवर्थ द्वारा **(A)**

❖ **मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित उक्त कथन किसने प्रस्तुत किया- "मानसिक स्वास्थ्य और अधिगम से सफलता का बहुत घनिष्ठ संबंध है"-**

(A) कुप्पुस्वामी (B) फैंडसेन
(C) लेडेन (D) क्रो एवं क्रो **(B)**

❖ **"परिवार बालकों के उत्तम मानसिक स्वास्थ्य व कुसमायोजन दोनों को ही निर्धारित करता है।" कथन है-**

(A) फैंडसन (B) लेडेल
(C) क्रो एवं क्रो (D) बियर्ड **(A)**

❖ **बालक के मानसिक स्वास्थ्य को उन्नत बनाने वाले कारक हैं-**

(A) शिक्षक का सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार
(B) पारिवारिक वातावरण व सदस्यों के अन्तर्सम्बन्ध
(C) निर्देशन एवं परामर्श की व्यवस्था
(D) उपर्युक्त सभी **(D)**

❖ **"मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है वास्तविकताओं से पर्याप्त समायोजन करने की क्षमताएँ" कथन है—**

(A) लेडेल (B) बिमर्ड
(C) गेट्स (D) हल **(A)**

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 9 बुद्धि

- **सामान्य अर्थ :-** बुद्धि विचार करने व समस्त मानसिक क्रियाओं का संगठित रूप होती है। यह सीखने की योग्यता है समस्या समाधान की योग्यता है व समायोजन प्राप्त करने की योग्यता है।

**बुद्धि की परिभाषाएँ तीन वर्गों में दी गई है–**

- समायोजन की योग्यता – इसमें रॉस, बर्ट, स्टर्न, वुडवर्थ, बिने, मैक्डूगल, गोडार्ड विलियम जेम्स आदि आते हैं-फ्रीमैन
- सीखने की योग्यता बुद्धि – इसमें बकिंघम, डीयरबार्न, थार्नडाईक, कालविन आते हैं-फ्रीमैन
- अमूर्त चिन्तन की योग्यता – इसमें स्पीयरमैन, टर्मन, बिने, बर्ट, व फ्रीमैन आते हैं।

**परिभाषाएँ–**

- **बकिंघम** के अनुसार – बुद्धि सीखने की योग्यता है।
- **कॉलसेनिक** के अनुसार– बुद्धि विभिन्न योग्यताओं का योग है।
- **वुडवर्थ** के अनुसार – बुद्धि कार्य करने की एक विधि है।/बुद्धि का अर्थ है प्रतिभा का प्रयोग करना।
- **टर्मन** के अनुसार – बुद्धि अमूर्त विचारों को सोचने की योग्यता है।
- **अल्फ्रेड बिने** के अनुसार – बुद्धि इन चार शब्दों में निहित है – ज्ञान, आविष्कार, निर्देश, आलोचना।
- **स्टर्नबर्ग** के अनुसार – बुद्धि आलोचनात्मक ढंग से सोचने की प्रक्रिया है।
- **थर्स्टन** के अनुसार – बुद्धि विभिन्न वस्तु व विचारों के मध्य जटिल संबंधों को समझने की योग्यता है।
- **वेक्सलर/वेश्लर** के अनुसार – बुद्धि एक सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है तथा समायोजन स्थापित करता है।
- **डीयर बोर्न** के अनुसार – बुद्धि सीखने या अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता है।
- **रोबर्ट स्टर्नबर्ग** – बुद्धि वह योग्यता है जिससे व्यक्ति पर्यावरण के प्रति अनुकुलित होता है, अपने समाज व संस्कृति के उद्देश्यों की पूर्त्ति हेतु पर्यावरण के कुछ पक्षों का चयन करता है व परिवर्तित करता है।
- **वुडरो** – बुद्धि ज्ञान का अर्जन करने की योग्यता है।
- **डीयरबार्न** – बुद्धि सीखने या अनुभव से लाभ उठाने की क्षमता है।
- **हेनमान** – बुद्धि के दो तत्व होते हैं – ज्ञान की क्षमता व निहित ज्ञान।
- **थार्नडाईक** – सत्य या तथ्य के दृष्टिकोण से उत्तम प्रतिक्रियाओं की शक्ति ही बुद्धि है।
- **कालविन** – बुद्धि वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता है।
- **रैक्स व नाइट** – बुद्धि वह तत्व है जो सब मानसिक योग्यताओं मे सामान्य रूप से सम्मिलित रहता है।
- **स्टोडार्ड** – बुद्धि उन क्रियाओं को समझने की योग्यता है जिसमें कठिनता, जटिलता, अमूर्तता, मितव्ययता, सामाजिकता व मौलिकता की उत्पत्ति होती है।

**बुद्धि क्या नहीं है? (What Intelligence is not)–**

1. बुद्धि ज्ञान नहीं है – यद्यपि इसके सम्बन्ध अवश्य है।
2. बुद्धि प्रतिभा (Talent) नहीं हैं – बुद्धि प्रतिभा के दो पक्षों में से केवल एक पक्ष मौलिक योग्यता से सम्बन्धित है।
3. बुद्धि स्मृति (Memory) नहीं है – क्योंकि बहुत बार कम बुद्धि वालों की स्मृति तेज होती है।
4. यह कौशल (Skill) नही है – क्योंकि कौशल सीखा जाता है व अभ्यास से विकसित होता है बुद्धि नहीं।

- **डेशियल** – बुद्धि जीवन के व्यापक दृष्टिकोण के साथ सम्बन्धित है।

**बुद्धि की विशेषताएँ–**

- बुद्धि जन्मजात शक्ति है/प्राकृतिक शक्ति है इसे प्राप्त नहीं किया जाता है।
- बुद्धि का विकास जन्म से लेकर किशोरावस्था तक होता है। (किशोरावस्था के समाप्त होने तक)
- **स्पीयरमैन** के अनुसार – 14 से 16 वर्ष तक बुद्धि का विकास होता है।
- **टर्मन** के अनुसार – 15 वर्ष तक बुद्धि का विकास होता है।
- बुद्धि पर वंशानुक्रम तथा वातावरण का प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि दूसरे से भिन्न होती है।
- बुद्धि समस्या समाधान की योग्यता है। लिंग की भिन्नता का बुद्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
- बुद्धि समायोजन स्थापित करने की योग्यता है। बुद्धि व ज्ञान में घनिष्ठ सम्बन्ध है। ज्ञान का व्यवहारिक प्रयोग जीवन में बुद्धि कहलाता है।
- बुद्धि, तर्क, चिन्तन, कल्पना तथा स्मरण करने की योग्यता है।
- बुद्धि क्षमताओं का योग है।
- **नोट :-**
  - बुद्धि पर आनुवांशिकता का प्रभाव
  - एक साथ पाले गये समरूप जुड़वा बच्चों की बुद्धि में 0.90 सहसंबंध पाया जाता है।
  - अलग–अलग वातावरण में पालन किये जुड़वा बच्चों की बुद्धि में 0.72 सह संबंध पाया जाता है।
  - साथ–साथ पालन किये जाने वाले भाई–भाई में 0.60 सहसंबंध, भाई–बहन में 0.50 सहसंबंध।
  - अलग–अलग पालन किये गये सहोदर की बुद्धि में 0.25 सहसंबंध पाया जाता है।
- **निष्कर्ष :-** बुद्धि आनुवांशिकता व पर्यावरण की जटिल अन्त:क्रिया की परिणाम होती है।
- **समाकलित बुद्धि (Integral Inteligence) :-**वह बुद्धि जिसमें समाज व सम्पूर्ण वातावरण से व्यक्ति को संबंधों को महत्व दिया जाता है।
- **वर्नन के अनुसार बुद्धि के 3 अर्थ –**

Scanned with CamScanner

1. **जननिक क्षमता (Genetic Capacity)** – यह वंशानुगत होती है इसे हैब ने बुद्धि 'A' कहा है।
2. **प्रेक्षित व्यवहार के रूप में बुद्धि** – बुद्धि जीन्स व वातावरण की अन्तःक्रिया का परिणाम होती है हैब ने इसे बुद्धि 'B' कहा है।
3. **परीक्षण प्राप्तांक के रूप में** – बुद्धि वही है जो बुद्धि परीक्षण मापता है इसे हैब ने बुद्धि 'C' कहा है।

## बुद्धि के प्रकार (Types of Intelligence)–

- बुद्धि के प्रकार दो व्यक्तियों ने बताये हैः-

1. थार्नडाइक (थार्नडाइक ने मुख्य से 1920 में 3 प्रकार बताये है)
2. गैरिट

- **थार्नडाइक व गैरिट** ने बुद्धि के तीन प्रकार बताये हैः-

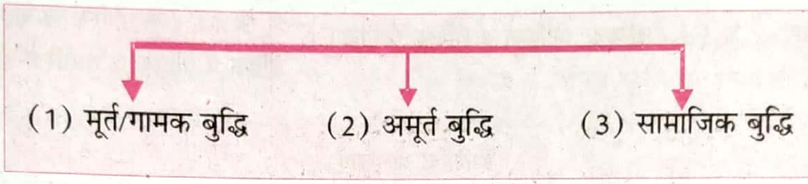


1. **मूर्त/गामक/स्थूल बुद्धि (Concrete Intalligence):**- इस बुद्धि का सम्बन्ध यंत्र या मशीनों व हस्तकला में निपुणता से होता है, इसलिए इसे यांत्रिक बुद्धि, व्यवहारिक बुद्धि (Practical Intelligence) भी कहा जाता है।
   जैसे – कारीगर, मैकेनिक, इंजीनियर, औद्योगिक कार्यकर्ता।
2. **अमूर्त बुद्धि/सैद्धान्तिक/सूक्ष्म बुद्धि (Abstract Intelligence)** :- इसका सम्बन्ध पुस्तकीय ज्ञान से होता है।
   **जैसे** – लेखक, शिक्षक, दार्शनिक, कहानीकार, गणितज्ञ, पेन्टर। इस बुद्धि में प्रतीकों, शब्दों, अंको, सूत्रों आदि में प्रस्तुत समस्याओं को सुलझाने की योग्यता शामिल है।
3. **सामाजिक बुद्धि (Social Intalligence) :**- नेता, व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्ता सामाजिक बुद्धि के अंतर्गत आते हैं। इसका विशेष अध्यन गिलफोर्ड, बर्क, कॉनबैक ने किया। वह बुद्धि जिसके सहारे व्यक्ति अन्यों को समझता है, व्यवहार कुशलता दिखाता है, सामाजिक संबंध अच्छे होते हैं, समायोजित होते हैं। भारत में घोष व गगोपाध्याय ने इसकी मापनी का निर्माण किया। अमेरिका में गिलफोर्ड, बर्क व क्रॉनबैक ने इस पर परीक्षण बनाया।

## बुद्धि के सिद्धान्तों के दो उपागम हैं–

1. **मनोगतिक उपागम (Psychometric Approach)** – इसमें बुद्धि को अनेक योग्यताओं का संगठन माना जाता है। बिने का सिद्धान्त, स्पीयरमैन सिद्धान्त, गिलफोर्ड का बुद्धि संरचना मॉडल, थर्स्टन का प्राथमिक मानसिक योग्यता सिद्धान्त, जेन्सन का सिद्धान्त थार्नडाईक का बहुकारक, प्रतिमान सिद्धान्त
2. **सूचना प्रक्रमण उपागम (Information Processing Approach)** - इसमें बौद्धिक तर्कना व समस्या में व्यक्ति द्वारा उपयोग की जाने वाली संज्ञानात्मक प्रक्रिया के अध्ययन पर बल देता है। जैसे – बुद्धि का PASS मॉडल, स्टर्नबर्ग का त्रिचापीय सिद्धान्त

## दो प्रकार के सिद्धान्त होते हैं–

1. **कारकीय (Factorial)** –
   स्पयीरमैन, थर्स्टन, गार्डनर, कैटल, हार्न केरोल, बर्ट, थार्नडाईक, कैरोल
2. **प्रक्रिया प्रधान (Process Oriented)** –
   पियाजे, ब्रनूर, स्टनबर्ग, जेन्सन, जे.पी. दास

## बुद्धि के प्रमुख सिद्धान्त

1. **जेन्सन का पदानुक्रमिक मॉडल** – आर्थर जेन्सन
   इसमें योग्यता के दो स्तर होते हैं –
   - **प्रथम स्तर** – साहचर्यत्मक अधिगम का होता है जिसमें Input & output समान है रहकर होता है।
   - **द्वितीय स्तर (Second Level)** – उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक योग्यता होती है।
2. **कैरोल का त्रिस्तरीय मॉडल (Three Stratun Model)** – जॉन बी. कैरोल
   यह समकलात्मक मॉडल है जिसमें स्पीयरमैन, थर्स्टन व कैटल - हॉर्न के सिद्धान्तों का मिश्रण है इसके मानसिक कौशल के 3 स्तर है –
   (1) सामान्य (2) विशिष्ट (3) सकीर्ण स्तर

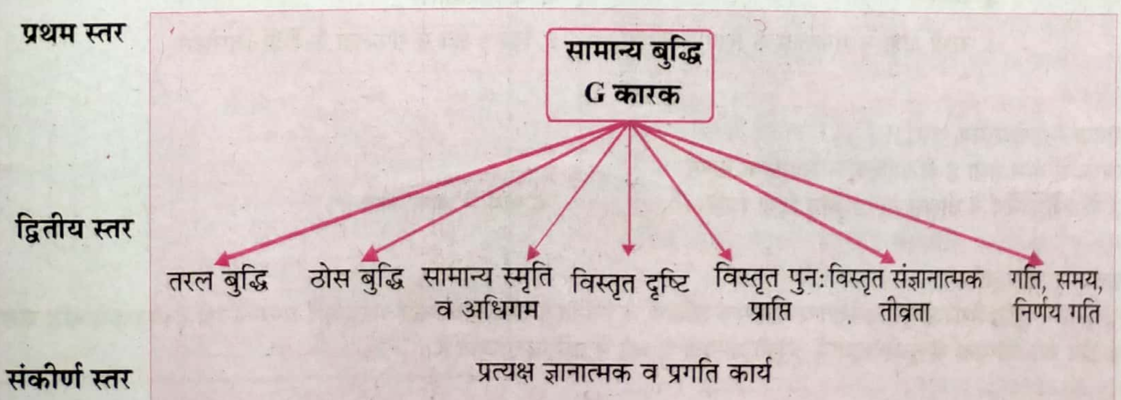


Scanned with CamScanner

संकीर्ण स्तर (Narrow) (संज्ञानात्मक क्षमता के अध्ययन में प्रयुक्त संज्ञानात्मक प्रत्यक्षज्ञानात्मक व प्रगति कार्य)

**3. बर्ट व वर्नन का पदानुक्रमिक (Hierarchical) (1965) :-**

इस सिद्धान्त में सबसे ऊपर स्पीयरमैन G कारक को रखा गया-

प्रथम स्तर - G (सामान्य)

द्वितीय स्तर - V. Ed. (शब्दिक, आंशिक व शैक्षिक योग्यता) | K.M. (व्यवहारिक क्रियात्मक दैहिक व यांत्रिक व शारीरिक योग्यता)

अन्तिम स्तर - विशिष्टि योग्यताएँ (शब्दिक, संख्यात्मक)

**4. एक खण्ड/तत्व/कारक (Unitary Theory) :-**

- प्रतिपादक - अल्फ्रेड बिने
- सहायक - टर्मन, स्टर्न।
- बुद्धि निरंकुशतावादी सिद्धान्त इसी को कहा गया है। बुद्धि एक अखण्ड ईकाई है।

**5. द्विकारक/द्विखण्ड/द्वितत्व (Two Factor Theory) :-**

- प्रतिपादक - स्पीयरमैन, 1904
- S → विशिष्ट कारक (अर्जित)
- G → सामान्य कारक (जन्मजात)

**द्वितत्व:-**

- **G → सामान्य कारक** - स्थायी, गणित कार्य सफलता के लिए, जिम्मेदार, सामान्य मानसिक शक्ति, प्रत्येक क्रिया में प्रयोग, प्रत्येक में अलग-अलग पायी जाती है।
- **S → विशिष्ट कारक** - संगीत, चित्रकारी, विशेष योग्यता, वातावरण में सीखा जाता है, विशेष क्षेत्र में सफलता को व्यक्त करता है।

**नोट:-** स्पीयरमैन ने सामान्य बुद्धि पर अधिक बल दिया है। (G कारक) इसे मानसिक ऊर्जा कहा है।

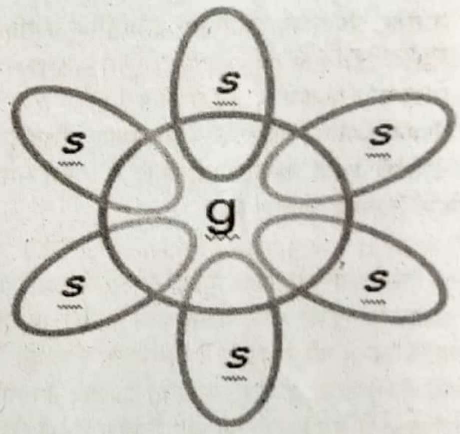


## सामान्य बुद्धि व विशिष्ट बुद्धि में अन्तर-

| सामान्य बुद्धि (General) | विशिष्ट बुद्धि |
|---|---|
| 1. सर्वव्यापी योग्यता (Universal) | 1. विशेष योग्यता |
| 2. जन्मजात (In Born) | 2. सीखी गई योग्यता (Learned) |
| 3. सामान्य मानसिक शक्ति (Constant) | 3. विशिष्ट क्रियायें व मानसिक शक्ति |
| 4. स्थिर | 4. परिवर्तनशील |
| 5. सभी क्षेत्रों में सफलता के लिए जिम्मेदार | 5. विशेष क्षेत्र में सफलता के लिए जिम्मेदार |

**6. त्रिखण्ड/त्रिकारक/त्रितत्त्व:-**

- प्रतिपादक - स्पीयरमैन, 1911
- G कारक से कम तथा S से अधिक - सामूहिक खण्ड
- 1911 में स्पीयरमैन ने तीसरा खण्ड जोड़ दिया जिसे **सामूहिक खण्ड** के नाम से जाना जाता है।

**7. बहुकारक सिद्धान्त/असतात्मक सिद्धान्त (Multiple Factor)**

- प्रतिपादक - थार्नडाईक।

✦ **थार्नडाईक:-** बुद्धि विशिष्टीकृत व स्वतन्त्र मानसिक शक्तियों के निर्मित है उनके मध्य कोई महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है। सामान्य बुद्धि कुछ नहीं होती है एक क्षेत्र की योग्यता से दूसरे कार्य में उसकी योग्यता के बारे में नहीं जान सकते है।

✦ **थॉर्नडाइक के अनुसार बुद्धि के गुण :-**

1. **स्तर (Level)** - किसी कार्य को सम्पादित करने में कठिनाई की सीमा को व्यक्त करता है।

Scanned with CamScanner

2. **विस्तार (Range)** - कठिनाई के निश्चित स्तर पर अनेक कार्य जिन्हें हम कर सकते हैं।
3. **क्षेत्र (Area)** - प्रत्येक स्तर पर स्थितियों की कुल संख्या जिनके प्रति अनुक्रिया करने में व्यक्ति समर्थ होता है। विस्तार का कुल योग है।
4. **गति (Speed)** - जिससे हम परीक्षण के विभिन्न पदों के प्रति अनुक्रिया कर सकते है।

✦ **6 कारक बताने के कारण बहुकारक कहा गया है -**

1. आंकिक　　2. शाब्दिक योग्यता
3. दिशा योग्यता　　4. तर्क योग्यता
5. स्मृति योग्यता　　6. भाषण योग्यता।

**नोट:-** इस सिद्धान्त को **बालू के टीले का सिद्धान्त** या **परमाणुवादी सिद्धान्त** कहा जाता है।

**8. समूह कारक का सिद्धान्त (Group Factor Theory) :-**
- प्रतिपादकः- थर्स्टन, 1938, G - कारक को अस्वीकार किया है।
- पुस्तक - प्राथमिक मानसिक योग्यताएं, 13 समूह, प्रधान समूह - V + W + S + N + R + M + P
- प्रधान समूह - शाब्दिक अर्थ क्षमता (Verbal earning), शब्द प्रवाह (Word Fluency), स्थानिक (Spatial), आंकिक क्षमता (Numerical), तर्क क्षमता (Reasoning), स्मृति (Memory), प्रत्यक्षज्ञानात्मक (Perceptual)।

**9. त्रिआयामी/त्रिविमीय सिद्धान्त (Three Dimensional) :-**

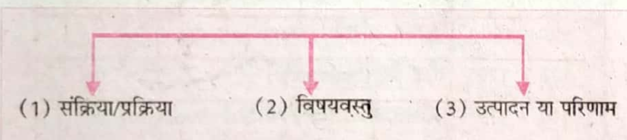


- प्रतिपादक - गिलफोर्ड, 1967, (सोवियत संघ) (Structure of Intallect) (SOI)

1. **संक्रिया/प्रक्रिया (Process):-** संज्ञान, स्मृति धारणा, स्मृति अभिलेखन, अभिचारी, चिन्तन, अपसारी चिन्तन, मूल्यांकन
2. **विषयवस्तु (Subject):-** सूचनाएँ (दृष्टि, श्रवण) सांकेतिक, शाब्दिक, व्यवहारिक, आकारात्मक।
3. **उत्पादन या परिणाम (Result):-** ईकाई, वर्ग, सम्बन्ध, पद्धतियां, रूपान्तरण, आशय, निहितार्थ।

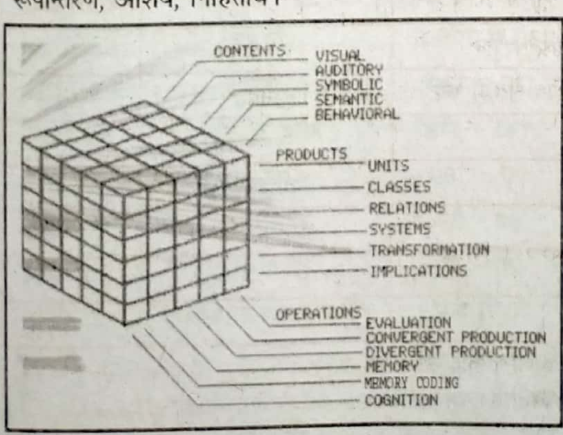


**नोटः-** गिलफोर्ड ने मौलिक रूप से 120 कारक बताये हैं। 1988 में विस्तार किया गया व 180 कारक हो गए। इस कारक को "बुद्धि की संरचना" का सिद्धान्त भी कहा जाता है। इसमें 6 × 5 × 6 = 180 कारक

**10. मात्रा का सिद्धान्त :-**
- प्रतिपादक - थार्नडाइक।
- बुद्धि मस्तिष्क के स्नायु तन्तुओं की मात्रा पर निर्भर करती है।

**11. प्रतिमान/प्रतिदर्श सिद्धान्त :-**
- प्रतिपादक - थॉमसन (Sample Theory)
- बुद्धि में विभिन्न मानसिक योग्यताओं का अंश पाया जाता है।

**12. तरल व ठोस बुद्धि का सिद्धान्त/धारा प्रवाह का सिद्धान्त (Fluid and Crystallized Intelligence) :-**
- प्रतिपादक - कैटेल, हार्न, 1963
- यह मॉडल GC - GF मॉडल भी कहलाता है।

(i) **तरल बुद्धि :-** यह आनुवांशिक कारकों से होती है। इसमें प्रत्यक्षीकरण व अनुकूलन करने योग्यता है।
(ii) **ठोस बुद्धि :-** तथ्यात्मक ज्ञान (अर्जित)

**13. क-ख/अ- ब/A-B का सिद्धान्त :-**
- प्रतिपादक - हैब।

A - वंशानुक्रम बुद्धि
B - वंशानुक्रम व वातावरण के अन्त: क्रिया का परिणाम
इसमें बाद C नाम बुद्धि को जोड़ दिया गया।
C - परीक्षण प्राप्तांक के रूप में जो बुद्धि परीक्षण मापन करती है।

**14. बहुमानसिक योग्यता का सिद्धान्त :-**
- प्रतिपादक - कैली।
- 09 मानसिक योग्यता पायी जाती है।
- इसमें पाँच प्रमुख अंक योग्यता, स्थान योग्यता, कण्ठस्थ योग्यता, अनुभव योग्यता व समझने की योग्यता शामिल है।

**15. संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्तः-**
- प्रतिपादक - जीन पियाजे। **(अधिगम बिन्दु में पढ़े)**

**16. त्रितंत्र सिद्धान्त (Triarchik Theory) :- सूचना संसाधन सिद्धान्त**
- प्रतिपादक - स्टर्नबर्ग।
- पुस्तक - बियोण्ड आई क्यू (IQ)
- 03 बुद्धि (त्रिचापीय सिद्धान्त, 1985) - (i) घटक (ii) अनुभव (iii) सन्दर्भ ।

(i) **घटक/विश्लेषण बुद्धि (Componetial Intelligence):-** इस बुद्धि द्वारा व्यक्ति किसी समस्या का समाधान करने के लिए प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करता है। विश्लेषण व आलोचनात्मक तत्व।
(ii) **अनुभव/सृजनात्मक बुद्धि (Experiential) :-** इसके द्वारा व्यक्ति नई समस्या के समाधान हेतु अपने पूर्व अनुभवों का सर्जनात्मक रूप से प्रयोग करता है। (सर्जनात्मकता)
(iii) **सन्दर्भ/व्यवहारिक बुद्धि (Contextual) :-** इसके द्वारा व्यक्ति दैनिक जीवन मे आने वाली पर्यावरणीय मांगों से निपटता है।

**नोट :-** स्टनबर्ग ने संज्ञानात्मक प्रक्रिया के 3 घटक बताए हैं-
1. मेटाघटक - उच्च स्तरीय प्रक्रिया समस्या समाधान कौशल
2. निष्पादक घटक - वास्तविक मानसिक प्रक्रिया प्रत्यक्षज्ञानात्मक
3. ज्ञान संग्रहण घटक - स्मृति के सूचना संचित करना, नये सूझ को उत्पन्न करना।

Scanned with CamScanner

**17. आश्चर्यजनक बुद्धि का सिद्धान्तः-**
- प्रतिपादक - ब्लूम।
- बुद्धि नाम का कोई तत्व नहीं होता।

**बुद्धि Pass का मॉडल ( 1994 )**–Planning (योजना) Attension (अवधान) Simultaneous (समकालिक) and Successive (सह कालिक अनुक्रमिक मॉडल)–जे.पी. दास, जैक नागलीरी, किर्वी। यह सूचना संसाधन उजागर से जुड़ा हुआ।

**18. ईकाई सिद्धान्त (Unitary Theory) :-**
- प्रतिपादक - जॉनसन/स्टर्न
- इसके अनुसार बुद्धि सभी समस्याओं को हल करने की ईकाई या योग्यता है।

**19. गार्डनर ( हावर्ड गार्डनर ) - बहु बुद्धि/बहु आयामी बुद्धि सिद्धान्त (Theory of Multiple Intelligence)**
- 1983 में पुस्तक **Frames of Mind - the theory of Multiple Intelligence**
- यह सिद्धान्त पाठ्यक्रम निर्माण व निर्देश को नियोजित करने में मदद करता है।
- 9 श्रेणियां (सामान्य बुद्धि का विरोध) सभी स्वतंत्र होती है। वर्तमान में 9 है।
- प्रारम्भ में - 7, 1998 में - 8, 2000 में - 9 प्रकार
- सभी को समान महत्त्व व G का विरोध।

1. **तर्कपूर्ण (Logical)/गणितीय बुद्धि/वैज्ञानिक/संख्यात्मक योग्यता** - वैज्ञानिक चिंतन व समस्या समाधान की योग्यता - यह वैज्ञानिकों, गणित शास्त्रियों, दार्शनिकों व नोबेल पुरस्कार विजेताओं में पायी जाती है।
2. **भाषायी (Linguistic)/शाब्दिक बुद्धि/वाक योग्यता** - भाषा के प्रति संवेदनशीलता, यह कवि, पत्रकार, वकील, लेखक, गीतकार, व्याख्याता में होगी।
3. **संगीतात्मक (Musical) बुद्धि** - लय, तान, आदि। जैसे - रचयिता - सारंगी वादक, तबला वादक।
4. **स्थानात्मक/दैशिक योग्यता (Spatial)** - दृश्य बिंब तथा प्रतिरूप निर्माण कौशल की योग्यता है। जैसे - नौचालक, शिल्पकार, सर्वेक्षक, पायलेट, मूर्तिकार, चित्रकार, वास्तुकार स्थानिक चित्रों को मानसिक रूप से परिवर्तित करने की योग्यता।
5. **शारीरिक गति (Bodily Kinesthetic)** - शारीरिक संचालक - नर्तक, धावक, सर्जन, अभिनेता, जिम्नास्टिक (शरीर व किसी अंग की लोच का प्रयोग करना।)
6. **प्राकृतिक बुद्धि (Naturalistic)** - पर्यावरण की प्राकृतिक विशेषताओं के प्रति - संवेदनशील व जैसे - शिकारी, किसान, वनस्पति विज्ञानी, पर्यटक।
7. **अन्तर्व्यक्तिगत/व्यक्तिगत अन्य (Interpersonal)** - दूसरों के भावों को समझना, चिकित्सक विक्रेता, मनोवैज्ञानिक/परामर्शदाता/राजनेता
8. **अन्तः व्यक्तिगत/व्यक्तिगत आत्मन (Intera Personal)** - शुद्ध, आत्मज्ञान वाले (सन्त, महात्मा, योगी, दार्शनिक)

**नोट :-** 2000 में 9वां प्रकार अस्तित्ववादी भी जोड़ दिया गया है।

9. **अस्तित्ववादी** - इसमें मानव संसार के बारे में छिपे रहस्यों को जिन्दगी, मौत तथा मानव अनुभूति के वास्तविकता के बारे में उपयुक्त प्रश्न पूछकर जानने की क्षमता से होता है, दर्शनिक चिंतक में पायी जाती है।

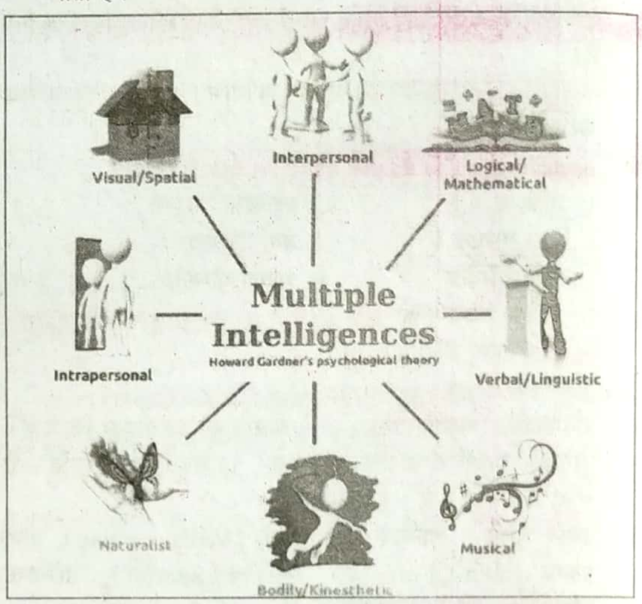


**टर्मन के अनुसार बुद्धिलब्धि वर्गीकरण–**

| | |
|---|---|
| 140 व ऊपर | प्रतिभाशाली (Genius) |
| 130 - 139 | कुशाग्र/अतिश्रेष्ठ (Very Superior) |
| 120 - 129 | तीव्र/श्रेष्ठ (Superior) |
| 110 - 119 | औसत से अधिक (Above Average) |
| 90 - 109 | सामान्य/औसत (Average) |
| 80 - 89 | अल्प/सीमावृत्ति (Dull) |
| 70 - 79 | औसत से कम (Below Average) |
| 50 - 69 | मूर्ख (Morons) |
| 25 - 49 | मूढ़ (Imbeciles)/हीन |
| 0-24 | महामूढ़ (जड़) (Idiots) |

| बुद्धिलब्धि वर्ग | वर्ग नाम | जनसंख्या: |
|---|---|---|
| 130 से अधिक | अतिश्रेष्ठ | 2.20% |
| 120 - 130 | श्रेष्ठ | 6.70% |
| 110 - 119 | उच्च औसत | 16.10% |
| 90 - 109 | औसत | 50.00% |
| 80 - 89 | सीमावर्ती | 6.70% |
| 70 - 79 | अल्प बुद्धि | 16.10% |
| 70 से कम | बौद्धिक रूप से अशक्त | 2.20% |

- ✦ निम्न (बुद्धिलब्धि 55-70)
- ✦ सामान्य (बुद्धिलब्धि 35-40 से लगभग 50-55)
- ✦ तीव्र (बुद्धि लब्धि 20-25, 35- 40)
- ✦ अति गंभीर (20-25 से कम)

Scanned with CamScanner

## बुद्धि का मापन–

- सर्वप्रथम विलियम स्टर्न ने I.Q. शब्द का प्रयोग किया। (1912)
- मानसिक परीक्षण शब्द का प्रयोग करने वाला पहला व्यक्ति – कैटेल, 1890
- बुद्धि मापन या परीक्षण का जन्मदाता – अल्फ्रेड बिने (1905)
- मानसिक आयु (M.A.) का विचार – अल्फ्रेड बिने, 1908
- प्रथम क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण – सेगुईन 1866
- बुद्धि लब्धि के प्रथम प्रतिपादक – स्टर्न, 1912
- 1916 में टर्मन ने यह सूत्र दिया

$$= \frac{M.A.}{C.A.} \times 100 \quad \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

- **बेसल वर्ष** – जिस अधिकतम आयु स्तर के प्रश्नों को हल कर लेता है, वह उसका बेसल वर्ष माना जायेगा।
- **टर्मिनल वर्ष** – जिस आयु स्तर के प्रश्नों को हल नहीं कर पाता है, वह उसका टर्मिनल वर्ष होगा।

## बुद्धि लब्धि की सारणी–

**(सामान्य सारणी)**

| बुद्धि लब्धि | बालक का प्रकार |
|---|---|
| 140 – अधिक | प्रतिभाशाली (Genius) |
| 120 – 139 | अतिश्रेष्ठ/अति तीव्र (Very Superior) |
| 110 – 119 | तीव्र/श्रेष्ठ (Superior) |
| 90 – 109/110 | सामान्य/औसत (Normal) |
| 80 – 89 | (टर्मन के अनुसार मंदबुद्धि) मंद (Dull) सामान्य रूप से इसमें पिछड़े बालक आते है। |
| 70 – 79 | क्षीण बुद्धि/सीमान्त मन्द बुद्धि (Feeble) |
| 50 – 70 | मंद बुद्धि/मूढ़/निर्बल (Morone) |
| 20 – 50 | मूर्ख/हीन बुद्धि (Imbecile) |
| 20 से कम | जड़ बुद्धि (Idiot) |

- भारत में सबसे पहले बुद्धि परीक्षण के निर्माता – (C.H.) राईस, 1922 (हिन्दुस्तानी बिने परफोरमेन्स पॉईन्ट स्केल)

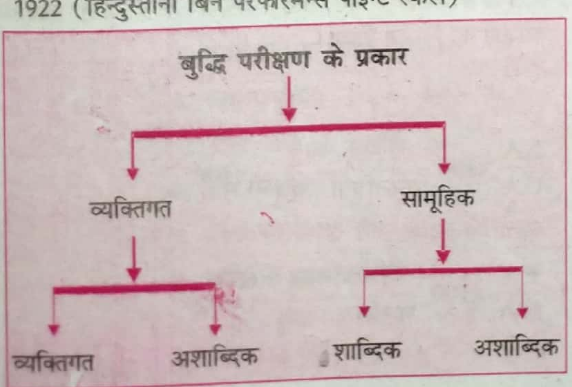


## अच्छे बुद्धि परीक्षण की विशेषताएँ–

1. विश्वसनीयता
2. वैधता
3. वस्तुनिष्ठता
4. रोचकता
5. सक्रियता
6. सर्वांगता

- **शाब्दिक बुद्धि परीक्षण :-** इस परीक्षण का प्रयोग पढ़े लिखे लोगों के लिए तथा अमूर्त बुद्धि का मापन करने में किया जाता है।
- **अशाब्दिक/क्रियात्मक बुद्धि का परीक्षण :-** इस परीक्षण का प्रयोग छोटे बालक, निरक्षर, गूंगे, बहरे बालकों तथा मूर्त बुद्धि का मापन करने में किया जाता है।

  **विशेष :-**
- **निष्पादन परीक्षण** – क्रियात्मक परीक्षण (Performance) इस परीक्षण में लिखित भाषा की आवश्यकता नहीं होती कुछ वस्तुओं व अन्य सामग्रीयों को व्यवस्थित करना होता है। भिन्न-भिन्न संस्कृति के व्यक्तियों के मापन में उपयोगी है। जैसे कोह ब्लॉक परीक्षण/यह अशाब्दिक परीक्षण से भिन्न होता है। अशाब्दिक में वस्तु को वास्तविक रूप में नहीं बल्कि उसका चित्र बनाकर व्यक्ति के सामने उपस्थित किया जाता है। जबकि क्रियात्मक में वस्तुओं को वास्तविक रूप से उपस्थित किया जाता। सबसे पहला क्रियात्मक परीक्षण–1866 में सेगुईन ने बनाया।

  **प्रमुख में :-** कोहब्लॉक, पास अलोग व घन रचना परीक्षण, पिन्टर पिटरसन परीक्षण
- **अशब्दिक बुद्धि परीक्षण** – इसमें प्रसिद्ध परीक्षण रैवेन परीक्षण, गुडएनफ, कैटल परीक्षण प्रसिद्ध है। यह क्रियात्मक के समान ही होता है।
- भारत में आर.पी. श्रीवास्तव व किरण सक्सैना ने सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण का निर्माण किया 7 से 11 वर्ष के बालकों के लिए यह शब्दिक व अशाब्दिक दोनों हैं इसमें 5 उपपरीक्षण शामिल है।
- ए. एन. मिश्रा ने मानव आकृति खींचने के लिए 1970 के परीक्षण बनाया। (6 से 12 वर्ष)
- हेमा पाण्डे ने प्रविद्यालय शिशु के लिए संज्ञानात्मक परीक्षण जो 3–5 वर्ष के लिए है इसके 6–7 परीक्षण शामिल है।

## व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण के प्रकार (Types of Individual Inteligence Test)–

व्यक्तिगत शाब्दिक बुद्धि परीक्षण:–

1. **बिने साइमन बुद्धि परीक्षण:–**

- प्रतिपादक – अल्फ्रेड बिने, 1905, (1908 व 1911 में संशोधन हुआ)
- 1911 में इस परीक्षण का अंग्रेजी में अनुवाद गोडार्ड ने किया। (अमेरिका)
- 3 से 15 वर्ष के बच्चों के लिये उपयोगी है।
- इसमें 30 प्रश्न होते हैं, वर्तमान में 59 प्रश्न है।

  **जैसे** – 15 वर्ष के बच्चों के लिए, जैसे – 20 अक्षरों के वाक्य को दोहराना, चित्रों की व्याख्या करना।

Scanned with CamScanner

नोट :- वी. कामथ ने 1935 में भारतीय अनुकूलन किया।

2. स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण :-
- प्रतिपादक – टर्मन, 1916
- 02 से 14 वर्ष के बच्चों के लिये उपयोगी है। संशोधन के बाद इसे 2 से 22 वर्ष कर दिया गया।
- इसमें 90 प्रश्न होते हैं।

3. टर्मन – मैरिल आवृत्ति परीक्षण :-
- प्रतिपादक – टर्मन व मैरिल, 1937
- 02-18 वर्ग के बच्चों के लिये

## व्यक्तिगत क्रियात्मक परीक्षण (Individual Non Verbal Test)

1. भूलभुलैया बुद्धि परीक्षण:-
प्रतिपादक -SD पोरटियस, 1924 (03 – 14 वर्ष के बालकों के लिए)
2. कोह ब्लॉक डिजाइन परीक्षण (क्रियात्मक) :-
प्रतिपादक – SC कोह, 1923 (16 ब्लॉक होते है।)
3. पास एलॉग परीक्षण (पुनःस्मरण क्रियात्मक परीक्षण) :-
प्रतिपादक -अलैक्जेण्डर पास, 1932 (09 डिजाइन कार्ड)
7 से 18 वर्ष के बच्चों के लिए।
4. घन रचना परीक्षण (क्रियात्मक) :-
प्रतिपादक – गा (26 घन)
5. मैरिल पाल्मर परीक्षण :-
38 परीक्षण – 13 महीने से 5.5 वर्ष के बच्चों के लिये – मैरिल पाल्मर द्वारा।
6. मिनिसोटा पूर्व स्कूल स्केल :-
(18 से 5 वर्ष के बच्चों के लिए) – मिनिसोटा
7. पिन्टर पैटरसन क्रियात्मक स्कैलन पिन्टर व पैटरसन (1917) (क्रियात्मक) :-
04 से 16 वर्ष के बच्चों के लिए।
8. आदमी चित्र परीक्षण :- गुड-एनफ (1926)
6 से 10 वर्ष के लिए
9. आकृति फलक परीक्षण :- गोडर्ड-सॅगुईन
10. वेन ऐलस्टाईन चित्र शब्दावली परीक्षण :- 45 सचित्र कार्ड।
11. डेटरायट परीक्षण :-बेकर व लीलैण्ड।
12. आर्थर क्रियात्मक बिन्दु स्केल परीक्षण।
13. प्रमिला पाठक :-गुड एन.एफ. ड्रा परीक्षण (भारतीय)
4 से 13 वर्ष
14. सिगुईन फॉर्म बोर्ड परीक्षण :-1907, सिगुईन
15. वान का चित्र शब्दावली परीक्षण :-

## सामुहिक बुद्धि परीक्षण के प्रकार–

1. सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण:-
- ✦ आर्मी अल्फा – आर्थर एस. ओटिस (1917)
गणित सम्बन्धी समस्याएँ, सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित समस्याएँ, अनुक्रमिक सम्बन्धी समस्याएँ, शब्दों का सम्बन्ध आदि परीक्षण होते हैं।
- ✦ सेना सामान्य वर्गीकरण – शब्दावली, गणितीय तर्क आदि।
- ✦ टर्मन का सामूहिक परीक्षण – 1920 में।
- ✦ टर्मन – मैकनिमर का मानसिक योग्यता परीक्षण (1941)
- ✦ प्रयाग मेहता परीक्षण (भारतीय)

नोट:-
- पहला परीक्षण डॉ. जे. मैनरी द्वारा 1927 में सामूहिक शाब्दिक परीक्षण (पहले भारतीय)
- S.S. जलौटा ने 1951 में सामूहिक मानसिक बुद्धि परीक्षण – भारतीय व्यक्ति।
- 6 से 11 वर्ष के बच्चों के लिये उपयोगी।
- 100 प्रश्न।

2. सामूहिक क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण :-
- ✦ आर्मी बीटा परीक्षण :-
- प्रतिपादक – आर्थर S ओटिस,
- 1919 (भूलभुलैया, चित्र, पूर्ति, ब्लॉक, विद्यार्थियों से व्यस्कों तक)
- ✦ शिकागो क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण:-
- 6 वर्ष से वयस्क के लिए उपयोगी
- ✦ संस्कृति मुक्त परीक्षण:-
- प्रतिपादक – R.B. कैटेल – 3 स्तर।
- (1) 4-8 वर्ष (2) 8 से 12 वर्ष। (3) हाई स्कूल के बच्चों के लिए। G कारक का मापन करता है।
- ✦ रैवने प्रोग्रेसिव मेट्रीसेज परीक्षण :-
- प्रतिपादक – जे.सी. रैवेन (1938) (लोकप्रिय परीक्षण)
- यह सांस्कृतिक मुक्त परीक्षण भी कहा जाता है। अमूर्त चिंतन तार्किक चिंतन व प्रत्यक्षण की तीव्रता का मापन करता है। इसमें पाँच उपपरीक्षण शामिल हैं। यह एक अशाब्दिक परीक्षण है।
- उपयोगी – रंगीन सांचों का प्रयोग। (छोटे बच्चों के लिए उपयोगी)

3. मिश्रित बुद्धि परीक्षण :-
- ✦ वेक्सलर/वेश्लर बुद्धि परीक्षण :-
- प्रतिपादक:- डेविड वेक्सलर, 1939 में बनाया (1944, 1955) (संशोधन)
- 16 से 64 वर्ष के व्यक्तियों के लिये। (बच्चों के लिए 5 से 15 वर्ष के तक के बच्चों के लिए भी है)
- 7 शाब्दिक व 7 अशाब्दिक उप परीक्षण।
- 7 शाब्दिक – सूचना, बोध, अंक, विस्तार, शब्दावली, अंकगणितीय, समानता, अक्षर संख्या परीक्षण।
- 7 अशाब्दिक – चित्र पूर्ति, चित्र व्यवस्था, ब्लॉक डिजाइन, वस्तु सज्जीकरण, अंक प्रतीक, भूलभुलैया, संकेत खोज, भूलभुलैया, संकेत खोज।

नोट : भारत में इसका अनुवाद मजूमदार ने किया था।
मलिन्स ने 1969 में भारत में 6 – 15 वर्ष के बच्चों के लिए वेश्लर परीक्षण का निर्माण किया।

विशेष :-
- ✦ शैक्षिक्र लब्धि ज्ञात करने का सूत्र-

$$\frac{E.A.}{C.A.}\times 100 \quad \frac{\text{शैक्षिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}}\times 100$$

- ✦ उपलब्धि लब्धि ज्ञात करने का सूत्र-

$$\frac{E.A.}{M.A.}\times 100 \quad \frac{\text{शैक्षिक आयु}}{\text{मानसिक आयु}}\times 100$$

- ✦ विचलन बुद्धि लब्धि के प्रतिपादक – डेविड वेक्सलर, 25 से 30

वर्ष से अधिक आयु की बुद्धि का मापन करने में उपयोगी।

**बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता–**

- ✦ सामान्य बौद्धिक स्तर का आंकलन। अनुसंधान में उपयोगी।
- ✦ शैक्षिक सफलता का पूर्वानुमान।
- ✦ व्यक्तित्व का मूल्यांकन। छात्रवृत्ति प्रदान करने में उपयोगी।
- ✦ कक्षा का वर्गीकरण करने में सहायक। सैनिक, असैनिक व उद्योगों में उपयोगिता।
- ✦ शैक्षिक-व्यवसायिक निर्देशन देने में सहायक।
- ✦ शैक्षिक विधियों व साधनों का मूल्यांकन में सहायक।

**भारत में निर्मित अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण–**

- ✦ भारत में ई.ए. मेंजल, टी.सी. वीकारे, ड्रेपर, बोस, राय, देसाई, ए.एस. नैयर, एम.जी. प्रेमलता, टी.आर. शर्मा, एन त्रिवेदी व डी.एम. भावसर ने अशाब्दिक सामूहिक परीक्षण में योगदान दिया है।

**भारत में निर्मित प्रमुख परीक्षण–**

1. **डॉ. सी.एच. राईस का हिन्दुस्तानी परीक्षण – 1922** (लाहौर के FC कॉलेज के प्रिंसिपल) (शाब्दिक व्यक्तिगत परीक्षण) (उर्दू भाषा में) इसमें पांच उपपरीक्षण शामिल हैं। 5 – 16 वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी है।
2. **आयु मापन पुनरावृत्ति परीक्षण** – डॉ. वी.वी. कामत (शाब्दिक व्यक्तिगत परीक्षण)
3. **इलाहाबाद बुद्धि परीक्षण** – डॉ. सोहनलाल (व्यक्तिगत शाब्दिक परीक्षण)
4. **CIE बुद्धि परीक्षण** – प्रो. उदय शंकर 1953 (व्यक्तिगत अशाब्दिक परीक्षण)
5. **भाटिया कृत क्रियात्मक परीक्षण बैटरी** – चन्द्रमोहन भाटिया इसमें निम्न परीक्षण होते हैं –

- **कोह-ब्लॉक डिजाइन परीक्षण** – कोह 1923 – 10 डिजाईन (व्यक्तिगत क्रियात्मक परीक्षण)
- **पास एलाग परीक्षण** – अलैक्जेण्डर पॉस – 1932 – 9 डिजाइन।
- **पैटर्न ड्राईंग परीक्षण** – डॉ. चन्द्र मोहन भाटिया। 8 कार्ड शामिल है।
- **तात्कालिक स्मृति परीक्षण**
- **चित्र निर्माण परीक्षण** – पाँच तस्वीरें होती हैं, टुकड़ो में इनको जोड़कर चित्र बनाना होता है।

✦ **नोटः**– भाटिया, बैटरी परीक्षण के यह उपपरीक्षण है। भाटिया परीक्षण छोटे बच्चों, निदानात्मक अवलोकन व क्रियात्मक बुद्धि के लिये उपयोगी है।
यह परीक्षण **11 से 16 वर्ष** के बच्चों के लिए उपयोगी है।

**भारत में सामूहिक शाब्दिक परीक्षण–**

1. डॉ. जे. मैनरी का सामूहिक शाब्दिक परीक्षण।, (प्रिलीमिनरी क्लासिफिकेशन परीक्षण)
2. लज्जा शंकर झा कृत सामूहिक परीक्षण – 1933 (10 से 18 वर्ष)
3. डॉ. जलौटा कृत सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण 1951 (13 से 16 वर्ष)
4. टण्डन कृत सामूहिक परीक्षण
5. उदयशंकर कृत सी.आई.ई. परीक्षण (1953)
6. प्रयाग मेहता का सामूहिक परीक्षण (1962) (12 से 14 वर्ष)
7. जे भारत राज डीएसटी परीक्षण (डवलपमेंटल स्क्रीनिंग परीक्षण) (03 माह से 15 वर्ष) (भाषात्मक)

**नोटः**– भारत में पहला मिश्रित परीक्षण **पी.एन. मेहरोत्रा** ने 1975 में किया। 11 से 17 वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी

- ✦ इनके अलावा आहूजा (जी.सी.) ललित कुमार शाह, एम.सी. जोशी, प्रयाग मेहता, पी.वी. दुग्गल, पी.एस. हुण्डल, आई. वी. सिंह, पिल्ले व देसाई ने परीक्षण निर्माण किया है।

**शाब्दिक बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता–**

- ✦ पढ़े लिखे शिक्षित बालक व व्यक्तियों की बुद्धि के मापन में सहायक।

**अशाब्दिक परीक्षणों की उपयोगिता (क्रियात्मक परीक्षण)**

- ✦ अनपढ़ व्यक्ति, बच्चों का परीक्षण, बहरे, गूंगे, शर्मीले, अलग-अलग संस्कृति के लोग, मानसिक विकलांग व शैक्षिक कमी वाले बच्चों व व्यक्तियों के परीक्षण में उपयोगी।

| व्यक्तिगत परीक्षण | सामूहिक परीक्षा |
|---|---|
| 1. बच्चों व वयस्कों दोनों पर प्रयुक्त | 1. निश्चित स्तर के ऊपर के बच्चों के लिए (06 वर्ष से अधिक) |
| 2. विशेषज्ञों की आवश्यकता परीक्षण के लिए। | 2. कम कुशल व्यक्ति भी कर सकते हैं। |
| 3. समय अधिक लगता है | 3. कम समय |
| 4. कम वस्तुनिष्ठ | 4. ज्यादा वस्तुनिष्ठ |
| 5. ज्यादा खर्च | 5. कम खर्च |
| 6. कम स्वतन्त्रता | 6. ज्यादा स्वतन्त्रता |
| 7. प्रश्नों की संख्या कम | 7. अधिक |
| 8. अतिरिक्त सूचना प्रदान | 8. केवल संख्यात्मक सूचना |

Scanned with CamScanner

| शाब्दिक परीक्षा (Verbal) | अशाब्दिक परीक्षा (Non Verbal) |
|---|---|
| 1. भाषा का प्रयोग होता है। | 1. भाषा का नहीं होता, चित्र व मूर्त वस्तुओं का प्रयोग। |
| 2. अशिक्षित मंद बुद्धि, बहरे व गूंगे के लिए उपयोगी नहीं। | 2. यह इनके लिए उपयोगी होता है। |
| 3. अमूर्त बुद्धि का मापन। | 3. मूर्त बुद्धि का मापन। |
| 4. गुणों की तुलना संभव नहीं। | 4. इसमें संभव है। |
| 5. कम विश्वसनीय। | 5. अधिक विश्वसनीय। |
| 6. संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। | 6. इस पर संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ता। |

### विशेष तथ्य-

- रूसी मनोवैज्ञानिक वायगोत्सकी संस्कृति का व्यक्ति के बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका मानते हैं जैसे - समस्या का समाधान करने, चिंतन करने आदि शैलियाँ मुख्यत: संस्कृति का प्रतिफल होती है।
- बुद्धि पर वंशानुक्रम व वातावरण दोनों कारकों का प्रभाव पड़ता है।
- कृत्रिम बुद्धि - कम्प्यूटर, मशीन, रोबोट इत्यादि।
- बुद्धि के सिद्धान्तों को कारकीय सिद्धान्त में स्पीयरमैन, थर्स्टन, कैटेल, गार्डनर का सिद्धान्त व प्रक्रिया उन्मुखी सिद्धान्त में पियाजे का सिद्धान्त है।
- बुद्धि के वितरण की दृष्टि से व्यक्तियों में विभिन्नता पायी जाती है।
- बुद्धि पर लैंगिक विभिन्नताओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
- **वुडवर्थ के अनुसार बुद्धि में चार विशेषताएँ होती है :-**
  (1) पिछले अनुभवों का प्रयोग करना।
  (2) नयी स्थिति में सामंजस्य करना।
  (3) समस्या के केन्द्रीय बिन्दु को पहचानना।
  (3) जीवन के प्रतिव्यापक दृष्टिकोण।
- **बोरिंग** - बुद्धि परीक्षण जो मापता है वही बुद्धि है।
- **रॉबिन्सन** - बुद्धि से तात्पर्य संज्ञानात्मक व्यवहारों के सम्पूर्ण वर्गो से होता है जैसे समस्या समाधान, समायोजन, अमूर्त चिन्तन इत्यादि।
- **स्टर्नबर्ग में 3 बुद्धि का उल्लेख किया :-**
  (1) विश्लेषणात्मक बुद्धि (घटकीय बुद्धि) - समस्या को भागों में बांटकर समाधान करना।
  (2) सर्जनात्मक बुद्धि
  (3) व्यवहारिक बुद्धि
- **थार्नडाईक CAVD परीक्षण :-** (1) Completion - पूर्ण (2) Arithmetic - अंकगणितीय (3) Vocabulary - शब्दावली (4) Direction - दिशा
- **निसेर व सहयोग** - जटिल विचारों को समझने, पर्यावरण समायोजन, अनुभव से सीखने व चिंतन द्वारा बाधाओं को दूर करने की योग्यता होती है।
- **बुद्धि में चार योग्यता होती है:-**
  (1) संज्ञानात्मक क्षमता (2) सामाजिक क्षमता (3) सांवेगिक क्षमता (4) उद्यमी क्षमता
- **सामाजिक बुद्धि** - वह क्षमता जिसमें एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को समझता है व व्यवहार करता है।
- **मूर्त बुद्धि (व्यावहारिक)** - व्यक्ति ठोस वस्तुओं के महत्व को समझता है उनका परिचालन उपयुक्त ढंग से अलग-अलग परिस्थितियों में करता है। (व्यापार व व्यवसाय के ज्यादा उपयोगी।)
- **अर्मूत** - व्यक्ति गणितीय, शाब्दिक संकेत व चिहनों के सम्बन्ध को समझना। जैसे - सफल कलाकार, चित्रकार, गणितज्ञ
- **क्रासिस गाल्टन**- बुद्धि शब्द का प्रथम रूप में प्रयोग किया।
- **हावर्ड गार्डनर** - मूल रूप से बुद्धि के 9 प्रकार बताये हैं। बुद्धि एकाकी ना होकर बहुकारकीय स्वरूप की होती है यह एक दूसरे से स्वतन्त्र होती है।
- **तैथिक आयु** - वास्तविक आयु होती है।
- **डेनियल गोलमैन** - कनसोर्टियम फॉर रिसर्च ऑन इमोशनल इन्टेलिजेन्स के संस्थापक। (रूटजर्स विश्वविद्यालय)
- **बार ऑन** - संवेगात्मक बुद्धि वह क्षमता है जिसके द्वारा दिन-प्रतिदिन के पर्यावरणीय चुनौतियों के साथ निपटा जाता है व जीवन को सफलता प्रदान करती है।
- **जेन्सन** - बुद्धि बिजली के समान है जिसे परिभाषित करने की अपेक्षा मापना आसान है।

## संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence)

- यह वह बुद्धि है जिसका विकास कभी समाप्त नहीं होता अपितु समय के अनुसार बढ़ता जाता है।
- संवेगात्मक बुद्धि का विकास **थार्नडाइक** के 1920 ई. में दिये गये सामाजिक बुद्धि के सिद्धांत से होता है।
- **हावर्ड गार्डनर** 1983 में बहुबुद्धि का सिद्धांत दिया जिसें उन्होंने बुद्धि के 9 प्रकार बताये जिनमें -

1. व्यक्तिगत आत्मन/अन्त: व्यक्तित्व (Intrapersonal)
2. वैयक्तित्व अन्य/अन्तर वैयक्ति (Inter-Personal) है बुद्धि का संबंध संवेगात्मक बुद्धि से होता है।

- **संवेगात्मक बुद्धि की सर्वप्रथम धारणा** - जॉन मेयर, पिटर सेलोवी 1990 ई में अमेरिका
  पुस्तक - वाट इज ईआई (What is EI?)
  सफलता में योगदान - 80% E.Q., 20% I.Q.
- संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिपादक - डैनियल गोलमैन (अमेरिका 1995) (येल विश्वविद्यालय)
  पुस्तक - संवेगात्मक बुद्धि बुद्धिलब्धि से अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों? (EQ : Why it matter more than I.Q.)

Scanned with CamScanner

- **फ्रीमैन** - हम कैसे सोचते हैं, महसूस करते है को पहचाने में समझने का ढंग संवेगात्मक है।
- **डेनियल गोलमैन** - 'संवेगों को जानने, देखभाल करने व संबंध स्थापित करने की शक्ति संवेगात्मक बुद्धि कहलाती है।'
- **राबर्ट कुपर** - EQ संवगों की शक्ति प्रवीणता को जानने, समझने व लागू करने की योग्यता है।
- **जॉन मेयर व पिटर सेलोवी** -'संवेगात्मक बुद्धि वह योग्यता है जिसके द्वारा हम अपनी व दूसरे की भावनाओं का संचालन करते है, अन्तर करते हैं तथा उनसे निर्देशन प्राप्त करते हैं।'
- **मोरिस इलियस** - संवेगात्मक बुद्धि मानवों को पूर्ण करने के विचार से केन्द्रित करने में सहायता करती है।

## संवेग बुद्धि के तत्त्व (Elements of EQ)–

1. **आत्मजागरूकता/आत्मचेतना** (Self Awareness) - स्वयं की कमी व गुणों का ज्ञान
2. **आत्मनियंत्रण** (Self Control) भावनाओं में नहीं बहना
3. **आत्म अभिप्रेरणा** (Self Motivation) मास्टर एप्टीट्यूट–स्वयं की अभिप्रेरित करना

यह तीनों गुण व्यक्ति के अन्दर निहित होते हैं।

4. **समानुभूति/परानुभूति/तदानुभूति** (Empathy with others) - दूसरे की भावनाओं को समझना।
5. **सामाजिक दक्षताएँ** (Social Skills) नेतृत्व, समस्या समाधान, सम्प्रेषण, चिंतन, सजगता, संबंध आदि।

यह दोनों अन्तरव्यक्तिक होते हैं।

1. **योग्यता आधारित प्रतिमान :-**
   प्रतिपादक – **जॉन मेयर व पिटर सेलोवी**
   संवेगात्मक बुद्धि में निम्न योग्यताएं होती हैं -
   - संवेगों को प्रत्यक्षीकरण करने की योग्यता
   - विचारों के लिये संवेगों का प्रयोग करना।
   - संवेगों को समझने की योग्यता
   - संवेगों का प्रबंधन व नियमन करना।
2. **गुण आधारित प्रतिमान :- कैवी पैट्राइडस** संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तित्व का गुण है।
3. **मिश्रित प्रतिमान :- डेनियल गौलमेन**
   संवेगात्मक बुद्धि गुण व योग्यता दोनों है।

## संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता (Utility of EQ)–

1. जीवन को सुखमय व शान्तिप्रिय बनाने में सहायक
2. समायोजन स्थापित करने में सहायक
3. संबंध बनाने में सहायक
4. भविष्यवाणी (Predication) करने में सहायक
5. नेतृत्व के गुण का विकास करने में सहायक
6. सफलता व उपलब्धि प्राप्त करने में सहायक (सफलता में 80 प्रतिशत योगदान)
7. समस्या –समाधान में सहायक
8. तनाव को दूर करने में सहायक
9. अभिप्रेरित करने में, निर्णय करने में व भावनाओं को समझने में।
10. जीवन को संतुलन बनाने में व दूसरों का आदर करने में।
11. आत्म नियंत्रण

- **संवेगात्मक बुद्धि का सूत्र :-**

$$\text{डेनियल गोलमैन} \quad \frac{\text{संवेगात्मक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

- संवेगात्मक विकास व संवेगात्मक बुद्धि - पुस्तक - जॉन मेयर व पीटर सेलोवी (1997)

**विभिन्न परीक्षण :-**

1. मेयर इमोशनल इन्टेलीजेन्स स्केल - **जॉन मेयर**
2. मेयर सेलोवी एण्ड कारूसो इमोशनल इन्टेलीजेन्स टेस्ट - **मेयर पीटर/सेलोवी/डेविड का रूसों** (17 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए उपयोगी)
3. बार ऑन इमोशनल कोशेन्ट इन्वेन्टरी - **रेयुबेन बार**
4. मंगल संवेगात्मक बुद्धि मापनी - **डॉ. एल के मंगल शुभमंगल**

## संवेगात्मक बुद्धि के बालकों की विशेषताएँ–

1. आत्मविश्वासी
2. अच्छे अधिगमकर्ता
3. आत्म सत्कार की भावना
4. आशावादी
5. प्रसन्नचित
6. समस्या समाधान की योग्यता
7. संवेगों पर चिन्तन
8. स्पष्टवादी अभिव्यक्ति
9. संवेदनशील
10. संवेगों को समझ जाना
11. स्वतंत्रता व नैतिक मूल्यों में विश्वास

Scanned with CamScanner

### संवेगात्मक बुद्धि को प्रभावित करने वाले कारक–

1. अभिप्रेरणा
2. आत्मचेतना
3. सहयोग (Co-operation)
4. संवेगों की उचित अभिव्यक्ति (Expression of Emotion)
5. वातावरण
6. समानभूति (Empathy)
7. नेतृत्व (Leadership)

विशेष :-

- जॉन मेयर/सेलोवी - संवेग विशेष का प्रत्यक्षीकरण, विचार प्रक्रिया में समन्वय, समझना व प्रबन्धन करने की योग्यता EQ है।

### संवेगात्मक बुद्धि के विकास के उपाय–

1. संवेगों का समझने की योग्यता का विकास करना।
2. आत्मचेतना की शिक्षा प्रदान करना।
3. सहानुभूति का विकास करना व समानुभूति का विकास। विशेष - EQ बुद्धि का हृदय है।
4. स्वस्थ संवेगों का विकास करना।
5. चिन्तन व संवेगों के एकीकरण की शिक्षा
6. अन्तर्वैयक्तिक संबंधों के निर्माण की शिक्षा
7. अच्छे उदाहरण व आदर्श प्रस्तुत करना।
8. स्वयं की भावनाओं की देखभाल की शिक्षा।
9. संबंधों को विकसित करने की योग्यता का विकास।
10. आत्म जागरूकता व आत्म मूल्यांकन की योग्यता का विकास।
11. दूसरों की भावना को समझने की योग्यता का विकास।
12. आत्मप्रतिरूपण – स्वयं अपना आदर्श बनने की योग्यता का विकास
13. सृजनात्मक कार्यो के लिए प्रोत्साहित करना।

### कम संवेगात्मक बुद्धि वाले बालकों की विशेषता–

1. दोषारोपण की प्रवृत्ति।
2. जिम्मेदारी नहीं लेना।
3. गलतियाँ व दूसरों की शिकायत करना।
4. असंवेदनशीलता

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ संवेगों पर नियंत्रण पाने के लिये बालकों को अभ्यास कराना चाहिये- *[School Lect. Exam-2013]*
(A) आत्म चेतना का
(B) आत्म प्रेरणा का
(C) आत्म नियंत्रण का
(D) आत्मानुभूति का **(D)**

❖ बुद्धिलब्धि – मानसिक आयु × 100 ? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) औसत आयु (B) वास्तविक आयु
(C) पारिवारिक आयु (D) कोई नहीं (B)

❖ सामान्य बालक का बुद्धिलब्धि स्तर क्या होता है ? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) 70-80 (B) 81-90
(C) 91-110 (D) 111-120 (C)

❖ बुद्धिलब्धि मापन के जन्मदाता हैं ? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) स्टर्न (B) बिने
(C) टरमैन (D) कोई नहीं (B)

❖ जड़ बुद्धि वाले बालक की बुद्धि लब्धि कितनी होती है? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) 111-120 (B) 91-110
(C) 71- 80 (D) 70 से कम (D)

❖ आप देखते हैं कि एक छात्र बुद्धिमान है आप- **(UTET-I लेवल-2011)**
(A) उसके साथ संतुष्ट रहेंगे।
(B) उसे अतिरिक्त गृह कार्य नहीं देंगे।
(C) वह जैसे अधिक प्रगति कर सके, उस तरह उसे अनुप्रेरित करेंगे।
(D) उसके अभिभावक को सूचित करेंगे कि वह बुद्धिमान है (C)

❖ बुद्धि के समूह कारक सिद्धांत के प्रणेता हैं- **(सामान्य ज्ञान-II लेवल-2011)**
(A) थार्नडाइक (B) थर्स्टन
(C) स्पीयर मैन (D) थामसन (B)

❖ निम्नलिखित में से कौनसा कथन सत्य है ? **(उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011)**
(A) लड़के अधिक बुद्धिमान होते हैं।
(B) लड़कियाँ अधिक बुद्धिमान होती हैं।
(C) बुद्धि का लिंग के साथ संबंध नहीं है।
(D) सामान्यतः लड़के, लड़कियों से अधिक बुद्धिमान होते हैं। (C)

❖ बच्चे की बुद्धिलब्धि 90 से 110 के बीच है, वह है ? **(उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011)**
(A) सामान्य बुद्धि (B) प्रखर बुद्धि
(C) उत्कृष्ट (D) प्रतिभाशाली (A)

❖ पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमान होते हैं, यह कथन- **(CTET-II लेवल-2011)**
(A) सही है
(B) सही हो सकता है
(C) लैंगिक पूर्वाग्रह को प्रदर्शित करता है।
(D) बुद्धि के भिन्न पक्षों के लिए सही है। (C)

❖ विभिन्न वस्तुओं और विचारों के बीच जटिल संबंधों को समझाने की मानसिक क्षमता ही बुद्धि है- **(PTI - II ग्रेड-2012)**
(A) स्पीयरमैन (B) थार्नडाइक
(C) बिने व साइमन (D) थर्स्टन (D)

❖ अशाब्दिक बुद्धि परीक्षणों का प्रयोग किया जा सकता है? (आन्ध्रप्रवेश TET-II लेवल-2011)
(A) सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों के लिए
(B) अशिक्षित व्यक्तियों के लिए
(C) बच्चों के लिए
(D) शिक्षित एवं अशिक्षित दोनों प्रकार के व्यक्तियों के लिए (B)

❖ बुद्धिमत्ता का संबंध किससे है ? (बिहार TET-II लेवल-2012)
(A) केन्द्रीय चिंतन से (B) बहुआयामी चिंतन से
(C) सृजनात्मक से (D) उपर्युक्त सभी से (D)

❖ विशिष्ट बालक का संबंध होता है- (बिहार TET-II लेवल-2012)
(A) बुद्धि से (B) शिक्षा से
(C) पाठ्यसामग्री से (D) खेल से (A)

❖ एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की विभिन्न अधिगम शैलियों को संतुष्ट करने के लिए वैविध्यपूर्ण कार्यों का उपयोग करती है वह ....... से प्रभावित है ? (CTET-I लेवल-2012)
(A) कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत
(B) गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धांत
(C) वाइगॉत्सकी के सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत
(D) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत (B)

❖ बहुबुद्धि सिद्धांत के अनुसार सभी प्रकार के पशुओं, खनिजों और पेड़-पौधों को पहचानने और वर्गीकृत करने की योग्यता ........ कहलाती है ? (CTET-II लेवल-2012)
(A) तार्किक गणितीय बुद्धि (B) प्राकृतिक बुद्धि
(C) भाषिक बुद्धि (D) स्थानिक बुद्धि (B)

❖ अधिकांश व्यक्तियों की बुद्धि औसत होती है, बहुत कम लोग प्रतिभा सम्पन्न होते हैं और बहुत कम व्यक्ति मंद बुद्धि के होते हैं, यह कथन ......के प्रतिस्थापित सिद्धांतों पर आधारित है ? (CTET-I लेवल-2012)
(A) बुद्धि और जातीय विभिन्नताओं
(B) बुद्धि के वितरण
(C) बुद्धि की वृद्धि
(D) बुद्धि और लैंगिक विभिन्नताओं (B)

❖ गिलफोर्ड के बुद्धि संबंधी मॉडल के कुल कोष्ठ (खाने) हैं ? (उर्दू-II लेवल-2010)
(A) 30 (B) 60
(C) 80 (D) 120 (D)

❖ किसी 10 वर्षीय बालक की मानसिक आयु 14 वर्ष है, वह कहलाएगा ? (उर्दू-II लेवल-2010)
(A) प्रतिभाशाली (B) सृजनशील
(C) मंद बुद्धि (D) जड़ बुद्धि (A)

❖ निम्न में से गिलफोर्ड ने कौनसा बुद्धि का सिद्धांत प्रतिपादित किया ? (अंग्रेजी-II लेवल-2010)
(A) बुद्धि-संरचना सिद्धांत (B) बुद्धि का एक खंड सिद्धांत
(C) बुद्धि का द्विखंड सिद्धांत
(D) बुद्धि का बहुखंड सिद्धांत (A)

❖ निम्न में से किसने बुद्धि के बहुखंड सिद्धांत का प्रतिपादन किया? (विज्ञान-II लेवल-2010)
(A) बिने (B) स्पीयरमैन
(C) थर्स्टन (D) थार्नडाइक (D)

❖ गिलफोर्ड के बुद्धि संबंधी सिद्धांत हैं- (हिन्दी-II ग्रेड- 2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)
(A) एक तत्त्व सिद्धांत (B) द्वितत्त्व सिद्धांत
(C) त्रिआयामी सिद्धांत (D) बहुतत्त्व सिद्धांत (C)

❖ अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से संबंधित है ? (बिहार TET-I लेवल-2012)
(A) बौद्धिक विकास से (B) सामाजिक विकास से
(C) शारीरिक विकास से (D) उपर्युक्त सभी (A)

❖ थार्नडाइक ने बुद्धि का कौनसा सिद्धांत प्रतिपादित किया ? (बिहार TET-I लेवल-2012)
(A) एक कारक सिद्धांत (B) द्विकारक सिद्धांत
(C) बहुकारक सिद्धांत (D) ग्रुप तत्व सिद्धांत (C)

❖ मानसिक रूप से विकलांग बालक से निम्नलिखित में से कौन संबंधित नहीं है? (BTET-I लेवल-2012)
(A) जड़बुद्धि (B) गूढ़ बुद्धि
(C) असामाजिक कार्य (D) अल्प बुद्धि (C)

❖ बुद्धि के द्विखण्ड सिद्धांत का प्रतिपादन किसने किया? (छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011)
(A) स्पियरमैन (B) थर्सटन
(C) गिलफोर्ड (D) गेने (A)

❖ एक 12 वर्षीय बालक की मानसिक आयु 10 वर्ष है, वह किस श्रेणी में आएगा? (संस्कृत-II लेवल-2010)
(A) औसत (B) प्रतिभाशाली
(C) मंद बुद्धि (D) जड़ (C)

❖ गिलफोर्ड के बुद्धि संबंधी मॉडल में निम्न में से कौनसा आयाम नहीं है ? (संस्कृत-II लेवल-2010)
(A) विषयवस्तु (B) संक्रिया
(C) अन्तर्वस्तु (D) उत्पादन (C)

❖ निम्न में से किसका निश्चय केवल आनुवंशिकता के आधार पर होता है ? (गणित-II लेवल-2010)
(A) बुद्धि (B) लिंग
(C) व्यक्तित्व (D) ऊँचाई (A)

❖ एक बालक जिसकी बुद्धिलब्धि 105 है उसे वर्गीकृत किया जाएगा- (छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012)
(A) श्रेष्ठ बुद्धि (B) सामान्य से अधिक बुद्धि
(C) सामान्य बुद्धि (D) मन्द बुद्धि (C)

Scanned with CamScanner

❖ जड़ बालकों की बुद्धिलब्धि होती है ? **(RPSC 2007, तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) 70 से कम (B) 25 से कम
(C) 25 से 50 के बीच (D) 80-90 के बीच (B)

❖ एक 16 वर्षीय किशोर की मानसिक आयु 15 वर्ष है, वह किस श्रेणी में आएगा ? **(हिन्दी-II लेवल-2010)**
(A) प्रतिभाशाली (B) औसत
(C) मंद बुद्धि (D) जड़ (B)

❖ ई.क्यू. एवं आई.क्यू. उदाहरण हैं ? **(प्रधानाध्यापक परीक्षा-2012)**
(A) प्राप्त हुए प्रदत्त (B) मानक प्रदत्त
(C) निकाले गए प्रदत्त (D) व्यक्तिगत प्रदत्त (B)

❖ निम्नलिखित में से कौन-सा कथन बुद्धि के बारे में सत्य नहीं है? **(RTET-II लेवल-2012)**
(A) यह एक व्यक्ति की मानसिक क्षमता है।
(B) यह सामंजस्य स्थापित करने में सहायक है।
(C) यह व्यवहार की गुणवत्ता से आंकी जाती है।
(D) यह स्थाई एवं अपरिवर्तनशील विशेषता है। (D)

❖ प्राय: बालकों की बुद्धि का मापन किया जाता है- **(RTET-II लेवल-2012)**
(A) अवाचिक समूह बुद्धि परीक्षणों के द्वारा
(B) वाचिक समूह बुद्धि के परीक्षणों द्वारा
(C) अवाचिक व्यक्तिगत बुद्धि के परीक्षणों द्वारा
(D) वाचिक व्यक्तिगत बुद्धि के परीक्षणों के द्वारा (A)

❖ निम्न में से कौन बुद्धि परीक्षणों के दुरुपयोग का संकेत देता है? **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) उन्नति के लिए मापन में सहायक होते हैं
(B) बुद्धिलब्धि का लेवल बालकों पर लगाकर अध्यापक अपनी अकुशलता को छिपाते हैं।
(C) बालकों को वर्गीकृत करने में सहायक होते है।
(D) अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए होते है। (B)

❖ एक बच्चे की मानसिक आयु 12 वर्ष है एवं वास्तविक आयु 10 वर्ष है तो उसकी बुद्धि-लब्धि क्या होगी ? **(छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)**
(A) 110 (B) 100
(C) 120 (D) 83 (C)

❖ एक 11 वर्षीय बालक, जिसकी मानसिक आयु 10 वर्ष है, किस श्रेणी में आएगा- **(गणित-II लेवल-2010)**
(A) प्रतिभाशाली (B) मंद बुद्धि
(C) तीव्र बुद्धि (D) औसत बुद्धि (D)

❖ 0 से 25 बुद्धिलब्धि को कहते हैं ? **(गणित-II लेवल-2010, तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) मूर्ख बालक (B) जड़ बालक
(C) पिछड़े बालक (D) मंद बुद्धि बालक (B)

❖ यह औसत बुद्धिलब्धि का द्योतक है-**(संस्कृत, RPSC-II लेवल-2009, तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) 70-91 (B) 91-111
(C) 111-120 (D) 121-140 (B)

❖ बुद्धि के बहुकारक सिद्धांत के प्रतिपादक हैं? **(BTET-I लेवल-2011, तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती, 2012)**
(A) मेक्डूगल (B) टरमैन
(C) थार्नडाइक (D) बर्ट (C)

❖ थार्नडाइक का बुद्धि संबंधी सिद्धांत हैं ? **(गणित-II लेवल-2010)**
(A) एक तत्व सिद्धांत (B) द्वितत्त्व सिद्धांत
(C) बहु तत्व सिद्धांत (D) त्रिआयामी सिद्धांत (C)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 10 व्यक्तिगत विभिन्नताएँ व सृजनात्मकता

- **अर्थः**- कोई भी दो बालक समान नहीं होते ।

**परिभाषाएँ-**

- **स्कीनर** के अनुसारः- व्यक्तिगत विभिन्नता के अन्तर्गत कोई भी ऐसा पहलू शामिल हो सकता है जिसका मापन किया जा सके।
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सर्वप्रथम अध्ययन करने वाले - फ्रांसिस गाल्टन। (1880)
  पुस्तक - Hereditary Genius
- **जेम्स ड्रेवर** - औसत समूह से मानसिक, शारीरिक विशेषताओं के सन्दर्भ में अंतर को वैयक्तिक भिन्नता कहते हैं। व्यक्तिगत विभिन्नताएँ मात्रात्मक व संख्यात्मक रूप में होती हैं ना की गुणात्मक।
- **टॉयलर** - शरीर के रंग, रुचि, उपलब्धि, आकार आदि की विभिन्नता व्यक्तिगत विभिन्नता है।

**व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार-**

**प्रकार प्रमुख**

- भौतिक विभिन्नता ↓ शारीरिक विभिन्नता ↓ व्यक्तित्व विभिन्नता ↓ आयु विभिन्नता ↓ यौन विभिन्नता ↓ गामक विभिन्नता ↓ सामाजिक विभिन्नता
- भौतिक विभिन्नता ↓ रूचि विभिन्नता ↓ अभिवृति विभिन्नता ↓ अभिक्षमता विभिन्नता ↓ उपलब्धि विभिन्नता ↓ आदत विभिन्न ↓ आत्म सम्प्रत्यय ↓ आकांक्षा सम्प्रत्य ↓ मूल्य विभिन्नता
- अन्तः व्यक्तिगत विभिन्न (व्यक्ति के अन्दर) ↓ शारीरिक ↓ मानसिक ↓ अभिरूचि ↓ क्षमता ↓ अभिप्रेणा ↓ विचार में विभिन्नता
- अन्तर व्यक्तिगत (एक व्यक्ति दूसरे से भिन्न) ↓ बुद्धि ↓ लिंग ↓ रूचि ↓ सामाजिक विकास ↓ गामक विभिन्न ↓ सामाजिक विभिन्न

**व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार/क्षेत्र (Types of Individual Difference)-**

1. **शारीरिक विभिन्नताएँ** - बड़ा छोटा, काला गोरा रंग, मोटा पतला, इत्यादि।
2. **मानसिक विभिन्नताएँ** - प्रतिभाशाली, मन्द बुद्धि।
3. **संवेगात्मक विभिन्नताएँ** - शान्त, आक्रमणशील, क्रोधी इत्यादि।
4. **सीखने की गति में विभिन्नताएँ** - कोई तेज गति से तो कोई मन्द।
5. **विचारों की विभिन्नताएँ** - कोई राजनैतिक कोई गैर राजनैतिक।
6. **व्यक्तित्व में विभिन्नताएँ** - अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयर्मुखी।
7. **रूचियों में विभिन्नताएँ** - कोई खेलने में कोई अध्ययन में।
8. **चरित्र में विभिन्नताएँ** - कोई नैतिक कोई अनैतिक।
9. **गामक विभिन्नताएँ** - बालक जल्दी चलना सीखता है दूसरा नही सीख पाता हैं।
10. **लैगिक विभिन्नताएँ** - स्त्रियों का हस्तलेख अच्छा, कला में अन्तर, भाषायी योग्यता में अन्तर पाया जाता है।
11. **उपलब्धि विभिन्नताएँ** - प्रत्येक व्यक्ति अलग - अलग होते हैं।

Scanned with CamScanner

**व्यक्तिगत विभिन्नताओं को प्रभावित करने वाले कारक/कारण–**

1. **वंशानुक्रम** – शारीरिक विभिन्नता व मानसिक विभिन्नता पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।
2. **वातावरण** – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा व्यक्तित्व के प्रत्येक भाग को प्रभावित करता है।
3. **प्रजाति/जाति** – क्षत्रिय, व्यापारी, ब्राह्मण के अन्तर दिखायी देता है उसी प्रकार अमेरिकन व नीग्रो जाति के लोगों की विभिन्नताएं पायी जाती हैं।
4. **शिक्षा** – साक्षार व निरक्षर ने व्यवहार विभिन्नता पायी जाती हैं।
5. **लिंग का प्रभाव** – लड़कियाँ अधिक दयालु, सहानुभूति पूर्व व कोमल जबकी लड़के बहादुर कठोर व कार्यकुशल होते है।
6. **आर्थिक स्थिति का प्रभाव** – निर्धनता व अमीरी भी प्रभावित करती है।
7. **आयु का प्रभाव**
8. **परिपक्वता का प्रभाव**
9. **बुद्धि का प्रभाव**

**व्यक्तिगत विभिन्नताओं का शैक्षिक महत्त्व–**

- बालकों का वर्गीकरण करने में सहायक।
- गृहकार्य देने में सहायक।
- व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान करने में सहायक।
- शिक्षण विधि का चयन करने में सहायक।
- उपयोगी पाठ्यक्रम का निर्माण करने में सहायक।
- बालकों की विशिष्ट रुचियों का विकास करने में सहायक।
- कक्षा का वर्गीकरण करने में सहायक।
- शारीरिक दोषों के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में सहायक।

**विशिष्ट बालक (Special Child)–**

**विशिष्ट बालक**

**शारीरिक रूप से विशिष्ट**
(1) दृष्टि विकलांग बालक
(2) वाक् विकलांग बालक
(3) श्रवण दुर्बल बालक
(4) गत्यात्मक अक्षम बालक

**शैक्षित रूप से विशिष्ट**
(1) शैक्षिक तीव्र बालक
(2) शैक्षिक रूप से पिछड़े बालक
(3) सीखनें में अयोग्य बालक

**मानसिक रूप से विशिष्ट**
(1) प्रतिभा सम्पन्न बालक
(2) सृजनात्मक बालक
(3) मानसिक मंद बालक

**सामाजिक रूप से विशिष्ट**
(1) कुसमायोजित बालक
(2) समस्यात्मक बालक
(3) बाल अपराधी
(4) विचलित बालक
(5) नशे के आदी बालक
(6) संवेगात्मक से विचलित बालक

- **वैयक्तिक विभिन्नता के अध्ययन की विधियां :–**
1. बुद्धि परीक्षण (I.T.)
2. उपलब्धि परीक्षण (A.T.)
3. संवेग परीक्षण (E.T.)
4. अभिक्षमता परीक्षण (Aptitude Test)
5. अभिरुचि परीक्षण (Interest Test)
6. व्यक्तित्व परीक्षण (Personality Test)

**विशिष्ट बालक के प्रकार विभिन्न विद्वानों के अनुसार –**

- **क्रिक व गालाधर** – वो बालक जो औसत बालक से मानसिक गुणों में, शारीरिक गुणों में, सामाजिक व्यवहार में, संचार क्षमता में व बहुविकलांगता में विचलित होते हैं विशिष्ट कहलाते हैं।
- **ओरलैन्सकी के अनुसार (Orlansky)** – ''विशिष्ट एक ऐसा पद है जिसका तात्पर्य किसी भी ऐसे बालक से होता है जिसका निष्पादन (Performance) मानक (Standard) से ऊपर या नीचे इस हद तक विचलित होता है कि उसके लिए विशेष शिक्षा के कार्यक्रम की आवश्यता होती है।''
- **हैवार्ड तथा औरलेन्सकी** ने विशिष्ट बालक के 9 प्रकार बताये हैं –

| | |
|---|---|
| 1. प्रतिभाशाली | 2. मानसिक मन्द |
| 3. अधिगम असमर्थ बालक | 4. व्यवहार रोगग्रस्त बालक |
| 5. संचार रोगग्रस्त बालक | 6. श्रव्य दोष ग्रस्त बालक |
| 7. शारीरिक विकलांग बालक | 8. दृष्टि दोष ग्रस्त बालक |
| 9. गंभीर व बहुविकलांगता ग्रस्त बालक | |

- **टिली व लेविस** ने 6 प्रकार बताये हैं –

| | |
|---|---|
| 1. प्रतिभाशाली | 2. मन्द बुद्धि |
| 3. अधिगम असमर्थ | 4. मानसिक रोग ग्रस्त बालक |
| 5. शारीरिक विकलांग | 6. बहुविकलांग |

- विशिष्ट बालक वे होते हैं जो अपनी मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक व सामाजिक विशेषताओं में साधारण बालकों से इतने भिन्न होते हैं कि उन्हें अपनी अधिकतम क्षमता तक विकसित होने के लिए विद्यालय के वातावरण में सुधार या विशेष शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता होती है।
- हैवार्ड/ऑरलॅनस्की ने पुस्तक – 'एक्सेप्शनल चिल्ड्रेन' में कहा है इनका निष्पादन मानक इतना विचलित होता है कि उनके लिए विशेष शिक्षा कार्यक्रम की जरूरत पड़ती है।

**प्रकार (Types) –**

1. **बौद्धिक रूप से विशिष्ट** – प्रतिभाशाली, सृजनशील अधिगम अयोग्य पिछड़े बालक, मानसिक विकलांग बालक इत्यादी।
2. **संवेगात्मक रूप से विशिष्ट** – अपराधी बालक, संवेगात्मक अस्थिर बालक।
3. **शारीरिक विशिष्ट** – दृष्टिदोष युक्त बालक, श्रव्य दोष बालक, वाकदोष, बालक, मस्तिष्क दोष बालक।
4. **बहुविकलांग** – जिनके एक से अधिक दोष होते हैं।

- वे बालक जो सामान्य बालकों की अपेक्षा असामान्य विशेषताओं से युक्त होते हैं।

**1. प्रतिभाशाली बालक (Gifted Child) –**

- **टर्मन व ओडेन**:– ये बालक शारीरिक गठन, सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व लक्षण, विद्यालय उपलब्धि में सामान्य बालकों से श्रेष्ठ होते हैं।
- **स्कीनर व हैरीमैन** के अनुसार:– प्रतिभाशाली शब्द का प्रयोग उन 1 प्रतिशत बालकों के लिए किया जाता है जो सबसे अधिक बुद्धिमान होते हैं।
- **प्रतिभाशालिता** – उच्च योग्यता, उच्च सर्जनात्मकता, उच्च प्रतिबद्धता
- **पॉविट्टी** – प्रतिभाशाली बालक वे बालक होते हैं जिनका कार्य प्रदर्शन मानव प्रयास में अनोखा होता है व शैक्षिक रूप से श्रेष्ठ होते हैं।
- **टर्मन व विट्टी** – प्रतिभाशाली बालक वे होते है जो शारीरिक विकास, शैक्षिक उपलब्धि, बुद्धि और सामाजिक व्यक्तित्व में श्रेष्ठ होते हैं।
- **कोलसेनिक** – प्रतिभाशाली शब्द का प्रयोग जो अपने आयु स्तर के बालकों में योग्यता में उत्कृष्ट हो।
- **हैविगहर्स्ट** – वह बालक जो महत्वपूर्ण प्रयास में अनोखा कार्य प्रदर्शन या व्यवहार दर्शाता है।
- **हालिंगवर्थ** – वह बालक जो सामान्य बालक की अपेक्षा शैक्षिक रूप से श्रेष्ठ हो।
- **जेम्स ड्रेवर** – सामान्य रूप से किसी विशेष क्षेत्र में उच्च बौद्धिक योग्यता रखने वाला बालक प्रतिभाशाली होता है।
- **टोरेन्स** – प्रतिभाशाली बालक मानव व्यवहार के किसी क्षेत्र में उत्तम निष्पादन करता है जो समाज के लिए महत्वपूर्ण होता है।

**प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान :-**

1. उपलब्धि परीक्षण द्वारा
2. उच्चवृत्ति परीक्षण
3. माता-पिता, अध्यापकों की रिपोर्ट
4. बुद्धि परीक्षण

**प्रतिभाशाली बालकों की विशेषताएँ :-**

- जन्मजात होते है न की अर्जित।
- इन बालकों की बुद्धि लब्धि 140 व उससे अधिक।

  **नोट :- क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार – इन बालकों की बुद्धि लब्धि 130 व उससे अधिक होती है।
- विशाल शब्दकोष पाया जाता है – सामान्यीकरण की योग्यता।
- स्कूल पाठ्यक्रम की सभी क्रियाओं के सक्रिय भाग लेना।
- बड़ी आयु के मित्र बनाना।
- ध्यान निरन्तर/कार्य को ईमानदारी से करना।
- अन्वेषण की प्रवृत्ति।
- तीव्र गति, उतावलापन।
- विषय का गहन ज्ञान।
- सामान्य अध्ययन में रुचि रखते हैं- विभेदन करनी की योग्यता।
- तार्किक जिज्ञासु व उत्तरदायित्व युक्त होते हैं –
- अमूर्त विषयों में रुचि – आत्म सम्मान का उच्च स्तर।
- अध्ययन में अद्वितीय सफलता अर्जित करते हैं – सूचना प्रक्रमण की उच्च प्रवृत्ति।
- स्वतंत्र निर्णय शक्ति (प्रश्न करने की प्रवृत्ति)
- शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हैं – स्वतंत्र चिंतन
- नेतृत्व का गुण पाया जाता हैं।
- पर्यावरण परिवर्तन के प्रति उच्च संवेदनशीलता।
- मूल्यों से युक्त – भाषा कौशल शीघ्र प्रकटीकरण, आश्चर्यजनक अन्तःदृष्टि, एकान्तवासी अध्ययन।
- तथ्यों के मध्य संबंधों का प्रत्यक्षण जल्द करना।
- दूसरों के भाव व अधिकारों के प्रति संवेदनशील होना।
- विषय का गहन ज्ञान।
- पुनरावृति से जल्दी ऊब जाना।

**प्रतिभाशाली बालकों की निषेधात्मक विशेषताएँ :-**

1. बैचेन व ऊद्यम प्रवृति के होते हैं।
2. रुचि ना होने पर बिल्कुल लापरवाह हो जाते हैं।
3. दूसरों की आलोचना करते हैं।
4. स्वार्थी, अभिमानी, व ईर्ष्यालू व्यवहार करते हैं
5. लिखावट खराब व शब्द जोड़ अशुद्ध होते हैं।
6. नियम व सिद्धान्तों के खिलाफ आवाज उठाना।

**प्रतिभाशाली बालकों की समस्या:-**

1. समायोजन की बाधाएँ – माता-पिता व अध्यापक द्वारा अलग-अलग व्यवहार करने के कारण वे दूसरे बच्चो से अपने को अलग समझते हैं।
2. मनोवैज्ञानिक समस्या – माता- पिता व अध्यापकों से मान्यता ना मिलने पर अहम्, विरोध व हीनभाव से ग्रस्त होता है, हवाई किले बनाना।
3. सामाजिक विकास समस्या – बुद्धि के अन्तर होने के कारण वे वयस्कों के साथ अन्तःक्रिया नहीं कर पाते है।
4. बुद्धि का अनुचित उपयोग – निर्देशन ना मिले तो अनुशानहीनता षड़यन्त्र आदि में शामिल हो जाते हैं।

**प्रतिभाशाली बालक की शिक्षा:-**

- व्यक्तिगत शिक्षण व निर्देशन – पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन (विशिष्ट समूह शिक्षा)
- संवर्धन कार्यक्रमों (Enrichment Programme) का आयोजन (पृथक

Scanned with CamScanner

कक्षाएँ), वाद-विवाद, निबंध, खेल, पर्यटनों इत्यादि।

- विशाल व उपयोगी पाठ्यक्रम व विविधता युक्त हो (योग्य व प्रभावकारी शिक्षक का प्रावधान)
- विशेष शिक्षण विधि - योजना, अनुसंधान, प्रयोगात्मक, सामाजीकृत अभिव्यक्त विधि
- सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा - पुस्तकालय सुविधा, उत्तरदायित्व कार्य।
- तीव्र उन्नति - एक वर्ष में दो कक्षा उत्तीर्ण करने की छूट-छात्रवृत्तियाँ, छात्रावास की सुविधा।
- नेतृत्व का प्रशिक्षण, योग्य अध्यापक द्वारा शिक्षण, डे सेन्टर - वर्ग उन्नति (Grade Acceleration)/अतिरिक्त उन्नति (Extra Promotion)
- पृथक शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा।

**कोठारी आयोग - प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा :-**

**प्रमुख सुझाव:-**

- प्रतिभा की खोज निरन्तर चलनी चाहिए।
- छात्रवृत्तियों द्वारा प्रोत्साहन
- संवर्धन कार्यक्रमों का आयोजन
- सहपाठयान्तर क्रियाएँ
- डे सेन्टर (छात्रावास)
- भ्रमण की व्यवस्था
- प्रशिक्षित अध्यापकों की व्यवस्था
- ग्रीष्म अवकाश कार्यक्रम नीति
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 व प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा
- नवोदय विद्यालय का सुझाव - विशेष प्रतिभा के लिए आवासीय व नि:शुल्क विद्यालय

## 2. पिछड़े बालक (Backward Child) -

- **अर्थ :-** जो बालक कक्षा का औसत कार्य नहीं कर पाते हैं, तथा औसत छात्रों से पीछे रह जाते है वे पिछड़े कहलाते हैं।
- **शोनेल के अनुसार** - वे बालक जो अपनी आयु के अन्य सामान्य छात्रो की तुलना में विशेष शैक्षिक मन्दता दिखाता है।
- **सिरिल बर्ट** के अनुसार:- वे बालक जो विद्यालय जीवन के मध्य में अपने से नीचे की उस कक्षा औसत कार्य नहीं कर पाते हैं जो, उनकी आयु के बालकों के लिए सामान्य होता है।
- बर्ट ने इन बालकों का शिक्षा अंक 85 से कम बताया।
- शिक्षा अंक का सूत्र = $\frac{\text{उपलब्धि स्तर}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$
- **बार्टन हार्ट** के अनुसार:- पिछड़े बालक उन बच्चों के लिए प्रयुक्त होता है जिनकी शिक्षा प्रासियां उस स्तर से घटिया होती हैं जिसके वे योग्य होते हैं।

**पिछड़ेपन का प्रकार :-**

1. सामान्य - सभी विषयों में कमजोर।
2. विशिष्ट - विषय विशेष में कमजोर।

**विशेषताएँ :-**

- इन बालकों की बुद्धि लब्धि 80 - 90 होती है।
- सीखने की गति धीमी होती है।
- सामान्य पाठ्यक्रम से लाभ उठाने में असमर्थ।
- कम मानसिक केन्द्रीकरण
- निराशावादी
- सामान्य ज्ञान का अभाव
- असमंजस की स्थिति में रहते हैं।
- सीमित शब्द भण्डार
- ध्यान विस्तार कमजोर, विस्मृति शीघ्र, सृजनात्मकता का अभाव, समस्या-समाधान कमजोर।

**पिछड़े बच्चों की समस्याएँ :-**

1. संवेगात्मक समस्याएँ - हीनभाव, निराशा का भाव, अस्थिर रहना
2. सामाजिक समस्याएँ - बहुत कम मित्र होते हैं, कदाचारी अपराधी बन जाना, समाज विरोधी व्यवहार।
3. मानसिक समस्याएँ - कक्षा में उपलब्धि स्तर कमजोर बुद्धि लब्धि कमजोर,
4. शैक्षिक समस्याएँ - नीचे की कक्षा का कार्य नहीं कर पाना, सामान्य पाठयक्रम व सामान्य शिक्षण विधियों में कठिनाई के चलते विद्यालय के समायोजन नही कर पाना।

**बर्ट व शोनेल के अनुसार पिछड़े बालकों की विशेषताएं :-**

1. कम मानसिक आयु
2. शैक्षिक मन्दता
3. कम शैक्षिक उपलब्धि
4. श्रेणी कार्य, गृहकार्य, कक्षा परीक्षणों में कमजोर
5. सामान्य बच्चों के साथ गति करने में असमर्थ

**पिछड़ेपन के कारण :-**

- शारीरिक दोष/रोग - क्षीण स्वास्थ्य दृष्टि, श्रवण, वाक दोष, रोग-सिरदर्द, तपेदिक इत्यादि।
- परिवार का प्रभाव - निर्धनता, आकार, माता-पिता अशिक्षा, झगड़े, माता पिता का दृष्टिकोण पक्षपात व्यवहार इत्यादि।
- समाज का प्रभाव - पड़ोसी साहित्य।
- विद्यालय का वातावरण - दोषपूर्ण समय सारणी अध्यापकों की योग्यता दोषपूर्ण पाठ्यक्रम शिक्षण विधि
- निम्न बुद्धि लब्धि, 90 से कम, ध्यान केन्द्र अभाव, रुचि अभिरुचि का अभाव।
- शैक्षिक निर्देशन का अभाव कठोर वातावरण

**पिछड़पन के बच्चों की शिक्षा :-**

- दैनिक जीवन से जोड़ते को पढ़ाना।
- सहानुभूतिपूर्व व स्नेहपूर्ण व्यवहार
- शैक्षिक व व्यवसायिक निर्देशन
- मूर्त वस्तुओं का प्रयोग।
- विशिष्ट विद्यालयों में शिक्षण - जो व्यक्तिगत ध्यान, विशेष अध्यापक, श्रव्य-दृश्य सहायक साधनों का प्रयोग।
- सरल व रुचिपूर्ण पाठ्यक्रम - जीवन केन्द्रित शिक्षा, धीमी गति शिक्षा।
- सरल व शिक्षण विधि - शैक्षिक पर्यटन, खेल का प्रयोग,

**निदानात्मक, उपचारात्मक विधि।**

- सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा।
- हस्तकौशल की शिक्षा - शारीरिक श्रम की शिक्षा, सांस्कृतिक शिक्षा, नृत्य संगीत नाटक कार्य पुस्तकों का प्रयोग, गति की अपेक्षा शुद्धता पर बल, मौखिक कार्यो पर बल, चित्रकारी इत्यादि की शिक्षा।
- बहुमुखी व विविध कोष जीवन केन्द्रित शिक्षा, सांस्कृतिक, नृत्य, संगीत, नाटक, कला।
- कार्य पुस्तकों का प्रयोग/सर्वेदृश्य से सहायक सामग्री का प्रयोग।

Scanned with CamScanner

3. मन्दबुद्धि बालक (Mentally Deficient Child)–

- क्रो एण्ड क्रो के अनुसारः– वे बालक जिनकी बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है, मन्दबुद्धि बालक होते हैं ।
- स्कीनर जो छात्र एक वर्ष में निर्धारित कार्यक्रम पूरा नहीं कर पाते है मन्द बुद्धि छात्र कहलाते हैं।

**मानसिक मंदता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–**

- मानसिक मंदता का सबसे पहला महत्त्वपूर्ण अध्ययन फ्रांस (France) में 1799 में जीन इटार्ड (Jean Itard) द्वारा किया गया जब उन्होंने विक्टर नामक बच्चे का अध्ययन किया तथा जिसे 'वाइल्ड वॉय ऑफ ऐभेरोन' (Wild Boy of Averon) के शीर्षक के तहत प्रकाशित किया गया।

इटार्ड के इस कार्य से प्रोत्साहन प्राप्त करके उनके एक शिष्य जिसका नाम इडोआर्ड सेगुईन (Edowata Seguin) था, ने 1837 में पेरिस में मानसिक रूप से मंदित बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र (training centre) खोला।

- 1940 में इंग्लैंड में मानसिक रूप से मंदित बच्चों के लिये पहला आश्रम (asylum) खोला गया जबकि अमेरिका में ऐसे बच्चों के लिए पहला इस ढंग का संस्थान 1847 में मैचास्यूसेट्स (Massachusetts) में खोला गया था जिसका नाम 'वाल्टर ई. *फर्नल्ड स्टेट* स्कूल' ( Walter E. Fernald State School) था।
- मानसिक मंदता के इतिहास में ग्रिगोर मेन्डल (Gregov Mendel) का कार्य जिसमें आनुवंशिकता (heredity) के महत्त्व पर अधिक बल डाला गया, काफी महत्त्वपूर्ण है। आर.एल. इगडेल (R.L. Dugdale) ने 1877 में मानसिक मंदता का सबसे पहला पारिवारिक अध्ययन किया जिसमें उन्होंने मानसिक रूप से मंदित दो बहनों के पारिवारिक वंशवृक्ष (family pedigree) तैयार किया और पाया कि उनके बच्चों मे मानसिक मंदता उत्पन्न होने की संभावना काफी अधिक थी। कुछ वर्षो बाद अर्थात 1912 में एच.एच. गोडार्ड (H.H. Godard) कालिकाक (Kallikak Family) परिवार पर अध्ययन किया गया। परिणाम को प्रकाशित किया जिसमें भी मानसिक मंदता का एक स्पष्ट आनुवंशिक आधार पाया गया।

**मानसिक दुर्बलता की प्रमुख विशेषताएँ–**

1. **सीमित बौद्धिक क्षमता (Limited Intellectual Capacity)** – मानसिक दुर्बलता का सबसे प्रमुख लक्षण बौद्धिक क्षमता है।
2. **सीमित समायोजन व्यवहार (Limited Adaptive Behaviour)** – मानसिक दुर्बलता में समायोजन-योग्य व्यवहार की कमी पायी जाती है या ऐसा व्यवहार बहुत ही सीमित मात्रा में किया जाता है।
3. **शारीरिक न्यूनता (Bodily Inferiority)** – मानसिक दुर्बलता में मानसिक विकास तो सामान्य से कम होता ही है, साथ-साथ शारीरिक विकास (physical development) भी सामान्य से हीन या न्यून होता है। जैसे – ऐसे लोगों के होंठ भद्दे, नाटा कद, चेहरे पर सूखापन, चमड़ी मोटी, आँख एवं नाक में निश्चित सामंजस्य की कमी आदि स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है जिससे उसकी शारीरिक-न्यूनता की स्पष्ट झलक मिलती है।
4. **सामाजिक अयोग्यता (Social Disablity)** – मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति में बुद्धि का स्तर चूँकि सामान्य से कम होता है, इसलिए वे निःसंकोच होकर यौन-संबंधी अपराध एवं अन्य समाज-विरोधी कार्य करते हैं। ऐसे व्यक्तियों में कुछ प्रमुख सामाजिक शीलगुण जैसे-आत्म-संयम (self-restraint), आत्मरक्षा (self-protection) आत्म-विश्वास (Self-dependency), आत्म-सम्मान (Self-esteem ) तथा अपर्याप्तता (Self-reliance) आदि शीलगुणों की अपर्याप्तता देखी जाती है ।
5. **शिक्षा एवं प्रशिक्षण की अपर्याप्तता ( Inadequacy of Education and Training)** – मानसिक दुर्बलता से ग्रसित व्यक्तियों में उम्र के अनुसार शिक्षा (education ) तथा प्रशिक्षण (training) प्राप्त करने की अक्षमता या अपर्याप्तता (inadequacy) होती है। फलस्वरूप ऐसे लोग किसी प्रकार के औपचारिक (formal) तथा/या अनौपचारिक (informal) शिक्षा ग्रहण करने अथवा कोई कार्य करने में पर्याप्त प्रशिक्षण पाने में सर्वथा असमर्थ रहते हैं।
6. **सीमित प्रेरणा एवं संवेग (limited motivation and emotion)** – मानसिक दुर्बलता (mental deficiency) से ग्रसित व्यक्ति में सामान्य संवेगों (normal emotions) तथा सामान्य संवेगों (normal emotions) तथा सामाजिक प्रेरणाओं (motivations) की कमी पायी जाती है। फलस्वरूप, ऐसे व्यक्ति परिस्थिति के अनुकूल संवेग दिखला सकने में असमर्थ होते हैं तथा इनमें साधारण प्रेरणाएँ जैसे किसी लक्ष्य को प्राप्त करना, प्रभुत्व दिखलाने, दूसरों से मेल-जोल रखने आदि की नितान्त कमी पायी जाती है।
7. **संज्ञानात्मक दुर्बलता (Cognitive Deficiency)** – मानसिक रूप से ग्रसित व्यक्तियों में संज्ञानात्मक दुर्बलता पायी जाती है जिसके फलस्वरूप ऐसे व्यक्तियों की स्मृति (memory), ध्यान (attention), चिन्तन (thinking) एवं प्रत्यक्षण (perception) काफी अविकसित होती है। फलतः इससे ग्रसित व्यक्ति की संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ (cognitive process ) काफी अत्यधिक मंदित एवं दयनीय होती है।

**विशेषताएँ :-**

- स्मरण शक्ति दुर्बल।
- सामान्यीकरण की योग्यता का अभाव।
- मूर्त विषयों में रुचि।
- शब्दावली दोषपूर्ण होती है ( भाषा विकास कमजोर) – पक्षीय समन्वय का अभाव – गति व परिशुद्धता सम्बन्धी कार्यों की न्यूनक्षमता।
- मौलिकता का अभाव।
- रुढ़िवादी व अंधविश्वासी – निराशावादी दुसरों पर निर्भरता
- रुचियां सीमित व साधारण होती हैं।
- संवेगात्मक रूप से अस्थिर।
- मित्र बनाने की इच्छा।
- आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता की कमी।
- उचित अनुचित के अन्तर का ज्ञान नहीं।
- मौलिकता का अभाव – अत्यधिक सुझाव गृहणशीलता, आत्मविश्वास का अभाव।

**शिक्षा :-**

- शारीरिक प्रशिक्षण
- आर्थिक प्रशिक्षण हस्तकौशल की शिक्षा।
- अच्छी आदतों के निर्माण की शिक्षा।
- सामाजिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा।
- विशेष विद्यालय व विशेष शिक्षक।
- दैनिक जीवन क्रिया कलापों के चार्ट की शिक्षा।
- टेलीविजन, रेडियो, टेपरिकार्डर का प्रयोग

Scanned with CamScanner

✦ **पाठ्यक्रम** –
शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य सुरक्षा, प्राथमिक चिकित्सा, आचरण, सुनना लिखना, बोलने की शिक्षा, विवेक पूर्ण सम्बन्धों की शिक्षा।

**मानसिक मंदता का वर्गीकरण**

**शारीरिक अवस्था के आधार पर**
(1) मस्तिष्क आघात
(2) मंगोलायड
(3) क्रेटिन बालक
(4) फेनिलकेटनयूरिया
(5) हाइड्रोसेफेली
(6) सेरीबल पालसी

**मंदता की मात्रा पर**
(1) साधारण मानसिक मंदता
(2) आत्मबल मानसिक मंदता
(3) गंभीर मानसिक मंदता

**दूसरों पर आश्रित रहने पर**
(1) स्वतंत्र
(2) आंशिक स्वतंत्र
(3) आश्रित

**बुद्धिलब्धि पर**
(1) शिक्षा प्राप्त करने वाले
(2) प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले
(3) संवासित

## मानसिक दुर्बलता के स्तर या प्रकार (Levels or Types of Mental Deficiency) –

1. **बुद्धि की कसौटी के आधार पर (On the basis of criterion of intelligence)** – नैदानिक मनोवैज्ञानिकों (Clinical Psychologists) ने बुद्धि मापकर व्यक्ति की मानसिक दुर्बलता (mental deficiency) के विभिन्न स्तरों का वर्णन किया है। उपर्युक्त बुद्धि परीक्षण द्वारा बुद्धि मापकर उसकी अभिव्यक्ति बुद्धि-लब्धि (intelligence quotient or I.Q.) में की जाती है। 90 से 110 की बुद्धि लब्धि को सामान्य या औसत बुद्धि लब्धि माना गया है। व्यक्ति में 90 से बुद्धि लब्धि जितनी ही कम होगा, उसमें मानसिक दुर्बलता (mental deficiency) का स्तर उतना ही गंभीर होगा। बुद्धि लब्धि की मात्रा के आधार पर प्रारंभ में मानसिक दुर्बलता (mental deficiency) के निम्नांकित तीन स्तर या प्रकार (type) बतलाए गए हैं –

(a) **मूर्ख (Moron)** – इस श्रेणी के मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्तियों की बुद्धि लब्धि 50 से 69 के बीच होती है मानसिक आयु 8 वर्ष या उससे थोड़ी अधिक होती है।

(b) **मूढ़ ( Imbecile)** – इस श्रेणी के मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति की बुद्धि लब्धि 20 से 40 के बीच होती है तथा मानसिक आयु (mental age) 3 से 7 साल के भीतर होती है।

(c) **जड़ (Idiot)** – इस श्रेणी के मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति की बुद्धि लब्धि 20 से नीचे होती है तथा इनकी मानसिक आयु 3 साल से कम होती है।

अमेरिकन एशोसियशन ऑन मेन्टल डिफिसियेन्सी (American Association on Mental Deficiency or AAMD, 1973) तथा अमेरिकन मनोरोगविज्ञानी संघ (American Psychiatric Association) ने मिलकर बुद्धि के आधार पर मानसिक दुर्बलता के निम्नांकित चार प्रमुख स्तर (levels) या प्रकार (type) बतलाएँ हैं –

(a) साधारण मानसिक दुर्बलता (Mild mental retardation )
(b) मध्यवर्गीय मानसिक दुर्बलता (Moderate mental retardation)
(b) गंभीर मानसिक दुर्बलता (Severe mental retardation)
(c) अतिगंभीर मानसिक दुर्बलता (Profound mental retardation)

इन चारों का वर्णन निम्नांकित है –

(a) **साधारण मानसिक दुर्बलता (Mild mental retardation)** – इस श्रेणी की मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त व्यक्तियों की बुद्धि लब्धि (I.Q.) 52-67 के बीच होती है तथा वयस्क हो जाने पर भी इनकी बौद्धिक क्षमता (social adjustment) 8 से 11 साल के बालकों के करीब होता है। ऐसे लोग कुछ शिक्षण ग्रहण करने योग्य (educable) होते हैं।

(b) **अल्प मानसिक दुर्बलता (Moderate mental deficiencyh)** – इस श्रेणी के मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्तियों की बुद्धिलब्धि 35 से 51 के बीच होती है तथा वयस्क हो जाने पर भी इनकी बौद्धिक क्षमता 4 से 7 साल के बच्चों के बराबर होती है। इस तरह के व्यक्ति हल्का-फुल्का प्रशिक्षण पाने योग्य (trainable) होते हैं। फलस्वरूप इन्हें विशेष परीक्षण देकर अक्षरज्ञान कराया जा सकता है। इनकी शारीरिक बनावट बेडौल एवं कुरूप होती है तथा इनमें क्रियात्मक समन्वय (motor coordination) संबंधी दोष पाये जाते है। इनमें से कुछ लोग आक्रामक एवं बैरी प्रकृति (hostile tendency) के भी होते हैं।

(c) **गंभीर मानसिक दुर्बलता ( Severe mental retardation)** — इस श्रेणी की मानसिक दुर्बलता की प्रकृति काफी गंभीर होती है और इसमें आने वाले व्यक्तियों का बुद्धि लब्धि 20 से 35 के (dependent retarded) भी कही जाता है। ऐसे लोग अपनी देख-रेख स्वयं नहीं कर पाते हैं। बल्कि वे दूसरों पर इसके लिए निर्भर रहते हैं। इन लोगों का क्रियात्मक (motor) एवं भाषण विकास (Speech delvelopment) काफी दुर्बल एवं कमजोर होता है। इतना ही नहीं,

Scanned with CamScanner

इनमें संवेदी दोष (Sensory. defects) तथा क्रियात्मक विकलांगता प्रशिक्षण दिए जाने पर इनमें से कुछ साधारण व्यावसायिक कार्य (occupational tasks) किसी (supervision) में करने के लायक हो जाते हैं।

**(d) अतिगंभीर/गहन मानसिक दुर्बलता ( Profound mental deficiency) —** मानसिक दुर्बलता का यह सबसे गंभीर प्रकार है। इससे ग्रस्त व्यक्ति की बुद्धि लब्धि 20 से नीचे होती हैं। ऐसे लोग साधारण-से-साधारण कार्य करना भी नहीं सीख पाते हैं। ऐसे व्यक्तियों में कई तरह के शारीरिक दोष होते हैं। इन लोगों में केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र (ca system) से संबंधित दोष भी होते हैं। फलस्वरूप ऐसे लोग अपने से न खा सकते हैं न कपड़ा पहन सकते हैं। बाहरी खतरों से अपने आप को बचा ही सकते हैं। इन लोगों में गंगापन (mutism), बहरापन (deafness), पेशीय संकुचन एवं ऐंठन आदि भी देखने का मिलता है। ऐसे लोगों का स्वास्थ्य खराब होता है तथा रोग से लड़ने की ताकत भी कम होती है। फलस्वरूप वे जल्दी ही परलोक सिधार जाते हैं।

**2. समायोजन-योग्य व्यवहार की कसौटी के आधार पर (On the basis of criterion of adaptive behaviour)-** इस कसौटी में रोगी के प्रशिक्षण (training) एवं शैक्षिक अन्त:शक्तियों (educational potentials) के आधार पर मानसिक दुर्बलता के स्तर या प्रकार का निर्धारण किया जाता है। इस कसौटी के आधार पर मानसिक दुर्बलता (mental deficiency) के निम्नांकित तीन प्रकार (type) या स्तर (level) होते हैं जो निम्नांकित हैं -

**(a) अप्रशिक्षण योग्य ( Untrainable )** - इस श्रेणी के मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्ति अपने कम बौद्धिक क्षमता के कारण हमेशा दूसरों पर आधारित रहते हैं और किसी प्रकार के प्रशिक्षण से भी ये लोग कोई फायदा नहीं उठा पाते हैं। मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्तियों की कुल संख्या के लगभग 5 प्रतिशत लोग ही इस श्रेणी में आते हैं।

**(b) प्रशिक्षण योग्य (Trainable)** - ऐसे लोगों की संख्या मानसिक रूप से दर्बल कुल व्यक्तियों का हो लगभग 20 प्रतिशत होता है। ये लोग प्रशिक्षण (training) से कुछ हद तक अपने शैक्षिक एवं व्यावसायिक कौशलों को उन्नत बनाने में सफल हो पाते हैं। इसे टी मानसिक दुर्बलता (T-mental retardation) कहा जाता है।

**(b) शिक्षण ग्रहण योग्य (Educable )** — ऐसे लोगों की संख्या मानसिक रूप से दुर्बल कुल व्यक्तियों की संख्या का लगभग 75 प्रतिशत होता है। इस श्रेणी के लोगों की विशेषता यह है कि यदि इनकी शिक्षा-दीक्षा के लिए (class) चलाया जाय, तो ऐसे लोग एक प्रशंसनीय स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकने में सफल हो सकते हैं तथा समाज में उपयुक्त समायोजन बहुत हद तक करने में सफल हो सकते हैं। इसे ई-मानसिक दाब (E-retardation) भी कहा जाता है।

**3. नेदानिक कसौटी के आधार पर (On the basis of clinical criteria)** - नैदानिक कसौटी के आधार पर भी मानसिक दुर्बलता के कई प्रकार बतलाए गए हैं। उन्हें नैदानिक प्रकार (clinical types) कहा जाता है ऐसे प्रकारों में स्पष्ट रूप से कुछ-न-कुछ जैविक विकृतियाँ (biological deformities) होती हैं अर्थात् उसके कुछ-न-कुछ आंगिक कारण कारण (organic causes ) होते हैं। ऐसे नैदानिक प्रकारों में निम्नांकित प्रमुख हैं -

(a) डाउन्स संलक्षण (Down's Syndrome) या मंगोलिज्म (Mongolism)
(b) फेनिलकंटीन्यरिया (Phenylketonuria or PKU)
(c) बौनापन (Crelinism)
(d) लघुशीर्षता एवं दीर्घशीर्षता (Microcephaly and Macrocephaly )
(e) जलशीर्षता (Hydrocephaly)
(f) टर्नर संलक्षण (Turmer's Syndrome)
(g) क्लाइनफेल्टर संलक्षण (Klinefelter's Syndrome)
(h) दुर्बल एक्स संलक्षण (Fragile X Syndrome)
(i) विलियम्स संलक्षण (Williams Syndrome)
(i) पेडर-बिल्ली संलक्षण (Prader-Willi Syndrome)

इन सबका वर्णन निम्नांकित है -

**(a) डाउन्स संलक्षण (Downl's Syndrome ) या मंगोलिज्म (Mongolism)** - इस प्रकार की मानसिक दुर्बलता का वर्णन सबसे पहले-पहल ब्रिटेन के मनश्चिकित्सक लैंगडान डाउन (Langdan Down) ने 1886 ई. में किया था। इस श्रेणी के व्यक्तियों की बुद्धिलब्धि 25 से 50 के बीच होती है तथा इनकी मानसिक आयु 6-7 वर्ष तक की होती है। ऐसे व्यक्तियों के चेहरे की बनावट मंगोलियन जाति के लोगों से मिलती-जुलती है। इसलिए इसे मंगोलिज्म भी कहा जाता है। फलस्वरूप ऐसे लोगों में क्रोमोजोम्स की संख्या 46 न होकर 47 होती है। डाउन संलक्षण पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले वाला जन्मजात रोग नहीं होता है बल्कि यह उत्पादक प्रक्रिया (Reproductive Period) के दौरान एक विशेष जननिक त्रुटि (Genetic error) के परिणामस्वरूप होता है। डाउन संलक्षण (Down's Syndrome) के कोई संतोषजनक उपचार (Effective Treatment) की खोज अब तक नहीं हो पायी है।

**(b) फेनिलकेटोन्यूरिया (Phenylketonwria or PKU)** - PKU एक ऐसी मानसिक दुर्बलता है जिसका संबंध प्रोटीन चयापचय (Protein Metabolism) में गड़बड़ी से होता है। इसमें जन्म के समय बच्चा सामान्य दीखता है। 6 से 12 महीने के भीतर मानसिक दुर्बलता के लक्षण दिखलाई पड़ते हैं। प्रारम्भ में ऐसे बच्चों में लक्षण की शुरूआत कुछ विशेष शारीरिक लक्षण, जैसे - शरीर के पसीना का विचित्र गन्ध, कम्पन, एक्जिमा आदि से होता है।

**(c) बौनापन (Crefinisra )** - इस तरह की मानसिक दुर्बलता को हाईपोथारीयाडिज्म (Hypothyroidism) भी कहा जाता है। यह दुर्बलता थायरायड हारमोन्स (Thyroid Hormones) की अत्यधिक कमी या अनुपस्थिति से उत्पन्न होती है। ऐसे व्यक्ति का कद बौना-समान (Dwarf-like) होता है। ये देखने में कुबड़े जैसे लगते हैं। इनका सिर बड़ा, गर्दन मोटी पर छोटी एवं आँखों की पलक भी मोटी होती हैं। इनका यौन विकास (Sex Development) एवं संवेगात्मक विकास (Emotional Development) भी सीमित होता है। इनकी बुद्धि लब्धि 25.75 तक होती है।

**(d) लघुशीर्षता तथा वृहद्शीर्षता (Macrocephaly and Macrocephaly)** - मानसिक दुर्बलता के दोनों प्रकार का संबंध कपालीय विसंगति (Cranial Anomaly) से है। लघुशीर्षता (Microcephaly)

Scanned with CamScanner

में व्यक्ति का सिर सामान्य से काफी छोटा होता है। ऐसे व्यक्तियों के सिर की परिधि (Circumference) 17 इंच से शायद ही कभी अधिक होती है। बालकों की बुद्धि लब्धि 25 के लगभग होती है। अत: इनकी मानसिक दुर्बलता गंभीर होती है। शायद ही कभी ऐसे बालकों में भाषा विकास (Language Development) हो पाता है। ऐसे बच्चे मिलनसार प्रकृति के होते हैं तथा उनमें सतर्कता (Alertness) एवं सक्रियता (Active) जैसे व्यवहार देखने को मिलते हैं।

वृहत शीर्षता (Macrocephaly) में व्यक्ति का सिर जरूरत से ज्यादा बड़ा हो जाता है। इस तरह के मानसिक दुर्बलता में रोगी के मस्तिष्क के आकार (Size) तथा वजन (Weight) में वृद्धि वाली कोशिकाओं (Glia Cells) जो मस्तिष्क के उत्तकों का एक समर्थक संरचना (Supporting Structure) होती है, में असामान्य विकास से होता है। इसमें बच्चों में दृष्टि क्षीणता (Visual Impairment), कम्पन (Convulsion) तथा अन्य स्नायविक लक्षण (neurological symptoms) भी देखने को मिलते हैं। ऐसे बच्चों की मानसिक दुर्बलता का स्तर गंभीर होता है। इनका कोई उपचार नहीं है परन्तु ऐसी दुर्बलता विरल होती है।

(e) **जलशीर्षता (Hydrocephaly)** – इस प्रकार का मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त शिशु के मस्तिष्क में एक प्रकार का जलद्रव (Fluid) जिसे सेरेब्रोस्पाइनल द्रव (Cerebrospinal Fiuid) कहा जाता है, अत्यधिक मात्रा में जमा हो जाता है जिससे मस्तिष्क का आकार बड़ा हो जाता है।

(f) **टर्नर संलक्षण (Turmer's Syrudrome)** – इस तरह की मानसिक दुर्बलता (mental deficiency) सिर्फ बालिकाओं (Females) में पायी जाती है। इस तरह की बालिकाओं की गर्दन–छोटी एवं झुकी होती है तथ इनमें लैंगिक अपरिपक्वता भी पायी जाती है। इनकी बुद्धि लब्धि 30–40 के लगभग होती है। इस तरह की मानसिक दुर्बलता का कारण यौन क्रोमोजोम्स (Sex Chromosomes) में गड़बड़ी होती है क्योंकि ऐसी बालिकाओं में सिर्फ एक ही X क्रोमोजोम्स (X0) पाया जाता है।

(g) **क्लाइनफेल्टर संलक्षण (Klinefelter's Syndrome)** – इस तरह की मानसिक दुर्बलता सिर्फ पुरुषों या बालकों में होती है। इससे ग्रसित बालक की विशेषताएँ कुछ अलग–अलग होती हैं। परन्तु एक सामान्य विशेषता जो सभी ऐसे बालकों में देखा जाता है, वह यह है कि यौन ग्रन्थि (Sex Gland) की न्यूनता इनमें पायी जाती है। ऐसे बालकों में वयस्कता आ जाने पर भी उनका यौन ग्रन्थि अपरिपक्व होता है। इनकी बुद्धि लब्धि प्राय: 35–40 के बीच में होती है। इस तरह की मानसिक दुर्बलता का कारण भी यौन क्रोमोजोम्स की विसंगताएँ होती हैं। ऐसे बालकों में सामान्य यौन क्रोमोजोम्स XY न होकर XXY होता है अर्थात एक X अतिरिक्त होता है।

(h) **दुर्बल एक्स संलक्षण (Fragile X Syndrome)** – इस तरह के संलक्षण में जो मानसिक मन्दन या दुर्बलता उत्पन्न होती हैं, उसका कारण यौन गुणसूत्र अर्थात् 23वें युग्म के गुणसूत्र के एक्स गुणसूत्र का कमजोर होना होता है।

(i) **विलियम्स संलक्षण (Williams Syndrome )** – विलियम्स संलक्षण मानसिक मन्दन का एक ऐसा नैदानिक प्रकार है जो काफी विरल (Rare) होता है क्योंकि उसकी संभावना 20,000 बच्चों में से किसी एक में होने की होती है। इस संलक्षण की उत्पत्ति का कारण गुणसूत्र संख्या सात पर एक जीन (Gene) के विलोपित (Delete) होना होता है। ऐसे बच्चे शब्दावली एवं व्याकरण से संबद्ध कौशल तो दिखाते हैं परंतु भाषा के अन्य पहलुओं पर काफी पिछड़ जाते हैं।

(j) **प्रेडर-विल्ली संलक्षण (Prader-Willi Syndrome)** – इस तरह के संलक्षण में जो मानसिक दुर्बलता होती है उसका कारण 15वें गुणसूत्र में कुछ जननिक तथ्यों (Genetic Material) में पर्याप्त कमी होती है। ऐसे बच्चों में भूख बहुत लगती है तथा भोजन के प्रति वे एक तरह से तीव्र लालसा (Craving) दिखलाते हैं। इसका शारीरिक कद नाटा होता है तथा ऐसे बच्चे विरोधात्मक व्यवहार (Oppositional Behaviour) अधिक करते पाये जाते हैं। इनकी मानसिक दुर्बलता का स्तर साधारण (Moderate) होता है।

## मानसिक मन्दता के कारण :-

**मानसिक मंदता के कारण**

**जन्म के समय के कारक**
(1) अपरिपक्व जन्म
(2) प्रसव के समय असामान्य दशाएं
(3) प्रसव के समय औजारों का प्रयोग

**जन्म के पश्चात के कारक**
(1) गंभीर बीमारी
(2) मानसिक आघात
(3) दुर्घटना
(4) कुपोषण
(5) वंचित वातावरण

1. वंशानुक्रम माता–पिता को मानसिक पिछड़ेपन का प्रभाव।
2. रोग – विभिन्न रोग जैसे मेनिनजाईटस, जर्मन मीजलस, स्पीलैप्सी इत्यादि।
3. अपरिपक्वता व आघात।
4. ऑक्सीजन की अत्यन्त कमी – जन्म के समय

Scanned with CamScanner

5. एक्स रेज व विकिरण नाभिक पदार्थ- गर्भावस्था में प्रयोग से मन्दता पैदा होना।
6. ग्रथियाँ व चयापचयी कारक जैसे याराक्सिन की कमी से क्रीटी निजम मानसिक मन्दता का कारण बन जाता है तथा चपायचयी प्रक्रिया में रासायनिक त्रुटियों के कारण भी मानसिक मन्दता पैदा हो जाती है।
7. माँ की बढ़ती आयु - 4 वर्ष की अधिक आयु में माँ बनने वाली स्त्रियों के बच्चो में सम्भावना बढ़ जाती है।
8. दूषित वातावरण परिवार विद्यालय का
9. संवेगात्मक वचना
10. कपालीय विसंगतियाँ जैसे मेक्रोसिकेली, माइक्रोसिफेनी, हाइड्रोसिफेली
11. असंतुलित भोजन
12. आर्थिक व सामाजिक वंचना

- **अन्य सामान्य/मंद बुद्धि बच्चों का वर्गीकरणः-**

1. **मूढ़ या निम्नतम वर्ग 20- 25 बुद्धि लब्धि**
   - कोई भी कार्य स्वय नहीं कर सकते।
   - 3 वर्ष के बच्चे के समान व्यवहार
2. **अल्प बुद्धि 21 या 26 से 50 बुद्धि लब्धि**
   - मानसिक स्तर 3- 7 वर्ष से बच्चे के समान।
   - पढ़ लिख नहीं सकते- स्वतंत्र कार्य नहीं कर सकते।
   - आत्मरक्षा व दैनिक शारीरिक कार्य सिखाया जाता है।
3. **असहाय**
   - 51 से 70 बुद्धि स्तर मानिसक स्तर 7 से 10 वर्ष के बच्चे के समान
   - सीमित रूप में के लिखना पढ़ना।
   - घरेलु कार्य सीखना।
4. **सीमान्त बच्चे 70 से 80 IQ** - ये बच्चे अपनी श्रेणी के साथ नहीं चल सकते।

**अमेरिकन एसोशियसन ऑन मेण्टल डिफिशियंसी :-**

- मानसिक मंदता से तात्पर्य न्यून औसत बौद्धिक क्षमता जो समायोजनशील व्यवहार में कमी के साथ-साथ पायी जाती है। जिसकी अभिव्यक्ति विकासात्मक अवधि में होती है। अमेरिकन एसोशियशन के अनुसार प्रकार :-

1. साधारण मानसिक मंदता - 52-67, IQ - शिक्षा दिया जाना संभव, 8 से 11 वर्ष के सामान्य स्तर
2. अल्प बल मानसिक मंदता - 36-51, IQ - प्रशिक्षणीय शैक्षिक श्रेणी
3. गंभीर मानसिक मंदता - 20-25, IQ - आश्रित बालक
4. गहन मानसिक मंदता - 20 से नीचे, IQ - गंभीर शारीरिक अनियमितता

## 4. समस्यात्मक बालक (Problem Child)-

- **वेलेन्टाईन** के अनुसारः- समस्यात्मक बालक शब्द का प्रयोग उन बालकों के लिए किया जाता है जिनका व्यवहार व व्यक्तित्व किसी बात में गंभीर रूप से असामान्य होता है।

  *उदाहरण* :- (1) चोरी करने वाला (2) झूठ बोलने वाला (3) क्रोध करने वाला।
- **समस्याग्रस्त बालकों के लक्षणः-**

  (1) चोरी करना (2) स्कूल से दौड़ जाना (3) दूसरों को तंग करना (4) कष्ट देना (5) अनुशासन का विरोध (6) कार्य से जी चुराना (7) मानसिक द्वन्द्व (8) दीनभाव (9) शारीरिक व मानसिक त्रुटि (10) बुरा आचरण। (11) दुःखों की उदासी की प्रधानता (12) अनुपयुक्त व्यवहार (13) अन्तर्वैयाक्ति संबंध कमजोर।
- **प्रमुख प्रकार :-**

  (1) चोरी करने वाले (2) झूठ बोलना (3) आक्रमणकारी (4) झगड़ालू (5) अत्यधिक (6) बेईमान/धोखेबाज (7) मादक पदार्थों का सेवन करने वाले।

  **उपचार विधिः-**
- कारणों का पता लगाकर समाधान करना।
- निदानात्मक उपचारात्मक विधि का प्रयोग।
- व्यक्ति इतिहास (Case Study) विधि का प्रयोग।
- सहयोग की भावना का विकास
- स्वस्थ मनोरंजन की व्यवस्था
- अच्छे आदर्श व व्यवहार की शिक्षा
- मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग
- सकारात्मक व्यवहार अनुशासन की शिक्षा
- पाठ्यसहगामी क्रिया, निर्देशन, परामर्श

## 5. बाल अपराधी बालक (Delinquent Child)-

- **गुड** के अनुसार :- कोई भी बालक जिनका व्यवहार सामान्य व्यवहार से इतना भिन्न हो जाये कि उसे समाज विरोधी कहा जा सकें।
- **ईवान्स** :- जब कोई 18 साल से कम आयु का व्यक्ति नैतिक व कानूनी नियमावली को तोड़ता है, बाल अपराधी कहलाता है।
- **स्कीनर** :- बाल अपराध की परिभाषा उस कानून के उल्लघंन के रूप में की जाती है जो किसी वयक्क द्वारा किये जाने पर अपराध सिद्ध होता है।
- **विलियम हील्ली** के अनुसार :- समाज द्वारा स्वीकृत आचरण के विपरीत व्यवहार करने वाला बालक।

  **बाल अपराधी बालकों के कार्य :-**
- चोरी करना, झूठ बोलना
- जुआ खेलना।
- नशा करना।
- बिना टिकट यात्रा करना, दीवारों पर अनुचित बातें लिखना।
- हत्या करना, माता-पिता की आज्ञा का उल्लघंन करना।
- यौन अपराध करना।
- सार्वजनिक संपति को नुकसान पहुंचाना, सड़क पर चलते नियमों का पालन ना करना।
- चुनौती देना।
- टगी/बेईमानी करना।
- बिना उद्देश्य के घूमना, भगोड़ापन, नियमों का पालन ना करना।
- यौन कदाचार - हस्त मैथुन, समलैंगिक काम भाव, वैश्यावृत्ति, बलात्कार, यौवन अंगों को दिखाना, अश्लील चित्रण व लेखन, गर्भपात।

**बाल अपराधी बालकों की विशेषताएँ :-**

- शारीरिक रूप से हष्ट- पुष्ट होते है, संवेगात्मक रूप से असंतुलित।
- अध्ययन में मन नहीं लगता हैं, औसत छात्रों से कम पढ़ना- एलिस क्रो

Scanned with CamScanner

- समाज विरोधी कार्यों की प्रवृत्ति पाई जाती है।
- आवेगशील
- जिद्दी, साहसी, आक्रमणकारी तथा बहिर्मुखी स्वभाव के होते हैं, संवेगात्मक रूप से अस्थिर।
- वर्तमान के आनन्द में विश्वास, भविष्य की चिन्ता नहीं- कुप्पूस्वामी
- नैतिक स्तर निम्न।
- समस्याओं को उचित विधि से हल नहीं करते।
- आयु = 18 वर्ष से कम।
  बाल अपराध विज्ञान के जनक – सीजर लाम्ब्रोसो

**बाल अपराध के कारण :-**

- **वंशानुक्रम** – जुक्स व कालिकाक ने बल दिया है, थार्नडाईक, स्वार्ज (समर्थक)
- **वैलेनटीन :** – आनुवांशिक लक्षण अपराध प्रवृति को प्रोत्साहित करते हैं।
- शारीरिक दोष या रोग (मानसिक रोग) – लोम्ब्रोसो

**कारण**

- व्यक्तिगत कारण
  - वंशानुगत
  - शारीरिक
  - मानसिक
- पर्यावरणीय कारण
  - सामाजिक वातावरण
  - परिवार का वातावरण
  - विद्यालय का वातावरण

**व्यक्तिगत कारण**

**शारीरिक कारक**
(1) शारीरिक संरचना
(2) शारीरिक दोष
(3) पैतृक दोष
(4) अविकसित शरीर
(5) कम विकसित शरीर
(6) गंभीर बीमारी

**वंशानुगत कारक**

**मानसिक कारक**
(1) बौद्धिक कारक
(2) संवेगात्मक निर्बलता
(3) मानसिक रोग
(4) मनोस्त्रायु विकृति
(5) हीन भावना

**वातावरणीय कारक**

**परिवार का वातावरण**
(1) भग्न परिवार
(2) दूषित अनुशासन
(3) असुरक्षा या अत्यधिक सुरक्षा
(4) अनैतिक परिवार
(5) सामाजिक आर्थिक स्थिति
(6) माता-पिता का चरित्र
(7) माता-पिता की अभिवृत्ति
(8) नौकरों की संगति

**विद्यालय का वातावरण**
(1) विद्यालय का संवेगात्मक वातावरण
(2) विद्यालय की स्थिति
(3) अनुशासन का अभाव
(4) शिक्षकों द्वारा पक्षपातपूर्ण व्यवहार
(5) पुस्तकालय तथा अन्य खेल की सुविधाओं का अभाव
(6) निर्देशन सेवाओं का अभाव
(7) माता-पिता की अभिवृत्ति
(8) नौकरों की संगति

**समाज का वातावरण**
(1) आर्थिक असमानता
(2) गन्दी बस्तियाँ
(3) बेरोजगारी
(4) बुरी संगति
(5) अपराधी क्षेत्र

Scanned with CamScanner

- मनोवैज्ञानिक कारण :-
1. निम्न बुद्धि लब्धि।
2. किसी इच्छा का पूरा न हो पाना/दमित इच्छा
3. संवेगात्मक असन्तुलन
4. कुसंगति

नोट:- ग्लूक ने बालक अपराधियों के लिये 95 प्रतिशत जिम्मेदार कुसंगति को माना है।

बाल उपचार की मनोवैज्ञानिक विधियाँ :-

- मनोविश्लेषणात्मक विधि – सिगमण्ड फ्रायड।
- मनोभिनय विधि – जे.एल. मोरेनो।
- अनिर्देशित विधि – कार्ल रोजर्स।
- व्यक्ति इतिहास/जीवन इतिहास विधि– टाईडमैन।

प्रमुख विधियाँ :-

1. निरोधात्मक (Prevenitive) विधियां – भविष्य में अपराधी बनने से टोकना। इसके निम्न तरीके आते हैं –

- माता-पिता का अपेक्षित स्नेह व ध्यान देना।
- उचित इच्छा व आवश्यकता की पूर्ति।
- घर का वातावरण सौहार्दयुक्त होना।
- उचित घरेलू अनुशासन
- सकारात्मक शिक्षा
- विद्यालय का उचित वातावरण व स्वानुशासन
- विभिन्न सरकारी सहायता जैसे नि:शुल्क शिक्षा, आदर्श स्कूलों की व्यवस्था

2. रोगनाशक (Curative) विधियाँ –

- बाल अपराध न्यायालय तंत्र – इसके जज अपराधी बालक को परख अवधि, सुधारक स्कूल व कैम्प में भेज देते हैं।
- मनोगतिक विधि – मनोचिकित्सा व परामर्श द्वारा बालक का सुधार।
- व्यवहारात्मक विधि – इसमें पुनर्बलन, अनुबंधन, टोकन इकोनॉमी व मॉडलिंग का प्रयोग कर सुधार किया जाता है।
- पुनर्वास विधि (Rehabilitation Method) – इसमें अपराधी बालकों को ऐसे वातावरण में रखा जाता है जहाँ स्नेह व मानवीय व्यवहार से स्वत: ही अपराध ना करने का भाव उत्पन्न हो जाता है।
- विद्यालय में शिक्षक योग्य व मानवीय व्यवहारिक युक्त हो, प्रत्येक छात्र को रुचि, अभियोग्यता के अनुकूल शिक्षा, अच्छा पुस्तकालय, मनोरंजन के साधनों की व्यवस्था, बाल मनोविज्ञान विधियों का प्रयोग, नैतिक शिक्षा, निर्देशन/परामर्श व शिक्षक अभिभावक संवाद हो।

बाल उपचार की कानूनी विधियाँ :-

- प्रवीक्षण (Probation) – अपराधी को जेल में ना बंद करके कुछ शर्तो के साथ समाज में रहने की छूट (प्रोबेशन अधिकरी के निरीक्षण में)
- किशोर-न्यायालय – दण्ड के स्थान पर सुधार पर बल।
- पुनर्वास
- किशोर बन्दीगृह – 15 से 21 वर्ष के किशारों को रखा जाता है। उन्हें सामान्य व औद्योगिक शिक्षा दी जाती है।
- किशोर सुधारगृह ।
- बोस्टर्ल संस्थाएं – 16 से 21 वर्ष के अपराधियों को रखा जाता है उन्हें व्यवसायिक व औद्योगिक परीक्षण दिया जाता है।
- रिफालेटरी स्कूल – 1959 के अधिनियम के तहत बाल अपराधियों को औद्योगिक परीक्षण दिया जाता है।
- सर्टिफाईट स्कूल – छोट्य अपराध करने वाले बालक रखे जाते हैं उन्हें सातवीं तक की शिक्षा व हस्त कौशल की शिक्षा दी जाती है।

बाल अपराधी बालक ( विशेष तथ्य ) :-

- मार्टिन न्यूमेयर – जो समाज विरोधी व्यवहार व्यक्तिगत तथा सामाजिक विघटन उत्पन्न करता है वह बाल अपराधी है।
- वेलेन्टाईन – बाल अपराध शब्द किसी कानून के भंग किये जाने का उल्लेख करता है।
- XYY क्रोमोसोम्स – बाल अपराध का कारण, इसका अध्ययन शावमैकके ने किया।
- विलियम शेल्डन ने शरीरगठनात्मक सिद्धान्त में मेसोमार्फी (आयताकृति) संरचना को बाल अपराध के लिए जिम्मेदार माना है।
- कलासमियर व गुडविन – बाल अपराधी वह है जो बार-बार उन कार्यो को करता है जो अपराध के रूप में दण्डनीय है।
- कुप्पुस्वामी में परिवार की निर्धनता व बच्चों के प्रति दुर्व्यवहार को बाल अपराध का प्रमुख कारण माना है।
- एच. जी. वेल्स ने व्यक्तिगत स्कूलों को उत्तरदायी माना है
- ब्लूमर व हौजर ने चलचित्र, सस्ते उपन्यास, साहित्य को उत्तरदायी माना है।
- बैना मेडीनस व जॉनसन नें टेलीविजन को बाल अपराध का प्रारम्भिक शिक्षण केन्द्र माना है।

## अलाभान्वित बालक (Disadvantaged Child)

- वे बालक जो सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण से व सांस्कृतिक दृष्टिकोण से पिछड़े होते हैं अलाभान्वित कहलाते हैं।

इन बालकों का अध्ययन बर्नस्टीन, हेविंगहर्स्ट, टानेनबॉम, रोटर ने किया है। भारत में डी. सिन्हा, एल.बी. त्रिपाठी, बी.बी. चटर्जी व ए.के. सिंह प्रमुख हैं।

विशेषताएँ –

1. आत्म सम्प्रत्यय नकारात्मक – हीनता व साधारण आकांक्षा का भाव।
2. अभिप्रेरणा, दूरदर्शिता कमजोर।
3. भाषा अस्पष्ट व अनौपचारिक होती है।
4. बौद्धिक निष्पादन सीमित व अपर्याप्त होता है।

- लाभान्वन व वंचन को मनोवैज्ञानिक प्रभाव में बालक संज्ञानात्मक पैटर्न पर प्रतिकूल प्रभाव, अभिप्रेरणा पर नकारात्मक व शैक्षिक उपलब्धि पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- शिक्षा – अमेरिका में इन बालकों के लिए हेडस्टार्ट योजना, बुजिंग कार्यक्रम की सहायता से विशेष शिक्षा प्रदान की जाती है भारत में नि:शुल्क शिक्षा, मिड-डे-मील योजना का प्रारम्भ।
- इन बालकों के लिए प्रत्यक्षणात्मक प्रशिक्षण, आकार विभेद जैसी विधियों का प्रयोग ज्यादा प्रभावी है।

Scanned with CamScanner

## संवेगात्मक अव्यवस्थित बालक

- वे बालक किसी मनोदशा अव्यवस्थित व मनोवैज्ञानिक रूप से उथल-पुथल होती है वह संवेगात्मक रूप से अस्थिर व कुसमायोजित होती है।
- शारीरिक लक्षण - थकान, नींद का अव्यवस्थित होना, जल्दी-जल्दी मलमूत्र त्याग, खाने की गलत आदतें, सिरदर्द, पीठ दर्द, मांसपेशियों का तनाव, मुंह सूखना, हाथ, पैर व होठों का कॉपना, बार-बार गहरी सांस छोड़ना, पसीना छूटना, हकलाना, सर खुजलाना, दांतों से नाखून काटना, अंगूठा चूसना, पाव व अंगुलियों को हिलाना, जी मिचलाना, भूख न लगना, वजन का घटना, हृदय गति का तेजी से धड़कना, जलन महसूस होना, रक्त का बढ़ जाना, सांस लेने में कठिनाई, ठंड लगना।
- मनोवैज्ञानिक लक्षण - एकाग्रता का अभाव, अनिश्चितता, बेचैनी, आक्रामक व्यवहार, चिंता, भय, घृणा, असहनशीलता, भगोड़ापन, निषेधात्मकता, एकान्तवासी, पलायनवादी इत्यादि।

### विकलांग बालक-

- अर्थ :- वे बालक जो सामान्य बालकों की अपेक्षा शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक दृष्टि से दोषपूर्ण होते हैं।

1. चक्षु विकलांग - ब्रेल लिपि व श्रव्य सामग्री का प्रयोग।
2. श्रवण विकलांग - औष्ठ वाचन विधि।

- श्रवण विकलांग बालकों के लिए ओष्ठवाचन, दृश्य साधन, ध्वनी प्रवर्धन, चिह्न/सांकेतिक भाषा, आंगुलिक हिस्से, हस्त संचार का प्रयोग होता है।

3. वाक् विकलांग - अभ्यास विधि का प्रयोग।

### भाषा दोष ग्रस्त बालक :-

इसमें गूंगे बालक, उच्चारण दोष, आवाज दोष, प्रवाहिता दोष व व्याख्यान दोष बालक आते हैं। ऐसे बालकों के लिए सुनो, बोलो विधि, ओष्ठवाचन, अभ्यास विधि का प्रयोग किया जाता है।

- कारण - संवेगों का तीव्र प्रवाह (हकलाना, तुतलाना)
- अलाभान्वित बालक (Disadvartaged) - वो बालक जो सामाजिक, आर्थिक दृष्टिकोण से पिछड़े होते हैं ऐसे बालकों में गरीबी व वचन की प्रधानता होती है।

### अधिगम अयोग्यता वाले बालक (Learning Disability)

- समुअल किर्क ने इस शब्द का प्रयोग किया।
- किर्क - वे बालक जिनके शैक्षिक कार्य प्रदर्शन में योग्यताओं व उपलब्धियों के मध्य अत्यधिक अन्तर रहता है।

विशेषताएँ:-

1. भाषा सीखने, उसका प्रयोग करने, सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, तर्क करने व गणितीय योग्यता में कठिनाई।
2. गम्भीर अधिगम विकृति होती है।
3. अधिगम क्षमता व वास्तविक शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।
4. बुद्धि सामान्य हो सकती है।
5. ध्यान, चिन्तन, स्मृति, बोध, तर्क, सृजनशीलता में विकृति होती है।
6. दृष्टि व श्रवण शक्ति में दोष होता है।
7. अभिप्रेरणा का अभाव पाया जाता है।
8. संवेगात्मक रूप से अस्थिर

- कारण - (1) आनुवांशिक/जन्मजात कारण (2) ग्रन्थि विकार (3) शरीर संरचना कारक (4) वातावरणीय कारक
- शिक्षा - विशेष कक्षाओं की व्यवस्था, विशेष विद्यालय, उपयुक्त वातावरण उपचारात्मक शैक्षिक सेवाएँ।

### विशिष्ट वर्ग के बच्चों के लिए प्रयुक्त अधिगम सामग्री (Learning Material used for Exceptional Children)

1. मन्द बुद्धि बच्चों के लिए (For Mentally Retarded Children) - (1) किंडरगार्टन उपकरण, (2) ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण हेतु सामग्री (Material for training senses), (3) प्लास्टिक क्यूब्स (Plastic cubes), (4) ब्रेन मशीन खेल (Brain, machine games), (5) चित्रकला/पेंटिंग उपकरण (Painting material), (6) दैनिक जीवन के कार्यकलापों के चार्ट (Charts), जैसे दन्त मजन करते हुए, स्नान करते हुए कपड़े पहनते हुए, भोजन करते हुए आदि, (7) टेलीविज़न रेडियो टेपरिकार्डर आदि।
2. दृष्टिहीन एवं आंशिक दृष्टिहीन बच्चों के लिए (For Blind and Partially Blind Children) :- (1) ब्रेल-लिपी के प्रारम्भिक ज्ञान चार्ट, (2) ब्रेल स्लेट (बेल टाइपराइटर स्टैन्जवी), (3) ब्रल पु (4) बेल के मॉडल, (5) चित्र-लुई ब्रेल,(6) मोटे अक्षरों की पुस्तकें,(7) मोटे टाईप में छपे चार्ट, (8) दृष्टि सेनेल चार्ट (9) उभरे हुए मानचित्र (नक्शे), (10) गणित बोर्ड, (11) टेप रिकार्डर (कैसेट सहित), (12) युना। फोर्म मशीन (ब्रेल लिपी में लिखी गई सामग्री की फोटो कापी करने वे उपयोग).(13) लो-विजन एड्स।
3. बहरे एवं आंशिक बहरे बच्चों के लिए (For Deaf and Hard of Hearing) :- (1) स्पीच टेनर, (2) श्रवण उपकरण (व्यक्तिगत श्रवण यन्त्र एवं समह श्रवण यन्त्र), (3) टेप रिकार्डर, (4) ओवरहेड प्रोजेक्टर, (5) चाटेस-मॉडल (भाषा ज्ञान, विज्ञान के लिए) (6) स्वर व्यंजन के उच्चारण चार्टस, (7) दैनिक जीवन के व्यावहारिक वस्तुओं के चित्र (फल, सब्जियां फल पशु-पक्षी आदि), (8) मशीनगेम्स (9) समतल दर्पण (2'' × 1'' आकार), (10) प्लास्टिक आकृतियां, (11) चित्र श्रवण जांच हेतु इत्यादि
4. अस्थि दोषयुक्त बच्चों के लिए - (1) व्हील चेयर (Wheel chair), (2) क्षतिग्रस्त अंगों सम्बन्धी व्यायाम के लिए उपकरण, (3) बैठने के लिए आवश्यक उपकरण, (4) चलने के लिए बेरसिज यन्त्र, (5) ब्रेनो, (6) मशीन गेम्स, (7) इन्डोर गेम्स, (8) चित्र, (9) कार्य-अनुभव के लिए सामग्री (रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुसार), (10) टेप रिकार्डर, (11) ओवरहेड प्रोजेक्टर, (12) पेशाब तथा शौच हेतु आवश्यक उपकरण।

नोट :- पूर्व शालेय शिक्षा का प्रारम्भ मैकलिंन बहनों द्वारा प्रत्यय निर्माण के लिए किया गया है।

- ब्रेल लिपि - लुई ब्रेल 1830 (अन्धे बालकों के लिए)
- अन्धे/दृष्टि दोष बालकों के लिए अन्य उपकरण

क्रैनमर एबाकस, स्पीच Plus कैलकुलैटर, ऑपटाकोन कुर्जविल रिडिंग मशीन (छपी सामग्री को बोल बोलकर सुनाता है।)

Scanned with CamScanner

| श्रेणी | उदाहरण |
|---|---|
| दृष्टिहीन बच्चों हेतु सहायक तकनीकी | ब्रेल स्लेट, अबेकस, टेलर फ्रेम, ब्रेलर, डेज़ी प्लेयर, स्क्रीन रीडर, लेज़र केन |
| अल्पदृष्टि बच्चों हेतु सहायक तकनीकी | मैग्नीफायर, स्क्रीन मैग्नीफायर, टेलिस्कोप, रीडिंग स्टैंड, राइटिंग गाइड |
| श्रवण-बाधितों हेतु सहायक तकनीकी | इंडक्शन लूप सिस्टम, एफ.एम. सिस्टम, इन्फ्रारेड सिस्टम, पर्सनल अम्प्लीफायर |
| गामक विकलांगजन हेतु सहायक तकनीकी | व्हील चेयर, केन, स्मार्ट नैव, जॉय स्टिक, स्पीच टू टेक्स्ट सॉफ्टवेयर |
| बौद्धिक विकलांगजन हेतु सहायक तकनीकी | स्वचालित और कम्प्यूटरीकृत साधन, ऑडियो प्रोम्पटिंग, वीडियो आधारित शिक्षण सामग्री |

1. **मॉण्टेसरी विधि :-**
- प्रतिपादक - मारिया मॉण्टेसरी (इटली)
- 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी।
- भाषा की शिक्षा।
- कर्मेन्द्रियों की शिक्षा।
- ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा।
- उपकरणों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है।

2. **किण्डरगार्टन:-**
- प्रतिपादक - फ्रोबेल (जर्मनी)
- 4 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी।
- **फ्रोबेल:-** "विद्यालय एक बगीचे के समान है, जिसमें शिक्षक का स्थान माली का व बालक पौधे के समान है।"
- इस विधि में - 1. खेल 2. उपहार 3. अभिनय 4. रचना 5. गीतों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है।

3. **खेल विधि :-**
- प्रतिपादक - हेनरी काल्डवेल कुक
- Book = "Play Way"
- अंग्रेजी शिक्षण हेतु उपयोगी।

4. **प्रोजेक्ट विधि ( योजना ) :-**
- यह विधि जॉन डीवी के प्रयोजनवाद पर आधारित है।
- प्रतिपादक - किलपैट्रिक - (प्रथम)
- जॉन डीवी - (द्वितीय)
- यह विधि करके सीखने पर बल देती है।
- **किलपैट्रिक:-** "प्रोजेक्ट एक उद्देश्यपूरक कार्य है, जिसे सामाजिक व स्वाभाविक स्थितियों में पूरा किया जाता है।

5. **डाल्टन विधि :-**
- प्रतिपादक - हेलन पार्क हर्स्ट।
- इस विधि में बालक के ऊपर विषय-वस्तु, समय-सारणी व स्थान का कोई प्रतिबन्ध नहीं होता।
- बालक स्वाध्याय करके सीखता है।

6. **विनेटका विधि ( इकाई विधि ) :-**
- प्रतिपादक - कार्लटन वाशबर्न (अमेरिका)
- व्यक्तिगत विभिन्नता व सामाजिक विकास के अनुसार छोटे-छोटे भागों में विभाजित करके शिक्षा प्रदान की जाती है।

7. **डेकार्ली विधि:-**
- प्रतिपादक - ओविड डेकार्ली।
- मन्दबुद्धि बालकों के लिए उपयोगी (संगीत व खेल के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है।)

**नोट : विकलांगत अधिनियम 2016 के तहत निम्न रोगों को अक्षमता में शामिल किया गया है -**

✦ **विकलांगता के प्रकार -**

(1) अंधता (2) अल्प दृष्टिबाधित (3) कुष्ठ रोग मुक्त (4) श्रवणबाधित (बधिर एवं उंचा सुनना) (5) चलन नि:शक्तता (6) बोनापन (7) बौद्धिक क्षमता (8) मानसिक रोगी (9) स्वलीनता (10) प्रमस्तिष्क घात (11) मांसपेशीय दुर्विकास (12) क्रोनिक न्यूरोलोजिकल कण्डीशन (13) स्पेसिफिक लर्निंग डिसेबिलिटी (14) मल्टीपल स्कलेरोसीस (15) वाक् एवं भाषा नि:शक्तता (16) थैलेसीमिया हीमोफीलिया/अधिरक्तस्त्राव (17) सिकल सेल डिजीज (18) बहु नि:शक्तता (19) तेजाब हमला पीड़ित (20) पार्किसेस

**विशेष तथ्य :-**

✦ अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस - 3 दिसम्बर

✦ एटर्ड नामक फेंच एजुकेटर ने एक जंगली लड़के को पढ़ाने का प्रयास किया। एटर्ड को पहला विशेष शिक्षा शिक्षक माना जाता है।

✦ मंदबुद्धि बालकों हेतु पहला विद्यालय पेरिस फ्रांस में 1882 में सैगविन ने खोला।

✦ अंधों के लिए ब्रेल पद्धति के आविष्कारक लुई ब्रेल का जन्म 18 09 में फ्रांस में हुआ। 1821 में इन्होंने ब्रेल प्रणाली का आविष्कार किया। ब्रेल प्रणाली को 1832 में स्वीकृति मिल गई। इनके सम्मान में भारत में 2009 में 2 रुपये का सिक्का जारी किया जा चुका है।

✦ ब्रेल रूलर, चांदा, कम्पास से दृष्टिहीन भी आकृतियां बना सकते हैं।

✦ ब्रेल स्लेट में 6 गांठे व 6 बिन्दु होते हैं। यह लिखने का सरल उपकरण नेत्रहीनों के लिए है।

✦ ब्रेलर टाइपराइटर में 6 बटन व एक स्पेस होता है।

✦ भारतीय ब्रेल इंग्लिश ब्रेल पर आधारित है। जिसमें 26 से अधिक वर्ण हैं।

✦ दृष्टिबाधितों के लिए प्रमुख उपकरणों में ब्रेल टॉकिंग कैल्कुलेटर,

Scanned with CamScanner

अबेकस आदि।

- अबेकस यंत्र या गिनतारा में एक चौखटा होता है जिसमें कई तार लगे होते हैं और इन तारों में मंगे या लकड़ी के मनके लगे रहते हैं। जो गिनती आदि में काम आते हैं।
- विशिष्ट बालकों की शिक्षा के लिए विशेष कक्षाओं के आयोजन के साथ-साथ, व्यक्तिगत ध्यान देने, व्यवसायिक प्रशिक्षण देने, मनोवैज्ञानिक सम्पुष्टि देने जैसे, उपाय किये जाते हैं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में विशिष्ट बालकों की शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक विशेष प्रावधान किये गये हैं। इनमें से सर्वाधिक प्रमुख व्यवस्था व्यवस्था है। प्रत्येक विद्यालय में मनोवैज्ञानिक मार्गनिर्देशक व परामर्शक (Guidance and Counseller) की व्यवस्था का प्रावधान है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यान्वयन -1992 में विशिष्ट समूह बालकों (Special Group of Children) के निमित्त प्रत्येक विद्यालय में विशेष रूप से प्रशिक्षित अध्यापकों की व्यवस्था करने का प्रावधान किया गया है। 53, 70 से कम बुद्धि-लब्धि बालकों को 'क्षीण-बुद्धि समूह' में रखा जायेगा।
- निम्न बुद्धि का होना (Low Intelligency) मानसिक-मंदन (Mental Retardness) कहलाता है। लेकिन किसी बच्चे का निम्न स्तर की शैक्षिक उपलब्धि होने का आशय यह नहीं है कि वह मानसिक रूप से मंदित ही है।
- मानसिक रूप से मन्द बालकों को शिक्षा देने हेतु वैयक्तिक-अनुदेशन (Individual Instructions) उपागम सर्वोत्तम है।
- **विकलांगों के लिए पारित अधिनियम एवं राष्ट्रीय संस्थाएं :-**

1. **मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम-1987 (Mental Health act -1987)** - विकलांग बच्चों का इलाज और मानसिक विकलांग बच्चों का पुनर्वास
2. **भारतीय पुनर्वास परिषद् अधिनियम-1992/संसोधन-2000 (RCIRehabilitation council of India)** - यह पेशेवर व्यक्तियों, विकलांगों के पुनर्वास के लिए कार्य करने वालों को प्रशिक्षण एवं मान्यता एवं अनुसंधान की सुविधा प्रदान करता है। यह सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय के अधीन है। 3. विकलांग व्यक्ति अधिनियम-1995 (PWD Persons with Disability Act-1995) -यह अधिनियम 1996 में लागू हुआ। इसमें 7 प्रकार की निर्योग्यताएं मानी गई -

1. अंधापन (Blindness)
2. अल्पदृष्टि (LowVision)
3. श्रवण बाधित (Hearing impairment)
4. गामकबाधा (Locomotor Disability)
5. निवारणयोग्य कुष्ठ रोग (Leprosy cured)
6. मानसिक मंदता (Mental Retardation)
7. मानसिक बीमारी (Mental illness)

- **राष्ट्रीय न्यास अधिनियम-1999 (NTANational Trust Act-1999)** - एक संवैधानिक निकाय है जो विकलांगों को आत्मनिर्भर बनाता है। इसमें दो प्रकार की विकलांगता और शामिल की गई-

1. **आत्मविमोह/स्वलीनता (Autism or The signs of Autism Autistic Disorder)** - यह एक स्नायुतंत्र विकार माना गया है। इस विकलांगता में बच्चा भाषा को ना तो समझ पाता है न बोल पाता है और एक ही शब्द बार-बार बोलता है। सम्बन्धियों को भी नहीं पहचानता। जुड़वा बच्चों में 60 प्रतिशत तक स्वलीनता रहने की आशंका रहती है। स्वलीनता आनुवांशिक कारणों से होती है। बच्चों में निम्नलिखित दुष्प्रभाव पड़ते हैं -

   1. सामाजिक निर्योग्यता (Social Impairment)
   2. सम्प्रेषण निर्योग्यता (Communication Impairment/Echolalia)
   3. लचीलेपन की निर्योग्यता के कारण बार-बार शब्दों को दोहराते रहना (Repetitive Stereotyped Behaviour)
   4. World Autism Day - 2 April

2. **मस्तिष्क-पक्षाघात (Cerebral Palsy)** - लकवा, अधरांग (Due to brain and spinal cord damage)

## सृजनात्मकता/रचनात्मकता

### सृजनात्मक बालक (Creative Child/Creativity)

- **स्कीनर** - सृजनात्मक चिंतन का अर्थ है व्यक्ति की भविष्यवाणी निष्कर्ष नवीन, मौलिक व आसाधारण हो।
- **स्टेन** के अनुसार - जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो तथा उपयोगी हो।
- **रोजर व स्टीन** के अनुसार - सृजनशीलता को उत्पादन कहा है।
- **स्टेगनर-कारवास्की** के अनुसार - सृजनात्मकता में पूर्ण अथवा आंशिक रूप से नवीन वस्तु का उत्पादन निहित हैं।
- **प्लेटो** ने सृजनात्मकता को दैविक प्रेरणा, **डार्विन** ने कॉस्मिक जीवन शक्ति व **नीत्शे** ने पागलपन कहा है।
- **ड्रेवडाल ( लोकप्रिय परिभाषा )** - व्यक्ति की वह क्षमता जिसके द्वारा वह कुछ नई चीजों, रचना व विचारों को पैदा करता है जो नवीन होता है उद्देश्यपूर्ण व लक्ष्य निर्देशित होता है।

**गिलफोर्ड के अनुसार सर्जनात्मकता के तत्व :-**

- तात्कालीन स्थिति से परे जाने की योग्यता। (केन्द्र विमुख)
- समस्या की पुनर्व्याख्या।
- समन्वयशीलता
- दूसरों के विचारों में परिवर्तन करने की योग्यता (रूपान्तरण)

**महत्वपूर्ण तत्व :-**

1. **धारा प्रवाहित (Fulency)** :- खुली अभिव्यक्ति
2. **लचीलापन (Flexibility)** :- समस्या-समाधान के लिए विविध तरीकों का प्रयोग।
3. **मौलिकता (Originality)** :- नया व अनूठा
4. **विस्तारण (Elaboration)** :- विचारों, भावों की विस्तृत, व्यापक प्रस्तुति करना।

**सामान्य विशेषताएँ:-**

- मौलिकता/विधायकता/उत्पादकता।
- नवीनता
- उपयोगिता - जो भी कार्य होगा वह उपयोगी होगा।
- नमनीयता/लचीलापन- परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेते है।
- परिहास प्रियता- हँसी-मजाक की प्रवृत्ति।
- साहसी स्वभाव के होते हैं।
- दूरदर्शी - आगे की सोचते है।
- स्पष्टवादी-

Scanned with CamScanner

- जिज्ञासावादी/बहुविध चिन्तन/पार्श्व चिन्तन
- महत्त्वाकांक्षी
- अध्ययन में सामान्य
- कल्पनाशील
- संवेदनशीलता-भावुक होते हैं।
- स्वंतत्र निर्णय शक्ति संगठन की योग्यता- अधिगम स्थानान्तरण की योग्यता
- समस्या सजगता/समाधान की योग्यता।
- प्रगतिशील विचार/कमियों की समझ/कार्यलीनता- स्वागृह (गुण व कमियों की समय)
- एक ही समय बहुत से विचारों को सम्मुख रखने की योग्यता।
- आशावादी सोच।
- विचारों में प्रवाहशीलता
- उच्च स्तर की सौन्दर्यात्मक अनुभूति।
- उतरदायित्व के प्रति सजग।
- अभिव्यक्ति में स्वाभविकता व सहजता पायी जाती है।
- गतिशीलता
- उत्साही
- वातावरण के प्रति जागरूक
- उच्च आकांक्षा स्तर
- काठिन्य निवारण
- आत्मनिर्भर व अधिगम स्थानान्तरण की योग्यता।
- किसी समस्या का नई प्रकार का समाधान खोजने, आविष्कार करने, कविता लिखने, चित्र बनाने, नया विचार देने किसी बीमारी की चिकित्सा या रोकथाम को नई दिशा देने इत्यादि सभी सर्जनात्मकता की अभिव्यक्ति है।
  जैसे:- टैगोर, आंइसटीन, सी.वी. रमन. रामानुजन ये सभी सर्जनशील व्यक्तियों के उदाहरण है।

### सर्जनात्मकता व बुद्धि में सम्बन्ध-

- एक व्यक्ति सर्जनशील तथा बुद्धिमान दोनों हो सकते हैं परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति सर्जनशील ही हो। सर्जनात्मकता व बुद्धि में सकारात्मक सम्बन्ध पाया जाता है। सर्जननात्मकता के लिए एक विशेष मात्रा में बुद्धि का होना आवश्यक है (औसत से अधिक परन्तु विशेष मात्रा से अधिक बुद्धि का सर्जनात्मकता से सहसंबंध नहीं होता है।)
- टर्मन :-"यह आवश्यक नहीं है अधिक बुद्धिमान व्यक्ति सर्जनशील हो"
- गिलफोर्ड - एक विध चिंतन बुद्धि का आधार है जबकि बहुविध चिंतन सृजनात्मकता का आधार है।
- बुद्धि परीक्षा में ज्ञानात्मक व्यवहार की गति व शुद्धता पर बल दिया व मौलिकता पर बल दिया जाता है।
- गिलफोर्ड :- कभी सृजनात्मकता से अभिप्राय क्षमता से होता है, कभी सृजनात्मक रचना से तथा कभी सृजनात्मक उत्पादकता से।
- आइजैंक - सृजनात्मकता वह योग्यता है जिसके द्वारा नये सम्बन्धों का ज्ञान होता है।

### सृजनात्मकता के आयाम-

1. मौलिकता - बैरन ने बल दिया।
2. असाधारण (Unusualness) - गिलफोर्ड - सामान्य से हटकर
3. संवेदनशीलता - रोलोमें ने वर्णन किया है।
4. प्रयोगात्मकता (लोवल - नवचारों को बनाने व पहचानने की प्रवृत्ति है।)
5. उत्पाद - स्टेन ने माना है।
6. प्रक्रिया - टोरेन्स इसे - सम्बन्ध देखने व नये सम्बन्धों की उत्पत्ति को मानसिक प्रक्रिया कहा है।
7. सृजनात्मकता विभिन्न योग्याताओं का योग है।
8. सृजनात्मकता रूपात्मक संश्लेषण है।
9. सृजनात्मकता अन्तर्ज्ञान (Intuitive) का रूप है कांट ने इसे प्राकृतिक कहा है।
10. दैविक प्रेरणा - प्लेटो ने कहा है। (सृजनात्मकता)
11. सृजनात्मकता कॉस्मिक जीवन शक्ति - डार्विन (मानवीय सृजनात्मकता सृजनात्मक शक्ति का प्रकृतिकरण है जो की जैव पदार्थ के जीवन में निहित है।)
12. सृजनात्मकता नीत्शे के शब्दों में पागलपन है।
13. गिलफोर्ड ने गुण सिद्धान्त दिया जिसमें समस्या के प्रति चेतना, चिंतन की निरन्तरता, शब्द व सम्बन्धों की निरन्तरता, अभिव्यक्ति की निरन्तरता, समन्वय, मौलिकता व पुनः परिभाषा
14. बार्टलेट ने सृजनात्मकता को साहसिक चिंतन कहा है।

### टेलर के अनुसार सृजनात्मकता के प्रकार-

1. आविष्कारक सृजनात्मकता (Inventive) - नवीन खोज
2. नवाचारित सृजनात्मकता (Innovative) - नवीन व मौलिक अर्थ देने से संबंधित।
3. अभिव्यक्तिात्मक सृजनात्मकता (Expressive) जैसे पेंटिंग
4. उत्पादक सृजनात्मकता (Productive) - कलात्मक व वैज्ञानिक वस्तु उत्पादन।
5. आपत्तिक सृजनात्मकता (Emergentive) - अल्प/तुरन्त किसी समस्या का नया व मौलिक अर्थ खोजना।

### प्रतिभाशाली व सृजनात्मक में अन्तर-

1. यह अनिवार्य नहीं कि सभी प्रतिभाशाली सृजनात्मक हो।
2. प्रतिभाशाली सदैव सफलता उन्मुख जबकि सृजनात्मक नहीं।
3. प्रतिभाशाली उच्च बुद्धि, लब्धी 130+ होते है सृजनात्मक औसत से अधिक 110 - 120IQ वाले। (मन्द बुद्धि सृजनात्मक नहीं होते हैं।)
4. प्रतिभाशाली अध्ययन में विशेष सफलता सृजनात्मक सामान्य।
   विशेष : बैरन - सृजनात्मकता पहले से विधमान वस्तु व तत्वों को मिलाकर नये योग्य बनाना है।

- मैडनिक - सृजनात्मकता साहचर्यात्मक तत्वों का नवीनतम मिश्रण है।

### सृजनात्मकता के प्रकार-

1. आकस्मिक सृजनात्मकता - जो अचानक भाग्यवश होता है।
2. सहज सृजनात्मकता - सहज भावना से तात्कालिक प्रयोजन के लिए
3. संरक्षात्मक सृजनात्मक - एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलने वाली।

### सृजनात्मक चिन्तन की अवस्थाएँ-

1. आयोजन (Preparation) - आवश्यक तथ्यों व प्रमाणों को एकत्रित करना।

Scanned with CamScanner

2. उद्भवन - निक्रियता की अवस्था चिन्तन को देता है कुछ समय के लिए।
3. प्रबोधन/प्रदीप्ति (Incubation) - समस्या का समाधान नजर आना
4. प्रमाणीकरण/संशोधन/सत्यापन (Revision) - समाधान/निष्कर्ष की जांच/मूंल्याकन करना।

## सृजनात्मकता का स्वरूप-

- सृजनात्मक जन्मजात व अर्जित दोनों होती है।
- सृजनात्मकता बालक सामान्यत: औसत से अधिक बृद्धि लब्धि (110 से 120) के होते हैं।
- सृजनात्मकता का संबंध अपसारी चिन्तन/पार्श्व चिन्तन से होता है।
- सृजनात्मकता का विकास बाल्यावस्था से शुरू व 30 वर्ष की सीमा में उच्चतम सीमा पर पहुंच जाता है।
- सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है।
- सृजनात्मकता प्रक्रिया व परिणाम दोनों।
- लक्ष्य निर्देशित होती है।
- अनुपम मानसिक क्रिया जिसका प्रशिक्षण द्वारा विकास किया जा सकता है।
- यह मूर्त अमूर्त, शब्दि व अशाब्दिक रूप में हो सकती है।

## सृजनात्मकता के सिद्धान्त

1. मनोविश्लेषण सिद्धान्त: -
   सिग्मण्ड फ्रायड :- पूर्व चेतना के विकास पर सृजनात्मकता निर्भर करती है।
2. साहचर्यवाद सिद्धान्त:-
   रिबोट :- सृजनात्मकता संयोगों का पुनर्गठन है।
3. अन्त: दृष्टिवाद का सिद्धान्त:-
   कोहलर :- सृजनात्मकता अवबोध पर निर्भर करती है।
4. अस्तित्ववाद का सिद्धान्त:-
   विलियम वुंट :- सृजनात्मकता मिलन व सामंजस्य पर निर्भर करती है।

## सृजनात्मकता मापन के परीक्षण-

- चित्रपूर्ति परीक्षण।
- वृत्त परीक्षण।
- टीन के डिब्बों का परीक्षण।
- प्रोडेक्ट इम्प्रूवमेन्ट टास्क।

## सृजनात्मकता के विकास में शिक्षक की भूमिका-

- उदाहरण/आदर्श प्रस्तुत करना।
- वस्तुओं में सम्बन्ध स्थापित करना।
- पर्याप्त स्वतंत्रता। उत्तर देने की स्वतंत्रता प्रदान की।
- आत्म मूल्यांकन की योग्यता का विकास + अहं अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान कर।
- उचित अवसर व वातावरण उपलब्ध कराना।
- सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना - उचित अवसर व वातावरण उपलब्ध कराना।
- अभिनव कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- ब्रेन स्टोरमिंग/बौद्धिक आक्रमण/भूमिका निर्वाह/सिनेटिक्स विधि का प्रयोग।
- समस्या - समाधान व खेल विधि का प्रयोग
- मुक्त उत्तर वाली प्रश्नावली विधि का प्रयोग।
- आत्मानुशासन व आत्मयोग्यता का विकास। स्वस्थ आदतों का विकास करना।
- शिक्षण प्रतिमानों का प्रयोग जैसे रिचर्ड सचमैन का पूछताछ प्रशिक्षण प्रतिमान

**विशेष :-**

- गिलफोर्ड ने सृजनात्मकता में 05 मानसिक व्यापार बताये हैं:-
  1. ग्रहणात्मक व्यापार (संज्ञान) 2. केन्द्राभिमुख चिन्तन 3. केन्द्राविमुख चिन्तन 4. स्मृति 5. मूल्यांकन।

  नोट :- सर्जनात्मकता का देहली मॉडल - किसी भी सर्जनात्मक कार्य के लिए बुद्धि का एक न्यूनतम स्तर होना आवश्यक है।

## सृजनात्मकता मापन में योगदान-

1. टोरेन्स का सृजनात्मक मिनीसोटा परीक्षण (1966) इसमें 6 शब्दिक व 3 अशाब्दिक उपपरीक्षण शामिल होते हैं।

- यह परीक्षण प्रवाहिता, लोचशीलता, मौलिकता व विस्तार का मापन निम्न उपपरीक्षण द्वारा करता है - (1) आकृति पूर्ति परीक्षण, (2) वृत परीक्षण (3) उत्पाद सुधार कार्य (4) असाधारण प्रयोग
- इसके द्वारा किण्डरगार्टन अवस्था (4 - 8 वर्ष) से लेकर वयस्का का मापन होता है।

**इस परीक्षण के 3 वर्ग है-**

(i) निष्पादन (Performance) - इसमें 4 अशब्दिक कार्य होते हैं - अधूरी आकृति, तस्वीर बनाना, वृत व वर्ग व सृजनात्मक अभिकल्प के तहत शीर्षक लिखने व काल्पनिक कहानियाँ लिखने होता है।

(ii) अशाब्दिक कार्य - इसमें -
   (1) पूछो व अनुमान लगाओ
   (2) परिणाम सुधार कार्य
   (3) खिलौना कुत्ता
   (4) अजीव प्रयोग कार्य

(iii) शाब्दिक कार्य - इसमें टीन के डिब्बे परीक्षण, परिणाम कार्य परीक्षण, सामान्य समस्या सुधार, गायकूद समस्या व काल्पनिक कहानियों के परीक्षण शामिल है।

2. गिलफोर्ड व मेरीफील्ड का कॉलेज के विद्यार्थियों का सृजनात्मक परीक्षण - यह धारा प्रवाहिता, लोचशीलता, मौलिकता, समस्या के प्रति संवेदनशीलता, सिमेंटिक विस्तार व पुन: परिभाषा का मापन करता है।
3. गेटेजेल व जैक्सन परीक्षण - इसमें 5 उपपरीक्षण शामिल है -
   (1) शब्द साहचर्य
   (2) वस्तु परीक्षण
   (3) छिपी आकृति
   (4) लोककथा के 3 अन्त
   (5) समस्या पूर्ति
4. रिमोट एशोसियट परीक्षण - मेडनिक (1974) - यह साहचर्यात्मक धारा प्रवाहिता मापन करता है।
5. वालच व फॉगन परीक्षण - बहुविध चिंतन मापन।
6. फ्लैजन परीक्षण - समस्यात्मक शृंखला का समाधान।
7. हैरिस/ओवन - वैज्ञानिक सृजनात्मक परीक्षण

Scanned with CamScanner

8. हालैण्ड/केण्ट (1960) – विद्यालय छात्रों पर परीक्षण (सृजन विज्ञान मापनी)
9. हरग्रीब्ज, वेच, मेयर, बेरन ने भी मापन किया।

**सृजनात्मकता के भारतीय परीक्षण–**

- भारत में पहला प्रयास कलकत्ता के ए. राय चौधरी ने आंग्ल भाषा में परीक्षण तैयार किया।
- प्रो. सी.आर. परमेश (1971) वालच व कॉगन परीक्षण का भारतीय अनुकुलन किया।
- वी.वी. चटर्जी ने मोजेक परीक्षण की सहायता से किया।
- एम.के. रैना ने टोरेन्स परीक्षण का भारतीय अनुकूलन करके राजस्थान के 17 विद्यालय के बच्चों पर प्रयोग किया।
- के. एन. शर्मा (1972) का परीक्षण रचनात्मक उत्पादन प्रवाहिता, लचीलापन, मौलिकता, समस्या समाधान का मापन करता है।

**प्रमुख परीक्षण–**

1. **पासी का सृजनात्मक परीक्षण (1972, 1989)**
   बी.के. पासी (हिन्दी/अंग्रेजी) ये शाब्दिक व अशाब्दिक कारक के छ: (6) उत्परीक्षण शामिल है–
   (1) देखने की समस्या
   (2) असाधारण उपयोग की समस्या
   (3) परिणाम परीक्षण
   (4) जिज्ञासा परीक्षण
   (5) वर्ग पहेली परीक्षण
   (6) ब्लॉक परीक्षण द्वारा मापन करता है।
2. **बाकर मेहन्दी का शाब्दिक व अशाब्दिक सृजन परीक्षण (1973, 1985)**
   शब्दिक में 4 उपपरीक्षण
   (1) क्यों होगा परीक्षण
   (2) वस्तु के नये प्रयोग
   (3) नये सम्बन्धों परीक्षण
   (4) वस्तु मनोरंजक/रूचि सृजन
   **अशाब्दिक में 3 परीक्षण –**
   (1) चित्र निर्माण क्रिया
   (2) चित्र पूर्ति क्रिया
   (3) त्रिभुजाकार/अण्डाकार आकृति क्रिया
4. के.एन. शर्मा – अपसारी उत्पादन योग्यता परीक्षण (1987) – 8 योग्यता मापन व 5 उपपरीक्षण
5. एस.पी. मल्होत्रा व सुचेता कुमारी परीक्षण – भाषा सृजन परीक्षण (1989) – इसमें 5 उपपरीक्षण शामिल हैं।
6. रामचन्द्र की सृजनात्मक मैट्रिस अनुक्रिया परीक्षण (1975)

## समावेशी शिक्षा

- यह एक ऐसे अधिगम वातावरण के निर्माण पर बल देती है जो प्रकृति, वर्ग, लिंग, विकलांगता, धर्म, संस्कृति, भाषा के आधार का विचार किये बिना सभी विद्यार्थियों को सम्पूर्ण वैयक्ति, शैक्षिक व व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देती।
- यह विशिष्ट बालकों को मुख्यधारा में जोड़ने हेतु शिक्षा प्रदान करें।
- नि:शक्त बालकों की शिक्षा के लिए संकल्प विद्यालयों में शिक्षा पर बल।
- समावेशी शिक्षा के तहत विशिष्ट क्षमता वाले बालक जैसे मन्द बुद्धि, अन्धे बालक, बहरे बालक, वंचित बालक की शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। इसमें –
  (1) शारीरिक भिन्न बालक
  (2) मानसिक भिन्न बालक
  (3) सामाजिक रूप से विचलित बालक
  (4) शैक्षिक रूप से भिन्न बालकों को शामिल किया जाता है।

**समावेशी शिक्षा के सिद्धान्त/विशेषताएँ–**

1. व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार शिक्षा के अवसर प्रदान करना।
2. माता-पिता का सहयोग लेना।
3. भेदभाव रहीत शिक्षा प्रदान करना।
4. विशिष्ट कार्यक्रमों द्वारा शिक्षा प्रदान करना।
5. नि:शुल्क उपयुक्त शिक्षा प्रदान करना।

**समावेशी शिक्षा के मॉडल–**

1. **सांख्यिकीय मॉडल –**
   यह व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार विशिष्ट विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये शिक्षा प्रदान करने पर बल देता है।
2. **मौखिक संचार मॉडल –**
   यह वाक समस्या से ग्रस्ति बालकों की शिक्षा से संबंधित है। जैसे हकलाना, तुतलाना, मातृभाषा को नहीं जान पाना, मौखिक, संचार में भिन्नता होना इनके लिए विशिष्ट कार्यक्रमों का आयोजन होना चाहिए।
3. **चिकित्सीय जीव विद्या मॉडल –**
   यह शारीरिक रूप से अक्षम बालकों से संबंधित व शारीरिक कमी के अनुसार शैक्षिक कार्यक्रम का आयोजन होना चाहिए।
4. **सांस्कृतिक मॉडल –**
   इसका संबंध सांस्कृतिक रूप से अल्पसंख्यक, असुविधा युक्त व वंचित बालक आते हैं।
5. **मनोसामाजिक मॉडल –**
   इसका संबंध संवेगात्मक समस्या से ग्रस्त बालक, समस्यात्मक व अपराधी बालकों से होता है।

## बाल केन्द्रित शिक्षा व प्रगामी/ प्रगतिशील शिक्षा अवधारणा

- प्राचीनकाल में शिक्षा शिक्षक केन्द्रित थी। आधुनिक काल यह सर्वांगीण विकास को लक्ष्य मानती हुई शिक्षा बालक केन्द्रित हो गई है। यह प्रकृतिवाद की देन है जो स्वभाविकता पर बल देती है।
- भारत में गिजूबाई (गुजरात) की बड़ी भूमिका रही है, उन्होंने विद्यालय, पाठ्यक्रम व पुस्तकों की रचना की।

**विशेषताएँ–**

1. बालक का ज्ञान – बालक के व्यवहार व विकास का ज्ञान अध्यापक है।
2. बालकेन्द्रित पाठ्यक्रम – पाठ्यक्रम वैयक्तिक भिन्नता, बालक की रूचि, आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए।
3. मूल्यांकन व परीक्षण – नैदानिक व सतत मूल्यांकन का प्रयोग है।

Scanned with CamScanner

4. शिक्षा बालक की मूल प्रवृतियों, प्रेरणा व संवेग आधारित हैं।
5. आत्मानुशासन आधारित शिक्षा/राष्ट्रीय भावना आधारित पाठ्यक्रम व लचीला व वातावरण आधारित (जीवनउपयोगी)
6. वैयक्तिक व सामूहिक रूप से सीखने/रुचि व पूर्व ज्ञान पर आधारित है।
7. मुक्त रूप से अधिगम का विकास।

### बाल केन्द्रित शिक्षा के सिद्धान्त–

1. **क्रियाशीलता का सिद्धान्त** –
बालक को क्रियाशील रहकर शिक्षा प्राप्त करने पर बल।
2. **प्रेरणा का सिद्धान्त** –
अनुकरणीय नैतिक उदाहरण रखकर प्रेरित करना।
3. **रुचि का सिद्धान्त** –
शिक्षा बालक की रूचि को अनुसार दी जानी चाहिए।
4. **जीवन सम्बद्धता सिद्धान्त** –
शिक्षा बालक के व्यवहारिक जीवन से जुड़ी होनी चाहिए।
5. **निश्चित उद्देश्य सिद्धान्त** –
शिक्षा के उद्देश्य स्पष्ट व निश्चित होने चाहिए।
6. **वैयक्तिक भिन्नता सिद्धान्त** –
प्रत्येक बालक की योग्यता व अभिरुचि के अनुसार शिक्षा।
7. **लोकतंत्रीय सिद्धान्त** –
समानता आधारित कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।
8. **निर्माण व मनोरंजन का सिद्धान्त** –
हस्तकला, रचनात्मक कार्य भी होने चाहिए।
9. **विभाजन सिद्धान्त** –
विषयवस्तु को छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर शिक्षा।
10. **चयन का सिद्धान्त** –
बालक की योग्यतानुसार चयन किया जाना चाहिए।

## प्रगतिशील शिक्षा

- **प्रतिपादक** –जॉन डिवी (अमेरिका) यह पारम्परिक शिक्षा का परिणाम थी। इस शिक्षा का उद्देश्य बालक की शक्तियों का विकास है व वैयक्तिक भिन्नता के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया की व्यवस्था करके इस उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।
- इस शिक्षा में प्रोजेक्ट विधि, समस्या विधि व क्रिया कार्यक्रम शिक्षण विधियों का प्रयोग होता है।

### विशेषताएँ–

- शिक्षा बालक के लिए है बालक शिक्षा के लिए नहीं।
- ऐसे वातावरण का निर्माण करना जिसमें सामाजिक विकास व जनजन्त्रीय मूल्यों की स्थापना है।
- प्रत्येक बालक को समान अवसर थे उसे स्वाभाविक प्रवृति, इच्छा व आकाक्षाओं के अनुसार विकास का अवसर मिले। परस्पर सहयोग वप सामंजस्य की स्थापना है।
- स्वयं करके सीखने पर बल।
- रुचि व प्रयास पर बल।
- शिक्षक समाज का सेवक ईश्वर का प्रतिनिधि
- स्वतंत्रता, समानता, आत्मनुशासन, वैयक्तिक भिन्नता, स्वउत्तरदायित्व पर आधारिक शिक्षा।
- जॉन डिवी ने लैब विद्यालयों को प्रगतिशील विद्यालय का उदाहरण माना है।
- इसमें अध्ययन की समय सारणी व बैठक व्यवस्था में लचीलापन होता है।

### समाज निर्माण में लैंगिक मुद्दे–

- **समाज निर्माण में लिंग की भूमिका :-**
- **लैंगिक अलगाव** – यह बाल्यवस्था में प्रारम्भ होता है। 8वें वर्ष में जिसमें लड़के व लड़कियां अपने-अपने समूह में रहते है समूह का व निर्माण करते है।
- **लैंगिक आकर्षण** – किशोरवस्था में प्रारम्भ विपरित लिंग के साथ घनिष्ठता प्रारंभ।
- **समूह भक्ति** – किशोरवस्था में वे समूह के स्वीकृत भाषा विचार व्यवहार व वेशभूषा को अपना आदर्श बनाते हैं।
- **समूह गुण** – लैंगिक समूह की सदस्यता से उनमें नेतृत्व उत्साह सहानुभूति व सद्‌भावना सामाजिक गुणों का विकास होता है।
- **स्वतंत्रता व संघर्ष** – बालक व बालिकाओं में लैंगिक परिपक्वता के साथ माता-पिता से स्वतंत्रता व व्यवसाय चुनाव को लेकर संघर्ष होता है।
- **लैंगिक भेदभाव :-**
- मनोवैज्ञानिकों ने अनुसंधान के आधार पर बताया है महिला व पुरूष लिंग की विभिन्नता के कारण अन्तर पाये जाते हैं।
- **सामान्य बुद्धि/विशिष्ट बुद्धि** – महिला/पुरूष में कुछ विशिष्ट योग्यता का अन्तर होता है पुरुष में सामान्यत तर्क करने, समानता खोजने व सामान्य ज्ञान ज्यादा श्रेष्ठ व लड़कियों में स्मरण, भाषा व सौन्दर्य बोध अधिक होता है। लड़कियों की भाषा शब्दावली व पठन गति भी अधिक होती है।
- **व्यक्तित्व में अन्तर** – व्यक्तिगत विभिन्नताओं की वजह से लड़के व लड़की का व्यक्तित्व अलग होता है।
- **आयु का लैंगिक भेद पर प्रभाव** – अवस्था विशेष व आयु के बढ़ने के साथ दोनों शारीरिक बनावट, मस्तिष्क, कार्यक्षमता में अन्तर आता है।
- **जाति लैंगिक मुद्दे** – विभिन्न जातियों पर किये गये अध्ययन से स्पष्ट होता है उच्च बौद्धिक योग्यता पर प्रभाव पड़ता है जैसे आदिम जाति के लोगों में संवेदी व गामक अभिलक्षण उत्तम व प्रत्यक्षण की गति तेज होती है।
- **शिक्षा में लैंगिक मुद्दे :-**
- लड़कियों की शिक्षा पर कम ध्यान देना उन्हें केवल गृहिणी व आदर्श माता की भूमिका में सामना।
- अध्यापक को इसमें सकारात्मक भूमिका अदा करनी होगी।
- सामाजिक दृष्टिकोण भी उनके प्रति लैंगिक भेदभाव को बढ़ाता है।
- आर्थिक पिछड़ापन व जातिगत पिछड़ापन भी जिम्मेदार है।

**निष्कर्ष :-** लैंगिक आधार पर छात्र-छात्रा में उपलब्धि व बुद्धि के वितरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ऐसा दृष्टिकोण केवल लैंगिक पूर्वाग्रह को व्यक्त करता है।

## बालक एक समस्या समाधानकर्त्ता के रूप में

- बालक में इस योग्यता का विकास करने में निम्न गुणों का विकास आवश्यक है –

Scanned with CamScanner

1. आत्म पहचान का गुण विकसित करना।
2. स्वयं की कमी को स्वीकारना व दूर करना सीखना।
3. आत्म मूल्यांकन की योग्यता का विकास।

✦ **समस्या समाधान की वैज्ञानिक विधि के चारण ( स्कीनर के अनुसार ) :-**

1. समस्या को समझना - क्या है, क्या कठिनाइयाँ है व समाधान क्या हो सकता है।
2. जानकारी का संग्रह - समस्या संबंधी तथ्यों का संग्रह
3. संभावित समाधान का निर्माण - सर्जनात्मक चिंतन के आधार पर।
4. संभावित समाधान का मूल्यांकन सही है या नहीं
5. समाधानों का परीक्षण - प्रयोगशाला में।
6. निष्कर्ष का निर्णय/समाधान का प्रयोग - सही समाधान का प्रयोग करना।

✦ **समस्या समाधान व्यवहार पर प्रकाश** - स्मृति, संज्ञानात्मक कौशल, सम्प्रत्ययों में भेद करने की योग्यता, बुद्धि स्तर, निर्देश व सूझ पूर्ण व्यवहार का प्रभाव पड़ता है।

✦ **विशेष** :- बालक समस्या की खोजकर्ता के रूप में निम्न किया करता है -

1. निरीक्षण
2. तुलना
3. प्रयोग का
4. प्रदर्शन
5. सामान्यीकरण
6. प्रमाणीकरण

✦ **शिक्षक की भूमिका :-**

1. शिक्षक समस्या के बारे में स्पष्ट करें।
2. समस्या संबंधि सप्रत्ययों का बालक का ज्ञान हो।
3. समस्या नियम व सम्प्रत्ययों का महत्व बताना।
4. स्पष्ट निर्देश - समाधान सम्बन्धी
5. छात्रों के निष्पादन का सत्यापन करना।

✦ **बालक वैज्ञानिक अन्वेषक व समस्या समाधक के रूप में - वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में** जब बालक ज्ञान व अनुभव के माध्यम से किसी समस्या के प्रत्येक पक्ष को जानने लगता है, वह स्वयं समस्या समाधान खोज लेता है, तो उसमें वैज्ञानिक अन्वेषक के गुण विकसित हो जाते हैं।

✦ **बालक एक अन्वेषक के रूप में :-**

1. निरीक्षण - विषय व समस्या की परिस्थितियों का निरीक्षण
2. तुलना करना।
3. प्रयोग - तुलना के आधार पर प्रयोग करना।
4. प्रदर्शन - निरीक्षण तुलना के आधार पर प्रयोग का प्रदर्शन करना।
5. सामान्यीकरण - प्रयोग के तथ्यों का परिणाम के रूप में सिद्धान्त निर्मित करना।
6. प्रमाणीकरण - प्रयोग द्वारा पुनः समस्या का प्रमाणीकरण करता है।

✦ **प्रेरित करने के आवश्यक उपाय :-**

1. बालक के समक्ष छोटी-छोटी समस्या रखना।
2. समस्या समाधान हेतु प्रेरित करना।
3. बालक के संभावित परिणामों का परीक्षण करना।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ निम्न में से कौनसा कृत्य अपचारी कृत्य के अंतर्गत आता है? **(संस्कृत-II ग्रेड-2010)**
(A) जुआ खेलना (B) दिवास्वप्न देखना
(C) कक्षा में नींद निकालना (D) गृहकार्य नहीं करना (A)

❖ डाल्टन शिक्षण विधि का विकास किसने किया ? **(उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011)**
(A) फोबेल (B) किलपैट्रिक
(C) हेलेन पार्कहर्स्ट (D) डाल्टन (C)

❖ किण्डरगार्डन पद्धति का संस्थापक कौन था ? **(RPSC-2007)**
(A) फीमैन (B) मॉरिया मोन्टेसरी
(C) फ्रडरिक फ्रोबेल (D) स्टीवेन्सन (C)

❖ अंधे बालकों को शिक्षण देने की पद्धति है- **(सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) पाठ्यसहगामी क्रियाएँ (B) श्रव्य सामग्री
(C) ब्रेल लिपि (D) टंकन लिपि (C)

❖ निम्न कक्षाओं में शिक्षण की खेल विधि आधारित है- **(UTET-I लेवल-2011)**
(A) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम सिद्धांतों पर
(B) शिक्षण की गतिविधियों के सिद्धांतों पर
(C) विकास व वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर
(D) शिक्षण के सामाजिक सिद्धांतों पर (C)

❖ व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के शिक्षण के लिए प्रायोजना पद्धति के निर्माता थे ? **(सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)**
(A) थार्नडाइक (B) किलपैट्रिक
(C) पार्कहर्स्ट (D) वाटसन (B)

❖ सृजनात्मक शिक्षार्थी वह है, जो ? **(CTET-II लेवल-2012)**
(A) ड्राइंग और पेंटिंग में बहुत विलक्षण है।
(B) बहुत बुद्धिमान है।
(C) परीक्षा में हर बार अच्छे अंक प्राप्त करने के योग्य है।
(D) पार्श्व (लेट्रल) चिंतन और समस्या समाधान में अच्छा है। (D)

❖ सृजनात्मक उत्तरों के लिए आवश्यक है- **(CTET-II लेवल-2011)**
(A) प्रत्यक्ष शिक्षण एवं प्रत्यक्ष प्रश्न
(B) विषय वस्तु आधारित प्रश्न
(C) मुक्त उत्तर वाले प्रश्न
(D) एक अत्यन्त अनुशासित कक्षा (C)

Scanned with CamScanner

❖ सृजनात्मक बच्चों का मूल गुण है- **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) वे नैतिक होते हैं।
(B) वे बुद्धिमान होते हैं।
(C) वे शक्तिशाली होते हैं।
(D) वे मौलिक चिंतन करते हैं। (D)

❖ निम्न में से कौनसा शिक्षार्थियों में सृजनात्मकता का पोषण करता है ? **(CTET-I लेवल-2012)**
(A) विद्यालयी जीवन के प्रारंभ से उपलब्धि के लक्ष्यों पर बल देना।
(B) परीक्षा में अच्छे अंकों के लिए कोचिंग करना।
(C) अच्छी शिक्षा के व्यवहारिक मूल्यों के लिए विद्यार्थियों को शिक्षण।
(D) प्रत्येक शिक्षार्थी की आन्तरिक प्रतिभाओं का पोषण करने, प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध कराना। (D)

❖ सृजनशीलता के पोषण हेतु, एक अध्यापक को अपने विद्यार्थियों को रखना चाहिए- **(RTET-II लेवल-2012)**
(A) कार्य केन्द्रित
(B) लक्ष्य केन्द्रित
(C) कार्य केन्द्रित एवं लक्ष्य केन्द्रित
(D) पुरस्कार केन्द्रित (A)

❖ विशिष्ट बालकों के अन्तर्गत निम्नलिखित में से कौनसा बालक आता है ? **(BTET-II लेवल-2012)**
(A) पिछड़ा बालक (B) प्रतिभाशाली बालक
(C) मंद बुद्धि (D) इनमें से सभी (D)

❖ वैयक्तिक विभिन्नताओं के आधार पर पार्कहर्स्ट ने बालकों के लिए दी शिक्षा पद्धति है- **(PTI-III लेवल-2012)**
(A) डाल्टन प्लान (B) विनेटका प्लान
(C) प्रोजेक्ट मैथड (D) प्ले मैथड (A)

❖ किसी बच्चे में सृजनशीलता विकसित करने के लिए अध्यापक को नहीं करना चाहिए- **(PTI-II लेवल-2012)**
(A) बच्चे की क्रियाओं को प्रतिबंधित करना
(B) बच्चे के विचारों का सम्मान करना
(C) बच्चे की उत्कंठा/जिज्ञासा को संतुष्ट करना
(D) बच्चे को अपूर्व चिंतन की दिशा में ले जाना (A)

❖ निम्न कथनों में से कौनसा सही नहीं है ? **(PTI-II लेवल-2012)**
(A) ऊँचे या नीचे, प्रत्येक व्यक्ति में सृजनशीलता के बीज होते हैं।
(B) सृजनशीलता और परिपक्वता के बीच दूरी का संबंध होता है।
(C) किसी समस्या को हल करने के लिये अवसर दिया जाना चाहिए।
(D) मौलिकता ही सृजनशीलता है। (B)

❖ बच्चों में सृजनशीलता का मापन करने के लिए निम्न में से कौनसा एक परीक्षण नहीं है ? **(PTI-II लेवल-2012)**
(A) किसी अधूरी आकृति या चित्र पर एक कहानी लिखना या पूरी करना
(B) पहाड़ा लिखना
(C) वस्तुओं को एक नये (नवीन) क्रम में व्यवस्थित करना
(D) किसी वृत्त की सीमाओं के अन्तर्गत आकृति को पूरा करना (B)

❖ सीमा हर पाठ को बहुत जल्दी सीख लेती है, जबकि लीना उसे सीखने में ज्यादा समय लेती है, यह विकास के .......... सिद्धांत को दर्शाता है- **(CTET-I लेवल-2012)**
(A) वैयक्तिक भिन्नता
(B) अन्तःसंबंध
(C) निरन्तरता
(D) सामान्य से विशिष्ट की ओर (A)

❖ व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर शिक्षा देने हेतु निम्न में से कौनसा विकल्प उपयुक्त है ? **(अंग्रेजी-II ग्रेड-2010)**
(A) बुद्धि के स्तर के आधार पर बालकों का कक्षा विभाजन
(B) लिंग के आधार पर बालकों का कक्षा विभाजन
(C) लिंग के आधार पर गृह कार्य में विभिन्नता
(D) बाल केन्द्रित शिक्षण विधियों का प्रयोग (A)

❖ निम्न में से कौनसा विकल्प उपलब्धि में व्यक्तिगत भिन्नता का प्रतीक नहीं है ? **(विज्ञान-II ग्रेड-2010)**
(A) पूर्व अनुभवों में विभिन्नता
(B) लिंग में विभिन्नता
(C) रुचियों में विभिन्नता
(D) पूर्व निर्देशन में विभिन्नता (B)

❖ निष्पत्ति परीक्षणों का सबसे अधिक उपयोग है- **(आर.पी.एस.सी.-III ग्रेड-2004)**
(A) अधिगम में (B) प्रेरकों में
(C) छात्रों के वर्गीकरण में (D) श्रेणी विभाजन में (C)

❖ इनमें से कौनसा कृत्य बाल-अपराध नहीं है ? **(उर्दू-II ग्रेड-2010, तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) नशा करना
(B) अध्यापकों का अभिवादन नहीं करना
(C) कक्षा से भाग जाना
(D) झूठ बोलना (B)

❖ एक बालक जो गणित के अतिरिक्त अन्य विषयों में सामान्य है, जबकि गणित में बहुत निम्न उपलब्धि रखता है, ऐसे बालक को निम्न में से किस श्रेणी में रखा जा सकता है ? **(उर्दू-II ग्रेड-2010)**
(A) पिछड़े बालक (B) मंद बुद्धि बालक
(C) औसत बालक (D) मनस्ताप बालक (A)

❖ बालकों में प्रभावी अधिगम हेतु निम्नलिखित में से कौनसा विकल्प सबसे कम महत्त्व रखता है ? **(अंग्रेजी-II ग्रेड-2010)**
(A) अधिगम का दार्शनिक आधार
(B) अधिगम का शारीरिक आधार
(C) अधिगम के अभिप्रेरणात्मक आधार
(D) अधिगम के बौद्धिक आधार (A)

Scanned with CamScanner

❖ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से कौनसी व्यूह रचना अधिक उपयुक्त है ? **(RTET-II लेवल-2011)**
(A) अधिकतर बच्चों को सम्मिलित करते हुये कक्षा में चर्चा करवाना
(B) विद्यार्थियों को सम्मिलित करते हुये अध्यापक द्वारा निर्देशन
(C) सहकारी अधिगम
(D) अध्यापक के लिए योग्यता आधारित समूहीकरण करना (C)

❖ प्रतिभाशाली बालकों की पहचान निष्पादन परीक्षणों द्वारा कठिन मानी जाती है, इसका उपर्युक्त कारण किस विकल्प में दिया गया है ? **(विज्ञान-II ग्रेड-2010)**
(A) निष्पादन मापन से पढ़ाई में पिछड़े हुयें बालक को नहीं पहचान सकते हैं।
(B) बुद्धिलब्धि और निष्पादन में कोई संबंध नहीं है।
(C) निष्पादन मापन बहुत कठिन है।
(D) बुद्धिलब्धि की विश्वसनीयता निष्पादन मापन से अधिक है। (A)

❖ प्रतिभाशाली बच्चों के लिए आवश्यक है- **(BTET-I लेवल-2012)**
(A) उन्हें विशिष्ट योग्यता हेतु विशेष अवसर दिये जाए
(B) उन्हें असाधारण होने की अनुभूति कराई जाए।
(C) उन्हें लगातार पुरस्कार दिये जाएँ।
(D) इनमें से सभी। (A)

❖ एक छात्र जो हमेशा नई-नई जानकारियों के लिए स्रोतों की खोज करता रहता है व शिक्षकों व सहपाठियों से तर्क-वितर्क करता रहता है, होता है ? **(BTET-I लेवल-2012)**
(A) समस्यात्मक बालक (B) औसत बालक
(C) प्रतिभाशाली बालक (D) हठी बालक (C)

❖ एक शिक्षिका अपनी कक्षा के प्रतिभाशाली बच्चों की योग्यताओं की उपलब्धि जाँचना चाहती है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसे निम्नलिखित में से क्या नहीं करना चाहिए? **(CTET-I लेवल-2012)**
(A) गैर शैक्षणिक गतिविधियों में आंनद लेना सीखना
(B) तनाव नियंत्रण करना सीखना
(C) विशेष ध्यान के लिए उन्हें उनके समकक्षियों से अलग करना
(D) उनकी सृजनात्मकता को समृद्ध करने के लिए उन्हें चुनौती देना (D)

❖ बच्चे की जिज्ञासा शांत करनी चाहिए- **(उत्तराखण्ड TET-I ग्रेड-2011)**
(A) जब शिक्षक फुर्सत में हो
(B) जब विद्यार्थी फुर्सत में हो
(C) कुछ समय पश्चात्
(D) तत्काल जब विद्यार्थी द्वारा जिज्ञासा दी गई है (D)

❖ ......... प्रतिभाशाली होने का संकेत नहीं हैं ? **(CTET-I लेवल-2011)**
(A) अभिव्यक्ति में नवीनता (B) जिज्ञासा
(C) विचार (D) दूसरों के साथ झगड़ना (D)

❖ बाल अपराध का कारण है- **(सामान्य ज्ञान-II ग्रेड-2011)**
(A) माता-पिता में अनबन रहना
(B) परिवार के सदस्यों का सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार
(C) परिवार में आपस की सहमति से कार्य होना
(D) समृद्ध परिवार (A)

❖ कम गति से सीखने वाले बच्चों के लिए अध्यापक को क्या करना चाहिए ? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) टोली शिक्षण (B) अतिरिक्त ध्यान व शिक्षण
(C) प्रोत्साहन (D) इनमें से सभी (D)

❖ जिन बालकों की शैक्षिक उपलब्धि अपनी आयु के अन्य बालक से निम्न रहती है, कहलाते हैं- **(हिन्दी-II ग्रेड-2010, तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2012)**
(A) पिछड़ा बालक (B) मंद बुद्धि बालक
(C) मंदितमना बालक (D) बाल अपराधी (A)

❖ शिक्षा मनोविज्ञान में जिन बालकों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, वे है ? **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) समस्यात्मक बालक
(B) कम गति से सीखने वाले बालक
(C) मंद बुद्धि बालक
(D) इनमें से सभी (D)

❖ विशेष रूप से जरूरत मंद बच्चों की शिक्षा का प्रबंध होना चाहिए ? **(UTET-I लेवल-2012)**
(A) दूसरे सामान्य बच्चों के साथ
(B) विशेष विद्यालयों में विशेष बच्चों के लिए विकसित विधियों द्वारा
(C) विशेष विद्यालयों में
(D) विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों द्वारा (B)

❖ निम्नलिखित में से कौनसा कारक मंद बुद्धि बालक के लिए आवश्यक नहीं है ? **(BTET-I लेवल-2012)**
(A) सीखने की मंद गति
(B) शारीरिक दोष
(C) अमूर्त चिंतन का अभाव
(D) मौलिकता (D)

❖ निम्नलिखित में से कौनसी पिछड़े बच्चों की समस्याएँ होती हैं? **(CTET-I लेवल-2012)**
(A) कम शैक्षणिक योग्यता (B) संवेगात्मक समस्याएँ
(C) सामाजिक समस्याएँ (D) इनमें से सभी (D)

❖ नवीन विचारों का सृजन उत्पादन व मौलिक चिंतन आवश्यक गुण है- **(BTET-I लेवल-2011)**
(A) बुद्धिमत्ता का (B) सृजनात्मकता का
(C) सामाजिकता का (D) इनमें से सभी का (B)

Scanned with CamScanner

❖ सृजनात्मक मुख्य रूप से ............. से संबंधित है ? (CTET-II लेवल-2012)
(A) मॉडलिंग (B) अनुकरण
(C) अभिसारी चिंतन (D) अपसारी चिंतन (D)

❖ विद्यालय में विज्ञान एवं कला प्रदर्शनियाँ, संगीत एवं नृत्य प्रस्तुतियाँ तथा विद्यालय पत्रिका निकालना....... के लिए है- (CTET-II लेवल-2012)
(A) शिक्षार्थियों को सृजनात्मक मार्ग उपलब्ध कराने हेतु
(B) विभिन्न व्यवसायों के लिए, विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना
(C) विद्यालय का नाम रोशन करने के लिए
(D) अभिभावकों को संतुष्ट करने हेतु (A)

❖ बच्चों में सृजनात्मकता विकसित नहीं की जा सकती- (PTI-III लेवल-2012)
(A) उनको कोई एक विषय देकर और उससे संबंधित सूचनाएँ एकत्र करके
(B) आज की किसी समस्या की खोज करने/तलाश करने का उनको एक अवसर प्रदान करके
(C) उनको किसी समस्या के भावी परिणामों का विश्लेषण करने का एक अवसर प्रदान करके
(D) किसी जाँच पड़ताल करने के लिए उनको हतोत्साहित करके (D)

❖ गिलफोर्ड ने अभिसारी चिंतन पद का प्रयोग किससे समान अर्थ में किया है ? (RTET-II ग्रेड-2011)
(A) बुद्धि (B) सृजनात्मक
(C) बुद्धि एवं सृजनात्मक (D) कोई नहीं (B)

❖ बाल अपराधियों की आयु होती हैं ? (हिन्दी-II ग्रेड-2010)
(A) 5 से 10 वर्ष तक (B) 3 से 12 वर्ष तक
(C) 18 वर्ष से कम (D) 18 वर्ष से अधिक (C)

❖ नि:शक्त बालकों की शिक्षा के लिए प्रावधान किया जा सकता है ? (RTET-I लेवल-2011)
(A) समावेशित शिक्षा द्वारा (B) मुख्य धारा में डालकर
(C) समाकलन द्वारा (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं(A)

❖ निम्नलिखित में से कौनसी मानसिक मंदता की विशेषता नहीं है? (RTET-I लेवल-2011)
(A) बुद्धि लब्धि का 25 से 70 के मध्य होना
(B) धीमी गति से सीखना एवं दैनिक जीवन की क्रियाओं को न कर पाना
(C) वातावरण के साथ अनुकूलन में कठिनाई
(D) अन्त:वैयक्तिक संबंधों का कमजोर होना (D)

❖ प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं में विशिष्ट है, इसका अर्थ है, कि? (CTET-II लेवल-2011)
(A) कोई भी दो शिक्षार्थी अपनी योग्यताओं, रुचियों और प्रतिभाओं में एक समान नहीं होते हैं।
(B) शिक्षार्थियों में न तो कोई समान विशेषताएँ होती हैं न ही उनके लक्ष्य समान होते हैं।
(C) सभी शिक्षार्थियों के लिए एक समान पाठ्यचर्या संभव है।
(D) एक विषमरूपी कक्षा में शिक्षार्थियों की क्षमताओं का विकसित करना असंभव है। (A)

❖ नि:शक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा की केन्द्रीय प्रायोजित योजना का उद्देश्य.........में नि:शक्त बच्चों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना है ? (RTET-I लेवल-2011)
(A) नियमित विद्यालयों
(B) विशेष विद्यालयों
(C) मुक्त विद्यालयों
(D) ब्लाइंड रिली एसोसियेशन के विद्यालयों में (A)

❖ सृजनशीलता के पोषण के लिए एक अध्यापक को निम्नलिखित में किस विधि की सहायता लेनी चाहिए? (RTET-II लेवल-2012)
(A) ब्रेन स्टार्मिंग (B) व्याख्यान विधि
(C) दृश्य-श्रव्य सामग्री (D) इनमें से सभी (A)

❖ एक अध्यापक किसी भी समूह में समुदाय आधारित व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझ सकता है- (RTET-I लेवल-2012)
(A) आँखों के संपर्क के आधार पर
(B) बुद्धि के आधार पर
(C) भाषा एवं अभिव्यक्ति के आधार पर
(D) गृहकार्य के आधार पर (C)

❖ निम्न में से कौनसी विशेषता सामाजिक रूप से वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की नहीं है ? (RTET-I लेवल-2012)
(A) बालकों की देखभाल के अनुभव उन्हें स्कूल के लिए प्रभावशाली ढंग से तैयार नहीं करते
(B) नियमित स्वास्थ्य संबंधी देखभाल नहीं मिलती
(C) व्यापक एवं विविध अनुभवों को प्राप्त करने का मौका नहीं मिलता
(D) विद्यालय में अच्छा करने के लिए अभिप्रेरित नहीं किया जाता (B)

❖ मानसिक रूप से पिछड़े बालकों के लिए निम्न में से कौनसी व्यूह रचना कार्य करेगी ? (RTET-I लेवल-2012)
(A) कार्यों को मूर्त रूप में समझाना
(B) विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करना
(C) स्व-अध्ययन के अवसर प्रदान करना
(D) सहायता के लिए बाहर से संसाधनों को प्राप्त करना (A)

❖ पृथक कक्षाओं एवं संवर्धन कार्यक्रमों का प्रयोग शिक्षा के लिए किया जाता हैं ? (RTET-I लेवल-2012)
(A) प्रतिभाशाली बालकों के लिए
(B) निम्न शैक्षिक उपलब्धि बालकों के लिए
(C) प्रतिभाशाली एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि बालकों के लिए
(D) इनमें से कोई नहीं (A)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 11 विकास व शिक्षा में अनुपयोग

## आत्म प्रत्यय (Self Concept)

- आत्म प्रत्यय का विचार रैन डेसकोर्टेश द्वारा दिया गया व विस्तार से चर्चा विलियम जेम्स द्वारा की गई।
- विलियम जेम्स - (1890) आत्म प्रत्यय उन सब विचारों का पूर्ण योग है, जिन्हें व्यक्ति अपना कहकर पुकारता है। जैसे - मैं क्या हूँ, मैं कौन हूँ।
- वास्तविक आत्म प्रत्यय - वह कौन व क्या है।
- आदर्श आत्म प्रत्यय - वह क्या बनना चाहता है।

सर्वप्रथम प्रयोग - विलियम जेम्स

पुस्तक - मनोविज्ञान के सिद्धान्त में विलियम जेम्स ने आत्म प्रत्यय के चार प्रकार बताये हैं-

1. भौतिक आत्म प्रत्यय
2. आध्यात्मिक आत्म प्रत्यय
3. सामाजिक आत्म प्रत्यय
4. शुद्ध आत्म प्रत्यय

### आत्म प्रत्यय के पहलु-

- आत्म प्रत्यक्षीकरण
- आत्म चिन्तन
- आत्म रक्षा
- आत्म मूल्यांकन।

### आत्म प्रत्यय को प्रभावित करने वाले कारक-

- अभिप्रेरणा।
- परिपक्वता।
- शिक्षक का प्रभाव।
- बुद्धि का प्रभाव।
- पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ।
- सामाजिक कौशल।
- आकांक्षा स्तर।
- अभिवृत्ति।
- आत्म अनुशासन।
- विद्यालय का प्रभाव।

## अभिवृत्ति (Attitude)

- ड्रेवर - व्यवहार को एक दिशा प्रदान करने वाली प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक तत्परता का नाम अभिवृत्ति है।
- अर्थ - अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के दृष्टिकोण से होता है जो किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति व्यक्त किया जाता हैं।
- थर्स्टन के अनुसार - कुछ मनोवैज्ञानिक पदार्थो से सम्बन्धित सकारात्मक या नकारात्मक प्रभावों की मात्रा अभिवृद्धि कहलाता है।
- रेमर्स, रूमेल व गेज के अनुसार - अभिवृत्ति अनुभवों द्वारा व्यवस्थित संवेगात्मक प्रवृत्ति है जिसमें मनोवैज्ञानिक पदार्थों के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया होती है।
- ट्रेवर्स - व्यवहार को एक दिशा प्रदान करने वाली प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक तत्परता अभिवृत्ति।

### अभिवृत्ति के प्रकार-

1. भावात्मक/सकारात्मक अभिवृत्ति - किसी में विश्वास रखना, किसी को पसन्द करना।
2. नकारात्मक अभिवृत्ति - किसी से दूर भागना व अविश्वास रखना।

### दो गौण प्रकार-

1. सामान्य अभिवृत्ति - सभी के प्रति प्रेम या घृणा का भाव।
2. विशिष्ट अभिवृत्ति - व्यक्ति विशेष के प्रति घृणा/प्रेम का भाव।

### अभिवृत्ति की विशेषताएँ

- अभिवृति अनुभव के आधार पर अर्जित होती है।
- अभिवृत्ति पक्ष/विपक्ष दो दिशाओं में व्यक्त की जाती है।
- अभिवृत्ति का संबंध व्यक्ति के भाव तथा संवेगों से होता है।
- अभिवृत्ति सदैव परिवर्तनशील होती है।
- अभिवृत्ति पर वातावरण का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।
- अभिवृत्ति मन की एक अवस्था है।
- अभिवृत्ति विचारों का एक पुंज है।
- अभिवृत्ति में विश्वास व मूल्य का पक्ष निहित रहता है।
- अभिवृत्ति के 4 पक्ष हैं -

1. कर्षण शक्ति (Valence) - सकारात्मकता या नकारात्मकता।
2. चरम सीमा (Extremeness) - किसी सीमा तक सकारात्मक दान करना।
3. सरलता (Simplicity)/जटिलता (Complexity) - अभिवृत्ति में कम अभिवृतियाँ हो, ज्यादा हो तो जटिल।
4. केन्द्रीयता (Centrality) - यह अभिवृत्ति तंत्र में किसी विशिष्ट अभिवृत्ति की भूमिका को बताता है।

- अभिवृत्ति के 3 घटक -
  1. संज्ञानात्मक
  2. भावात्मक
  3. क्रियात्मक

### अभिवृत्ति व रुचि का सम्बन्ध-

- अभिवृत्ति व्यापक होती है सकारात्मक व नकारात्मक
- रूचि सदैव सकारात्मक होती है।

### अभिवृत्ति व अभिरुचि का सम्बन्ध-

- अभिवृत्ति किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति दृष्टिकोण को व्यक्त करती है जबकि अभिरुचि योग्यता व क्षमता को व्यक्त करती है।

### आलपोर्ट के अनुसार अभिवृत्ति निर्माण के चरण-

1. अनुभवों का संगठित होना।
2. अनुभवों का विभेदीकरण।
3. तात्कालिक अनुभव।
4. पूर्व निर्मित अभिवृत्तियों को अर्जित करना।

### अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक-

1. शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक व नैतिक विकास
2. घर-परिवार, समाज, विद्यालय का वातावरण।

Scanned with CamScanner

### अभिवृत्ति का मापन–

- 1927 में सर्वप्रथम थर्स्टन 1927 में युग्म तुलनात्मक निर्णय विधि का निर्माण
- 1932 थर्स्टन व चेव – समदृष्टि अन्तर विधि का विकास।
- 1932 लिकर्ट योग निर्धारण विधि।
- 1937 सफीर क्रमबद्ध अन्तर विधि।
- 1945 गटमैन – स्केलोग्राम विधि।
- 1948 एडवर्डस व किलपेट्रिक – भेदबोधक मापनी विधि।
- ओसगुड ने सिमेन्टिक डिफेरेशियल विधि, रेमर्स मास्टर प्रकार मापनी का निर्माण किया।
- बोगार्ड्स – 1953, सामाजिक अन्तर्मापनी

### अभिवृत्ति विशेष–

- पूर्वाग्रह अभिवृत्ति का एक रूप है। ये नकारात्मक होता है।
- अभिवृत्ति सापेक्षिक रूप स्थायी विश्वासों, भावों व व्यवहार प्रवृत्ति का संगठन है।
- अभिवृत्ति की 3 विमाएँ – (1) संज्ञान (2) भाव (3) व्यवहार प्रवृत्ति, इन्हें A, B, C घटक कहा जाता है।
- अभिवृत्ति का निर्माण – साहचर्य, पुरस्कार, दण्ड व प्रतिरूपण द्वारा होता है।
- गुणारोपण – लक्ष्य के व्यवहार के लिए कारण देना।
- प्रसामाजिक व्यवहार – व्यक्ति के जिस व्यवहार से दूसरों को लाभ पहुंचे व समाज वांछनीय माने।
- सामाजिक संज्ञान – समाज के अन्य व्यक्तियों के बारे में सूचना एकत्रित कर उसका विश्लेषण, उपयोग व स्मृति में प्रतिनिधित्व होता है।
- संज्ञानात्मक विसत्तादिता –लियान फेस्टिन्जर द्वारा अभिवृत्ति परिवर्तन का सिद्धान्त।
- अभिवृत्ति परिवर्तन के लिए आवश्यक है – अनुनयात्मक संचार
- विभेद – पूर्वाग्रह की व्यवहारात्मक अभिव्यक्ति

### अभिवृत्ति निर्माण की प्रक्रिया–

1. सकारात्मक साहचर्य के द्वारा निर्माण किया जा सकता है।
2. प्रशंसा व दण्ड के प्रयोग द्वारा।
3. प्रतिरूपण के द्वारा (दूसरों के निरीक्षण द्वारा)
4. समूह व सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा।
5. सूचनाओं के द्वारा।

**विशेष :-**

- **POX त्रिकोण** – फ्रिह्ज हाईडर ने अभिवृत्ति 3 पक्षों को व्यक्त किया – (i) P – व्यक्ति जिसकी अभिवृत्ति का अध्ययन (ii) O – दूसरा व्यक्ति (iii) X – विषयवस्तु
- **द्वितीय संप्रत्यय** – एस०एम० मोहसिन – अभिवृत्ति में परिवर्तन दो स्तर पर (i) लक्ष्य (ii) स्त्रोत
- **लियॉन फेस्टिंगर** – संज्ञानात्मक विसंवादिता का प्रत्यय दिया। अभिवृत्ति में संज्ञानात्मक घटक एक तार्किक रूप से एक दूसरे के समान होना चाहिए।
- **पूर्वाग्रह** – विशिष्ट समूह के प्रति अभिवृत्ति जो नकारात्मक होती है।
- **रुढ़धारणा** – किसी समूह के बारे में अवांछित विशेषताओं से युक्त होती है।
- **सामाजिक संज्ञान** (Social Cognition) – सभी मानसिक प्रक्रिया को जो सामाजिक वस्तुओं से संबद्ध सूचना को प्राप्त करने व उनकी Processing करने से जुड़ा होता है।
- **स्कीमा/अन्विति योजना** – मानसिक संरचना जो किसी वस्तु के बारे में सूचना की Processing के लिए दिशा निर्देश प्रदान करती है।

## आदत (Habit)

- **विलियम जेम्स** – प्राणी के पूर्वकृत व्यवहारों की पुनरावृत्ति आदत है।
- **गैरेट** – बराबर दोहराये जाने वाले स्वचालित व्यवहार का नाम आदत है।
- Habit शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Habitus से हुई है जिसका अर्थ होता है। किसी चीज को प्राप्त करना।
- आदतों का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाले पहले व्यक्ति – विलियम जेम्स, 1890

### परिभाषा–

- **गैरेट** के अनुसार – आदत उस व्यवहार को दिया जाने वाला नाम है जो इतनी अधिक बार दोहराया जाता है कि वह कार्य यंत्रवत् हो जाता है।

### आदत के प्रकार–

**वेलेन्टाइन के अनुसार :-**

- यान्त्रिक आदतें
  जैसे – शर्ट की बटन बन्द करना व जूतों की शॉल बांधना।
- शारीरिक अभिलाषा संबंधी आदतें
  जैसे – सिगरेट पीना, पान खाना।
- नाड़ी मण्डल संबंधी आदतें
  जैसे – नाखून चबाना, पैन चबाना।
- भाषा संबंधी आदतें
  जैसे – किसी शब्द को बार-बार दोहराना।
- विचार संबंधी आदतें
  जैसे – तर्क करना, वाद-विवाद करना।
- नैतिक आदतें
  जैसे – सत्य, अहिंसा, दया।
- भावना संबंधी आदतें
  जैसे – प्रेम या घृणा का भाव पैदा करना।

### आदतों की विशेषताएँ–

**रायबर्न के अनुसार:-** सीखना आदतों के निर्माण की प्रक्रिया है।

- आदतें केवल अर्जित होती हैं।
- आदतें व्यक्तित्व तथा चरित्र निर्माण में सहायक। आदतों में तत्परता होती है।
- आदतें थकान नहीं अनुभव होने देती है।
- आदतें कार्य को भूलने नहीं देती।
- आदतों से कार्य में सरलता आती है।
- आदतों में एकरूपता पायी जाती है।
- आदतें उपयोगी भी होती है व हानिकारक भी।

### आदत निर्माण के चरण–

1. संकल्प
2. क्रियाशीलता

Scanned with CamScanner

3. निरन्तरता
4. अभ्यास
5. अच्छे उदाहरण
6. पुरस्कार।

## रुचि (Interest)

- Interest शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Interesse से हुई है जिसका अर्थ होता है, महत्त्वपूर्ण होना, लगाव होना तथा दूसरों से अलग होना।
- **क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार:- रुचि वह प्रेरक शक्ति है, जो किसी क्रिया या कार्य को करने के लिए प्रेरित करती है।
- **रॉस** - जो वस्तु हमसे सम्बन्धित होती है, प्रयोजन रखती है हमारी रुचि उसी में होती है।
- **जेम्स ड्रेवर** - रुचि अनुभवों का क्रियात्मक रूप है।

### रुचि के पहलु–

1. ज्ञानात्मक - जानना।
2. भावात्मक - अनुभव।
3. क्रियात्मक - इच्छा।

### रुचि के प्रकार–

1. जन्मजात - इसका सम्बन्ध मूल प्रवृत्तियों से होता है।
   जैसे - खेलना।
2. अर्जित - इसका सम्बन्ध भाव संवेदना से होता है।
   जैसे - उपन्यास पढ़ना।

**नोट :-** सुपर के अनुसार रुचि के प्रकार :-
(i) अभिव्यक्त रुचि (ii) प्रदर्शित रुचि
(iii) परीक्षित रुचि (iv) प्रपत्र रुचि

### रुचि की विशेषताएँ–

1. जन्मजात व अर्जित दोनों होती है।
2. रुचि सदैव सकारात्मक दिशा में होती है।
3. रुचियां सदैव परिवर्तनशील होती है।
4. रुचि व अभियोग्यता में सकारात्मक संबंध पाया जाता है।
5. रुचि वर्तमान से संबंधित होती है।

**नोट :-** रुचि मापन का कार्य सबसे पहले कर्नीगी (1914) तकनीकी संगठन ने किया।

### प्रमुख रुचि परीक्षण–

1. स्ट्रोंग व्यवसायिक रुचि प्रपत्र। (SII) (1927) महिला - पुरूष दोनों उच्च विद्यालय से लेकर कॉलेज तक के वयस्कों का मापन।
2. कूडर प्राथमिकता प्रपत्र (जी.एफ. कुडर, 1954) इसमें चार परीक्षण होते है।
   1. कूडर व्यक्तिगत अधिमान रिकोर्ड
   2. कूडर वॉकेशनल इंटरेस्ट सर्वे
   3. ओकुपेशनल इंटरेस्ट सर्वे
   4. जनरल इंटरेस्ट सर्वे
3. थर्स्टन रुचि अनुसूची (व्यवसायिक)
4. जीस्ट चित्र रुचि
5. एस. चटर्जी अभाषिक प्राथमिक प्रपत्र
6. आर.पी. सिंह रुचि प्रपत्र
7. एस.पी. कुलश्रेष्ठ व्यवसायिक रूचि प्रपत्र

   **नोट :-** भारत में 1956 में इलाहबाद ब्यूरो में कूडर रूचि प्रपत्र के आधार पर व्यवसायिक रूचि प्रपत्र का निर्माण किया गया।
8. माइनेसोटा वोकेशनल इन्टरेस्ट इवेण्ट्री - 1965, 21 प्रयोगशालाओं में अभिरूचि का मापन
9. जैक्सन वोकेशनल इंटरेस्ट, 289 कथन कार्य संबंधी क्रिया का मापन

## अवधान (Attention)

- **डमवील** के अनुसार - किसी दूसरी वस्तु के बजाए एक ही वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण कर लेना अवधान है।
- **मन** - ध्यान अभिप्रेरणात्मक प्रक्रिया है।

### अवधान की विशेषताएँ–

- अवधान एक चयनात्मक प्रक्रिया है।
- अवधान में कुछ ही उद्दीपक या वस्तु चेतना के केन्द्र में होती है।
- ध्यान की प्रकृति अन्वेषण/खोज की होती है।
- अवधान का स्वरूप प्रेरणात्मक होता है।
- अवधान उद्देश्यपूर्ण होता है।
- अवधान में शरीर की विशेष मुद्रा होती है।
- अवधान में मानसिक तत्परता पायी जाती है।
- अवधान का विस्तार सीमित एक समय कुछ उद्दीपको तक।
- अवधान में अस्थिरता व उच्चलन का गुण होता है।
- ध्यान के विश्लेष्णात्मक व संश्लेषणात्मक (बदलते रहना) योग तत्व है।
- अवधान में विभाजन का गुण भी होता है।
- स्वीकारात्मक व निषेधात्मक तत्व दोनों होते है।
- प्रक्रिया उन्मुख विचार के अनुसार अवधान के दो प्रकार है -

**चयनात्मक (Selective)** – एक समय कुछ उद्दीपकों पर ध्यान देना।

**संघृत (Sustained)** – इसका संबंध एकाग्रता से होता है किसी वस्तु या घटना पर लम्बे समय तक ध्यान देना।

- गति
- आकार
- परिवर्तन
- विषमता
- पुनरावृत्ति
- रहस्य
- नवीनता
- तीव्रता
- अवधि

### अवधान को प्रभावित करने वाले आन्तरिक कारक–

- रुचि/अभिरुचि
- जिज्ञासा
- मूल प्रवृतियाँ
- आवश्यकताएँ
- ज्ञान
- लक्ष्य
- आदत
- वंशानुक्रम
- उत्तेजना की एकान्तता।
- मनोवृति

### अवधान के प्रकार–

1. **ऐच्छिक अवधान (Voluntary Attention)** - अर्जित रूचि, उद्देश्य व इच्छा आधारित, विचारित होता है।

Scanned with CamScanner

2. **अनैच्छिक अवधान (Involuntary Attention)** - जन्मजात, बिना ईच्छा के स्वभाविक व सहज रूप में होता है।
3. **आभ्यासिक अवधान (Habittual Attention)** - आदतों के कारण होता है।

**विशेष** - चयनात्मक अवधान का निस्यंदक सिद्धान्त ब्रॉडबेन्ट ने किया इसमें बहुत से उद्दीपकों एक उद्दीपक का चयन होता है।

- निस्यंदक क्षीण सिद्धान्त - ट्रायसमैन
- बहुविधिक सिद्धान्त - जॉनसन व हिन्ज
- ध्यान विस्तार पर प्रथम कार्य विलियम हैमिल्टन 1859 पर प्रयोग किया बाद में जेवेन्स व कैटल ने कार्य किया।

## अभियोग्यता/अभिक्षमता (Aptitude)

- **बिंघम** के अनुसार - किसी व्यक्ति के प्रशिक्षण के पश्चात् ज्ञान, दक्षता तथा प्रतिक्रियाओं को सीखने की योग्यता अभियोग्यता कहलाती है।
- **फ्रीमैन** के अनुसार - अभियोग्यता उन विशेषताओं का समूह है जो व्यक्ति मे ज्ञान व योग्यता के समूह को व्यक्त करता है।
- **अभिरूचि से तात्पर्य** - किसी क्षेत्र या कार्य विशेष को संपादित करने की समग्र विशिष्ट क्षमता या योग्यता से है।
- **टुकमैन** - क्षमताओं का संयोग जिससे व्यक्तियों में सीखने की क्षमता या किसी खास क्षेत्र में निपुणता के विकसित होने का पता चलता है।

### अभियोग्यता की विशेषताएँ-

- अभिक्षमता जन्मजात होती है।
- अभिक्षमता का सम्बन्ध व्यक्ति की योग्यताओं से होता है।
- अभिक्षमता तथा रुचि में घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है।
- अभिक्षमता पर व्यक्तिगत विभिन्नताओं का प्रभाव पड़ता है।
- अमूर्त संज्ञा है, स्थिर होती है।
- वंशानुक्रम व वातावरण का परिणाम है।

### सुपर के अनुसार अभियोग्यता की विशेषताएँ-

- विशिष्टता
- एकात्मक रचना
- सीखने में सुगमता
- स्थायीपन या स्थिरता

### अभियोग्यता के घटक-

- बुद्धि
- रुचि
- पेशेवर विलक्षणता

**नोट :-** अभियोग्यता शब्द का प्रयोग सामर्थ्य, प्रवीणता, क्षमता, दक्षता के लिए किया जाता है।

### अभियोग्यता के परीक्षण-

1. मिनिसोटा यांत्रिक परीक्षण व स्थानगत परीक्षण
2. बेनेट यांत्रिक परीक्षण
3. थर्स्टन प्राथमिक मानसिक योग्यता परीक्षण, 1938
4. मिनिसोटा लिपिक अभिक्षमता, 1946
5. कारपोरेशन विभेद अभिक्षमता (सिशोर, वेसमैन व वेनेट)
6. फ्लोनागन अभिक्षमता वर्गीकरण
7. ड्रेक संगीत परीक्षण
8. सिशोर संगीत योग्यता परीक्षण
9. डेट्रोइड लिपिक अभिक्षमता परीक्षण
10. मायर कला निर्णय परीक्षण
11. ओ-कोनर चिमटी दक्षता परीक्षण

**नोट :** भारत में SATC परीक्षण वैज्ञानिक अभिक्षमता परीक्षण जो कॉलेज विद्यार्थियों के लिए के.पी. सिन्हा व एल.एन. सिन्हा द्वारा बनाया गया है।

### अभियोग्यता के प्रकार-

- संवेदना अभियोग्यताएँ - दृष्टि, ध्वनि, स्पर्श, स्वाद, गन्ध।
- मैकेनिकल अभियोग्यताएँ - बढ़ई - बढ़ईगिरी में दक्ष।
- कलात्मक अभियोग्यताएँ - संगीत नृत्य, अभिनय।
- व्यवसायिक अभियोग्यताएँ - लिपिक कार्य, वकालत संबंधी।
- शैक्षिक अभियोग्यताएँ - पढ़ना, लिखना, शिक्षण।

### अभियोग्यता का शैक्षिक महत्त्व-

- बालक के बारे में भविष्यवाणी।
- बालक को शैक्षिक निर्देशन प्रदान करने में सहायक।
- विषय व संकाय चयन में सहायक।
- वर्गीकरण करने में सहायक, पाठ्यक्रम की योजना बनाने में

### अभिक्षमता विशेष-

1. **विभेदी अभिक्षमता परीक्षण** (DAT) - बिनेट, सीशोर व वैसमैन
   - परीक्षण में 8 उपपरीक्षण शामिल हैं।
   - यह परीक्षण शब्दिक तर्कणा, संख्यात्मक क्षमता, अमूर्त तर्कणा, यांत्रिक तर्कणा, लिपिकीय गति व परिशुद्धता क्षमता का मापन करता है।

   **नोट :-** प्रो. J.M. ओझा (भारतीय) ने इस परीक्षण का हिन्दी में अनुकूलन किया।
2. **सामान्य अभिक्षमता परीक्षण** (G.A.T.B.) -1962, अमेरिका
   - यह परीक्षण सैन्य सेवाओं के लिए अमेरिका नियोजन सेवा द्वारा बनाया गया।
   - इस परीक्षण में 12 उपपरीक्षण हैं।
   - 9 अभिक्षता का परीक्षण, बुद्धि शब्दिक, संख्यात्मक, दैशिक, लिपिक, प्रत्यक्षण, क्रियात्म्क समन्वय, अंगुली निपुणता, हस्त निपुणता व आकार प्रत्यक्षण का मापन होता है।
3. **फ्लैनेगन अभिक्षमता परीक्षण** (FACT) :-
   - प्रतिपादक - फ्लैनेगन
   - इस परीक्षण में 21 व्यावसायिक अभिवृतियों का मापन किया जाता है।
4. **लिपिक अभिक्षमता परीक्षण ( माइनोसोटा ) ( 1930 )**
5. **यांत्रिक अभिक्षमता परीक्षण** - मैकक्यूरी (1925)
6. **संगीत अभिक्षमता परीक्षण** -
   - प्रतिपादक - सीशोर
7. **अंगुली निपुणता परीक्षण** - ऑकनर

## सामाजिक कौशल (Social Skills)

- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अत: सामाजिक कौशल उसे पूर्व रूप से समाजिक बनाते हैं ये निम्न हैं -

1. **नेतृत्व** - शिक्षकों को समाज नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभानी चाहिए।
2. **सामाजिक भावना की परिपक्वता** - शिक्षक स्वयं को बच्चों के समक्ष एक आदर्श सामाजिक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करें। उत्तम सामाजिक व्यवहार, उचित व्यवहार, संयमपूर्व व्यवहार से युक्त हो।

Scanned with CamScanner

3. व्यवसायिक निष्ठा – कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा की भावना से युक्त होना, पूर्ण निष्पक्ष रहना, सभी के प्रति समान दृष्टिकोण व समान व्यवहार, पूर्ण तैयारी के साथ शिक्षण कार्य करना है।
4. अन्तःवैयक्तिक सम्बन्ध – शिक्षक का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है अतः उसके अन्तःवैयक्तिक सम्बन्ध समाज, साथी शिक्षक, व छात्रों के साथ सहायोगी व लोकतांत्रिक होने चाहिए।
5. सम्प्रेषण – अपने विचार व भावनाओं को छात्रों तक पहुँचाना सम्प्रेषण है। शिक्षक का सम्प्रेषण प्रभावी, अन्तक्रिया युक्त छात्र प्रधान-अभिप्रेरित करने वाला, द्विमार्गी, श्रव्य-दृश्य सामग्री से युक्त होना चाहिए।
6. सजगता – शिक्षक को शिक्षा के सभी क्षेत्रों व आस-पास के परिवेश के प्रति सजग होना आवश्यक है।
7. चिन्तन – यह एक मानसिक क्रिया है।
8. समस्या समाधान –

## सामाजिक कौशलों से युक्त व्यक्तित्व की विशेषताएँ

✦ संतुलित व्यक्तित्व, उत्तम सामाजिक समायोजन, चरित्रवान, साहसी,
✦ लोकतंत्रीय दृष्टिकोण, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता के पक्षधर, परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार, बर्हिमुखी स्वभाव, लोकप्रिय, समूह प्रेमी, रचनात्मक

## मानसिक क्रियाएँ

### 1. संवेदना (Sensation)–

- विलियम जेम्स – संवेदना ज्ञान की पहली वस्तु है।
- जलोटा – संवेदना एक साधारण ज्ञानात्मक अनुभव है।
- ज्ञान की सीढ़ी – संवेदना।
- ज्ञान का द्वार – संवेदना।
- जीवन का प्रारम्भिक व सरल मानसिक अनुभव – संवेदना।
- बालक की शिक्षा की शुरूआत – संवेदना।

✦ संवेदना के प्रकार:–

1. दृष्टि 2. ध्वनि
3. स्पर्श (त्वचा) 4. स्वाद (जीभ)
5. गंध संवेदना।

✦ दो गौण प्रकार :–
(1) शारीरिक (2) मांसपेशिया।

✦ संवेदना का शिक्षा में महत्त्व :–

- वस्तु के गुण समझना ज्ञानेन्द्रियों का उचित प्रयोग में सहायक।
- वस्तु की सत्ता का ज्ञान होना।
- प्रत्यक्षीकरण के लिए आवश्यक।
- मानसिक विकास में सहायक।

✦ संवेदना :– किसी विशेष ज्ञानेन्द्रिय द्वारा किसी उद्दीपक या वस्तु का प्रारम्भिक अनुभव संवेदना कहलाता है।

✦ प्रकार :–

1. संवेदी सीमांत – निश्चित सीमा तक पता लग पाना उद्दीपन के बारे में।
2. निरपेक्ष सीमांत – किसी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा पहचाने जाने के लिए उद्दीपक के अपेक्षित न्यूनतम मूल्य।
3. विभेदक सीमान्त – दो उद्दीपको के मध्य न्यूनतम अन्तर जो उसकी अलग पहचान के लिए आवश्यक होता है।

✦ संवेदना के 6 गुण होते है :–

1. संवेदना निश्चित प्रकार की होती है।
2. तीव्रता (कोई अधिक कोई कम)
3. अवधि (कुछ समय के लिए अवश्यक होती)
4. स्पष्टता
5. प्रसार
6. स्थानीय चिह्न

✦ संवेदन का अर्थ एवं स्वरूप (Meaning and Nature of Sensation) :–

- संवेदन एक ऐसी सरल मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हमें वस्तुओं एवं व्यक्तियों के बारे में एक आभास मात्र होता है क्योंकि इसमें अर्थहीनता एवं अस्पष्टता होती है।
- मॉरिस – "संवेदन से तात्पर्य दृष्टि, श्रवण, गंध, स्वाद संतुलन, स्पर्श तथा दर्द के ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त मौलिक संवेदी आँकड़ों से होता है।" जे.पी.दास (J.P. Das, 1998) ने उद्दीपकों को प्राप्त करने (receive) की पहली अवस्था को संवदन (Sensation) कहा है।

✦ विशेषताएँ :–

1. संवेदन एक मानसिक प्रक्रिया है।
2. संवेदन एक आरम्भिक मानसिक प्रक्रिया है।
3. संवेदन में उद्दीपकों (वस्तु या व्यक्तियों) का आभास मात्र अर्थात् अर्थरहित ज्ञान होता है।
4. संवेदन के लिए उद्दीपक की उपस्थिति अनिवार्य होती है।

### 2. प्रत्यक्षीकरण (Perception)–

- जलोटा के अनुसार – प्रत्यक्षीकरण पूर्ण मानसिक प्रक्रिया है।
- ज्ञान की दूसरी सीढ़ी – संवेदना पूर्व अनुभव = प्रत्यक्षीकरण।
- यह एक मानसिक प्रक्रिया है इसमें पूर्व अनुभव के आधार पर संवेदना की व्याख्या या अर्थ जोड़ दिया जाता है।
- वुडवर्थ – प्रत्यक्षीकरण इन्द्रियों की सहायता से पदार्थ या बाह्य घटनाओं, तथ्यों को जानने की क्रिया है।
- रायबर्न – अनुभव के अनुसार संवेदना की व्याख्या की प्रक्रिया को प्रत्यक्षीकरण कहते हैं।
- जिस प्रक्रिया द्वारा हम ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्रदान की गई सूचनाओं की पहचान करते हैं उसको अर्थवान बनाते हैं, प्रत्यक्षण कहलाता है।

✦ प्रत्यक्षण के उपागम :–

1. ऊर्ध्वगामी प्रक्रमण –
जब प्रत्यक्षीकरण की पहचान अंश से प्रारम्भ होकर समग्र प्रत्याभिज्ञान का आधार बनती है।
2. अधोगामी प्रक्रमण (Top down processing) –
जब प्रत्याभिज्ञान प्रक्रिया समग्र से प्रारम्भ होती है उसके आधार पर घटकों की पहचान की जाती है।

✦ प्रत्यक्षण की उपप्रक्रियाएँ :–

- उद्दीपक
- संवेदीग्राही (इन्द्रिया)
- अवधान
- केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र, अधिगम, स्मृति व मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया
- प्रत्यक्षण

Scanned with CamScanner

Since 1949 आर.बी.डी. "ये नाम ही विश्वास है...."

✦ प्रात्यक्षिक संगठन के सिद्धान्त :-

1. आकृति प्रत्यक्षण – चाक्षुष क्षेत्र को अर्थयुक्त सम्पूर्णता के रूप में संगठित करना आकृति प्रत्यक्षण कहलाता है।
2. निकटता का सिद्धान्त – जो वस्तु समय व स्थान से निकट होती है वे एक समूह के रूप में प्रत्यक्षण होती है।
3. समानता सिद्धान्त – जो वस्तु समान होती है वे समूह के रूप में प्रत्यक्षण होती हैं।
4. लघुता का सिद्धान्त – लघु क्षेत्र वृहद क्षेत्र की तुलना में जल्दी प्रत्यक्षण होते है।
5. सममिति का सिद्धान्त – सममति क्षेत्र (काला) असममित क्षेत्र (सफेद) की तुलना में जल्दी प्रत्यक्षण होता है।
6. अविच्छिन्ता सिद्धान्त – स्व क्षेत्र जब अन्य क्षेत्रों से घिरा होता है तो वह आकृति के रूप में दिखता है।
7. पूर्ति सिद्धान्त – वस्तु के लुप्त भाग को हम भरके समग्र रूप में देखते है।

✦ विशेष :-

1. प्रात्यक्षिक स्थैर्य – गतिशील होते हुये भी वस्तु का सापेक्षिक स्थिर प्रत्यक्षण प्रात्यक्षिक स्थैर्य कहलाता है। यह 3 प्रकार का होता है–

- आकार स्थैर्य – आकार के प्रत्यक्षण पर दूरी का प्रभाव नहीं पड़ना।
- आकृति स्थैर्य – आकृति का अपरिवर्तित रहना।
- धुति स्थैर्य – रंगों की मात्रा का भी स्थिर होना।

✦ विशेषताएँ :-

1. प्रत्यक्षीकरण द्वारा वस्तु का पूर्ण ज्ञान होता है।
2. प्रत्यक्षीकरण का आधार परिवर्तन है।
3. प्रत्यक्षीकरण विभिन्न वस्तुओं में से एक का चुनाव करता।
4. प्रत्यक्षीकरण में संगठन की विशेषता होती है।
5. प्रत्यक्षीकरण में अर्थ निहित होता है।

✦ महत्त्व :-

- बालक के ज्ञान को स्पष्टता प्रदान करता है।
- विचारों का विकास होता है।
- ध्यान केन्द्रित करने का प्रशिक्षण देता है।
- व्याख्या करने की योग्यता का विकास करता है।
- परोक्ष ज्ञान प्रदान करता है।
- स्मृति, कल्पना को क्रियाशील बनाता है।
- विकास के उपाय – ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण, शारीरिक गति का प्रशिक्षण, आस-पास के वातावरण व उपयोगी स्थानों को देखने का अवसर, स्वयं क्रिया का अवसर व विविध शिक्षण सामग्री का प्रयोग।

✦ प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करने वाले कारक :-

1. व्यक्तिगत कारक – व्यक्ति की आवश्यकता, व्यक्तिगत मूल्य, व्यक्तिगत मनोवृत्ति, पूर्वधारणा, मनोदशा
2. सामाजिक कारक – सामाजिक मानक, सामाजिक प्रथाएँ।

## संवेदना व प्रत्यक्षीकरण के अन्तर–

| संवेदना | प्रत्यक्षीकरण |
|---|---|
| 1. मस्तिष्क निष्क्रिय | 1. सक्रिय |
| 2. पहली सीढ़ी | 2. दूसरी सीढ़ी |
| 3. पूर्व अनुभव से सम्बन्ध नहीं | 3. पूर्व अनुभव से संबंध होता है। |
| 4. ज्ञान अस्पष्ट/अनिश्चित | 4. स्पष्ट व निश्चित |
| 5. मानसिक क्रिया का सरल व प्रारम्भिक रूप | 5. जटिल व विकसित रूप होता है। |
| 6. प्रारम्भिक परिचय | 6. वस्तु का पूर्ण ज्ञान |

## 3. प्रत्यय (Concept)–

✦ सम्प्रत्यय निर्माण :-

- सम्प्रत्यय ऐसे निर्माण को कहा जाता है जिससे वस्तुओं की सामान्य विशेषताओं का पता चलाता हो। यह चिन्तन का प्रमुख साधन है।
- बैरोन – सप्रत्यय उन वस्तुओं, घटनाओं, अनुभूतियों विचारों को जो एक या अधिक अर्थ में एक दूसरे से समान होते हैं के लिए एक मानसिक श्रेणी है।

✦ सम्प्रत्यय के दो तथ्य :-

1. गुणों का समूह
2. नियमों से सम्बन्धित

✦ सम्प्रत्यय के प्रकार :-

1. कृत्रिम सम्प्रत्यय – जो नियमों व गुणों द्वारा परिभाषित हो।
2. स्वाभाविक – जिसके कोई स्पष्ट पारिभाषिक गुण नहीं होता है।
3. साधारण – जिसकी एक विशेषता है। जैसे – पीला, लाल
4. जटिल – दो या दो से अधिक विशेषताओं को दर्शाता है। इसके पाँच प्रकार है :-
(1) समुच्चयबोधक (2) वियोजक (3) सम्बन्धात्मक (4) प्रतिबंधित (5) द्विप्रतिबंधित

✦ सम्प्रत्यय निर्माण को प्रभावित करने वाले कारक :-

1. स्थानान्तरण
2. विभिन्नता
3. सामग्रियों को जोड़-तोड़ करने की योग्यता
4. निदेशात्मक वृत्ति
5. संगत उपलब्ध सूचनाएँ
6. नियम का स्वरूप
7. शब्द भण्डार
8. पर्यावरण

✦ सम्प्रत्यय सीखने की विधियां :-

1. प्राप्ति या ग्रहण विधि
2. चयन विधि

Scanned with CamScanner

- **बोरिंग व अन्य के अनुसार :-** किसी देखी गई वस्तु की मानसिक प्रतिमा प्रत्यय कहलाती है।
- **वुडवर्थ** – प्रत्यय वे विचार है जो वस्तुओं, घटनाओं, गुणों का उल्लेख करते है।

✦ **प्रत्यय की विशेषता :-**

1. यह ज्ञान प्राप्ति की तीसरी सीढ़ी है। संवेदना + पूर्व अनुभव + प्रत्यक्षीकरण = प्रत्यय।
2. प्रत्यय का सम्बन्ध हमारे विचार व अनुभवों से होता है।
3. प्रत्यय एक वर्ग की सामान्य गुणों व विशेषताओं का सामान्य ज्ञान प्रदान करता है।
4. प्रत्यय आरम्भ में अस्पष्ट व अनिश्चित होते हैं। धीरे-धीरे स्पष्ट व निश्चित होते जाते हैं।
5. एक वस्तु के सम्बन्ध में विभिन्न व्यक्ति के विभिन्न प्रत्यय हो सकते हैं।

✦ **प्रत्यय निर्माण के चरण:-**

1. निरीक्षण
2. तुलना करना
3. पृथक्कीकरण
4. सामान्यीकरण
5. परिभाषा निर्माण

## 4. चिन्तन (Thinking)–

- **कॉगन व हैमेन** के अनुसार – प्रतिमाओं, प्रतिकों, सम्प्रत्यों, नियमों के मानसिक जोड़-तोड़ को चिंतन कहा जाता है।
- **रॉस** के अनुसार – चिन्तन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है।
- **वेलेन्टाइन** – जिसमें शृंखलाबद्ध विचार किसी लक्ष्य या उद्देश्य की ओर अविराम गति से प्रवाहित होते हैं।
- **गैरेट** – चिंतन एक अव्यक्त व अदृश्य व्यवहार जिसमें प्रतीकों का प्रयोग होता है।

✦ **चिंतन विशेषताएँ :-**

1. चिंतन एक मानसिक प्रक्रिया है जो सभी प्राणियों में पायी जाती।
2. चिंतन सदैव लक्ष्य की और उन्मुख होता है।
3. चिंतन के मूल तत्व मानसिक प्रतिमा, तर्कणा, निर्णयन व समस्या समाधान है।
4. चिंतन में हमेशा सम्मिलित रहता है सम्प्रत्यय, प्रतिमा, प्रतीक (भाषा कभी-कभी)
5. चिंतन में गत अनुभूति शामिल होती है।
6. चिंतन एक आन्तरिक मानसिक क्रिया है जिसके अनुसार बाह्य प्रकट व्यवहार से अनुमान लगाया जाता है।
7. चिंतन का प्रारम्भ समस्या से होता है।

✦ **चिंतन की प्रक्रिया :-**

1. चिंतन में प्रतीकों व प्रतिमाओं का मानसिक जोड़ होता है।
2. चिंतन एक मध्यस्थ प्रक्रिया है जो उद्दीपक तथा उसके प्रति की गई सही अनुक्रिया के बीच में होने वाली प्रक्रिया है।
3. चिंतन समस्या – समाधान प्रक्रिया है।

✦ **चिंतन के प्रकार :-**

जिक्वार्डो व रूक ने 1977 में चिंतन को दो भाग बताये हैं –

1. **स्वली चिंतन (Autistic Thinking)** – वह चिन्तन जिसमें व्यक्ति काल्पनिक विचारों व इच्छाओं की अभिव्यक्ति है। जैसे – स्वप्न
2. **यर्थाथवादी चिंतन (Realistic Thinking)** – इसका सम्बन्ध वास्तविकता से होता है व समस्या का समाधान निहित होता है। जैसे – गाड़ी के बन्द होने पर सोचना कि क्या कारण हुआ। यर्थाथवादी चिंतन के 3 प्रकार है –

(a) **अभिसारी चिन्तन (Convergent Thinking)** – यह निगमनात्मक चिंतन भी कहलाता है इसमें दिये गये तथ्यों के आधार पर सही निष्कर्ष तक पहुंचने की कोशिश करता है। जैसे – बालक की वास्तविक आयु 10 वर्ष व मानसिक आयु 12 वर्ष है तो बुद्धिलब्धि क्या होगी।

(b) **सर्जनात्मक चिन्तन (Creative Thinking)/अपसारी चिन्तन/आगमनात्मक चिंतन** – इस चिंतन में व्यक्ति दिये गये तथ्यों में अपनी ओर से नये तथ्यों को जोड़कर निष्कर्ष पर पहुंचाता है।

(c) **आलोचनात्मक चिंतन (Evaluative Thinking)** – किसी वस्तु या घटना के गुण-दोष की समीक्षा करना आलोचनात्मक चिंतन है।

✦ **चिंतन के मूल तत्त्व :-**

1. **मानसिक प्रतिमा** – अनुभूति की कुछ विशेषताओं को मानसिक रूप से अलग करना ही मानसिक प्रतिमा है।
2. **तर्कना** – जेम्स ड्रेवर तर्क चिन्तन की वह प्रक्रिया है जिसमें निष्कर्ष होता है अथवा सामान्य नियमों के आधार पर समस्या समाधान होता है।

**तर्क के प्रकार :-**

(a) **निगमन तर्क (Deductive)** – इस तर्क में पहले से ज्ञात नियमों, तथ्यों के आधार पर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश करता है। जैसे – सभी मनुष्य मरणशील हैं, धीर एक मनुष्य है अत: धीर मरणशील है।

(b) **आगमन तर्क (Inductive)** – इस तर्क में व्यक्ति दिये गये तथ्यों में अपनी ओर से नये तथ्य जोड़कर एक निष्कर्ष पर पहुँचता है।

(c) **आलोचनात्मक तर्क** – गुण-दोष के आधार पर सोचना।

(d) **सादृश्यवाची तर्क** – उपमा के आधार पर निष्कर्ष पर पहुँचना।

3. **निर्णयन** –

- **सैन्ट्रोक** – निर्णयन में विकल्पों का मूल्यांकन किया जाता है उनमें से कुछ को चुन लिया जाता है। यह एक समस्या समाधान व्यवहार होता है।

4. **समस्या समाधान** – यह एक संज्ञानात्मक व्यवहार है।

- **बेरान** – समस्या समाधान में विभिन्न अनुक्रिया को करने या उनमें से चुनने का प्रयास सम्मिलित होता है।

**मेटेलिन ने 3 पहलू बताये हैं –**

(a) **मौलिक अवस्था** – समस्या का उपस्थित होना।

(b) **लक्ष्य अवस्था** – समस्या समाधान होने के बाद।

(c) **नियम** – कार्य विधि जो मौलिक अवस्था से लक्ष्य अवस्था तक अपनाता है।

✦ **विशेष :-** स्वली चिंतन में काल्पनिक विचार व इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है।

✦ **चिन्तन के प्रकार (सामान्य प्रकार) :-**

- प्रत्यक्ष/मूर्त चिन्तन (Concerete) – भाषा व नाम का प्रयोग नहीं होता है। (बालकों में पाया जाता है)
- अमूर्त/प्रत्यात्मक चिन्तन (Abstract) – इस चिन्तन में भाषा व नाम का प्रयोग होता है।
- कल्पनात्मक/सृजनात्मक चिन्तन (Creative) – इसका सम्बन्ध पूर्व

Scanned with CamScanner

अनुभव पर आधारित भविष्य से होता है।

- तार्किक चिन्तन (Logical) – श्रेष्ठ चिन्तन, चिन्तन का सर्वश्रेष्ठ प्रकार।

✦ **चिंतन के विकास के उपाय :-**

- भाषा ज्ञान पर बल।
- उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य सौंपना।
- समस्या समाधान तथा वाद-विवाद विधि का प्रयोग करना।
- विचार अभिव्यक्ति का अवसर देना।
- खोजपूर्ण प्रश्नकौशल का प्रयोग करना।
- जिज्ञासा की प्रवृत्ति को जागृत करना।

✦ **चिंतन के सोपान :-**

1. समस्या का आंकलन।
2. सम्बन्धित तथ्यों का संकलन।
3. निष्कर्ष पर पहुँचना।
4. निष्कर्ष का परीक्षण।

**नोट:-** चिन्तन में भाषा, सूत्र, डायग्राम, प्रत्यय, संकेत, प्रतिमा, प्रतिज्ञप्ति (Proposition) का प्रयोग होता है।

✦ **विशेष चिंतन के साधन :-**

1. प्रतिमा (Image)
2. भाषा (Language)
3. सम्प्रत्यय (Concept)
4. प्रतिज्ञप्ति (Pre Position) एक सम्प्रत्यय को दूसरे सम्प्रत्यय से जोड़ना।

## 5. तर्क (Reasoning)–

- **गेट्स व अन्य** के अनुसार – तर्क फलदायक चिन्तन की प्रक्रिया है।
- **तर्क** के सोपान – जॉन डीवी ने अपनी पुस्तक 'हाऊ वी थिंक' (How We Think) में बताये हैं।

1. समस्या का उपस्थित होना।
2. समस्या को जानना।
3. समस्या समाधान के उपाय सोचना।
4. एक उपाय का चुनाव करना।
5. उस उपाय का प्रयोग करना।

✦ **तर्क के प्रकार :-**

1. **आगमन तर्क** – विशिष्ट से सामान्य या उदाहरण से सूत्र की ओर।
2. **निगमन तर्क** – सूत्र (नियम) से उदाहरण की ओर या सामान्य से विशिष्ट की ओर।
3. **आलोचनात्मक तर्क** – गुण-दोष के आधार पर।
4. **सादृश्यवाची तर्क** – उपमा के आधार पर।

## 6. स्मृति (Memory)–

- **रायबर्न** – अनुभवों को संचित करने व चेतना के क्षेत्र में पुनः लाने की शक्ति स्मृति है।
- **वुडवर्थ** के अनुसार – जो बात पहले सीखी जा चुकी है, उसे चेतन मन में लाना, स्मृति कहलाता है।
- **स्टाउट** – स्मृति एक आदर्श पुनरावृत्ति है।

✦ **स्मृति के अंग :-**

1. सीखना।
2. धारण करना।
3. पुनः स्मरण करना।
4. पुनः पहचान करना।

✦ **स्मृति के मुख्य प्रकार:-**

1. **ज्ञानेन्द्रिय/संवेदनात्मक स्मृति –** सबसे कमजोर स्मृति, इसमें सूचना एक सेकेण्ड तक या कम समय तक जैसे – मिली उसी रूप में (मौलिक रूप मे रखी जाती है।)
2. **लघुकालीन स्मृति/अल्पकालीन (कार्यकारी, प्राथमिक) -** विलियम जेम्स ने प्राथमिक स्मृति कहा है। 30 सेकेण्ड तक सूचना रुकती है।
3. **दीर्घकालीन स्मृति –** विलियम जेम्स ने गौण स्मृति कहा है। सूचना कम से कम 30 सेकण्ड अधिक की कोई सीमा नहीं।

✦ **दीर्घकालीन स्मृति (असक्रिय स्मृति) -**

दीर्घकालीन स्मृति के प्रकार :-

1. **स्पष्ट स्मृति घोषणात्मक स्मृति**

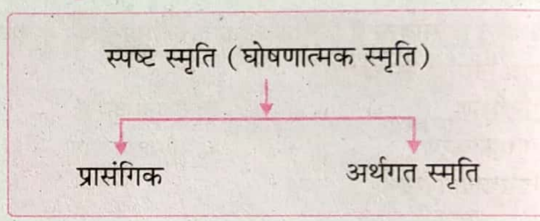


2. **अस्पष्ट स्मृति (अघोषणात्मक स्मृति) -** जिसे आसानी से शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

**विशेष :-** इविंगहास पहले व्यक्ति जिन्होनें स्मृति का प्रयोगात्मक अध्ययन किया (1885- ऑन मेमोरी(पुस्तक))

✦ **स्मृति के अन्य प्रकार-**

1. व्यक्तिगत स्मृति – अतीत के अनुभव।
2. अव्यक्तिगत स्मृति – पुस्तक अनुभव।
3. स्थायी स्मृति।
4. तात्कालिक स्मृति – परिस्थिति पर निर्भर।
5. सक्रिय स्मृति – प्रयास करने पर स्मरण।
6. निष्क्रिय – प्रयास नहीं करना पड़ता है।
7. तार्किक – समझ पर आधारित।
8. यान्त्रिक – रटकर।
9. आदत – बार-बार दोहरा कर।
10. शारीरिक, जैसे – टाईप करना।
11. इन्द्रिय अनुभव – छूकर, सूंघकर।
12. शुद्ध स्मृति – क्रमबद्ध रखने से याद रहती है। (सबसे उत्तम)

✦ **स्मरण करने की विधियाँ :-**

1. पूर्ण विधि।
2. आंशिक विधि।
3. मिश्रित विधि।
4. सक्रिय विधि।
5. निष्क्रिय विधि।
6. अंतरयुक्त विधि।
7. अन्तर्निहित विधि (बिना किसी अन्तराल के)
8. निरीक्षण विधि।
9. लय/गान विधि।
10. विचार साहचर्य विधि।
11. प्रत्याहान विधि।

✦ **स्मृति को मापने की विधियाँ :-**

1. **प्रत्याहान विधि (Recall) –** सबसे लोकप्रिय
2. **प्रत्याभिज्ञान विधि (Recognitzion) –** पूर्व सीखे पाठ से मिलते-जुलते पाठ के साथ उपस्थित किया जाता है।

Scanned with CamScanner

3. पुनः निर्माण विधि (Reconstruction) -व्यक्ति के सामने सीखे गये पाठ को यादृच्छिक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है जिसे पुनःनिर्माण करना होता है।
4. पुनः सीखना/बचत विधि (Relearaning) - इविंगहास

## 7. विस्मृति-

- मन - सीखी हुई बात को पुनः स्मरण करने की असफलता विस्मृति है।
- फ्रायड - विस्मरण वह प्रवृत्ति है जिसके द्वारा दुःखद अनुभवों को स्मृति से अलग कर दिया जाता है।

✦ विस्मृति के प्रकार :-

1. सक्रिय विस्मृति - स्वयं जानबूझकर भूल जाना।
2. निष्क्रिय विस्मृति - समय के अभाव में भूल जाना।

✦ विस्मृति के कारण :-

1. बाधा का सिद्धान्तः-
   प्रतिपादक - वुडवर्थ व मूलर।
2. दमन का सिद्धान्तः-
   प्रतिपादक - सिगमण्ड फ्रायड।
3. अनाभ्यास का सिद्धान्तः-
   प्रतिपादक - थार्नडाइक, एबिंगहास।

✦ विस्मृति के अन्य कारण :-

- समय का प्रभाव
- रुचि, ध्यान व इच्छा का प्रभाव
- विषय का अनुपयोगी स्वरूप
- विषय की अत्यधिक लम्बाई
- सीखने की कमी।
- दोषपूर्ण विधि - मानसिक, आघात, मानसिक द्वन्द्व, रोग।
- मादक वस्तुओं का प्रयोग।
- संवेगात्मक असन्तुलन।

विशेषः- इविंगहास ने विस्मरण चक्र दिया है जिसके अनुसार विस्मरण की सीखने के तुरन्त बाद तीव्र होती है। जैसे-जैसे समय बीतते जाता है विस्मरण की मात्रा घटती जाती है।

✦ स्मृति - विस्मृति विशेष तथ्य :-

- स्मृति कोई निष्क्रिय प्रक्रिया न होकर सक्रिय व रचनात्मक प्रक्रिया है - एबिगंहास
- स्मृति पर क्रमबद्ध अध्ययन - एबिगंहास

✦ स्मृति विशेष :-

1. प्रक्रमण स्तर - यह दृष्टिकोण क्रेक व लॉकहार्ट ने 1972 में दिया। इसके अनुसार सूचना का प्रक्रमण उसके प्रत्यक्षण विश्लेषण व समझ के अनुसार होता है।

- टलविग ने दीर्घकालिक स्मृति के घोषणात्मक स्मृति को घटनापरक व आर्थी (Semantic) स्मृति के रूप में वर्गीकृत (प्रासांगिक) किया है। घटनापरक में जीवन चरित सम्बन्धी सूचनाएं आती हैं आर्थी स्मृति सामान्य ज्ञान व जागरूकता की स्मृति है।
- बार्टलेट ने स्मृति को रचनात्मक प्रक्रिया माना है न की पुनरूत्पादक प्रक्रिया बार्टलेट ने क्रमिक पुनरूत्पादन विधि का प्रयोग किया जिसके प्रतिभागी याद की हुई सामग्री को भिन्न-भिन्न समय अन्तराल पर प्रत्याहान करते हैं।
- चलन स्मृति (Working memory) - इसका प्रतिपादन बेडेली द्वारा किया गया इसमें सूचना को 25 - 30 सेकण्ड संचित करने के साथ-साथ सूचना को संसाधित करने की भी योग्यता शमिल होती है। इसे मानसिक वर्कपेच भी कहा जाता है। इसके 3 तत्व होते है।
  (1) ध्वनिग्रामीय लूप - शब्दों के आवाज से संबंद्ध सूचना को संचित करते है।
  (2) दृष्टि - स्थानिक स्कैच पैड - दृष्टि व स्थानिक सूचना को संचित।
  (3) केन्द्रीय कार्यपालक - यह ध्वनिग्रामीय व दृष्टि-स्थानिक सूचनाओं में समन्वय करता है।
- बार्टलेट की पुस्तक - रिमेम्बरिंग में स्मरण को पुनः रचनात्मक मानसिक क्रिया कहा है।
- विस्मरण एक निष्क्रिय मानसिक क्रिया - इविंगहास
- विस्मरण एक सक्रिय मानसिक क्रिया - मूलर, फ्रायड, मेल्टन, जेन्कीन्स, इर्विन
- विस्मरण का ह्रास सिद्धान्त - इविंगहास
- स्मृति - द्विसकेत सिद्धान्त - पैवियो - आर्थी व चाक्षुष संकेतो से स्मृति बढ़ती है।

✦ स्मृति की प्रक्रिया में 3 तत्व होते हैं -

1. कुट संकेतन ( Encoding ) - सूचना को तंत्रिका तंत्र में ग्रहण करना।
2. संचयन/भंडारण ( Storage ) - कुट संकेतन द्वारा सूचनाओं को संचित करना।
3. पुनरूद्धार/पुनःप्राप्ति ( Retrieval ) - आवश्यकता पड़ने पर सूचनाओं की प्राप्ति।

✦ SQ4R - थॉमस व रॉबिन्सन ने 1972 में प्रभावी एवं स्मृति के लिए इसका प्रयोग किया।

1. S = सर्वेक्षण करना
2. Q = प्रश्न
3. 4R = पढ़ना (Read), सुनाना (Recite), पुनः परीक्षण (Review), चिंतन (Reflect)

✦ स्मृति का अवस्था मॉडल - एटकिन्सन, शिफरिन (1968)

✦ 3 प्रकार - संवेदी स्मृति, लघु कालीन (कार्यकारी), दीर्घ कालीन

✦ बहुतत्व मॉडल - बेडेले द्वारा कार्यकारी स्मृति की व्याख्या के लिए प्रस्तुत किया गया।

✦ खंडीयन विधि - अल्पकालिक स्मृति (प्राथमिक स्मृति) की क्षमता बढ़ाने के लिए विधि मिलर द्वारा प्रतिपादित।

## 8. समस्या समाधान (Problem Solving)-

- स्कीनर - समस्या-समाधान किसी लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा डालती हुई कठिनाइयों पर विजय पाने की प्रक्रिया है।
- स्टेनले ग्रे - समस्या-समाधान वह प्रतिमान है जिसमें तार्किक चिन्तन निहित है।
- अर्थ - समस्या-समाधान ऐसी अवस्था है जिसमें व्यक्ति समस्या के वर्तमान अवस्था से लक्ष्य अवस्था की ओर जाता है।

✦ समस्या समाधान की विधियाँ/उपाय :-

1. यादृच्छिक अन्वेषण विधि (Random Search) - इस विधि में व्यक्ति समस्या - समाधान के लिए प्रयत्न व त्रुटि का प्रयोग करता

Scanned with CamScanner

है।

इसके दो प्रकार हैं - (1) अक्रमबद्ध यादृच्छिक अन्वेषण (2) क्रमबद्ध यादृच्छिक अन्वेषण

2. **स्वत: शोध अन्वेषण विधि (Heuristic Search)** - इस विधि में व्यक्ति समस्या समाधान में उन्हीं विकल्पों का चयन करता है जो उन्हें संगत लगते हैं।

- इसकी तीन विधियां है (1) साधन - साध्य विश्लेषण (2) पश्चगामी अन्वेषण (3) योजना विधि।

✦ **स्कीनर के अनुसार विधियाँ :-**

1. अनसीखी विधि - निम्न कोटि के प्राणियों द्वारा।
2. प्रयास व त्रुटि
3. अर्न्तदृष्टि विधि
4. वाक्यात्मक भाषा विधि
5. वैज्ञानिक विधि - सबसे उपयोगी विधि

✦ **चरण :-**

1. समस्या को समझना।
2. समस्या के तथ्यों का संग्रह
3. सम्भावित समाधानों का निर्माण
4. समाधानों का मूल्यांकन
5. सम्भावित समाधानों का परीक्षण
6. निष्कर्षो का निर्णय
7. समाधान का प्रयोग करना।

✦ **समस्या - समाधान को प्रभावित करने वाले कारक :-**

- कार्यात्मक अटलता
- मानसिक वृत्ति
- प्रशिक्षण
- समस्या का स्वरूप
- दुश्चिन्ता
- अवधान विस्तार
- उद्भवन
- विक्षिसिकरण

✦ **समस्या - समाधान विधि का महत्त्व :-**

1. रुचि को जागृत करती है।
2. स्वयं कार्य के लिए प्रेरित करती है।
3. विचारात्मक सृजनात्मक व तर्क का विकास
4. भावी जीवन की समस्यओं का समाधान करने का प्रशिक्षण देती है।

### 9. कल्पना (Imagination)–

- कल्पना एक चेतन और आश्चर्यजनक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें हम पिछले अनुभवों के आधार पर किसी नई वस्तु का निर्माण करते है।
- **मैक्डूगल** - कल्पना अप्रत्यक्ष बातों के सम्बन्ध में विचार करना है।
- **डमविल** - कल्पना सब प्रकार की प्रतिमा निर्माण को व्यक्त करती है।

✦ **कल्पना का वर्गीकरण :-**

- **मैक्डूगल के अनुसार** -

1. पुनरूत्पादक कल्पना - पूर्व अनुभव व स्मृति से है।
2. उत्पादक कल्पना - नवीनता के लिए।
3. रचनात्मक कल्पना - वस्तु निर्माण में प्रयुक्त।
4. सृजनात्मक कल्पना - कविता, नाटक, रचना

- **ड्रेवर के अनुसार** -

1. पुनरूत्पादक कल्पना
2. आदानात्मक कल्पना - दैनिक कार्यों में प्रयोग होने वाली कल्पना।
3. सृजनात्मक कल्पना - इसके दो प्रकार होते हैं -

(a) कार्यसाधक कल्पना - विचारात्मक कल्पना व क्रियात्मक कल्पना (भौतिक वस्तु निर्माण कल्पना)

(b) सौन्दर्यात्मक कल्पना - कलात्मक और मन तंरग (हवाई किले बनाना।)

### 10. सहानुभूति–

- **रायबर्न** - सहानुभूति का अर्थ–दूसरों के द्वारा व्यक्त किये जाने वाले किसी संवेग की हममें उत्पति

✦ **प्रकार:-**

1. **सक्रिय सहानुभूति** - क्रियाशीलता होती है। भूखे को देखकर भोजन देना।
2. **निष्क्रिय सहानुभूति** - दु:खी व्यक्ति को देखकर केवल सहानुभूति के 2-4 शब्द कर देना।
3. **वैयक्तिक सहानुभूति** - एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के प्रति
4. **सामूहिक सहानुभूति** - एक समूह के सब व्यक्तियों द्वारा कम या अधिक मात्रा में व्यक्ति कि जाने वाली।

✦ मनुष्य जन्म से स्वार्थता, आक्रमणशीलता जैसे गुण मौजूद है जो समाज द्वारा नियंत्रित कर दिये जाते है - रूसो।

✦ इंडियन साइकोएनालिटिक सोसायटी - 1922 प्रो. गिस्ट्रि शेखर बोस

✦ अभिक्षमता - **फ्रीमैन** - गुणों व विशेषज्ञों के एक ऐसे संयोग से होता है जिससे विशिष्ट ज्ञान व संगठित क्षमता का पता चलता है।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ बालक में बुरी आदतों के विकसित होने का मुख्य कारण है–
(A) एकाकीपन (B) सामाजिक तुष्टिकरण
(C) पारिवारिक झगड़े (D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ आदतों के निर्माण में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका किसकी है ?
(A) अभिभावकों की (B) शिक्षकों की
(C) सहपाठियों की (D) उपर्युक्त सभी (A)

❖ निम्नलिखित में से कौनसा कथन रुचि के बारे में सत्य नहीं है?
(A) रुचियाँ जन्मजात और अर्जित दोनों होती हैं।
(B) रुचियाँ समय के अनुसार बदलती रहती हैं।
(C) रुचियाँ योग्यताओं एवं अभिक्षमताओं से संबंधित नहीं होती हैं।
(D) रुचियाँ व्यवहार में आकर्षण एवं विकर्षण का प्रतिबिम्ब नहीं हैं। (D)

❖ अहं शक्ति एवं सामाजिक लक्षण है–
(A) प्रवृत्ति (B) अभिप्रेरणा
(C) शील गुण (D) संवेग (C)

❖ शास्त्रीय अभिक्रमित अनुदेशन जिनके द्वारा विकसित किया गया, वह है–
(A) चार्ल्स पियर्सन (B) क्राउडर
(C) चार्ल्स हल (D) बी.एफ. स्कीनर (B)

Scanned with CamScanner

❖ आदतों के संबंध में निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है ?
(A) आदतें जन्मजात होती हैं।
(B) मूल प्रवृत्तियों की तरह आदतें भी व्यक्ति को अभिप्रेरित करती हैं।
(C) आदत निर्माण का आधार कोई मूल प्रवृत्ति होती है।
(D) व्यक्ति में यदि किसी बुरी आदत का निर्माण हो जाता है तो वह बुरी आदत आसानी से छूट जाती है। (D)

❖ रुचि के संप्रत्यय के तीन मुख्य पक्ष निम्न में से किस विकल्प में दिये हुये हैं ?
(A) वंशानुक्रम, मूल प्रवृत्तियाँ, विचार
(B) जानना, अनुभव करना, मूल अभिवृत्तियाँ
(C) ज्ञानात्मक, क्रियात्मक, भावात्मक
(D) वंशानुक्रम, क्रियात्मक, अनुभव करना (C)

❖ मनोवृत्ति के संबंध में निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है ?
(A) मनोवृत्ति, वंशानुक्रम से प्रभावित होती है।
(B) मनोवृत्ति वातावरण से प्रभावित होती है।
(C) मनोवृत्ति पर तात्कालिक कारक विशेष प्रभाव डालते हैं।
(D) अध्यापक का मनोवृत्ति के विकास में योगदान होता है। (A)

❖ अभिवृत्ति है-
(A) एक भावात्मक प्रवृत्ति जो अनुभव के द्वारा संगठित होकर किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के प्रति पसंदगी या नापसंदगी के रूप में प्रतिक्रिया करती है
(B) एक ऐसी विशेषता जो व्यक्ति की योग्यता का परिचायक है जिसे किसी प्रदत्त क्षेत्र में विशिष्ट प्रशिक्षण, ज्ञान अथवा कौशल से सीखा जा सकता है
(C) व्यक्ति की बीजभूत क्षमता जो कि विशिष्ट प्रकार की होती है
(D) इनमें से कोई नहीं (A)

❖ बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आप कौनसी विधि का चयन करेंगे ?
(A) बच्चों को पढ़कर आने को कहेंगे और प्रश्न पूछेंगे
(B) स्वयं गतिविधि करेंगे तथा बच्चों को शामिल करेंगे
(C) गतिविधि में बच्चों को शामिल करेंगे
(D) बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे (C)

❖ एक कक्षा में विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए एक शिक्षक को बल देना चाहिए-
(A) श्यामपट्ट के प्रयोग पर
(B) चर्चाओं के आयोजन पर
(C) प्रकरण संबंधी रोचक जानकारी देना
(D) प्रकरण संबंधी प्रश्न पूछना (C)

❖ रुचि को अभिव्यक्त, प्रव्यक्त एवं मापित श्रेणी में वर्गीकृत किया है-
(A) सुपर (B) ड्रेवर
(C) स्ट्रांग (D) गिलफोर्ड (A)

❖ रुचि तालिका बनाने का सर्वप्रथम प्रयास किया-
(A) मूर
(B) कार्लहांसर
(C) कॉरनेज इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
(D) गिलफोर्ड (C)

❖ आत्म प्रत्यय से तात्पर्य व्यक्ति के अपने व्यवहार योग्यताओं एवं विशेषताओं का मूल्य आंकलन व अभिवृत्तियों की समग्रता से है। आत्म प्रत्यय की यह परिभाषा देने वाले हैं-
(A) गेल
(B) साइमण्डस
(C) एनसाइक्लोपीडिया ऑफ साइकोलॉजी
(D) गिब्स (C)

❖ स्व-प्रत्यय निर्माण में सहायक है-
(A) अभिप्रेरणा (B) बुद्धि
(C) स्वास्थ्य (D) अभिक्षमता (D)

❖ अभिरुचि का अर्थ होता है ?
(A) वैयक्तिक योग्यताओं एवं विशेषताओं का योग है।
(B) केवल अच्छी आदतों का समूह है।
(C) अनुशासनहीन बने होने की जिद्द है।
(D) मूल प्रवृत्तियों का आधिक्य है। (A)

❖ विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों में परिवर्तन के लिए निम्नलिखित में से किस विधि का प्रयोग अध्यापक को नहीं करना चाहिए ?
(A) दबाव से किसी बात या विचार के लिए राजी करना
(B) किसी विचार को दोहराना अथवा दृढ़तापूर्वक व्यवहार
(C) किसी प्रशंसनीय व्यक्ति द्वारा समर्थन एवं स्वीकृति
(D) संदेश के साथ साहचर्य स्थापित करना (A)

❖ "अवधान और अभिरुचि एक ही वस्तु को देखने के दो भिन्न तरीके हैं, जैसे एक सिक्के के दो पहलू।" यह कथन है-
(A) मैक्डूगल (B) ड्रेवर
(C) वुडवर्थ (D) रॉस (D)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 12 शिक्षण व्यूह रचनाएँ व युक्तियाँ/विधियाँ

✦ स्ट्रेसर के अनुसारः- ''शिक्षण व्यूह रचनाएँ वे योजनाएँ होती हैं जिसमें बालक के अधिगम अनुभव, व्यवहारगत परिवर्तन, अधिगम उद्देश्यों तथा पाठ्यवस्तु विश्लेषण को महत्व दिया जाता है।''

प्रकार - (दो प्रकार है) -

(1) जनतांत्रिक नीतियाँ - बालक प्रधान

(2) प्रभुत्ववादी नीतियाँ - शिक्षक प्रधान।

**शिक्षण नीतियाँ–**

✦ डेविस :- 'शिक्षण नीतियाँ शिक्षण की व्यापक विधियाँ है।'

**शिक्षण नीतियों की विशेषताएँ (Characteristics of Teaching Strategies)–**

1. शिक्षण नीतियाँ, शिक्षण कार्यों के किस प्रतिमान की ओर संकेत करती है।
2. शिक्षण नीतियाँ, शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है।
3. ये व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र में उपयोगी है।
4. ये कार्य विश्लेषण और उसकी संरचना में महत्त्वपूर्ण है।
5. ये शिक्षक की कार्य निष्ठा बढ़ाती है और शिक्षण कुशलता में वृद्धि
6. ये शिक्षण प्रक्रिया को उन्नत तथा वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।
7. इनके माध्यम से बुद्धि, अध्यवसाय, स्पष्ट चिन्तन तथा कार्यशालाओं के होता है।
8. शिक्षण नीतियों मे शिक्षा दर्शन, अधिगम सिद्धान्त, पृष्ठपोषण आदि तत्त्व
9. ये शिक्षण प्रक्रिया को क्रमबद्ध तथा सार्थक बनाती है।
10. शिक्षण नीतियाँ शिक्षक के नियन्त्रण में रहती है और वह आवश्यकतानुसार

**सारणी-शिक्षण नीतियाँ तथा शिक्षण विधियाँ**

| शिक्षण नीतियाँ (Growth) | शिक्षण नीतियाँ (Development) |
|---|---|
| 1. शिक्षण नीतियों का चयन उद्देश्यों के आधार पर किया जाता है। | 1. शिक्षण विधियों के चयन में पाठ्यपुस्तक की प्रकृति पर ध्यान दिया जाता है। |
| 2. शिक्षण नीतियों में व्यवहारों और संबंधों का स्थान महत्त्वपूर्ण है। | 2. इनमें पाठ्यपुस्तक तथा उसका प्रस्तुतीकरण महत्त्वपूर्ण माना जाता है। |
| 3. शिक्षण नीतियों शिक्षण को विज्ञान के रूप में मानती है। | 3. शिक्षण विधियाँ शिक्षण को काल के रूप में मानती है। |
| 4. शिक्षण नीतियों का मुख्य कार्य उपयुक्त सीखने की परिस्थितियाँ उत्पन्न करना है। | 4. शिक्षण विधियों का मुख्य कार्य पाठ के प्रस्तुतीकरण को अधिक प्रभावशाली बनाना |
| 5. शिक्षण नीतियों के मूल्यांकन का मापदण्ड उद्देश्यों की प्राप्ति होता है। | 5. शिक्षण विधियों के मूल्यांकन का मापदण्ड पाठ्य पुस्तक पर अधिकार प्राप्त करना होता है। |
| 6. इसमें सूक्ष्म उसागम (Micro Teaching) का अनुसरण किया जाता है। | 6. इसमें स्थूल उपागम (Micro Teaching) को अपनाया जाता है। |
| 7. यह Modern Human Organization Theory का उपहार है। | 7. यह Classical Human Organization Theory का उपहार है। |

Scanned with CamScanner

✦ ये दो प्रकार की होती हैं -

लोकतांत्रिक — प्रभुत्ववादी

## शिक्षण नीतियाँ

### लोकतांत्रिक नीतिओं की विशेषताएँ-

✦ बालक प्रधान
✦ शिक्षक का स्थान गौण
✦ उन्हे मनोवैज्ञानिक विधियाँ कहा जाता है।

### प्रमुख लोकतांत्रिक विधियाँ-

1. **प्रोजेक्ट/योजना/प्रायोजना :-**
- प्रतिपादक - जॉन डिवी के शिष्य किलपेट्रिक
- **किलपेट्रिक** - प्रायोजना वह क्रिया है जिससे पूर्व संलग्नता के साथ सामाजिक वातावरण में लक्ष्य प्राप्त किया जाता है।

**सिद्धान्त :-**
1. उद्देश्ययुक्ता का सिद्धान्त
2. क्रियाशीलता - करके सीखने पर बल।
3. वास्तविकता का सिद्धान्त - जीवन से जोड़ने पर बल।
4. उपयोगिता का सिद्धान्त
5. स्वतंत्रता का सिद्धान्त (कोई प्रतिबन्ध नहीं होता)
6. सामाजिक विकास का सिद्धान्त

✦ **प्रोजेक्ट विधि :-** किलपेट्रिक

**योजना के प्रकार -**
(1) रचनात्मक
(2) कलात्मक
(3) समस्या केन्द्रित
(4) सामूहिक अभ्यास

✦ **योजना के सोपान :-**
1. छात्रों के जीवन संबंधित समस्या का चयन।
2. समस्या स्वरूप को समझना।
3. समस्या समाधान की योजना।
4. योजना का क्रियान्वय।
5. योजना का मूल्यांकन।
6. योजना का आलेख तैयार करना।

- **लाभ** - करके सीखना, अनुभव करके सीखना, स्वतंत्र रूप से सीखना, सामाजिक गुणों के विकास में उपयोगी व विषयों के समन्वित ज्ञान में उपयोगी।
- **दोष** - विषय को क्रमबद्ध नहीं होना, उच्च कक्षा में उपयोगी नहीं ।

2. **दत्त कार्य विधि (Assignment Strategy) :-** इसमें छात्र को पाठ्यपुस्तक के छोटे-छोटे दत्त कार्य दिये जाते हैं प्रत्येक छात्र शिक्षक के मार्गदर्शन में सामर्थ्यनुसार कार्य करता है।
3. **वार्तालाप विधि (Discussion) :-** इसमें विषय लेकर शिक्षक व छात्र उस पर सहयोग पूर्वक वाद-विवाद करते हैं छात्रों को पूर्ण स्वतंत्रता होती है। यह 3 प्रकार की होती है -

1. औपचारिक वार्तालाप - पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु होता है।
2. अनौपचारिक - इसमें कोई भी नियम व सिद्धान्त नहीं होते ।
3. संरचनाकृत - यह उद्देश्यपूर्ण व नियोजित होता है।

4. **समीक्षा नीति (Review) ( पुनर्निरीक्षण ) :-** इसमें शिक्षक पाठ का तैयार पुन: प्रमुख बिन्दुओं पर विचार करता है व जानने का प्रयास करता है कौनसा प्रकरण छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है, शिक्षण में क्या दोष है कैसे सुधार किया जा सकता है।
- **लाभ** - यह उच्च कक्षा में उपयोगी, ज्ञान को स्थायी बनाने में, शोध कार्य में, आन्तरिक मूल्यांकन में, विश्लेषण क्षमता विकास में उपयोगी व शिक्षक व छात्र दोनों क्रियाशील रहते हैं।
- **प्रकार** - (1) मौखिक रिव्यू (2) लिखित रिव्यू (3) समस्या रिव्यू (4) सामान्य रिव्यू
- **सीमाएं** - निम्न कक्षा में अनुपयोगी व समय अधिक लगाता है।

5. **ऐतिहासिक खोज विधि (Historical Discovery) :-**
- जेरोम ब्रूनर (प्रतिपादक)
- इसमें छात्र प्रथम खोजकर्ता से अंतिम खोजकर्ता की भूमिका में रहते है।
- **लाभ** - निरीक्षण, चिंतन, सूझ, सृजनात्मकता, विश्लेषण/संश्लेषण क्षमता का विकास में उपयोगी/नवीन ज्ञान की खोज में उपयोगी, ज्ञानात्मक व भावात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में व सिद्धान्तों की समझ में उपयोगी।
- **सीमाएं** - सभी विषयों में उपयोगी नहीं, यह केवल प्रतिभाशाली छात्रों के लिए उपयोगी है।

6. **प्रश्नोत्तर नीति - सुकरात :-** यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है छात्र सक्रिय रहते हैं, प्रशिक्षण संस्था में व छोटे बच्चों के लिए उपयोगी अध्याय के पुनरावलोकन व प्रत्यास्मरण में उपयोगी व विचार व चिंतन शक्ति का विकास करती है। प्रमुख रूप में औपचारिक व सामान्य प्रश्नोत्तर के रूप में होती है।
- **सीमाएँ** - यान्त्रिकता व निरसता युक्त/उच्च कक्षा में ज्यादा उपयोगी नहीं/निर्माण कठिन।

7. **भूमिका निवार्ह/अनुकरणीय/पात्र अभिनय नीति (Role play) :-**
- प्रतिपादक -जे.एल. मॉरेनो
- इसमें कक्षा को छोटे समूह में विभाजित कर दूसरों के अनुभवों का अनुसरण करवाया जाता है जो शिक्षक व छात्र दोनों रोल अदा करते हैं। यह ज्ञानात्मक व सामाजिक कौशल विकसित करती है बिना अभ्यास के भूमिका अभिनय।
- **लाभ** - छोटी कक्षा में उपयोगी, इतिहास, साहित्य, नागरिक शास्त्र व विज्ञान में उपयोगी।
- **सीमाएँ** - विशिष्ट शिक्षण कौशल विकास में उपयोगी नहीं यह औपचारिक विधि है।

8. **मस्तिष्क विप्लव विधि (Brain Storming) :-**
- प्रतिपादक - आसबोर्न
- इसमें छात्रों के सामने एक समस्या प्रस्तुत की जाती है जिसके छात्रा स्वतंत्रपूर्वक विचार व चिंतन करते हुए समस्या का विश्लेषण, संश्लेषण व मूल्यांकन करते है।
- **लाभ** - शैक्षिक व मनोविज्ञान आधारित विधि जो सृजनात्मक का

Scanned with CamScanner

विकास करती है मौलिकता चिंतन का विकास करती है। भावात्मक व ज्ञानात्मक पक्ष का विकास।

9. **संवेदनशील प्रशिक्षण विधि :-**
- इसमें छात्रों के आपसी संबंध विकसित करके उन्हें किसी समस्या के प्रति संवेदनशील बनाया जाता है।
- **लाभ** - समस्या केन्द्रित नीति ज्ञान में वृद्धि, सामूहिक सहचेतन का विकास, संवेदना की जागृति में उपयोगी व अन्त:क्रिया विकास में उपयोगी।
- **सीमा** - प्रत्येक प्रकरण में उपयोगी नहीं/प्रशिक्षण की आवश्यकता।

10. **स्वतंत्र अध्ययन विधि :-** इसमें बालक सक्रिय होकर स्वयं अध्ययन करके समस्या का समाधान खोजते हैं यह निम्न प्रकार की होती है -
1. निर्देशित व निरीक्षण अध्ययन
2. निर्देशित लेकिन अनिरीक्षत अध्यन
3. स्वतंत्र अध्ययन/विशिष्ट कार्य
4. स्वतंत्र कार्य अपने मन के अनुरूप

11. **अन्वेषण विधि :-**
- आर्मस्टांग प्रतिपादक
- बालक स्वयं खोज करके सीखता है आर्मस्ट्रांग के अनुसार "किसी भी विषय को सीखने की प्रक्रिया ही अन्वेषण है। बालक विषय संबंधी तथ्यों व सिद्धान्तों की खोज स्वयं करनी चाहिए।"
- **लाभ** - वैज्ञानिक विधि जो निरीक्षण व विचार प्रक्रिया को तीव्र बनाती है। चिंतन व अवबोधन क्षमता विकास प्राप्त ज्ञान स्थायी व परिश्रम क्षमता का विकास करते हुये क्रियाशीलता, आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता को बढ़ाती है।
- **दोष** - पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो पाना, धीमी गति होना, समय व धन अधिक व्यय, छोटी कक्षा में उपयोगी नहीं, कमजोर छात्रों के लिए उपयोगी नहीं।

12. **शैक्षिक पर्यटन/सरस्वती यात्राएं - पेस्टोलॉजी :-** इसमें वास्तविक प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से सीखने का अवसर प्राप्त होता है। निरीक्षण शक्ति का विकास व पारस्परिक सहयोग की भावना के विकास के लिए उपयोगी।

13. **सूक्ष्म शिक्षण :-** इसका वर्णन शिक्षण अधिगम टॉपिक में किया जा चुका है।

14. **दल शिक्षण :-**1956 में अमेरिका हार्वड विश्वविद्यालय में फ्रांसिस केपल ने ध्यान आकर्षित किया व 1957 में लेक्सिगटन द्वारा किया गया। इसमें एक साथ कई शिक्षण करवाते हैं।

15. **समस्या समाधान विधि :-** जॉन डिवी से प्रयोजनवाद जन्म/बालक करके सीखते हैं। इसका वर्णन पहले किया जा चुका है।

16. **सामूहिक वाद विवाद विधि** - बालक क्रियाशील शिक्षक निरीक्षक व निर्देशक का कार्य करता है यह दो प्रकार की होती है-
1. औपचारिक - नियम आधारित
2. अनौपचारिक - स्वतंत्र
- यह मौलिकता, समस्या समाधान, सृजनात्मकता, निर्णय शक्ति के विकास में उपयोगी है।

17. **स्वामित्व अधिगम आव्यूह (Mastery Learning Stralegy)**
- प्रतिपादक - बी.एस. ब्लूम
- यह अनुदेशनात्मक विधि है, इसके द्वारा स्वामित्व अधिगम का विकास करते हुए शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। यह समूह आधारित अनुदेशन विधि है इसका प्रयोग सुधारात्मक शिक्षण में होता है।
- शिक्षण पाठ्यपुस्तक को अधिगम की इकाईयों में विभाजन अनुदेशन के उद्देश्य के आधार पर।
- प्रत्येक इकाई व उद्देश्य के अनुसार स्वामित्व स्तर निर्धारित ।
- प्रत्येक इकाई का सामूहिक सामान्य कक्षा शिक्षण।
- निष्पति परीक्षण द्वारा स्वामित्व स्तर की जांच व पुनर्बलन।
- कठिनाईयों के अनुसार निदानात्मक व सुधारात्मक अनुदेशन।

18. **गृह कार्य आव्यूह :-** यह ज्ञानात्मक पक्ष के उद्देश्यों को प्राप्त करने की विधि है व क्रियात्मक पक्ष के निम्न स्तर के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है इसके बालक व्यक्तिगत रूप से सीखता है।

19. **केलर योजना :-**
- फ्रेड एस. कैलर (अमेरिका)
- यह स्कीनर के अधिनियम पर आधारित है इसके अनुबद्ध अनुक्रिया अधिगम को महत्व दिया जाता है प्रत्येक छात्र अपने ढंग व गति से सीखता है, महाविद्यालय स्तर पर उपयोगी।

20. **विद्यालय पर्यटन/शैक्षिक पर्यटन :-**
- प्रतिपादक - प्रोफेसर रेन
- इतिहास व भूगोल, प्राकृतिक अध्ययन वनस्पति विज्ञान, वाणिज्य, अर्थ शास्त्र, कृषि व नागरिक शास्त्र में उपयोगी।

## प्रभुत्ववादी शिक्षण नीतियाँ-

ये विधियाँ शिक्षक प्रधान होती हैं, बालक इनमें गौण होता है -

1. **व्याख्यान विधि :-**
- उच्च कक्षाओं में प्रयुक्त की जाने वाली जिसमें शिक्षक विषय विशेष पर व्याख्यान देता है बालक निष्क्रिय होकर सुनता है।
- **लाभ** - कम समय में अधिक सूचना देने, बड़े समूह के शिक्षण में, शिक्षक सदैव सक्रिय व विषय का तार्किक क्रम बना रहता है।
- **दोष** - छात्र निष्क्रिय व अमनोवैज्ञानिक विधि, छोटी कक्षा में उपयुक्त नहीं, ज्ञान अस्थायी, अरूचिकर, प्रयोगात्मक पक्ष की अवहेलना।

2. **प्रदर्शन विधि :-**
- शिक्षक व छात्र क्रियाशीलता रहते हुये कक्षा में शिक्षक सैद्धान्तिक भाग का विवेचन करने के साथ उसका सत्यापन करता है।
- **लाभ** - छोटी कक्षा में उपयुक्त, देखकर सीखता है बालक, निरीक्षण, तर्क व विचार शक्ति का विकास।
- **दोष** - छात्र को स्वयं प्रयोग का अवसर नहीं मिलता।

3. **अनुवर्ग/ट्यूटोरियल नीति (Tutorial) :-**
- इस विधि में कक्षा को छोटे-छोटे समूहों में विभाजित कर शिक्षक समूह की समस्याओं की खोज करके उनके समाधान में सहायता करता है, यह व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूप में होती है इसे गहन शिक्षण का माध्यम भी कहा जाता है।

**प्रकार :-**
1. निरीक्षण युक्त ट्यूटोरियल - व्यक्तिगत विचार-विमर्श
2. सामूहिक ट्यूटोरियल - साधारण छात्रों को विशिष्ट शिक्षण
3. प्रयोगात्मक ट्यूटोरियल - मनोगात्यात्मक व शारीरिक कौशल का अध्ययन व समाधान।

- **लाभ** - छोटे बच्चे व प्रौढ़ों की शिक्षा, मूल्य विकास के शिक्षण में सुधारात्म्क पक्ष पर बल, पूर्व ज्ञान के आधार पर समस्या समाधान पर बल, ज्ञानात्मक व भावात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में योगदान व

Scanned with CamScanner

उपलब्धि बढ़ाने में उपयोगी।

- दोष - एक समय केवल एक विषय का ज्ञान,
- शिक्षक को छात्रों के मनोविज्ञान ज्ञान जरूरी

4. अभिक्रमित अनुदेशन :- इसका वर्णन आगे है।
5. पाठ्य पुस्तक विधि :-
   विशेष अवधरणायें :-

### व्यक्तिगत अनुदेशन प्रणाली (Personalised System of Instruction (PSI)–

- ✦ प्रतिपादक - फ्रेड एस केलर (1963 ई.)
- ✦ इस तकनीक में अधिगमकर्ता की योग्यता व आवश्यकताओं व रूचि के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाती है। इसमें शिक्षक प्रत्येक छात्र को एक व्यक्ति के रूप में अपनाता है।
- ✦ विशेषताएँ :-
  1. बालक अपनी गति से सीखता है।
  2. विषयवस्तु को छोटे-छोटे भागों में विभाजित किया जाता है।
  3. व्यक्तिगत मूल्यांकन होता है।
  4. तत्काल पुनर्बलन की व्यवस्था तथा अभिप्रेरणा का प्रयोग
  5. लिखित कार्य कर ज्यादा बल व्याख्यान विधि का कम प्रयोग
  6. महाविद्यालय स्तर पर उपयोगी।
  7. छात्र शिक्षक के मध्य दूरी कम होती है।

### ऑडियो ट्यूटोरियल प्रणाली–

- ✦ प्रतिपादक - पोस्ट लिथवेट (1961 ई.)
- ✦ ओडियो कैसेट्स के माध्यम से बच्चों को शिक्षण करवाया जाता है।
- ✦ शिक्षण मशीन :-
- शिक्षण मशीन का यह यांत्रिक विद्युत युक्ति है जिसमें शिक्षण प्रकरण को निश्चित क्रम में प्रस्तुत करना, छात्र उत्तर देते हैं, तुरन्त प्रतिपुष्टि मिलती है, मशीन का संचालन छात्र के हाथ में होता है।
- आविष्कार - प्रो. एस.एल. प्रेसी

### अनुभव शंकु–

- प्रतिपादक - एडगर गेल
- बालक अनुभव के माध्यम से सीखते हैं व अनुभव इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होते हैं।

- ✦ शाब्दिक विधि :-

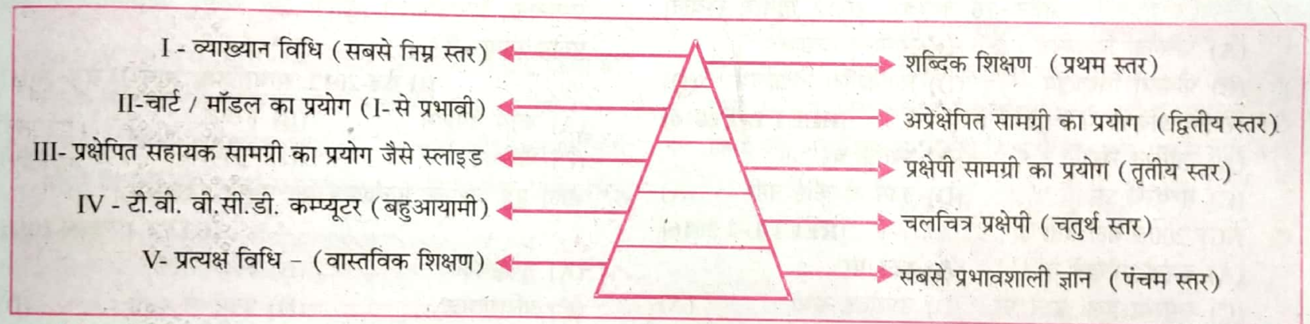


जैसे - शैक्षिक भ्रमण, पर्यटन (उच्चतम स्तर)

विशेष :-

- ✦ अन्तः क्रिया विश्लेषण :-
- नैड ए. कलैण्डर
- शिक्षक के व्यवहार के क्रमबद्ध निरीक्षण प्रविधि द्वारा जो विश्लेषण किया जाता है अन्तःक्रिया विश्लेषण कहलाता है। इसकी 10 श्रेणी होती है
- ✦ ग्लोबे निरीक्षण प्रणाली :-
- चार्ल्स एस. ग्लोबे-1969
- शाब्दिक व अशाब्दिक व्यवहारों का मापन किया जाता है।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ किण्डरगार्टेन विधि के बहुत से गुण हैं, परंतु इस विधि में मुख्य रूप से महत्त्वपूर्ण है?

**(अध्यापक-III ग्रेड- 2009, III ग्रेड शिक्षक भर्ती, 2012)**

(A) निरीक्षण द्वारा सीखना (B) अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखना
(C) समीपता द्वारा सीखना (D) खेल एवं करके सीखना (D)

❖ प्रायोजना विधि के पद क्रमशः होते है ?

**(BTET-I लेवल-2011)**

(1) आयोजन (2) मूल्यांकन
(3) क्रियान्वयन
(4) लेखा-जोखा
(5) चयन व उद्देश्य

(A) 1, 2, 3, 4, 5 (B) 5, 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 5, 4 (D) 2, 3, 5, 4, 1 (B)

❖ दलीय शिक्षण पद्धति का प्रारंभ हुआ ?

**(हिन्दी II ग्रेड-2010)**

(A) जर्मनी (B) अमेरिका
(C) ब्रिटेन (D) भारत (B)

Scanned with CamScanner

❖ सूक्ष्म शिक्षण का समय है? (हिन्दी II ग्रेड-2010)
(A) 10-20 मिनट (B) 5-10 मिनट
(C) 25 मिनट (D) 12 मिनट (B)

❖ योजना विधि के मुख्य सोपान हैं- (BTET-I लेवल-2011)
(A) आँकड़ों का संकलन-समस्या की पहचान-निष्कर्ष-समाधान
(B) समस्या की पहचान-आँकड़ों का संकलन-निष्कर्ष-समाधान
(C) आँकड़ों का संकलन-निष्कर्ष-समस्या की पहचान-समाधान
(D) समस्या की पहचान-निष्कर्ष-आँकड़ों का संकलन-समाधान (B)

❖ प्रोजेक्ट विधि का प्रयोग सबसे पहले सामाजिक विज्ञान में किसने किया? (सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)
(A) किलपैट्रिक (B) मान्टेसरी
(C) जॉन डीवी (D) रूसो (A)

❖ मानसिक विप्लव करने के लिए आप क्या करेंगे ? (सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011)
(A) भाषण (B) अनुकरण
(C) मानसिक उद्वेलन (D) पाठ्य-पुस्तक पढ़ाना (C)

❖ जॉन ड्यूवी द्वारा समर्थित 'लैब विद्यालय' के उदाहरण है- [सीटेट-18 नवम्बर, 2012 द्वितीय लेवल]
(A) पब्लिक विद्यालय (B) सामान्य विद्यालय
(C) फैक्टरी विद्यालय (D) प्रगतिशील विद्यालय (D)

❖ शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थी है- [REET L-1 2016]
(A) आश्रित चर (B) स्वतंत्र चर
(C) मध्यस्थ चर (D) इनमें से कोई नहीं (A)

❖ NCF 2005 बल देता है ............... । [REET L-2 2016]
(A) करके सीखने पर (B) रटने पर
(C) समस्या हल करने पर (D) उपरोक्त सभी (A)

❖ कार्यसूचक क्रिया 'परिभाषित करना' किस उद्देश्य से सम्बन्धित है? [RPSC- 2007]
(A) ज्ञान (B) बोध
(C) प्रयोग (D) विश्लेषण (A)

❖ विज्ञान शिक्षण की वह विधि जिसमें विद्यार्थी को एक खोजी के रूप में कार्य करने का अवसर दिया जाता है, कहलाती है? [RPSC-2007]
(A) प्रयोगशाला विधि (B) समस्या समाधान विधि
(C) ह्यूरिस्टिक विधि (D) प्रायोजना विधि (C)

❖ आगमन विधि में छात्र अग्रसर होता है? [हिन्दी II Grade-2010]
(A) विशिष्ट से सामान्य की ओर
(B) सामान्य से विशिष्ट की ओर
(C) सामान्य से सामान्य की ओर
(D) विशिष्ट से विशिष्ट की ओर (A)

❖ हरबर्ट की पंचपदीय प्रणाली में परिगणित पद नहीं है? [हिन्दी-II ग्रेड-2010]
(A) प्रस्तावना (B) प्रस्तुतीकरण
(C) उद्देश्य (D) मूल्यांकन (C)

❖ साहचर्य विधि का आविष्कार किया? [हिन्दी II ग्रेड-2010]
(A) हरबर्ट (B) मांटेसरी (C) राडबर्न (D) हंटर ने (B)

❖ शिक्षा की किंडर गार्टन पद्धति का प्रतिपादन किया? [UTET I लेवल-2011]
(A) टी.पी. नन (B) स्पेंसर
(C) फ्रोबेल (D) मांटेसरी (C)

❖ शिक्षण को रोचक तथा सार्थक बनाने के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है? [सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011]
(A) चार्ट (B) पाठ्यपुस्तक
(C) कम्प्यूटर (D) श्रव्य-दृश्य सामग्री (D)

❖ शिक्षण में कितने प्रकार का सहसम्बन्ध मिलता है? [सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011]
(A) 2 (B) 3
(C) 4 (D) 5 (B)

❖ प्रस्तावना, प्रस्तुतीकरण, तुलना और संबंध, सामान्यीकरण और प्रयोग सोपान है? [II ग्रेड-2012, सामाजिक ज्ञान II ग्रेड-2011]
(A) ब्लूम उपागम (B) हरबर्ट
(C) मौरीसन (D) ग्लोबरियन (C)

❖ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य है? [BTET I लेवल-2011]
(A) गुणात्मक (B) निदानात्मक
(C) परिणात्मक (D) इनमें से सभी (D)

❖ ज्ञानात्मक पक्ष का अंतिम स्तर क्या है?[BTET I लेवल-2011]
(A) विश्लेषण (B) संश्लेषण
(C) मूल्यांकन (D) ज्ञान (C)

❖ शिक्षण प्रक्रिया में किसे आश्रित चर कहा जाता है? [BTET I लेवल-2011]
(A) शिक्षक (B) छात्र
(C) पाठ्यक्रम (D) सहायक सामग्री (B)

❖ डाल्टन शिक्षण विधि का विकास किसने किया? [उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011]
(A) फ्रोबेल (B) W.H. किलपैट्रिक
(C) मिस हेलेन पार्कहर्स्ट (D) डाल्टन (C)

❖ अंधे बालकों को शिक्षण देने की पद्धति है? [सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011]
(A) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ
(B) श्रव्य सामग्री (C) ब्रेल लिपि
(D) टंकन विधि (C)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 13 क्रियात्मक अनुसंधान (प्रारम्भ व विकास)

- इसका सूत्रपात करने का श्रेय **अमेरिका** को है। वहाँ इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **कोलियर (Collier)** द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के समय किया गया था।
- **प्रतिपादन – 1953 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर स्टीफेन एम. कोरे ने किया।**
- **स्टीफेन एम. कोरे की पुस्तक** – विद्यालय की कार्य पद्धति में सुधार करने के लिए क्रिया अनुसंधान।

### क्रिया-अनुसंधान का अर्थ व परिभाषा–

- क्रिया-अनुसंधान का सामान्य अर्थ है–विद्यालय से सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा अपनी और विद्यालयों की समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन करके अपनी क्रियाओं और विद्यालय की गतिविधियों में सुधार करना।

**परिभाषाएँ:-**

- **कोरे** – ''शिक्षा में क्रिया – अनुसंधान, कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाने वाला अनुसंधान है ताकि वे अपने कार्यों में सुधार कर सकें।''
- **गुड** – ''क्रिया-अनुसंधान शिक्षकों, निरीक्षकों और प्रशासकों द्वारा अपने निर्णयों और कार्यों की गुणात्मक उन्नति के लिए प्रयोग किया जाने वाला अनुसंधान है।''
- **मौले** – शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान से अभिप्राय तात्कालिक समस्या के हल के लिए समस्या के समाधान से है।
- **मैकग्रेथ व अन्य के अनुसार** – क्रियात्म्क अनुसंधान संगठित खोज की क्रिया है जिसका उद्देश्य व्यक्ति विशेष या समूह की क्रिया में परिवर्तन तथा विकास करने के लिए अध्ययन करना व रचनात्मक सुझाव देना है।

**विशेष :-**

- हिन्दी में कामता प्रसाद पांडे ने 1965 में शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान पुस्तक की रचना की।
- शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान का विकास 1926 से माना जाता है। जब बंकिघम ने पुस्तक **''रिसर्च फोर टीचर्स''** में अध्यापकों के लिए इसकी आवश्यकता पर बल दिया।
- 1946 में लेविन ने सामाजिक सम्बन्धों की दिशा में सुधार के लिए क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणाली पर बल दिया।
- राइट स्टोन ने क्रियात्मक अनुसंधान शब्द को आगे बढ़ाया।
- क्रियात्मक अनुसंधान का सम्बन्ध शिक्षा के क्रियात्म्क पक्ष से होता है।

### क्रिया-अनुसंधान व मौलिक अनुसंधान में अन्तर–

| मौलिक अनुसंधान | क्रिया-अनुसंधान |
|---|---|
| 1. इसका विकास भौतिक विज्ञानों के साथ हुआ है। | 1. इसका विकास सामाजिक विज्ञानों के साथ हुआ है। |
| 2. न्यादर्श – सम्पूर्ण जनसंख्या | 2. न्यादर्श – कक्षा-कक्ष होता है। |
| 3. इसका उद्देश्य नये सिद्धान्तों की खोज करना है। | 3. इसका उद्देश्य विद्यालय की कार्य पद्धति में सुधार करना है। |
| 4. इसकी समस्या का क्षेत्र व्यापक है। | 4. इसकी समस्या का क्षेत्र संकुचित है। |
| 5. इसकी समस्या का सम्बन्ध किसी सामान्य परिस्थिति से होता है। | 5. इसकी समस्या का सम्बन्ध किसी विशेष परिस्थिति से होता |
| 6. इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। | 6. इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। |
| 7. इसमें सत्यों और तथ्यों की स्थापना की जाती है। | 7. इसमें वास्तविक समस्यों का व्यावसायिक हल खोजा जाता है। |
| 8. इसमें अनुसंधान की रूपरेखा में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। | 8. इसमें अनुसंधान की रूपरेखा में परिवर्तन किया जा सकता है। |
| 9. इसमें सामान्यीकरण का विशेष महत्व होता है। | 9. इसमें सामान्यीकरण का विशेष महत्व नहीं होता है। |
| 10. इसमें अनुसंधानकर्ता, विशेषज्ञ होते हैं। | 10. इसमें अनुसंधानकर्ता, विद्यालय शिक्षक, प्रबन्धक आदि होते हैं। |
| 11. मूल्यांकन – बाह्य विशेषज्ञ करता है। | 11. मूल्यांकन – शिक्षक स्वयं करता है। |

Scanned with CamScanner

### क्रियात्मक अनुसंधान के प्रकार-

1. प्रयोगात्मक क्रियात्मक अनुसंधान - अध्ययन की परिस्थितियों को पूर्णत नियंत्रित करके निष्कर्ष निकालना।
2. आनुभाविक क्रियात्मक अनुसंधान ( अनुभव के आधार निष्कर्ष )
3. निदानात्मक क्रियात्मक अनुसंधान - दैनिक समस्याओं को आधार बनाकर निष्कर्ष निकालना।
4. सहभागी/सम्मिलनात्मक क्रियात्मक अनुसंधान - सभी सहभागी लोगों के योगदान के आधार पर निष्कर्ष।

### क्रिया-अनुसंधान का क्षेत्र या समस्याएँ-

1. बाल व्यवहार से सम्बन्धित समस्याएँ - इन समस्याओं का सम्बन्ध केवल छात्रों से है, जैसे-चोरी करना, विद्यालय न आना, देर से आना या भाग जाना, विद्यालय की सम्पत्ति को हानि पहुंचाना, कक्षा में शोर मचाना, शरारत करना, यौन-अपराध करना, एक-दूसरे से लड़ना, झगड़ना या मारपीट करना इत्यादि।
2. शिक्षण से सम्बन्धित समस्याएं - इन समस्याओं का सम्बन्ध छात्रों और शिक्षकों दोनों से है, जैसे-पाठ्य विषयों को न समझना या उनमें रुचि न लेना, गृहकार्य या लिखित कार्य न करना, वाचन, उच्चारण आदि की ओर ध्यान न देना, अपने विचारों को मुक्त करने का अवसर न पाना, शिक्षकों का उपयुक्त शिक्षण विधियों को न अपनाना, शिक्षण के लिए पूरी तैयारी न करना, शिक्षण के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण न कर पाना, छात्रों और शिक्षकों में अच्छे सम्बन्ध न होना इत्यादि।
3. परीक्षा से सम्बन्धित समस्याएँ:- इन समस्याओं का सम्बन्ध मुख्यतः छात्रों से है, जैसे- परीक्षा-प्रणाली का विश्वसनीय, प्रामाणिक और वस्तुनिष्ठ न होना, निबन्धात्मक प्रकार की परीक्षाओं के कारण छात्रों की वास्तविक उपलब्धियों का मूल्यांकन न हो पाना, निदानात्मक परीक्षणों का निर्माण और प्रयोग न किया जाना, उपलब्ध परीक्षणों के प्रयोग की सुविधा न होना, छात्रों द्वारा चयन किये जाने के लिए प्रश्न-पत्रों में अधिक प्रश्न न होना, परीक्षा और शिक्षण में समन्वय न होना, इत्यादि।
4. पाठान्तर-क्रियाओं से सम्बन्धित समस्याएँ:- इन समस्याओं का सम्बन्ध छात्रों, शिक्षकों और प्रधानाचार्य से है, जैसे-पाठान्तर क्रियाओं के लिए पर्याप्त साधन न होना, इन क्रियाओं का विधिवत आयोजन न किया जाना, इन क्रियाओं और पाठ्यक्रम में उचित सम्बन्ध और सन्तुलन न होना, इन क्रियाओं को विद्यालय के लिए भार और आडम्बर समझा जाना, इन क्रियाओं के लिए प्रधानाचार्य द्वारा पर्याप्त समय न दिया जाना, इन क्रियाओं के प्रति शिक्षकों का उदासीन रहना, इन क्रियाओं को छात्रों के समय का अपव्यय समझना, उत्साही छात्रों को अपनी रुचियों के अनुसार विभिन्न प्रकार की पाठान्तर क्रियाओं में भाग लेने का अवसर न मिलना इत्यादि।
5. विद्यालय-संगठन व प्रशासन से सम्बन्धित समस्याएँ:- इन समस्याओं का सम्बन्ध मुख्यतः विद्यालय प्रबन्धक और प्रशासन से है, जैसे-पर्याप्त कक्षा-कक्ष का अभाव, स्थान व फर्नीचर का अभाव, वाचनालय व प्रयोगशाला का अभाव, छात्रों व अध्यापकों पर नियंत्रण न होना।

### क्रिया-अनुसंधान के उद्देश्य व प्रयोजन-

- विद्यालय के संगठन और व्यवस्था में परिवर्तन और सुधार करना।
- विद्यालय की कार्य पद्धति में प्रजातंत्रात्मक कार्यों को अधिकतम स्थान देना।
- विद्यालय की दैनिक समस्याओं का अध्ययन और समाधान करके उसकी प्रगति में योग देना।
- विद्यालय के छात्रों, शिक्षकों आदि को उनके दोषों से अवगत कराकर उनकी उन्नती को सम्भव बनाना।
- विद्यालय के पाठ्यक्रम का वास्तविक परिस्थितियों में अध्ययन करके उसकी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल बनाना।
- विद्यालय के प्रधानाचार्य, प्रबन्धक, निरीक्षक और अध्यापकों को अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक करना।
- विद्यालय से सम्बन्धित व्यक्तियों को अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन करके अपनी विधियों को उत्तम बनाने का अवसर देना।

### क्रिया-अनुसंधान का महत्त्व-

1. यह विद्यालय की कार्य-प्रणाली में संशोधन और सुधार करता है।
2. यह विद्यालय में जनतंत्रात्मक मूल्यों की स्थापना पर बल देता है।
3. यह विद्यालय के यांत्रिक और परम्परागत वातावरण को समाप्त करने का प्रयत्न करता है।
4. यह विद्यालय के शिक्षकों और प्रधानाचार्य को अपने दैनिक अनुभवों को संगठित करने और उनसे लाभ उठाने के लिए प्रेरित करता है।
5. यह विद्यालय, प्रबन्धकों, छात्रों, शिक्षकों, निरीक्षकों आदि की समस्याओं का व्यावहारिक समाधान करता है।
6. यह पाठ्यक्रम को समाज की मांगों, मूल्यों और मान्यताओं के अनुकूल बनाकर, विद्यालय को समाज का लघु रूप बनाने की चेष्टा करता है।
7. यह छात्रों की चतुर्मुखी उन्नति करने के लिए विद्यालय की विद्यालय की क्रियाओं का प्रभावपूर्ण विधि से आयोजन करता है।
8. यह शिक्षकों में पारस्परिक प्रेम, सहयोग और सद्भावना की भावनाओं का विकास करता है।
9. यह शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, प्रबन्धकों, प्रशासकों आदि को वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ विधियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करके मूल्यांकन में परिवर्तन और सुधार करता है।

### क्रियात्मक अनुसंधान की सीमाएँ (Limitations)-

क्रियात्मक अनुसंधान की सीमाएँ निम्नलिखित हैं -

1. क्रियात्मक अनुसंधान समाज की व्यावहारिक समस्याओं का अध्ययन करता है। तथ्यों पर शोधक का अधिक नियन्त्रण न होने के कारण

Scanned with CamScanner

इसमें वैज्ञानिकता का अभाव पाया जाता है।

2. इसमें वैज्ञानिक विधि का पूर्ण प्रयोग नहीं किया जाता। अतः पूर्ण शुद्धता का अभाव पाया जाता है।
3. प्रत्येक परिस्थिति पर शोधकर्ता का नियन्त्रण नहीं होता।
4. क्रियात्मक अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्षों को अन्य महाविद्यालय तथा संस्था पर लागू नहीं किया जा सकता। अतः इसमें सामान्यीकरण का अभाव पाया जाता है।
5. अनुसंधानकर्ता के स्वयं के विचार सम्मिलित होने के कारण व्यक्तिगत पक्षपात की संभावना रहती है।
6. इसमें लचीलापन अधिक होता है जो कभी-कभी अनुसंधान की दिशा परिवर्तित कर देता है।
7. अनुसंधानकर्ता को विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त न होने के कारण उपयुक्त शोधविधि के चयन एवं संचालन में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है।
8. इसमें विश्वसनीयता और वैधता का अभाव पाया जाता है।
9. प्राप्त परिणामों के आधार पर भविष्यवाणी करना सम्भव नहीं होता।

प्रत्येक अनुसंधान में लाने के साथ-साथ कुछ कमियाँ भी होती हैं मोल (Mouly) के शब्दों में "अपने दोषों के बावजूद भी क्रियात्मक अनुसंधान को निसन्देह रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।"

### क्रियात्मक अनुसंधान योजनाओं के लिए सुझाव (Suggestions for Action Research Project) –

क्रियात्मक अनुसंधान की योजना बनाते समय निम्नांकित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए –

1. समस्या का स्वरूप वास्तविक होना चाहिए।
2. अनुसंधानकर्ता का समस्या से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होना चाहिए।
3. क्रियात्मक योजना का प्रत्यक्ष सम्बन्ध शिक्षण के स्तर की प्रगति एवं गुणात्मक विकास से होना चाहिए।
4. क्रियात्मक अनुसंधान के क्रियान्वयन से विद्यालय के अन्य कार्यों में बाधा नहीं आनी चाहिए।
5. मूल्यांकन में वैध तथा विश्वसनीय साक्षियों का ही प्रयोग करना चाहिए।
6. परिकल्पनाओं के प्रतिपादन में उन कारणों को ध्यान में रखना चाहिए जो अनुसंधानकर्ता के नियंत्रण में हों।
7. अध्ययन की परिस्थितियों पर अनुसंधानकर्ता का नियंत्रण होना चाहिए।
8. योजना की रूपरेखा तैयार करते समय अनुभवी अध्यापकों तथा कुछ अनुसंधान विशेषज्ञों की राय ले लेनी चाहिए।

शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान विद्यालय की कार्यप्रणाली में सुधार एवं विकास लाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। शिक्षकों तथा प्रशासकों की क्षमता, दृष्टिकोण तथा आत्मविश्वास में सकारात्मक परिवर्तन करके विद्यालय को निश्चित दिशा दिखाने में क्रियात्मक अनुसंधान सर्वथा उपयुक्त है।

### एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान योजना के लिए विकसित प्रारूप (A paradigm of Action Research Project as Proposed by NCERT) –

एनसीईआरटी द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान हेतु अलिखित सोपान विकसित किये गये हैं, जिनका प्रयोग शिक्षक क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना प्रारूप बनाने के लिए कर सकता है –

1. क्रियानुसंधान परियोजना का शीर्षक।
2. परियोजना के मुख्य एवं गौण उद्देश्य।
3. परियोजना की कार्य प्रणाली।
4. परियोजना कार्यप्रणाली की क्रियावन्यन।
5. परियोजना की मूल्यांकन व्यवस्था।
6. परियोजना के लिए बजट प्रारूप।
7. विद्यालय का नाम, कक्षा में वर्ग तथा छात्रों की संख्या जहाँ क्रियानुसंधान किया जाना है।
8. विभिन्न विषयों के शिक्षकों की संख्या।
9. विद्यालय में परियोजना कार्य के लिए उपलका सुविधाएं।
10. परियोजना की उपलब्धियाँ।

शिक्षक इस प्रारूप के आधार पर अपनी क्रियात्मक अनुसन्धान की योजना बना सकता है और अन्त में उसका एक आलेख तैयार कर सकता है।

### क्रियात्मक अनुसंधान के सोपान–

1. समस्या का ज्ञान।
2. कार्य के प्रति प्रस्तावों पर विचार-विमर्श।
3. योजना का चयन व उपकल्पना का निर्माण।
4. तथ्य संग्रह करने की विधियों का निर्माण।
5. योजना पर कार्यान्वयन व प्रमाणों का संकलन।
6. तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष।
7. दूसरों को परिणामों की सूचना।

1. **समस्या का ज्ञान** – क्रिया-अनुसंधान का पहला सोपान है विद्यालय में उपस्थित होने वाली समस्या को भली-भाँति समझना।
2. **कार्य के लिए प्रस्तावों पर विचार-विमर्श** – क्रिया-अनुसंधान का दूसरा सोपान है समस्या को भली-भाँति समझने के बाद इस बात पर विचार करना कि उसके कारण क्या हैं और उसका समाधान करने के लिए कौनसे कार्य किये जा सकते हैं।
3. **योजना का चयन व उपकल्पना का निर्माण** – क्रिया-अनुसंधान का तीसरा सोपान है, विचार-विमर्श के फलस्वरूप समस्या का समाधान करने के लिए योजना का चयन और उपकल्पना का निर्माण करना। इसके लिए विचार-विमर्श करने वाले सब व्यक्ति संयुक्त रूप से उत्तरदायी होते हैं।
4. **तथ्य संग्रह करने की विधियों का निर्माण** – क्रिया-अनुसंधान का चौथा सोपान है-योजना को कार्यान्वित करने के बाद तथ्यों या

Scanned with CamScanner

प्रमाणों का संग्रह करने की विधियाँ निश्चित करना।

5. **योजना का कार्यान्वयन व प्रमाणों का संकलन** - क्रिया-अनुसंधान का पाँचवाँ सोपान है-निश्चित की गई योजना को कार्यान्वित करना और उसकी सफलता या असफलता के सम्बन्ध में प्रमाणों या तथ्यों का संकलन करना।

6. **तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष** - क्रिया-अनुसंधान का छठा सोपान है-योजना की समाप्ति के बाद संग्रह किए हुए तथ्यों या प्रमाणों से निष्कर्ष निकालना।

7. **दूसरों के परिणामों की सूचना** - क्रिया-अनुसंधान का सातवाँ और अन्तिम सोपान है-दूसरे व्यक्तियों को योजना के परिणामों की सूचना देना।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ क्रियात्मक अनुसंधान का उद्देश्य है- **(RTET-II लेवल-2012)**
(A) नवीन ज्ञान की खोज
(B) शैक्षिक परिस्थितियों में वैज्ञानिक व्यवहार का विकास
(C) विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्यप्रणाली में सुधार लाना
(D) इनमें से सभी (C)

❖ क्रियात्मक अनुसंधान के संबंध में कौनसा कथन सही नहीं है? **(RTET-I लेवल-2012)**
(A) यह अध्यापक एवं शिक्षा से संबंधित व्यक्तियों के द्वारा किया जाता है।
(B) यह किसी विशिष्ट समाधान के लिए किया जाता है।
(C) व्यापक स्तर पर निर्णय लेने के लिए सूचना संकलन का कार्य इसमें किया जाता है।
(D) स्थानीय स्तर पर रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान के लिए क्रियात्मक अनुसंधान किया जाता है। (C)

❖ क्रियात्मक अनुसंधान मौलिक अनुसंधान से भिन्न है, क्योंकि यह? **(RTET-I लेवल-2012)**
(A) अध्यापकों, शैक्षिक प्रबंधनों एवं प्रशासकों द्वारा किया जाता है।
(B) शोधकर्ताओं द्वारा किया जाता है, जिनका विद्यालय से कोई संबंध नहीं होता है।
(C) यह प्रमापीकृत उपकरणों पर आधारित होता है।
(D) यह न्यादर्श पर आधारित होता है। (A)

❖ क्रियात्मक अनुसंधान में- **(RTET-I लेवल-2012)**
(A) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण समस्या के कारणों पर आधारित है।
(B) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण किसी उपर्युक्त विवेक पर आधारित है।
(C) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण इस प्रकार किया जाता है ताकि उनका सांख्यिकीय सत्यापन किया जा सके।
(D) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण नहीं किया जाता।
(A)

❖ निम्न में से कौनसा चरण शोध को क्रियात्मक अनु-संधान बनाता है ? **(RTET-II लेवल-2012)**
(A) उपकल्पनाओं का निर्माण
(B) प्रोग्राम का क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन
(C) सामान्यीकरण
(D) शोध के आकल्प का अपरिवर्तन होना (B)

❖ निम्न में से कौनसी समस्या क्रियात्मक अनुसंधान के लिए उपयुक्त नहीं है ? **(RTET-II लेवल-2012)**
(A) 5वीं कक्षा के विद्यार्थियों के हिन्दी के लेखन में सुधार
(B) 7वीं कक्षा के विद्यार्थियों के व्यवहार पर लिखित एवं मौखिक प्रशंसा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन
(C) परम्परागत विधि के ऊपर कम्प्यूटर सहायतित अनुदेशन का प्रभाव
(D) भूगोल के अधिगम में एटलस एवं ग्लोब का प्रयोग (C)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 14 शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009

**इतिहास ( शिक्षा का विकास )–**

- 1781 ई. वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता में मदरसा स्थापित किया। (फारसी व अरबी)
- 1791 ई. जानगाथ डंकन ने बनारस में संस्कृत कॉलेज।
- 1800 ई. – फोर्ट विलियम ने असैनिक अधिकारियों के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना।
- 1813 ई. – चार्टर एक्ट में पहली बार भारत में शिक्षा प्रसार के लिए 1 लाख रूपये का प्रावधान।
- 2 फरवरी 1835 ई. मैकाले स्मरण पत्र अंग्रेजी शिक्षा पर बल उद्देश्य "रक्त व रंग से भारतीय होंगे लेकिन विचारों से अंग्रेज होंगे" (7 मार्च को बैटिंक ने इसे अपना लिया)
- मैकाले को भारत में आधुनिक शिक्षा का जनक माना गया है। (चार्ल्स ग्राण्ट को विश्व स्तर पर आधुनिक शिक्षा का जनक)
- विप्रवेशन/निष्पादन सिद्धान्त – लार्ड आकलैण्ड – उच्च वर्ग को शिक्षित करने (निम्न वर्ग अपने आप हो जायेगा) पर बल।
- 1854 वुड डिस्पैच ( भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा )

  (देशी भाषा प्राथमिक पाठशाला, निजी प्रयत्नों पर बल, अनुदान पद्धति, लोक शिक्षा विभाग, व्यवसायिक शिक्षा)

  इसकी सिफारिश पर कलकत्ता, बम्बई मद्रास में विश्वविद्यालय की स्थापना (1857)
- 1870 – ब्रिटेन में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम पारित।
- 1882-83 हण्टर आयोग – प्राथमिक शिक्षा में सुधार पर बल/साहित्य व व्यवसायिक शिक्षा पर बल।
- 1893 बड़ौदा महाराज ने अमेरेली ताल्लुका में अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की।
- 1902 –टॉमस रैले आयोग (लार्ड कर्जन) (विश्वविद्यालय शिक्षा)
- 1904 – भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (विश्वविद्यालयों पर नियंत्रण स्थापित/स्वायत्तता खत्म)
- 1906 – बड़ौदा रियासत के शिवाजी गायकवाड़ ने सम्पूर्ण रियासत में अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ की। (भारत में स्वयं के स्तर पर प्रथम प्रयास)
- 1910 गोपाल कृष्ण गोखले ने नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रस्ताव रखा। (विधान परिषद में खारिज)
- 1913 शिक्षा नीति प्रस्ताव – अनिवार्य शिक्षा का प्रस्ताव खारिज लेकिन नि:शुल्क शिक्षा (प्राथमिक) का प्रबंध प्रान्तीय सरकारों को दिया गया।
- 1917 सेडलर विश्वविद्यालय आयोग (कलकत्ता) – 3 सदस्य
- सेडलर के अलावा दो भारतीय आशुतोष मुखर्जी, जिआउदीन अहमद (स्नातक 3 वर्ष, महिला शिक्षा व आनर्स पाठ्यक्रम व सामान्य पाठ्यक्रम के विभाजन का सुझाव)
- 1917 विट्ठल भाई पटेल ने अनिवार्य शिक्षा पर पहला विधेयक पारित करवाया।
- 1918 ब्रिटिश भारत में सभी प्रान्तों में संविधि सूची में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम पारित।
- हार्टोग समिति – 1929 – प्राथमिक शिक्षा को नुकसान पहुंचाया।
- प्राथमिक शिक्षा पर बल लेकिन अनिवार्यता का विरोध व्यावसायिक व औद्योगिक शिक्षा पर बल।
- 1937 वर्धा शिक्षा योजना/बेसिक शिक्षा योजना – गांधी, 7-14 वर्ष तक नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा, मातृभाषा शिक्षा, शिल्प कौशल/हस्त कौशल शिक्षा पर बल।
- 1944 साजेन्ट योजना – 6-11 वर्ष के लिए नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा, 11-17 वर्ष के लिए व्यवसायिक शिक्षा।
- 1947 सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा को 10 वर्ष में कम लागत में प्राप्त करने के लिए खेर समिति नियुक्त हुई।
- 1948 राधाकृष्णन आयोग (भारतीय शिक्षा आयोग) (विश्वविद्यालय पूर्व शिक्षा 12 वर्ष हो, शिक्षा समवर्ती सूचि में शामिल हो, 180 दिन कम से कम कार्यदिवस हो, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग गठित हो प्रशासनिक सेवा के लिए स्नातक अनिवार्य ना हो।)
- 1950 राज्य के नीति निदेशक सिद्धान्त के अनुच्छेद 45 जोड़ा गया – राज्य 10 वर्ष की अवधि के नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करेगा।
- 1952 मुदालियर आयोग का गठन (माध्यमिक शिक्षा) (7 अगस्त 1957 को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की स्थापना/जयपुर में की गई) बाद में अजमेर कर दिया गया।
- 1953 यू.जी.सी. का गठन कार्य प्रारम्भ विधिवत 1956 में।
- 1958 माध्यमिक शिक्षा परिषद गठन।
- 1961 NCERT का गठन।
- 1964-66 कोठारी शिक्षा आयोग गठन – दौलत सिंह कोठारी (10+2+3 शिक्षा, मातृभाषा शिक्षा, त्रिभाषा सूत्र, समाजसेवा, कार्यानुभव, नैतिक शिक्षा पर बल)
- 1968 राष्ट्रीय शिक्षा नीति –
  - 14 वर्ष तक नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा।
  - द्विभाषा फार्मूला, कृषि उद्योग शिक्षा का विकास, अध्यापकों के पद/वेतन में वृद्धि/राष्ट्रीय आय का 6 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च
- 1986 नवीन शिक्षा नीति – 1986 (वर्तमान शिक्षा आधारित) 10+2+3 नीति, OBB योजना, प्रारम्भिक शिक्षा को सर्वव्यापी बनाना, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा को व्यावसायिक बनाना।
- 1988 DIET की स्थापना।
- 1992 P.O.P - Plan of Action - पाठ्यक्रम में 3 शब्द जोड़े गये – (1) लचीलापन (2) गुणवत्ता (3) प्रासंगिकता
- 1986 शिक्षा नीति के तहत DPEP जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ।
- 1993 यशपाल कमेटी 'शिक्षा बिना बोझ के रिपोर्ट' रिर्पोट 2000 में प्रस्तुत
- 2002 1 दिसम्बर 2002 ई. 86वें शिक्षा संविधान संशोधन द्वारा नये प्रावधान जोड़े गये।

Scanned with CamScanner

- भाग – 3 (मूल अधिकार में अनुच्छेद 21(ए) जोड़कर 6-14 वर्ष के बालकों शिक्षा का मूल अधिकार दिया गया।)
- भाग-4 'मूल कर्तव्य' 5(ए) में 11वाँ मूल कर्त्तव्य जोड़ा गया।
- ✦ 2003 नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा विधेयक, 2002 (राजग सरकार) (2004 में फिर पेश हुआ लेकिन पारित नहीं)
- ✦ 2005 शिक्षा का अधिकार विधेयक 2005 जून (CABE) – सप्रंग सकार अगस्त में फिर लेकिन सफलता नहीं मिली।
- ✦ NCF – 2005 लागू।
- ✦ 2009 RTE 2009 - राज्यसभा 20 जुलाई, लोकसभा 4 अगस्त 2009 को, राष्ट्रपति एवं 26 अगस्त को हस्ताक्षर, अधिूसचना 29 अगस्त को, 2009 को 1 अप्रैल, 2010 से लागू (जम्मू व कश्मीर को छोड़कर)

  **नोट :** विश्व में सर्वप्रथम नार्वे में नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया। भारत 135 वाँ देश है जिससे यह लागू किया।

  राजस्थान नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार नियम – 2011, दिनांक 29.03.2011 को राजस्थान सरकार द्वारा अधिसूचना जारी 1 अप्रैल 2011 से राजस्थान में लागू।

## RTE-2009

प्रमुख धारा व अध्याय – 7 अध्याय व 1 अनुसूचि 38

### 1. अध्याय-1 : प्रस्तावना (नाम, विस्तार, शब्दावली)

सबसे छोटा अध्याय

इस अध्याय में 2 धारा शामिल है –

✦ **धारा-1**

नाम नि:शुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009

विस्तार – जम्मू कश्मीर को छोड़कर समस्त भारत में (धार्मिक शिक्षण संस्थाओं पर लागू नहीं होता)

**नोट :** वर्तमान में जम्मू-कश्मीर में भी धारा 370 समाप्त होने के साथ यहाँ भी RTE 5 अगस्त 2019 से लागू हो गया।

✦ **धारा-2**

**शब्दावली –**

1. **बालक** – 6-14 आयु वर्ग के लिए प्रयुक्त
2. **समुचित सरकार** – केन्द्र व राज्य सरकार जहाँ विद्यालय स्थित है।
   **नोट :-** शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है।
3. **स्थानीय प्राधिकारी** – इससे तात्पर्य नगर निगम, पालिका, पंचायत समिति, ग्राम पंचायत (स्थानीय शासन) को व्यक्त करता है।
4. **प्रारम्भिक शिक्षा** – इससे तात्पर्य कक्षा 1 से 8 तक की शिक्षा से है।
5. **अनुवीक्षण** – यह प्रवेश प्रक्रिया (परीक्षा) को व्यक्त करता है।
6. **असुविधाग्रस्त बालक** – यह सामाजिक, शैक्षिक रूप से पिछड़े व ST, SC अन्य कोई भी वर्ग जो सरकार द्वारा अधिसूचित है।
7. **दुर्बल वर्ग** – जिनके माता-पिता की आय निर्धारित सीमा से कम है (कमजोर तबका)
8. **विहित** – इसका तात्पर्य समुचित सरकार प्रांसगिक नियम बनायेगी से है।
9. **स्कूल** – अनुच्छेद – 2 में 4 श्रेणी बतायी गई है –

(a) सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त/निधिबद्ध/प्रबंधित स्कूल

(b) निजी किन्तु सरकार/स्थानीय प्राधिकार से अनुदान प्राप्त

(c) विशिष्ट श्रेणी- केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय, सैनिक, मॉडल, इण्डो तिब्बत सीमा पुलिस स्कूल

(d) निजी स्कूल जिन्हें कार्य अनुदान नहीं मिलता।

### 2. अध्याय-2

इसमें विस्तृत उल्लेख मिलता है इसमें धारा 3 से 5 शामिल है –

✦ **धारा-3**

प्रत्येक 6-14 आयु वर्ग के बालक नि:शुल्क व अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करना उसका अधिकार होगा।

नि:शुल्क शिक्षा का तात्पर्य – कोई भी बालक किसी भी प्रकार के शुल्क/प्रभार/व्यय का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा उसे प्राथमिक शिक्षा जारी रखने व पूरी करने से रोकता है।

✦ **धारा-4**

बालक को उसकी आयु के अनुसार कक्षा-कक्ष में स्थान देना (6-14) आयु वर्ग के अनुसार

**नोट :-** BRCF द्वारा ऐसे बच्चों को 3 माह का प्रशिक्षण दिया जाता है। जैसे – 11 वर्ष के बालक पहली बार स्कूल आने पर उसे 5वीं कक्षा में बैठाया जायेगा।

✦ **धारा-5**

प्रत्येक बालक को प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने तक एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय में स्थानान्तरण का अधिकार होगा। स्थानान्तरण प्रमाण पत्र ना देने पर अनुशासनात्मक कार्यवाही होगी।

### 3. अध्याय-3 : समुचित सरकार, स्थानीय प्राधिकार व माता-पिता के दायित्व

इसमें 6 से 11 आती है –

✦ **धारा-6**

समुचित सरकार स्थान, समय व परिस्थिति के अनुसार विद्यालय की स्थापना करेगी।

सामान्यतया – 1 से 5 = 1 किलोमीटर के दायरे
6 से 8 = 2 किलोमीटर के दायरे

✦ **धारा-7**

अधिनियम को लागू करने में होने वाला वित्तीय खर्च संयुक्त रूप से किया जायेगा।

11वीं पंचवर्षीय योजना = 55 : 45 (केन्द्र : राज्य)
12 वीं पंचवर्षीय योजना = 65 : 35 (केन्द्र : राज्य)
पूर्वोत्तर राज्य = 90 : 10 (केन्द्र : राज्य)
नवीनतम वित्त अनुपात 60 : 40

✦ **धारा-8**

समुचित सरकार के दायित्व

जैसे बालकों की शिक्षा की उपलब्धता, विद्यालय की उपलब्धता, भवन, प्रशिक्षण शिक्षक पाठ्यक्रम व समस्त कार्यो का नियंत्रण।

✦ **धारा-9**

स्थानीय प्राधिकार के कर्त्तव्य विद्यालय व्यवस्था, पर्यवेक्षण, नियंत्रण समस्त सुविधा व्यवस्था करना।

✦ **धारा-10**

प्रत्येक माता-पिता व अभिभावक का कर्त्तव्य होगा वे बालकों को स्कूल प्रारम्भिक शिक्षा दिलवाये।

✦ **धारा-11**

3-6 वर्ष के बच्चों की विद्यालय पूर्व शिक्षा आंगनबाड़ी में उपलब्ध करवायी जायेगी।

Scanned with CamScanner

## 4. अध्याय-4 : विद्यालय व शिक्षक के दायित्व

यह सबसे बड़ा व महत्त्वपूर्ण अध्याय है।
इसमें धारा 12 से 28 तक की धारा है।

✦ **धारा-12**
सभी निजी शिक्षण संस्थान कक्षा 1 की कुल 25 प्रतिशत सीटों पर दुर्बल/असुविधाग्रस्त बच्चों के प्रवेश की व्यवस्था करेंगे। यह 8 वर्ष के लिए होगा लेकिन LKG/UKG के प्रवेश देने पर (पूर्व प्राथमिक शिक्षा) देने पर आरक्षण 3 से 11 वर्ष के लिए होगा वह कक्षा प्रथम में देने पर 6-14 वर्ष के लिए होगा।

✦ **धारा-13**
अनुवीक्षण प्रक्रिया में ना तो प्रवेश परीक्षा, ना केपीअेशन फीस (शुल्क), प्रवेश शुल्क व माता-पिता का साक्षात्कार नहीं लिया जा सकेगा। लेने पर फीस का दस गुणा दण्ड अनुवीक्षण प्रक्रिया करने पर प्रथम बार 25 हजार रुपये जुर्माना, दूसरी बार 50 हजार रुपये जुर्माना, तीसरी बार मान्यता रद्द।

✦ **धारा - 14**
प्रवेश के समय आवश्यक प्रमाण पत्रों से मुक्ति, जैसे - जाति, आयु इत्यादि।

✦ **धारा-15**
प्रवेश की तिथी 30 सितम्बर लेकिन वर्षपर्यन्त प्रवेश लिया जा सकेगा।

✦ **धारा-16**
प्रारम्भिक शिक्षा पूर्व होने तक ना तो किसी बालक को फेल किया जा सकेगा ना ही विद्यालय से निष्कासित किया जा सकेगा।

**नोट :-** राजस्थान सरकार ने इसमें संशोधन कर दिया है जिसमें अब बालक को 8वीं कक्षा में फेल किया जा सकता है। जनवरी 2019 में इस धारा में संशोधन किया गया तथा तथा "नो डिटेंशन नीति" के तहत् अब राज्य सरकारों पर यह भार सौंपा गया कि अब वह चाहे तो 8वीं कक्षा तक के बच्चों को फेल भी कर सकते हैं।

✦ **धारा-17**
बालक को किसी भी प्रकार का शारीरिक व मानसिक दण्ड नहीं दिया जा सकेगा (देने पर 3 माह का कारावास व अनुशासनात्मक कार्यवाही)

✦ **धारा-18**
बिना मान्यता विद्यालय चलाना प्रतिबंधित होगा व उल्लंघन करने पर एक लाख का जुर्माना व निरन्तर उल्लंघन पर प्रतिदिन 10 हजार का जुर्माना।

✦ **धारा-19**
विद्यालय के मानक- जो विद्यालय पूर्व स्थापित हैं उसे 3 वर्ष में पूरे करने होंगे। जैसे भवन, खेल मैदान, पृथक शौचालय व पानी की व्यवस्था, चार दीवारी, पुस्तकालय, कार्यालय कक्ष, रसोईघर इत्यादि।

✦ **धारा-20**
केन्द्र सरकार अधिसूचना द्वारा किसी भी मानक में परिवर्तन या लोप कर सकेगी।

✦ **धारा-21**
SMC का गठन (स्कूल प्रबंधन समिति) इसके 16 सदस्य होते हैं। सदस्य अभिभावक जिनके एक से कम 6 महिला व एक सदस्य SC/ST होगा। अध्यक्ष भी इन 11 में से अभिभावक होगा। 12वां सदस्य वॉड पंच/पार्षद, 13वां पदेन अध्यापक व 14वां सदस्य सचिव प्रधानाध्यापक होगा 2 सदस्य विधायक द्वारा प्रतिनियुक्त होंगे। प्रत्येक माह में 1 बैठक (अमावस्या) गणपूर्ति 1/3 होगी।

**नोट :** प्रत्येक दो वर्ष में इसका पुनर्गठन हो यह विद्यालय की योजना, वित्तीय कार्य व विनिश्चय मामले इसी के माध्यम से होंगे।

✦ **धारा-22**
विद्यालय विकास योजना SMC द्वारा बनायी जायेगी।

**नोट :** यह तीन वर्षीय होगी जिसमें तीन वार्षिक उपयोजना शामिल होगी।

✦ **धारा-23**
शिक्षक की योग्यता का उल्लेख/वेतन/पद/सेवा उल्लेख (जहाँ शिक्षण प्रशिक्षण संस्था नहीं है या संसाधन कम है वहाँ केन्द्र सरकार नियमानुसार न्यूनतम अहर्ता में 5 वर्ष तक की शिथिलता दे सकती है।)

**विशेष :-** (नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2017 संशोधन) द्वारा जो 21 जुलाई को लोकसभा से पारित व 1 अगस्त राज्यसभा से पारित हुआ में यह प्रावधान किया। 31 मार्च 2015 तक नियुक्त शिक्षक जो न्यूनतम अहर्ता नहीं रखते उन्हें 4 वर्ष के भीतर अर्जित करनी होगी इसका वहन SSA द्वारा 60 : 40 के अनुपात के किया जायेगा।

✦ **धारा -24**
शिक्षक के दायित्वों को तय करती है।

**एक शिक्षक के निम्न दायित्व बताये गये हैं :-**
1. स्कूल में नियमित आयेंगे।
2. पाठ्यक्रम संचालित करेंगे और समय पर पूरा करेंगे।
3. पढ़ाने का स्तर, गति और शिक्षण योजना बालकों के अनुसार तय की जायेगी, आवश्यक हो तो अतिरिक्त कक्षाएँ भी लेंगे।
4. माता-पिता व अभिभावकों के साथ संवाद करेंगे।
5. सरकार द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लेंगे।
6. प्रति सप्ताह 45 कालांश।

✦ **धारा-25**
प्रत्येक विद्यालय में छात्र शिक्षक अनुपात निश्चित है :-

**कक्षा 1 से 5**

| छात्र संख्या | अध्यापक |
|---|---|
| 0-30 | 1 (लेकिन अब न्यूनतम 2 शिक्षक होंगे।) |
| 31-60 | 2 |
| 61-90 | 3 |
| 91-120 | 4 |
| 121-150 | 5 |

150 से अधिक = 5 + 1 प्रधानाध्यापक पद (द्वितीय श्रेणी)
200 से अधिक होने पर 40 : 01 अनुपात होगा।
शिक्षण घंटे = 800 शिक्षण कार्य दिवस = 200
एक शिक्षक कार्य = 45 घंटे प्रति सप्ताह

**कक्षा 6 से 8**

| छात्र संख्या | अध्यापक |
|---|---|
| 01-35 | 1 |
| 36-70 | 2 |
| 71-100 | 3 |
| 100 से अधिक | प्रधानाध्यापक पद देय होगा |
| 100 से अधिक | 40 छात्रों पर शिक्षक होगा। |

Scanned with CamScanner

विशेष :- कक्षा 6 से 8 तक न्यूनतम 3 शिक्षक आवश्यक लगाये जावेगे - (1) भाषा शिक्षक (2) गणित विज्ञान (3) सामाजिक विज्ञान शिक्षक :-अंश कालिक शिक्षक - कला शिक्षक, नैतिक व शारीरिक शिक्षक होंगे।

शिक्षक घंटे = 1000 शिक्षण दिवस = 220

प्रति सप्ताह 48 कालांश होंगे न्यूनतम 45 घंटे प्रति कालांश होगा।

- धारा-26

किसी भी विद्यालय में 10 प्रतिशत से अधिक पद रिक्त नहीं होंगे।

- धारा-27

शिक्षक को जनगणना, चुनाव कार्य व आपदा कार्य के अलावा नहीं लगाया जायेगा।

- धारा-28

निजी ट्यूशन/शिक्षण पर प्रतिबन्ध रहेगा।

### 5. अध्याय-5 : प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम-

इसमें धारा 29 व 30 शामिल है।

- धारा-29

प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम समूचित सरकार द्वारा अधिसूचित किया जायेगा।

पाठ्यक्रम - अधिकतम सीखने के अवसर प्रदान करने वाला, सर्वांगीण विकास, मूल्य आधारित, ज्ञान के निर्माण पर बल, मातृभाषा में, गतिविधि आधारित (ABL) व सतत मूल्यांकन आधारित होगा। राजस्थान में SIERT द्वारा बनाया जायेगा।

- धारा-30

प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण होने तक कोई बोर्ड परीक्षा अनिवार्य नहीं होगी केवल उसे निहित प्रारूप में प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

(नोट :- राजस्थान में 5वीं व 8वीं बोर्ड लागू कर दिया गया है।)

### 6. अध्याय-6 : बालक के अधिकारों का संरक्षण-

- धारा-31

बाल अधिकार संरक्षण आयोग 2005 की धारा '3' में राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग व धारा '17' में राज्य बाल संरक्षण आयेगा जो नि:शुल्क व बाल अधिकारों के परिवादों की जाँच करना व सिफारिश करना होगा।

- धारा-32

बाल अधिकार संरक्षण आयोग में अपील का प्रावधान

- धारा-33

राष्ट्रीय सलाहकार परिषद का गठन जिसके 15 सदस्य होंगे जिसमें अध्यक्ष - मानव विकास मंत्री होगा।

- धारा-34

राज्य सलाहकार परिषद का गठन (सदस्य 15)

अध्यक्ष - शिक्षा मंत्री (कार्यकाल 2 वर्ष)

1/3 सदस्य महिला + 9 व्यक्ति ST/SC/अल्पसंख्यक होंगे, अन्य शिक्षाविद होंगे।

इसकी बैठकों का अन्तराल 3 माह से ज्यादा नहीं होगा।

### 7. अध्याय-7 : प्रकीर्ण

धारा 35 से 38 -

- धारा-35

समुचित सरकार मार्गदर्शन सिद्धान्त जारी करेगी समयानुसार।

- धारा-36

धारा 13, 18, 19 के दण्डनीय अपराध के लिए अभियोजन हेतु मंजूरी, स्वीकृति का प्रावधान।

- धारा-37

SMC के खिलाफ कोई वाद/विधिक कार्यवाही संबंधी क्रिया

- धारा-38

समुचित सरकार अधिनियम में उपबन्धों के क्रियान्वयन के लिए नियम अधिसूचना जारी करना।

• राजस्थान में RTE act 2009 : राजस्थान RTE act 2009 की धारा 38 का प्रयोग करते हुए तत्कालीन राज्य सरकार के वित व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 29 मार्च, 2011 को अधिसूचना जारी कर के "नि:शुल्क एवं बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2011" के नाम से 1 अप्रैल, 2011 को सम्पूर्ण राजस्थान में लागू किया था।

- इस अधिनियम में 10 अध्याय व 29 धाराओं का उल्लेख है।

### शिक्षक परिवेदन निष्पादन-

- विद्यालय स्तर पर विद्यालय प्रबंध समिति होगी। इसके बाद ब्लॉक स्तर पर समिति होगी जिसमें विकास अधिकारी ब्लॉक शिक्षा अधिकारी व अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी व जिला स्तर पर जिला शिक्षक परिवेदना निस्तारण समिति होगी जिसके 15 सदस्य होते हैं।
- अध्यक्ष - CEO उपाध्यक्ष - ADEO
- राज्य स्तर पर राज्य सलाहकार समिति होगी।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत, किसी भी अध्यापक को निम्न में से किस कार्य के लिए नहीं लगाया जा सकता ?

**(RTET-I लेवल-2012)**

(A) दस वर्ष पश्चात् होने वाली जनगणना में।

(B) आपदा राहत कार्य में।

(C) चुनाव संबंधी कार्य में।

(D) पल्स पोलियो कार्यक्रम में। (D)

❖ बालकों के मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार, 2009 में निम्न में से किस पर ध्यान नहीं दिया गया है ?

**(RTET-II लेवल-2012)**

(A) अध्यापकों को प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करना।

(B) घुमन्तु बालकों के प्रवेश को सुनिश्चित करना।

(C) एकेडेमिक कलेण्डर को निर्धारित करना।

(D) 14 वर्ष के पश्चात् शिक्षा की व्यवस्था। (D)

Scanned with CamScanner

❖ शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 लागू नहीं होता है?

**(छत्तीसगढ़ TET-I लेवल-2011)**

(A) नि:शक्त बच्चे
(B) 6-14 आयु वर्ग के बच्चे
(C) 14-18 आयु वर्ग के बच्चे
(D) बच्चों की नियमित उपस्थिति (C)

❖ शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में एक अध्यापक के लिए न्यूनतम कार्य घण्टे प्रति सप्ताह निर्धारित किये गये हैं ?

**(RTET–II लेवल-2011)**

(A) 40 घंटे
(B) 45 घंटे
(C) 50 घंटे
(D) 55 घंटे (B)

❖ शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में एक अध्यापक को निम्नलिखित में कौन-सा दायित्व पूरा करना होगा?

**(RTET-II लेवल-2011)**

(A) विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित होना होगा।
(B) पाठ्यक्रम का संचालन कर पूरा करना होगा।
(C) संपूर्ण पाठ्यक्रम को निर्धारित समय पर पूरा करना होगा।
(D) इनमें से सभी। (D)

❖ संविधान (86वा) संशोधन अधिनियम 2002 के भाग तृतीय में जिस नई धारा को जोड़कर 6-14 वर्ष आयु वर्ग के सभी बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा को मूलभूत अधिकार बनाने की बातें कही हैं, संविधान की यह धारा है-

**(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, RPSC- 2009 संस्कृत)**

(A) 21 ए
(B) 21 बी
(C) 22 ए
(D) 22 बी (A)

❖ मई 1998 में किसकी स्थापना की गई ?

**(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, RPSC-2009 संस्कृत)**

(A) जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम
(B) राष्ट्रीय अध्यापक परिषद्
(C) राष्ट्रीय बाल भवन
(D) राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (D)

❖ शिक्षा का अधिकार, 2009 में निर्दिष्ट किया गया है कि 1 से 5वीं तक यदि प्रवेश दिये गये विद्यार्थियों की संख्या 200 से अधिक है, तो विद्यालय अध्यापक आवश्यक अनुपात होगा ?

**(RTET–II लेवल-2011)**

(A) 30
(B) 40
(C) 45
(D) 50 (B)

❖ संविधान संशोधन के द्वारा शिक्षा को किस वर्ष समवर्ती सूची में रखा गया ?

**(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, RPSC-2009 संस्कृत)**

(A) 1952
(B) 1976
(C) 1986
(D) 1992 (B)

❖ नामांकन बढ़ाने, उनकी उपस्थिति बनाए रखने एवं बच्चों का पोषण स्तर सुधारने हेतु प्राथमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पोषण सहयोग कार्यक्रम (मध्यान्ह भोजन योजना) कब शुरू किया गया?

**(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, RPSC-2009 संस्कृत)**

(A) 04 जून, 2005
(B) 26 जनवरी, 2008
(C) 2 अक्टूबर, 2005
(D) 15 अगस्त, 1995 (D)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 15 आकलन/मापन/मूल्यांकन

## आकलन (Assessment)

- आकलन मूल्यांकन का ही भाग होता है जिसका सामान्य अर्थ - सूचनाओं को एकत्रित करने की प्रक्रिया है।
- हुबा व फ्रीड - "आकलन सूचना संग्रहण तथा उस पर विचार विमर्श की प्रक्रिया है जिसके विभिन्न माध्यम से यह जान सकते हैं बालक क्या जानता है, समझता है।
- इरविन - आकलन छात्रों के अधिगम व विकास के व्यवस्थित आधार का मूल्यांकन है। यह किसी भी वस्तु को परिभाषित कर चयन, रचना, संग्रहण, विश्लेषण, व्याख्या व सूचनाओं का उपयुक्त प्रयोग कर छात्र विकास व अधिगम को बढ़ाने की प्रक्रिया है।

### आकलन की आवश्यकता–

1. विद्यार्थी के संदर्भ में - रुचि को जानने, आवश्यकता को जानने, योग्यतानुरूप पाठ्यक्रम चयन व वर्गीकरण करने में।
2. शिक्षक - छात्रों की योग्यता, कौशल, अधिगम क्षमता को पहचानने, शिक्षण विधि का चयन करने, कक्षा व्यवस्था में व शिक्षण सामग्री के विकास में/पाठ्यसहगामी क्रियाओं के आयोजन में।

### आकलन का महत्व–

1. शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में।
2. शिक्षक छात्र स्व मूल्यांकन में
3. छात्र प्रगति को जानने में।
4. पृष्ठपोषण प्रदान करने में।

### आकलन के प्रकार–

1. स्वयं आकलन (Self Assesment) - छात्र कक्षाअध्यापन के माध्यम से स्वयं के कार्य का मूल्यांकन करते है।
2. सहपाठी/समूह आकलन (Peer Assesment) - सहपाठी के अधिगम का मूल्यांकन व पृष्ठापोषण।
3. ट्यूटर आकलन (Tutor Assesment) - अध्यापक के द्वारा होने वाला मूल्यांकन

विशेष :- आकलन रचनात्मक व योगात्मक दोनों रूप का हो सकता है।

1. अधिगम के रूप आकलन (Assesment as learning)( अधिगम की तरह आकलन ) :-

- यह छात्रों के द्वारा सीखने की प्रक्रिया के दौरान होता है।
- अधिगम के रूप में आकलन का आशय है छात्र स्वामित्व तथा छात्र-छात्राओं की सोच को आगे बढ़ाने के लिए जिम्मेदारी का निर्वहन करना। (स्वतंत्र व स्वयं मार्गदर्शित विद्यार्थी बनाने में मेटा कोगनिशन कौशल विकास में बल)
- अधिगम के रूप में आकलन में छात्र अधिगम प्रक्रिया के लिए लक्ष्य निर्धारण, प्रगति की समीक्षा व परिणामों को प्रतिबिंबित करना है। स्वयं की शक्तियों की पहचान करवाने के लिए उपयोगी।

2. अधिगम के लिए आकलन (Assesment for Learning) ( अधिगम हेतु आकलन ) :-

- इस आकलन में दो चरण शामिल होते हैं -

1. निदानात्मक आकलन ( कठिनाईयों का पता लगाना )
2. रचनात्मक आकलन (Formative) ( बच्चों की सक्रिय भागेदारी )

- अधिगम के लिए आकलन में पोर्टफोलियों, कार्य प्रगति पत्रक शिक्षक अवलोकन व बातचीत आधारित हो सकता है।
- इसके अगले चरण के लिए अंक, चुनौतियों की पहचान, क्षमता पर जोर व पृष्ठपोषण पर जोर देना है। गलतियों की जांच कर/सुधारने हेतु मार्ग दर्शन
- यह छात्रों को सही निर्देशन व समायोजन करवाने में शिक्षक की सहायता करना।
- इसमें कोई भी ग्रेड या अंक प्रदान नहीं किये जाते है इसमें रिकार्ड व्याख्यात्मक/वर्णनात्मक व एनॉक्डोटल के रूप में रखा जाता है।

3. अधिगम का आकलन (Assessment of Learning) :-

- अधिगम का आकलन इकाई समाप्ति के अन्त में होता है।
- इसमें ग्रेड के द्वारा परिणाम प्रदर्शित किया जाता है। (योगात्मक मूल्यांकन)
- छात्रों की उपलब्धि की सूचना दी जाती है।
- इसके परिणाम की सूचना माता-पिता, अभिभावक, छात्र को सूचित किया जाता है।

## मापन

### मापन–

- मापन एक प्रविधि/क्रिया है। इसमें जिसका मापन किया जाता है उस पर कोई मूल्य नहीं रखा जाता है।
- मापन के अर्न्तगत विभिन्न निरीक्षण वस्तुओं एवं घटनाओं का अंकात्मक रूप में वर्णन किया जाता है।
- मापन के बिना वैज्ञानिक प्रगति संभव नहीं है।
- मापन शब्द का प्रयोग सामान्यत: विद्यार्थियों के अंकीय प्रदर्शन से होता है।
- दूसरे शब्दों में किसी वस्तु/व्यक्ति के गुणों तथा विशेषताओं को परिमाणात्मक रूप में प्रकट करना ही मापन कहलाता है।
- इस प्रकार मूल्यांकन का वह भाग है जो प्रतिशत मात्रा अंकों, मध्यमान व औसत आदि के द्वारा किया जाता है।
- मापन किसी वस्तु को मात्रा के रूप में प्रकट करने की प्रक्रिया है।
- इस प्रकार किसी वस्तु का परिमाषात्मक वर्णन करना ही मापन कहलाता है।

### परिभाषाएँ

- ई.ए. मील - "मापन का उद्देश्य व्यक्ति को एक संतुलित व्यक्तित्व प्रदान करना है ताकि वह समाज द्वारा प्रदत्त उत्तरदायित्वों को बखूबी निभा सके।"
- थार्नडाइक - "जो कुछ भी अस्तित्व में है। उसका अस्तित्व किसी न किसी मात्रा में होता है और उसका मापन किया जा सकता है।
- मोरेडॉक - "मापन के द्वारा किसी तथ्य के विभिन्न आयामों को प्रतीक प्रदान करना ही मापन कहलाता है।"

Scanned with CamScanner

### मापन क्या है?

- स्टीवेन्स के अनुसार - निश्चित स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया मापन कहलाती है।

### मापन के कार्य–

1. वस्तु को संख्या प्रदान करना।
2. घटना को संख्या प्रदान करना।
3. नियमानुसार संख्या प्रदान करना।

### मापनी के प्रकार–

1. शाब्दिक स्तर मापनी - निम्न स्तर वस्तुओं को गुण व विशेषताओं के आधार पर अलग समूह में रख देना।
2. क्रमिक स्तर मापनी - वस्तुओं को उच्चतम से निम्नतम के क्रम में रख देना।
3. अन्तराल मापनी - वस्तुओं के मध्य की दूरी को अंको के माध्यम से रख देना।
4. अनुपात मापनी - सर्वोच्च स्तर जैसे - मीटर, मिलीमीटर, किलोमीटर।

### मापन के कार्य–

(1) साफल्य - छात्रों के वर्गीकरण, चयन, प्रगति के लिए

(2) निदान - कमजोरियाँ ज्ञान करके शिक्षण की व्यवस्था

(3) शोध - शोध कार्यों में योगदान।

## मूल्यांकन

### मूल्यांकन का अर्थ–

- मूल्यांकन एक विस्तृत एवं निरन्तर चलने वाली वह प्रक्रिया है जहाँ किसी मापन की उपयोगिता के सम्बन्ध में निर्णय या मूल्य प्रदान किया जाता है। उदाहरणार्थ - किसी अमुक बुद्धि परीक्षण पर बालक द्वारा 70 बुद्धि लब्धि बालक को मन्द बुद्धि बालक की श्रेणी में रखना मूल्यांकन होगा।

### मूल्यांकन प्रक्रिया–

- व्यक्ति की उपलब्धि का मात्रात्मक वर्णन + व्यक्ति की योग्यताओं का गुणात्मक वर्णन = व्यक्ति की उपलब्धि एवं योग्यताओं का मूल्य निर्धारण।

### मापन एवं मूल्यांकन - एक तुलना :-

| मापन | मूल्यांकन |
|---|---|
| 1. क्षेत्र संकुचित | 1. क्षेत्र व्यापक |
| 2. मात्रात्मक | 2. मात्रात्मक, गुणात्मक दोनों |
| 3. मूल्यांकन से पहले होता है। | मापन के बाद |
| 4. निर्धारित समय पर | 4. निरन्तर |

### मूल्यांकन की परिभाषा

- रेमर्स एवं गेज के शब्दों में - "मूल्यांकन के अन्तर्गत व्यक्ति या समाज दोनों की दृष्टि से जो उत्तम एवं वांछनीय होता है, उसका ही प्रयोग किया जाता है।"
- डांडेकर के अनुसार - "शैक्षिक उद्देश्यों को बालक द्वारा किस सीमा तक प्राप्त किया गया है, यह जानने की व्यवस्थित प्रक्रिया को ही मूल्यांकन की संज्ञा दी जाती है।"
- बी.एस. ब्लूम - "मूल्यांकन योग्यता नियंत्रण की व्यवस्था है, जिसमें शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता की जांच की जाती है।"
- कोठारी आयोग - "मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है। जो शिक्षा का अभिन्न अंग है तथा शिक्षण उद्देश्यों के साथ घनिष्ठ संबंध है।"
- वेस्ले - "मूल्यांकन एक समावेशित धारणा है, जो इच्छित परिणामों के गुण, महत्व, प्रभावशीलता का निर्णय लेने के लिए सभी प्रकार के साधनों की ओर संकेत करता है।"
- मोफात - "मूल्यांकन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों के औपचारिक, शैक्षणिक उपलब्धियों की उपेक्षा करती है।"
- क्लार व स्टार - "मूल्यांकन वह निर्णय या विश्लेषण है जो विद्यार्थी के कार्यो से प्राप्त सूचनाओं से निकाला जाता है।"
- राइस स्टोन - "मूल्यांकन वह नवीन प्राविधिक पद है जो मापन के व्यापक प्रत्यय को प्रस्तुत करता है।"
- रेमर्ल व गेज - "मूल्यांकन के अन्दर व्यक्ति/समाज/दोनों ही दृष्टि से जो उत्तम/वांछनीय है, उसको मानकर चला जाता है।"

### मूल्यांकन के उद्देश्य–

- यह शिक्षा के विस्तृत उद्देश्यों को स्पष्ट करता है।
- यह पाठ्यक्रम या विषय-वस्तु में परिमार्जन कर उनमें सुधार लाता है।
- यह विभिन्न प्रकार की शिक्षण पद्धतियों एवं विधियों का प्रयोग कर शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाता है।
- यह वैज्ञानिक ढंग से शैक्षिक उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, कक्षा, अध्यापन एवं परीक्षण पद्धतियों को समन्वित करता है। इस प्रकार यह शिक्षण प्रक्रिया की प्रत्येक स्तर पर जांच भी करता है।
- यह समस्त विद्यालय कार्यक्रम का मूल्यांकन करता है, उसकी विशेषताओं एवं कमियों की ओर इंगित कर, कमियों को दूर करता हैं। इसके माध्यम से दो या अनेक विद्यालयों के कार्यक्रमों की तुलना की जा सकती है।
- मूल्यांकन न केवल बालक का अध्ययन करता है, बल्कि यह शिक्षक का भी मूल्यांकन करता है। अधिगम अनुभवों को प्रदान करने में, निर्देश एवं कक्षाध्यापन की क्रियाओं को प्रभावशाली बनाने में शिक्षक कहाँ तक दक्ष है इसका भी मूल्यांकन किया जाता है।
- इसके द्वारा बालक को सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- यह बालक शिक्षक तथा प्रधानाचार्य, विद्यालय-प्रबन्धक, शैक्षिक अधिकारी तथा सरकार सभी को सहायता प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप ही गूढ़ शैक्षिक निर्णय लिया जाता है।

Scanned with CamScanner

### शैक्षिक मूल्यांकन की प्रक्रिया–

✦ शैक्षिक मूल्यांकन एक जटिल प्रक्रिया है जिसके तीन महत्वपूर्ण बिन्दु होते हैं:–
(1) शिक्षण उद्देश्य (2) अधिगम अनुभव (3) मूल्यांकन के उपकरण या

### शैक्षिक मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान–

1. **उद्देश्यों का निर्धारण एवं परिभाषा:**– मूल्यांकन के प्रथम चरण में सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों को निर्धारित एवं परिभाषित किया जाता है।
2. **अधिगम अनुभवों को प्रदान करना:**– शैक्षिक उद्देश्यों को निश्चित करने के पश्चात एक ऐसी स्थिति का निर्माण किया जाता है, जिसके अर्न्तगत बालक को उपयुक्त शिक्षण-अनुभव प्राप्त हो सके। यहां ऐसे साधनों, विषय-वस्तु तथा शैक्षणिक परिस्थितियों का प्रयोग किया जाता है जिनसे शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति सरलतापूर्वक हो सके। मूल्यांकन के इस चरण को दो उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता हैं:–

(a) **विषय-वस्तु का चयन** – मूल्यांकन के इस चरण में सर्वप्रथम विषय-वस्तु का चयन आवश्यक होता है जिसके द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति होनी है।

(b) **उपयुक्त अधिगम क्रियाओं का चयन** – यहां शिक्षक का मुख्य कार्य शैक्षिक उद्देश्यों एवं पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुये उपयुक्त अधिगम क्रियाओं को प्रदान करना होता है।

3. **व्यवहार परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन करना:**– यहां विभिन्न मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक परीक्षणों तथा मूल्यांकन पद्धतियों लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा, निरीक्षण विधि आदि के माध्यम से शिक्षक यह मूल्यांकित करता है कि बालक के व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ है।

✦ **NCERT (राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद)** की पुस्तक Concept of Evaluation (मूल्यांकन की अवधारणा) में मूल्यांकन प्रक्रिया के निम्न तीन बिन्दुओं पर विचार व्यक्त किया है –

1. उद्देश्य की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है।
2. कक्षा में दिये जाने वाले अनुभव किस सीमा तक प्रभावोत्पाद रहे हैं।
3. शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति कितने अच्छे ढंग से हुई है।

इस प्रकार मूल्यांकन की प्रक्रिया को निम्न रेखाचित्र के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

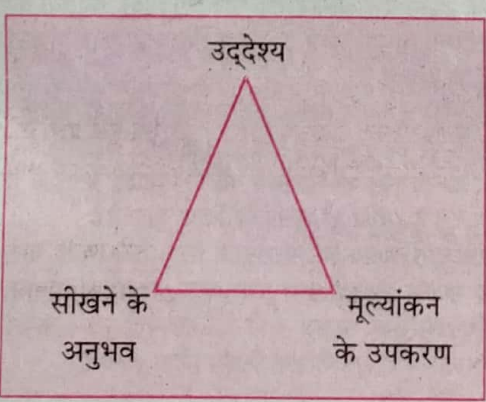


मूल्यांकन की निम्न तीन अनिवार्य विशेषताएं होनी चाहिए –

1. वैद्यता/प्रमाणिकता
2. विश्वसनियता
3. वस्तुनिष्ठता

1. **वैद्यता/प्रमाणिकता** – यहाँ वैद्यता का अभिप्राय है कि मूल्यांकन निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित होना चाहिए। मूल्यांकन उद्देश्यों के अनुरूप या उद्देश्यों की पूर्ति में सक्षम होना चाहिए।
2. **विश्वसनीयता** – शाब्दिक अर्थ विश्वास करने योग्य अर्थात् मूल्यांकन में प्राप्त परिणामों में अन्तर नहीं होना चाहिए, एकरूपता होनी चाहिए। मूल्यांकन की उत्तर-पुस्तिका की जाँच बार-बार करने पर भी प्राप्तांकों में अन्तर नहीं होना चाहिए।
3. **वस्तुनिष्ठता** – शिक्षण में वस्तुनिष्ठता का प्रयोग दो अर्थो में किया जाता है –
   - उत्तरपुस्तिका की जाँच पर छात्र या अध्यापक के व्यक्तित्व का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।
   - प्रश्न बहुविकल्पी होने चाहिए तथा उनमें से एक ही विकल्प सही होना चाहिए।
4. **विभेदीकरण** – मूल्यांकन पत्र का निर्माण छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।
5. **समग्रता** – मूल्यांकन पत्र में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से प्रश्न शामिल होने चाहिए।
6. **उद्देश्यनिष्ठता** – मूल्यांकन पत्र निर्धारित उद्देश्यों पर आधारित होना चाहिए।
7. **मितव्ययता** – मूल्यांकन प्रक्रिया में धन व समय कम खर्च होना चाहिए।
8. **व्यवहारिकता** – मूल्यांकन औपचारिक शिक्षा प्रक्रिया पर आधारित होनी चाहिए।
9. **मानकीकृत** – मूल्यांकन में वैज्ञानिकता का समावेश होना चाहिए।
10. **मापक** – मूल्यांकन में निश्चित मापक होना चाहिए।
    **जैसे** – प्रथम श्रेणी – 60 प्रतिशत से अधिक प्राप्तांक
    द्वितीय श्रेणी – 45 प्रतिशत से अधिक प्राप्तांक।
11. **व्यापकता :**– मूल्यांकन में सम्पूर्ण पाठ्यपुस्तक का समावेश होना चाहिए। साथ ही उसमें बालक की विभिन्न योग्यताओं की जाँच की क्षमता होनी चाहिए।
12. **तारतम्यता/कर्मबद्धता :**– मूल्यांकन में विषयवस्तु की क्रमबद्धता का ध्यान रखा जाना चाहिए।
    मूल्यांकन में बालक की विभिन्न योग्यताओं की क्रमिक जांच की जानी चाहिए।

### मूल्यांकन के उपकरण एवं प्रविधियाँ–

1. **परीक्षण प्रक्रियाएँ** – परीक्षण के द्वारा एक समय में बालक के किसी निश्चित व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। ये लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षण, प्रयोगात्मक परीक्षा, निष्पादन या बालक द्वारा निर्मित कृतियों के माध्यम से दिये जाते हैं।
2. **स्वयं आलेख प्रविधियाँ** – प्रत्येक बालक अपने सम्बन्ध में अनेक सूचनाएं व अनुभव रखता है। वह अपने विषय में क्या और कैसे

Scanned with CamScanner

सोचता है, कौन-सी बातें उसे प्रसन्न रखती हैं तथा कौन-सी पीड़ा देती हैं। ये सूचनाएं विभिन्न उपकरणों - प्रश्नावली, आत्मकथा, व्यक्तिगत डायरी, वार्तालाप, प्रत्यक्ष पूछे गये प्रश्न तथा साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित की जा सकती है।

3. **निरीक्षणात्मक विधियाँ** - बालक के सम्बन्ध में उसके निरीक्षणों एवं अनुभवों के आधार पर भी सूचनाएं एकत्रित की जा सकती हैं। निरीक्षण की प्रमुख विधियाँ हैं - वृतान्त अभिलेख, जांच सूची निर्धारण-मापनी, समाजमितीय विधि तथा अनुमान कौन विधि है।
4. **प्रक्षेपी मापक** - शिक्षा में प्रयोग आने वाले प्रक्षेपी मापक है - शब्द साहचर्य परीक्षण, वाक्य पूर्ति परीक्षण, प्रसंगात्मक बोध परीक्षण, रोर्शा स्याही के धब्बों वाला परीक्षण आदि।

## मूल्यांकन की प्रकृति-

1. सतत प्रक्रिया
2. निर्णयात्मक प्रक्रिया
3. उद्देश्य निष्ठ प्रक्रिया
4. शिक्षार्थी केन्द्रित प्रक्रिया
5. व्यापक प्रक्रिया।

## मूल्यांकन के गुण-

मूल्यांकन एक सतत व उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन द्वारा संबंधित विषय की सूचना या जानकारी प्राप्त की जाती है। प्राप्त सूचनाओं के आधार पर अवधारणा बनायी जाती है तथा उसके आधार पर निर्णय लिया जाता है। इस प्रकार मूल्यांकन के बिन्दुओं को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है -

1. **सूचना संबंधी सूचना** - मूल्यांकन के सूचना संबंधी गुणों में पहले से प्राप्त सूचना, नवीन सूचना के स्रोत, उपकरण व युक्तियाँ शमिल होती हैं। इसमें सूचनाएं किस प्रकार से एकत्रित करती हैं। इसकी जानकारी भी शामिल होती है।
2. **मत निर्धारण संबंधी गुण** - इसमें सूचना का विश्लेषण करना व सूचना को लिखकर रिपोर्ट तैयार करना शामिल है।
3. **निर्णय संबंधी गुण** - इसमें उद्देश्यों का स्पष्टीकरण कार्य, करने हेतु उचित मार्ग को चुनना तथा मूल्यांकन के विभिन्न सोपानों पर निर्णय लेने पर सहयोग करना शामिल है। निर्णय संबंधी प्रक्रिया जिस विधि से होती है उसे मूल्यांकन विधि कहते हैं।

## मूल्यांकन के मुख्य प्रकार-

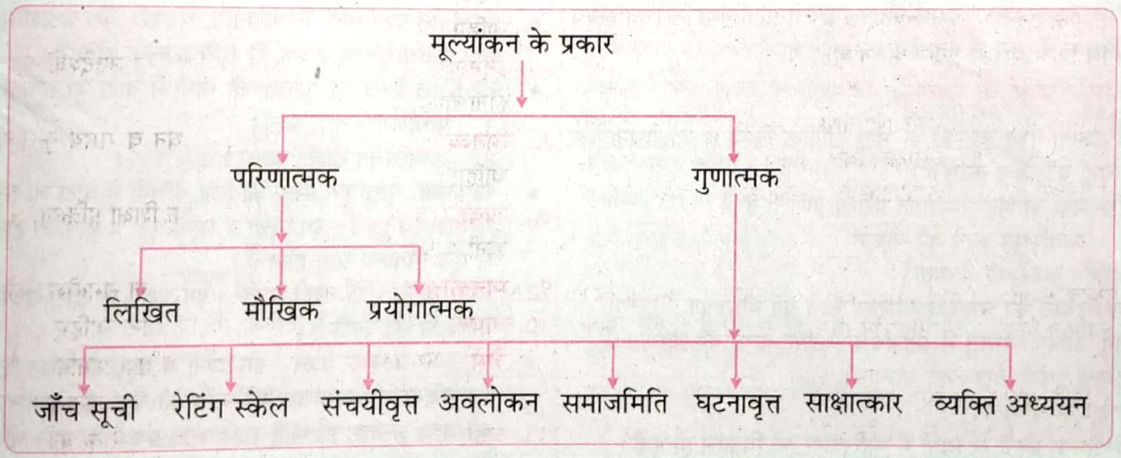


**मूल्यांकन प्रविधियों को सामान्यतः दो भागों में बांटा जा सकता है -**

(i) बुद्धि परीक्षण
(ii) व्यक्तित्व परीक्षण
(iii) अभिरुचि परीक्षण
(iv) अभिवृत्ति परीक्षण
(v) निष्पादन परीक्षण

(iv) विधि पड़ताल विधि
(vii) संचयी अभिलेख विधि
(viii) व्यक्ति इतिहास विधि
(ix) समाजमिति विधि
(x) घटना वृतांत विधि
(xi) रेटिंग स्केल/स्तर माप विधि
(i) विद्यालय अभिलेख विधि
(xi) आत्मकथा विधि
(xii) जाँच सूची
(xiii) आकस्मिक अभिलेख विधि

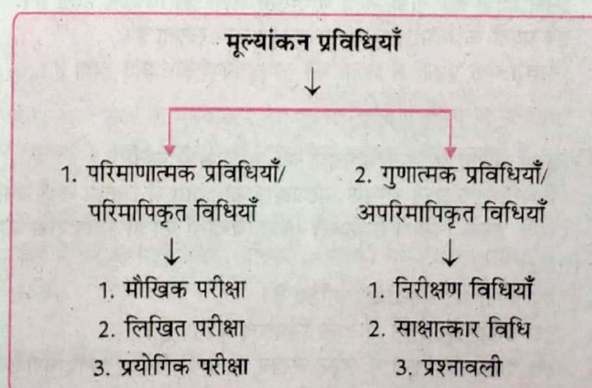

1. **परिमाणात्मक प्रविधियाँ :-** परिमाणात्मक मूल्यांकन अधिक उपयोगी वैध व विश्वसनिय होता है।

यह तीन प्रकार का होता है –

**(a) मौखिक परीक्षा :-**

- मौखिक परीक्षा प्रणाली का सूत्रपात – यूनानी दार्शनिक सुकरात द्वारा
- सर्वप्रथम मौखिक परीक्षा का प्रयोग – इलेडाइटस
- मौखिक परीक्षा के माध्यम से छात्रों की प्रत्यास्मरण, अभिव्यक्ति चिन्तन, विश्लेषण उच्चारण व पढ़ने की योग्यताओं की जाँच की जाती है।
- मौखिक परीक्षा का आयोजन एक विषय विशेषज्ञ द्वारा छात्रों के विषय के विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान की जाँच करने हेतु किया जाता है।

**(b) लिखित परीक्षा** – इन परीक्षाओं में बालक अपना प्रतिउत्तर लिखित रूप में देता है।

- लिखित परीक्षा में प्रश्न सामान्यत: 4 प्रकार के होते हैं –
  (i) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
  (ii) अतिलघुरात्मक प्रश्न
  (iii) लघुरात्मक प्रश्न
  (iv) निबंधात्मक प्रश्न
- लेकिन लिखित परीक्षा को दो भागों में बांटा जा सकता है –
  (i) निबंधात्मक प्रश्न
  (ii) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**(c) निबंधात्मक प्रश्न** – इसमें बालक अपनी प्रतिक्रिया निश्चित समय में निंबन्ध के रूप में देता है।

### निबंधात्मक प्रश्न के गुण–

- निबंधात्मक प्रश्न बालकों के भाव तार्किक क्रिया व आलोचनात्मक योग्यता की जाँच करते हैं।
- निबंधात्मक परीक्षा परम्परागत परीक्षा प्रणाली है।
- जैसे – व्यवस्थित करने की योग्यता।
- मूल्यांकन करने की योग्यता।
- मुख्य विचारों का चयन व व्याख्या करने की योग्यता।
- अलग-अलग विचारों में सहसंबंध स्थापित करने की योग्यता।
- कुशलता पूर्वक लेखन की योग्यता।
- सृजनात्मक योग्यता।
- निबंधात्मक प्रश्नों से छात्रों में मौलिकता का विकास होता है।
- इनसे छात्रों में विचार अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास होता है।
- इनसे छात्रों की भाषा शैली व लेखन शैली का विकास होता है।
- इन प्रश्नों के निर्माण में समय व धन कम लगता है।
- निंबंधात्मक प्रश्नों से छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त होता है।

### निबंधात्मक प्रश्नों के दोष–

1. इनमें वैधता व विश्वसनियता की कमी पायी जाती है।
2. निबंधात्मक प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर नहीं बनाये जाते, इनके निर्माण में केवल मुख्य बिन्दुओं का ही ध्यान रखा जाता है।
3. इन प्रश्नों का मूल्यांकन कठिन है।
4. इस प्रकार के प्रश्नों में अंक निर्धारण कठिन है।
5. इस प्रकार के प्रश्नों में स्पष्ट लेखन, भाषा विविधता आदि गुण अंक निर्धारण को प्रभावित करते हैं।
6. इन प्रश्नों से रहने की प्रवृति को प्रोत्साहन मिलता है।
7. इन प्रश्नों को उद्देश्य बालक को केवल एक कक्षा में उत्तीर्ण करना होता है।
8. इन प्रश्नों को संबंध केवल पुस्तकीय ज्ञान से होता है।
9. इन प्रश्नों मे छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नता का ध्यान नहीं रखा जाता है।

### निबंधात्मक प्रश्नों के निर्माण में रखी जाने वाली सावधानियाँ

1. निबंधात्मक प्रश्नों का प्रयोग केवल उस गुण के लिए किया जाए जिसका वह मापन कर सकता है।
2. निंबंधात्मक प्रश्नों द्वारा जिस क्षेत्र को देखा जाना है, उसे निर्धारित कर देना चाहिए।
3. प्रश्न मुख्य उद्देश्य से संबंधित होने चाहिए।
4. प्रत्यास्मरण प्रश्न नहीं होने चाहिए।
5. प्रश्न इस प्रकार के होने चाहिए कि उनसे छात्रों की सृजनात्मक योग्यता का मूल्यांकन किया जा सके।
6. सामान्यत: अधिक निंबंधात्मक प्रश्नों का चयन किया जाना चाहिए।
7. निंबधात्मक प्रश्नों के उत्तर के लिए छात्रों को दिए जाने वाले निर्देशन स्पष्ट व निश्चित होने चाहिए।

### वस्तुनिष्ठ परीक्षा–

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का कोई भी व्यक्ति मूल्यांकन करे ओर कभी भी मूल्यांकन करे, लेकिन अंक हमेशा समान प्राप्त होते हैं।

- वस्तुनिष्ठ प्रश्न सत्य, विश्वसनीय, व्यापक, वैध व प्रशासन में सरल होते है तथा इनका अंकन भी सुविधाजनक होता है।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को मुख्यत: दो भागों में बांटा जा सकता है।
  1. प्रत्यास्मरण वाले प्रश्न।
  2. प्रत्याभिजन वाले। पहचान वाले प्रश्न।
- सामान्यत: वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को निम्न श्रेणियों में बांटा जा सकता है।

1. **विकल्पीय प्रश्न** – इन प्रश्नों में सामान्यत: 4 विकल्प होते है जिनमें से एक विकल्प सही होता है।
2. **रिक्त स्थान पूर्ति वाले प्रश्न** – इन प्रश्नों के द्वारा तथ्यात्मक ज्ञान की जांच की जाती है।
3. **एकान्तर प्रत्युत्तर प्रश्न** – इन प्रश्नों में बहुत से कथन दिये जाते है। जिनकी सत्यता/असत्यता की जांच की जाती है। इसलिए इन प्रश्नों को सत्य/असत्य, हाँ/नहीं, सही/गलत प्रकार के प्रश्न भी कहा जाता है।
4. **सजातीय प्रश्न** – इन प्रश्नों में जो संबंध एक दूसरे से होता है। इस संबंध के आधार पर सही विकल्प का चयन किया जाता है।
5. **विजातीय प्रश्न** – इन प्रश्नों में असंगत/अलग/भिन्न को छांटना होता है।
6. **मिलान मद प्रश्न** – इन प्रश्नों में दो स्तम्भ होते हैं। एक स्तम्भ में दिए गए प्रश्नों को दूसरे स्तम्भ में दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प से मिलाना होता है।

✦ **वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के गुण :-**

1. ये वैध व विश्वसनीय होते हैं।
2. इन प्रश्नों से मूल्यांकन में निरपेक्षता बनी रहती है।
3. ये विषय वस्तु के सम्पूर्ण ज्ञान पर आधारित होते हैं।
4. ये प्रश्न बालकों की रटने की प्रवृति के विरोधी होते हैं।
5. इन प्रश्नों से बालकों की मानसिक शक्तियों का विकास होता है।
6. इन प्रश्नों के उत्तर निश्चित होते हैं।

Scanned with CamScanner

7. इन प्रश्नों के निर्माण में छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नता का ध्यान रखा जाता है।

✦ **वस्तुनिष्ठ प्रश्ना के दोष :-**

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न पत्र के निर्माण में समय व धन अधिक खर्च होता है।
2. वतुनिष्ठ प्रश्नों का निर्माण बिना प्रशिक्षण के सम्भव नहीं है।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का उत्तर देते हुए छात्रों को विचार अभिव्यक्ति का अवसर नहीं मिलता।
4. वस्तुनिष्ठ परीक्षा से छात्रों की भाषा शैली व लेखन शैली का विकास नहीं हो पाता।
5. वस्तुनिष्ठ परीक्षा से नकल करने की प्रवृत्ति बढ़ती है।
6. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में मौलिकता का अभाव होता है।
7. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के जवाब बालक अनुमान के आधार पर भी दे सकता है।

✦ **वस्तुनिष्ठ व निबंधात्मक प्रश्नों परीक्षा में अन्तर :-**

| | वस्तुनिष्ठ परीक्षा | निबंधात्मक परीक्षा |
|---|---|---|
| 1. | प्रश्नों की संख्या अधिक होती है। (100 से ऊपर) | प्रश्नों की संख्या कम होती है। (5-10) |
| 2. | उत्तर निश्चित होते है। | उत्तर निश्चित नहीं होते है। |
| 3. | मानसिक शक्तियों का विकास होता है। | रटने की प्रवृत्ति बढ़ती है। |
| 4. | सम्पूर्ण विषय वस्तु पर आधारित होते है। | ये केवल मुख्य बिन्दुओं पर आधारित होते है। |
| 5. | इनमें भाषा शैली व लेखन शैली का अभाव होता है। | इनमें भाषा शैली व लेखन शैली का विकास होता है। |
| 6. | मूल्यांकन निरपेक्ष होता है। | मूल्यांकन में निरपेक्षता का अभाव होता है। |
| 7. | इनमें वैधता व विश्वसनीयता पायी जाती है। | इनमें वैधता व विश्वसनीयता का अभाव होता है। |
| 8. | इनके निर्माण में समय व धन अधिक लगता है। | निर्माण में समय व धन कम लगता है। |
| 9. | इनका अंकन आसान है, उत्तर कुंजी की सहायता से कोई भी कर सकता है। | इनका अंकन कठिन है। इनका अंकन विषय का स्वामित्व होने पर ही संभव है। |
| 10. | इन्हें अनुमान के आधार पर सही किया जा सकता है। | इनमें अनुमान का कोई स्थान नहीं होता। |
| 11. | इन पर सुलेखा व भाषा का प्रभाव नहीं पड़ता | इनमें भाषा व सुलेख अच्छा होना आवश्यक है। क्योंकि इनका भी मापन होता है। |
| 12. | इनके निर्माण के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। | प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। |
| 13. | इनमें स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए स्थान नहीं होता। | इनमें स्वतंत्र अभिव्यक्ति सम्भव है। |

**नोट :-** सर्वप्रथम वस्तुनिष्ठ परीक्षण का निमाण - 1845 ई. में होरासमैन द्वारा

- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के निर्माण में सर्वाधिक योगदान जे.एस. राईस का रहा है।

3. **प्रायोगिक परीक्षा :-** प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन किसी विषय के व्यवहारिक ज्ञान के मूल्यांकन हेतु किया जाता है। **जैसे -** रसायन विज्ञान, भौतिक शास्त्र, जीव विज्ञान, भूगोल, ग्रह विज्ञान, कम्प्यूटर आदि विषयों की प्रायोगिक परीक्षा लेकर छात्रों में तत्संबंधी कौशल को परखा जाता है।

2. **गुणात्मक प्रविधिया/अप्रमाणिकृत विधियाँ :-** गुणात्मक प्रविधियों का उद्देश्य छात्रों में निरन्तर सुधार करना होता है।

- गुणात्मक प्रविधियों में छात्र की उपलब्धि/उनके विकास को संख्यात्मक रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि छात्रों को उनकी वास्तविक स्थिति से ऊंचा उठाने का प्रयास किया जाता है।

1. **निरीक्षण -** यह एक प्राचीन विधि है।

- इसका उपयोग सामान्यत: छोटे बालकों के व्यवहार व योग्यता के मूल्यांकन में किया जाता है।
- भारत में प्राचीन काल से ही निरीक्षण द्वारा मूल्यांकन किया जाता रहा है।
- शिशु के व्यवहार का निरीक्षण करना।

Scanned with CamScanner

- चिकित्सक द्वारा रोगी का निरन्तर अवलोकन करना।

2. **साक्षात्कार** - यह मूलभूत रूप से निश्चित उद्देश्यों के आधार पर आमने सामने बैठकर किया जाने वाला वार्तालाप है।
- इसमें विद्यार्थी अध्यापक द्वारा पूछे जाने पर अपनी पूर्व घटनाओं भावनाओं व प्रतिक्रियाओं को प्रस्तुत करता है।
- इसमें अध्यापक वैज्ञानिक दृष्टि से उसे सुनता है, तथा बालक को व्यवहार मूलभूत गुणों व क्रियाओं को अभिप्रेरित करने/मार्गदर्शन देने के लिए तैयार रहता है।

3. **प्रश्नावली** - प्रश्नावली प्रश्नों की एक लम्बी सूची होती है।
- प्रश्नावली में विद्यार्थी से सूचनाएं एकत्रित करने के लिए दिए गए उत्तरों में से किसी एक विकल्प का चयन करना होता है।
- जबकि स्वतंत्र प्रश्नावली में विद्यार्थी अनुक्रिया के लिए स्वतंत्र होता है।

4. **जाँच सूची** - इसका प्रयोग बालकों की अभिरुचि/अभिवृति/भावनात्मक पक्ष की जांच के लिए किया जाता है।
- जाँच सूची में कुछ कथन दिए होते है, छात्रों को उन कथनों के संबंध में हाँ/ना में उत्तर देना होता है।

5. **संचर्या अभिलेख** -
- इसके अर्न्तगत बालक की शैक्षिक प्रगति व अन्य सह-शैक्षिक अभिलेख आते हैं। जिनमें बालक को कई वर्षो तक की लाभदायक व विश्वसनीय सूचनाएँ संग्रहीत होती है।
- इनका उपयोग बालक के विद्यालय में रहते हुए व विद्यालय छोड़ते समय उसकी विभिन्न समस्याओं का निदान करने में किया जाता है।

6. **रेटिंग स्केल/निर्धारक मापदण्ड विधि** -
- यह वह विधि होती है, जिसके द्वारा किसी विशेष लक्षण के बारे में मत की अभिव्यक्ति प्रणालीबद्ध रूप से की जाती है।
- इस विधि का उपयोग अपेक्षाकृत उच्च स्तर की कक्षाओं के लिए किया जाता है।

7. **घटना वृत** -
- इसके अन्तर्गत विद्यार्थी द्वारा लिखित डायरी तथा अध्यापकों द्वारा तैयार किये गए वृत्त तथा संचित अभिलेख आते हैं।
- इस विधि द्वारा बालक की वास्तविक प्रवृत्ति का मूल्यांकन किया जा सकता है। जिसके आधार पर अध्यापक बालक की प्रकृति के अनुसार विभिन्न कार्यो को करने के लिए प्रेरित करता है।

8. **बालकों द्वारा उत्पादित वस्तुएं** - छात्रों द्वारा बनाये गए चार्ट, चित्र मॉडल व अन्य आशुरचित उपकरण बालक की रूचि, अभिरूचि व योग्यता के सही मूल्यांकन में सहयोगी होते हैं।

### मूल्यांकन की उपयोपिता एवं महत्त्व-

- शैक्षिक मूल्यांकन शिक्षा प्रक्रिया से सम्बन्धित समस्त वर्गों - बालक, शिक्षक, निर्देशनकर्ताओं, शोधकर्ता, शैक्षिक अधिकारी आदि के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हो चुका है। यह समस्त शैक्षिक प्रक्रिया, क्रियाओं, सीखने की स्थितियों, पाठ्यक्रम, बालक एवं शिक्षक सभी का प्रत्येक स्तर पर निरन्तर मूल्यांकन करता है।
- विद्यालय की गतिविधियों में सुधार लाने के लिए मूल्यांकन अत्यन्त उपयोगी है।
- यह पाठ्यक्रम निर्माण, उपयुक्त परीक्षा प्रणाली, व्यक्तिगत निर्देशन तथा सहगामी क्रियाओं आदि की उपयुक्त योजना बनाने में मूल्यांकन सुदृढ़ पृष्ठभूमि प्रदान कर उनमें अपेक्षित सुधार लाने के लिए प्रेरणा प्रदान करता है।
- इसके द्वारा शिक्षक बालक की विभिन्न विषयों तथा अन्य पाठ्यक्रमीय क्रियाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हैं।
- छात्रों की कठिनाइयों तथा प्रगति का विश्लेषण कर अभिभावकों को अवगत कराते हैं। यह छात्रों की समस्याएँ, वह किस विषय में कमजोर है, कौन-सी बातें उसकी प्रगति में बाधक है तथा उन्हें किस प्रकार दूर किया जावे सभी का हल मूल्यांकन द्वारा ही सम्भव है।

### आंकलन/मापन/मूल्यांकन/विशेष तथ्य-
### मूल्यांकन परिवर्तन के क्षेत्र-

1. ज्ञानात्मक
2. भावात्मक व क्रियात्मक (इसके लिए ब्लूम टेक्सोनामी देखे)

### मूल्यांकन के प्रकार (सामान्य)-

1. **निर्माणात्मक/रचनात्मक मूल्यांकन (Formative)** - यह मूल्यांकन शिक्षण अधिगम के दौरान होता है। पढ़ाते समय की बालकों कितना ग्रहण किया है। अध्याय के बीच-बीच में किया जाता है।
2. **योगात्मक/संकलनात्मक/अंतिम मूल्यांकन (Summative Evaluation)** - सत्र के अन्त में होने वाला जिसके आधार पर बच्चों को ग्रेड प्रदान की जाती है।
3. **निदानात्मक मूल्यांकन (Diagrostic Evaluation)** - बच्चों की कठिनाई व असफलता के कारण ढूढने हेतु किया जाने वाला मूल्यांकन।
4. **सतत व व्यापक मूल्यांकन (CCG)** - वर्णन आगे......

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ निम्नलिखित में से कौनसा वस्तुनिष्ठ प्रश्न है? **(CTET-I लेवल-2012)**

(A) लघुत्तरात्मक प्रश्न (B) मुक्त उत्तर वाला प्रश्न
(C) सत्य या असत्य (D) निबंधात्मक प्रश्न (C)

❖ एक शिक्षिका स्वयं कभी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती, वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए, समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है यह उपागम-........ के सिद्धांत पर आधारित है ? **(CTET-I लेवल-2012)**

(A) अनुदेशात्मक सामग्री के उचित संगठन
(B) अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना
(C) सीखने की तत्परता
(D) सक्रिय भागीदारिता (D)

❖ मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए- **(CTET-II लेवल-2011)**

(A) शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ निकालना
(B) शिक्षार्थियों की उपलब्धि को मापना

Scanned with CamScanner

(C) यह निर्णय लेना कि क्या विद्यार्थी को अगली कक्षा में प्रोन्नत किया जाना चाहिए
(D) सीखने में होने वाली कमियों का निदान एवं उपचार करना (D)

❖ बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए ?
(उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011)
(A) बोर्ड परीक्षा द्वारा
(B) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा
(C) गृह परीक्षण द्वारा
(D) लिखित एवं मौखिक परीक्षा द्वारा (B)

❖ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में, व्यापक मूल्यांकन शब्दावली से तात्पर्य है-
(उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011)
(A) सभी विषयों का मूल्यांकन
(B) सह शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन
(C) शैक्षिक एवं सह शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन
(D) शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन (C)

❖ एक प्रमापीकृत परीक्षण में होता है ?
(सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011)
(A) विश्वसनीयता एवं वैधता
(B) निबंधात्मक प्रश्न
(C) मौखिक प्रश्न
(D) प्रायोगिक प्रश्न (A)

❖ वे प्रश्न जिनके उत्तर हेतु हाँ/नहीं में से एक का चयन करना हो, उन्हें वर्गीकृत किया जा सकता है-
(III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012, RPSC-2009)
(A) वस्तुनिष्ठ (B) अतिलघूत्तरात्मक
(C) लघूत्तरात्मक (D) वैध प्रकार (A)

❖ राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा, 2005 में सामाजिक अध्ययन में निम्न में से किन मुद्दों को शामिल करने की अनुशंसा की गई ?
(सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011)
(A) केवल लैंगिक मुद्दों को
(B) केवल किशोरों के मुद्दे
(C) लैंगिक व किशोर दोनों मुद्दों पर
(D) सभी स्तरों के विद्यार्थियों के लैंगिक एवं स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को (D)

❖ किसी परीक्षण की विश्वसनीयता जितनी अधिक होती है, उसकी वैधता होगी-
(सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011)
(A) अधिकतम (B) कम
(C) सामान्य (D) बराबर (A)

❖ मूल्यांकन का अर्थ होता है- (RPSC-2009)
(A) परिणाम व प्रगति की जाँच करना
(B) परखना
(C) परीक्षा करना
(D) निर्णय करना (A)

❖ मूल्यांकन का उद्देश्य है- (RTET-I लेवल-2011)
(A) धीमी गति से सीखने वाले एवं प्रतिभाशाली बालकों की पहचान करना
(B) जिन बालकों को उपचारात्मक शिक्षा की आवश्यकता है, उनकी पहचान करना
(C) अधिगम की कठिनाइयों व समस्या वाले क्षेत्रों का पता लगाना
(D) उपयोगी जीवन जीने के लिए शिक्षा की महत्ता की जाँच करना (C)

❖ मूल्यांकन किया जाना चाहिए-
(छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011)
(C) वह आवश्यक पर्यावरण को दूर रखता है।
(B) बच्चों की उपलब्धियों के स्तर का ज्ञान होता है
(C) इसके परिणामों से शिक्षण को प्रभावी बनाया जाता है
(D) शिक्षकों की उपलब्धियों का पता लगता है (C)

❖ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की एक तकनीक है ?
(BTET-I लेवल-2011)
(A) सत्र मूल्यांकन (B) अर्द्धवार्षिक
(C) निदानात्मक मूल्यांकन (D) इकाई मूल्यांकन (C)

❖ एक अच्छे परीक्षण की कौनसी विशेषता नहीं है ?
(BTET-I लेवल-2011)
(A) वैधता (B) विश्वसनीयता
(C) वस्तुनिष्ठता (D) उत्तीर्ण करना (D)

❖ छात्रों में रटने की प्रवृत्ति को रोकने हेतु कैसे प्रश्न नहीं पूछने चाहिए ? (BTET-II लेवल-2011)
(A) वस्तुनिष्ठ (B) लघुउत्तरीय
(C) दीर्घ उत्तरीय (D) निबंधात्मक (A)

❖ सृजनात्मकता का विकास करने में कौनसा कार्य सहायक नहीं है ? (BTET-I लेवल-2012)
(A) कविता पूरी करना
(B) चित्र पर आधारित मौखिक अथवा लिखित वर्णन करना
(C) प्रश्नों के उत्तर लिखना
(D) अधूरी कहानी पूरी करना (C)

❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्न की सबसे बड़ी विशेषता होती है-
(हिन्दी II ग्रेड-2010, III ग्रेड शिक्षक भर्ती- 2012)
(A) वह छोटा होता है।
(B) वह जल्दी समझ में आ जाता है।
(C) विश्वसनीय होता है।
(D) उसके कई उत्तर होते हैं। (C)

❖ प्रयोगात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है ?(RTET-I लेवल-2012)
(A) समय विशेष में विभिन्न कार्यों पर एक विद्यार्थी ने कितना अच्छा निष्पादन किया है, का पता लगाना
(B) अधिगम को सुगम बनाना एवं ग्रेड प्रदान करना
(C) ऐसे विद्यार्थियों का पता लगाना जो अपने साथियों के समकक्ष संप्राप्ति में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं।
(D) अगली इकाई के अनुदेशन से पूर्व प्रगति का पता लगाना (A)

□□□

Scanned with CamScanner

# 16 उपलब्धि परीक्षण/निष्पत्ति परीक्षण

**अर्थ–**

- **गैरीसन व अन्य के अनुसार –** ''उपलब्धि परीक्षा बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मूल्यांकन करती है।''
- **इबेल के अनुसार –** ''उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता व क्षमता का मापन करता है।''
- **फ्रीमैन –** शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण ऐसा परीक्षण है जिसके द्वारा किसी विषय में अर्जित ज्ञान, बोध या कौशल की माप होती है।

**उपलब्धि परीक्षण की विशेषताएँ–**

- दिये गये ज्ञान व कौशल का मापन करता है।
- ज्ञान व उपलब्धि ज्ञात की जाती है।
- वर्तमान प्रगति का ज्ञान व भविष्य के बारे में ज्ञान प्रदान करता है।
- शिक्षण व अध्ययन की सफलता का ज्ञान।
- अधिगम संबंधी कठिनाइयों को ज्ञात करने व पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करने में।

**प्रकार :–** दो प्रकार का होता है।

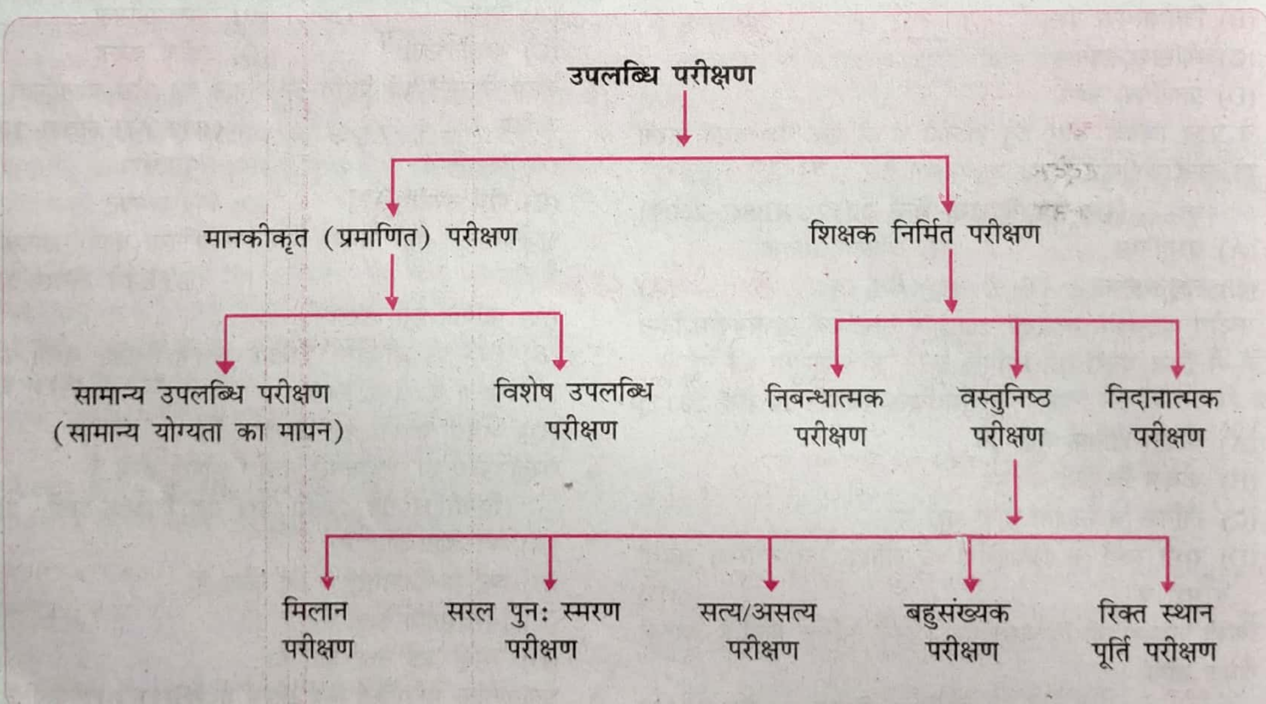


**उपलब्धि परीक्षणों की उपयोगिता–**

- श्रेणी विभाजन में सहायक।
- वर्गीकरण करने में सहायक।
- छात्रों को प्रेरणा प्रदान करने में सहायक।
- व्यक्तिगत शिक्षण में सहायक।
- शैक्षिक निर्देशन प्राप्त करने में सहायक।
- निदानात्मक व उपचारात्मक शिक्षण में सहायक।
- अध्यापक के कार्यों का परीक्षण करने में सहायक।
- कोलसेनिक – ''बुद्धिमान अध्यापक को परीक्षाओं को अपने स्वयं के कार्य का परीक्षण समझना चाहिए।''

Scanned with CamScanner

### उत्तम उपलब्धि परीक्षण/उत्तम परीक्षण/उत्तम मूल्यांकन की विशेषताएँ/आवश्यक तत्त्व–

1. **वैधता (Validity)** - परीक्षक को बालक की उसी योग्यता की जाँच करनी चाहिए जिसकी जाँच करने के लिए उसे बनाया गया है।
2. **विश्वसनीयता (Reliability)** - परीक्षण का जब भी प्रयोग किया जायें तब उसके परिणामों में किसी प्रकार का अन्तर ना होकर समानता हो।
3. **वस्तुनिष्ठता (Objectivity)** – निष्पक्षता जिस पर विद्यार्थी की जाँच और परीक्षक की मनोदशा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. **व्यापकता (Comprehensiveness)** –परीक्षण में सभी पहलू (ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक) सें सम्बन्धित मापन हो।
5. **विभेदीकरण (Differentiation)** – परीक्षण प्रतिभाशाली, मन्दबुद्धि व औसत बालकों में अन्तर करें।
6. **व्यावहारिकता (Usability)** – प्रयोग में किसी भी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हों।
7. **निश्चित उद्देश्य**
8. **सरलता (Simplicity)**
9. **रोचकता।**
10. **मितव्ययता।**

### उपलब्धि परीक्षण के अन्य प्रकार–

1. **नैदानिक उपलब्धि परीक्षण (Diagnostic Achievement)** इस परीक्षण का उद्देश्य छात्रों की कठिनाई, कमजोरी व मजबूती को व्यक्त करना व उपचार करना होता है।

**प्रमुख परीक्षण** – गीलमोर मौखिक (Oral Reading) परीक्षण 2 Durreall Analysis of Reading diffeiculty

इनके द्वारा पढ़ने व उच्चारण कठिनाईयों की पहचान की जाती है।

2. **विशिष्ट विषय वस्तु संबंधी उपलब्धि परीक्षण :-** सत्र के अन्त में छात्रों की संबंधित विषय में अर्जित ज्ञान व निपुणता का मापन किया जाता है।

प्रमुख परीक्षण-MMUT आधुनिक गणित समझ परीक्षण

BAT (सरोज अरोड़ा द्वारा निर्मित) - Bialogy Achievement test (जीव विज्ञान)

3. **उपलब्धि परीक्षण माला** – इसमें 5–10 विषयों में अर्जित ज्ञान के मापन के लिए परीक्षण होते हैं।

**प्रमुख** – कैलीफोर्निया उपलब्धि परीक्षण (पठन बोध, अंकगणित, अंग्रेजी) मेट्रोपोलीटन उपलब्धी परीक्षण SRA उपलब्धि परीक्षण (अंकगणित, भाषा, पठनक्षमता, कार्य कौशल)

✦ GCAT – सामान्य कक्षा उपलब्धि परीक्षण। (अल्पना सेन गुप्ता) (यह अंग्रेजी, विज्ञान व सामाजिक अध्ययन)

**सूत्र** -

✦ शैक्षिक लब्धी $EQ = \frac{EA}{CA} \times 100$

EA - शैक्षिक आयु

MA - मानसिक आयु

✦ उपलब्धि लब्धी $AQ = \frac{EA}{MA} \times 100$

CA - वास्तविक आयु

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ सामाजिक अधययन में, मूल्यांकन का प्रमुख प्रयोजन है? **[सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2010]**
(A) कक्षा परीक्षण में सुधार करना।
(B) विद्यार्थियों के कार्य निष्पादन को प्रमाणित करना।
(C) कक्षा-शिक्षण में सुधार व कार्य निष्पादन को प्रमाणित करना
(D) परीक्षा पद्धति व पाठ्यक्रम में सुधार करना (C)

❖ राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा, 2005 में सामाजिक अधययन में निम्न में से किन मुद्दों को शामिल करने की अनुशंसा की गई? **[सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011]**
(A) लैंगिक (केवल मुद्दों को)
(B) सभी स्तरों के विद्यार्थियों के लैंगिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी
(C) लैंगिक व किशोर दोनों मुद्दों पर
(D) केवल किशोरों के मुद्दे (B)

❖ किसी परीक्षण की विश्वसनीयता जितनी अधिक होती है, उसकी वैधता होगी उतनी ही? **[सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011]**
(A) अधिकतम (B) कम
(C) सामान्य (D) बराबर (C)

❖ मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए? **[CTET-II लेवल-2011]**
(A) शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ निकालना
(B) शिक्षार्थियों की उपलब्धि को मापना
(C) यह निर्णय लेना कि क्या विद्यार्थी को अगली कक्षा में प्रोन्नत किया जाना चाहिए
(D) सीखने में होने वाली कमियों का निदान एवं उपचार (D)

❖ बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए? **[UTET-I लेवल-2011]**
(A) बोर्ड परीक्षा द्वारा
(B) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा
(C) गृह परीक्षण द्वारा
(D) लिखित एवं मौखिक परीक्षा (B)

❖ एक प्रमाणीकृत परीक्षण में होता है? **[सामाजिक विज्ञान II ग्रेड-2011]**
(A) विश्वसनीयता एवं वैधाता (B) निबंधात्मक प्रश्न
(C) मौखिक प्रश्न (D) प्रायोगिक प्रश्न (A)

Scanned with CamScanner

❖ मूल्यांकन किया जाना चाहिए?
[छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011]
(A) मूल्यांकन से बच्चे पढ़ेंगे
(B) पता लगता है कि बच्चों की उपलब्धि का स्तर क्या है
(C) बच्चों के सीखने के स्तर का ज्ञान होता है
(D) शिक्षकों की उपलब्धि का पता लगता है (C)

❖ मूल्यांकन का उद्देश्य है? [छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011]
(A) बच्चों को उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण घोषित करना
(B) बच्चा क्या सीखता है जानना
(C) बच्चे के सीखने में आई कठिनाईयों को जानना
(D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ एक अच्छे परीक्षण की कौनसी विशेषता नहीं है?
[BTET-I लेवल-2011]
(A) वैधता (B) विश्वसनीयता
(C) वस्तुनिष्ठता (D) उत्तीर्ण करना (D)

❖ छात्रों में रटने की प्रवृत्ति को रोकने हेतु कैसे प्रश्न पूछने चाहिए?
[BTET-II लेवल-2011]
(A) वस्तुनिष्ठ (B) लघुत्तरीय
(C) दीर्घ उत्तरीय (D) निबंधात्मक (A)

❖ उपचारात्मक शिक्षण की सफलता निर्भर करती है?
[CTET-I लेवल-2011]
(A) समय व अवधि पर
(B) समस्याओं के कारणों की सही पहचान
(C) उपचारात्मक शिक्षण सामग्री पर
(D) भाषिक नियमों के ज्ञान पर (B)

❖ मूल्यांकन का अर्थ है?
[RPSC-2009, III ग्रेड शिक्षक-2012]
(A) धीमी गति से सीखने वाले एवं प्रतिभाशाली बालकों के रूप में लेवल करना
(B) जिन बालकों को उपचारात्मक शिक्षा की आवश्यकता है, उनकी पहचान करना
(C) अधिगम की कठिनाइयों व समस्या वाले क्षेत्रों का पता लगाना
(D) उत्पादन जीवन जीने के लिए शिक्षा किस सीमा तैयार की एक पाई है, का पुष्टिपोषण प्रदान करना (C)

❖ वे प्रश्न जिनके उत्तर हेतु हाँ/नहीं में से एक का चयन करना हो उन्हें वर्गीकृत किया जा सकता है?
[RPSC-2009, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012]
(A) वस्तुनिष्ठ (B) अतिलघुत्तरात्मक
(C) लघुत्तरात्मक (D) वैध प्रकार (A)

❖ वस्तुनिष्ठ प्रश्न की सबसे बड़ी विशेषता है?
[RPSC-2009, III ग्रेड शिक्षक भर्ती-2012]
(A) वह छोटा होता है।
(B) वह जल्दी समझ में आ जाता है।
(C) उसका एक ही उत्तर होता है।
(D) उसके कई उत्तर होते हैं। (C)

❖ एक विशिष्ट अधिगम अनुभव प्रदान करने के पश्चात् अधिगम किस स्तर तक हुआ है, यह मापने हेतु निम्न में से कौनसा परीक्षण उपर्युक्त है– [व्याख्याता रसायन विज्ञान-2012]
(A) उपलब्धि परीक्षण (B) अभिवृत्ति परीक्षण
(C) निदानात्मक परीक्षण (D) परीक्षण एवं पुनः परीक्षण
(A)

❖ उत्तम परीक्षा के मुख्य गुण है–
[Bihar TET L-II Exam-2012]
(A) वैधता (B) वस्तुनिष्ठता
(C) विश्वसनीयता (D) ये सभी (D)

❖ उपलब्धि निर्भर करती है– [UPTET-2013]
(A) योग्यता एवं प्रेरणा दोनों पर
(B) प्रेरणा पर
(C) योग्यता पर
(D) आलस्य पर (A)

❖ उपलब्धि परीक्षणों का प्रमुख उपयोगी होता है–
[III Grade Teacher-2013]
(A) अधिगम उत्पाद जाँच (B) शैक्षणिक मार्गदर्शन
(C) उपचारात्मक शिक्षण (D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ उपलब्धि परीक्षण भाग है– [III Grade Teacher-2013]
(A) मनोविज्ञान (B) भूगोल
(C) गृह विज्ञान (D) राजनीति विज्ञान (A)

❖ उपलब्धि परीक्षणों का प्रमुख उपयोग होना चाहिए–
[III Grade Teacher-2013]
(A) शिक्षण कार्य कमी मूल्यांकन में
(B) छात्रों के मूल्यांकन में
(C) उपचारात्मक शिक्षण में
(D) उपर्युक्त सभी में (B)

❖ मानकीकृत परीक्षण का अर्थ है–
[III Grade Teacher-2013]
(A) विश्वसनीयता (B) वैधता
(C) मानक (D) उपर्युक्त सभी (D)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 17 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

**पृष्ठभूमि एवं अवधारणा–**

- शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को अधिकार है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना। कानून के सेक्शन 29 में स्पष्ट कहा गया है कि कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम बनाते समय यह ध्यान रखा जाए कि वो पाठ्यक्रम बच्चों के सर्वांगीण विकास लाने वाला हो। स्कूल और कक्षाओं में पढ़ने पढ़ाने के तरीके बच्चों की अंर्तनिहित क्षमताओं को उभारें और उनमें अपना ज्ञान निर्माण स्वयं करने की क्षमता विकसित हो। बच्चों ने जो सीखा है उसका मूल्यांकन उनके पढ़ने के दौरान लगातार होता रहे और उन्हें परीक्षा का भय नहीं लगे। परीक्षाएं बच्चों का मूल्यांकन भी दिखाने वाली हो साथ ही उससे शिक्षक को अपनी शिक्षण योजना में बदलाव करने का आधार एवं मौका भी मिले।
- शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली सरकारी गैर-सरकारी संस्थाओं तथा शिक्षाविदों के बीच इस विषय पर लगातार चर्चा होती रही है। इस चर्चा में साफ उभर कर आ रहा है कि कानून के इस प्रावधान का अर्थ है :-
- हमें अपनी कक्षाओं में शिक्षण कराने के तरीकों को बाल केन्द्रित करना होगा।
- बच्चों के मूल्यांकन प्रक्रिया को इस प्रकार तय करना होगा कि वो बच्चों के बारे में लगातार जानकारी दे और उनमें परखने का भय भी पैदा ना हो।
- शिक्षक बच्चों के लगातार मूल्यांकन के आधार पर अपनी शिक्षण योजना बनाएं और उसी के अनुसार बच्चों के साथ शिक्षण का कार्य करें।
- शिक्षक दिए गए पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों का शैक्षिक स्तर देखें और सर्वांगीण विकास के पहलुओं यथा कला, संगीत, व्यक्तित्व विकास, खेल एवं स्वास्थ्य में भी बच्चों की प्रगति को दर्ज करें।
- शिक्षक कक्षाओं मं पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप इस प्रकार की गतिविधियां करें कि बच्चों को अपनी क्षमताओं को बढ़ाने का अवसर मिले।
- इस अर्थ के आधार पर कहा जा सकता है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया वास्तव में व्यापक गुणवत्तासुधार प्रक्रिया ही है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) का अर्थ विद्यार्थी के स्कूल आधारित मूल्यांकन व्यवस्था से है, जो विद्यार्थी के सीखने के सभी पक्षों पर ध्यान देती है।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कोई नई अवधारणा न हीं है। कोई शिक्षण विधा जिसमें बच्चों के मूल्यांकन की प्रक्रिया सीखने-सिखाने की गतिविधियों में शामिल नहीं है तो उस विधा को उपयुक्त शिक्षण विधा नहीं कहा जा सकता। अतः यह स्पष्ट समझ लिया जाना चाहिए कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षण विधा यानि सीखने सिखाने की विधा का ही हिस्सा है कोई अलग अवधारणा नहीं है।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में सततता जहां एक ओर कक्षा प्रक्रिया के रूप में होगी वहीं सार्वधिक मूल्यांकन के रूप में भी होगी। व्यापकता उन मुद्दों को प्रमुख रूप से रेखांकित करेगी जो बच्चों के विभित्र कौशल, भावात्मक और क्रियात्मक पक्ष को उजागर करेगी।

**राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन लागू करने के कारण**

- **प्रथम चरण (2010-11) :-**

राज्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन हेतु सत्र 2010-11 से एक पायलेट प्रोजेक्ट शुरू किया गया जिसमें अलवर एवं जयपुर जिले के क्रमशः 40 एवं 20 विद्यालयों को सम्मिलित किया गया। प्रारम्भ में कक्षा 1 - 5 में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के परिप्रेक्ष्य में कार्य किया गया एवं कक्षा 1-5 एन सी ई आर टी आधारित पाठ्यपुस्तकों को आधार मानक कार्य किया गया। इस चरण का उद्देश्य था सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की योजना और प्रक्रिया को तय करना जो कि अंततः राज्य के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनेगी। इस चरण के अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया गया शिक्षकों को नियमित संबल देना। इसके लिए विषयवार मासिक कार्यशालाएं की गई साथ ही सघन मॉनीट्रिंग भी की गई। स्कूल में व्यापक बदलाव की दृष्टि से पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर भी कार्य किया गया। प्रोजेक्ट के प्रारम्भिक परिणाम इस प्रकार रहे :-

- बच्चों के शैक्षिक स्तर में वृद्धि हुई है।
- बच्चों के प्रवेश, नियमितता और ठहराव में सराहनीय वृद्धि हुई है।
- कक्षा कक्ष में सीखने सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की रुचि और भागीदारी बढ़ी है।
- बच्चों और शिक्षकों के बीच रिश्तों में गुणात्मक सुधार आया है।
- अभिभावकों ने मूल्यांकन के नये तरीकों की सराहना की और स्वीकार भी किया है।
- अभिभावकों ने बच्चों की पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता को महसूस किया है।
- विद्यालय प्रबंधन समिति की भागीदारी बढ़ी है।
- शिक्षकों न एन सी एफ 2005 की मंशा के अनुरूप किए गए पाठ्यक्रम विभाजन को स्वीकार किया है।
- अधिकतर शिक्षकों ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के मुद्दों पर संवाद करना प्रारंभ किया है।
- कक्षा कक्ष में शिक्षकों द्वारा सीखने सिखाने की प्रक्रिया में प्रशंसनीय बदलाव किया गया है।
- कक्षा कक्ष में गतिविधि आधारित प्रक्रिया प्रयोग की जाने लगी है।
- कक्षा कक्ष में सीखने सिखाने की प्रक्रिया में कला, संगीत और खेलों को पर्याप्त महत्ता मिलने लगी है।

- **द्वितीय चरण (2012-13) :-**

पायलेट परियोजना के उत्साहजनक परिणाम के आधार पर राज्य सरकार द्वारा अकादमिक सत्र 2012-13 से सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया को राज्य के 178 ब्लॉक्स के 3059 राजकीय

Scanned with CamScanner

प्राथमक विद्यालयों (लहर विद्यालयों) में लागू करने का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही पायलेट प्रोजेक्ट के अंतर्गत शामिल उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 6 से 8 में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया की शुरूआत की गई।

- तृतीय चरण ( 2013-14 ) :-

इस शैक्षिक सत्र के अंतर्गत सम्पूर्ण ब्लॉक को कवर करते हुए लगभग 2500 विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं में कार्यक्रम का विस्तार करने का निर्णय लिया गया है।

## CCE/SIQE

- विद्यालय समन्वित योजना पश्चात विद्यालय 1 से 12 तक संचालित किये गए। विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए RMSA, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, SIQE उदयपुर (वर्तमान नाम RSCERT), यूनिसेफ व बोध शिक्षा समिति जयपुर के साथ M.O.U. है जिसके तहत सभी विद्यालयों में (समन्वित) चरणवार 1 से 5 कक्षाओं में ABL व CCE कार्यक्रम लागू किया गया है। अकादमिक सत्र 2015-16 में राज्य के सभी समन्वित विद्यालयों में की 1 से 5 कक्षाओं में SIQE कार्यक्रम संचालित है।

(SIQE - State Initiative for Quality Eduction)

- सत्र 2010-11 में प्राथमिक शिक्षा विभाग के 60 विद्यालयों में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में CCE की शुरूआत की गई।
- सत्र 2014-15 तक 22000 विद्यालयों तक चरण बद्ध विस्तार

| | | |
|---|---|---|
| As a Pilot | 2010 to 12 | 60 |
| Phase I | 2012-13 | 3059 |
| Phase II | 2013-14 | 2742 |
| Phase III | 2014-15 | 15605 |
| Phase IV | 2015-16 | 19703 |
| | | 41169 |

- SIQE में सत्र 2018-19 में परिवर्तन किया गया तथा 4 SA के स्थान पर केवल 3 (समेकित आकलन) की व्यवस्था प्रारम्भ की गई है।
- कक्षा 5 के लिए SA-3 का आयोजन नहीं किया जाता है परन्तु इसके स्थान पर 'प्रारम्भिक शिक्षा अधिगम स्तर आकलन' परीक्षा का आयोजन सम्पूर्ण प्रदेश में SCERT, उदयपुर व जिलों की DIET के समन्वय से किया जाता है।

### SIQE से संबंधित कुछ टर्म व डाक्यूमेंट-

- ABL (Activity - based Learning) - गतिविधियों के आधार पर शिक्षण को कहा जाता है राज्य सरकार ने सत्र 2018-19 में द्वितीय चरण के ग्रामीण क्षेत्र के आदर्श विद्यालयों में कक्षा 1 व 2 के लिए ABL कक्ष स्थापित किये है। जिसके तहत प्रत्येक विद्यालय में कक्षा-कक्ष पेंटिंग में 3300- व 6700/- का ABL मुहैया कराया गया है जिसका उपयोग न सिर्फ कक्षा 1 व 2 तथा 3 से 5 के लिए भी गतिविधियां हेतु किया जा सकेगा।
- आधार रेखा मूल्यांकन तथा पदस्थापन - (BLE/Placement Base Line Examination)

उन सभी बच्चों की शैक्षिक क्षमताओं का आकलन किया जाता है जो किसी अन्य विद्यालय से विद्यालय में आये हो इसका आधार पूर्व कक्षा होती है, BLE में Paper Pencil Test भी लिया जा सकता है या अन्य कोई विद्या भी प्रयुक्त की जा सकती है।

जो विद्यार्थी अनामांकित व ड्राप आउट हैं तथा पुनः विद्यालय से जुड़े हैं उनकी कक्षा स्तर का निर्धारण की BLE के आधार पर होना है। BLE केवल कक्षा 2 से 5 तक के बच्चों के लिए है।

- पदस्थापन - स्वयं के विद्यालय के विद्यार्थी जो ग्रीष्मावकाश के पश्चात आते हैं उनकी कक्षा स्तर हेतु दल प्लेसमेंट किया जाता है। BLE व प्लेसमेंट का रिकार्ड विद्यार्थी पोर्ट फोलियो में किया जाता है।
- अध्यापक योजना डायरी - शिक्षक अध्यापन कराने से पूर्व निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपने विद्यालय (विषय व कक्षा) के विद्यार्थियों के लिए 15 दिवस की शिक्षण योजना तैयार करता है इस योजना की साप्ताहिक समीक्षा संस्था प्रधान व हार्डवेयर की उपस्थिति से की जाती है तथा आवश्यकतानुसार योजना में बदलाव किया जाता है। योजना में कक्षा में कराई जाने वाली गतिविधियों का समावेश कर अधिगम उद्देश्य का स्पष्ट अंकन किया जाता है।
- अनुभव डायरी - शिक्षक जब कक्षा में गतिविधि करवाते हैं तो उस समय विद्यार्थी द्वारा की गई अनुक्रिया को अपनी अनुभव डायरी में संक्षिप्त रूप में विद्यार्थी का नाम देते हुए सिखता है जिससे चैक लिस्ट भरते समय उसे सुविधा मिल सके।
- योजना के लिए समूहों के लिए
- योजना डायरी में प्रत्येक विषय शिक्षक को प्रत्येक विषय की पाक्षिक योजना 2 समूहों केलिए तैयार करनी होती है।
- एक - कक्षा स्तर विद्यार्थियों हेतु
- दूसरी - कक्षा स्तर से नीचे के स्तर के विद्यार्थियों के लिए उनमें बुनियादी क्षमताओं के विकास के लिए, जब विद्यार्थी में बुनियादी क्षमताओं का विकास हो जाता है। तो उसे कक्षा स्तर का मानते हुए समूह एक में शामिल कर लिया जाता है।
- विद्यार्थी पोर्टफोलियो :-
- प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अलग-अलग एक पंजिका का संधारण किया जाता है। जिसमें विद्यार्थी द्वारा की गई शैक्षिक प्रगति, सृजनात्मकता व कौशल विकास का विवरण होता है पोर्टफोलियो सत्रवार या 1 से 5 तक सभी वर्षो का एक साथ भी हो सकता है।
- पोर्टफोलियो में 15 दिवस में कम से कम दो कार्यपत्रक प्रति विषय प्रति विद्यार्थी संघारित किये जाने अनिवार्य हैं। कार्य पत्रक का आकलन शिक्षक द्वारा किया जाता है तथा गलतियों का सुधार कार्य कारवाया जाता है एवं सकारात्मक टिपण्णी ही दर्ज की जाती है।
- SMC की बैठक में तथा में विद्यार्थी अभिलेख पोर्टफोलियों को अभिभावक समझ प्रस्तुत किया जाता है एवं प्रत्येक पृष्ठ पर अभिभावक के हस्ताक्षर करवाये जाते हैं।
- गतिविधियों के प्रकार :-
- गतिविधियों को तीन भागों में बांटा जाता है - इन भागों से हमारा आशय कक्षा में करवाये जाने वाले कार्य से है सामूहिक गतिविधि - अधिगम उद्देश्य प्राप्ति हेतु शिक्षक द्वारा सम्पूर्ण कक्षा में गतिविधि आयोजित कर अपने अनुभवों को अनुभव डायरी में अंकित किया जाता है जिसके आधार पर कक्षा को उपसमूहों में विभाजित किया जाता है।

Scanned with CamScanner

- उपसमूहों में कार्य कक्षा को छोटे -छोटे समूहों में बांटकर अधिगम उद्देश्य पूर्ण किया जाता है तथा इसमें बच्चों से गतिविधि करवाने पर बल दिया जाता है।
- व्यक्तिगत कार्य – बाल केन्द्रित शिक्षण में प्रत्येक विद्यार्थी महत्वपूर्ण है अत: विद्यार्थियों से शिक्षक सानिध्य में अंकित कार्य ड्रिल वर्क करवाया जाता है व कार्य पत्रक प्राप्त किये जाते हैं।

✦ **ग्रेडिंग A, B, C**

- **A ग्रेड** – गतिविधि के माध्यम से जो विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से कार्य करते अधिगम उद्देश्य प्राप्त करले उसे A श्रेणी में रखा जाता है।
- **B ग्रेड** – अधिगम उद्देश्य प्राप्ति हेतु शिक्षक या संत्री साथी की आवश्यकता
- **C ग्रेड** – अत्यधिक प्रयास पश्चात भी बोधित लक्ष्य विद्यार्थी निर्धारित समयावधि में प्राप्त न कर सके।

✦ **चैक लिस्ट** –

- अधिगम सूचकों के अभिलेख संधारण चैक लिस्ट में किया जाता है। यह मासिक भरी जाती है प्रथम आवृत्ति दो पाक्षिक योजनाओं के लिए तथा दूसरी आवृत्ति आगामी दो पाक्षिक योजनाओं के लिए भरी जाती है। चैकलिस्ट में 1 से 30 तक नामांक होते है समूह 1 के बच्चों के लिए सभी विषयों की चैकलिस्ट भरी जाती है तथा पर्यावरण विषय में केवल एक ही समूह होता है।
- बुनियादी दक्षता चैकलिस्ट अंग्रेजी, गणित व हिन्दी के समूह-2 के बच्चों के लिए भरी जाती है।

✦ **वार्षिक अभिलेख** –

- समेकित आकलन तथा चैकलिस्ट के आधार पर विद्यार्थी वार्षिक अभिलेख तैयार किया जाता है रचनात्मक आकलन साक्ष्यों के आधार पर तथा सत्र पर्यन्त विद्यार्थी सहभागिता के आधार पर तैयार किया जाता है।
- SA-1 व SA-3 के पश्चात विद्यार्थी के अभिभावक के हस्ताक्षर करवाये जाते हैं। (SA-3 केवल कक्षा 1 से 4 तक के विद्यार्थियों हेतु आयोज्य है।)

✦ **योजना के लागू होने के पश्चात** –

- गतिविधि आधारित शिक्षण एवं व्यापक व सतत मूल्यांकन लागू करने से बच्चों के शैक्षिक स्तर में गुणात्मक सुधार नजर आने लगा है।
- शिक्षकों का ABL के प्रति रूझान बढ़ा है।
- शिक्षक बच्चों के शैक्षिक स्तर के अनुसार शिक्षण अधिगम योजना बनाने का प्रयास करने लगे हैं।
- कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में बच्चों को सीखने सीखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों की शामिल प्रगति को दर्ज किया जा रहा है।
- बच्चों के कक्षा-कक्ष एवं सीखने के प्रयासों को सघटित पोर्ट फोलियो में समाहित किया जाने लगा है।
- राज्य सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष बच्चों के प्रगति का आकलन नियमित रूप से दर्ज किया जाने लगा है।
- SIQE से बच्चों के रिफलेक्टिव कार्य का अवसर प्राप्त हाने लगा है।

✦ **कुछ पारिभाषिक शब्दावलियाँ**

- CCC - Continuous and Comprehensive Evaluation
- CCA - Continuous And Comprehensive Assessment
- CCP - Child Centred Pedagogy
- ABL - Activity Based Learning
- SIQE - State Initiative For Quality Education
- LEHAR - Learning Enhancement Activity in Rajasthan (only for Class 1 & 2) (अभी बन्द कर दिया गया है।)

**विशेष :-**

✦ **सतत व व्यापक मूल्यांकन CCE :-**

- मूल्यांकन प्रक्रिया (राज के संदर्भ)
- रचनात्मक मूल्यांकन/संरचनात्मक मूल्यांकन निरन्तर चलते रहते है। (FA - Formative Assesment)

✦ **योगात्मक मूल्यांकन (SA - Sumative Evaluation) :-**

- पहले राजस्थान के वर्ष में 4 होते थे अब यह 3 होती है। ($S_1$, $S_2$, $S_3$)
- राजस्थान में ग्रेडिंग सिस्टम के A, B, C होते हैं।
- राजस्थान में CCE को अब SIQE नाम दे दिया गया है।

✦ **मूल्यांकन (CBSE) पैटर्न CCE** –

विशेष – 1 वर्ष में 4 रचनात्मक व 2 योगात्मक मूल्यांकन होते हैं।

**CBSE** द्वारा CCE का प्रारम्भ कक्षा 9 में Oct-2009 में किया गया व कक्षा 10 में सत्र 2010-11 से प्रारम्भ किया गया।

पाठ्यक्रम को 5 माह + माह के हिसाब से विभाजन

| प्रथम 5 माह (जुलाई-अक्टूबर) | द्वितीय 5 माह (अक्टू. – मार्च) |
|---|---|
| पाठ्यक्रम – 50 प्रतिशत | पाठ्यक्रम – 50 प्रतिशत |
| (इसके रचनात्मक मूल्यांकन दो होते है) | (इसके 2 रचनात्मक मूल्यांकन व 1 योगात्मक मूल्यांकन) |
| FA1- पाठ्यक्रम का 10 प्रतिशत | FA-3 - 10 प्रतिशत |
| FA2- पाठ्यक्रम का 10 प्रतिशत | FA-4 - 10 प्रतिशत |
| SA1- योगात्मक मूल्यांकन (पाठ्यक्रम का 30 प्रतिशत) | SA-2 - 30 प्रतिशत |

✦ **CCE ग्रेडिग सिस्टम (CBSE)**

- A1 = 91 -100
- A2 = 81 - 90
- B1 = 71 - 80
- B2 = 61 - 70
- C1 = 51 - 60
- C2 = 41 - 50
- D = 33 - 40
- E1 = 21 - 32
- E2 = 20- Failed

## सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से जुड़ी शब्दावली

1. **सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.)** का अर्थ विद्यार्थी के स्कूल आधारित मूल्यांकन व्यवस्था से है, जो विद्यार्थी के विकास के सभी पक्षों पर ध्यान देती है।

(a) सी.सी.ई. के 'सतत' पक्ष आकलन की 'निरंतरता' (Continual) और बार-बार करने (आवर्तन -periodicity) पर ध्यान देता है।

(b) सतत का संदर्भ (आशय) शिक्षण के दौरान सतत अवलोकनों और उन पर आधारित समीक्षा तथा योजना की निरन्तरता है। रचनात्मक आकलन (Formative Assessment) सीखने-सिखाने के दौरान बच्चों की स्थिति, प्रगति एवं आवश्यकता से व्यवस्थित रूप से अवगत रहने एवं उसके आधार पर शिक्षण योजना बनाने और लागू करते रहने की सतत प्रक्रिया है। इसके अंतर्गत दरअसल बच्चों का नियमित आकलन दर्ज करना ही रचनात्मक आकलन है।

(c) आवर्तन का अर्थ है – पाठ्यक्रम लक्ष्यों में उपलब्धि स्तर के परीक्षणों तथा मूल्यांकन की विविध तकनीकों का उपयोग करते हुए निश्चित अवधि के अंत में संबंधित अधिगत लक्ष्यों में उपलब्धि (Performance) के स्तर का मूल्यांकन, योगात्मक मूल्यांकन - Summative Evaluation है।

(d) 'व्यापक' (Comprehensive) अवयव बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के मूल्यांकन पर ध्यान देता है।

2. **आकलन मूल्यांकन उपकरण :** अवलोकन अभिलेखन, चैकलिस्ट, मौखिक प्रश्न, प्रश्नपत्र, कार्यपत्रक, प्रदत्त कार्य, गतिविधि, पोर्टफोलियो, प्रोजेक्ट – कार्य एवं निदानात्मक परीक्षण आदि।

(a) **सतत अवलोकन अभिलेखन :** विविध गतिविधियों एवं अवसरों पर (यथा, सामूहिक कार्यों, व्यक्तिगत कार्यों, कक्षा शिक्षण, खेल आदि) किए गए अवलोकन क आधार पर, बच्चे की कार्य स्थिति, शैली एवं स्तर के सम्बन्ध में शिक्षक द्वारा समय-समय पर आवश्यकतानुसार टिप्पणी/सुझाव दर्ज करना।

(b) **चैकलिस्ट :** चैकलिस्ट एक ऐसा दस्तावेज है जो कि शिक्षकों को यह बताता है कि कक्षावार पाठ्यक्रम क्या है, उसे किस प्रकार वर्गीकृत किया गया है, कक्षा वार एवं विषयवार अधिगम क्षेत्र क्या है, अधिगम क्षेत्र के सूचन कौनसे हैं। साथ ही यह दस्तावेज यह भी सुविधा देता है कि बच्चों का प्रारम्भिक स्तर आकलन कर उनकी पाठ्यक्रम के अनुरूप नियमित प्रगति को दर्ज किया जा सके तथा बच्चों के स्तरानुसार शिक्षण/समूह शिक्षण योजना भी दर्ज की जा सके।

(c) **पोर्टफोलियो :** समय की एक निश्चित अवधि में विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्यों में से उसके सीखने की प्रकृति, स्थिति/स्तर, उपलब्धि तथा प्रगति पक्ष के चरणों को प्रदर्शित करने वाले नमूनों का संग्रह है। ये सामग्री रोजमर्रा के काम से भी हो सकती है या फिर विशेष तौर पर किए गए कार्यों या जाँचों/अवलोकनों से ली जा सकती है।

## सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका

✦ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में तीन काम किए जाते हैं। पहला यह देखना कि बच्चों ने क्या वो सीखा है जो कि उन्हें सिखना चाहिए? दूसरा उनके सीखने की प्रगति क्या है? और तीसरे उनकी सतत् उपलब्धि क्या है? इन तीनों कार्यों में शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह:-

- देखे कि बच्चों का शैक्षिक स्तर क्या है? कक्षा में बच्चों के समूह किस प्रकार बन सकते हैं? किस बच्चे को किस समूह में रखा जाना है? बच्चों के स्तर के अनुसार शिक्षण योजना किस तरह की हो कि प्रत्येक बच्चे को सीखने के समान अवसर उपलब्ध हो और वो अपनी योग्यता के अनुरूप सीख सके और अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर सके। इसे लिए आवश्यक है शिक्षक स्तर पहचान के लिए इस प्रकार के प्रश्न पत्र बनाए कि बच्चों के सही स्तर की पहचान हो सके। यह ध्यान रहे कि बच्चों का सही स्तर पहचान किया जाना अतिआवश्यक है।
- देखे कि बच्चे किस तरह से सीख रहे हैं। यानि बच्चों के सीखने के तरीके क्या है? उनमें क्या किसी बदलाव की गुंजाइश है? शिक्षक इन बातों को अपनी डायरी में अपने अनुसार लिख ले ताकि बाद में उस बच्चे के बारे में लिखते समय यह टिप्पणी काम आ सके। क्योंकि एक शिक्षक के लिए सभी बातों को याद रखना संभव नहीं है। अत: शिक्षक को स्वयं की मदद के लिए यह दर्ज करते रहना चाहिए।
- शिक्षक यह देखे की जो विषय वस्तु बच्चे को सीखनी थी वो सीखी या नहीं। इसे दर्ज किया जा सकता है। कुछ समय बाद पाठ्यक्रम के आधार पर बच्चे की प्रगति का मूल्यांकन किया जा सकत है। यह काम बच्चे के द्वारा किए गए विभिन्न तरह के कार्यों के अवलोकन के माध्यम से किया जा सकता है। यह कम है :-
- बच्चों का कक्षा कार्य या गृह कार्य, बच्चों द्वारा अभ्यास पत्रक पर किया गया कार्य, बच्चों द्वारा समूह पत्र पर किया गया कार्य, बच्चों के द्वारा गतिविधियों के दौरान की गई टिप्पणियां।
- एक विषय के शिक्षक को दूसरे विषय के शिक्षक से नियमित रूप से चर्चा करनी है और बच्चों की अन्य विषयों में प्रगति को भी देखनी है। ऐसी इसलिए आवश्यक है क्योंकि हमें यह जानना आवश्यक है कि बच्चों का रुझान क्या है और उनके साथ किस प्रकार का काम किया जाने की आवश्यकता है।

## सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के विस्तार में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री–

1. **स्रोत पुस्तिका :** सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया पर बेहतर समझ बनाने एवं शिक्षक को कक्षा, कक्ष में कार्य करने के दौरान आने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक शिक्षक के लिए कक्षा 1 से 5 की विषयवार स्रोत पुस्तिका दी जा रही है।
2. **व्यापक शिक्षण एवं सतत् आकलन पंजिका :** सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में प्रत्येक बच्चे का मूल्यांकन दर्ज किया जाना है। इस पंजिका में कक्षा एवं विषय से संबंधित पाठ्यक्रम कार्य योजना, समीक्षा एवं सतत् आकलन चैकलिस्ट शामिल है।
3. **विद्यार्थी मूल्यांकन प्रगति प्रतिवेदन :** इसमें विद्यार्थियों के अधिगम, प्रगति का अंकन विषयवार योगात्मक मूल्यांकन के द्वारा किया जायेगा। योगात्मक मूल्यांकन का आधार प्रति दो माह में किये गये सतत् आकलन के आधार पर प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम के संबंध में उपलब्धि होगी।

Scanned with CamScanner

4. **कार्यपत्रक :** बच्चों को सीखने की गतिविधि में पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता होती है। एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि समय-समय पर बच्चों को सिखाई गई अवधारणा पर अभ्यास कार्य देते रहे। इसे ध्यान में रखते हुए प्रत्येक कक्षा एवं प्रत्येक अवधारणा पर अभ्यास के लिए कार्य पत्रकों का निर्माण शिक्षकों के द्वारा किया जायेगा।

5. **पोर्टफोलियो फाईल :** सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक के पास पर्याप्त साक्ष्य होने चाहिए। इसके लिए बच्चों के द्वारा किए गए कामों को संकलित किया जाना चाहिए। बच्चों के बेहतरीन कार्यों को रखने के लिए एक फाईल बनाई जा सकती है। इस फाईल को ही पोर्टफोलियो फाईल कहते हैं।

6. **आर्टकिट :** मूल्यांकन की व्यापकता के लिए आवश्यक है कि बच्चों को कला पर काम करने के अवसर मिलें। इसलिए जरूरी है कि विद्यालय में सामग्री उपलब्ध हो। कलर पेपर, ग्लेज पेपर, क्रेयोन्स, स्केच पैन, ड्राइंग शीट, फेविकोल, पेन्सिल, रबर एवं धागे की एक रील बच्चों को उपलब्ध करवाना है।

## अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ परीक्षा के स्थान पर सतत् और व्यापक मूल्यांकन गुणवत्ता मूलक शिक्षा के लिए अधिक उपयुक्त है, क्योंकि इसमें-

**(छत्तीसगढ़ TET-II लेवल-2011)**

(A) संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन किया जाता है।
(B) सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन किया जाता है।
(C) मूल्यांकन सतत् एवं व्यापक क्षेत्रों का होता है।
(D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य होता है-

**(BTET-I लेवल-2011)**

(A) गुणात्मक (B) निदानात्मक
(C) परिणात्मक (D) इनमें से सभी (D)

❖ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में, व्यापक मूल्यांकन शब्दावली से तात्पर्य है? **[उत्तराखण्ड TET-I लेवल-2011]**

(A) सभी विषयों का मूल्यांकन
(B) सह शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन
(C) शैक्षिक एवं सह शैक्षिक क्षेत्रा का मूल्यांकन
(D) शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन (C)

❖ परीक्षा के स्थान पर सतत और व्यापक मूल्यांकन गुणवत्ता मूलक शिक्षा के लिए अधिक उपयुक्त, क्योंकि इसमें

**[CTET-L-2-2011]**

(A) संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन किया जाता है।
(B) सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन किया जाता है।
(C) मूल्यांकन सतत एवं व्यापक क्षेत्रों का होता है।
(D) उपर्युक्त सभी (D)

❖ सतत् एहवं व्यापक मूल्यांकन की एक तकनीक है?

**[BTET-I लेवल-2011]**

(A) सत्र मूल्यांकन (B) अर्द्धवार्षिक
(C) निदानात्मक मूल्यांकन (D) इकाई मूल्यांकन (C)

❖ योगात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है? **[RTET-I लेवल-2012]**

(A) समय विशेष एवं विभिन्न कार्यों पर एक विद्यार्थी ने कितना अच्छा निष्पादन किया है, का पता लगाना
(B) अगली इकाई के अनुदेशन से पूर्व प्रगति का पता लगाना
(C) ऐसे विद्यार्थी का पता लगाना जो अपने साथियों के समक्ष सम्प्राप्ति में कठिनाई अनुभव कर रहा है।
(D) अधिगम को सुगम बनाना एवं ग्रेड न प्रदान करना (A)

❖ निर्माणात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है?

**[RTET-II लेवल-2012]**

(A) प्रगति पर गौर करना एवं उपचारात्मक अनुदेशन की योजना
(B) विद्यार्थियों को समझ का पता लगाना
(C) अधयापक के उद्देश्यों की पूर्ति का पता लगाना
(D) ग्रेड्स प्रदान करना (A)

❖ सतत् और व्यापक मूल्यांकन ......... पर बल देता है।

**[CTET-L-I-2013]**

(A) बोर्ड परीक्षाओं की अनावश्यकता पर
(B) सीखने को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक स्केल पर निरंतर परीक्षण
(C) सीखने को किस प्रकार अवलोकित, रिकॉर्ड और सुधारा जाए इस पर
(D) शिक्षण के साथ परीक्षाओं का सामंजस्य (C)

❖ सतत एवं व्यापक मूल्यांकन किस लिए आवश्यक है?

**[CTET-L-I-2015]**

(A) शिक्षण के साथ परीक्षण का तालमेल बैठाने के लिए
(B) यह समझने के लिए कि अधिगम का किस प्रकार अवलोकन किया जाता है, दर्ज किया जाता है व सुधार किया जा सकता है।
(C) शिक्षा बोर्ड की जवाबदेही कम करने के लिए
(D) जल्दी-जल्दी की जाने वाली गलतियों की तुलना में कम अंतराल पर की जाने वाली गलतियों के लिए (B)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 18 शिक्षा शास्त्र

## राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना-2005 (N.C.F.-2005)

### एन.सी.एफ 2005-परिचय:

- यह विद्यालय शिक्षा पर अब तक का नवीनतम राष्ट्रीय दस्तावेज है। जिसे राष्ट्रीय स्तर के शिक्षविदों, वैज्ञानिकों, विषय विशेषज्ञों व अध्यापकों ने मिल कर तैयार किया है।
- भारत सरकार के एम.एच.आर.डी. की पहल पर प्रो. यशपाल की अध्यक्षता में देश के चुने हुये 23 विद्वानों ने विद्यालयी शिक्षा पर हुये पिछले सभी विचार-विमर्शों का अध्ययन किया और उन्हें नई राष्ट्रीय चुनौतियों की रोशनी में देखा। इस राष्ट्रीय मशवरे से निकले 3 क्षेत्रों पर बाहर से 13 सदस्यों वाले 21 फोकस समूहों ने विचार किया और एन.सी.एफ-2005 को आकार दिया।

### एन.सी.एफ-2005 दस्तावेज निम्नलिखित 5 मार्गदर्शक सिद्धान्त प्रस्तुत करता है-

- ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।
- पढ़ने की रटन्त प्रणाली से मुक्त करना।
- पाठ्यचर्या को इस तरह आगे बढ़ाना कि वह बच्चों के चहुँमुखी विकास के अवसर दे, न कि पाठ्यपुस्तक केंद्रित बनकर रह जाये।
- परीक्षा को पहले की तुलना में अधिक लचीला बनाना और उसे कक्षा-कक्ष की गतिविधि से जोड़ना।
- बच्चों का ऐसे नागरिकों के रूप में विकास जिनमें प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय मूल्यों (लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता व समानता) में आस्था हो।
- **प्रमुख विशेषताएँ–**

  N.C.F.-2005 का प्रारम्भ–रवीन्द्रनाथ टैगोर का निबंध ''सभ्यता व प्रगति'' के इस कथन से होता है 'सृजनात्मकता और उदार आनंद बचपन की कुंजी है और नासमझ वयस्क संसार द्वारा उसकी विकृति का खतरा है'

  **विशेष :** सामाजिक न्याय व समानता के संवैधानिक मूल्यों पर आधारित एवं धर्मनिरपेक्ष, समतामूलक व बहुलतावादी समाज के आदर्शों को इसमें शामिल किया गया है। यह विचार व कर्म की स्वतंत्रता, दूसरों के प्रति संवेदनशीलता, लचीलापन, रचनात्मकता, लोकतांत्रिकता, सभी वंचित व असमर्थ बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा की अवधारणा पर बल देता है।
- **फ्रेमवर्क** में कक्षा 1 से 12 तक कब, क्या, क्यों और कैसे पढ़ाना इसक पूरी रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।
- **कक्षा 1 से 5**

(a) मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) (b) अंग्रेजी
(c) गणित (d) एकीकृत पर्यावरण अध्ययन
(e) कला व शिल्प (f) शारीरिक विकास
(g) कार्य अनुभव

- **कक्षा 6 से 8**

(a) मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) (b) आधुनिक भारतीय भाषा
(c) कला शिक्षा (d) अंग्रेजी
(e) सामाजिक अध्ययन (इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र)
(f) विज्ञान (h) गणित
(h) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा

- **कक्षा 9 से 10**

(a) सामाजिक अध्ययन (इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान तथा अर्थशास्त्र)
(b) मातृभाषा (क्षेत्रीय भाषा) (c) संस्कृत/उर्दू/अन्य
(d) अंग्रेजी (e) गणित
(f) गणित (h) कम्प्यूटर
(i) कार्य शिक्षा (j) शांति शिक्षा
(k) कला शिक्षा

- **कक्षा 11 से 12**

(a) मातृभाषा (b) अंग्रेजी
(c) गणित (d) कम्प्यूटर
(e) भौतिक विज्ञान (f) रसायन विज्ञान
(g) जीव विज्ञान (h) व्यापार अध्ययन
(i) एकाउंटेंसी (j) कला शिक्षा
(k) राजनीति विज्ञान (l) भूगोल
(m) इतिहास (n) अर्थशास्त्र
(o) समाजशास्त्र (p) मनोविज्ञान
(q) अन्य ऐच्छिक विषय

### विषय आधारित सुझाव (पाठ्यक्रम)-

1. **गणित** - इस विषय का पाठ्यक्रम ऐसा हो जो चिंतन/तर्क अमूर्त संकल्पना, समस्या को सूत्रबद्ध करने व समाधान में मदद करे, अर्थपूर्ण व प्रासंगिक गणित पर बल गणित में सफलता प्रत्येक बालक का अधिकार हो । गणित का अन्य विषयों से सहसंबंध भी बताया जाना चाहिए।

   **(1) प्राथमिक स्तर**-गणितीय खेल, पहेलियाँ, संख्या व आंकड़ों की समझ, गणनात्मक कौशल

   **(2) उच्च प्राथमिक स्तर**-आंकड़ों का उपयोग, प्रस्तुति, व्याख्या, बीजगणित व अमूर्त धारणा विकास

   **(3) माध्यमिक स्तर**-रेखागणित, सिद्धान्त, समस्या समाधान सिद्ध करना।
2. **विज्ञान शिक्षण**-इसका स्वरूप ऐसा हो जो बालक को प्रतिदिन के अनुभवों की जाँच करने व विश्लेषण में सक्षम बनाये, पर्यावरण पर बल दिया जावे। अन्वेषण की प्रवृति बढ़े इसकी सहायता से गरीबी, अज्ञान व अंधविश्वास को दूर किया जा सकता है।

   **(1) प्राथमिक स्तर पर**-परिवेश व पर्यावरण की जानकारी

   **(2) उच्च प्राथमिक स्तर**-विज्ञान के सिद्धान्त सीखना, मॉडल बनाना, प्रदर्शन द्वारा ज्ञान, प्रजनत, यौन स्वास्थ्य

   **(3) माध्यमिक स्तर** - उन्नत तकनीकी, पर्यावरण मुद्दे, विश्लेषण,

Scanned with CamScanner

स्थानीय महत्व की परियोजना

3. **सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम-** सामाजिक मूल्यों का विकास, सामाजिक वंचित वर्गों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकास, जलध्पानी के मुद्दों पर समाकलन पर बल, लिंग समानता, अनुसूचित जाति, जनजाति व अल्पसंख्यक संवेदनशीलता के प्रति सजगता । अतीव के गौरव व नागरिक अस्मिता पर सृजनात्मक, सौन्दर्यपरक व विवेचनात्मकता को बढ़ावा दे। नागरिक शास्त्र को राजनीति शास्त्र में बदला जावे।

**(1) प्राथमिक स्तर पर -**

- कक्षा 1 से 2 - प्राकृतिक व सामाजिक वातावरण की शिक्षा
- कक्षा 3 से 5 - पर्यावरण अध्ययन - संरक्षण, दैनिक अनुरूप व स्थानीय परिवेश की जानकारी
- कक्षा 6 से 8 स्तर - सामाजिक विज्ञान - इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान व अर्थशास्त्र,
- माध्यमिक स्तर के समाजशास्त्र का ज्ञान

- अन्य विषयों में काम, कला, पारम्परिक दस्तकारी, शारीरिक शिक्षा व शांति शिक्षा पर बल।
- **कला में-**गायन, नृत्य, दस्तकला व नाटक की शिक्षा।
- शारीरिक शिक्षा में खेलकूद व मध्याह्न भोजन पर बल।
- **शांति शिक्षा-**हिंसा को दूर रखते हुये सामाजिक संस्कार पर बल व सहनशक्ति, न्यायप्रियता व सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास है।
- समय सारणी में लचीलापन पर बल।
- परीक्षा में आंतरिक मूल्यांकन पर बलापूर्व बोर्ड परीक्षा को हतोत्साहित करने पर बल/प्रश्नपत्र तर्क व रचनात्मक हो ना की रटने पर आधारित।
- **बालकेन्द्रित शिक्षा-** बालक के अनुभव व सक्रिय सहभागिता को महत्व देना।
- **शारीरिक विकास विकास की पहली शर्त-**सभी प्रकार के स्वतंत्र खेलों, औपचारिक व अनौपचारिक खेलों पर बल।
- **सार्थक अधिगम-**अधिगम एक रटने की प्रक्रिया ना होकर उत्पादक व रचनात्मक प्रक्रिया है। अवधारणात्मक विकास पर बल। अधिगम विद्यालय के अन्दर व बाहर दोनों जगह होता है सीखने के विविधता व चुनौतियों पर बल।
- कक्षा में समावेशी माहौल पर बल।
- उदार पाठयचर्या जो सभी के लिए सुलभ हो विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकता के अनुकूल हो, विविधता से युक्त हो।
- पूछताछ, करके सीखना, अन्वेषण, वाद-विवाद के प्रयोग पर बल।
- सीखने के प्रारम्भिक स्तर पर भाषा व गणित का महत्वपूर्ण स्थान हो।
- सीखने में अन्त:क्रिया पर बल/गति विधि आधारित शिक्षण पर बल, खेल-खेल में पढ़ाई पर बल।
- बहुभाषिक कक्षा शिक्षण पर बल/मातृ भाषा, विदेशी भाषा (3 भाषा के शिक्षण की वकालत) भाषा कौशल में बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखने पर बल।
- **त्रिभाषा फार्मूला -** (1) घरेलू भाषा/मातृभाषा (2) हिन्दी/संस्कृत भाषा (3) विदेशी/अंग्रेजी व शास्त्रीय भाषा काम शिक्षा - आत्मनिर्भरता का विकास - उत्पादक कार्य की शिक्षा, काम आधारित दक्षता शिक्षा । व्यवसायिक शिक्षा व नवाचार पर बल
- नैतिक मूल्यों की शिक्षा।
- **आंकलन व मूल्यांकन -** सतत व व्यापक मूल्यांकन, गुणात्मक आंकलन, रचनात्मकता आधारित प्रश्न पत्र, खुली पुस्तक शिक्षा, स्व आंकलन, निदानात्मक आंकलन पर बल। लचीलेपन पर बल कक्षा 10 की बोर्ड की परीक्षा वैकल्पिक हो व अन्य स्तर पर कक्षा की बोर्ड परीक्षा ना हो, लघु परीक्षा पर बल। प्रवेश परीक्षा पर बल।
- **शिक्षक शिक्षा बहुअनुशासनात्मक हो-** शिक्षक शिक्षा का समेकित मॉडल विकसित हो, ज्ञान निर्माण के शिक्षक उत्प्रेरक हो।
- लोकतंत्र सहभागिता के लिए पंचायती राज संस्था की मजबूती पर बल।
- समान स्कूल व्यवस्था विकसित हो।
- ज्ञान की प्रक्रिया के समुदाय के लोगों की साझेदारी हो। शिक्षा में दो तरफ संवाद हो।
- विकेन्द्रीकृत योजना पर बल।

**अन्य प्रमुख विशेषताएँ-**

- सीखना अपने आप में एक सक्रिय व सामाजिक गतिविधि है। सीखने सिखाने में निम्नलिखित सिद्धान्तों पर बल देने की जरूरत है-"ज्ञात से अज्ञात", "मूर्त से अमूर्त", "स्थानिक से वैश्विक की ओर।"
- सीखने की एक उचित गति होनी चाहिए इसमें बच्चों के दिल दिमाग को रौंदने वाली तेजी नहीं होनी चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि बच्चे अवधारणाओं को रटकर परीक्षा पास करें और फिर उन्हें भूल जायें। सीखने में विविधता और चुनौतियाँ होनी चाहिए ताकि वे बच्चों को रोचक लगे और उन्हें व्यस्त रखें।
- शिक्षा सार्थक तभी है जब व्यक्ति को इतना समर्थ बना सके कि वह शांति को जीवन शैली के रूप में चुन सके लेकिन वह सामाजिक संघर्षों का एक मूकदर्शक बन कर न रह जाये।
- सूचना को ज्ञान मानने से बचना चाहिए।
- स्कूलों में पढ़ाई तब तक आनन्ददायक नहीं हो सकती जब तक बच्चों के प्रति हम अपना यह नजरिया न बदलें के वे मात्र ज्ञान लेने वाले हैं।
- मोटे पाठ्यक्रम और मोटी किताबें शिक्षा प्रणाली की असफलता का प्रतीक है। इन्हें बनाने और लिखने वाले इस धारणा से प्रेरित हैं कि दुनिया में ज्ञान का एक विस्फोट हुआ है।
- लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा व मानव अधिकार हमारे सामाजिक मूल्य हैं इन्हें उपदेश देकर नहीं बल्कि वातावरण देकर बच्चों के मन में बोने की जरूरत है।
- बाल केन्द्रित शिक्षा का अर्थ बच्चों के अनुभवों, उनके स्वरों और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना है।
- बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहां उन्हें लगे कि वे महत्वपूर्ण हैं, हमारे स्कूल आज भी बच्चों को ऐसा महसूस नहीं करा पाते। यदि सीखने का आनन्द व सन्तोष के साथ रिश्ता होने के बजाय भय, अनुशासन व तनाव से संबंध हो तो वह सीखने में बाधा डालता है।
- बच्चों के लिये तनाव-प्रबन्धन कोर्स चलाने की जगह प्रधानाध्यापकों एवं प्रबन्धकों को पाठ्यचर्चा को तनावमुक्त करने एवं अभिभावकों को यह सुझाव देने की आवश्यकता है कि

Scanned with CamScanner

बच्चों के स्कूल के बाहर जो जीवन है उसे तनावमुक्त करें।

- स्कूलों में सभी प्रकार के शारीरिक दण्डों को रोकने की सख्त जरूरत है।
- कक्षा में शान्ति बनाये रखने से सम्बन्धित जो नियम होते हैं कि एक बार में एक ही बच्चा बोले या तभी बोलो जब सही उत्तर पता हो, इस तरह के नियम समानता एवं बराबर अवसर देने के मूल्यों को दुर्बल बनाते हैं और उन्हें आघात पहुंचाते हैं। ऐसे नियम उन प्रक्रियाओं को भी हतोत्साहित करते हैं जो बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में अंतर्निहित होते हैं और यह सहपाठियों में समुदाय की भावना को विकसित होने से भी रोकते हैं।
- अनुशासन ऐसा होना चाहिए कि जो कार्य सम्पन्न करने में मदद करें और बच्चों की क्षमता बढ़ाये।
- अनुशासन बच्चों और शिक्षकों दोनों के लिये आजादी, विकल्प एवं स्वायत्तता बढ़ाने वाला होना चाहिए।
- गृहकार्य में स्कूल के कार्य के अतिरिक्त अलग तरह की गतिविधियां बच्चों के करने के लिये होनी चाहिए जो वे स्वयं कर पाये या अपने अभिभावकों की मदद से कर पायें। उनसे अभिभावकों को यह बेहतर रूप से समझने का मौका मिलेगा कि उनका बच्चा विद्यालय में क्या सीख रहा है। इससे बच्चों को खोजबीन करन में और बाहर की दुनियां को अधिगम का स्रोत मानने में शुरूआती प्रोत्साहन मिलेगा।
- बाल अधिकारों की सुरक्षा एंव सुलभता की व्यवस्था होनी चाहिए।
- बच्चों के सभी प्रकार के विकास की पहली शर्त है उनका स्वस्थ शारीरिक विकास, इसके लिये उनकी पौष्टिक आहार, व्यायाम तथा दूसरी सामाजिक, मनोवैज्ञानिक जरूरतें पूरी की जानी चाहिए।
- बच्चों की मातृभाषा को रोकने या उनको मिटाने का प्रयास उनके व्यक्तित्व में हस्तक्षेप करना है।
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषाओं को बिना सुधारे उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए जिस रूप में वे होते हैं। कक्षा 4 के बाद अगर समृद्ध और रुचिकर मौके दिये जायें तो बच्चे स्वयं भाषा के मानक रूप ग्रहण कर लेते हैं। इस प्रक्रिया में गलतियां सीखने का हिस्सा बन जाती हैं।
- कहानी, कविता, गीत और नाटक हमारे सांस्कृतिक धरोहर तो है ही उनके माध्यम से बच्चे व्याकरण भी आसानी से सीख सकते हैं। उबाउ ढंग से व्याकरण सीखने के नियम बताने के बजाय।
- हमें कक्षाओं में एक बहु-भाषी वातावरण बनाना होगा। प्राथमिक स्तर पर हिन्दी के साथ स्थानीय भाषा व भारतीय भाषाओं का मिलाप उपयोगी होगा, और माध्यमिक कक्षाओं में किसी विदेशी भाषा का।
- सभी भाषाओं के शिक्षण में उपयुक्त रोचक तरीके और सामग्री इस्तेमाल होनी चाहिए।
- ऐसी पुस्तक महत्वपूर्ण होती है जो केवल तथ्यात्मक जानकारी न देकर अन्त:क्रिया के मौके दे।
- सामग्री के साथ बच्चों को खुद एवं सहपाठियों के साथ कार्य करने के मौके देने चाहिए।
- सम्पूर्ण समूह आधारित योजना बनाने के मौके देने चाहिए। जैसे कहानी सुनना, नाटक आदि जिनके आधार पर बच्चे विविध गतिविधियां कर सकेंगे।
- शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों ही पुस्तकालय को अधिगम आनन्द एवं तन्मयता के साधन के रूप में इस्तेमाल करें।
- किताबों एवं पत्रिकाओं के अलावा पुस्तकालय में सूचना तकनीक के नये आयामों की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि विद्यार्थी विश्व से जुड़ पाये।
- विद्यालय में सप्ताह में एक घण्टा पुस्तकालय अध्ययन को दिया जाना चाहिए।
- बच्चे स्वयं पुस्तक चुने न कि शिक्षक पुस्तक बांटे।
- माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सुन, समझ और पढ़कर नोट्स तैयार करने का अभ्यास कराया जाना चाहिए। उनमें पाठ्यपुस्तकों और कुंजी से नकल की प्रवृत्ति हतोत्साहित होगी।
- पत्र लेखन और निबन्ध लेखन की घिसी-पिटी गतिविधियों पर रोक लगाकर शिक्षा में कल्पना और मौलिकता को महत्त्वपूर्ण जगह दी जानी चाहिए।
- भाषा शिक्षण के द्वारा बच्चों के अपने सोच-विचार और आलोचनात्मक वृष्टि को भी विकसित किया जा सकता है।
- गणित शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों की गणितीय करण की क्षमताओं का विकास करना है। स्कूली गणित का सीमित लक्ष्य है-बच्चों की लाभप्रद क्षमताओं का विकास जैसे संख्या, संक्रिया, मापन, दशमलव, प्रतिशत। इसमें अगला कदम है बच्चों के गणितीय साधनों को विकसित करना ताकि ये गणितीय मान्यताओं से तार्किक परिणाम निकाल सकें।
- भारत में कला संस्कृति विविधता का जीता जागता उदाहरण है इसमें उनके लोक व शास्त्रीय गायन, नृत्य, संगीत, पुतले बनाना व मिट्टी का काम आदि है। इसमें से किसी भी कला का अध्ययन विद्यार्थियों के ज्ञान को समृद्ध करेगा, जीवन भर उनके काम आयेगा।
- कला शिक्षा के माध्यम से बच्चों को अपने आप विकसित होने का मौका दिया जाना चाहिए। उस पर अधिक जोर नहीं डाला जाना चाहिए।
- मिड-डे-मील कार्यक्रम और स्वास्थ्य जाँच को पाठ्यचर्या का अनिवार्य भाग बनाया जाना चाहिए।
- काम मानव जीवन को समृद्ध बनाता है यह ज्ञान, अनुशासन और आनन्द के नये क्षितिज खोजता है।
- आवास की समस्या को अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों को जीवन से जोड़ा जाये, क्योंकि वे अपनी जीविका के लिये प्राकृतिक जैव विविधता का आश्रय लेते हैं। विद्यार्थी इनके जीवन का अवलोकन व अभिलेखन करें।
- सामाजिक न्याय, शांति शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अवयव है। समानता और सामाजिक न्याय जिससे गरीबों, वंचितों और शोषितों का उत्पीड़न न होने पर जोर होना चाहिए।
- मानव अधिकार शांति की अवधारणा का केन्द्रीय आधार है, अगर लोगों के अधिकारों का हनन हो तो शांति का वातावरण नहीं बना रह सकता। मानव अधिकार का आधार गैर भेदभाव पूर्ण भाव और क्षमता है, जो समाज में शांति व्यवस्था कायम करने की दिशा में काम करती है।
- सभी बच्चों की भागीदारी हेतु निम्न बिन्दु भी आवश्यक हैं–
- विकलांगता एवं आवश्यकता वाले बच्चों को हर स्थिति में विद्यालय में प्रवेश मिलना चाहिए।
- समस्त विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को हर स्थिति में विद्यालय

में प्रवेश मिलना चाहिए।

- बच्चे फेल नहीं होते वे केवल स्कूल की असफलता को दर्शाते हैं।
- विकलांगता समाज द्वारा निर्मित है, इसे समाप्त करना चाहिए।
- बच्चों की भौतिक, सामाजिक एवं व्यवहार संबंधी बाधाएँ दूर करनी चाहिए।
- यदि पढ़ाना चाहते हैं तो बच्चों से सीखें, कमियों को नहीं बल्कि शक्तियों को पहचानें।
- विद्यालय को ऐसा केन्द्र बनाए जाने की आवश्यकता है जहां बच्चों को जीवन की तैयारी करायी जाये और यह भी सुनिश्चित किया जाये कि सभी बच्चों खासकर शारीरिक या मानसिक रूप से असमर्थ बच्चों, समाज के हाशिये पर जीने वाले बच्चों और कठिन परिस्थितियों में जीने वाले बच्चों को शिक्षा के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के सबसे ज्यादा फायदे मिलें।
- विद्यालय के समस्त बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता के अवसर मिलने चाहिए।
- आरम्भिक वर्षों में भाषा के तीन कौशलों – बोलने, सुनने और पढ़ने के अभ्यास पर जोर देना चाहिए। बाद में लेखन कौशल को इसमें शामिल करना चाहिए।
- कम्प्यूटर और कम्प्यूटिंग टैक्नोलोजी का आधुनिक समाज को गढ़ने में अत्यधिक महत्व है, हमें ऐसी शिक्षित जनता चाहिए जो समाज और मनुष्य जाति की बेहतरी के लिए ऐसी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर सके।
- छात्र-छात्राओं को पाठ्यचर्या में आये भौतिक स्थलों का अवलोकन कराकर शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है।
- वर्ष के आरम्भ या अन्त में दो या तीन दिन स्कूल की वार्षिक योजना की तैयारी की जानी चाहिए जिससे ऐसी गतिविधियाँ तैयार हो कि सभी विद्यार्थी भाग ले सकें।
- स्कूली पाठ्यचर्चा के केन्द्र में विद्यार्थी है, जो ज्ञान के ग्रहणकर्ता ही मात्र नहीं है बल्कि अपने व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों से ज्ञान की रचना में जुटे हुये हैं। यह सामाजिक विवेक के लक्ष्यों से प्रेरित हैं।
- शिक्षण के दिनों में कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए और 200 दिन तक एक सत्र में शिक्षण कार्य किया जाना चाहिए।
- स्कूल को बच्चों के अधिकारों के बचाव के लिये उनके परिवार वालों से लगातार संवाद बनाये रखना चाहिए ताकि उपरोक्त लचीलेपन का लाभ उठाकर बच्चों के खेल के समय को कार्य में तब्दील न करें।
- स्कूल में बिताया समय या स्कूल में शिक्षा में बिताया गया समय किसी भी हालत में छह घण्टों (पूर्व प्राथमिक शिक्षा के तीन घण्टों) में से कम न हो। उस पर कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए।
- आम सभा के दौरान प्रेरणादायक कहानी, संगीत, मेहमान से बातचीत, यात्रा का अनुभव सुनाने आदि विषयों पर बातचीत की जा सकती है।
- प्राथमिक कक्षा 2 तक कोई गृहकार्य नहीं देना चाहिए और कक्षा 3 से 2 घण्टे प्रति सप्ताह तक गृहकार्य देना चाहिए। इसी प्रकार-उच्च प्राथमिक में एक घण्टा प्रतिदिन, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक में 2 घण्टा प्रतिदिन।
- शिक्षक प्रशिक्षण व उसके मूल्यांकन को एक सतत प्रक्रिया के रूप में अपनाने की जरूरत है।
- "शिक्षा बिना बोझ के" रिपोर्ट-"शिक्षा बिना बोझ के (1993) की रिपोर्ट में इस विषय के जरिये बच्चों में सामाजिक दशाओं की समझ और उनके विश्लेषण की योग्यता पैदा करने की सिफारिश की गई है। तथ्यों को रटना बन्द करने को कहा गया है।

  1. दसवीं और बारहवीं के अन्त में होने वाली परीक्षा की विधि बदलने का सुझाव दिया गया है।

  2. दसवीं और बारहवीं परीक्षा ऐच्छिक हो।

  3. मूल्यांकन के बहुविध रूप होने चाहिए, परीक्षा हॉल में कागज-कलम से ली गई परीक्षा ही पर्याप्त नहीं है। मूल्यांकन/परीक्षा व्यवस्था ऐसी हो कि वह बच्चों को स्वलिखित जाँच से हटकर व्याख्या, विश्लेषण और समस्या समाधान जैसी उच्चतर क्षमताओं की जाँच कर सकें।
- विद्यार्थियों को अधिकतम अपनी अभिरुचि के अनुसार विषयों के विकल्प चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, हालांकि प्रत्येक स्कूल में सभी विषयों का उपलब्ध होना संभव नहीं हो सकता।
- खुली पुस्तक परीक्षा का सुझाव।
- सतत व्यापक मूल्यांकन।
- विज्ञान की पाठ्यचर्या को सामाजिक बदलाव लाने के उपकरण के रूप में प्रयोग करना चाहिए ताकि वर्ग, लिंग, जाति, धर्म व क्षेत्र आधारित मतभेद कम हो सकें।
- एक समतामूलक और शांतिमूलक समाज का ज्ञान-आधार तैयार करने में सामाजिक विज्ञान की शिक्षा मददगार हो सकती है।
- इसके भीतर विविध विषयों जैसे-इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मानव विज्ञान समाहित होते हैं।
- सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्चा व सामग्री ऐसी हो जो विद्यार्थियों में समाज के प्रति आलोचनात्मक समझ का विकास करे, पर यह चुनौती भरा काम है।
- समाज विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों को इस तरह से विकसित किया जायें कि उनमें आदिवासी, दलितों और नागरिक अधिकारों से वंचित जनता के दृष्टिकोण को भी जगह दी जाये।
- पढ़ाने के दौरान विषय वस्तु को अधिकाधिक संभव तरीकों से बच्चे के दैनिक जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। विद्यार्थियों को इसके लिये उत्साहित किया जाये कि वे अध्ययन और अवलोकन में पाठ्यपुस्तकों से भी आगे निकलें।

### एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार शिक्षण विधि–

- करके सीखना।
- निरीक्षण करके सीखना।
- परीक्षण करके सीखना।
- सामूहिक विधि द्वारा सीखना।
- मिश्रित विधि द्वारा सीखना।

Scanned with CamScanner

# अभ्यास प्रश्न पत्र

❖ एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार गणित शिक्षण होनी चाहिए ? **(BTET-I लेवल-2011)**

(A) बालकेन्द्रित (B) शिक्षण केन्द्रित

(C) कक्षा-कक्ष केन्द्रित (D) पाठ्यपुस्तक केन्द्रित (A)

❖ NCF 2005 में कला शिक्षा को विद्यालय में जोड़ने का उद्देश्य है– **[REET L-2 2016]**

(A) सांस्कृतिक विरासत की प्रशंसा करना

(B) छात्रों के व्यक्तित्व और मानसिक स्वास्थ्य को विकसित करना।

(C) केवल (A) सही है।

(D) दोनों (A) और (B) सही है। (D)

❖ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में बातचीत की गई? **[RTET II लेवल-2011]**

(A) ज्ञान स्थायी है व दिया जाता है से ज्ञान का विकास होता है और इसकी संरचना होती है।

(B) शैक्षिक केन्द्र से विषय केन्द्र पर हो

(C) विद्यार्थी केंद्रित से अध्यापक केन्द्रित की ओर हो

(D) इनमें से कोई नहीं (a)

❖ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 के अन्तर्गत परीक्षा सुधारों में निम्नलिखित में से किस सुधार को सुझाया गया है? **[RTET II लेवल-2011]**

(A) खुली पुस्तक परीक्षा

(B) सतत्/निरन्तर एवं व्यापक मूल्यांकन

(C) सामूहिक कार्य मूल्यांकन

(D) इनमें से सभी (D)

❖ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में निम्नलिखित में से किस परीक्षा सम्बन्धी सुधारों को सुझाया गया है? **[RTET I-2011]**

(A) कक्षा 10 की परीक्षा ऐच्छिक हो।

(B) विद्यालय शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं पर राज्यस्तरीय परीक्षा संचालन।

(C) प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं को ऐच्छिक।

(D) उपर्युक्त सभी। (A)

❖ राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा, 2005 में शांति शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ क्रियाओं की अनुशंसा की गई, पाठ्यक्रम रूपरेखा में निम्नलिखित में से किसे सूचीबद्ध किया गया है? **[RTET II लेवल-2012]**

(A) महिलाओं के प्रति आदर एवं जिम्मेदारी का दृष्टिकोण विकसित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाए।

(B) नैतिक शिक्षा को पढ़ाया जाए

(C) शांति शिक्षा को एक अलग विषय के रूप में पढ़ाया जाए

(D) शांति शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए (A)

❖ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में बहुभाषा को एक संसाधन के रूप में समर्थन दिया गया है, क्योंकि **[RTET I लेवल-2012]**

(A) यह एक तरीका है जिसमें प्रत्येक बालक सुरक्षित महसूस करें

(B) भाषागत पृष्ठभूमि के कारण कोई भी बालक पीछे न छूट जाये

(C) यह बालकों को अपने विश्वास के लिए प्रोत्साहन देगा

(D) इनमें से सभी (D)

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 19 प्रमुख मनोवैज्ञानिक व शिक्षा में योगदान

- **अरस्तु** - शिक्षा मनोविज्ञान की शुरूआत इनके विचारों से मानी जाती है। इन्होंने विचारों के बीच साहचर्य स्थापित होने में बोध को महत्व दिया है।
- **रूसो** - शैक्षिक अध्यापन का सिद्धान्त दिया। इसमें स्वभाविक रूचि के अनुसार शिक्षण पर बल
  - अपनी पुस्तक ईमाईल (1762) में कहा कि व्यक्ति में ज्ञान का अर्जन उसकी अनुभूति के कारण होता है।
- **जॉन लॉक ( इंग्लैण्ड )**
  - अनुभववाद के जनक
  - मन कोरीपट्टी के समान है जिस पर बालक अपना अनुभव लिखता है।
- **सिगमण्ड फ्रायड ( 1856-1939 वियना )**
  - नैदानिक मनोविज्ञान का आधार तैयार किया, प्रसिद्ध मनोविश्लेषण वाद का सिद्धान्त, अचेतन व काम प्रेरक पर सर्वाधिक बल देने वाले, मनोगतिक उपागम के प्रतिपादक।

  नोट :- मनोविश्लेषणवाद को प्रथम बल कहा जाता है।
- **कार्लजुंग ( 1875-1961 )** - विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के जनक।
- **मैलीन फैलिन ( 1882-1960 )**
  - बाल मनोविज्ञान पर कार्य किया
  - खेल को बाल विकास के लिए सर्वोत्तम बताया है।
- **जीन पियाजे ( 1896-1980 स्विट्जरलैण्ड )** - संज्ञानवाद के पिता, भाषा विकास, नैतिक विकास व मानसिक विकास पर कार्य किया।
- **कैटेल** - व्यक्तित्व के विशेषक गुण सिद्धान्त प्रधान 16 गुण बताये।
- **माकोश** - शैक्षिक कार्यक्रम बनाया विज्ञान व मानव शास्त्र को संयोजित किया।
- **जॉन कोमिनियस** - बालक की सीखने की क्षमता, उम्र के अन्तर से प्रभावित होती है, वे उनको जल्दी सीखते हैं जिनसे संबंधित अनुभवों को एकत्रित कर लेते हैं।
- **जुआन विवास** - आगमन अध्ययन की प्रमुख विधि बनाने पर बल।
- **जुआन हरबर्ट** - वैज्ञानिक अध्यापन का जनक
- **पैस्टोलॉजी** -प्रथम प्रयुक्त शिक्षा मनोविज्ञानी।
- **एन. गैग** - हैण्ड बुक ऑफ रिसर्च ऑन टीचिंग का सम्पादन किया। इनकी संस्था का नाम स्टेनफॉर्ड सेन्टर फॉर रिसर्च एण्ड डवलपमेंट इन टीचिंग
- **लेटाहॉलिंग वर्थ** - पहली महिला मनोवैज्ञानिक जिन्होंने प्रतिभाशाली शब्द का प्रयोग उन बालकों के लिए किया जिनका प्राप्तांक बुद्धि परीक्षण बहुत उच्चा था।
- **विलियम स्टर्न** - सर्वप्रथम बुद्धि लब्धि का सम्प्रत्यय दिया।
- **इविंगहास**
  - जर्मनी के मनोवैज्ञानिक जिन्होनें क्रमिक या अनुक्रमिक सीखना विधि का प्रतिपादन, स्मरण तथा विस्मरण पर व्यापक अध्ययन किया।
  - पुनः सीखना विधि का प्रतिपादन पुस्तक - "On Memory" में विस्मरण वक्र का प्रतिपादन किया।
- **अल्बर्ट बाण्डूरा ( कनाडा )**
  - देन - सामाजिक अधिगम/सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त।
  - बेबी डॉल पर प्रयोग, भूमिका अधिगम पर कार्य किया।
- **अल्फ्रेड बिने ( 1857 - 1911 फ्रांस )**
  - देन - पहले बुद्ध परीक्षण के निर्माता-1905
  - पुस्तक - मैन्टल फटीग (1898)
  - मानसिक परीक्षण का सम्प्रत्यय दिया।
- **बेंजामिन ब्लूम ( 1913 - 1999 अमेरिका )**
  - देन - शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण
- **जेरोम ब्रूनर ( 1915 - 2016 अमेरिका )**
  - देन - Congnitive Psychology रचनात्मक अधिगम
  - पुस्तक - शिक्षा की प्रक्रिया (1961)
  - A Study of Thinking (1956)
  - एनेक्टिव, अनुप्रतिकात्मक व प्रतिकात्मक अवस्था का वर्गीकरण, निर्देश अवस्था सिद्धान्त का प्रतिपादन।
- **जॉन डिवी ( 1859 - 1952 अमेरिका )**
  - प्रयोजनवाद के जनक
  - लोकतंत्र व शिक्षा, अनुभव व शिक्षा पुस्तकों के लेखक
  - प्रकार्यवादी
- **मार्गरीड मीड**
  - अनुदैर्ध्य अध्ययन सामोआ द्वीप पर किया गया।
- **आलपोर्ट**
  - व्यक्तित्व विशेषक सिद्धान्त, कार्यात्मक स्वायत्तता का सम्प्रत्यय दिया।
- **एडविन गुथरी**
  - परवर्ती व्यवहारवादी
  - तीन विधियों का प्रतिपादन किया - (1) सीमा विधि (देहली विधि) (2) थकान विधि (3) परस्पर विरोधी उद्दीपन विधि
- **एच.जे आइसेक**
  - व्यक्तित्व के 3 आधारभूत आयाम बताये।
- **एरिक एरिक्सन**
  - किशोरावस्था से सम्बन्धित अनन्यता संकट सम्प्रत्यय दिया। (अहं अनन्यता)
- **अल्फ्रेड एडलर**
  - वैयक्तिक मनोविज्ञान के जनक।
- **लियॉन फेस्टिंगर**
  - संज्ञानात्मक विसंगवादिता/विसंगति का सम्प्रत्यय दिया।
- **बेंजामिन ली व्होर्फ**
  - भाषायी सापेक्षता प्राकल्पना का प्रतिपादन - भाषा विचार की अन्तर्वस्तु का निर्धारण करती है।
- **इरिक इरिक्सन**
  - मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त - 08 अवस्था बतायी है, जीवन

Scanned with CamScanner

अवधि उपागम दिया।

✦ इवान पावलॉव
- रूस के शरीर विज्ञानी।
- शास्त्रीय अनुबन्धन के जनक, नोबेल पुरस्कार से सम्मानित। उद्दीपक सामान्यीकरण का प्रत्यय दिया।

✦ जे.बी. वाटसन
- व्यवहारवाद के पिता (अमेरिका)
- शास्त्रीय अनुबन्धन में 'भय (खरगोश)' पर प्रयोग किया।
- प्रसिद्ध वाक्य 'मूझे चाहे जो बालक दे दो'' पुस्तक – व्यवहारवाद

✦ विलियम वुण्ट
- जर्मनी – प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला स्थापना की (1879)
- सरंचनावाद के प्रतिपादक।

✦ अब्राहिम मैस्लो
- मानवतावाद, आत्मसिद्धि, आवश्यकता, सोपान पर कार्य किया। पूर्णत: प्रकार्यशील व्यक्ति सम्प्रत्यय दिया है।

✦ डेनियल गोलमैन
- संवेगात्मक बुद्धि का प्रतिपादन किया।

✦ सी. डब्ल्यू बीयर्स
- अमेरिका के मनोवैज्ञानिक जिन्होंने मानसिक स्वास्थ्य का सम्प्रत्य दिया।

✦ रॉबर्ट गैने (1916-2002 - अमेरिका)
- पुस्तक – Conditions of Learning
- अधिगम के 8 प्रकार बताये।

✦ हावर्ड गार्डनर
- अमेरिका
- पुस्तक – Theory of Multiple Intelligences 1983 (Frames of Mind)
- बुद्धि के 9 प्रकार बताये।

✦ गैस्टाल्टवादी
- कोहलर, कोफ्का, वर्दीमर
- चिंतन के प्रकार बताये हैं
  (1) A–उत्पादी चिंतन (2) b– अशंत उत्पादी व अशंत अनउत्पादी/ यांत्रिक (3) y– प्रत्यत्न व भूल वाला चिंतन

✦ स्टेनले हॉल
- 1846-1924 अमेरिका।
- बालविकास व किशोरावस्था का अध्ययन किया।
- किशार अवस्था के जनक।

✦ विलियम जेम्स
- अमेरिका 1842-1910
- पुस्तक – मनोविज्ञान के सिद्धान्त
- अमेरिकन मनोविज्ञान के जनक
- प्रकार्यवाद के संस्थापक
- आत्मप्रत्यय, आदत, संवेग का जेम्स – लॉंज सिद्धान्त दिया

✦ लारेन्स कोहलरबर्ग (1927-87 अमेरिका)
- देन – नैतिक विकास की अवस्थाएँ (6)

✦ कार्ल रोजर्स (1902-1987 अमेरिका)
- देन – व्यक्तित्व स्वप्रत्यय धारणा

✦ मानवतावादी, अनुभवजन्य अधिगम, पर्यावरणवादी
- बाल केन्द्रित उपागम

✦ बी.एफ. स्कीनर (1904-1990 अमेरिका)
- व्यवहारवादी Operant Condtioning Theory के जनक
- पुस्तक – Schedules of Reinforcenent
- शाब्दिक व्यवहार पर बल दिया।
- Readical Behaviour के प्रतिपादक
- पुस्तक – Behaviour of Organisms
- पुनर्बलन को केन्द्रीय स्थान प्रदान किया।

✦ स्पीयरमैन (1863 - 1945 इंग्लैण्ड)
- बुद्धि के द्विकारक सिद्धान्त – G व S

✦ लेविस टर्मन (1877 - 1956 अमेरिका)
- बुद्धि लब्धि का सूत्र दिया – स्टेनफोर्ड बिने परीक्षण का निर्माण किया।

✦ एडवर्ड थॉर्नडाइक (1874 - 1994 अमेरिका)
- आधुनिक शिक्षा मनेविज्ञान के जनक
- प्रयास व त्रुटि सिद्धान्त, अधिगम के नियम, बुद्धि का मात्रा सिद्धान्त दिया

✦ लेव वायगोत्सकी-रूस (1896 - 1934)
- बालक के विकास पर सामाजिक
- सांस्कृतिक कारकों का अध्ययन (संस्कृति सामाजिक संदर्भ प्रदान करती। संस्कृति बौद्धिक विकास में निर्धारण करती है।)
- भाषा विकास का अध्ययन
- निकटस्थ विकास का सिद्धान्त
- सामाजिक निर्मितवाद।
- सामाजिक संज्ञान।
- उच्च मानसिक योग्याएँ संस्कृति का प्रतिफ्ल होती है।

✦ सी. बोनवेल – कार्य अधिगम पर कार्य किया।

✦ डेविड आशुबेल – शाब्दिक अधिगम – 4 प्रकार बताये।

✦ फ्रांसिस गाल्टन – व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अव्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन

✦ मिलर व डोलार्ड – तुल्य बल व्यवहार सिद्धान्त, सामाजिक अधिगम व अनुकरण सिद्धान्त पर कार्य किया।

✦ मोरर – द्विरूपी अनुकरणात्मक सिद्धान्त व तदनुभूतिक अधिगम पर कार्य किया।

✦ विलियम मैक्डूगल – इंग्लैण्ड के मनोवैज्ञानिक – मूल प्रवृत्तियों के प्रतिपादक, 14 संवेग बताये।

✦ पॉल कॉस्टा-राबर्ट मैके – व्यक्तित्व का पंच कारक मॉडल दिया

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 20 स्मरणीय तथ्य

## अधिगम के सिद्धान्त–

- प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त – थॉर्नडाइक
- अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धान्त – आई. पी. पावलॉव
- क्रमबद्ध व्यवहार का सिद्धान्त – सी. एल. हल
- अन्त:दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त – कोहलर, मैक्स वर्दीमर व कोफ्का।
- क्रिया प्रसूत अनुबन्धन का सिद्धान्त – बी.एफ स्कीनर
- सामाजिक अधिगम सिद्धान्त – अल्बर्ट बाण्डूरा
- संरचनात्मक अधिगम सिद्धान्त – जेरोम ब्रूनर
- अधिगम का मानवतावादी सिद्धान्त – मैस्लो
- अधिगम का क्षेत्रीय सिद्धान्त – कुर्त लेविन
- अधिगम का सूचना प्रसाधन सिद्धान्त – कार्ल रोजर्स
- चिह्न अधिगम का सिद्धान्त – एडवर्ड टोलमैन
- स्थानापत्र सिद्धान्त – एडविन गूथरी
- अनुकरण द्वारा अधिगम – हेगरटी
- शाब्दिक अधिगम का सिद्धान्त – आसुबेल
- अधिगम सोपानिकी सिद्धान्त – रॉबर्ट गेने
- अधिगम का सूक्ष्म सिद्धान्त – कोहलर

## अधिगम स्थानान्तरण के सिद्धान्त

- समान तत्वों का सिद्धान्त – थार्नडाइक
- सामान्यीकरण का सिद्धान्त – सी. एच. जड़
- सामान्य तथा विशिष्ट तत्वों का सिद्धान्त – स्पीयरमैन
- मानसिक शक्ति का सिद्धान्त – फैकल्टी साइकोलोजिस्ट्स
- गेस्टाल्ट सिद्धान्त – मैक्स वर्दीमर, कोफ्का
- औपचारिक मानसिक प्रशिक्षण का सिद्धान्त – गेट्स
- मूल्य अभिज्ञान का सिद्धान्त – रीगर और बैग्ले

## अभिप्रेरणा–

1. मनोविश्लेषण सिद्धान्त – सिगमण्ड फ्रायड
2. मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त – मैक्डूगल
3. उद्दीपन–अनुक्रिया का सिद्धान्त – व्यवहारवादी
4. व्यवहार के अधिगम का सिद्धान्त – सी. एल. हल
5. आत्मसिद्धि सिद्धान्त – मैस्लो
6. अधिगम का क्षेत्रिय सिद्धान्त – कुर्त लेविन
7. अभिप्रेरणा का शारीरिक सिद्धान्त – क्रेचमर, शैल्डन, विलियम जेम्स, विलियम वुण्ट।

## व्यक्तित्व–

1. मनोविश्लेषण सिद्धान्त – सिगमण्ड फ्रायड
2. नवमनोविश्लेषणवादी सिद्धान्त – युंग, एडलर, हार्नी, इरिकफ्रोम
3. जीवन अवधि उपागम – इरिक इरिक्सन
4. शील गुण उपागम – आलपोर्ट व कैटेल
5. मानवतावादी सिद्धान्त – मैस्लो

Scanned with CamScanner

6. सामाजिक संज्ञानात्मक उपागम – अल्बर्ट बाण्डूरा व वाल्टर
7. प्रतिकारक/विश्लेषक सिद्धान्त – कैटेल
8. आत्मप्रत्यय/स्वप्रत्यय सिद्धान्त – कार्ल रोजर्स
9. शरीर गठन उपागम सिद्धान्त – क्रेचमर व शैल्डन
10. व्यक्तित्व का मांग सिद्धान्त – हेनरी व मुर्रे ने

### बुद्धि सिद्धान्त–

1. बुद्धि का एक खण्डीय सिद्धान्त – अल्फ्रेड बिने
2. बुद्धि का द्विखण्ड सिद्धान्त – स्पीयरमैन
3. बुद्धि का त्रिखण्ड सिद्धान्त – स्पीयरमैन
4. बहुकारक सिद्धान्त – थार्नडाइक
5. मात्रा सिद्धान्त – थार्नडाइक
6. प्रतिमान सिद्धान्त – थॉमसन
7. पदानुक्रमिक महत्व का सिद्धान्त – सिरिल बर्ट व वर्मन
8. समूहकारक सिद्धान्त – थर्स्टन
9. बहुमानसिक योग्यता का सिद्धान्त – केली
10. बुद्धि का 'अ' या 'ब' का सिद्धान्त – हैब
11. बुद्धि का त्रितन्त्र का सिद्धान्त – स्टर्नबर्ग
12. बुद्धि का त्रिआयामीय सिद्धान्त – गिलफोर्ड
13. बुद्धि का आश्चर्यजनक सिद्धान्त – ब्लूम
14. बहुबुद्धि का सिद्धान्त – गार्डनर
15. आधुनिक बुद्धि का सिद्धान्त – हैब व कैटेल
16. संज्ञानात्मक/मानसिक बुद्धि का सिद्धान्त – जीन पियाजे
17. संकाय सिद्धान्त – रीड
18. त्रिअंशीय सिद्धान्त – जे. पी. गिलफोर्ड
19. धारा प्रवाह तथा स्पष्ट सिद्धान्त – केटल

### विकास के सिद्धान्त–

1. मनोलैंगिक सिद्धान्त – सिगमण्ड फ्रायड
2. मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त – इरिक्सन
3. सामाजिक अधिगम सिद्धान्त – अल्बर्ट बाण्डूरा
4. परिपक्वता का सिद्धान्त – गैसेल
5. संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त – जीन पियाजे
6. नैतिक विकास का सिद्धान्त – कोहलर बर्ग

### भाषा विकास के सिद्धान्त–

1. अनुबन्धन सिद्धान्त – पावलॉव, स्कीनर
2. सामाजिक अधिगम सिद्धान्त – बाण्डूरा
3. भाषा विकास सिद्धान्त – चौमस्की

### विस्मृति के सिद्धान्त–

1. बाधा का सिद्धान्त – मूलर/वुडवर्थ
2. दमन का सिद्धान्त – सिगमण्ड फ्रायड
3. अनाभ्यास का सिद्धान्त – थॉर्नडाइक व एंबिग हास

### नैतिक विकास के सिद्धान्त:–

1. मनोविश्लेषण सिद्धान्त – फ्रायड

Scanned with CamScanner

2. पुनर्बलन का सिद्धान्त – स्कीनर
3. अनुकरण का सिद्धान्त – बाण्डूरा व वाल्टर्स
4. नैतिक विकास सिद्धान्त – जीन पियाजे
5. नैतिक विकास सिद्धान्त – कोलहर बर्ग
6. मनोसामाजिक विकास सिद्धान्त – इरिक इरिक्सन

**अन्य स्मरणीय तथ्य–**

- आधुनिक मनोविज्ञान के जनक – विलियम जेम्स
- प्रकार्यवाद सम्प्रदाय के जनक – विलियम जेम्स
- आत्म सम्प्रत्यय की अवधारणा – विलियम जेम्स
- शिक्षा मनोविज्ञान के जनक – थॉर्नडाइक
- प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त – थॉर्नडाइक
- प्रयत्न और भूल का सिद्धान्त – थॉर्नडाइक
- संयोजनवाद का सिद्धान्त – थॉर्नडाइक
- उद्दीपन–अनुक्रिया का सिद्धान्त – थॉर्नडाइक
- प्रशिक्षण अन्तरण का सर्वसम अवयव का सिंद्धान्त – थॉर्नडाइक
- बिने–साइमन बुद्धि परीक्षण के प्रतिपादक – बिने तथा साइमन
- बुद्धि परीक्षणों के जन्मदाता – बिने
- बुद्धि का द्वय शक्ति का सिद्धान्त – स्पीयरमैन
- युग्म तुलनात्मक निर्णय विधि के प्रतिपादक – थर्स्टन
- समदृष्टि अन्तराल विधि के प्रतिपादक – थर्स्टन व चेव
- तरल ठोस बुद्धि का सिद्धान्त – आर. बी. कैटल
- प्रतिकारक (विशेषक) सिद्धान्त के प्रतिपादक – आर. बी. कैटल
- बुद्धि इकाई का सिद्धान्त – स्टर्न एवं जॉनसन
- बुद्धि लब्धि ज्ञात करने के सूत्र के प्रथम प्रतिपादक – विलियम स्टर्न
- संरचनावाद सम्प्रदाय के जनक – विलियम वुण्ट
- प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के जनक – विलियम वुण्ट
- विकासात्मक मनोविज्ञान के प्रतिपादक – जीन पियाजे
- संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त – जीन पियाजे
- हार्मिक का सिद्धान्त – विलियम मैक्डूगल
- मनोविज्ञान को मन मस्तिष्क का विज्ञान – पॉम्पोनाजी
- प्रतिस्थापक का सिद्धान्त – इवान पेट्रोविच पावलॉव
- समूह गतिशीलता सम्प्रत्यय के प्रतिपादक – लेविन
- सामीप्य सम्बन्धवाद का सिद्धान्त – गूथरी
- सम्भावना सिद्धान्त के प्रतिपादक – टॉलमैन
- अग्रिम संगठन प्रतिमान के प्रतिपादक – डेविड आसुबेल
- भाषायी सापेक्षता प्राक्कल्पना के प्रतिपादक – व्हार्फ
- विकास के सामाजिक प्रवर्तक – एरिक्सन
- अधिगम मनोविज्ञान का जन्म – एविंग हास
- अधिगम अवस्थाओं के प्रतिपादक – जेरोम ब्रूनर
- संरचनात्मक अधिगम का सिद्धान्त – जेरोम ब्रूनर
- शक्ति मनोविज्ञान का जनक – वॉल्फ
- अधिगम अन्तरण का मूल्यों के अभिज्ञान का सिद्धान्त – बागले
- स्व – यथार्थीकरण अभिप्रेरणा का सिद्धान्त – मैस्लो (मास्लो)
- उपलब्धि अभिप्रेरणा का सिद्धान्त – डेविड सी. मैक्लिएंड
- प्रोत्साहन का सिद्धान्त – वोल्स व काफमैन

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 21 महत्वपूर्ण शब्द व अर्थ

## प्रमुख शब्दावली

- **अभिक्षमता (Aptitude)** - किसी व्यक्ति की कौशलों के अर्जन के लिए अन्तर्निहित संभावना से है।
- **बुद्धि** - ऑक्सफोर्ड शब्दकोष में बुद्धि को प्रत्यक्षण करने, सीखने, समझने व जानने की योग्यता माना जाता है।
- **बुद्धि का फ्लिन्न प्रभाव** - फ्लिन्न द्वारा किये 8 देशों के अध्ययन के अनुसार हाल के दशक में सभी उम्र के व्यक्तियों के औसत बुद्धि लब्धि प्राप्तांक में वृद्धि हुई है जिसके कारण बुद्धि परीक्षण के मानकों को समायोजित करने की आवश्यकता है।
- **आग्रहिता (Assertiveness)** - वह व्यवहार या कौशल है जो हमारी भावना, आवश्यकता, इच्छाओं व विचारों के सुस्पष्ट व विश्वासपूर्ण संप्रेषण में सहायक होता है। खुलकर संवेगों को अभिव्यक्त करना। इसमें आत्मविश्वास व आत्मसम्मान उच्चतम स्तर पर होता है।
- **स्थिति स्थापन** - दबाव व विपत्ति के होते हुये भी उछल कर पुनः अपने स्थान पर पहले के समान वापस आने की स्थिति, स्थिति स्थापन है ऐसे भाव में जैसे -समर्थ हूँ, मैं कर सकता हूँ।
- **परिहार** - समस्या को स्वीकार या सामना करने से नकारना।
- **सामाजिक अवलम्ब** - ऐसे व्यक्तियों का अस्तित्व व उपलब्धता जिन पर हम विश्वास करते हैं कि उन्हें हमारी परवाह है, उसके लिए मूल्यवान है हम।
- **मनोगतिक उपागम (Psychodynamic) - फ्रायड**
  सबसे प्राचीन व प्रसिद्ध मॉडल जिसके अनुसार सामान्य व असामान्य व्यवहार व्यक्ति के अन्दर की मनोवैज्ञानिक शक्तियों द्वारा निर्धारित हैं ये आंतरिक शक्तियां गत्यात्मक होती हैं फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व निर्माण 3 शक्तियों - मुलप्रवृत्ति, अंतनेदि व आवेग (Id, Ego, Super Ego) से होता है।
- **सामाजिक सुकरीकरण** - दूसरों की उपस्थिति में भाव प्रबोधन व मूल्यांकन बोध के कारण परिचित कार्यो को निष्पादन में सुधार है। निष्पादन खराब होना सामाजिक अवरोध है।
- **प्राधिकारिक संतान पालन (Authoritative Parenting)** - बालकों के पालन पोषण की शैली जिसकें माता-पिता स्वतंत्र होने के लिए प्रोत्साहित करते है लेकिन एक निश्चित सीमा तक वे नियंत्रण भी रखते है।
- **व्यवहार** - कोई भी प्रकट क्रिया/प्रतिक्रिया जो मनुष्य या जानवर करता है और जिसका प्रेक्षण किया जा सके।
- **स्वायत्त तंत्रिका तंत्र** - इसमें अनुकंपी व पशुनकपी तंत्रिका तंत्र शामिल है यह परिधीय तंत्रिका तंत्र का भाग है संवेगात्मक व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण है।
- **अनुमस्तिष्क (Cerebellum)** - यह शारीरिक गति स्थिति व संतुलन पर नियंत्रण रखता है।
- **प्रमस्तिष्कीय वल्कुट** - मस्तिष्क का वह भाग जो उच्चतर संज्ञानात्मक व संवेगात्मक क्रिया का नियंत्रण करता है।
- **प्रात्यक्षिक स्थैर्य (Perceptual Constancy)** - संवेदी क्रिया के विभिन्न प्रतिमानों से संसार/व्यक्ति बारे में समान निष्कर्ष।
- **कायिक तंत्रिका तंत्र** - परिधीय तंत्रिका तंत्र का वह भाग जो ऐच्छिक पेशियों को नियंत्रित करता है।
- **अनुकपी तंत्रिका तंत्र** - स्वायत्त तंत्रिका तंत्र का वह भाग जो शरीर को सचेत करता है दबावमय स्थिति में ऊर्जा को गतिशील बनाता है।
- **पूर्वलक्षी अवरोध (Retroactive Interference)** - एक स्मृति प्रक्रिया जिसमें नवीन सीखी गई जानकारी पूर्व भंडारित समान सामग्री की पुनः प्राप्ति को रोकती है।
- **उर्ध्व चिंतन** - इस चिंतन में वैसी मानसिक क्रियाएँ शामिल हैं जो निम्न व उच्च स्तर के सम्प्रत्ययों के मध्य एक सीधी रेखा में चलता है। एक ही दिशा के चलता है।
- **छः चेतन टोप - एडवर्ड की बोनो द्वारा विकसित प्रविधि जिसने**

1. सफेद टोप - सूचना, तथ्यों व आकृति का संकलन करना होता है।
2. लाल टोप - विषय संबंधित संवेदना की अभिव्यक्ति व संवेगों का संकलन
3. काला टोप - निर्णय, सावधानी व तर्क को दिखाता है।
4. पीला टोप - काम किससे चलेगा व क्यों लाभकारी होगा।
5. हरा टोप - सर्जन व परिवर्तन का सूचक
6. नीला टोप - स्वयं चिंतन ना करके प्रक्रम का प्रकिया के बारे में चिंतन

- **विचारावेश विधि** - आसबोर्न द्वारा विकसित सर्जनात्मकता विकास की विधि।
- **PQRST विधि** - थॉमस व रॉबिन्सन द्वारा स्मृति की विधि जिसके
  P = Preview - अवलोकन
  Q = Question - प्रश्न करना
  R = Read - पढ़ना
  S = Self-recitation - स्वतः पढ़ना
  T = Test - परीक्षण करने पर बल दिया गया है।
- **मूल रंग** - लाल, हरा व पीला
- **रेटिना** - आँख के पीछे की ओर कोशिका की परत जिनसे प्रकाश संग्रहक स्थित होते हैं।
- **तारत्व (Pitch)** - ध्वनि की आवृति की प्रत्यक्षपरक व्याख्या।
- **सेतु/पोन्स** - मस्तिष्क का वह भाग जो नींद से जागने की क्रिया व स्वप्न देखने से संबंधित है।
- **आर्थी ( अर्थगत ) स्मृति (Semantic Memory)** - दीर्घ कालिक स्मृति का घटक जो शब्दों व संप्रत्ययों के मूल अर्थो का संग्रह करता है।
- **कार्यकारी स्मृति** - स्मृति की प्रक्रिया जो प्रत्यक्षण की नवीन घटना व अनुभवों को संरक्षित रखती है।
- **पुनः रूद्धार संकेत** - उपलब्ध आंतरिक/बाह्य उद्दीपक जो स्मृति भंडार से सूचनाएँ प्राप्त करने में सहायता करते हैं।
- **प्रतिवर्त चाप (Reflex Arc)** - एक ग्राहक तंत्रिका कोशिका व अपवाही तंत्रिका कोशिका जो उद्दीपक अनुक्रिया क्रम के मध्य मध्यस्थता करती है।
- **आकृति स्थैर्य (Shape Constancy)** - किसी वस्तु को अलग-अलग कोण से देखने पर भी उसका रूप स्थिर रहता है।
- **आकार स्थैर्य** - परिचित वस्तु का उसी आकार में देखने की प्रवृति जबकि प्रतिभा भिन्न होती है।
- **मॉडलिग** - बाण्डुरा की अवधारणा जिसके अनुसार बालक दूसरे को प्रेक्षण व अनुकरण से सीखता है।
- **निषेधात्मक प्रबलक (Negetive Reinforcer)** - एक अप्रिय उद्दीपक जिसको हटा देने से अनुक्रिया की दर में बढ़ोतरी होती है।
- **शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis)** - भविष्य कथन की किसी प्रयोग में स्थितियों के मध्य कोई अंतर नहीं होगा अथवा परिवत्यों के

Scanned with CamScanner

मध्य कोई संबंध नहीं होगा।

- प्रत्यक्षण (Perception) - जो संवेगी सूचना को संगठित करती है।
- कोर्टी अंग - आधार झिल्ली की सतह पर स्थित संरचना जिसमें सुनने के ग्राहक होते हैं।
- परानुकम्पी भाग - स्वायत तंत्रिका तंत्र का भाग जो शरीर की आंतरिक प्रक्रिया के प्रतिदिन के कार्यो को नियंत्रित करता है।
- निष्पादन परीक्षण (Performance Test) - जिनमें भाषा की आवश्यकता नहीं होगी।
- शरीर क्रिया मनोविज्ञान - मानव व पशु व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन जो शारीरिक प्रक्रिया के संबंध पर आधारित होता है। जैसे - तंत्रिका तंत्र, हार्मोन, संवेगी अंग।
- अंत स्थिति/आच्छादन (Interposition) - गहनता प्रत्यक्षण का संकेत जो इस पर आधारित है यदि एक वस्तु दूसरी को आच्छदित करती प्रतीत हो तो वह निकटत होगी।
- असत्य सूचक (Lie Detector) - झूठ बोलने पर उत्पन्न भय व उत्तेजना के घटक को व्यक्त करता हैं।
- अनुरक्षण पूर्वाभ्यास - किसी सूचना का सक्रियता से दोहराया जाना।
- मीम्स - मानव समाज के DNA जो मन, व्यवहार व संस्कृति के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करते है।
- मानस चित्रण (Mental Representation) - किसी उद्दीपकों के वर्ग का मानसिक प्रतिरूप बनना।
- मानसिक विन्यास (Mental Set) - किसी नयी समस्या के लिए पूर्व युक्त विधि से अनुक्रिया करने की प्रवृति/यह समस्या समाधान का अवरोध है।
- प्राकृतिक वरण - डार्विन अवधारणा - जीवन विकासवादी प्रक्रिया जो यह मानती है जो जीवित रहने व पुनरूत्पादन के लिए सबसे योग्य है वो ही जीवित रहेगा।
- संवरण (Closure) - संगठनात्मक प्रक्रिया जो अपूर्ण आकृतियों का पूर्ण के रूप में प्रत्यक्षण करवाती है।
- वर्णाघंता (Colour Blindness) - रंगों का प्रत्यक्षण करने में असमर्थता।
- वर्ण स्थैर्य (Colour Constancy) - किसी परिचित वस्तु में एक ही रंग देखने की प्रवृत्ति।
- फाई घटना - गति संबंधि एक भ्रम जो चाक्षुष उद्दीपक को एक के बाद एक तीव्र गति से उपस्थित करने पर होते है।
- सम्प्रत्यय (Concept) - वस्तु, विचार, अनुभव या व्यक्तियों की सामान्य श्रेणी जिसके सदस्यों में समान गुण विद्यमान होते है।
- तम व्युनकूलन (Dark Adaptation) - वह प्रक्रिया जिसमें आँखें कम प्रकाश में भी रोशनी के प्रति संवेदनशील हो जाती हैं।
- डी आक्सीराम्ब्रोन्यूक्लिक एसिड (DNA) - कोशिका का आनुवांशिक पदार्थ जो केन्द्रक में स्थित होता है।
- द्वि संकेत सिद्धान्त (Dual Coding) - सूचना प्रक्रिया सिद्धान्त में पैवियों द्वारा दिया जिसके अनुसार आर्थी व चाक्षुष संकेतों से स्मृति बढ़ती है।
- प्रतिध्वन्यात्मक स्मृति (Echoic Memory) - ध्वन्यात्मक उद्दीपको की क्षणिक संवेदी स्मृति ध्यान ना होने पर भी 3-4 सेकेण्ड में ध्वनि का प्रत्याहान किया जा सकता।
- घटनापरक स्मृति (Episodic) - दीर्घकालीन स्मृति का प्रकार जो आत्मगत या घटना विशेष को धारण करती है।
- सूक्ष्म पेशीय कौशल - जो सूक्ष्म गति से संबंधित है। जैसे - अंगुलियों का कौशल - लिखना।
- फ्यूग अवस्था (Fugue Stage) - स्मृति लोप के साथ व्यक्ति वास्तविक क्षेत्र से पलायन करके दूसरे क्षेत्र में नये जीवन का प्रारम्भ कर सकता है।
- प्रदीप्ति (Illumination) - सर्जनात्मक प्रक्रिया की अवस्था जिसमें समस्या समाधान के सभी तथ्य एक सही जगह आ जाते हैं।
- उद्भवन (Incubation) - सृजनात्मक प्रक्रिया की अवस्था जिसमें चेतन स्तर ना होकर अचेतन स्तर पर समाधान नजर आता है।
- व्यतिकरण/अवरोध (Interference) - अधिगमकर्ता के वे क्रियाकलाप जो अधिगम प्रक्रिया अवरोध उत्पन्न करके विस्मरण को बढ़ावा देते हैं।
- प्रासंगिक अधिगम (Incidental Learning) - वह अधिगम जो ऐच्छिक ना होकर अन्य असंबद्ध क्रिया कलाप के तहत हो जाते हैं।
- अंतर्भूत अभिप्रेरणा (Intrinsic Motivation) - स्वयं के लिए किसी व्यवहार को करने व प्रभावशाली होने की आन्तरिक इच्छा।
- संज्ञानात्मक मूल्यांकन प्रणाली (PASS) - योजना अवधान सहकालिक, अनुक्रमिक प्रक्रिया के मापन की परीक्षण माला।
- सर्वसम अभिवृत्ति परिवर्तन - विद्यमान अभिवृत्ति की दिशा में दृष्टिकोण में परिवर्तन करना।
- संस्था विमुक्ति - पूर्व मानसिक रोगी को संस्था से समुदाय में भेजने की प्रक्रिया।
- विद्युत आक्षेपी चिकित्सा - एक ध्रुवीय अवसाद का उपचार करने में प्रयुक्त आघात चिकित्सा।
- अनन्यता (Identity) - व्यक्ति के विशिष्ट लक्षण हम क्या कर सकते है क्या भूमिका है इत्यादि।
- नैमित्तिक परिप्रेक्ष्य (Instrumental Perspective) - इस उपगम में भौतिक वातावरण का अस्तित्व मनुष्य के सुख व कल्याण के उपयोग के लिए है।
- अभ्यावश्यकताएँ (Metaneeds) - आवश्यकता पदानुक्रम में शीर्षस्थ आवश्यकताएँ - आत्मसिद्धि, आत्मसम्मान जिनकी संतुष्टि निम्न आवश्यकता की पूर्ति के बाद ही हो सकते है।
- अनुनयता (Persuasibility) - अभिवृति परिवर्तन की मात्रा का स्तर।
- आसन्नता प्रभाव (Recency effect) - सबसे अंत में प्राप्त होने वाली सूचना की प्रबल भूमिका होती है।
- अन्यारोपण (Transference) - मनोविश्लेषण करने वाले व्यक्ति की चिकित्सक के प्रति प्रबल सकारात्मक या नकारात्मक भाव।
- व्यवहारवाद - वाटसन, इसे द्वितीय बल कहा जाता है।
- उत्तरव्यवहारवादी/परवर्ती व्यवहारवादी - गुथरी, हल, स्कीनर
- स्कीमा - सूचनाओं की संगठित संरचना जो समस्या समाधान में उपयोगी है।
- किशोरावस्था - बाल्यावस्था से वयस्क होने के पहले की विकासात्मक अवधि, जो कि लगभग 10-12 वर्ष की उम्र से प्रारंभ होकर 18 से 22 वर्ष की उम्र तक विस्तृत है।
- दुश्चिंता - पूर्व कथीय शरीर क्रियात्मक परिवर्तनों के साथ आशंका अथवा भय की सामान्य अनुभूति।
- उपागम-उपागम द्वंद्व - दो समान प्रिय या इच्छित लक्ष्यों के बीच चयन का द्वंद्व।
- कृत्रिम बुद्धि - यह क्षेत्र मशीनों की निर्मित्ति (जैसे - कम्प्यूटर) से संबंद्ध है जो, कि जटिल काम कर सकती है, जिसके लिए पहले मानव बुद्धि की आवश्यकता समझी जाती थी।
- सहचारी अधिगम - ऐसा अधिगम जिसमें कुछ घटनाएँ साथ-साथ घटित होती है। ये घटनाएँ दो उद्दीपक हो सकती हैं (जैसे कि प्राचीन अनुबंधन में) या एक अनुक्रिया और उसका परिणाम (जैसा कि क्रिया प्रसूत अनुबंधन में) हो सकती है।

Scanned with CamScanner

- **व्यवहार** – कोई भी प्रकट क्रिया/ प्रतिक्रिया जो मनुष्य या जानवर करता है तथा जिसका किसी प्रकार प्रेक्षण किया जा सकता है।
- **व्यवहारवाद** – एक विचारधारा जो वस्तुनिष्ठता, प्रेक्षणीय व्यवहारात्मक अनुक्रियाओं, पर्यावरणीय निर्धारकों और सीखने पर बल देती है।
- **व्यक्ति अध्ययन** – एक तकनीक जिसमें एक व्यक्ति का गहन अध्ययन किया जाता है।
- **केन्द्रिका तंत्रिका तंत्र** – तंत्रिका तंत्र का उपतंत्र, जो मस्तिष्क और मेरूरज्जू से बना होता है।
- **शिरः पदाभिमुख संरूप** – वह क्रम, जिसमे सबसे अधिक विकास शीर्ष पर होता है। आकार, वजन और कम में शारीरिक वृद्धि के साथ विभेदन क्रमशः ऊपर से नीचे की ओर होता है।
- **कालानुक्रमिक आयु** – उन वर्षो की संख्या जो किसी व्यक्ति के जन्म के बाद से लेकर गणना के समय तक गुजर गए, जिसका सामान्यतः उम्र से तात्पर्य होता है।
- **संज्ञान** – जानने के साथ जुड़ी सभी मानसिक प्रक्रियाएँ यथा– प्रत्यक्षण करना चिंतन करना और याद करना आदि। यह सूचना के प्रक्रमण, समझ एवं संप्रेक्षण संबंधित है।
- **संज्ञानात्मक उपागम** – वह दृष्टिकोण जो कि मानव चिंतन और जानने की सभी प्रक्रियाओं को मनोविज्ञान के अध्ययन के केन्द्र में रखने पर बल देता है।
- **संज्ञानात्मक अधिगम** – वैसा अधिगम जिसमें प्रत्यक्षण, ज्ञान एवं विचार की पुनर्व्यवस्था अंतर्निहित होती है।
- **संज्ञानात्मक मानचित्र** – एक व्यक्ति के परिवेश की रूपरेखा का मानसिक प्रतिरूप उदाहरणार्थ एक भूल-भुलैया की खोजबीन के बाद चूहे इस तरह व्यवहार करते हैं मानों उन्होंने उसका संज्ञानात्मक मानचित्र सीख लिया हो।
- **अनुबंधित अनुक्रिया** – प्राचीन अनुबंधन में एक अनुबंधित उद्दीपक के प्रति सीखी गई या अर्जित अनुक्रिया।
- **अनुबंधित उद्दीपक** – एक तटस्थ उद्दीपक अननुबंधित उद्दीपक के साथ बार-बार के साहचर्य से अनुबंधित अनुक्रिया प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है।
- **अनुबंधन** – एक व्यवस्थित प्रक्रिया जिसके माध्यम से उद्दीपक के प्रति नयी अनुक्रियाएँ सीखी जाती है।
- **टोकन इकोनॉमी** – वांछित व्यवहार के बदले टोकन देना तथा टोकन के बदले पुरस्कार देना।
- **S-O-R - Stimulus Organisinic Variable** - Response उद्दीपक प्राणी-अनुक्रिया सूत्र – वुडवर्थ ने दिया।
- **देहली मॉडल** – सर्जनात्मक कार्य के लिए बुद्धि का न्यूनतम स्तर आवश्यक है।
- **अभिसारी चिंतन** – ऐसा चिंतन जो समस्या के एक सही समाधान की ओर निर्देशित होता है।
- **अनुदैर्ध्य अध्ययन** – एक ही विषय के विकास का अध्ययन लम्बे समय तक किया जाता है।
- **सर्जनात्मकता** – अभिनव और असाधारण तरीके से सोचने की योग्यता और समस्याओं को अनन्य ढंग से हल करना।
- **निगमनात्मक तर्कना** – किसी तर्क की आधारशीला को स्वीकार कर एक निष्कर्ष तक पहुँचना और फिर औपचारिक तार्किक नियमों का अनुसरण करना।
- **विभेदन** – प्राचीन अनुबंधन में एक अनुबंधित और अन्य दूसरे उद्दीपक जो किसी अननुबंधित उद्दीपक का संकेत नही देते इनके बीच विभेद करने की क्षमता। क्रियासप्रसूत अनुबंधन में उद्दीपकों के प्रति अलग ढंग से अनुक्रिया करना जो यह संकेत उद्दीपकों के प्रति अलग ढंग से अनुक्रिया करना जो यह संकेत भेजता है कि कोई व्यवहार प्रबलित होगा या नही प्रबलित होगा।
- **अपसारी चिंतन** – ऐसा चिंतन जो मौलिक आविष्कारशील और लचीला है। ऐसे प्रश्न जिनके कई उत्तर हो सकते हैं, उन सभी प्रकर के उत्तरों को खोजने के लिए उत्तर हो सकते हैं। उन सभी प्रकार के उत्तरों को खोजने के लिए विभिन्न दिशाओं में चिंतन उन्मुख होता है और जो सर्जनात्मकता की विशेषता है।
- **पठन वैकल्य** – पढ़ने में होने वाली कठिनाई को व्यक्त करने के लिए एक परिभाषिक शब्द।
- **अंहकेन्द्रवाद** –पूर्व संक्रियात्मक चिंतन की एक प्रमुख विशेषता जो किसी व्यक्ति द्वारा अपने परिप्रेक्ष्य और किसी दूसरे के बीच भेद न कर पाने की अयोग्यता की ओर संकेत करती है।
- **सांवेगिक वृद्धि** – ऐसे कौशलों का समुच्चय जो संवेगों की सही आकलन मुल्यांकन अभिव्यक्ति और नियमन के आधार होते हैं।
- **सुव्यक्त स्मृति** – तथ्यों और अनुभवों की स्मृति जिसे कोई चेतन रूप में जानता है और उसे घोषित कर सकता है (इसे घोषणात्मक भी कह सकते है।)
- **विलोपन** – किसी अनुबंधित अनुक्रिया का ह्रासः यह प्राचीन अनुबंधन में होता है, जब कोई अननुबंधित उद्दीपक किसी अनुबंधित उद्दीपक का अनुसरण नहीं करता, क्रियाप्रसुत अनुबंधन में तब होता है जब कोई अनुक्रिया प्रबलित नहीं रहती है।
- **कुंठा** – जब लक्ष्य की पूर्ति के लिए की जाने वाली क्रिया किसी तरह बाधित हो जाती है तो ऐसी स्थिति उत्पन्न होने की संभावना होती है।
- **कार्यवाद** – मनोविज्ञान की वह विचारधारा जो मानव मन अथवा चेतना के उपयोगिता वादी, अनुकूलनपरक कार्यो पर बल देते हैं।
- **लिंग पहचान** – पुरूष या महिला होने की समझ जो 3 वर्ष की उम्र होने तक बच्चों में आती है।
- **सामान्यीकरण** – ऐसी प्रवृति जिसमें यदि कोई अनुक्रिया अनुबंधित हो गई हो तो ऐसा उद्दीपक जो अनुबंधित उद्दीपक के समान हो समान, अनुक्रियाएँ उत्पन्न करेगा।
- **गेस्टाल्ट** – एक संगठित समस्त पूर्ण सुचनाओं के अंश को एक अर्थपूर्ण समता में संगठित करने के हमारी प्रवृति जिस पर गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक जोर देते हैं।
- **गेस्टाल्ट मनोविज्ञान** – मनोविज्ञान की एक शाखा जिसमें व्यवहार को इसके अपने भागों के कुल योग की अपेक्षा, अधिक व्यापक और एकीकृत साकल्य माना जाता है।
- **साम्यधारण (Equilibration)** – पियाजे द्वारा बतायी गई अवधारणा जिसमें आत्मसात्करण व समायोजन की प्रक्रिया में संतुलन स्थापित किया जाता है।
- **कार्यक्रमित सीखना (Programed Learning)** – (स्कीनर) इसमें बालक अपनी गति से छोटे-छोटे फ्रेम के माध्यम से सीखते हैं।
- **मानवतावादी मनोविज्ञान** – मनोविज्ञान का वह उपागम जो व्यक्ति, अथवा स्व और व्यक्तिगत संवृद्धि और विकास पर बल देता है।
- **सूचना-प्रक्रमण उपागम** – एक उपागम जिसका इन बातों से संबंध है: व्यक्ति अपने जीवन-संसार के बारे में सूचनाएँ प्राप्त करता है। किसी प्रकार सूचनाएँ हमारे मन में प्रवेश करती हैं, किसी प्रकार ये सुचनाएँ संचित की जाती है और रूपान्तरित होती है तथा किसी कार्य को करने किसी समस्या का हल ढूंढने और तर्कना के लिए इन्हें पुनः कैसे प्राप्त किया जाता है।
- **अन्तर्दृष्टि** – नयी परिस्थितियों का प्रभावशाली ढंग से सामना कर सकने की योग्यता।
- **अंतर्निरीक्षण** – अपने सचेतन अनुभवों और अनुभूतियों के अंदर देखने की प्रक्रिया।

Scanned with CamScanner

- **जेम्स-लैंगे सिद्धान्त** -संवेग का सिद्धान्त, जिसके अनुसार किसी उद्दीपक के प्रति शरीर की प्रतिक्रिया संवेगात्मक प्रत्यक्षण पैदा करती है, संवेग का यह स्पष्ट अनुभव शारीरिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप होता है।
- **अधिगम** - अनुभव के कारण प्राणी के व्यवहार में होने वाली अपेक्षा-कृत स्थायी परिवर्तन।
- **अधिसंज्ञान** - अपनी मानसिक प्रक्रियाओं का ज्ञान और समझ।
- **अभिप्रेरक** - व्यवहार को शक्ति देने वाले और निर्देशित करने वाले कारक।
- **क्रिया प्रसूत अनुबंधन** - ऐसा अधिगम जिसमें ऐच्छिक अनुक्रियाएँ उनके परिणामों द्वारा नियंत्रित होती है।
- **समीप-दुराभिमुख प्रवृति** - केन्द्र से बाहर की दिशा को पेशीय विकास।
- **मनोविश्लेषण** - मनोचिकित्सा की एक विधि जिसमें मनोचिकित्सक दमित अचेतन सामग्री को संचेतन स्तर पर लाने का प्रयास करता है।
- **प्रबलन** - एक अनुक्रिया का अनुसरण करती घटना जो अनुक्रिया के घटित होने की प्रवृति को शक्ति देती है।
- **संवेदी प्रेरक अवस्था** - पियाजे का पहला चरण जिसमें नवजात शिशु शारीरिक और पेशीय क्रियाओं के साथ संवेदी अनुभवों का संयोजन कर संसार की एक समझ विकसित करता हैं।
- **संवेद स्मृति** - प्रारम्भिक प्रक्रिया जो उद्दीपक के संक्षिप्त प्रभावों को संरक्षित रखती है, इसे संवेदी पंजिका भी कहते है।
- **समाजीकरण** - सामाजिक अधिगम की क्रिया जिसके द्वारा एक बच्चा उन आदर्शो अभिवृतियों विश्वासों और व्यवहारों को ग्रहण करता है जो उसकी संस्कृति में स्वीकार्य है-परिवार, विद्यालय और समसमूह समाजीकरण के मुख्य कारक हैं।
- **उद्दीपक** - पर्यावरण में स्थित कोई सुपारिभाषित तत्व जो प्राणी को प्रभावित करता हो अथवा जो प्रकट अथवा अप्रकट अनुक्रिया को जन्म देता हो।
- **सरंचनावाद** - विलियम वुण्ट के साथ संबंद्ध मनोविज्ञान का वह उपागम जो चेतना की सरंचना और उसकी संक्रियां को अथवा मानव मन को समझना चाहता है।
- **अधिगम अंतरण** - किसी भिन्न स्थिति में पहले के सीखने के कारण एक नयी स्थिति मे अधिक त्वरित रूप में सीखना (सकरात्मक अंतरण) अथवा पहले के सीखने के कारण एक नयी स्थिति में धीरे-2 सीखना (निषेधात्मक अंतरण)।
- **अननुंबंधित अनुक्रिया** - किसी अननुबंधित उद्दीपक के प्रति बगैर सीखी हुई या अनैच्छिक अनुक्रिया।
- **अननुबंधित उद्दीपक** - एक उद्दीपक जो सामान्यः एक अनैच्छिक, मापन- योग्य अनुक्रिया उत्पन्न करता है।
- **संरक्षण** - पियाजे द्वारा दिया सम्प्रत्यय वातावरण में परिवर्तन स्थिरता को पहचानने व समझने की क्षमता।
- **स्कीम्स** - व्यवहारों के संगठित पैटर्न को जिस आसानी से दोहराया जा सकता है स्कीम्स कहाता है।
- **कार्यकारी स्मृति** - स्मृति की प्रक्रिया जो प्रत्यक्षण की गई नवीन घटनाओं और अनुभवों को परिरक्षित रखती है, इसे अल्प-कालिक स्मृति भी कहते हैं।
- **दुश्चिंता** - मानसिक व्यथा की एक दशा जिससे भय, आंशका, और शरीर क्रिया भाव प्रबोधन या उद्वेलन पाया जाता है।
- **अभिक्षमता** - ऐसी विशेषताओं का संयोग जो व्यक्ति की प्रशिक्षण द्वारा कुछ विशिष्ट कौशलों को अर्जित करने की समर्थता का सूचक होता है।
- **अभिवृत्तियाँ** - किसी विषय पर मन विचारों या प्रत्ययों की वे स्थितियाँ जिनमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यवहारात्मक घटक होते हैं।
- **द्वंद** - परस्पर विरोधी अभिप्ररको, अंतर्नोदो, आवश्यकताओं या लक्ष्यों से उत्पन्न हुए विक्षोभ या तनाव की दशा।
- **रक्षा युक्तियाँ** - फ्रायड के अनुसार वे तरीके जिनमें 'अहं' अचेतन रूप से 'इदम्' के अस्वीकार्य आवेगों का सफलता से हल करने का प्रयत्न करता है जैसा कि दमन, प्रक्षेपण, प्रतिक्रियाः - निर्माण उदातीकरण, युक्तिकरण आदि में होता है।
- **अहम्** - व्यक्तित्व का वह अंश जो इदम् और बाह्य जगत के बीच अंतर्रोधी का कार्य करता है।
- **सांवेगिक बुद्धि** - जीवन के सावेंगिक पक्ष से संबंधित विशेषकों या योग्यताओं का समूह जैसे - अपने निजी संवेगों की पहचान एवं प्रबंधन करने दूसरों के संवेगों की पहचान एवं अपने आवेगों को नियंत्रित रखने तथा प्रभावी ढंग से अंतर्वैयक्तिक संबंधों पर व्यवहार करने की योग्यताएँ। इसे एक सांवेगिक लब्धि प्राप्तांक ( ) के रूप में व्यक्त किया जाता है।
- **तदनुभूति** - दुसरे की भावनाओं के प्रति एक सांवेगिक अनुक्रिया करना जो दूसरे व्यक्ति की भावनाओं के समान हो।
- **इदम् या इड** - फ्रायड के अनुसार, मानस का वह आवेगी एवं अचेतन अंश जो मूलप्रवृतिक अंतर्नोदो के परितोषण की ओर सुखेप्सा-सिद्धान्त के माध्यम से क्रियाशील होता है। इड की वास्तविक अचेतन या मानस का गहनतम अंश समझा जाता है।
- **बुद्धि लब्धि** - कालानुक्रमिक आयु से मानसिक आयु का अनुपात इंगित करने वाला मानकीकृत बुद्धि परीक्षणों से प्राप्त एक सूचकांक।
- **अभिरुचि** - एक या अधिक विशिष्ट क्रियाकलापों के लिए व्यक्ति की वरीयता।
- **कामशक्ति या लिबिडो** - फ्रायड ने इस पद को प्रस्तावित किया। फ्रायड की विचारधारा में लिबिडो कामुकता की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति मात्र थी।
- **मानसिक आयु** - आयु के रूप में अभिव्यक्त बौद्धिक कार्य-शीलता का मापक।
- **दुर्भीति** - जिससे व्यक्ति को अत्यन्त कम या बिल्कुल खतरा नहीं रहता। ऐसी किसी विशेष वस्तु या स्थिति का प्रबल, सतत एवं तर्कहीन भय।
- **प्रक्षेपण** - एक रक्षा युक्ति स्वयं अपने विशेषकों, अभिवृतियों या आत्मनिष्ठ प्रक्रियाओं का अनजाने ही दूसरे पर गुणारोपण करने की प्रक्रिया।
- **दमन** - एक ऐसी रक्षा युक्ति जिसमें व्यक्ति सभी अस्वीकार्य, दुश्चिंताकारी विचारों और आवेगों का प्रत्यक्ष सामना करने से बचने के लिए अचेतन में ढकेल देता है।
- **अन्विति योजना** - एक मानसिक संरचना जो सामाजिक (तथा अन्य) संज्ञान को निर्देशित करती है।
- **मनोविदलता** - मनस्तापी प्रतिक्रियाओं का समूह जिसमें समाकलित व्यक्तित्व, कार्यशीलता विघटित हो जाती है, वास्तविकता से विनिवर्तन, सांवेगिक अनुरोध तथा विरूपण एवं विचार व व्यवहार विक्षुब्ध हो जाता है।
- **परअहम्** - फ्रायड के अनुसार मनुष्य में विकसित होने वाली अंतिम व्यक्तित्व संरचना। यह समाज में सही और गलत के मानकों को प्रतिनिधित्व करता है जो उसे माता-पिता, शिक्षकों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से प्राप्त होते है।
- **विसंवेदीकरण** - चिंता व भय उत्पन्न करने वाले उद्दीपकों के प्रतिम क्रमशः व्यक्ति की संवेदनशीलता घटाना।

❑❑❑

Scanned with CamScanner

# 22 प्रसिद्ध पुस्तकें व लेखक

## प्रसिद्ध पुस्तकें व लेखक

| लेखक | पुस्तक |
|---|---|
| ✦ विलियम जेम्स | – मनोविज्ञान के सिद्धान्त (प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी) |
| ✦ मैक्डूगल | – आउट लाइन ऑफ साइकोलॉजी, सामाजिक मनोविज्ञान एक परिचय |
| ✦ वाट्सन | – साइकोलॉजी एज ए बिहेवियरियट व्यूज इट, व्यवहारवाद |
| ✦ जॉन डीवी | – स्कूल और समाज |
| ✦ हेनरी काल्डवेल कुक | – प्ले वे |
| ✦ थार्नडाइक | – शिक्षा मनोविज्ञान, एनिमल इन्टेलिजेन्स |
| ✦ सी.एल.हल | – प्रिंसिपल ऑफ बिहेवियर |
| ✦ गिलफोर्ड | – फील्ड ऑफ साइकोलॉजी |
| ✦ स्प्रेंगर | – टाइप्स ऑफ मैन |
| ✦ क्रेचमर | – फिजिक एण्ड करेक्टर |
| ✦ फ्रायड | – इन्टरपेरेशन ऑफ ड्रीम (1902) |
| ✦ सी. डब्ल्यू. बीयर्स | – ए माइण्ड दट फाउण्ड इट शेल्फ |
| ✦ थर्स्टन | – प्राथमिक मानसिक योग्यताएँ |
| ✦ डेनियल गोलमैन | – संवेगात्मक बुद्धि – बुद्धि लब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों? |
| ✦ स्टेनले हॉल | – एडोलेसेन्स |
| ✦ जिन पियाजे | – बाल चिन्तन की भाषा |
| ✦ जॉन डीवी | – हाऊ वी थिंक |
| ✦ इरिक इरिक्सन | – बचपन तथा समाज (चाइल्डहुड एण्ड सोसायटी) |
| ✦ गिलफोर्ड | – जनरल साइकोलोजी |
| ✦ जेरोम ब्रूनर | – शिक्षा की प्रक्रिया |
| ✦ जीन पियाजे | – संसार के बच्चों के विचार |
| ✦ प्रेयर | – माइण्ड ऑफ चाइल्ड |
| ✦ अल्बर्ट बाण्डूरा | – सोसियल फाउण्डेशन ऑफ थोट एण्ड एक्शन |
| ✦ स्टीफेन एन. कोरे | – विद्यालय की कार्य पद्धति में सुधार करने की क्रियात्मक अनुसंधान |
| ✦ रूडोल्फ गोयक्ले | – साइकोलोजिया |
| ✦ एच.ए. रेबर्न | – एन इंट्रोडक्सन टू साइकोलॉजी |
| ✦ कुर्ट लेविन | – ए डाइनेमिक थ्योरी ऑफ पर्सनल्टी |
| ✦ बाण्डूरा एण्ड वाल्टर्स | – सामाजिक विकास तथा व्यक्तित्व विकास |
| ✦ कुर्त कोफ्का | – द ग्रोथ ऑफ माइण्ड |
| ✦ पोलेन्सकी | – करेक्टर एण्ड पर्सनल्टी |
| ✦ वाल्टर | – इन्ट्रोडक्शन टू पर्सनल्टी |
| ✦ आलपोर्ट | – पैटर्न एण्ड ग्रोथ ऑफ पर्सनल्टी |

Scanned with CamScanner

- हावर्ड गार्डनर – फ्रेम्स ऑफ माइण्ड – द थ्योरी ऑफ
- स्कीनर – द बिहेवियर ऑफ द ऑर्गेनिज्म
- कुर्त लेविन – फील्ड थ्योरी एण्ड लर्निंग
- हिलगार्ड – थ्योरीज ऑफ लर्निंग
- क्रेश्मर – फिजिक एण्ड करेक्टर
- रूसो – इमाइल
- डेविड आशुबेल – एजुकेशनल साइकोलॉजी : कागनिटिव व्यू
- प्लान्ट – Personality and Cultural Pattern
- कुप्पुस्वामी – Advanced Educational Psychology
- फ्रायड – साइकोपथोलॉजी ऑफ एवरीडे लाईफ
- गिरिन्द्र शेख बोस – Concept of Repression
- जे.पांडे – साइकोलॉजी इन इण्डिया
- दुर्गानन्द सिन्हा – साईकोलॉजी एन ए थर्ड वर्ल्ड कन्ट्री : दि इण्डियन एक्सपीरियन्स (1986)

## प्रमुख मनोवैज्ञानिक परीक्षण

- मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के चरम स्तर पर लाने का श्रेय – फ्रांसिस गाल्टन 1884 में लन्दन में प्रयोगशाला की स्थापना की
- प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला – विलियम वुण्ट 1879 जर्मनी लिपजिंग।
- मानसिक परीक्षण शब्द का प्रयोग – 1890 कैटेल।
- सर्वप्रथम बुद्धि मापनी का निर्माण – अल्फ्रेड बिने 1905
- व्यवसायिक रुचि सूची का निर्माण – स्ट्राँग 1927
- युग्म तुलनात्मक विधि का निर्माण – थर्स्टन 1927
- समदृष्टि अन्तरविधि का निर्माण – थर्स्टन – चेव 1929
- लिकर्ट योग निर्धारण विधि – लिकर्ट 1932
- क्रमबद्ध अन्तरविधि – सफीर 1937
- स्केलोग्राम विधि – गटमेन 1945
- भेद बोधक मापनी विधि – एडवर्डस व किलपैट्रिक 1948
- सिमेन्टिक डिफरेशियल – ओसगुड 1952
- मास्टर प्रारूप मापनी – टैमर्स
- मिनि सोटा परीक्षण – टॉरेन्स ने 1958– सृजनात्मक चिन्तन का परीक्षण।
- सृजनात्मकता पर भारतीय परीक्षण –

  (1) बी.के.पासी ने 1972 में शाब्दिक व अशाब्दिक दोनों परीक्षण बनाये।

  (2) बाकर मेहन्दी ने 1973 में शाब्दिक व अशाब्दिक परीक्षण का निर्माण किया।
- रुचि मापन का मानवीकृत परीक्षण – कर्नीगी इंस्टीट्यूट ऑफटेक्नोलोजी 1914
- रुचि मापन का वैज्ञानिक अध्ययन – माइनर 1918 व्यवसायिक प्रवृत्ति प्रपत्र
- भारत में रुचि मापन पर कार्य – इलाहाबाद ब्यूरो
- समायोजन सूची – रोजर्स 1931 प्रारम्भिक विद्यालय के बालक हेतु।
- सुरक्षा असुरक्षा सूची का निर्माण – मैस्लो।
- 19 पी.एफ व्यक्तित्व प्रश्नावली का निर्माण – कैटेल 1956

Scanned with CamScanner